Nagari-pracharini Granthmala Series No. 4

THE PRITHVIRÁJ RÁSO

OF

CHAND BARDÁÍ,

VOL. I.

EDITED

BY

Mohanlal Visnulal Pandia, Radha Krishna Das

AND

Syam Sundar Das, B. A.

सूचीपत्र ।

(१) आदि पर्व्व ।

(पृष्ठ १ से १८० तक)

सूचीपत्र ।

(२) दसम समय ।

(पृष्ठ १८१ से २५४ तक)

(३) दिल्ली किल्ली कथा ।

(पृष्ठ २५५ से पृष्ठ २६४ तक)

(४) लोहानो आजान बाहु समय ।

(पृष्ठ २७५ से पृष्ठ २८० तक)

(५) कन्हपट्टी समय ।

(पृष्ठ २८१ से पृष्ठ २९८ तक)

---

[६] आषेटक वीर बरदान वर्णन समय।

(पृष्ठ २९९ से पृष्ठ ३२८ तक)

---

[७] नाहर राय कथा वर्णन ।

(पृष्ट ३२९ से पृष्ट ३६८ तक)

[८] मेवाती मुगल कथा ॥

(पृष्ठ ३६९ से पृष्ठ ३८४ तक)

(९) हुसेन कथा ॥

(पृष्ठ ३८५ से पृष्ठ ४२४ तक)

(१०) आखेटक चूक वर्णन ।

(पृष्ठ ४२५ से ४३८ तक)

---

[११] चित्ररेषा समय ।

(पृष्ठ ४३९ से ४४५ तक)

THE PRITHVÍRÁJ RÁSÁU.

पृथ्वीराजरासो ।

सोहनी टिप्पणी सहित ।

आदि पर्व ।

॥ आदिदेव, गुरू, वाणी, लक्ष्मीश, सुरनाथ और सर्वेश का ॥
॥ मंगलाचरण ॥

साटक—ॐ ॥ आदी देव प्रनम्य नम्य गुरयं, वानीय वंदे पयं ।
सिष्टं धारन धारनं वसुमती, लच्छीस चर्नाश्रयं ॥
तं गुं तिष्टति ईस दुष्ट दहनं, सुर्नाथ सिद्धिश्रयं ।
थिर्चर्जंगम जीव चंद नमयं, सर्वेस वर्दामयं ॥ छंद ॥ १ ॥ रूपक ॥ १ ॥

---

१ यह मंगलाचरण जिस छंद में चंद कवि ने कहा है उस का नाम उन ने साटक प्रयोग किया है और इस नाम से यह छंद आज कल जो छंद ग्रंथ प्रायः उपलब्ध हैं उन में नहीं मिलता। यद्यपि उस की परीक्षा करने से वह निःसंदेह शार्दूलविक्रीडित् नामक छंद मालूम होता है परंतु जब तक उस का लक्षण अथवा नामान्तर होने का कोई प्रमाण नहीं दिखलाया जावे तब तक पुरातत्त्ववेत्ता विद्वान संतुष्ट नहीं हो सके। अतएव बहुत खोज करने से मेरी मातृभाषा गुजराती के काव्यों में इस नाम के छंद मुझे मिले और The Revd. Joseph Van. S. Taylor साहब अपने गुजराती भाषा के व्याकरण के पद्यबंध अथवा छंदविन्यास नामक प्रकरण के पृष्ठ २२३ में उसको साटका नाम से कुल्ल ३८ अक्षर के दो तुक का छंद होना लिखते हैं कि जिसके प्रत्येक तुक में.१२+७=१९ अक्षर होते हैं। इस के सिवाय प्राकृतभाषा के किसी छंदग्रंथ से अनुवाद होकर सं· १७७६ में जो एक रूपदीप पिंगल नामक छंद ग्रंथ बना है उस में केवल ५२ छंदों के लक्षण कहे हैं उस में भी साटक का यह लक्षण लिखा है:—

॥ साटक छंद लक्षण ॥

कर्मे द्वादश अंक आद संग्या, माचा सिवो सागरे ।
दुज्जी वी करिके कलाष्ट दस वी, अर्को विरामाधिकं ॥ १ ॥
अंते गुर्व निहार धार सब के, औरों कछू भेद ना ।
तीयो मत्त उनीस अंक चरने, सेसो भणैं साटिकं ॥

मैं इस साटक छंद को पिंगल छंद सूत्रम् नामक ग्रंथ में कहे शार्दूलविक्रीडित् छंद का नामान्तर होना मानता हूं और उस का लक्षण बहुत प्राचीन अमर और भरत कृत छंद ग्रंथों में अवश्य होना अनुमान करता हूं क्योंकि चंद कवि ने भी अपने इसी ग्रंथ के आदि पर्व के रूपक ३७ में जो कुछ कहा है उस से स्पष्ट मालूम होता है कि उस ने अपने इस महाकाव्य के रचन में पिंगल अमर और भरत के छंद ग्रंथों का आश्रय किया है॥

इस छंद के लक्षण का पता लगाकर अब मैं इस रूपक के पाठ को शोधता हूं। उस की पहिली पंक्ति का पाठ A. S. B. की छापी हुई पुस्तक की Fasiculus I जिस को Mr. John Beames साहब ने शोध कर छपाई है उस में "आदि प्रनम्य नम्य गुरयं वानीय वंदे पयं" ऐसा पाठ है और जो Mr. F. S. Growse C. S. M. A. ने रासे के प्रारंभ के छंदों का अनुवाद करने में पाठ लिखा है वह भी ऐसा ही है। निदान साटक के लक्षण के अनुसार इस तुक में १२+७=१९ अक्षर होने चाहियें परंतु उस में १०+७=१७ अक्षर हैं। अब यह अत्यावश्यक है कि घटते हुए दो अक्षरों का पता लगाया जावे। जिस में यह कल्पना करना कि चंद कवि अथवा उस के नाम से कोई यह जाली ग्रंथ बनानेवाला छंद यन्थों में भले प्रकार व्युत्पन्न न होने के कारण मूल में ही भूल गया है सर्वरीत्या अयोग्य और आश्चर्यदायक बात है। क्योंकि वर्तमान् पृथ्वीराजरासे का बिगड़ा हुआ काव्य भी अपने कर्त्ता का एक बड़ा व्युत्पन्न कवि होना स्वयम् स्पष्ट प्रकाश करता है अतएव उस का ऐसी भूलों का करना निर्मल प्रज्ञावाले विद्वानों के ध्यान में सर्वथा असंवभ है।

इस प्रथम तुक में जो दो अक्षर घटते हैं वे पंक्ति भर में किस स्थान में लेखक अथवा शोधक की भूल से लोप हो गये हैं। इस बात को शोध लेने के लिये यह एक बड़ी सरल युक्ति है कि हम इस तुक के अर्थ को ध्यान में लेकर उस के वाक्यखंडों को पृथक् २ कर दें कि जिस से अपूर्ण वाक्यखण्ड अपने आप हम को घटते हुए अक्षर बतला देवे जैसे कि वानीय वंदे पयं और नम्य गुरयं और आदि प्रनम्य। ऐसा करने से हम को मालूम हो गया कि आदि प्रनम्य वाक्यखंड अपूर्ण है और उस में कोई संज्ञावाचक शब्द घटता है। अब विचारना चाहिये कि वह संज्ञा-वाचक शब्द आदि शब्द के पहिले घटता है अथवा पीछे। जो हम आदि शब्द के पहिले उस का होना कल्पना करें तो 'आदिः पदान्ते गण सूचकः" से दोष प्राप्त होकर हमारी कल्पना अन्यथा हो जाती है अतएव मानना चाहिये कि आदि शब्द के पीछे कोई संज्ञावाचक शब्द है क्योंकि ऐसा मानने में आदि शब्द उस शब्द के साथ मिलकर हम को कर्म्मधारयः समास का होना स्पष्ट विदित करता है। जब कि यह निश्चय हो गया कि आदि शब्द के पीछे अर्थात् आदि और प्रनम्य के बीच में कोई संज्ञावाचक शब्द गया है तब हम को फिर सूक्ष्म विचार में निमग्न होना चाहिये कि वह संज्ञावाचक शब्द कौन सा है कि जिस को चंद कवि ने प्रयोग किया था। मैं निःसंदेह कल्पना करता हूं कि यहां देव शब्द था अर्थात् आदी देव ऐसा पाठ चंद ने प्रयोग किया था क्योंकि प्रथम तो "आदिः कारणं स च देवश्चेति कर्म्मधारयः" तथा "जग दुपादानादिगुणवान् नारायणः" दूसरे आदिदेव शब्द हमारी संस्कृतभाषा के प्रामाणिक ग्रंथों में मंगलाचरणों तथा ईश्वर की स्तुति तथा ईश्वर के ध्यान के वाक्यों में बहुधा प्रयोग किया गया है कि हम उदाहरण के लिये केवल दोही प्रमाण यहां दिखाते हैं जैसे:—"परं ब्रह्म परं धाम। पवित्रं परमं भवान्॥ पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुं"॥ तथा "त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण। स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानं"॥ तीसरे चंद कवि ने स्वयम् अपने इस महाकाव्य में इस आदि देव शब्द का प्रयोग अनेक स्थानों में किया है जैसा कि:—"प्रनम्य प्रथम मम आदि देव। ऊंकार

शब्द जिन करि अछेव" ॥ चौथे इस तुक में प्रथम मगण होने के कारण तीनों अक्षर दीर्घ होने चाहियें अतएव कवि ने आदी देव ऐसा पाठ कहा है। आदि शब्द संस्कृत में इकारान्त है परंतु उसे कवि ने यहां मगण होने के कारण के अतिरिक्त गानविद्या संबंधी दोष दूर करने के अभिप्राय से भी ईकारान्त किया है क्योंकि चंद गानविद्या में भी निपुण था और साटक के गाने में तुक की पहिली चौथी मात्रा पर ताल आता है। यद्यपि मेरी कल्पना तो यह है परंतु जब मैंने इस ग्रंथ का कुछ भाग कोटा राज्य के विद्वान कविराज श्री चंडीदानजी से पढा था तब उनों ने यह बतलाया था कि आदि के पहिले ओ३म् शब्द का प्रयोग कवि चंद ने किया था और उस का अर्थ आदि ओ३म् प्रनम्य अर्थात् "पहिले ओंकार को नमन करके" किया था। यद्यपि यह प्रयोग भी कुछ बैठ जाता है और ठीक सा मालूम होता है और जितनी पुस्तकें रासे की मेरे देखने में आई हैं उन में प्राय: ऐसा ही पाठ मिलता भी है परंतु मैं इस की अपेक्षा मेरी कल्पना को अधिक बलवान और युक्त मानता हूं और आशा करता हूं कि यदि वे अब विद्यमान होते तो मेरी इस कल्पना को प्रसन्नतापूर्वक मान लेते। यदि कोई ओ३म् आदि प्रनम्य ऐसा भी पाठ मानें तथापि कुछ हानि नहीं है। और जब तक कि किसी बहुत प्राचीन पुस्तक में हमारे इस मानने के विरुद्ध कोई अन्य पाठ न मिल जावे तब तक मैं इस को मानना अयोग्य नहीं समझता हूं॥

अब दूसरी पंक्ति का पाठ "सिष्टं धारन धारयं वसुमती लच्छीस चरनाश्रयं" है। इस में १२+८=२० अक्षर हैं किं यहां चरनाश्रयं शब्द को मैंने चणाश्रयं किया है क्योंकि कोई छंद गान से खाली नहीं है और साटक की ध्वनि के अनुसार उच्चारण में यहां रकार स्वर रहित हो जाता है और जैसा उच्चारण और गान में रूप हो वैसा काव्य में लिखने में भी कोई दोष नहीं है। जो कवि गान के नियमों से अपरिचित हैं उन के काव्य में ऐसे स्थलों में अनेक दोष रह जाते हैं क्योंकि गान छंद के लिये एक कसौटी है और ऐसे ही मौकों को कवि का अधिकार अर्थात् Poetical Licence कहते हैं। कोई २ विद्वान कवि के अधिकार की छूट अर्थात् Poetical Licence को दोष मानते हैं परंतु वह एक भ्रम है क्योंकि सस्वर अक्षर का खोड़ा कर देना और खोड़े को सस्वर कर देना व्याकरणादि भिन्न शास्त्रों में दोष समझना चाहिये परंतु छंद रचन और गान में तो यह दोष नहीं कहाता है देखो चंद के इन वचनों के भीतरी आशयों से भी हम यही अनुमान कर सक्ते हैं:-

लहु गुर मंडित खंडिय हि। पिंगल अमर भरत्थ ॥ ३० ॥ १
चरन नीम अच्छिर सुरंग। पाट लहु गुरु विधि मंडिय ॥
सुर विकास जारी सु मुष्य। उक्ति रस गौरव नि छंडिय ॥ ४० ॥ १

तीसरी पंक्ति के पाठ तम गुन तिप्टति ईस दुष्ट दहनं। सुरनाथ सिद्धिश्रयं में १४+८=२२ अक्षर हैं। इस में उपर कही हुई युक्तियों के सिवाय थोड़ा सा और ध्यान देने से ज्ञात हो सक्ता है कि ग्रंथकर्त्ता ने तम गुन और सुरनाथ पाठ नहीं प्रयोग किये थे किन्तु जैसे हम ने अनुमान कर शुद्ध किये हैं तं गुं और सुनाथ क्योंकि प्रथम तो इस साटक छंद में मगण होने के कारण तं और गुं ही होने चाहियें और दूसरे चंद के ऐसे प्रयोग इस काव्य में बहुत से स्थलों पर दृष्टि आवेंगे। यह भी हमारे देखने में आवेगा कि त्वम् और अहम् के स्थान में तं और हं जैसे प्रयोग चंद ने किये हैं। इस में हम को कुछ भी आश्चर्य नहीं करना चाहिये क्योंकि चंद के इस नीचे लिखे वाक्य से हम अच्छी तरह समझ सक्ते हैं कि उस ने अपने इस महाकाव्य की भाषा में षट भाषा और कुरान की भाषा का आश्रय किया है:-

श्लोक ॥ उक्ति धर्म विशालस्य । राजनीति नवं रसं ।
षट भाषा पुराणं च । कुरानं कथितं मया ॥ १ ॥ ३६

अब शेष चौथी पंक्ति का पाठ "थिर चर जंगम जीव चंद नमयं सर्वेस वरदा मयं" में १४ + ८ = २२ अक्षर हैं। इस के स्थान में जो यह पाठ "थिर्वजंगम जीव चंद नमयं सर्वेस वर्द्दामयं" शुद्ध किया गया है उस के लिये ऊपर कही हुई युक्तियों से ही हमारा शोधन करना ठीक मालूम हो सक्ता है। इस में इतना कहना और भी आवश्यक है कि सोसाईटी की मुद्रित कियी पुस्तक में जो चंदनमयं पदच्छेद किया है वह अयुक्त है और मिस्टर एफ॰ एम॰ ग्राऊज साहब ने जो चंद और नमयं पदच्छेद किये हैं वह ठीक हैं और मैं भी मिस्टर ग्राऊज के पदच्छेद से सम्मत हूं॥

जो पाठ हमने जिस रीति से इस रूपक में शुद्ध किये हैं वह अथवा वैसे ही और भी पाठ जो कहीं आगे इस ग्रंथ भर में आवेंगे तो हम उन पर सर्वत्र टिप्पण नहीं करेंगे किन्तु वहां का मूल पाठ हमारे यहां पर वर्णन किये शोधन प्रकार के अनुसार शुद्ध रहैगा। पाठक महाशय इन ही नियमों से उन पाठों को सिद्ध कर समझ लें अर्थात् जिस नियम को एक स्थान पर टिप्पण में वर्णन कर देंगे वह अन्यत्र नहीं कहा जावेगा। किन्तु जहां कोई नवीन प्रयोग आवेगा वहां उस का वर्णन कर दिखावेंगे॥

जैसे कि चंद के प्रयोग किये हुए छंदों के नाम और उन के लक्षणों के शोध करने में पुरातत्त्ववेत्ताओं को परिश्रम पड़ता है वैसे ही उस के इस महाकाव्य के अर्थ लगाने में भी अनेक प्रकार की अड़चनें उपस्थित होती हैं। यद्यपि हमारा मुख्य काम इस ग्रंथ के मुद्रित करने में केवल इतना ही है कि उस के मूलपाठ को सार्थक शोध दें परंतु यह महाकाव्य वर्तमान समय में ऐसी बिगड़ी हुई दशा में उपस्थित है कि जो उस पर इतना परिश्रम न किया जावे कि जितना हम यह करते हैं तो हमारा किया हुआ शोधन पुरातत्त्ववेत्ता विद्वानों को भली भांति संतुष्ट नहीं कर सक्ता। अतएव हम चंद के काव्य की अर्थ संबन्धी कठिनता को दिखलाने के लिये केवल इस मंगलाचरण के रूपक का अर्थ उदाहरण के लिये करते हैं कि जिस से हमारे पाठकों को मालूम हो कि मूलपाठ का शुद्ध होना अर्थ पर दृष्टि दिये बिना असंभव है। महाकवि चंद अपने इस महाकाव्य के आरंभ में इस मंगलाचरण के रूपक में आदिदेव, गुरू, वाणी, लक्ष्मीश, सुरनाथ और सर्वेश को नमस्कार करता है वह कहता है कि "आदिदेव को नमन कर के और गुरू को नमस्कार करके; वाणी के पादों को वंदन; स्वर्ग, पाताल, (और) पृथ्वी के स्रष्टा लक्ष्मीश के चरणों का आश्रय, दुष्टों के दहन करने को तम गुण (जिस) ईश में रहता है (उस) सुरनाथ की पादुका का सेवन (और) थिर, चर, जंगम, (और) जीव के वरदामय सर्वेश को (मैं) चंद नमन करता हूं"।

हमारे किये इस अर्थ को विचारने से विद्वानों को मालूम हो सकेगा कि यद्यपि इस के अनेक प्रकार के अर्थ हो सक्ते हैं परंतु यह अर्थ चंद के व्याकरण शास्त्र संबन्धी जो नियम उस के इस ग्रंथ से मालूम होते हैं उनके अनुसार सरल और कवि की उक्ति के अनुकूल है। इस में कितनेक शब्द ऐसे २ भी हैं कि जो अर्थ करने वाले को चमका और भड़का देते हैं परंतु हम इस रूपक के सब शब्दों के विषय में अर्थात् जिसके विषय में जितना कहना आवश्यक है वह कहते हैं:-

आदीदेव (सं॰ पु॰ आदिदेवः। आदौ दीव्यति स्वयं राजते) नारायण। इस शब्द के विषय में हम ने ऊपर कहा है अतएव यहां विशेष नहीं कहते किन्तु उस के प्रयोग के दो प्रमाण और भी यहां देते हैं:-सहस्रात्मा मया योव आदिदेव उदाहृतः॥ या॰ स्मृ॰॥ वासुदेवो वृहद्भानुरादि देवः पुरंदरः॥ वि॰ सहस्रनाम॥

प्रनम्य (सं॰ प्रणम्य) नमन करके अथवा प्रणाम कर के ॥

नम्य (सं॰ अ॰ नमः अथवा नम्=नमना) नमस्कार कर के इस शब्द के भी म्य पर साटक की ध्वनि के अनुसार ताल है अर्थात् यहां भी स्वर उदात्त है ॥

गुरुयं गुरु को यह चंद की हिन्दी के पुल्लिंग गुरु शब्द की द्वितीया का निज प्रयोग है। चंद के ऐसे निज प्रयोगों को देख कर हम को आश्चर्य के वश न हो जाना चाहिये किन्तु इस बात की खोज करनी चाहिये कि चंद की हिन्दी के व्याकरण संबन्धी नियम क्या और कैसे हैं। और ऐसे अनुस्वार सहित शब्दों को देख कर यह अनुमान भी नहीं करना चाहिये कि रासे का ग्रंथ कर्त्ता ऐसा निर्बोध था कि उस को अनुस्वार और विसर्ग तक का ज्ञान नहीं था। हमारे यह अन्वेषण ध्यान में लाने योग्य हैं कि प्रथमतः चंद की हिन्दी तीन प्रकार की है षट–भाषा–और–कुरान की–भाषा की–योनिवाली १ षट–भाषा–और–कुरान की–भाषा के सम २ और देशी प्रसिद्ध ३। दूसरे संप्रत हिन्दी में तो नपुंसिकलिंग नहीं है परंतु चंद की हिन्दी में तीनों लिंग हैं। तीसरे जितनी संज्ञा अनुस्वार सहित उस में प्रयोग हुई हैं वे पुल्लिंग अथवा नपुंसकलिंग ही हैं। देखो यहां नम्य गुरुयं वाक्यखंड में कवि के अर्थ को ध्यान में लाने से गुरुयं शब्द पुल्लिंग में प्रयोग किया गया मालूम होता है और पांचवें रूपक की इस तुक गुरं सव्व कव्वी लहू चंद कव्वी। जिनं दर्सियं देवि सा अंग हव्वी॥ में गुरं शब्द चंद ने अपनी हिन्दी के नपुंसकलिंग को प्रथमा में प्रयोग किया है। और जहां क्रिया शब्दों में अनुस्वार हैं जैसे इसी प्रमाण में प्रवेश कियी गई तुक में दर्शियं शब्द है वह संस्कृत दर्शितं से है। बहुत से शब्दों पर लेखकों ने अपने अव्युत्पन्न होने के कारण जो अनुस्वार लगा दिये हैं उन का सूक्ष्म विचार करने से विद्वान स्पष्ट जान सक्ते हैं कि यहां कवि ने अनुस्वार का प्रयोग नहीं किया था किन्तु लेखकों ने अपनी अज्ञानता से लगा दिये हैं और कहीं २ उनों ने कवि के प्रयोग किये हुए अनुस्वारों को उड़ा दिये हैं जैसे पांचवें रूपक के भुजंगप्रयात छंद की पहिली तुक में चंद ने ऐसा प्रयोग किया था कि प्रथंमं भुजंगी सुधारी ग्रहंनं। जिनैं नाम एकं अनेकं कहंनं॥ उस के स्थान में एशियाटिक सोसाईटी की छापी हुई पुस्तक १ के पत्र ३ में देखो कि जिस लिखित पुस्तक से वह छापी गई है उसके लेखक ने प्रथम भुजंगी सुधारी ग्रहनं। जिनै नाम एकं अनेकं कहनं॥ पाठ कर दिया है। इस के अतिरिक्त चंद के अनुस्वार सहित शब्दों के प्रयोग करने के और भी अनेक कारण हैं परंतु वह जब मेरे संकलन किये हुए चंद के व्याकरण संबन्धी नियम मैं कुछ समय में प्रकाश करूंगा तब स्पष्ट रीति से हमारे पाठकों को मेरे बड़े परिश्रम से सिद्ध किये हुए अन्वेषण मालूम हो जांयगे ॥

वानीय (सं॰ स्त्री॰ वाणिः=सरस्वत्याम्) सरस्वती के। यह चंद की हिन्दी में षष्ठी के एकवचन का रूप है और जैसे संस्कृत में श्रीः शब्द के रूप में षष्ठी का श्रियः होता है उसी तरह चंद ने अपनी हिन्दी में वानीय किया है ॥

वंदे–वंदन करता हूं ॥ चेत रखना चाहिये कि हम ऊपर गुरुयं शब्द की व्याख्या में चंद की हिन्दी तीन प्रकार की होना बतला आये हैं उस में से यहां यह वंदे संस्कृत–सम के रूप का प्रयोग चंद ने किया है ॥

पयं (सं० पय = गतौ) चरणों को ॥ यह चंद की हिन्दी के पुल्लिंग की द्वितीया का रूप है। कोई २ कवि जो पय शब्द को पैर का वाचक होना बिलकुल्ल नहीं बताते और उस का अर्थ यहां "दूध जैसी श्वेत अथवा जल जैसी निर्मल सरस्वती को वंदन करता हूं", करते हैं वह भूल हैं। पय शब्द पैर का वाचक संप्रत हिन्दी में भी रात्रि दिन बोलचाल में आता है जैसे पयलगी,

पैलगी, पालागन पाय और पयदल इत्यादि। और संस्कृत में भी पय=गतो है। मिस्टर ग्राउज़ साहब ने जो इस शब्द को पैर का वाचक अपने अंग्रेज़ी अनुवाद में माना है वह बहुत ठीक है और मैं उन से इस में सम्मत हूं॥

सिष्टं (सं० त्रि० सृष्टः=निर्मिते। रचिते) सृजनेवाला। यह चंद की हिन्दी में सं० सृष्टः सृजनेवाले का नपुंसकलिंग की प्रथमा का एकवचन है। इस को शिष्ठ अथवा श्रेष्ठ आदि शब्दों का अपभ्रंश मानना अयुक्त है किन्तु वह चंद की हिन्दी में सं० त्रि० सृष्टः का सिष्टं बना है इसी तरह सं० भृष्ट, भ्रष्ट, घृष्ट, दृष्ट, के अपभ्रंश रूप हिन्दी में भिष्ट, घिष्ट, दिष्ट, होते हैं॥

धारण (सं० पु० धारण=स्वर्लोके) स्वर्गलोक॥ धारयं (सं० त्रि० धारय=धारके। नाग देशे॥ धारयैः कुसुमोर्म्मीणाम्। भट्टिः) पाताल लोक॥ वसुमती (सं० स्त्री० भूलोक। स्पष्टम्) भूलोक॥ यहां थोड़ा सूक्ष्म विचार कर हमारे किये अर्थ की सत्यता जांचने का काम है क्योंकि सिष्टं धारण धारयं वसुमती लच्छीस चर्नाश्रयं का अर्थ अनेक कवि अनेक प्रकार का करते हैं परंतु मैं उन को चंद के अभिप्राय के अनुकूल नहीं समझता हूं। इन शब्दों के पृथक् २ अर्थ तो हम ने संस्कृत कोषों से लेकर वर्णन कर ही दिये हैं। इस के सिवाय लच्छीस शब्द जो विष्णु का वाचक है वह हम को यह अर्थ करने की स्पष्ट लक्षणा कराता है कि धारण=स्वर्गलोक॥ धारयं=पाताल लोक॥ और वसुमती=भूलोक का सिष्टं=सृजनेवाला (जो) लच्छीस=विष्णु (उस के) चर्नाश्रयं=चरणों का सेवन (करता हूं) यही बहुत ठीक अर्थ है क्योंकि यहां तत्पुरुष समास है और लक्ष्मीश का अर्थ कोशों में विष्णु का है और विष्णु के विषय में शास्त्रों में नीचे लिखे प्रमाण कहा है उस से भी हमारा किया हुआ अर्थ अच्छी तरह पुष्ट होता है:—

> यस्मात् विश्वमिदं सर्वं। तस्य शक्त्यामहात्मनः।
> तस्मात् द्वेवोच्यते विष्णु। र्विशधातोः प्रवेशनात्॥
> ज्योतींषि विष्णुर्भुवनानि विष्णु। र्वनानि विष्णुर्गिरयो दिशश्च।
> नद्यः समुद्राश्च स एव सर्वो। यदस्ति यन्नास्ति च विप्रवर्येति॥
> अनादि निधनं विष्णुं। सर्वलोक महेश्वरं।
> लोकाध्यक्षं स्तुवं नित्यं। सर्व दुःखाति गो भवेत्॥ ६॥
> लोकनाथं महद्भूतं। सर्वभूत भवोद्भवं॥ १०॥
> लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृतः कृतः॥ ३१॥
> लक्ष्मीवान् समितिं जयः॥ ५६॥ श्रीमाल्लोक त्रयाश्रयः॥ ८२॥
> त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः। केशवः केशिहा हरिः॥ ८६॥
> लोकस्वामी त्रिलोक धृत्॥ ८७॥ लोकाधिष्ठानमद्भुतः॥ ११२॥
> त्रीन् लोकान् व्याप्य भूतात्मा। भुंक्ते विश्व भुगव्ययः॥ १४४॥
> वासनाद्वासुदेवस्य। वासितं भुवन त्रयं॥ १५१॥

चर्णाश्रयं (सं० चरण+आश्रयं=) चरणों का सेवन॥ यह अनुस्वार सहित शब्द भी चंद की हिन्दी का संस्कृत—सम नपुंसकलिंग है॥

सं। गुं (सं० न० तमः और पु० गुणः) तम। गुण। चंद की हिन्दी के नपुंसकलिंग॥ प्राकृत—भाषा सम का प्रयोग॥

तिष्टति (सं० तिष्टति) रहता है । चंद की हिन्दी के संस्कृत-सम्भेद का रूप है ॥
ईसं-(सं० पु० ईशः = महादेवे) महादेव । सदाशिव ॥
दुष्ट (सं० न० दुष्टं = अधर्मे । वंचके) दुष्टं ॥ दुष्ट दहनं = दुष्टों के दहन करने के लिये अथवा दुष्टों के दहनार्थ ॥
दहनं (सं० पु० दहनः = दाहे । भस्मी करणे ।) दहन के लिये चंद की हिन्दी का नपुं० है ॥
सुर्नाथ (सं० पु० सुर + नाथ = रुद्रे) महादेव की ॥
सिद्रि (सं० स्त्री० सिद्रिः = पादुकायाम्) पादुका का ॥
श्रयं (सं० पु० श्रयः = श्रयणे । आये ॥ श्रिञ् = सेवायाम्) सेवनं ॥ सिद्रि श्रयं = पादुका का सेवन ॥
थिर (सं० पु० स्थिरः = स्थिर पदार्थाः) स्थिर वस्तु जैसे :- पर्वत और पृथ्वी आदि ॥
चर (सं० पु० चरः = चले) चर वस्तु अथवा पदार्थ जैसे वस्तु और जलादि ॥
जंगम (सं० त्रि० जंगमः = पशुपत्ती) कीट पतंगादि ॥
जीव (सं० पु० जीवः = प्राणिनि) मनुष्यादि ॥ ध्यान में लेने की बात है कि पंडितों ने सब पदार्थों को स्थावर और जंगम नामक दो भेदों में ही विशेष करके विभक्त किये हैं । परंतु चंद ने सब पदार्थों के चार भेद माने हैं । प्रथम स्थिर, जो सदैव स्थिर रहते हैं, जैसे पर्वतादि; दूसरे चर, जो सदैव स्थिर नहीं रहते, जैसे स्थानादि; तीसरे जंगम, जो जीव दूध नहीं पीते, जैसे कीट पतंगादि; और चौथे जीव, जो दूध पीते हैं, जैसे मनुष्यादि । हम ने किसी २ कवि को इन चारों शब्दों के प्रयोग करने के कारण चंद कवि को दोष देते हुए सुने हैं परंतु यह उनकी भूल है, क्योंकि उन्हों ने कवि के सूक्ष्म आशय को ध्यान देकर नहीं समझा है ॥

चंद वरदई=इस महाकाव्य का ग्रंथ-कर्त्ता कि जो हिन्दुओं के अंतिम बादशाह पृथ्वीराज जी चौहान का लँगोटिया मित्र और उन के दरबार का कविराज था । वह भट्ट जाति जो आज कल राव करके कहलाते हैं उस के जगात नामक गोत्र का था और उस के पुर्षा पंजाब देश के लाहौर नगर के रहने वाले थे और उन की यजमानी अजमेर के चौहानों की थी । उस की जैसी शूरवीरता इस महाकाव्य से विदित होती है उस का मुख्य कारण यही है कि वह पंजाब देश की अद्यावधि प्रसिद्ध वीर भूमि के तत्त्वों से उत्पन्न हुआ था और राजपूताने के हृदयरूपी अजमेर नगर में बड़ा हुआ था । वह षट-भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य, छंद शास्त्र, ज्योतिष, वैद्यक, मंत्रशास्त्र, पुराण, नाटक, और गान आदिक विद्याओं में अच्छा व्युत्पन्न पंडित था । उस के पिता का नाम वेण और विद्या-गुरु का नाम गुरुप्रसाद था । उस की दो स्त्रियों के नाम कमला अर्थात् मेवा और गौरी अर्थात् राजोरा और एक लड़की का नाम राज बाई और दश लडकों के नाम सूर१ सुन्दर२ सुजान३ जल्ह४ वल्ह५ बलिभद्र६ केहरि७ बीरचंद८ अवधूत अर्थात् योगराज९ और गुनराज १० थे । इस महाकाव्य के विषयों को वैसे तो उस ने समय २ पर बना कर कंठ कर रक्खे थे परंतु उन को ग्रंथाकार में उस ने ६०॥ दिन में रचा था और अंत को उस ने रासे की पुस्तक अपने लड़के जल्ह नामक को दियी थी । इस रासे के अतिरिक्त उस के रचे और भी कई एक ग्रंथ सुनने में आते हैं परंतु उन में सब से बड़ा ग्रंथ यह रासा है और अन्य सब ग्रंथ अब बिलकुल नहीं मिलते हैं । उस का सविस्तर जीवनचरित्र और वंशावली जहां तक हमारे जानने में ख्यातादि से आई है वह हम इस ग्रंथ के समाप्त होने पर छाप कर प्रसिद्ध करेंगे ॥

॥ कर्म्म-स्तुति ॥

कवित्त ॥ प्रथम मंगल प्रमान। निगम संपजय वेद धुर ॥
त्रिगुन साख त्रिहुँ चक्क। दरन लग्गो सु पत्त कर ॥
त्वचा ब्रम्ह उद्धरिय। सत्त फूल्यौ चावद्दिसि ॥
क्रम्म सुफल उद्यत्त। अम्रत सुम्रत मध्य वसि ॥
डुल्लै न वाय ब्रप नीति अति। स्वाद अम्रत जीवन करिय ॥
कलि जाय न लगै कलंक इहि। सत्ति मत्ति आढति धरिय ॥
कं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

इस छंद की प्रथम तुक की प्रथम यति के प्रथम टुकड़े में वीय पाठ अशुद्ध है उस के स्थान में हम ने विय किया है। और दूसरी यति के दूसरे टुकड़े में सिंचियइ के स्थान में सिंचिय और धर्म्मं के स्थान में धम्म और यत के स्थान में पत्त, भारहे को भारह, और परस को पारस शुद्ध किये हैं और यह शोधन ऐसे साधारण हैं कि जिनके लिये कोई तर्क लिखने की आवश्यकता नहीं है॥

इस रूपक में ग्रंथकर्त्ता वृत्त के रूपकालंकार से धर्म्म की स्तुति करता है॥

३ कवि ने इस रूपक के छंद को कवित्त संज्ञा दियी है। संप्रत काल में यह छप्पय, छप्पै, षट-पद, षटपदी आदिक नामों से प्रसिद्ध है परंतु सत्रहवीं शताब्दी के पहिले वह कवित्त नाम से ही प्रसिद्ध था। रूपदीप पिंगल वाले ने भी जो नीचे लिखा छप्पय का लक्षण कहा है उस में उस ने भी यह कहा है कि:—"सुन गरुड पंख पिंगल कहे। छप्पै छंद कवित्त यह" इस से सिद्ध होता है कि इस ग्रंथ के बनने के समय तक छप्पै का नामान्तर कवित्त करके प्रसिद्ध था॥

छप्पै लक्षण।

लहु दीरघ नहि नेम। मत्त चौबीस करीजे॥
ऐसे ही तुक सार। धार तुक्क चार भरीजे॥
नाम रसावल होय। और वस्तू कभि जानहु॥
उल्लाला की विरत। फेर तिथ तेरह आनहु॥
द्वै तुक्क बनावो अंत की। यत यत में अठ वीस गहु॥
सुन गरुड़ पंख-पिंगल कहै। छप्पै छंद कवित्त यह॥

इस के अतिरिक्त मंछ कवि कृत रघुनाथ रूपक में भी उस ने छप्पै छंदों को कवित्त कर के ही लिखे हैं॥

इस के पाठ को शोधन करने में ध्यान में लेने जैसी बात है कि प्रथम और मंगल शब्दों के बीच में जो बहुत सी पुस्तकों में किय शब्द है वह अधिक होने से अशुद्ध है क्योंकि उस पाद में कुल्ल ११ मात्रा होनी चाहियें। बेदले वाली पुस्तक में संपजय शब्द है और एशियाटिक सोसाईटी की छापी हुई पुस्तक में जो संपूजय किया गया है—इस में मेरी सम्मति यह है कि पाठ में तो संपजय ही रखना चाहिये परंतु अर्थ करने में संपूजय समझना चाहिये—क्योंकि संपूजय पाठ रखने

भुक्ति-स्तुति ।

कवित्त ॥ भुगति भूमि किय क्यार । वेद सिंचिय जल पूरन ॥
बीय सुवय लय मध्य । ग्यांन अंकू रस जूरन ॥
त्रिगुन साख संग्रहिय । नाम बहु पत्त रत्त छिति ॥
सुक्रम सुमन फुल्लयौ । सुगति पक्की द्रव संगति ॥
दुज सुमन डसिय बुध पक्क रस । वट विलास गुन पस्तरिय ॥
तरु इक्कसाख चय लोक मद्धि । अजय विजय गुन विस्तरिय ॥
छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

पूर्व कवियों की स्तुति और उच्छिष्ट संज्ञा कथन ॥

॥ भुजंगप्रयात ॥

प्रथमं भुजंगी सुधारी ग्रहंनं । जिनें नाम एकं अनेकं कहंनं ॥

से छंद टूटता है । गुजराती भाषा में ऐसे शब्द बहुत आते हैं जैसे मुकुन्दराम का मकन्दराम, तुलसी का तलशी, और शिव का शव । ऐसे मुख दोष के कारण से विगड़े हुए शब्दों के रूपों के लिये एक यह श्लोक भी प्रसिद्ध है:–

गुर्ज्जरा मुख दोषेण । शिवोपि शवतां गता: ॥
तुलसी तलशी जाता । मुकुन्दोपि मकन्दतां ॥

इस के अतिरिक्त चंद की हिन्दी में ऐसे प्रयोग बहुत से आवेंगे जैसे "विन्दलालाट प्रसेद किये" यहां प्रस्वेद का प्रसेद हुआ है । चिंहु के स्थान में चिहुँ किया है क्योंकि यहां अर्ध अनुस्वार प्राप्त है । लगा के स्थान में लग्गा. उदयत के स्थान में उदयत्त । लगे के स्थान में लग्गे । और सति मति के स्थान में सत्ति मत्ति सुधारे हैं क्योंकि ऐसे पाठ सुधारने को छंद के टूटने का दोष हम को स्वयम् सचेत करता है ॥

इस रूपक में भी चंद कवि रूपकालंकार से कर्म की स्तुति करता है ॥

४ इस के पाठ में एशियाटिक सोसाइटी आदि की पुस्तकों में जो अंकूर और सजूरन पाठ हैं वह एक बालक भी जान सक्ता है कि बड़े ही अशुद्ध हैं किन्तु दृष्टि देने से हमारे किये पदच्छेद से सार्थक पाठ हो जाते हैं अर्थात् अंकू रस जूरन । हम ने रत के स्थान में रत्त छित्ति के स्थान में छिति पाठ किये हैं । हमारे डसिय पाठ के स्थान में आगरा कालेज और बेदले आदि की पुस्तकों में झसिय पाठ है परंतु वह अशुद्ध है । मालूम होता है कि उन के लेखकों ने ड को ऐसा झ समझ कर अशुद्ध पाठ लिख दिया है और अर्थ पर दृष्टि देकर प्रति नहीं कियी है ॥

स्मरण में रखना चाहिये कि इस रूपक में कवि रूपकालंकार से मुक्ति की स्तुति करता है । अर्थात् चंद ने दूसरे तीसरे और इस चौथे रूपकों में क्रम से धर्मेश्व, कर्मेश्वर, और मुक्तेश्वर नामक ईश्वरों के मंगलाचरण किये हैं ॥

५ इस भुजंगप्रयात नामक छंद का लक्षण चंद कवि के माने हुए छंद ग्रंथों में से पिंगल मुनि

दुती लभ्भयं देवनं जीवतेसं। जिनैं विश्व राख्यौ बली मंच सेसं॥
चवं वेद वंभं हरी किंत्ति भाखी। जिनैं ध्रम्म साध्रम्म संसार साखी॥
तृती भारती व्यास भारत्थ भाख्यौ। जिनैं उत्त पारथ्थ सारथ्थ साख्यौ॥
चवं सुक्खदेवं परीखत्त पायं। जिनैं उद्धर्यौ अव्व कुवंस रायं॥
नरं रूप पंचम्म श्रीहर्ष सारं। नलैराय कंठं दिने पद्द हारं॥
छटं कालिदासं सुभाखा सुबद्धं। जिनैं बागवानी सुबानी सुबद्धं॥
कियो कालिका सुख्ख वासं सुसुद्धं। जिनैं सेत बंध्योति भोज प्रबंधं॥
सतं डंडमाली उल्लाली कवित्तं। जिनैं बुद्धि तारंग गंगा सरित्तं॥
जयद्देव अट्ठं कवी कव्विरायं। जिनैं केवलं किंत्ति गोविंद गायं॥
गुरं सब्ब कव्वीं लहू चंद कव्वी। जिनैं दर्सियं देवि सा अंग हव्वी॥
कवी किंत्ति किंत्ती उकत्ती सुदिख्खी। तिनैं की उचिष्टी कवी चंद भख्खी॥
छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ ५ ॥

यह लिखते हैं कि "भुजंग प्रयातं यः॥ ३८॥ अर्थात् जिस के पाद में चार यकार (यगण) हों वह भुजंगप्रयात नामक छंद कहाता है॥

इस पांचवें रूपक के जो पाठ एशियाटिक सोसाईटी की और अन्य पुस्तकों में बहुत अशुद्ध हैं वह यह हैं:— प्रथम। ग्रहनं। कहनं। लभ्भयं। भारथं। उतपारथ। सारथ। सुखदेवं। परीषतं। उद्दर्यौ अव। कुरुवंस। पद्द। कालिदास। मुष्य। सुसुद्द। वंध्यौ। तिमोजन। बुद्धितारंग। गंगासरित्तं। जयदेव। अठं। केवल। दरसिय। उकति। तिन। कवि। और भष्यो। इन में से प्रत्येक को सिद्ध करने के लिये जो हम सतर्क विवेचना करें तो बहुत स्थान चाहिये परंतु मैं आशा करता हूं कि पुरातत्त्ववेत्ता इन को हमारे शुद्ध पाठों से मिलाकर और जो कुछ चंद कवि की हिन्दी के नियम हम ने संक्षेप में पहिले प्रकाश किये हैं उन से विचार कर सिद्ध कर लेंगे।

इस रूपक में चंद कवि अपने से पहिले हुए मुख्य २ कवियों की स्तुति करके अंत की दो तुकों में उन को अपने गुरु मान कर और आप निरभिमानी होकर अपने काव्य को उनके कहे काव्य की उच्छिष्टी होने की संज्ञा देता है। जैसे कि इस महाकाव्य के किसी २ रूपक में चंद के समय के पीछे वरते हुए वृत्त लिखे प्राप्त होते हैं और उन पर से इस ग्रंथ की प्रामाणिकता में संदेह किया जाता है वैसे ही यह रूपक क्या इस ग्रंथ की प्रामाणिकता के सिद्ध करनेवाला एक प्रमाण रूप नहीं है? और अन्य कवि जैसे श्रीहर्ष और जयदेवादि के समय के निश्चय और निर्णय करने में पुरातत्त्ववेत्ताओं का सहायक और उपकारी नहीं हो सक्ता है?

इस के अतिरिक्त इस छंद की तीसरी तुक में जो एक वंभं शब्द चंद कवि ने प्रयोग किया है उस को देख कर चारण राव और भाट जाति के अच्छे २ कवियों को हम ने आश्चर्य करते हुए देखे हैं और वे इस का अर्थ अंड बंड करते हैं। कोई उस को ब्रह्म शब्द का अपभ्रंश बतलाते हैं और कोई चारों वेदों के ब्राह्मण ग्रंथों का वाचक बतलाते हैं और कोई कहते हैं कि महादेव की मूर्ति के आगे जो गाल बजा के बंबं शब्द मुख से करते हैं और ऐसा करने से महादेव प्रसन्न हो

॥ चंद की स्त्री अपने पति के उच्छिष्ट संज्ञा कथन में शंका करती है ॥

दूहा ॥ उचिष्ट चंद छंदह बयन । सुनत सु जंपिय नारि ॥
तनु पविच पावन कविय । उकति अनूठ उधारि ॥
छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ६ ॥

कवित्त ॥ कहै कंति सम कंत । तंत पावन वड़ कव्विय ॥
तंत मंत उच्चार । देवि दरसिय मब्भि चव्विय ॥

जाते हैं उस का वाचक है परंतु इस शब्द का हम पता लगाकर बताते हैं कि यह बंभं चंद को हिन्दी का भूतकालिक क्रियावाचक शब्द है और संस्कृत भाषा में यङ्लुगन्तप्रक्रिया के प्रयोगों में जो बंभणीत बभंति प्रयोग सिद्ध होता है उस से बना है और उस का यहां फिर २ वा बार २ पढ़ा वा भणा का अर्थ है। क्योंकि "चवं वेद बंभं हरी कित्ति भाखी" इस तुक का अर्थ यह है कि जिस "जीवतेस ने चारों वेदों को बार २ पढ़े वा भणें और हरी की कीर्ति को भाखो"। जो मनुष्य संस्कृत भाषा में अच्छा व्युत्पन्न और पक्षपात और हठ जैसे दोषों से विमुक्त और सत्य का दृढ़ अवलंबन करनेवाला है वह मैं आशा करता हूं कि ऐसे प्रयोगों को देख कर कदापि यह नहीं कहैगा कि इस महाकाव्य का ग्रंथकर्त्ता चंद संस्कृत भाषा में अव्युत्पन्न था ॥

इस रूपक में चंद कवि आठ कवियों को अपने गुरु मान कर उन की स्तुति और उन की काव्य रचन–शक्ति का वर्णन करता है वह सब से पहिले भुजंगी नाम से परमेश्वर को कवि ग्रहण करता है क्योंकि वेदादिक में उस का कवि नाम कहा है यथा:–

"होता वा देव्या कवी०" यजु: "प्रथम वरजं भेषजं कविम्०" यजु:
"कविर्मनीषी परिभू: स्वयंभू:०" ईशोपनिषत्
"कवि: क्रान्तदर्शी सर्वेडक्ष नान्यतोऽस्ति द्रष्टा" इश्रुते: ॥ शा० भा०
"कविं पुराणमनुशासितारम्०" गीता ॥

दूसरे जीवतेशं से प्राणनाथ अर्थात् ब्रह्मा कि जो आदि कवि कहाता है जैसे भागवत में कहा है कि "तेने ब्रह्महृदा य आदि कवये मुह्यन्ति यत् सूरय"

बाकी सब कवियों के विषय में कुछ विशेष कहने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सर्व साधारण लोग व्यासादि के नाम से भले प्रकार ज्ञात हैं ॥

६–७–कवि चंद ने जो पहिले रूपक में अपने काव्य को अपने से पहिले हुए कवियों के काव्य का उच्छिष्ट होना कहा है उसे सुन कर उस की स्त्री उच्छिष्ट संज्ञा में आश्चर्य के साथ शंका और अपने पति के गुणों का वर्णन करती है अर्थात् इन रूपकों में कवि चंद ने अपनी स्त्री के प्रश्नोत्तर के प्रसंग से अपने काव्य की उच्छिष्ट संज्ञा के हेतु और अपने गुण प्रकाश किये हैं। इन में सम, कंति और कंत शब्दों के प्रयोग विद्वानों की दृष्टि में रहने योग्य हैं। सम (सं० अ० सम् = संगे,– संबन्धे, समुच्चये,) को अथवा प्रति, और सम ब्रह्मरूप में सम शब्द तुल्य के अर्थ में कवि ने प्रयोग किया है; कंति (सं० स्त्री० कम् = ति) पत्नी अथवा स्त्री, और कंत (सं० पु० कम् + त) पुरुष अथवा

तंत वीर उथंत। रंग राजन सुख दाइय॥
बाल केल प्रत्यंग। सुरनि उद्धारि कवितादूय॥
अवलंब उकति उचार करि। जिहित सोहि कोविद रचै॥
सम ब्रह्मरूप या सब्द कहुँ। क्यों उचिष्ट कवियन कचै॥
छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ ७ ॥

॥ चंद अपनी स्त्री की शंका का समाधान करता है ॥

कवित्त ॥ सम वनिता वर बंदि। चंद जंपिय कोमल्ल कल॥
सबद ब्रह्म इह सत्ति। अपर पावन कहि निर्मल॥
जिहित सबद नहिं रूप। रेख आकार ब्रन्न नहिं॥
अकल अगाध अपार। पार पावन चयपुर महिं॥
तिहिं सबद ब्रह्म रचना करौं। गुरु प्रसाद सरसें प्रसन॥
जद्यपि सु उकति चूकौं जुगति। तौ कमल वदनि कवितह हँसन॥
छं॥ १३ ॥ रू० ॥ ८ ॥

॥ चंद की स्त्री पुनश्च शंका करती है ॥

कवित्त ॥ तुम बानी बरबंद। नाग देखंत विमल मति॥
छंद भंग गन रहित। कंठ कौमार काव्य छन॥

पति, यह तीनों चंद की हिन्दी के संस्कृत–सम प्रयोग हैं। और तंत और मंत शब्दों के प्रयोग भी दृष्टि देने जैसे हैं तंत पावन में तंत = तत्व और तंत मंत में तंत = तंत्र और मंत = मंत्र के वाचक कवि ने प्रयोग किये हैं॥

अन्य पुस्तकों में यह अशुद्ध पाठ हैं:– सु, जंपिय, कवि, सुख, दाईय, कवितादूय, को, विद, समब्रह्मरूप, कहुं, कविय और न॥

८ चंद इस रूपक में अपनी स्त्री को उस की शंका का उत्तर देकर समाधान करता है। शब्दब्रह्म (सं० शब्दात्मक ब्रह्म) शब्द का प्रयोग चंद की व्याकरण और वेदान्त विद्या के ज्ञान का द्योतक है। गुरुप्रसाद शब्द यहां श्लेषार्थ में कवि ने प्रयोग किया है क्योंकि ख्यातियों के अनुसार चंद के विद्या–गुरु का नाम गुरुप्रसाद था। यद्यपि कुछ विशेष वृत्त नहीं मिलते तथापि यह गुरुप्रसाद नामक पंजाब देश का रहनेवाला एक बड़ा पंडित हुआ है। कवितह चंद की हिन्दी का निज प्रयोग है और उस का अर्थ कवित्त अर्थात् काव्य रचनेवाले कवि का है। किसी २ पुस्तक में जो बरबंदि, अमल, अबल, चयपूर, महि, तिहि, और प्रसन्न पाठ हैं वे अशुद्ध हैं॥

९ जिन पुस्तकों में यह पाठ हैं:– अमीय, सुनर, और समलहहि, वह अशुद्ध हैं इस में दूसरी तुक का दूसरा पाद "कंठ कौमार काव्य छत" विद्वानों के ध्यान देने जैसा है। इस का आशय यह

बुधि तरंग सम गंग । उकति उच्चार अमिय कल ॥
सुरन सुनत विहसंत । मंत जनु वस्य करन बल ॥
अवतार भूप प्रिथिराज पहु । राज सुख तिन सम लहहि ॥
बीराधि बीर सामंत सब । तिन सु गल्ह अच्छी कहहि ॥
छं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ ९ ॥

॥ चंद अपनी स्त्री की शंका का पुनश्च समाधान करता है ॥

कवित्त ॥ गज गवनी प्रति चंद । छंद कोमल उचारिय ॥
मनहरनी रस बेलि । सुरन सागर रस धारिय ॥
बंक नयन बय बाल । प्रान वल्लभ सुखदाइय ॥
अगुन निगुन गुरु ग्रहनि । गवरि पूजा फल पाइय ॥
भए आदि अंत कविता जिते । तिन अनंत गति मति कहिय ॥
अनेक ग्रंथ तिन बरनबत । यों उचिष्ट मति मैं लहिय ॥
छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ १० ॥

॥ चंद अपनी स्त्री के आगे ईश्वर के ऐश्वर्य का वर्णन करता है ॥

॥ पद्धरी ॥

प्रनम्म प्रथम मम आदिदेव । ऊंकार सबद जिन करि अछेव ॥
निरकार मध्य साकार कीन । मनसा विलास सह फल फलीन ॥ १६ ॥
त्रयगुनह तेज त्रयपुर निवास । सुर सुरग भूमि नर नाग भास ॥
फुनि ब्रह्मरूप ब्रह्मा उचारि । कथि चतुरवेद प्रभु तत्त सारि ॥ १७ ॥

है कि चंद की स्त्री अपने पति से कहती है कि तुम कंठ कौमार काव्य कृत हो अर्थात् तुम को कौमार काव्य कंठ है। क्या यह भी चंद के संस्कृत भाषा में व्युत्पन्न होने का एक अच्छा प्रमाण नहीं है?

१० अन्य पुस्तकों में यह पाठ अशुद्ध हैं बेली, सुखदाईय, जिते, बरन, बत और में। इस रूपक में गवरि शब्द श्लेपार्थ में कवि ने प्रयोग किया है क्योंकि ख्यातियों में चंद की स्त्री का नाम गौरी करके प्रसिद्ध है ॥

११ इस रूपक के छंद का नाम पद्धरी है और उस का लक्षण यह है:—

दस करो प्रथम फिर षट मिलाय। गिन षोडश मत्ता पाय पाय ॥
इक जगन अंत में धरत सोय। भनि शेष पद्धरी छंद होय ॥ रू० दी० ॥

इस रूपक में चंद अपनी स्त्री को ईश्वर का ऐश्वर्य वर्णन कर बताता है और पहिली तुक में प्रनम्य पाठ नहीं ग्रहण करना चाहिये किन्तु प्रनम्म पाठ ठीक है अर्थात् चंद अपनी स्त्री को

॥ चंद की स्त्री अपने पति से अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका पूछती है ॥

दूहा ॥ सुनत काव्य कवि चंद कौ । चित आनन्दी नारि ॥
तुम बानी बानी प्रसन । हसन हुवंत निवारि ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ कहै कंति मतिवंत । तंत रसना रस सागर ॥
तुम गुन श्रवन सुहंत । जानि चमकंत कलाधर ॥
तुम देवी वरदान । दान दीजै मुहि कव्विय ॥
अष्टादसह पुरान । नाम परिमानह सव्विय ॥
तुम कथत कथन आनन्द मुहि । अग्ग पच्छ भव सुद्धरै ॥
अग्यान तिमर नट्ठय सुनत । अध्ध कमल हिय उद्धरै ॥
छं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ १३ ॥

॥ चंद अष्टादश पुराणों की अनुक्रमणिका का कथन करता है ॥

पद्धरी ॥ ब्रह्मन्यदेव सम वासुदेव । अष्टदस पुरान तिन कहि सुभेव ॥
तिन कहौं नाम परिमान ब्रन्न । जिन सुनत सुद्ध भव होत तन्न ॥ ३१ ॥
ब्रह्मह पुरान दस सहस जुहि । जिहि पढ़त सुनत तन तप्प छुहि ॥
पच्चास पंच हज्जार गन्नि । पद्मह पुरान तिन कह्यौ ब्रन्नि ॥ ३२ ॥
तेतीस सहस सैं चारि जानि । विष्णू पुरान विष्णू समानि ॥

साहब ने जो अरबी صبر सब्र शब्द होना अनुमान किया है वह अयुक्त है क्योंकि अरबी صبر सब्र शब्द का अर्थ यहां सर्वरीत्या अघटित है किन्तु मानना चाहिये कि चंद ने हिन्दी सवरि शब्द का छंद टूटने के कारण सबरि प्रयोग किया है और रासे की किसी २ पुस्तक में ऐसा पाठ भी मिलता है। जो इस शब्द को रकार और बकार के उलट पुलट लिखे जाने से सरब शब्द होना भी हम माने तथापि यह कुछ असंगत नहीं है ॥

१२ इस में प्रसन्न शब्द का पाठ किसी २ पुस्तक में मिलता है परंतु यहां छंद टूटने के कारण कवि ने प्रसन करके प्रयोग किया है ॥

१३ इस कवित्त के भिन्न २ पुस्तकों में जो यह पाठ मिलते हैं वे अयुक्त हैं जैसे:—कहे, वर, दानि, पछू, नठ्ठ, य, अंध्धक, और मल ॥

१४ इस रूपक के अशुद्ध पाठान्तर अन्य पुस्तकों में यह हैं:— अष्टादस, कहै, सभेव, ब्रन्निहो, तवनि, तप्प, पंचास, पंचह, च्यारि, तिण्णु, अठार, भागवत, तहां, तेईस, दुख, संपूर, अग्नि, पठि इग्यार, अक्ख, पक्ख, कूरभ, मक्ख, भक्ति, डरांन, सहंस, और नंस ॥

इस रूपक के ४१ वें छंद की एक तुक भाषा के कवि घटती बता कर चंद पर दोषारोपण करते हैं परंतु यह उन की भूल है क्योंकि चंद ने इस छंद को एक ही तुक में कहा है

॥ गाहा ॥ पय सक्करी सुभत्तौ। एकत्तौ कनय राय भोयंसी ॥
कर कंसी गुज्जरीय। रब्बरियं नैव जीवंति ॥
छं० ॥ ४३ ॥ रू० ॥ १६ ॥

सत्त खनै आवासं। महिलानं मद्द सद्द नूपरया ॥
सतफल बज्जुन पयसा। पब्बरियं नैव चाखंति ॥
छं० ॥ ४४ ॥ रू० ॥ १७ ॥

रब्बरियं रस मंदं। क्यूं पुज्जति साध अमियेन ॥
उकति जुकत्तिय ग्रंथं। नथि कत्थ कवि कत्थिय तेन ॥
छं० ॥ ४५ ॥ रू० ॥ १८ ॥

याते वसंत मासे। कोकिल झंकार अंब बन करयं ॥
बर बब्बूर विरष्षं। कपोतयं नैव कलयंति ॥
छं० ॥ ४६ ॥ रू० ॥ १९ ॥

सहसं किरन सुभाउ। उगि आदित्य गमय अंधारं ॥
अय्यं उमा न सारो। षोइलयं नैव झलकंति ॥
छं० ॥ ४७ ॥ रू० ॥ २० ॥

कज्जल मद्धि कस्तूरी। रानी रेहंत नयन अंगारं ॥
कां मसि घसि कुंभारी। किं नयने नैव अंजंति ॥
छं० ॥ ४८ ॥ रू० ॥ २१ ॥

ईस सीस असमानं। सुर सुरी सलिल तिष्ट नित्यानं ॥
पुनि गलती पूजारा। गडुवा नैव ढारंति ॥
छं० ॥ ४९ ॥ रू० ॥ २२ ॥

१६–२२ गाहा छंद का लक्षण यह है:–
गाहा पहिले बारह। दूजे अठारहे कला राजे ॥
तीजे बारह धारहु। पंद्रह चौथे तहां छाजे ॥

इन गाहा छंदों में अशुद्ध पाठान्तर यह हैं:– सतफल, क्यूपने, बंबू, रवि, रष्षं, नगय, सुरीस, लिल, और फुनि ॥

बाईसवें गाहा के "ईस सीस असमानं" में जो असमानं शब्द है उस को जो मिस्टर जौन बीम्स साहब फारसी आसमान آسمان होना अनुमान करते हैं उस से मैं बिलकुल्ल असम्मत हूं। मैं इस को सं० असमानं, त्रि० (नास्ति समानो यस्य।) अतुल्यं, विजातीयं, सजातीयभिन्नं, का वाचक समझता हूं अर्थात् ईस = परमेश्वर का; सीस = शिर; असमानं = अतुल्य है।

॥ चंद उत्तापित होकर अपने को पूर्व-कवियों का दास होना, उन की उक्ति को कहना और अपनी को बखाना कहता है ॥

॥ दूहा ॥ कहां लगि लघुता वरनवों । कविन दास कवि चंद ॥
उन कवि ते जो उब्बरी । सो वकहों करि छंद ॥
छं० ॥ ५० ॥ रू० ॥ २३ ॥

॥ चंद खलों का स्वभाव वर्णन कर के सुजनों के निमित्त अपना काव्य रचन करना कहता है ॥

॥ दूहा ॥ सरस काव्य रचना रचौं । खल जन सुनि न हसंत ॥
जैसे सिंधुर देखि मग । स्वान सुभाव सुसंत ॥
छं० ॥ ५१ ॥ रू० ॥ २४ ॥

तौ पनि सुजन निमित्त गुन । रचिये तन मन फूल ॥
जूका भय जिय जानिकैं । क्यौं डारियै दुकूल ॥
छं० ॥ ५२ ॥ रू० ॥ २५ ॥

॥ सरस्वती की स्तुति ॥

॥ साटक ॥ मुत्ताहार विहार सार सुबुधा, अबुधा बुधा गोपनी ॥
सेतं चीर सरीर नीर गहिरा, गौरी गिरा जोगनी ॥
बीना पानि सुबानि जानि दधिजा, हंसा रसा आसिनी ॥
लंबोजा चिहुरार भार जघना, विघ्ना घना नासिनी ॥
छं० ॥ ५३ ॥ रू० ॥ २६ ॥

॥ गणेश की स्तुति ॥

कचंजा मद गंध राग रुचयं । अलिभूराकादिता ॥
गुंजा हार अधार सार गुनजा, झंझा पया भासिता ॥
अग्रेजा श्रुति कुंडलं करि कर, स्तुहीर उद्दारयं ॥
सोयं पातु गनेस सेस सफलं, पृथ्राज काव्यं कृतं ॥
छं० ॥ ५४ ॥ रू० ॥ २७ ॥

२३-२५ इन में जो किसी २ पुस्तक में तेतो पाठ है वह अशुद्ध है । कवि चंद ने अपनी लघुता वर्णन करते २ अंत को उत्तापित होकर जो यह दो दोहे (२४ ॥ ५२ ॥ + २५ ॥ ५३) कहे हैं वह इस महाकाव्य के पाठकों और खंडन करने वालों के ध्यान में रहने योग्य हैं ॥

२६-२७ इन रूपकों में यह अशुद्ध पाठान्तर हैं :– गोपनी, गिराजोगनी, सुवानी, दधि, जाहं,

॥ गणपति की उत्पत्ति की कथा ॥

विराज ॥ रतं रत्त भारी। कह्लना बिचारी ॥
लियै मात नक्खं। बियो संख लक्खं ॥ ५५ ॥
मिले एक दीहं। रमै काम सीहं ॥
इकं रिष्य आयो। दियो काम चायो ॥ ५६ ॥
खिज्यौ रिष्षि भारी। दियो काम डारी ॥
भयो पुत्र तब्बं। धजा मोद सब्बं ॥ ५७ ॥
सिरो मालधारी। गनेसं बिचारी ॥
खिजे तब्ब ईसं। भयो रोम बीसं ॥ ५८ ॥
अबल्ला इकल्ली। वियो पुर्ष भिल्ली ॥
डके डोर नइं। हन्यौ पुत्र बइं ॥ ५९ ॥
खिजी मात भारी। सरायं बिचारी ॥
करी जाकु ईसं। धस्यौ पुत्र सीसं ॥ ६० ॥
सवै कज्ज अग्गै। तुही नाम लग्गै ॥
कलानंद रूपं। गनेसं सभूपं ॥ ६१ ॥
इकं दंन्त दन्ती। विराजंत कंती ॥
सुभे दंत ऐसे। कविंदं प्रसंसे ॥ ६२ ॥
मनो भूमि धारी। बराहं उपारी ॥
इसी नट्ठ तेजं। कला सोम केजं ॥ ६३ ॥
नमो देव कइं। प्रजा ईस मइं ॥
भखै भूत प्रेतं। तिजारी न हेतं ॥ ६४ ॥

सारसा, लंबी, जा, विघना, छन्नं, जा, मदं, अग्ने, जा, कर:, स्तु, दीर, पृथिराज, काव्य और छते। इन में एक पृथीराज शब्द के स्थान में जो हमने पृथ्राज पाठ रक्खा है वह एक रासे की पुस्तक में है और चंद का ऐसा प्रयोग देख कर राजपूताने और बृज की ग्रामीण भाषाओं से परिचित् विद्वानें को कुछ आश्चर्य न होगा क्योंकि उनें ने ऐसे ही गजराज के स्थान में गज्राज बोलते और लिखते लोगें को देखे और सुने होंगे। यह चंद की हिन्दी के देशी प्रसिद्ध नामक भेद का उदाहरण है ॥

२८ अन्य पुस्तकों में पाठान्तर यह हैं:—कह्ना, सात, नष्ष, दियो, रिषि, अवल्लाइ, कल्ली, पुरुष, डोरं, धर्वा, तुहि, दट्ठ, दैहै, देह, भगतं, लछी, लच्छी अथं, नथं, समती, पती, धरे, त्रिलोक और ईसा। इस रूपक के छंद का नाम चंद ने विराज कहा है परंतु उस का नामान्तर संखा नारी और उस का लक्षण यह है:—

इकं दीह एकं । दुती दीह मेकं ॥
भगत्तं सुचक्री । दियो लच्छि वक्री ॥ ६५ ॥
इकं चोख अथ्यं । करै नाक नथ्यं ॥
सुभत्ती सनत्ती । जलं माहि पत्ती ॥ ६६ ॥
धरै आक सीसं । त्रिलोकेस ईसं ॥
त्रयं वेद जक्की । प्रियं चंद भक्की ॥ छं० ॥ ६७ ॥ रू० ॥ २८ ॥

॥ शंकर की स्तुति ॥

दूहा ॥ नमस्कार संकर कियौ । सरसैं वुधि कवि चंद ॥
सति लंपट लंपट नवी । अबुधि मंच सिसु इंद ॥
छं० ॥ ६८ ॥ रू० ॥ २९ ॥

साधन भोग सँयोग रजि । मंडन आव अखूट ॥
नमो उमा उर आभरन । जय वंधन जट जूट ॥
छं० ॥ ६९ ॥ रू० ॥ ३० ॥

विराज ॥ जटा जूटं वंदं । लिलाटंत चंदं ॥
विराजंत छंदं । भुजंगी गलिंदं ॥ ७० ॥
सिरोमाल इंदं । गिरीजा अनंदं ॥
सिरै सिंधि नद्दं । रनैं वीर मद्दं ॥ ७१ ॥
करी चर्म सद्दं । करं काल खद्दं ॥
उनैं गंग हद्दं । चखी अग्गि दद्दं ॥ ७२ ॥
प्रलै जानि जद्दं । जयो जोग सद्दं ॥
घटा जानि भद्दं । जरै काम नद्दं ॥ ७३ ॥
हरै चाहि वद्दं । रचै मोह कद्दं ॥
बचै दूरि दद्दं । नटे भेख रद्दं ॥ ७४ ॥
नमो ईस इंदं । बदै भट्ट चंदं ॥
छं० ॥ ७५ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

छई वर्ण वारो । यगन्नै दुधारो ॥
रचो पाव चारी । करो संखनारी ॥ श्रीधर कवि कृत पिंगल ॥

३० पाठान्तरः—सरसै । सती । संजोग ॥

३१ पाठान्तरः—गिरिजा । रनै । वीर । खद्दुं । गंगहद्दुं । हद्दुं । संद्दुं ॥ इस रूपक का छंद ७५ चंद की संस्कृत काव्य–सम–श्लोकार्द्ध शैली का दूसरा उदाहरण है। देखो टिप्पण १४ को ॥

दूहा ॥ करियै भक्ति कवि चंद हर । हरि जंपिय इह भाइ ॥
ईस स्याम जू जू कहै । नरक परंतह जाइ ॥
छं० ॥ ७६ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

स्लोक ॥ परात्परतरं यांति । नारायण परायणं ॥
न ते तच गमिष्यंति । ये दुष्यंति सद्देश्वरं ॥
छं० ॥ ७७ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

साटक ॥ गंगाया अगुलत्त वसन्न मसनं, लच्छी उमा दोवरं ॥
संखं भूत कपाल माल असितं, वैजंति माला हरी ॥
चर्मं सध्य विभूति भूतिक युगं, विभूति माया क्रमं ॥
पापं विहरति मुक्ति अप्पन वियं, वीयं वरं देवयं ॥
छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

॥ कवि की आशा का स्वरूप वर्णन ॥

गाहा ॥ आसा महीव कव्वी । नव नव कित्तीय संग्रहं ग्रंथं ॥
सागर सरिस तरंगी । बोहथ्थयं उक्तियं चलयं ॥
छं० ॥ ७९ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

॥ चंद का काव्य समुद्र कैसा है ॥

दूहा ॥ काव्य समुद्र कवि चंद कृत । मुगति समप्पन ग्यान ॥
राजनीति बोहिथ सुफल । पार उतारन यान ॥
छं० ॥ ८० ॥ रू० ॥ ३६ ॥

छंद प्रबंध कवित्त जति । साटक गाह दुहथ्थ ॥
लहु गुर मंडित खंडिय ।ह । पिंगल अमर भरथ्थ ॥
छं० ॥ ८१ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

---

३२ पाठान्तरः—करिये ।
३३ पाठान्तरः—यांति । ज्ञे। यह श्लोक चंद के शुद्ध संस्कृत काव्य रचन का प्रथम उदाहरण है ॥
३४ पाठान्तरः—अगुलत्त । वसनमसनं । लछी । कपालमाल । चमभूतिकयुगं । मायाक्रमं । मुक्तिं । वरंदेवयं ॥
३५ पाठान्तरः—कित्ती ॥
३६ पाठान्तरः—ग्यांन । यांन ।
३७ पाठान्तरः—भरत्थ ।

॥ कोई अशुद्ध पढ़ने वाला चंद को काव्य-संबन्धि दोष न दे ॥

कवित्त ॥ अति ढंच्यौ न उघार । सलिल जिमि रिप्पि सिवालह ॥
बरन बरन सोभंत । हार चतुरंग विसालह ॥
विमल अमल वानी विसाल । वयन वानी वर ब्रंनन ॥
उक्तिन वयन विनोद । मोद श्रोतन मन हर्नन ॥
युत अयुत जुक्ति विचार विधि । वयन छंद कुच्यौ न कह ॥
घटि वढ्ढि मति कोई पढइ । तौ चंद दोस दिज्जो न वह ॥
छं० ॥ ८२ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

॥ इस ग्रंथ में चंद ने क्या२ कथन किया है ॥

श्लोक ॥ उक्ति धर्म विशालस्य । राजनीति नवं रसं ॥
षट् भाषा पुराणं च । कुरानं कथितं मया ॥
छं० ॥ ८३ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

॥ रासे को रसिया सरस उच्चारैं ॥

कवित्त ॥ चरन नीम अच्छिर सुरंग । पाट लघु गुरु विधि संडिय ॥
सुर विकास जारी सु सुप्प । उक्ति रस गौरव नि छंडिय ॥
जुगति छोह विस्तरिय । सीढियन घाट सु वट्टिय ॥
मद्दि मंडन मेधान । याहि मंडन जस सद्दिय ॥

---

३८ पाठान्तरः– पिप्पि । विशाल । विच्चार । पढई । दिज्जो । दिज्जै ।

३९–कवि का यह संस्कृत श्लोक हमारे पाठकों के सदा ध्यान में रखने योग्य है इस के सूक्ष्म विचार से हम जान सक्ते हैं कि षटभाषा और कुरान की भाषा के जो२ शब्द इस महाकाव्य में प्रयोग हुए हम देखते हैं वह कवि ने जानकर प्रयोग किये हैं और कुरान की भाषा के शब्दों के प्रयोग का विषय कोई आश्चर्यदायक भी नहीं है क्योंकि मुसलमानों का प्रवेश भरत-खंड में शहाबुद्दीन ग़ोरी के बहुत ही पहिले हो गया है । इस के अतिरिक्त हम को यह भी निश्चय मानना चाहिये कि चंद संस्कृत भाषा में निपुण था और षट्भाषा और कुरान की भाषा से भी अपरिचित् नहीं था और जो२ छंद इस महाकाव्य में संस्कृत भाषा में लिखे हमारे दृष्टि आते हैं वह उस की संस्कृत–काव्य–रचन शक्ति के उदाहरण रूप हैं । यह श्लोक चंद के माने हुए पिंगल छंद सूत्रम् के अनुसार लौकिक अनुष्टुप अर्थात् अष्टाक्षर पद छंद है । इस रूपक के विशेष पाठान्तर अन्य पुस्तकों में दृष्टि नहीं आते किन्तु केवल विशालं के स्थान में विसालं और पुराणं के स्थान में पुरानं पाठ हैं ॥

४० पाठान्तरः–अछिर । सुरंग । समुप्पं । मुप्प । गौपिन । सिढियन । मेधान । याहि । चित्ररंग । विश्वकर्म कर्म । उच्चारिय ॥

घन तर्क उतर्क वितर्क जति। चित्र रंग करि करि अनुसरिय ॥
विश्वकर्म कवि निर्म्मइय। रसियं सरस उच्चरिय ॥
॥ छं० ॥ ८४ ॥ रू० ॥ ४० ॥

॥ रासे का तत्त्वज्ञान कैसे होगा ॥

अरिल्ल ॥ तर्क वितर्क उतर्क सु जत्तिय। राज सभा सुभ भासन भत्तिय ॥
कवि आदर सादर बुध चाहौ। पढि करि गुन रासौ निर्बाहौ ॥
॥ छं० ॥ ८५ ॥ रू० ॥ ४१ ॥

धर्म्म अधर्म्म न बुद्धि बिचारौ। नयन नारि निय नेह निहारौ ॥
कोक कला कल केलि प्रकासौ। अरथ करौ गुन रासौ भासौ ॥
॥ छं० ॥ ८६ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

पारासर जो पुत्त विहासह ॥ सतवंती अर्थ्थं गुर भासह ॥
प्रब्ब अठार सवा लष लष्षै। तौ भारथ गुर तत्त विसष्षै ॥
॥ छं० ॥ ८७ ॥ रू० ॥ ४३ ॥

॥ जो रासे को सुगुरु से पढता है वह कुमति नहीं दरसाता ॥

कवित्त ॥ रासौ बर बुद्धि सिद्धि। सुद्धि सो सब्ब प्रमानिय ॥
राजनीति पाइयै। ग्यान पाइयै सु जानिय ॥
उक्ति जुगति पाइयै। अरथ घटि बढि उन मानिय ॥
या समान गुन आप। देव नर नाग बखानिय ॥
अविक्त भूत ब्रतह गुनित। गुन त्रिकाल सरसइय ॥
जो पढय तत्त रासौ सुगुर। कुमति मति नहिं दरसइय ॥
॥ छं० ॥ ८८ ॥ रू० ॥ ४४ ॥

४१–४३–इस रूपक के छंद का नाम कवि ने अरिल्ल प्रयोग किया है कि जिस का लक्षण यह है :–

॥ अरिल्ल ॥ लघु दीरघ को नेम न कीजे। ऐसे ही तुक चार भरीजे ॥
षोडश कला कली बिच धारैं। छंद अरिल्ला शेष उच्चारैं ॥

पाठान्तर :–सुजतिय। मतिय। पढ़ि शब्द के पहिले तौ शब्द का पाठ पुस्तकान्तर में विशेष हैं। पटि। नारिनिय। कोक। कलाकल। अरथ शब्द के पहिले तौ शब्द किसी २ पुस्तक में विशेष है। ग्रभं। लष्य। लष्पै। नारथ ॥

४४ पाठान्तर :–राज। नीति। पाईयै। उक्ति। पाइयै। पाईयै। उन। मानिय। व्रतह। सरसइय शब्द के पहिले किसी २ पुस्तक में मध्य शब्द का विशेष पाठ है। सरसईय। दरसईय ॥

॥ रासा किस को अच्छा और किस को बुरा प्रतीत होता है ॥

दूहा ॥ कुमति मति दरसत तिहिं । विधि विना न अव्वान ॥
तिहिं रासौ जु पवित्त गुन । सरसौ ब्रन्न रसान ॥
॥ छं० ॥ ८९ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

॥ इस ग्रंथ के काव्य की संख्या का कथन ॥

दूहा ॥ सत सहस नष सिष सरस । सकल आदि मुनि दिष्ष ॥
घट वढ मत कोऊ पढौ । मोहि दूसनं न वसिष्ष ॥ छं० ॥ ९० ॥ रू० ॥ ४६ ॥

॥ रासे के ढँके हुए अर्थ के विषय में कवि का कथन ॥

गाहा ॥ अरथं ढंक्किन सहसा । उघारै वनध्यि एकलया ॥
मझ्झं मझ्झ प्रमानं । चतुर स्त्री हारयं जेमं ॥ छं० ॥ ९१ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

॥ इस ग्रंथ के विष का संक्षेप कथन ॥

कवित्त ॥ दानव कुल छत्रीय । नाम ढुंढा रष्षस वर ॥
तिहिं सु जोत प्रथिराज । सूर सामंत अस्ति भर ॥
जीह जोति कवि चंद । रूप संजोगि भोगि भ्रम ॥
इक्क दीह ऊपन्न । इक्क दोहै समाय क्रम ॥
जथ कथ्थ तथ्थ होइ निर्मये । जोग भोग राजन लहिय ॥
वज्जंग बाहु अरि दल मलन । तासु कित्ति चंदह कहिय ॥
॥ छं० ॥ ९२ ॥ रू० ॥ ४८ ॥

अरिल्ल ॥ प्रथम राज चहुवांन पिथ्थ. वर । राजधान रंजे जंगल धर ॥
मुष सू भट्ट सूर सामँत दर । जिहि बंध्यो सुरतांन प्रान भर ॥
॥ छं० ॥ ९४ ॥ रू० ॥ ४९ ॥

---

४५ पाठान्तरः—दर्सन । तिहि । तिहि । रसानं ॥

४६ पाठान्तरः—कोऊ ॥ इस में "सत सहस" से कवि एक लाख की ग्रंथ संख्या बताता है और यह भी कहता है कि घटे बढ़े पठ करके मुझे दोष मत देना । कोई २ कवि जो यहां सत शब्द से सात का अर्थ अनुमान करते हैं वह मेरी सम्मति में अयुक्त प्रतीत होता है ॥

४७ पाठान्तरः—ढंक्किनं । नवध्यि । मझ । मझ ।

४८—५० पाठान्तरः—रष्षसं । तिहिं । जिह । संजोगी । भोगी । उपन्ने । जोगराज । नाल-हिय । वज्जंगबाहु । अरि दल मलन । कुत्ती । चंद ॥ ४७ ॥ सुर ॥ ४८ ॥ मित । बंधो । कित्ति । अष्पिं । तिथि ॥ ४९ ॥

अरिल्ल ॥ हं कवि चंद मित्त सेवह पर। अरु सुहित सामंत सूर नर ॥
बंधौं कित्ति प्रसार सार सह। अष्षों बरनि अंति थित्ति यह ॥
॥ छं० ॥ ९४ ॥ रू० ॥ ५० ॥

॥ राजा परीक्षित की तक्षक दंशन और जन्मेजय की सर्पसत्र कथा ॥

हनुफाल ॥ इति हनूफालय छंद। कल बरनि बरनि सुछंद ॥
नहि नाल पिंगल जोर। दुज हुँतो दुजनिय भोर ॥ ९४ ॥
संसार बंधन होय। इक पत्थौ विद्य समोय ॥
तन देइ अच्छर एक। नहिं पिंग पिंगल सेक ॥ ९५ ॥
किहि काल मरन सुविष्य। लहि नाग रूप सु अष्य ॥
हरि हस्यौ बाहन आइ। तिहिं कह्यौ पिंगल चाइ ॥ ९६ ॥
है विद्य रूप सु अड्ड। सो गयौ छल करि सड्ड ॥
सो तच्छ वीर प्रमान। जुग जुगनि निश्चल ध्यान ॥ ९७ ॥
इक हुँतो सिंगिय रिष्य। तप करै बाल विसिष्य ॥
न्टप गयौ बर आखेट। दिषि अष्य म्टतक बेट ॥ ९८ ॥
बाराह रूप प्रमान। लग्गयौ सु ब्रह्म धियान ॥
दह बार बूझ्यौ राज। दुज दिय न उत्तर काज ॥ ९९ ॥
लखि चित्त चिच सपूत। यों भयो रिष अवधूत ॥
भयो तास तामस राज। लियौ गोन मंच विराज ॥ १०० ॥
कस्सान कोनक संधि। न्टपराज दुज गलबंधि ॥
फिरि गयो ग्रेह प्रमान। आयो सु बालक थान ॥ १०१ ॥

---

५० दृष्टि में रखने की बात है, जैसे महाभारतादि महापुराणों में समय ग्रंथ के आशय का सार एक अथवा दो अथवा तीन अथवा चार श्लोकों में वर्णन किया गया है वैसे ही चंद ने भी अपने इस महाकाव्य का सार इन (४८ से ५० तक) तीन रूपकों में वर्णन किया है ॥

५१ पाठान्तरः—हनुफाल। हनूफाल। विद्यस। मोय। न। न। अछर। हर्यौ। तिहिं। चायि। द्वे। तछ्य। जुगिनि। हुंतो। रीष्य। बालवि। सिष्य। बुझ्यौ। दियऊ। चित्र। चित्रस। कोनक। नवि। तुल्लि। तिहिं। अति लोल दिष्षि रिषि लोइ। लोई। समोई ॥

हमारे पाठकों को ध्यान में रखना चाहिये कि चंद कवि ने इस कथा को महाभारत के आदि पर्व के अध्याय ४० से ५८ तक और भागवत के पहिले स्कंध के अध्याय १८ और १९ और दूसरे स्कंध के पहिले १ अध्याय से उद्धृत और संक्षिप्त करके वर्णन किया है। यदि कोई इस कथा

खिजि कह्यौ नैन भरीव। तस नाम रूप सरीव॥
पै जुन्न बालक बुझि। गलि गर्भ क्यौं न वितुझि॥ १०२॥
तिहि तजिय तात हमान। धरि कोप अंग निधान॥
करि क्रोध अंखि सुरत्त। हविजानि लग्गिय लत्त॥ १०३॥
जिहि जियत पुच्छ अप्प। को तात लभ्भय दप्प॥
रिस करौं जोब प्रमान। जरै तीन लोक अमान॥ १०४॥
रिस तेज कंपत बाल। दिष्यौ सु तात विसाल॥
वह लग्गि ब्रह्म धियान। भयौ कोटि तामस नाम॥ १०५॥
अति ना रत्न दिखि रिखि लोइ। दिख्या सु तात समोइ॥
छं०॥ १०६॥ रू०॥ ५१॥

कवित्त॥ जोरि हथ्थ थुति मंच। फिरयौ पर दच्छि लग्गि पय॥
रुधिर नयन आरत्त। कंठ लग्यौ सु मुक्कि भय॥
भूत द्वार वीभार। गाजि आये सुत मग्गं॥
भर भर भर उच्चार। रोस दावा नल लग्गं॥
जिहि हन्यौ अप्प मो तात गर। गनिव सत्त दिन में प्रमति॥
जो हत्यो अप्प तच्छक सुव्रत। कै काया अव्रत सुगति॥
छं०॥ १०७॥ रू०॥ ५२॥

साटक॥ धंन्यो धंन्य सु बाल तापन तपं। बालं वलं विव्हलं॥
सोयं पुच कि सोस दोस चि विधं। वानीय गद् गद् गलं॥
एनं भूप विसाल भूमि भरनं। धर्म्मं धरा राजनं॥
तं तेजं नवि चोर व्याघ्र विघनं। नैवापि संतापयं॥
छं०॥ १०८॥ रू०॥ ५३॥

और चंद के काव्य को उक्त भारत औ भागवत से मिलाकर सूक्ष्म विचार कर देखे तो वह निः-संदेह यह अनुमान कर सक्ता है कि चंद संस्कृत भाषा अच्छी जानता था और यह बड़े बड़े ग्रंथ भी उस के पढ़े हुए थे क्योंकि चंद के कोई २ छंद उक्त ग्रंथों के श्लोकों के ठीक अनुवाद प्रतीत होते हैं। इस हनूफाल छंद के चारों पाद बारह २ मात्रा के होते हैं॥

५२ पाठान्तरः—फिर्यौ। लग्यौ। विभार। जाजि। आइय। आईय। हत्यो। प्रमत्ति। प्रमित्त। कैकाया। सुयति॥

५३ पाठान्तरः—धन्यो धन्य। तनं। बाल। भरनं। तेजंन। विचोर। विघन॥

दत्वा श्राप मिदं श्रुतं गुरु वरं। म्रत्यं च राजा नयं॥
सत्यं सप्त दिनानि पानि पवरं। नैवं चलंते पयं॥
त्वं श्रापं चय लोक जाव्हति बरं। भुल्ले बरं पुंचयं॥
एकं दीह सुतप्प प्रापति पदं। चैलोकयं चासयं॥
छं० ॥ १०९ ॥ रू० ॥ ५४ ॥

दूहा ॥ सब रिखि सें सो पुच तू। वय दिक्खौ परमान॥
मानहु डम्बर सें उदै। बढंति कला बर भान॥
छं० ॥ ११० ॥ रू० ॥ ५५ ॥

कवित्त ॥ पुच छंडि रिखिराज। जाइ न्रप थान सु वत्तौ॥
पंथ कुलह संग्रह्यौ। रिष्षि आपान विरत्तौ॥
अति सु दीन सिर नोच। ऊंच नहिं भाल उचाइय॥
दिष्टि दिष्ट राजन चरित्त। मंगन न्टप आइय॥
एकंग एक जोगिन्द्र वर। घातु न बंधे हथ्थ पर॥
करि काज रिष्षि आयो घरहि। उरह धरहर लग्ग डर॥
छं० ॥ १११ ॥ रू० ५६ ॥

गाहा ॥ जो जंप्यो रिष पुत्तं। प्रलयं होइ सत्तियं कालं॥
जं भावइ तं भंस्सं। सो किज्जै राजनं बलयं॥
॥ छं० ॥ ११२ ॥ रू० ॥ ५७ ॥

चोटक ॥ न्टप छंडि प्रजंक प्रजंक पला। मुहु मुंदिरु भानक मोद कला॥
न्टप दीन हल्यौ बहु चित्त चितं। सुहल्या जनु पोंनय पीप पतं॥
॥ छं० ॥ ११३ ॥
पतनं गुर जानि चरन्न लग्यौ। बहुस्यां रिषिराज सु प्रान दग्यौ॥
॥ छं० ॥ ११४ ॥ रू० ॥ ५८ ॥

५४ पाठान्तरः—म्रतंच। म्रत्यंच। पानिपवरं। पय। श्राप ह्वालति। तैलाकयं॥

५५ पाठान्तरः—सै। मे। तूं। परसान। संवत् १६४७ की पुस्तक में हमारा लिखा पाठ है और इतर पुंस्तकों में "मानहु इंदी वर उदै" है॥

५६ पाठान्तरः—जाय। संपत्तो। आपन। ऊंच। नह। नहि। द्रिष्ट। वप। आईय। जोगिन्द। हथ। किहि। घरह। उर। घर। अद्दुर। लगि॥

५७ पाठान्तरः—झो। झंप्यों। पुत्रं। भावै। भाव। दूतं। जो। कीजै॥

५८ पाठान्तरः—त्रिप। त्रप। फला। दला। मुहुमंदिरु। भान। कमोद। त्रप। बहुचित। जुनु। पोनय। बहुयौं। किसी पुस्तक में सु शब्द नहीं है॥

गाहा ॥ मनो रिषि हथ्थं प्रानं । बल्लीकं जीवनं गुरयं ॥
जो फल लग्यौ पच्छ । तौ कालं रिप ह्वो वरयं ॥
॥ छं० ॥ ११५ ॥ रू० ॥ ५९ ॥

दूहा ॥ इय चिंतय रिषि राज गुर । पुच्छिय अन रिष राज ॥
क्यौं उधार होइ आप वर । कहो क्रपा करि आज ॥
॥ छं० ॥ ११६ ॥ रू० ॥ ६० ॥

कवित्त ॥ मद् भंडी इक पुरुष । निसा अद्व अध रत्ती ॥
वरंगना अंगने । डस्यौ अहि परत धरत्ती ॥
सुरापान आसिप्य । गयौ करहुं तव कुट्टिय ॥
उच्चारन हा राम । जाय वैकुंठ सु ठट्टिय ॥
परताप नाम सद् गति भइय । कीर कहत परिषत्त सम ॥
भागवत्त सुनहि जो इक्क चित । तौ सराप छुट्टय अक्रम ॥
॥ छं० ॥ ११७ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

ज दिन आप तुहि भयौ । त दिन परिसोक घर घ्घर ॥
पसू पंषि जल छंडि । छंडि मुनिवर समाधि उर ॥
छंडि चक्र हरि रष्यि । कूष तूं मात परिष्पत ॥
पंडव वंस प्रनष्य । तषत भ्रम धारी दिप्पत ॥
अचरिज्ज कहा तुम उद्धरन । होइ प्रसन सुकदेव कहि ॥
दिन सत्त अवधि अंतर बहुत । हरि सु उद्धरै छिनक महि ॥
॥ छं० ॥ ११८ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

धरनि रूप करि धेन । भ्रम्म बछरा संग लीयै ॥
भारषंड महि चरत । देषि कलिजुग कुपि हीयै ॥
चरन तीन भज्जंत । प्रजा सव आय पुकारिय ॥
चढ़ि करि तें न्टपराज । बध्य परि ताहि बकारिय ॥

५९ पाठान्तर:—प्रान । वलीकं । लगौ । पछू । पछं । तो ॥ इस के छंद का नाम सं० १६४७ की पुस्तक में गाथा है ॥

६० पाठान्तर:—चिंतन । रिषिराज । पुछिय । होय । आप ॥

६१–६३—यह तीन रूपक सं० १७७० और सं० १६४७ की पुस्तक के अतिरिक्त उस से पीछे की जितनी पुस्तक अब तक मेरे देखने में आई हैं उन सब में हैं परन्तु जब तक उन से भी पहिले की पुस्तकें न प्राप्त हों तब तक इन रूपकों को हम निश्चय रूप से चेपक नहीं कह सक्ते। इनको

किहि कीर अंग लग्गौ परस। तिहि कारन इह उपज्जिय॥
आषेट जाय पन्नग मृतक। सिंगी, गर घत्तिय, षिज्जिय॥
॥ छं० ॥ ११९ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

तोटक॥ इति चोटक छंद सुसंत गुरं। दिन सात पञ्यौ हरि गंग कुरं॥
त्रितकाल विकालह चित्त धरं। छित पत्त छिमा पिबु लाइ भरं॥
॥ छं० ॥ १२० ॥

न्टपराज परीछत तत्त गुरं। धरि ध्यान कह्यौ वदलीष धरं॥
इन काल सु तप्पय देव नरं। न्टप ग्यान सुन्यौ वपु व्यास वरं॥
॥ छं० ॥ १२१ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

साटक॥ या विद्या बदलीत राजन गुरं। आपो रिषं तारयं॥
शून्यं राज सु इन्द्र धारन धरं। विद्या अमारा पुरं॥
यश्रोयं सुघनं तु मातुल इयं, सोहं हरित्तारयं॥
सो ध्यानं रिषिराज राजन वरं। पापापहारं परं॥
॥ छं० ॥ १२२ ॥ रू० ॥ ६५ ॥

चौपाई॥ अति किसलय सुस कोमल अंग। जानु कि सुक्किय देहिय अंग॥
किष्ण दिपायन दीपन व्यास। कोपिन एकिन मंडल चास॥
॥ छं० ॥ १२३ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

दूहा॥ किसनदीप दीपाय नह। कही रिषी सब वत्त॥
जु कछु सराप सु उद्धस्यो। परनराज गुरु गत्त॥
॥ छं० ॥ १२४ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

कवित्त॥ तितै आय बर ब्रह्म। अप्प रिषि रिषि सु पुकारं॥
कै तच्छक न्टप हतहु। न तरु तच्छक मरै धारं॥

पाठान्तर यह हैं:—अधरत्ती। वारंगन। अंग। ने। काहुं। भागवत्त। जोइ क्कचित॥ ६१॥ जदि। न। तदि। न। परिसोक्र। घर। रषि। परीषत। प्रतप्य। प्रतपि। प्रसन्न। ध्रम। संग। लियै। हियै। वप्य। परिताहि। घतिय॥ ६३॥

६४ पाठान्तर:—तोटछंद। छिलं। पिबुलाइ। त्रितकाल। तत। नृन॥

६५ पाठान्तर:—गुरु। यभ्भोयं। सुधनं। मातुल। तारयं। ध्यान। राजं॥

६६ पाठान्तर:—सु। सकोमल। देहीय। देही। अयंग। किस्ता। दीपायन। चंद्रायना॥

६७ पाठान्तर:—रषी। वत। जु। उधर्यौ। आगत्त।

६८ पाठान्तर:—तंछक। हतहुं। तछक। भई। भद्दय। मान। तो। निधान। धरि। चित। ध्यान।

उभय चित्त चिंतयौ । भइय श्री नाग सु मालं ॥
न्टप न हतों तौ मरन । अहित न्टप रिष्य निधानं ॥
दुअ अंति चित्त चिंता सुचित । धरिय ध्यान चित जान जिय ॥
सत विप्प आइ जिय वीर बर । आय हथ्थ राजन सु दिय ॥
॥ छं० ॥ १२५ ॥ रू० ॥ ६८ ॥

कवित्त ॥ दिय हथ्थं मधि कीट । सुफल लेइ राजन धारिय ॥
क्रम लंकन लागंत । निकरि कीटं किन कारिय ॥
छिनक मधि बाढंत । भए फुनि पंचनि नारिय ॥
न्टपय हुकम मुष दिवौ । करो श्रो काम करारिय ॥
फिरि आय राय दिष्टह वचिय । क्रम्म महि उसनह फनिय ॥
जं जाह जीह कलि हंस छत । भइय देह ब्रन अप्पनिय ॥
॥ छं० ॥ १२६ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

तव जनमेजय पुत्त । दिसा दच्छिन जन मुक्किय ॥
तहां धन अंतर वेद । दरक चढ़ि लैन सु तक्किय ॥
करिय षेद चलि अप्प । सहस चेला संग धारिय ॥
आस्तीक जु धुर नाग । तव सु तक्ष्क विचारिय ॥
कल तक्कि रूप लकुटी भइय । अहिय गुरु पुट्टें डसिय ॥
भष काज सिष्प सिष्यां दइय । विप्र रूप तक्ष्क हँसिय ॥
॥ छं० ॥ १२७ ॥ रू० ॥ ७० ॥

दूहा ॥ आस्तीक जु गुर वैर कजि । पढि विद्या अह नाग ॥
जनमेजय न्रिप सों मिलिय । मंड्यौ अप्पन जाग ॥
॥ छं० ॥ १२८ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

६९ पाठान्तर:—भरा । किसी २ पुस्तक में सो शब्द का पाठ नहीं है । आई राइ । दिष्ट । भईय । भईये ॥

७० पाठान्तर:—दछिन । जनमु । किय । धन । अंवरवेद । सुत । किय । तछक । छलन । कि । भईय । युट्टे । सिष्यं । सिष्यां । दरह । तछक ।

७१ पाठान्तर:—तिहित । बदस । यत । विप्यं । सचारव । रष्यि । जानिलु । बात । नृहरिय । मछ । होम । मंत । तछक । पतो । कनी । मंत्र ॥

कवित्त ॥ ति हित वैर सिसु वरन । सपत विप दो.ल सु चारव ॥
न्टप जनमेजय नाम । भयौ तामस उन गारव ॥
तात वैर सिसु दष्षि । जियन छोड़ लोइ विचारै ॥
जालिहु बातन हरिय । सच्छ बंध्यौ जनु जारै ॥
होमंत सत्ति तच्छक सु नग । इन्द्र सरन पत्तौ तबै ॥
सुनि कन्न राज तामस भयौ । करहु मंत्त साधन सवै ॥
॥ छं० ॥ १२९ ॥ रू० ॥ ७२ ॥

भुजंगी ॥ करी अस्तुती यं स्वहा इंद्र जोगं । तहां इंद्र आयो सुरं नाग भोगं ॥
इतं देव सादेव सारन्न आयो । तिनं काटि दीयंत सो पाप पायो ॥
॥ छं० ॥ १३० ॥ रू० ॥ ७३ ॥

कवित्त ॥ अभय दान आतुरह । अंन उग्राह पान दत ॥
सरन रष्षि भय नरन । कढ्ढि मुक हित्त छंडि सत ॥
तय लगि कग्ग कराल । स्वान ससन ऊ वासै ॥
रुधिर चरम अरु असनि । वस्त वस्तन ऊ नासै ॥
जो इय जोइ जग उच्चरै । जननि जाय ग्रभ्भह गरै ॥
तिन काज राज प्रारथ्यिये । जियत तक्कक तन उब्बरै ॥
॥ छं० ॥ १३१ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ न्टप चिंता वहु लग्गि मन । ज्यौं जुथ वाय चिकाल ॥
यौं न्टप राजत राज कुल । पुनर जनम दुष ज्वाल ॥
॥ छं० ॥ १३२ ॥ रू० ॥ ७५ ॥

---

७२ पाठान्तरः—करि । अस्तुति । स्वाहा । सारन । तिन । सह ॥ इस रूपक के छंद का नाम हम ने शोध करके भुजंगी रक्खा है और सं० १६४७ की तथा सं० १७७० की पुस्तकों में भी यही नाम लिखा है किन्तु इतर पुस्तकों में चंद्रायना नाम लिखा है वह अशुद्ध है ॥

७४ पाठान्तरः—आतुरहै । अन । कढि । मु । कहित । तुय । उ । उं । जोइये । ग्रभह । कारज । प्रार्थिय । उबरै ॥

७५ पाठान्तरः—त्रिन । पुनरजनम ॥

॥ वर्तमान आबू पर्वत के उद्धार की कथा ॥

॥ उस तक्षक का आबू पर अपना अर्बुद नाम धर रहना ॥

कवित्त ॥ स तक्ष आबू प्रमान । मंडीयौ सू अचल कर ॥
गरब गरुर तें विडुरि । सुडरु रष्यौ जु अंत धुर ॥
अचल ईस प्रति नाम । अचल आचित्त अचल घर ॥
देव देव प्रारथ्थि । इन्द्र मुक्किय छंड्डिय धर ॥
अरवुद नाम धर जुत्तिया । दूर तपित थहराइया ॥
कलपान पुहप अरु वस्त गुरु । छांह गुरु गुर छाइया ॥
छं० ॥ १३३ ॥ रू० ॥ ७६ ॥

॥ गालव ऋषि के शिष्य उत्तङ्क का उपाख्यान ॥

दूहा ॥ सो आबू उद्धार विधि । कहों कथा * परवंध ॥
ज्यों अनादिआ रिष्य सुष । सुनी सु गुर समवंध ॥
छं० ॥ १३४ ॥ रू० ॥ ७७ ॥
गुरु गालव उत्तंग सिष । बहु विद्या पढ़ि जाम ॥
पय लग्गौ गुर राज कैं । कह्यौ दक्कना काम ॥
छं० ॥ १३५ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

बाघा ॥ गालव रिषि सिष्य उतंग । दिय विद्या वुध क्रम क्रम अंग ॥
गुर दष्यिन कज्जैं गुर जच्चै । गुर पतनी तव संगि विरच्चै ॥ १३६ ॥
कुंडल जच्चि षिचिया कानं । अप्पौ जासु दष्यिना दानं ॥
दिवस अठ्ठमो व्रत अषंडै । चरचों दान विप्र श्रुत संडै ॥ १३७ ॥

---

७६ पाठान्तर:—सो । तछक । आ । चित । बर । मुकिय । छडीय । जुतिय । तप्यित । छाईया ॥ स = वह का वाचक और तछ = सर्प = तत्तक का वाचक जैसे रू० ५१ की ८ तुक में तच्छ प्रयोग हुआ है ॥

७७ पाठान्तर:—रिष्य ॥

७८ उतंग । जास । कै । दछना ॥

७९ पाठान्तर:—उत्तंग । दछिन । गुरपतनी । मंगि । दत्तिना । अषंडे । मंडे । करे । संपनो । न्रिप । प्रसंसे । ससप्पे । तप्पक । बीच । रषै । अंचल । दूषै । दूपे । ठठो । ताम विराम ।

* हमारे पाठकों को ध्यान में रखना चाहिये कि चंद अर्बुद के उद्धार की कथा अर्बुद खण्ड अर्थात् आबू महात्म्य नामक संस्कृत ग्रंथों से संग्रह करके वर्णन करता है । जिन पाठकों के पढ़ने में अथवा सुनने में यह ग्रंथ आये हैं वे जान सक्ते हैं कि कवि ने थोड़े में बहुत ही आशय लिया है और उत्तङ्क का उपाख्यान महाभारत के आदि पर्व के पौष्यपर्वाध्याय नामक: द्वितीय अध्याय में से भी कवि ने संग्रहीत किया है ॥

चल्यौ रिष्षि चमंके ताम । गुर गुरनी कों करै प्रनाम ॥
चिंतत दूष्ट चल्यौ वर राहं । संपत्तौ यौं सद न्टप ठाहं ॥ १३८ ॥
जच्चै कुंडल षिचिय पासं । ल्वाइ समप्पै विधि वर तासं ॥
विप्र प्रसंसै समपे कुंडल । कह्हि डर तच्छक वीच नीच षल ॥ १३९ ॥
लै कुंडल चल्यौ हरषे मन । आप्यौ राज विप्र अन्यो अन ॥
क्रम्यौ विप्र राह चंचल चर । छलि तच्छक लीनें कुंडल वर ॥ १४० ॥
क्रमयौ विप्र पुट्ठि अति चंचल । धरि अहि रूप सु गयौ रसातल ॥
विल दूष्षै ठढ्ढौ रिषि तामं । दुमत चित्त भय विहत विरामं ॥ १४१ ॥
अस्तुति इन्द्र करन लग्गौ रिषि । नंष्यौ बासव षिनक वज्र सिष ॥
भ्रित अभ्रित दीयौ आषंडल । धर रिषि तक्कि षात विल मंडल ॥ १४२ ॥
पैठो विप्र नागपुर ठामं । धोम प्रगट्टै मंच विरामं ॥
दूष्यौ पुरष एक षट आरं । फेरे चक्र तास फिरि तारं ॥ १४३ ॥
दूष्यौ बाह बाह सत वारं । उंच तेज आजेज अपारं ॥
यौं नर नारि अषै वर नामं । वे अह हथ्थ बेई सम कामं ॥ १४४ ॥
चिसत सट्ठि तां तंति ठायं । अद्ध सेत्त स्यामं अध तायं ॥
अहि धुत्तेन उपाइ सबाहं । फुंकत पुंछ सधुम्म सराहं ॥ १४५ ॥
पुंकत पुंछ धार धुम चल्ली । लग्गै नाग अंग सह थल्ली ॥
प्रगटे अंसू पलक उघ धत्ति । अप्यो कुंडल नाग मान हति ॥ १४६ ॥
ग्रिह कुंडल अप्पे गुर वालं । गुर विद्या अप्पी अभिरामं ॥
दुज वर वज्र पैठ जेहा धर । बिल अभ्रित तिह थांन मंडि थिर ॥

छं० ॥ १४७ ॥ रू० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ बिल अथाह तिहि थान भय । बहुत संवङ्कर वित्त ॥
पृथुल कराल कराल भौ । जिम जिम काल बितित्त ॥

छं० ॥ १४८ ॥ रू० ॥ ८० ॥

वर्ज्ज । आभ्रत । दियौ । रिक्कि । पैठो । बैठौ । धोमं । ठाम । बिराम । फेरै । वाह । जो । तामं । बे । हथ । वे । ईस । मकामं । बेद्दम । सठि । ता । तंति । ठायं । उपाय । स्याम । धुत्तेन । फूंकत । सधुम । धुम । लगे । थली । अंशू । कुंड । अप्यो । हित्ति । मनि । ग्रही । रामं । पेठि । आभ्रेत । आभ्रित ।

८० पाठान्तर :—वित । प्रिथुल । प्रथार । विवित ॥

हली सेत झल्ली जलड्डी समुद्दं। अचै सेष पीरं सु सानौ समुद्दं ॥
धराचल्लि भागीरथी विस्व भागं। मिटै अघ्घ ओघं तनं दुष्ष दागं ॥ १५७ ॥
सुभं उच्च अंदोल वीचं विराजं। मनो स्त्रग्ग आरोह सोपान साजं ॥
नरं नीच नीरं तटं ओन प्रस्सं। तवै अग्ग देवं गुनं अब्ब अस्सं ॥ १५८ ॥
परै मस्स्स्क कल्लेवरं धंषि कुट्टी। भषी कावलं गिद्धि गोमाय लुट्टी ॥
तटं ओन झल्लै थलं वारि हल्ल। षिनं मस्स्क्ष अंदोल वीचं वहल्लै ॥ १५९ ॥
तिनं आतमं देह आनूप धारै। वरं उर्वसी चामरं विंझ नारै ॥
धरै ध्यान भावं तिनं दुक्ख दव्वै। मिटै मज्जनं अघ्घ साजंम सव्वै ॥ १६० ॥
झलक्कंत गंगा तनं तेज सोहै। मनौ दाहनं दाह दाहंन्न जो है ॥
सुयं गंग गंगे सु गंगा प्रकारं। हरै नाम गंगा जमं किं करारं ॥ १६१ ॥
त्रिपथ्थी त्रिगामी विराजंत गंगा। महा स्त्रग्ग लोकं नरं नारि अंगा ॥
रहट्टं घरी ज्यौं फिरै तीन लोकं। महा दिव्य धुन्नी नवं निग्म लोकं ॥ १६२ ॥
कलाली गुहीरं गुफा फारि नागं। प्रगट्टीय मातंगि मानुष्य भागं ॥
रही नष्य अष्षी सुयं ताप भंजै। महा वद्दराजं दिवं दुर्ग रंजै ॥ १६३ ॥
भयं भीषमं मात वहु पाप षंडै। जमं ज्वाल ज्वालं तमं तेज चंडै ॥
रहं रोह रंगी हरं सीस गंगे। महा मोहनी मात दुग्गा उतंगे ॥ १६४ ॥
बरं काल काला जलं स्वेत रूपं। तहां उप्पनी मात आभंग नूपं ॥
भई गाम सद्दं सु सामुद्द सेतं। डस्यौ नाम गंगा उतंगा विहेतं ॥ १६५ ॥
हरद्वार द्वारं कला तूं प्रगट्टी। करी मुक्ति मग्गं महा पाप मट्टी ॥
तिनं नाम लीने क्रियं तोय पीजे। क्रियं संस्त्रनं देव संज्यान कीजै ॥ १६६ ॥
क्रियै गाहि तें पंथ उग्गाहि साजं। तुँही तापिनी तेज तूं तेज राजं ॥
तुँही मध्य वारानसी मोच्छ दैनी। कली काल दुष्पं कटन्नं क्रपैनी ॥
छं० ॥ १६७ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

दूहा ॥ जब लगि रज तन मात की। रहै अंग सों लाइ ॥
तब लगि काल न संपजै। क्रम्म पाप सब जाइ ॥
छं० ॥ १६८ ॥ रू० ॥ ८४ ॥

मंजने हल्ले। अपसा। जम। दाहं। दाहनं। जोहै। त्रिपंथी। नाग। घटा ताम। मंगा। महादिव्य। नवं। निगम। महावद्दराजं। षदिव दुर्ग। भीषम। जालं। महामोहनी। अनूपं। धयैं। समरनं संभ्यानं। मोक्ष। मोद। दुपच ॥

८४ पाठान्तर:—सोलाइ।

गाथा ॥ क्रम्मं अघं सव भंजै । दिव्वं करै देह सा रूपं ॥
सुरगं करै सु गामी । अद्वं नाम रसन उच्चारं ॥
छं० ॥ १६९ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

॥ मंदाकिनी गंगा का उभरना और गौ का तिरकर निकलना ॥

दूहा ॥ सुनि गंगा सुवयन्न रिष । उभरी आय प्रमान ॥
ताहि तिरंतह नंदिनी । आई तट बिल थान ॥
छं० ॥ १७० ॥ रू० ॥ ८६ ॥

रिष्य सिष्य धाये सु सव । धर कड्डी तँह गाव ॥
सो कड्डवि मंदाकिनी । गइ पयाल फिरि ठाव ॥
छं० ॥ १७१ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

बिल अथाह दिष्यौ सु रिष । चित चिंता परपत्त ॥
को निकसै या माधिगत । गात भयानक पत्त ॥
छं० ॥ १७२ ॥ रू० ॥ ८८ ॥

॥ वशिष्ट ऋषि का उस अथाह बिल बूरने को हिमालय के पास एक पुत्र मांगने जाना ॥

बिअष्परी ॥ चिंते रिष्पि देखि बिल दुक्रित । उर लग्गी अति चिंत मझिझ चित ॥
पूछवि रिष्प सिष्य क्रत कामं । लहै न कोइ बुद्धि बल तासं ॥ १७३ ॥
चिंते ध्यान अप्प रिखि राजं । याहि सपूरन को थिर काजं ॥
चिंतत रिष्षि ध्यान उर भासं । है सत पुत्र हेम गिरि जासं ॥ १७४ ॥
एक पुत्र जाचौं तिन पासं । बिल पूरै पूरै उर आसं ॥
क्रम्यौ राज रिषी दिसि उत्तर । देषी मन आनंद दिव्य धर ॥ १७५ ॥
गौ रिषि राज पास गिर राजं । दुष्य अग्ग पति आसन साजं ॥
मैंना सहित आय पग लग्गे । अरघ पाद करि अचवन लग्गे ॥
छं० ॥ १७६ ॥ रू० ॥ ८९ ॥

---

८५ पाठान्तरः—क्रम । सारूपं । सुगामी ॥

८६–८८ पाठान्तरः—सुनयन । तिरंत ॥ ८६ ॥ धाए । कढी । तहां । कढवि । गई । ठांव ॥ ८७ ॥ परपत । मधि । पत ॥ ८८ ॥

८९ पाठान्तरः—चिते । दुक्रत । कोई । संपूरन । नासं । हेमगिरि । पुत्र एक । पू । पूरं । रिषि । उत्तर । मान । रिषिराज । गिरि राजं । दुष्ये । मेना । पय । लागे ॥

दूहा॥ सुनि सुवचन गिरि राज कौ। कहि रिषि कारन षात॥
पुच एक जच्चू तुमहि। गरित सपूरन गात॥
छं०॥ १७७॥ रू०॥ ९०॥

॥ हिमालय का अपने सब पुत्रों को ऋषि का अभिप्राय कहना॥

कवित्त॥ तब सुचिंत गिर ईस। पुच सद्दे निज स्वब्बं॥
कहि कारन षिति षात। अप्प रष्षौ कुल अब्बं॥
इह सु रिष्षि सुत ब्रह्म। नाम वाचिष्ट महा मंति॥
धर्म्म पार तप पार। पार स्रुत कर्म्म परम गति॥
जच्चे सु सोइ तुम एक कहुँ। चिंतिय चत कारज्ज रिषि॥
संब सो वास विल उद्धरौ। पद पामी परमुच ऋषि॥
छं०॥ १७८॥ रू०॥ ९१॥

॥ हिमालय के बड़े पुत्र का उत्तर देना कि वह भूमि निषद्ध है॥

कवित्त॥ तब अष्षहि अग्र पुत्त। सुनहु गिरि राज चिंत चित॥
पिता बाच रिष काज। कोइ छंडहि सुक्रम्म हित॥
उह सु भूमि निषेद। थान जानहु तुम सब्बं॥
भ्रंम क्रंम अरु देव। सेव जाजन नहि अब्बं॥
कुच्छित्त देस कारन विक्रम। तहँ सु केम किज्जै गमन॥
अप्पिये प्रान संग्गै जो रिषि। पै दुष्ट थान थप्पहिँ न तन॥
छं०॥ १७९॥ रू०॥ ९२॥

॥ वशिष्ट का प्रत्युत्तर दे कहना कि वह भूमि बड़ी रम्य है॥

कवित्त॥ तब जंपे सुत ब्रह्म। सुनौ गिरि राज पुच सम॥
इहि सु भौमि बिल थान। रम्य मंडहि सु तप्प द्रम॥

९०. पाठान्तर:—गिरिराज। संपूरन॥

९१ पाठान्तर:—ईसं। रष्षो। महामति। परमगति। कहुं। संव। संवसौ। परमुच॥

९२ पाठान्तर:—गिरिराज। सुक्रम। स्व्व। अब्ब। तहां। कहहां। पै॥

९३ पाठान्तर:—जंपै। सुत्र। गिरिराज। तिय। गंधर्व। मूर्त्तिमान। सज्जै। तिसर। धाश्र। महि।

सवै देव इहि वास । तिथ्य सव्वै रिषि सव्वं ॥
विप्र ब्रह्म वर वड्डि । सु गुन गंध्रव सव कव्वं ॥
किन्नरह क्रंम सुत धर्म्म धर । सुरति मान सज्जैति सिर ॥
हरि ब्रह्म ईस संवास सह । जो आश्रम हि इक्क गिर ॥
छं० ॥ १८० ॥ रू० ॥ ९३ ॥

॥ और वहां आगे वाल्मीक ऋषित्व को प्राप्त हुवे हैं ॥

पद्धरी ॥ रमनीक ठाम वाशिष्ट राज । तहां वसहि देव देवह विराज ॥
इहि थान पुव्व क्रत युग प्रमान । रिषि कियो तप्प जर्जित विधान ॥ १८१ ॥
वाल्मीक वीर इक वधिक रूप । अति पाप क्रंम आघात कूप ॥
भंजै सु मग्ग तिन भ्रम्म थान । पायो सु हरिय दरसन विधान ॥ १८२ ॥
चित संप चक्र गद्द पद्म वाहु । तन स्याम सुभित पीतह प्रवाह ॥
दिप्प्यौ सु लक्षी तन रूप भील । कीनी नह तन तिन निमष ढील ॥ १८३ ॥
आयो सु दिट्ठ गोविन्द वीर । जानी न पुव्व भ्रम्मह सरीर ॥
छिति दिप्पि दिट्ठ कामह करूर । विंध्यो सु पाप मथ्थां सभूर ॥ १८४ ॥
तव आय रिप्प उपदेस दीन । किहि काज इहां यह क्रंम कीन ॥
भग्नी रु वंध तिय मात पुत्त । वंटहि कि पाप पापह सजुत्त ॥ १८५ ॥
तिहि जाइ कह्यौ वर भील मान । वंच्यौ न पाप किन अंग थान ॥
लग्गो चरन्न कर धनुष तोरि । आघात घात वानी सजोरि ॥ १८६ ॥
व्याघात नाम सों वधिक थान । भ्रम भ्रम्यौ इक्क रुच्छह निधान * ॥
छं० ॥ १८७ ॥ रू० ॥ ९४ ॥

गाथा ॥ यों कहियं रिषि राजं । तुम कोइ दिवस भ्रमन करि अथ्थं ॥
फुनि हम दरसन प्रायं । सथ्थं गुर मंच दे कानं ॥
छं० ॥ १८८ ॥ रू० ॥ ९५ ॥

---

९४ पाठान्तरः—जु । धर्म । दर्सन । लछि । वीर । धर्मह । धरमह । विंव्यो । मथांस । भूर । रिपि । इहां । रहां । क्रम । त्रिय । पुत । संजुत । चरन । तोरी । भ्रम्यो । इक । वृछ ।
* यह पंक्ति कर्नैल टोड साहब वाली पुस्तक में नहीं है ॥

९५ पाठान्तरः—कोई । भ्रमं । ससथ्य । मरा । मरा । गहिय । भद्दे । अब । अबयो ॥

सरां मरां यह कह्यियं । गह्यियं भगताय अंगयं नेहं ॥
भिद्दे तु चक्रम मंटी । दट्टी निय अव यो देहं ॥
छं० ॥ १८९ ॥ रू० ॥ ९६ ॥

दूहा ॥ बांबी फिर अंगह वली । अंग उद्देही जाम ॥
क्षीन सबद सुष निक्कसे । धीर धीर कै राम ॥
छं० ॥ १९० ॥ रू० ॥ ९७ ॥

तब धरि सधि कव्यौ सु रिषि । दिष्षि प्रबल तप पार ॥
बाल्मीक रिषि सो भयौ । सुनि गिरि सुअन विचार ॥
छं० ॥ १९१ ॥ रू० ॥ ९८ ॥

॥ हिमालय के मध्यम पुत्र नंद का वशिष्ट के साथ आना स्वीकार करना ॥

कबित्त ॥ सुनि सु वचन गिरि सुअन । सबै विधि राम वाच रहि ॥
मध्य पुच गिरि नंद । सोय उच्चर्यौ वाच सहि ॥
हैां सु पंग विन पाय । क्रम्मि सक्कों न राह दुर ॥
जाय परैं षित षात । करैं उद्धार वाच धुर ॥
पित बाच राम सज्यौ सु बन । वाच सु हरिचंद अव्व वहि ॥
सोइ बाच तात क्रत कज्ज रिषि । कोइ सचुक्कहि सुष्ष महि ॥
छं० ॥ १९२ ॥ रू० ॥ ९९ ॥

॥ वशिष्ट का अर्बुद नाग को कहना कि जो तू नंद गिरि को उठा ले चले तो हमारा कार्य सिद्ध हो ॥

पद्धरी ॥ अर्बुदा अचल अर्बुदति नाम । क्रित काम पयह षेरौ सु काम ॥
धर नंद नंद नंदन प्रमान । उच्चार सार लै जाहु थान ॥ १९३ ॥

९६ पाठान्तरः—बांकी । निकसै । कैं ॥

९७ पाठान्तरः—दिषि । रिष ॥

९९ पाठान्तरः—गिगिर । सोइ । हों । उच्चर्यौ । पाइ । क्रमि । क्रंमि । सकों । सक्कौं सक्कैं । परां । करां । कोई । चुकहि । मुष ॥ इस रूपक की पांचवीं तुक के वाच और सज्यौ शब्दों के बीच में राम शब्द किसी २ पुस्तक में लेखक ने लिखना छोड दिया है । तथा इसी तुक के दूसरे पाद का पाठ हमारे पाठ के सिवाय किसी २ पुस्तक में "पिता वाच सिर अंबु वहि" करके भी है ॥

१०० पाठान्तरः—इस की पहिली तुक के पहिले पाद का पाठ हमने सं० १६४७ की

प्रविस कियो गारत्त गिरि। जय जय वचन सरीर हुअ॥
भो मगन सुतन सव्वै सु गिरि। उवरयौ नाक सुनाग धुअ॥
छं० ॥ १९८ ॥ रू० ॥ १०२ ॥

॥ बिल का पुर जाना और पुष्प वृष्टि सहित जैजैकार होना ॥

दूहा ॥ उवरयौ नाक सु नाग धुअ। दिव अस्तुति परमान॥
पुहप वृष्टि हथ्थां करिय। जय जय वंध्यौ तान॥
छं० ॥ १९९ ॥ रू० ॥ १०३ ॥

॥ नग का हिलना ॥

दूहा ॥ गात सकल गिरि जात को। सब बूड्यौ सम नाग॥
उबरि नास सैलह तहां। सो हलही विन लाग॥
छं० ॥ २०० ॥ रू० ॥ १०४ ॥

॥ नग के हिलने से वशिष्ट चिंता कर ईश आराधन करने लगे ॥

दूहा ॥ नास सुहल हल्यौ सुनग। उर अति चिंता जग्ग॥
अति आतुर वाचिष्ट रिषि। ईस अराधन लग्ग॥
छं० ॥ २०१ ॥ रू० ॥ १०५ ॥

॥ वाचिष्ट ऋषि ने महादेव का यह आराधन किया ॥

साटक ॥ ईसंजा गिरिजानने वगरयं। उच्छंग मातंगिनी॥
चर्मंजा वद्रजामवंत जलजं। बुंदं तयं उज्जलं॥
रष्यं जारति कर्न कामति मलं। दलयंति तीयं पुरं॥
त्रिपुरारिं तन तुंग तारन गुरं। जैजै हरं ईसयं॥
छं० ॥ २०२ ॥ रू० ॥ १०६ ॥

उचरि। अग्गै। पछ। संपन। तथ॥ इस की अंत की तुक का पाठ किसी२ पुस्तक में "भू मग सुतन सवै सुगिरि। उवस्यो नाक सु नाक धुअ" है॥

१०३ पाठान्तर:—उबर्यौ। नाक। हथां॥

१०४ पाठान्तर:—यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है और जब तक कि वह इस से भी प्राचीन पुस्तक में नहीं मिले तब तक उस को चेपक नहीं कह सक्ते। सोह। लही। बुड्यो॥

१०५ पाठान्तर:—नाग। वाशिष्ट। आराधन। लग॥

१०६ पाठान्तर:—उछंग। चलजं। जलदं। रिषं। करन। दलयंति॥

भुजंगी ॥ नमो आदि नाथं स्वयंभू सनाथं । नहीं मात तातं न को संगि वातं ॥
जटा जूटयं सेषरं चंद्र भालं । उरं हार उद्दारयं रुंड मालं ॥ २०३ ॥
अनीलं असन्नं उपव्वीत राजं । कलं काल कूटं करं सूल साजं ॥
वरं अंग ओधूत विभ्भूत ओपं । प्रलै कोटि उग्रंसि कालं अनोपं ॥ २०४ ॥
करी चर्म कंधं हरी पारिधानं । वृषं वाहनं वास कैलास थानं ॥
उमा अंग वामं सु कामं पुरष्षं । सिरं गंग नेत्रं त्रयं पंच मुष्षं ॥ २०५ ॥
नमः संभवायं सरव्वाय पायं । नमो रुद्रयायं वरद्दाय सायं ॥
पसूपत्तए नित्तए मुग्गयाए । कपर्द्दी महादेव भीमं भवाए ॥ २०६ ॥
मषघ्नाय ईसानए त्रंवकाए । नमो भ्रम्मए धातए अड्ढकाए ॥
कुमारो गुरव्वे नमो नील ग्रीवे । नमो व्याधए बाधए हिच्छ जीवे ॥ २०७ ॥
नमो लोहिते नील सिष्षंडए तं । नमो शूलिने चक्षुषे दिव्यए तं ॥
वसूरेतवे स्वर्व्वदेवस्तुतेवं । नमो पिंग जाटिल्लए देव देवं ॥ २०८ ॥
नमो तप्प मानाय भ्रष्षं धुजाए । नमो ब्रह्मचारी त्रयंब्रह्मकाए ॥
सिवं चातमे चातगे स्वर्गचाए । नमो विश्वमावित्तए विश्वराए ॥ २०९ ॥
नमस्ते नमस्ते नमो सीतताए । नमो सर्ववल्लायने संकराए ॥
नमो ब्रह्मवल्लाय भूतं पिताए । नमो वाचपे विश्वपे भूतपाए ॥ २१० ॥
नमो सीससाहस्सए नीतएसं । सहसंभुजा नैंन साहस्स तेसं ॥
नमो पादसाहस्स आसंखकर्नं । नमो वन्हि हीरन्य हीरन्यवर्नं ॥ २११ ॥
नमो भक्ति आकंपनं संभु देवं । थिरं रिद्धि दाता मनं वच्च सेवं ॥
प्रसन्नो भवो ईस तव्वै न कव्वै । तनं ताप विन्नासए चित्त तव्वै ॥
छं० ॥ २१२ ॥ रू० ॥ १०७ ॥

१०७ पाठान्तर:—स्वंभू । समाथं । नही । मंगी । चंदभालं । उर । संडमालं । असनं । उपंवीत । कलंकालकूटं । विभूत । सिकालं । अलोपं । करि । बधं वृपवाहनं । वासं । थानं । दामं । कुरष्वं । गंगा । नैंनं । उद्रपायं । सरवाय । वरदाय । पसू । पत्त । ए । नित । ए । मुग । जाए । कपट्टी । कपट्टी । मषंघ्नाय । ईसं । नए । ध्रम्म । ए । धात । ए । गुर्व्वें । नल । व्याध । ए । बाध । ए । ट्टिच्छ । सिष्षंड । एतं । दिव्य । एतं । वसूदेवते के स्वदेवं । स्तुतेवं । ब्रपंध । जाये । त्रयब्रह्म । काए । श्वर्श । चाये । विश्वमा । वित्तए । नमस । ते । नमस । ते । सीत । ताए । साहस्र । एनीत । एसं । सहस्र । नैन । सहस्र । आसंप । कर्नें । हिरन्य । संभा विनास । ए । चित्र ॥ सं० १६४७ की पुस्तक में इस छंद की ८ वीं तुक में का नित्तए शब्द नहीं है ॥

॥ वशिष्ट के वचन सुन महादेव का प्रत्यक्ष हो वर मांगने को कहना ॥

चौपाई ॥ सुनि मुनि वचन मोद मन ईसं। आय परौ रह्यौ उड्डरि सीसं ॥
बर! बर! वानि जानि मन मंग्गहु। जंपहि ईस आस जिहि जग्गहु ॥
छं० ॥ २१३ ॥ रू० १०८ ॥

मंगहु मुनि सज्जन गुन गुन वर। चलै किंत्ति जित्ती जिहि धुर घर ॥
ता क्रित्ती मुकतीह सों लिज्जै। ब्रह्मासन आसन डोलिज्जै ॥
छं० ॥ २१४ ॥ रू० ॥ १०९ ॥

॥ ईस का स्वरूप देख ऋषि का मुदित होना ॥

चौपाई ॥ देषि सरूप ईस मन उम्मदि। जै जै जीह धन्य वानी वदि ॥
गौर कपूर तेज तन उद्दित। रिषि रोमंचित तब मन मुद्दित ॥
छं० ॥ २१५ ॥ रू० ॥ ११० ॥

मुद्दित मन उद्दित तन भारी। हरि वैकुंठ ईस मनचारी ॥
अर्बुद गिरि धरि ध्यान सु ईसं। करै काल तिहि काल जगीसं ॥
छं० ॥ २१६ ॥ रू० ॥ १११ ॥

॥ वशिष्ट ऋषि का महादेव को नमस्कार करना ॥

साटक ॥ त्रै नैनं त्रिजटेव सीस त्रितयं। त्रैरूप त्रीसूलयं ॥
त्रदेवं त्रि:दसा त्रिभू त्रिगुनयं। त्रीसंधि वेदत्रयं ॥
त्रैरग्निं त्रयलच्छि काल त्रितयं। ग्रामं त्रयं त्रैवयं ॥
गंगा त्रै त्रिपुरारि भासित तनुं। सोयं नमः संभवे ॥
छं० ॥ २१७ ॥ रू० ॥ ११२ ॥

१०८–१०९ पाठान्तरः–मंगहुं। जग्गहुं ॥ चलै और किंत्ति शब्दो के बीच में "ई" शब्द का पाठ सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है और इधर के समय की लिखित पुस्तकों में है। धुर धुर। कीती। मुक्तीह ॥

११०–१११ पाठान्तरः– उंमदि। गौरक। पूर ॥

११२ पाठान्तरः–त्रिजटेवसीस। त्रयलछिकाल। त्रितयंग्राम ॥

॥ प्रमथाधिपति ने आनन्दित होकर वर मांगने को कहा ॥

दूहा ॥ आनंद्यो प्रमथाधिपति। वर! वर! वंद्यौ वानि ॥
रिषि संगह्यु उतकंठ मन। सोइ समप्पौं आनि ॥
छं० ॥ २१८ ॥ रू० ॥ ११३ ॥

॥ वशिष्ट ऋषि का नंदगिरि को अचल करने का वर मांगना ॥

दूहा ॥ फिरि रिषि जंप्यौ संभु सों। जो तुट्टो मुझ भास ॥
नग्ग चलंतौ अचल करि। फुनि सज्जौ सिर वास ॥
छं० ॥ २१९ ॥ रू० ॥ ११४ ॥
सो आबू गिरि राज गुरु। सुर गिर सम सैलास ॥
चिपथ नाम मुनि देव का। वसि रु कियो कैलास ॥
छं० ॥ २२० ॥ रू० ॥ ११५ ॥

॥ महादेव का पर्वत को अचल कर उसमें अचल नाम से विराजना ॥

कवित्त ॥ तव सु ईस मन मुदित। पानि चंप्यौ गिर गौरव ॥
अचल अचल कहि अचल। भयो अचलेस नाम तव ॥
सुथिर भयौ नग नंदि। अप्प सिर वास सु सज्यौ ॥
उमय आय तिहि थान। सगन प्रमथाधिप रज्यौ ॥
गिरि नंद नाम हेमद्द सुतन। अर्बुद नाग सु मिच मन ॥
तिहि नाम चिविध भय तिष्य हर। पारस अप्पन अर्थ तन ॥
छं० ॥ २२१ ॥ रू० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ अचल नाम कहि अचल। अचल विद्या अभ्यासिय ॥
अर्बुद गिरि थिर धरग्रौ। वियौ वानारस वासिय ॥
उच्चित नाम इक वरष। मुत्ति लब्भेति जगत गुर ॥
इच्छत नाम इक दीह। करै उपवास सोइ नर ॥

११३–११५ पाठान्तरः—प्रथमाधिपति। बानी। समप्यों ॥ ११३ ॥ मों। तुठो। भग्ग पास ॥ ११४ ॥ गुरं। सं॰ १६४७ की में "मुदगिर सम सैलास" और सं॰ १७७० की में "सुर गिर सम सैलास" और सं॰ १८५९ में "मेर समल सैलास" पाठ हैं ॥ त्रिपथा। ताप। सुनि वसि। रुकियौ ॥ ११५ ॥

११६ पाठान्तरः—अच। प्रथमाधिपं। रंज्यो। नम। तिय। अथि ॥

बाना रभंति बारानसिय। आबू अर्बुद उद्धरिय॥
जट विकट जाल विभ्भूति रँग। सुरग मुकति ढिग ढिग फिरिय॥
छं० ॥ २२२ ॥ रू० ॥ ११७ ॥

॥ आबू को अचल देख कर वशिष्ट का प्रसन्न होना और अन्य ऋषियों को वहां यज्ञ के लिये बुलाय जप तप और वास करना ॥

पद्धरी ॥ अग अचल दिष्षि वाशिष्ट रिष्ष। मन मुदित भयौ सम आय सिष्ष॥
हर वासदेव सब गुन समान। आवरन रिद्धि चित चिंत थान॥ २२३ ॥
आभासि सिष्ष गौतमह तथ्य। आचरौ वास अनि रिष्ष सथ्य॥
आभासि रिष्ष अनेक ताम। संबोधि बोलि प्रथु प्रिथुक नाम॥ २२४ ॥
देवलह असित अंबावि सूत्र। सैामिच सर्प्प माली विभूव॥
मह महल सनक जैनेय पैल। दालभ्य वक्र सुमंत औल॥ २२५ ॥
दीपाय किस थूलंसि राय। तैतरिय जभ्भवक्री सुताय॥
जैमनिय ध्रुव्व वैसंपयान। हर्षनह लोम असुहोच जान॥ २२६ ॥
मंडव्य अरति कौसिक्क दाम। उष्णीष चिवन पर्नाद वाम॥
घटजात सुबल सोजायनेय। बलवाक परासर वायवेय॥ २२७ ॥
सचिवाक जात क्रन क्रन्न माल। सनिवाक क्रिताश्रम सुचि पाल॥
सिषि वांनसु पर्पत पारिजात। अगस्ति मारकंडे सुभाति॥ २२८ ॥
पाविच पानि सर्वन्य रम्य। किरनाषकेत भ्रगु सेष सभ्य॥
जंघावं भालकी कोप वेग। गालम हरीय ब्रह्म अगेग॥ २२९ ॥
कौडिन्न बंध माली सनक्क। सानंद सनातन कच वक्क॥
सांडिल्ल करक वाराह पंग। कौमार अस्व हय घोष मंग॥ २३० ॥
वेनीय जघन जघ नासकेत। कन्हं कलाप वक्रीव सेत॥
अष्टाहवक्र उद्दालकेय। च्यवनह कपिल मातंग जेय॥ २३१ ॥

---

११७ धर्यैा। बीयो। लभ्यैा। तिजगत। वानार। भंति। वानारसीय। उद्धरीय। मुति॥
११८ पाठान्तर:—दिषि। वाचिष्ट। सिष। आचर्यैा। प्रिथक। अंकवा। विसूत्र। सप्प। ध्रुव। हरष। नह। मंडप। कौसिक। उष्णीक। पनदिवाम। घट। जात। वाल। वाक। बालजाक। वाय। वेय। सचि वाक। क्रन। क्रनमाल। सनि। वाक। क्रिताश्री। सिषि। वांनस। पर्वत। भाल। की। गालं। मह्नि। रिय। कोंडिन। सांडिल। वेनी। जय। घन। घना। सकेत। कन्ह। वसेत अष्टाह।

॥ यज्ञ का अनुष्ठान सुन कर राक्षसों का एकत्र हो आना ॥

दूहा ॥ जंचकेत दानव दुसह । अरु रष्पस धुमकेत ।
अप्प सथ्थ लीने सकल । आए दुष्टह हेत ॥
॥ छं० ॥ २४३ ॥ रू० ॥ १२१ ॥

॥ ऋषियों का अनलकुंड रचन कर ब्रह्म कर्म प्रारंभ करना ॥

कवित्त ॥ आबू करि रिषि जग्य । मंच कारन सु मंच जपु ॥
पंड हथ्थ नर उंड । अष्ट अंगुल ऊर्द्ध वपु ॥
हथ्थ तीन अरु अद्ध । मंडि चवकून समा सम ॥
खप्प समति सम कियौ । फनति वचयौ देव क्रम ॥
अगिनेव थान अगिनेव धर । वाय कुंड दष्पिन दिसा ॥
नैरत निवर्त धज मंडि कै । ब्रह्म कास्स लग्गे रिसा ॥
॥ छं० ॥ २४४ ॥ रू० ॥ १२२ ॥

॥ दैत्यों का ऋषियों के यज्ञ में विघ्न करना ॥

कवित्त ॥ पंच पर्व्व जग्योपवीत । पंच पर्व्वो अधिकारिय ॥
देवो मुनि दुजराज । वैश्य शूद्रह चितकारिय ॥
चर विडाल पशु स्लेछ । क्रंम चंडाल षंड करि ॥
इह प्रमान दस (विधि*) सुक्रम । जग्ग मंडे सुमंडि हरि ॥
दानव सु दुष्ट दुष्टंसु क्रम । दुष्ट मूच वरिषा करै ॥
पसु मंस रुधिर नंषै सु जल । क्रंम विप्र संमुह डरै ॥
छं० ॥ २४५ ॥ रू० ॥ १२३ ॥

चौ वेदी चौ विप्र । गीत गायच मंच जप ॥
ता मंड्यो घन विघन । करै आरिष्ट असुर कुप ॥

---

१२१ पाठान्तर:—यंत्रकेत । राषेस । धुम्रकेत । अप । सथ । अहेत ॥

१२२ पाठान्तर:—आब्बू । रिष्षि । तप । हथ । वर । उरद्ध । वप । अर्द्धं । संमति । स्रप । कीयो । वंचयो । अगिनेव । आगे । नेव थांन । अगि । नेव । वाद । क्रुंड । दषिन । किसा । रसा ॥

१२३ पाठान्तर:—जग्यैापवीत । जुग्योपवीत । सं० १६४७ और १७७० की पुस्तकों में यह पाठ है "इह विधि प्रमान दस विधि सुक्रंम" । जंग । जग । सुमंडि । सुदुष्ट । दुष्ट । सुक्रम्म । वसु । मंसु । सुजल । कर्म । समुह ॥ (विधि*) विशेष है ॥

१२४ पाठान्तर:—गाइत्र । मंडय । मंडे । प्रर्वत हलावे । मोहिनी । रूप कवहिक धरै । नट्टहिं । कबक । वै । "वे हथिन तालि न धरै" भी सं० १६४७ की में पाठ है । हथ्थं ।

॥ तथापि राक्षसों का उपद्रव शमन न होना ॥

मलया ॥ कारयं जग्य बंभान निंमानयं। रचियं कुंड षंड थिरं थानयं ॥
आसनं दिव्य देवान आव्हानयं। आसुरं कीन उच्चिष्ट जथानयं ॥
छं० ॥ २५१ ॥ रू० ॥ १२८ ॥

॥ तब वशिष्ट का स्वयं कुंड रचन कर यज्ञार्थ बैठना और चिंतवन करना ॥

दूहा ॥ जब वाचिष्टह जग्य कजि। सजि कुंडह सुभ थान ॥
तब आसुर अन संक ह्वै। किय उचिष्ट उतान ॥
छं० ॥ २५२ ॥ रू० ॥ १२९ ॥

कवित्त ॥ तब चिंतिय वाच्चिष्ट। एह आसुर अविचारिय ॥
जग्य जीह उच्चिष्ट। करैं कातर क्रत चारिय ॥
सुरन अंस संग्रहे। हवै नह हव्य हुआवह ॥
सो उपाव लंचिये। (जो *) याहि संवरै असुर सह ॥
न्त्रिम्यौ सु सूर संग्राम भर। अरि अलंघ षंडन सु षल ॥
सम धरहि जग्य कारन सकल। विमल सिष्ट सोभै सयल ॥
छं० ॥ २५३ ॥ रू० ॥ १३० ॥

अरिल्ल ॥ अघट घाट रिषि दूष्षि निसाचर। परिसि च्यार घरि ध्यान ग्यान बर ॥
चिंतिय ब्रह्म करम किहि कामह। भयौ रूप रिषि ब्रह्म सुतामह ॥
॥ छं० ॥ २५४ ॥ रू० ॥ १३१ ॥

---

१२८ इस रूपक के छंद का नाम जो चंद ने मलया प्रयोग किया है वह स्रग्वणी नामक चार रगण का छंद है ॥

पाठान्तर:—बंभाननि। मानयं। रचियं। आहवानयं। उचिष्ट।

१२९ पाठान्तर:—वाशिष्ट। सुथांन। अनं।

१३० पाठान्तर:—चितिय। जिष्ट। जिह। करै। हवै न हव्यहु आवह। संयाम। षंडं। समं। सोभै॥ (जो *) विशेष है ॥

१३१ पाठान्तर:—दूषि। निसाचरं। वरं। ब्रह्मकरम ॥ सं० १७७० की पुस्तक में "ग्यान" शब्द नहीं है ॥

॥ वशिष्ठ का चाहुवानजी को उत्पन्न करना ॥

कवित्त ॥ अनल कुंड किय अनल । सज्जि उपगार सार सुर ॥
कमलासन आसनह । मंडि जग्योपवीत जुरि ॥
चतुरानन स्तुति सह । मंच उच्चार सार किय ॥
लु कारि कमंडल वारि । जुजित आव्हान थान दिय ॥
जा अग्नि पानि स्रव अहुति जजि । भजि सु दुष्ट आव्हान करि ॥
उप्पज्यौ अनल चहुवान तव । चव सु वाहु असि वाह धरि ॥
॥ छं० ॥ २५५ ॥ रू० ॥ १३२ ॥

दूहा ॥ भुज प्रचंड चव च्यार मुष । रत्त ब्रन्न तन तुंग ॥
अनल कुंड उपज्यौ अनल । चाहुवान चतुरंग ॥
॥ छं० ॥ २५६ ॥ रू० ॥ १३३ ॥

॥ ऋषियों का चाहुवानजी का स्वरूप देख कर उन को चाहुवान कहना । उन को राक्षसों से युद्ध करने की शक्ति देने को आशापूरा देवी का स्मरण करना । देवी का प्रत्यक्ष होकर चाहुवान जी को राक्षसों से युद्ध करने में सहायता देना । राक्षसों का रसातल को जाना । देवी का चाहुवान जी को अपनी कुल देवी मानने की आज्ञा करना और उन का अपने वंश भर की कुल देवी मानना स्वीकार करना । देवी का उन को वर देकर पधारना । वशिष्ठ का चाहुवान जी को आशीर्वाद देकर अन्य अनलों का वर्णन करना और दुर्वासा को शाप देकर पठाना ॥

गाथा ॥ उपज्या अनल अनूपम रूपं । नहि आकृत्ति अवर नर रूपं ॥
अंन अभूत सु उन्नत जिष्टं । वंदन भर कि वह्न मनु पिष्टं ॥ छं० ॥ २५७ ॥

---

१३२ पाठान्तरः—अनलकुंड सजि । मडि । जग्योपवित । आहवान । जाजाने । आवहान । उपज्यो । चहुआन ॥ पुरातत्ववेत्ताओं के स्मरण में रहे कि प्रायः यह कहा जाता है कि अग्निकुलों की कब उत्पत्ति आबू पर हुई उस का कोई पौराणिक प्रमाण भी नहीं मिलता । अतएव हम एक यह प्रमाण विदित करते हैं कि कालिंदिका प्रकाश नामक ग्रंथ में पुराणोक्त यह श्लोक लिखा है:—

श्लोक ॥ दूषयिष्यन्ति यवना, स्वहस्राब्दे गते कलौ ।
तदा रक्षां करिष्यति, याज्ञिकाः क्षत्रियर्षभाः ॥

१३३ पाठान्तरः—रत । व्रन । वच ।

स्याम रोम कपोल विसालं। उन्नित कंध छतिय दूसालं॥
लाल माल सोभै उर सोभं। प्रथु प्राक्रष्ट दिक्ख कर दोभं॥ छं०॥ २५८॥
नयन प्रथुज भ्रकुटी सु करूरं। मुख आकत्ति बाल हर नूरं॥
कवच चोन उर चान सरीसं। दल आकत्ति भयानक दीसं॥ छं०॥ २५९॥
तोन पूरि सर बद्धि सु कासं। धरिय पांन सरबी रवि रासं॥
षेटक षग्ग उनंगी धारं। चाहिवान दिष्यो रिष सारं॥ छं०॥ २६०॥
चाहि आइ रिषि आइ समंगे। चाहुआन कहि सद्द सुरंगे॥
समरी सकति रिष्यि गिर वासी। दिय साहाय युद्ध कजि तासी॥ छं०॥ २६१॥
आई सक्कति सिंघ आरोही। द्वादस भुजा सु आयुद्ध सोही॥
षेटक षग्ग बरद्दह पासं। घंटा बान कती सिर आसं॥ छं०॥ २६२॥
षप्पर सकति सूल मद पाचं। देषे रूप क्रंम क्रम काचं॥
आसा पूरि कहै रिषि राजं। चाहुवान मंडी क्रत काजं॥ छं०॥ २६३॥
चाही सक्कति सहाइ अनल्लं। चल्ले सूर सवै कसि बल्लं॥
सब आए चढि रष्यस ठानं। मंड्यौ जुड्ढ सवै असमानं॥ छं०॥ २६४॥

---

१३४ इस रूपक के छंद २५७ के पाठ में बड़ी गड़बड़ है। एशियाटिक, सोसाईटी बंगाल की छापी हुई पुस्तक में "उपज्यैा अनल अनूपम रूप। नहि आकृति अवरन रूपं॥ व्रन अभूत सू उंनत जिष्टं। वंदन भर कि बद्धुम नुपिष्टं"॥ और सं० १७७० की पुस्तक में "उपज्यैा अनल अनोपम रूपं। महि आकृति अवरम रूपं। व्रंत अभूत असु उत्तमा जिष्टं। वंदन भरकि बद्धु मन पिष्टं"॥ और संवत् १६४७ की में "उपज्यैा अनल अनूपम रूपं। नहि आकृति अवरम स्तूपं। व्रत अवूत असु उन्नत जिष्टं। वंदन भरा के बद्धु मन पिष्टं"॥ किन्तु हमारा पाठ कर्नैल ट्रोड साहब के गुरु बारेट ज्ञाणसिंहजी ने जिस सं० १८५९ की पुस्तक से रासा पढा था उसके अनुसार है॥ इस में "दूपं" शब्द हमारे पाठकों को अर्थ करते समय परिश्रम देगा क्योंकि जिस संस्कृत शब्द "दूप" का यह अपभ्रंश हिन्दी है वह संस्कृत के अच्छे विद्वानों के पढ़ने में भी उस का बहुधा प्रयोग न होने के कारण बहुत ही कम आया होगा और वह वाचस्पत्यबृहदभिधान और शब्दार्थचिन्तामणि जैसे बड़े कोषों में भी नहीं मिलेगा परंतु प्रोफेसर बिलसन साहब के कोष में मिलेगा वे इसको त्रिलिंग में strong अर्थात् बलवान अथवा पुष्ट का वाचक लिखते हैं॥

पाठान्तर:—उनित। उंनित। उन्नत। दुसालं। प्राकुष्टं। दिक्ख। आकृति। बालहर। आकृति। सरि वीर विरासं। उनंगी। चाहि। बान। गिरवासी। वरदह। कतो। क्रम। मंडो। सहाई। ठानं। आवटि। धुंमकेत। सकतियं संहतियं। अध। पास। तास। तक्ख। प्रसंनिय। थप्पे नाम। ताम। संवत् १६४७ और संवत् १७७० की में "धास्यैा कर सिर लै चहुवानं"। पाठ है। धयैा। चाहुवान। व्रधहु। वंस। मान। चहुवान। असमान। गई। हे है। चहुवानं। उप्पज्जि।

वाढे आवधि सकती सारं । धऊ आवहि पडै घर भारं ॥
रहे धुमरकेत सकतीयं । जंचकेत चहुआन (सु*) हतीयं ॥ छं० ॥ २६५ ॥
अह्व सु रप्पस दानव लद्धे । गए रसातल नठ्ठे अद्धे ॥
देवी आइ अनलह पासं । जंपी तप्प प्रसन्नी तासं ॥ छं० ॥ २६६ ॥
आसापूर कहै सो नामं । पुज्जै पुच पौच परिनामं ॥
कुलह गोच मुक्क थप्पै नामं । अप्पों रिद्धि अचलह तामं ॥ छं० ॥ २६७ ॥
धाग्यौ सिर लै कर चहुवानं । ब्रह्महु वंस अंस जस मानं ॥
जीति अप्प देवी चहुआनं । दिय वर दान गई असमानं ॥ छं० ॥ २६८ ॥
गइ असमान कियौ सद भारी । धुं! धुं! कार जै! जया सारी ॥
है! है! कारि हं! हं! चहुआनं । अनल कुंड उपजे परिमानं ॥ छं० ॥ २६९ ॥
चौ मुष्यौ चौ वेद प्रकारं । ऐसो मुष देष्यौ अधिकारं ॥
वेदं स्याम अथर्वन रूपं । रिगु जिजु वेद देव गुन नूपं ॥ छं० ॥ २७० ॥
चित चमकार चिहूं दिसि लग्गिय । पढत ताहि ब्रह्मंड सु जग्गिय ॥
बानी धुनि सुनि हरषि वसीसं । वर वचिष्ट तहां दई असीसं ॥ छं० ॥ २७१ ॥
तोहि वंस होइ कुंडल धारी । जनु कि अर्क राका विस्तारी ॥
थुति करि सेव देव तिहि पानं । जै जै तप्प जिते चहुवानं ॥ छं० ॥ २७२ ॥
परिहरि बीर बीर नर केकं । तिहि चालुक्क भयौ गुन सेकं ॥
परहरि वर पावार ति वारं । क्रोध रूप जाजुल्य निधारं ॥ छं० ॥ २७३ ॥
जाजुल्लति परिहार न दिष्यौ । थिजि करि विप्र पौरि तह रष्यौ ॥
तिन कारन वाचिष्ट रिषीसं । अर्बुद नाम गिरि नंद जगीसं ॥ छं० ॥ २७४ ॥
ता ऊपर दुरवासा आए । दै सराप वाचिष्ट पठाए ॥
अब वे दानव दुष्ट सु दाषे । तो रष्या चव कुली सु राषे ॥ छं० ॥ २७५ ॥
वंस छत्तीस गनीजै भारी । च्यार कुली कुल तिन अधिकारी ॥
सब सु जात जोनी मग दिष्षिय । ए ब्रह्मा अविसेष विसिष्षिय ॥
॥ छं० ॥ २७६ ॥ रू० ॥ १३४ ॥

चिहू । पढ्य । हरषिव । सीसं । वशिष्ट । रासा । तप । नरकेकं । तिवारं । पारहारन । तहं । उपर । रष्य । छत्तीस । गति । जे । जेत्ती । (सु*) विशेष है ॥

॥ छत्रीयों के छत्तीस वंशों की नामावली ॥

कवित्त ॥ रवि ससि जाद्‌व वंस । ककुस्थ परमार सदावर ॥
चाहुवान चालुक्क । छंद सिलार आभीयर ॥
दोय मत्त मकवांन । गरुअ गोहिल गोहिल पुत ॥
चापोत्कट परिहार । राव राठौर रोस जुत ॥
देवरा टांक सैंधव अनिग । योतिक प्रतिहार द्‌धिषट ॥
कारट्टपाल कोटपाल हुल । हरितट गोर कमाष मट ॥
छं० ॥ २७७ ॥ रू० १३५ ॥

दूहा ॥ धान्यपालक निकुंभ वर । राजपाल कविनीस ॥
काल छुरक्कैं आदि दै । वरने वंस छतीस ॥
॥ छं० ॥ २७८ ॥ रू० ॥ १३६ ॥

॥ चारों अग्निकुल छत्रीयों ने वशिष्ठ का यज्ञ निर्विघ्न किया ॥

कवित्त ॥ पढत मंच रिष जाप । च्यार षिची उप्पाए ॥
कुचिल दीन परिहार । पैारि रष्पहु सत भाए ॥

१३५–३६ पाठान्तरः—यादव । परमार–स । तोंवर । चालुक । छिंद । छंदक । आभीवर । गुरुअ गोह । गही भुत । राठोर । सिंधव । अनग । अनंग । योतिक । प्रतिहा । दधीपट । करेटपाल । हुन । हरीतट । गोरक । भाड । जट ॥ १३५ ॥ ध्यानपालक । ध्यान पालग्नि । कुंभ । कविनीस । दे । छत्तीस ॥

कवि चंद के समय में जो छत्तीस कुल क्षत्रियों के प्रसिद्ध थे उन के नाम उसने वर्णन किये हैं अर्थात् रवि = सूर्यवंशी १ ससि = चंद्रवंशी २ जादव = यदुवंशी ३ ककुस्थ = कछवाहे ४ परमार ५ सदावर = तोंवर ६ चौहान ७ चालुक = सोलंकी ८ छंद = रांदेल ९ सिलार १० आभीयर ११ दोयमत्त = दाहिमा १२ मकवान १३ गोहिल १४ गहिलोत १५ चापोत्कट = चावडा १६ परिहार = पंढियार १७ राठौर १८ देवडा १९ टांक २० सैंधव = सिंधव २१ अनिग = अनग २२ योतिक २३ प्रतिहार २४ दधिषट २५ कारट्टपाल = काठी २६ कोटपाल २७ हुल = हुन, हुण २८ हरितट = हाडा २९ गोर = गोड ३० कमाष = कमाड, जेठपा ३१ मट = जट ३२ ध्यानपालक वा धान्यपालक ३३ निकुंभ ३४ राजपाल ३५ कालछुरक्कैं = कालछुर ३६ । इन के विषय में कवि दलपत रामजी अपने ज्ञाति निबंध नामक ग्रंथ में लिखते हैं कि रत्नकोश नामक संस्कृत ग्रंथ की टीका में लिखा है कि क्षत्रिय कुल का आदि पुरुष मनु उस के वंश में से यह छत्तीस हुए हैं ॥

सं० १६४७ और सं० १७७० की पुस्तकों में इन रूपकों के स्थान में रूपक १३७ और उस के स्थान में इन को लिखे हैं अर्थात् उलट पुलट हैं । हम ने उन का क्रम इस लिये ग्रहण नहीं किया है कि रूपक १३४ के छंद २७६ की पहिली तुक का अर्थ उस के पीछे इन रूपकों का ही होना प्रकाश करता है ॥

चतुर वीर चहुवान । च्यार सुष्पौ चौवाहं ॥
अष्ट अष्ट आरिष्ट । देव चारिष्ट सु साहं ॥
पंसार वाह धन धन करह । कह्यौ रिष्य परमार धन ॥
चालुक्क वाह चालक्क दुज । कुसित कुसन संडित तन ॥
॥ छं० ॥ २७९ ॥ रू० ॥ १३७ ॥

अनल कुंड आसंग । उपजि चौहान अनिल थल ॥
सुकर संठि करि वार । धनुष संग्रह्यौ वान वल ॥
तिन रष्पिस परिवार । धार सुष धरनि नि घट्टिय ॥
षल जुषित्त संमुहे । तिनह सिर सरअन तुट्टिय ॥
वंभान जग्य निर विघन किय । पुहप वृष्टि सुर सीस रजि ॥
रष्पि सु धरनि षग भुज्ज वर । रिष्ट निवारिय दुष्ट भजि ॥
॥ छं० ॥ २८० ॥ रू० १३८ ॥

॥ जिनोंने द्विजों की रक्षा किई उनके वंश में पृथ्वीराज है ॥

दूहा ॥ तिन रछा कीनी सु दुज । तिहि सु वंस प्रथिराज ॥
सो सिरषत पर वादनह । किय रासौ जुविराज ॥
॥ छं० ॥ २८१ ॥ रू० ॥ १३९ ॥

॥ चाहूवानजी के वंश के राजाओं की कथा ॥

॥ चाहूवानजी से माणिकराजजी पहिले तक तेरह पीढ़ी का वर्णन ॥

पद्धरी ॥ ब्रह्मान जग्य उतपन्न सूर । चहुवान अनल अरि मलन सूर ॥
उत्तंग अंग प्रचंड बाह । पहुमीस दूंद अरि गिलन राह ॥ छं० ॥ २८२ ॥
प्रतिपाल धरनि अंगह सु भ्रम्म । श्रुत मान कीन उत्तंग क्रम्म ॥
रत्तो सु जोग भव भोग रास । पुर अमर नाग नर कित्ति जास ॥ छं० ॥ २८३ ॥

१३७–१३८ पाठान्तर :–जाय कुलिल । चहुवान । सुपौ । सुसाहं । वाह । रिषि । पंमार । मंडि । ततन ॥ १३७ ॥ कुंद । चौहांन । रष्पि । सपरिवार । सुष । निघट्टिय । जुषित । निरविघन । भुज्जवर ॥ १३८ ॥

१३९ पाठान्तर :–रख्या । तिहिं । पृथ्वीराज । पृथिराज । प्रवादनह ॥

१४० पाठान्तर :–ब्रंह्मान । उत्पन्न । चहुवांन । मल । मसूर । उतंग । पहुवीसु । दूंद्द अरिगिलन । धरनी । अंग । श्रुतमान । उतंग । रतो । सुजोग । भास । क्रिति । तासू । अन । सु । अन । माहंत । संका । विडार । मानिक । राजत । सु । अन । माह । भूत । भयंकर । रत ।

ता सुअन सूर सामंतदेव। अरिमंत मत्त मत्ता जु रेव॥
महदेव सुअन मोहंत तास। सु प्रसन्न ईस सेवंत जास॥ छं० ॥ २८४॥
बर अजयसिंह सिंघह सु रास। नर बीरसिंह संग्राम ताम॥
सुअ बिंदसूर उद्दारहार। आलोक श्रीय संकाविहार॥ छं० ॥ २८५॥
सुअ वैरसिंघ वैरी बिहंड। अव बीरसिंघ अरि वीर डंड॥
अरिमंत सकल कलि कलन चूर। मानिक्क राव चहुआन सूर॥ छं० ॥ २८६॥

॥ महिसिंहजी से धर्म्मधिराजजी तक का वर्णन ॥

राजत * सुअन ता सहस मध्य। महसिंघ सिंघ संग्राम पथ्य *॥
सुअ चंद्रगुपत सम चंद्ररूप। प्रतापसिंघ आदेन दूप॥ छं० ॥ २८७॥

नूप। तत। पूर। बालंन। प्रथम। जग्ग। दुप। पहु। मंह। रत। कोडी। कियो। चल्यौ। प्रमान। मांन। थांन। चल्यौ। मुकजो। मुक्रयौ। निगम। मुक्कयो। जित। किति। चौसठि। चित। पायो। जंम। बिप। जंम। कदंम। कद्दम। दानेवसल। थांन। स। आनि। उगत। उगात। उतंग। पुकस्या। जरन। जाहुजाहु। जाह जाह। द्वन्द। सं० १७७० और १६४१ में "नैर पुर रुद्र डरि हक्क बजि। मांनि। जर्ज्जरी। जज्जरीय। पांनि। लगे। डके। सुरूप। मृग। सर्प। अप्प। अप। सद। पुज॥

* * पक्षपात रहित वृद्ध और विद्वान कवि कहते हैं कि यहां अर्थात् छंद २८६ और २८७ के बीच में कितनेक छंद लोप हो गये हैं किन्तु चंद कवि ने तो मूल पुरुष श्री चाहुवानजी से लेकर पृथ्वीराजजी तक पीढ़ावली वर्णन किया थी कि जिन को सब ऐतिहासिक ग्रंथ और सर्वसाधारण मनुष्य हिन्दुओं का अंतिम बादशाह होना प्रकाश करते और मानते हैं। और क्वचित् चंद का नाम विध्वंस करने वाले यह कहते हैं कि ग्रंथकर्त्ता ने अपने अज्ञात होने के कारण खंड विखंड वंशावली वर्णन किया है। इन दोनों सम्मतियों में से हम पहिली से सम्मत हैं क्योंकि प्रथम तो चंद कवि अपने वंश परंपरा से इस राजकुल का मुख्य कवि और ख्यात वर्णन करने वाला था और यह कदापि संभव नहीं है कि आज तो हम चौहान वंश की शुद्ध अथवा अशुद्ध पीढ़ावली जान सकें और हम से सात सौ वर्ष पहिले जो उक्त राजकुल का निज कवि हुआ वह न जानता हो और न वर्णन करे। दूसरे चाहुवान वंश की पीढ़ावली जो श्रीमान श्री बूंदी राव राजाजी महोदय ने निश्चय कराई है और जो एक चाहुवान वंश मात्र की पीढ़ावली हम भी सन् १८७३ से सिद्ध कर रहे हैं और वह बूंदी वाली से विशेषांश में मिलती हुई है उन दोनों के अनुसार श्री चाहुवानजी से पृथ्वीराजजी एक सौ सतत्तरवीं १७७ पीढ़ी में हुए सिद्ध होते हैं। अब यहां सूक्ष्म बुद्धि से विचार कर देखने की बात है कि छंद २८२ से २८६ तक में जो तेरह १३ नाम क्रम से कवि ने कहे हैं वह उक्त दोनों वंशावलियों से बराबर मिलते हैं और "राजत सुअन ता सहस मध्य" का अर्थ इन प्रथम माणिक्यराजजी के विषय में घट नहीं सक्ता क्योंकि इतना वंश यहां तक बढ़ नहीं सक्ता। इस के सिवाय जो पाठक चाहुवान वंश की इस परम प्रसिद्ध कथा को जानते होंगे कि तीसरी पीढ़ी में महादेवजी जिनका उपनाम परभंजनजी भी है उनके हाथ से अनजाने प्रमति ऋषि की एक गाय मर गई थी कि जिस पर ऋषि ने शाप दिया था कि "तुमारा वंश नाश हो" तदनन्तर ऋषि को

सुत सोह सिंघ वर मोह रूप। भूतह भयंक रन रत्त भूप॥
सुत सेनराइ वह सेन वंत। संप्रत्ति राइ सुभ मत्त संत॥ छं०॥ १८८॥
सुअ नागहत्त सम नाग राज। अस्थूल नंद आनंद राज॥
गिर लोहधीर सुत भस्ससार। सुअ वीरसिंघ संकाविडार॥ छं०॥ १८९॥
सुअ विबुधसिंघ सम जोगसूर। जस चंद्राय वर अजस दूर॥
सुत किस्नराज जस किस्न चिंत। हरहरह राइ नर बुद्धिमंत॥ छं० १९०॥
वाजन्न राइ वलि अंग तास। सुअ प्रथव राइ पहुमी प्रकास॥
तिन अनुज अंग राजत अनेय। कलि अलप आउ कित्ती अछेय॥ छं०॥ २९१।
धर्म्माधिराज रति जोग भोग। पट पुंट षित्ति पगगह सु भोग॥

मनाने पर उनोंने अपराध क्षमा कर के कहा कि कितनीक पीढ़ियों तक तो तुम्हारे वंश में एक २ ही पुत्र होता रहेगा फिर वंश बढ़ेगा। इस से भी इस सुक का अर्थ माणिकराजजी में नहीं घट सक्ता।

तथा उक्त दोनों पीढ़ावलियों को इस रूपक के साथ मिलाने से यह भी ज्ञात होता है कि छंद २८७ से अर्थात् उस में कहे महिसिंहजी एक सौ अड़तालीस १४८ वीं पीढ़ी में हुए और उन से फिर सब नाम बराबर क्रम से एक सौ सतत्तर १७७ वें पृथ्वीराजजी तक मिलते हैं। क्या अब जो चौदवीं १४ पीढ़ी से एक सौ सैंतालीस १४७ वीं पीढ़ी तक के बीच के नाम वह भी क्रमवार चंद कवि बिलकुल ही नहीं जानता था अथवा क्या वह उन को निगल कर परलोक में जा बैठा है? जो कि हमारी वृत्ति सदैव प्रत्येक विषय के अनुकूल अनुमान करने और उस के साधर्म्य को मान्य करने की है इसलिये प्रतिकूल अनुमान ही क्यों करें और वैधर्म्य की ओर क्यों दृष्टि डालें। क्योंकि जो आज विद्वान लोग अन्य बड़े २ प्रसिद्ध ग्रंथों के विषय में ऐसे ही प्रतिकूल ही अनुमान करने लग जावें और वैधर्म्य का ही आश्रय कर लें तो बड़ा अनर्थ हो जाय। अब हम चौदहवीं १४ पीढ़ी से एक सौ सैंतालीसवीं पीढ़ी तक के नाम हमारे तथा बूंदी राज्य के शोध किये हुए हमारे पाठकों के जानने के लिये यहां लिखते हैं। पुष्करजी (विजयपालजी) १४ असमंजसजी १५ प्रेमपूरजी १६ भानुराजजी १७ मानसिंहजी १८ हनुमानजी (धर्म्मपाल) १९ चित्रसेनजी २० शंभूजी २१ महासेनजी (चट्टीशजी) २२ सुरथजी २३ रुद्रदत्तजी (कर्णपालजी) २४ हेमरथजी (रामपालजी) २५ चित्रांगदजी २६ चंद्रसेनजी (चित्ररथजी) २७ वाल्हीकजी (वत्सराजजी) २८ धृष्टद्युम्नजी (वरुणजी) २९ उत्तमजी ३० सुनीकजी ३१ सुबाहुजी (मोहनजी) ३२ सुरथजी ३३ भरथजी (मद-सेनजी) ३४ सत्यकीजी (सत्यकजी और सात्त्विकजी) ३५ शत्रुजित्जी (केसरीदेवजी) ३६ विक्रमजी ३७ सहदेवजी (इन को जीतकर कुरुवंशी राजा ने दिल्ली ले ली) ३८ वीरदेवजी (भीमसे-नजी) ३९ वसुदेवजी ४० वासुदेवजी ४१ रणधीरजी ४२ शत्रुघ्नजी ४३ सुमेरुजी (शालिवाहनजी) ४४ छत्रवर्म्माजी ४५ सुवर्म्माजी ४६ दिव्यवर्म्माजी ४७ यौवनाश्वजी ४८ हर्यश्वजी ४९ अजैपालजी (अजमेर बसाने वाले) ५० भटदलनजी ५१ अनंगराजजी ५२ भीमजी ५३ गोगाजी ५४ शुभकरणजी ५५ उदयकरणजी ५६ जशकरणजी ५७ हरीकरणजी ५८ कीर्तीशजी ५९ बालकृष्णजी ६० हरिकृष्णजी

॥ वीसल देव जी का वर्णन ॥

जग दुष्ष बीर वीसल नरिंद। बहु पापरत्त-द्रव्यान अंध ॥ छं० ॥ २९२ ॥
क्रत अक्रित काम क्रित्तह सु कीन। जिन असुर घोर षनि द्रव्य लीन ॥
संसार थागि फुनि द्रव्य काज। उपजाइ मत्ति अजमेर राज ॥ छं० ॥ २९३ ॥
कौडी सु मोल गज कियौ एक। लीयो न क्रिनह फिरि सद्दर नेक ॥
कामंध अंध सुझ्झौ न काल। इक अद्दक जोरि गिरि इक्क माल ॥ छं० ॥ २९४ ॥
चल्ल्यौ न राजनीतह प्रमान। आनीत बंधि न्रप थान थान ॥
सुझ्झौ न ध्रम्म चाल्यौ प्रमान। मुकजौ निगम्म कारि अगम मान ॥ छं० ॥ २९५ ॥
अवलोह छोह छंडिय सु क्रित्ति। मुक्कयौ ध्रम्म आध्रम्म जित्ति ॥
दरबार अतिथ दीसै न कोइ। अप्प सुद्द क्रित्ति संभरै लोइ ॥ छं० ॥ २९६ ॥
चौसट्ठि बरस बर राज कीन। पायौ न पुत्र फल सुष्प हीन ॥
बल अबल चित्त चिंत्यौ सु काल। पायौ न सुक्रत कछु करन साल ॥ छं० ॥ २९७ ॥
गति अंत सुमति सो होइ बीर। पावै सु जम्म जज्जर सरीर ॥
द्रवि गयौ सुमन वीसल नरिंद। उप्पनौ बीर क्षिति बीष्प कंद ॥ छं० ॥ २९८ ॥
घन मदन सदन भरि लब्ब जम्म। तिह परत उट्ठि क्रत्या कदम्म ॥

---

६१ रामकृष्णजी ६२ बलदेवजी ६३ हरदेवजी ६४ भीमजी ६५ सहदेवजी ६६ रामदेवजी ६७ वसुदेवजी ६८ श्यामदेवजी ६९ हरिदासजी ७० महीधरजी ७१ वामदेवजी ७२ श्रीधरजी ७३ गंगाधरजी ७४ महादेवजी ७५ शारंगधरजी ७६ मानसिंहजी ७७ चक्रधरजी ७८ शत्रुजितजी ७९ हलधरजी ८० महाधनुजी ८१ देवदत्तजी ८२ दामोदरजी ८३ काशीनाथजी ८४ लीलाधरजी ८५ धरणीधरजी ८६ रमणेशजी ८७ भगवतदासजी ८८ कृष्णदासजी ८९ शिवदासजी ९० हरिपूर्णजी ९१ देवीदासजी ९२ कर्मचंद्रजी ९३ रामदासजी ९४ महानन्दजी ९५ विष्णुदासजी ९६ महारामजी ९७ रेवादासजी ९८ अमरसिंहजी ९९ गंगादासजी १०० मानसिंहजी १०१ विश्वंभरजी १०२ मथुरादासजी १०३ द्वारिका-दासजी १०४ माधवजी १०५ सुदासजी १०६ वीरभद्रजी १०७ गोपालजी १०८ गोविन्ददासजी १०९ माणिक्यराजजी दूसरे (इन के दो पुत्र बड़े हनुमानजी और छोटे सुग्रीवजी जिन में से पाटवी हनुमानजी सांभर का राज्य अपनी प्रसन्नता से सुग्रीवजी को देकर आप पटना जीत वहां के राजा हुए कि जिन के वंश में इकतीस ३१ प्रकार के पूर्बिये चौहान हुवे) ११० सुग्रीवजी (सांभर के राजा हुए) १११ अंगदजी ११२ केसरीजी ११३ जयंतजी ११४ जगदीशजी ११५ जयरामजी ११६ विजयरामजी ११७ कृष्णजी ११८ जीतयुद्धजी ११९ गोवर्द्धनजी १२० मोहनजी १२१ गिरिधरजी १२२ उदयरामजी (उद्धमजी) १२३ भारथजी १२४ अर्जुनजी १२५ शत्रुजीतजी १२६ सोमदत्तजी १२७ दुःखंतजी १२८ भीमजी १२९ लक्ष्मणजी १३० परशुरामजी १३१ रघुरामजी (मारोट के राजा से सात दिन लड़कर सांभर छोड़ बुरहानपुर अपने सुसरे के यहां भाग गये और वहीं मरे) १३२ समरसिंहजी १३३ माणिक्यराजजी तीसरे (सांभर इन्हों ने पीछी विजय कर ली) १३४ महुकर्मजी

॥ ढुंढा दानव की उत्पत्ति और उस का अजमेर के वन में रहना ॥

कत्था कदस्स उर असुर रज्जि । धर ढुंढ नाम दानव उपज्जि ॥ छं० ॥ २९९ ॥
जगि जोग नयर जुगनीय थान । पुज्जै सु आय उग्गति विहान ॥
रथ च्यार चक्क उत्तंग बाह । असि असिय हथ्थ मुष अग्ग दाह ॥ छं० ॥ ३०० ॥
संभरिय धरा धरनीय ठाह । पुक्कारौ नरनि रे जाहु जाह ॥
सिर कोपि रीस धुनि दसन वज्जि ॥ उभरे षग्ग जनु इंन्द्र गज्जि ॥ छं॰ ॥ ३०१ ॥
प्राहार पाय धुक्कि धरनि धुज्जि । पुर नयरहृद्द उर हक्कि बज्जि ॥
कंपी सु भूमि नव षंड मान । जज्जरिय नाव ज्यौं बाय पान ॥ छं० ॥ ३०२ ॥
लग्गै न पलक्क द्रग देव चष्षि । डक्कै डकार द्रगपाल गष्षि ॥
दिष्षौ सरूप दानव उतंग । वैराट रूप हरि धरौ अंग ॥ छं० ॥ ३०३ ॥
पंषीह स्रग्ग नर स्रप्प भाजि । आघात सद्द दानव सु गाजि ॥
चित चिंत चिंत्त जुग्गिनि प्रधान । पुज्जै सु आनि उग्गति विहान ॥ छं० ॥ ३०४ ॥
चहुआन रूप दानव प्रमान । भज्यौ सु पुच आबू सथान ॥
॥ छं० ॥ ३०५ ॥ रू० ॥ १४० ॥

(दामोदरजी) १३५ रामचंद्रजी १३६ संग्रामसिंहजी १३७ शिवदत्तजी (श्यामदत्तजी) १३८ भोगादत्तजी १३९ शिवदत्तजी १४० रुद्रदत्तजी १४१ ईश्वरजी १४२ उमादत्तजी १४३ चतुरजी १४४ सोमेश्वरजी पहिले (इन के दो लड़के भरथजी १ और उरथजी २ उन में से भरथजी पाटवी के वंश में पृथ्वीराजजी हुवे और उरथजी के वंश में बूंदी और कोटा आदि के हाड़ा चौहान हुए हैं) १४५ भरथजी १४६ युदुष्टजी १४७ ॥

इसके छन्द २८८ की पहिली तुक के पहिले पाद "सुत मोहसिंघ वर मोह रूप ।" में कवि का गूढ आशय यह समझना आवश्यक है कि वह उसमें तीन नाम वर्णन करता है मोहसिंह (सिंहदेवजी) सिंहवर और मोहनरूप कि जिसके सिंघ शब्द को अर्थ करने के समय मोह शब्द के साथ और बर के साथ दोवार लगाने से पृथक दो नाम सिद्ध हो जाते हैं अतएव हमने सिंघ शब्द के नीचे दो लकीर करी हैं । और इसी तरह छन्द २९१ की पहिली तुक के दूसरे पाद में "प्रथव" शब्द से पृथ्वीराज नामका का निःसन्देह ग्रहण पटु भाषा में व्युत्पन्न विद्वान कर सक्ते हैं । तदनन्तर वीसलदेवजी के जो वृत्त चंद ने जैसे के तैसे उत्तापित होकर लिखे हैं उनको मनन करने से विद्वान पाठक सहज ही में यह अनुमान कर सक्ते हैं कि यद्यपि चंद उनके कुल का वंश परंपरा से राज-कवि था परन्तु वह निःसंदेह बड़ा ही स्पष्ट-वक्ता और पक्षपात रहित पुरुष था क्योंकि आज इस उन्नीसवीं शताब्दी में भी जब कि स्वतंत्रता और सभ्यता का सूर्य पूर्ण प्रकाशित होरहा है तब भी कोई राज-कवि ऐसा स्पष्ट-वक्ता और पक्षपात रहित अपने यजमान की दुर्गतियों को उसके भावी संतानों के शिक्षार्थ निडर होकर प्रकाश करने वाला प्रायः किसी के दृष्टि न आया होगा । इस के साथ भाषाओं के शोध करने वाले विद्वानों को चंद

दूहा ॥ सो दानव अजमेर वन । रहि तह दिन घन अंत ॥
सून्य दिसान न जीव कौ । थिर थावर द्रिगमंत ॥
॥ छं० ॥ ३०६ ॥ रू० ॥ १४१ ॥

मुरिल्ल ॥ संभरि सोर नरिंदह संभरि । पंथ प्रजा पसरै रन जंगर ॥
रम्य अरम्य करी सु धरन्निय । रहे मठ कोट अफोट करन्निय ॥
॥ छं० ॥ ३०७ ॥ रू० ॥ १४२ ॥

॥ सारंगदेवजी की राणी गौरीजी का अनलगर्भ सहित रणथंभ पधारना ॥

दूहा ॥ गौरां चलि रनथंभ गिरि । सारंग सचौ राह ॥
प्रजा पुलंदी महिम धरि । ग्रभ्भ अनल गौराह ॥
॥ छं० ॥ ३०८ ॥ रू० ॥ १४३ ॥

अनल ग्रभ्भ धरि गौरि सिसु । गय रनथंभ दिसान ॥
राजह्व रावत पती । मातुल पष चहुवान ॥
॥ छं० ॥ ३०९ ॥ रू० ॥ १४४ ॥

का यह वाक्यखंड "हक अहक" भी ध्यान देकर समझने योग्य है कि "हक" अथवा "हक्क" जो हिन्दी भाषा में प्रयोग होता है वह अरबी अथवा फारसी नहीं है किन्तु संस्कृत स्वक शब्द से है और "अहक" शब्द स्वतः इस बात की स्पष्ट साक्षी देता है। इसी रूपक के छन्द २९९ से ढुंढा राक्षस की उत्पत्ति चंद कवि वर्णन करता है ॥

१४१ पाठान्तरः—रहितह । रहतह । दिसानन । जीवक्यै । द्रिग । मंत ॥

१४२ पाठान्तरः—पसरी । अवन्निय । रहै ॥

१४३–१४४ पाठान्तरः—सारंग । ग्रभ । गोराह । ग्रभ । रिनथंभ । राजदव । पति ॥

इन रूपकों के पढ़ने पहिले हमारे पाठकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि बीसलदेवजी ने अपने लड़के सारंग देव जी को अपने हाथ से मार डाले थे कि जिस के पीछे वे आप भी सांप के काटने से मर गये और अजमेर अर्थात् संभर का राज्य विना राजा के रह गया और अजमेर के वन में ढुंढा नामक दावन रहने लगा किन्तु बीसलदेवजी के लड़के सारंगदेवजी की रानी गौरी के गर्भ था। राणी जी राज्य की यह दशा देखकर अपने पिता रणथंभ के राजा के यहां चली गईं और वहां सारंगदेवजी के आनल अर्थात् आना राजा उत्पन्न हुए। यह सब कथा आगे के रूपकों में जब आना राजा अपनी माता से अपने पिता का नाम और सब वृत्तान्त पूछैंगे तब कवि माता और पुत्र के संवाद में बीसलदेवजी की कथा सविस्तर वर्णन करैगा। इन रूपकों में अभी गौरी राणी जी का सगर्भा रणथंभ जाना ही कवि ने वर्णन किया है ॥

॥ आना राजा का जन्म होना और उस का बालपन ॥

भुजंगी ॥ धरै गौर जन्नंम आनल्ल राजं । बसे देव गासं दुनी छच लाजं ॥
नवं दृत्त नित्तं नवं दृत्त सिष्षै । नरं तार तारं नवं भृत्त भिष्षै ॥ छं० ॥ ३१० ॥
चरं संभरी वात पुच्छंत मित्तं । धरै ध्यान दिष्षै अजम्मेर चित्तं ॥
कला स्रब्ब सिष्पिंमहा मल्ल वीरं । गिनैं मग्ग ओमं पढै मंच धीरं ॥ छं० ॥ ३११ ॥
दिनं सीह अब्बीह आषेट षिल्लै । ननं नेह निद्रा सुरं सिद्ध मिल्लै ॥
करं पाइकं बिद्ध साइक्क नष्षं । भरं भै अभैनं सुयं सब्ब रष्षै ॥ छं० ॥ ३१२ ॥
वधै काम कासं अलीहो न भष्षै । सुभै राजसं तामसं सत्त चष्षै ॥
रमै जम्म सेना ग्रहै जम्म भारी । सुई संभरी वात दिष्षै करारी ॥ छं० ॥ ३१३ ॥
कहै काल कालं अकालं ति वंधै । दूतं जोर मा वित्त सैां चित्त संधै ॥
दुअं वाह परचंड दुग्गं सरूपं । दूसो दिष्पियै राज आना अनूपं ॥
छं० ॥ ३१४ ॥ रू० ॥ १४५ ॥

कवित्त ॥ अति बल वंड प्रचंड । हिंड आषेट* षिल्लै ॥
हिरन रोज वाराह । वंधि वागुर वर मिल्लै ॥
वन परवत्त भिरना । निवान (राइ *) राजन सँग हिंडै ॥
राग रंग (भाषा *) कब्वित्त । दिव्य वानी चित मंडै ॥
हय हथ्थि देय संकै न मन । षग्ग मग्ग षूनी वहै ॥
चहुआन वंस अवतंस इम । रँग अनेक आना रहै ॥
॥ छं० ॥ ३१५ ॥ रू० ॥ १४६ ॥

---

१४५ पाठान्तरः—आनल । वृत । नितं । वृत । भृत । बान । पुछंत । सेतं । चितं । सब । सिषिं । सिषं । महामल्ल । गिनी मंगि आमं । ओमं । अवीह । सिद्धं । पायकं । साइकं । नंष्षे । भरंभे अभैन सोई सब्ब रष्षै । भरं भेय भैनं सोई सब्बं रष्षै । भरं भेअ भैनं सायं सब्ब रष्षै । वधे । अली । होम । सत्तं । चषै । जमं । ग्रहे । जंम । सोई । साई । सोइ । संभरि । तिवंधे । जो । रमावित्त । सों । दुर्गा । दिषियै । अनूप ॥

इस रूपक से कवि ने आना राजा के जन्मादि की कथा वर्णन करना प्रारंभ किया है ॥

१४६ पाठान्तरः—राइ । संग । हिंडै । कवितं । संपै । रंग । (राइ *) (भाषा *) विशेष हैं ॥

॥ आना का बालपन व्यतीत होना और वीरत्व को प्राप्त हो माता से पूछना ॥

दूहा ॥ तन मंडी मद्दि अप्पनी। छंडी बालक बुद्धि ॥
रोस रस्यौ अरि अंग सें। तब पुच्छि मातह सुद्धि ॥
छं० ॥ ३१६ ॥ रू० ॥ १४७ ॥

॥ आना की माता का उसको सर तर और अष्षर विद्या का उपदेश करना ॥

गाहा ॥ सर तर अष्षर विद्या। सा विद्या अन्य सारसी नथ्थी ॥
सो आना अन भंगं। मंचनं प्रिय यो सष्षि ॥
छं० ॥ ३१७ ॥ रू० ॥ १४८ ॥

जा सिसु वीरं पतनी। बीरं होइ बीर भज्जायं ॥
नवं तीन वत्त तरंगं। सा मातं वीरया पुत्तं ॥
छं० ॥ ३१८ ॥ रू० ॥ १४९ ॥

॥ आना का माता से पूछना कि मैं किस वंश में उत्पन्न हुआ हूं ॥

दूहा ॥ वीर पुत्त मातुल सुमति। गवरि सपन्नो जाइ ॥
को क्किहि बंसहि ऊपज्यौ। तूं मुझ्झ जंपहि माइ ॥
छं० ॥ ३१९ ॥ रू० ॥ १५० ॥

॥ गौरी माता का कहना कि यह बात न पूछो उसके कहते मुझे भय और करुणा होती है ॥

दूहा ॥ गौरि मात कहै पुत्र सों। पुत्त न पुच्छहु बत्त ॥
जिहि भय जल लोचन भरहि। वर पूछन पर तत्त ॥
छं० ॥ ३२० ॥ रू० ॥ १५१ ॥

---

१४७ पाठान्तर:—मत। मही। बुधि। पुछिय॥

१४८–१४९ पाठान्तर:—अरकर। मंत्रनं। अनभंग। साखे॥ १४९॥ धीर। भजाइं॥ नवती नवत तरंगं। नव तीन्न वत्त तरंगं। नवती नव. तत. रंगं॥ यह तीन प्रकार के पदच्छेद कोई २ कवि करते हैं॥

१५० पाठान्तर:—पुत्ति। संपचो। जाई। जाइं। किहिं। ऊपनै। मांइ। भाइ॥

१५१ पाठान्तर:—गौरी। सो। पुत। पुछहु। जिन। भरहिं। पूछत। परतत॥

॥ आना का माता से अपने वंश की कथा हठ करके पूछना ॥

पद्धरी ॥ उच्चरयौ मात सों पुच्च सच्चि । जानों न वंस मो पिता वच्चि ॥
　　सों तात नाम वंदी न लेहि । नन करों श्राद्ध कवहू न गेह ॥ छं० ॥ ३२१ ॥
　　अप्पौं न अंब अंजुलिय तात । उप्पनौ वेद हूं किण सु गात ॥
　　के नाम लेय मातुलह वंस । पित वैर लेउं वर वीर हंस ॥ छं० ॥ ३२२ ॥
　　छंडौं कि प्रान मुक्कूं व देह । संसार भार अप्पौं कि छेह ॥
　　आना नरिंद यह कहिय बात । सुनि श्रवण अप्प धर परिय मात ॥
　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ३२३ ॥ रू० ॥ १५२ ॥

॥ आना की माता का उसे कथा प्रगट न करने को कहना और ढंक करके संक्षेप में कहना ॥

दूहा ॥ पुत्र प्रगट्ट न कीजिये । मो तिय हूय अंदेह ॥
　　आदि हुते दानव प्रबल । घर धुंमी असुरेह ॥
　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ३२४ ॥ रू० ॥ १५३ ॥

　　भिरन कहत दानव सरिस । मानव मनुषी देह ॥
　　मो गंधारि निहारि सुष । पुच विलासनि गेह ॥
　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ३२५ ॥ रू० ॥ १५४ ॥

अरिल्ल ॥ इह मातुल बंस प्रधानह मान । भये दस पुत्त सु मानिक थान ॥
　　विचारि कस्यौ तहां संभरि ग्राम । वस्यौ अजमेर सुमंत विश्राम ॥
　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ३२६ ॥ रू० ॥ १५५ ॥

---

१५२ पाठान्तरः—उचर्यौ । उचस्यौ । रुच्च । जानौ । मुझ । वच्च । लेंहि । कस्यौ । सु । वेदहु । किनसु । के । लेइ । लैऊं । लेऊ । छंडौं । के प्रानं । मुक्कौं । व । अछेह । आनां । इह । इम । कहीय । अप । वरिय ॥

१५३—५५ पाठान्तरः—पुत्र । पुत्त । प्रगट । कीजीइ । जिय । अंदेस । हुंते । असुरेस ॥ १५३ ॥ विलासन । विलास । न ॥ १५४ ॥ प्रधांनह । मांन । मांनिक । थांन । गाम । सुमंत्र । विश्रांम ॥ १५५ ॥

॥ अन्य उपलब्धियों के द्वारा आना का संभरि की पूर्व कथा संभारना ॥

कवित्त ॥ धर मुक्किय वलि राय। मात लभ्यौ न किति रस ॥
धर मुक्किय सुअ पंड। सुष्प मुक्यौ सु दुष्प वसि ॥
धर मुक्किय श्रीराम। सिया षोइय वल गोइय ॥
धर मुक्की नल राय॥ सिरहि कालंकित ज्योइय ॥
धर मुक्कि वीर हर चंद न्टप। नीच घरह घट जल भस्यौ ॥
ढंक्कन सु इला न्टप जानियै। न्टप ढंक्कन इलचर कस्यौ ॥
॥ छं० ॥ ३२७ ॥ रू० ॥ १५६ ॥

न्टप ढंक्कन इल होइ। इलह ढंक्कन सु राज भर ॥
षह ढंकन वर देव। देव ढंक्कन वर अंवर ॥
अपजस ढंक्कन किति। किति ढंक्कन जस धारिय ॥
औगुन ढंक्कन विद्य। सुगुन विद्या उचारिय ॥
ढंक्कनह काल वर अंमको। अंम काल ढंक्कन करिय ॥
मावित्त गुरू ढंकै जु सिसु। सिसु ढंक्कन पित उच्चरिय ॥
॥ छं० ॥ ३२८ ॥ रू० ॥ १५७ ॥

अरिल्ल ॥ इहि विधि आनल वत्त उचारिय। पुव्व कथा संभरि संभारिय ॥
किहि विधि राषस ढुंढ उपन्ना। सारंगदे कैसे जुद्ध किन्ना ॥
छं० ॥ ३२९ ॥ रू० ॥ १५८ ॥

॥ आना का माता से पूछना कि नर अर्थात् वीसलदेव दानव कैसे हुआ ॥

दूहा ॥ एक वत्त तुम सम कहौं। मात कथा समझाइ ॥
नर किहि विधि दानव भयौ। इह अचिरज मो आइ ॥
छं० ॥ ३३० ॥ रू० ॥ १५९ ॥

१५६-१५७ पाठान्तर:—वल। राइ। लिन्यौ। रिस। मुक्कीय। श्री। सुष। दुष। मुक्कीय। सीया। षोईय। गोईय। मुक्किय। सिरां। सिरह। कालंक। तन्यौ। जोइय। मुंकि। घरहिं। भयैां। इल। भूमि। इल वर। कयैां। अप। जस। किति। किति। धारीय। औगन। सगुन। उचारीय। कों। मा। वित्त ॥ १५७ ॥ वत। उचारीय। किहिं। अपन्नो। कीनौ ॥

१५८-१५९ पाठान्तर:—वत। सों। समझाय। अचरिज ॥ १५९ ॥ नौ। सो। हूं। जानियौ। नव निहचै नि संदेह ॥

आये वंस छतीस। विप्र बंदी जन सारे ॥
दियौ छत्र सिर तिलक। वेद मंत्रह उचारे ॥

आधार है वह यह है कि इस ग्रन्थ में लिखे हुए संवत् संप्रत शोध हुए और मुसलमानी तवारीखों में लिखे हुए संवतों से नहीं मिलते। अतएव इस संवत् विषयिक झगड़े का प्रारंभ इस रूपक १६८ और छन्द ३३९ से समझना चाहिये क्योंकि रासे के जितने छन्दों में संवत् मिती कहे गये हैं उनमें से प्रथम छन्द यही है। इस से हम को विदित होता है कि संवत् ८२१ वैशाख सुदी १ शुक्रवार को वीसलदेवजी राज-गद्दी पर विराजे किन्तु इसी आदि पर्व में इस रूपक से थोड़े से ही और आगे बढ़कर हम को वीसलदेवजी के पट्टन विजय करने के संवत् सूचन करनेवाले नीचे लिखे रूपक मिलेंगे:—

(संवत् १८५९ की पुस्तक में)

दोहा ॥ सो संवत् नव सत अट्ठ। वरस तीस छह अग्ग ॥
पुर पट्टन वीसल नृपति। राजत सयलह जग्ग ॥

कवित्त ॥ संवत् नव सत अट्ठ। वरस दस * तीय सत्त अग्ग ॥
पुर प्रविट्ठ वीसल नरिंद। राज्यंत सयल जग्ग ॥

(संवत् १७७० की पुस्तक में)

दोहा ॥ सो संवत् नव सत्त अध। वरस तीस छह अग्गि ॥
पुर पट्टन वीसल न्रपति। राजत सयलह जग्गि ॥

कवित्त ॥ सर संवत् नव सत्त। वरस दस * पंच सत्त अग ॥
पुर प्रविट्ठ वीसाल। न्रपति राजंत सयल जग ॥

(गुजरात देश की पुस्तक में)

दोहा ॥ सो संवत् नव शत अधिक। वर्ष तीस छह अग्ग ॥
पुर प्रतिट्ठ विशल नृपति। राजत सकले जग्ग ॥

जितनी पुस्तक हम इस टिप्पण के लिखते समय देख सके उन सब में ऊपर लिखे पाठ पाये अर्थात् किसी में हमारी सं० १८५९ का पाठ मिलता है तो किसी में संवत् १७७० वाली का। शोक की बात है कि हमारी १६३१ तथा १६३२ वाली पुस्तक में तो यह पर्व्व ही नहीं है और संवत् १६४७ वाली में यह पृष्ट नहीं है कि जिसमें इन छन्दों का होना सम्भव है। यह तो जानने में ही है कि पिछले रूपक १४० में चंद कह आया है कि "चौसट्ठि बरस बर राज कीन" चौंसठ

* हिन्दी भाषा के ऐसे प्राचीन काव्यों में चंद जैसे महाकवियों की गूढ़ बातों को खोलने की कुंजियों में से हम एक का यहां प्रकाश करते हैं कि दश दस और दशि दसि शब्दों का अर्थ जहां वे कुछ संख्या प्रकाश करने को प्रयोग हुए हों वहां सूक्ष्मता रखते हैं अर्थात् दश अथवा दस = १० का वाचक और दशि अथवा दसि = शून्य ० अर्थात् केवल दहाई का वाचक होता है और जहां लेखक दोष से-इन शब्दों के लिखने में गड़बड़ हो जाती है वहां संख्या में भी गड़बड़ पड़ जाती है कि इस के उदाहरण इस महाकाव्य में यहां से लेकर अनेक स्थलों में आवेंगे ॥

आनंद अग्गवर इंद्र सम। अंम नंद जस उद्धरै॥
अजमेर नयर अरि जेर करि। विमल राज बीसल करै॥
छं० ॥ ३३९ ॥ रू० ॥ १६८ ॥

बरस बीसलदेवजी ने राज्य किया। अब विद्वानों के विचार देखने जैसी बात है कि इस रूपक के संवत् को इसी प्रकरण के दूसरे रूपकों में कहे संवतों से मिलाने से एक सौ वर्ष का फरक पड़ता है और जो ९१ वर्ष का एकसा अंतर रासे में लिखे सब संवतों को संप्रत शोध से मिलाने और जो पखाने हमने पृथ्वीराजजी के शोध किये हैं उन से पड़ता है वह इस से सिवाय है। जगत का एक यह सर्व साधारण नियम है और उसका भार सब पक्षपात रहित विद्वानों पर है कि प्रत्येक समय के विद्यमान बड़े२ विद्वान सब परम पद-प्राप्त ग्रन्यकर्त्ताओं के ऊपर जो कोई व्यर्थ आक्षेप करे उस को खण्डन कर के छिन्न भिन्न कर दें क्योंकि यदि यह भार विद्वानों पर स्वतः सिद्ध न रहा होता तो सब कीट क्रिकिट सब अमूल्य ग्रन्थों को काट कर खाजांय और बड़े२ कवियों के नामों पर पोता फेर दें। अतएव ऐसी जिम्मेदारी को शुद्ध अंतःकरण से समझने वाला कोई विद्वान क्या यह कहैगा कि भिन्न२ पुस्तकों में यह भिन्न२ अशुद्ध पाठ चंद कवि जैसा महाकवि बीसलदेवजी की तरह दानव होकर लिख गया है? क्या इन भूलों का अपराधी चन्द है? नहीं—नहीं—कभी नहीं। हम क्या एक छोटा सा बालक भी कह सकता है कि यह सब भूलें अयोग्य लेखक और कवियों ने जान कर अथवा अनजाने कियी हैं। अब हमारी सम्मति इस विषय में चन्द की शैली और ख्यातिओं की पुस्तकों में लिखे सं० ९३१ को देखते हुए ऐसी है कि यहां ऐसा पाठ था कि "नौ सैं अरु इकतीस" और इस हमारे अनुमान की पट्टन विजय करने के संवत् वाले रूपक पुष्टि करते हैं। देखोः—

बीसलदेवजी का पाट बैठना	... ... ९३१	वर्ष
उनका राज्य करना जोड़ो	... ... ६४	वर्ष
रासे के संवतों और विक्रमी में जो सर्वत्र एकसा अन्तर है वह जोड़ो—	९१	वर्ष
	विक्रमी संवत्=१०८६	

रासे के रूपकों के जो मूल पाठ अशुद्ध हैं उनको अभी हम जैसे लिखित पुस्तकों में हैं वैसे ही रक्खेंगे क्योंकि जब तक सब विद्वान एक मत न हो जाँय तब तक उनको हम पुरातत्त्व विद्या के नियमों के अनुसार बदल नहीं सक्ते हैं। इस के अतिरिक्त हम पुरातत्त्व वेत्ताओं को चेत कराते हैं कि फीरोज़शाह की लाटपर की प्रशस्तियों को अब एक बार प्रथम बीसलदेवजी के और पृथ्वीराजजी के चरित्रों को भले प्रकार ग्रंथान्तरों में पढ़कर उन आशयों के सहारे से फिर विचारें तो उन को मालूम हो सकेगा कि पहिली प्रशस्ती जिस में का नीचे लिखा अनुवाद है उस को बीसलदेवजी की नहीं समझना चाहिये किन्तु पृथ्वीराजजी की समझना उचित है और केवल यही विशेष समझना होगा कि बीसलदेवजी के उपलक्ष्य का संबन्ध उस में इतना ही है कि जिस मिती को वह प्रशस्ती निर्माण हुई है वह मिती बीसलदेवजी के पाट बैठने की है अर्थात् वैशाख शुदी १ और पृथ्वीराजजी को बीसलदेवजी का अवतार होना लोग मानते हैं अतएव इन प्रशस्तियों के लिखने वालों ने अपने इस गूढ़ भाव को प्रकाश करने में उन दोनों का सादृश्य दिखाया

॥ बीसलदेवजी का अंत समय पट्टन विजय करने को छत्र धारण करना ॥

दूहा ॥ वर पट्टन अट्टन अमित । समित वेद् फुनि राज ॥
समय अंत बीसल सिरह । धस्यौ छत्र सम साज ॥
॥ छं० ॥ ३४० ॥ रू० ॥ १६९ ॥

पद्धरी ॥ सिर धारि छत्र बीसल नरिंद् । आसनह सिंघ वर वरन इंद ॥
भूदेव मंडि वेदी विसाल । रस पंच मेधि मेलैं ति काल ॥ छं० ॥ ३४१ ॥
वर वढी ज्वाल खंडन विभाग । जमि रहे जमल पुट पलति लाग ॥
मष समुष दिष्ष परसपर वैंन । तिन पुटह बीच तन धूम ऐंन ॥ छं० ॥ ३४२ ॥
जानीत वेद् मुख रहै मैंन । सुभ समय असुभ उच्चार कौंन ॥
संपूर वेद् किन्नो भिषेक । दुज दइय वंदि आसिष असेष ॥ छं० ॥ ३४३ ॥
विधि ऐन राज दिय सु लप माल । जै जया सबद् बीसल भुआल ॥
॥ छं० ॥ ३४४ ॥ रू० ॥ १७० ॥

है कि जिस से निर्णय करने में यह झगड़ा पड़ जाता है कि अमुक प्रशस्ती प्रथ्वीराजजी की है अथवा बीसलदेवजी की । हमारे पास इन प्रशस्तियों संबन्धी सब संज प्रस्तुत नहीं है और न इतना अवकाश है नहीं तो हम ही परिश्रम करके कुछ विशेष सारांश प्रकाश करते । इस के अतिरिक्त जो सं० १२३० जैसी प्रशस्तियों को बीसलदेवजी की मानें तो फिर पृथ्वीराजजी को तेरहवें शतक में मानना पड़ेगा कि उस दशा में भी पृथ्वीराज जी चितोड़ की और आबू की प्रशस्तियों के अनुसार रावल समरसीजी के समकालीन होंगे और मुसलमानी तवारीखों के सन झूंठे ठहर कर संवत प्रसूत हुई तर्क के अनुसार मुसलमानी तारीख जाली सिद्ध होंगी ॥

Om.

In the year 1230, on the first day of the bright half of the month Vaishakh (a monument) of the Fortunate—Visal—Deva—son—of—the—Fortunate—Amilla—Deva—King—of—Sacumbhari,

Popular Ed. of the Asiatic Researches, page 315.

पाठान्तर:—पाठ । बर । वर । प्रतिपादा । प्रतीपट्टी । छत्तीस । सारे । दीयो । उच्चारे । नैर ॥

१६९ पाठान्तर:—पुनि । समैं । सरह । धर्यौ । जास ॥

१७० पाठान्तर:—मंडि । छत्रधारि । वंवरन । इंद्र । मधि । मेले । मले । मेलिय । वढिय । वटी । दिषि । बेन । पुट । हवी । चतन । ऐंन । रहे । मोंन । शुभ । अशुभ । कोंन । कीनो । वंध । वंधि । एन । शद्ब । भूवाल ॥

॥ बीसलदेवजी पाट बैठकर कैसे राज करते थे ॥

दूहा ॥ लसय पाट बीसल न्टपति। विकल दुच्छ घन मार ॥
पंडन चिय दंडन करै। बिन अपराध अतार ॥
॥ छं० ॥ ३४५ ॥ रू० ॥ १७१ ॥

कवित्त ॥ दूसौ बीर बीसल्ल। नरिंद अजमेर नेर पर ॥
रचि रचना पुर दिव्य। मनों विसकम्म कीय कर ॥
अध्रम ध्रंम उप्परैं। क्रंस दुक्ति मन दुच्छै ॥
हक्क द्रव्य संग्रहै। विना हक लोभन वंछै ॥
चव बरन सरन चहुआन कै। वंस छतिस सेवंत ही ॥
बीसल नरिंद ध्रंमाधिधरि। देव कला देवत्त ही ॥
॥ छं० ॥ ३४६ ॥ रू० ॥ १७२ ॥

॥ बीसलदेवजी का अपने पुत्र सारंगदेवजी को उपदेश करके सांभर भेजना कि जो अपनी धा-बैन के पति के विनाश से दुचित हो गये थे ॥

कवित्त ॥ पट रागिनि परिहार। ग्रब्भ सारंग उपन्नौ ॥
पुत्र होत भइ म्टत्य। बाल बानिक कौं दिन्नौ ॥

१७१ यह रूपक संवत् १७७० और १६४७ की पुस्तकों में तो नहीं है किन्तु सं० १८५९ तथा सोसाइटी की छापी हुई पुस्तकों में है। जब कि इन से भी बहुत पुरानी पुस्तकों में यह न मिले तब तक उस को क्षेपक संज्ञा हम नहीं दे सक्ते यहां यह भी समझ लेने योग्य बात है कि १६९ रूपक से १७० रूपक तक बीसलदेवजी की पाटन की चढ़ाई के लिये छत्र धारण करने का वर्णन है। प्राचीन समय में जब कि राजा किसी पर चढ़ाई करते थे तो छत्र धारण विधि का वैदिक कर्म करके प्रस्थान करते थे। पाठकों को यह बीसलदेवजी की कथा बहुत सावधानता से पढ़ना चाहिये क्योंकि इस के बीच २ में उन के लड़के सारंगदेवजी आदि के भी वृत्त आते जाते हैं परंतु उन सब को कवि ने बीसलदेवजी के वृत्तों में मिलाकर वर्णन किये हैं ॥

पाठान्तर:—इच्छ।

१७२ पाठान्तर:—वीसल । नेर । मनौं । विश्वक्रम्म । विसकम्म । विसकर्म्म । करि । अधंम । धम । ऊपरै । ध्रम । दुक्तित । नन । इछै । विनां । हक्क । लोभ । न । चहोच । चहुवांन । छतीस । छत्तीस । ध्रमाधिधार । देव । तही ॥

१७३ पाठान्तर:—पाट । रानि । ग्रभ । उप्पनौ । भय । मृत्ति । कों । दीनौं । वनिक । दि नी । सम । पै । दुक्क । लगें । कीयौ । वीना । हुवे । गये । विनस्सयौ ।

ता वानिक नंदिनिय । नाम गौरी सारँग सन * ॥
इक थान पय पान । इक्क सिज्या इक आसन ॥
नव वरस लगि कन्या रही । व्याह राज वीसल कियौ ॥
वीवाह हुओ वर वन गयो । तहां सिंघ वर विनसयौ ॥
छं० ॥ ३४७ ॥ रू० ॥ १७३ ॥

दूहा ॥ सिंघ विनास्यौ वनिक सुत । कन्या किया अंदोह ॥
हत्त धस्यौ ब्रह्मचर्य कौ । तप पहुकर तजि मोह ॥
छं० ॥ ३४८ ॥ रू० ॥ १७४ ॥

पद्धरी ॥ अति दुचित भयौ सारंग देव । नित प्रत्ति करै अरहंत सेव ॥
वुध ध्रम्म लियौ वंधे न तेग † । सुनि श्रवन राज मन भो उदेग ॥ छं० ॥ ३४९ ॥
वुल्लाइ कुंअर सनमान कीन । किहि काज तुम्म इह ध्रम्म लीन ॥
तुम छंडि सरम हम कहौ वत्त । वांनिक्क पुत्र हन तैं दुचित्त ॥ छं० ॥ ३५० ॥
इह नष्ट ग्यांन सुनियै न कान । पुरषातन भज्जै किति हान ॥
तुम राज वंस राजनह संग । मृगया सर षेलौ वन दुरंग ॥ छं० ॥ ३५१ ॥
परमोध तजो बोधक पुरान । रामाइन सुन भारथ निदान ॥
अभिमान दान रिन सरन भ्रम्म । चास्यौ प्रकार सुनि राज क्रम्म ॥ छं० ॥ ३५२ ॥
परमोध मानि राजन कुमार । तत काल संगि वंधे हथ्यार ॥
भय प्रसन राज कीनो पसाव । संभरि रजधानी करहु जाव ॥ छं० ॥ ३५३ ॥
गजराज पाट दैं वर उतंग । सिंघासन दीनो जटित नंग ॥
तुम जाहु कुंअर संभरिय थान । किरपाल करिय कायथ प्रधानं ॥ छं० ॥ ३५४ ॥
प्रोहित मुकंद ‡ सारँग चुहान । साचैार धनी नरसिंघ भान ॥
षंधार लार वहवल बलोच । दिय बहुत हसम कीयौ न सोच ॥ छं० ॥ ३५५ ॥

---

* यह पाठ हम ने सं० १६४७ तथा १७७० की पुस्तकों से रक्खा है इधर की सब पुस्तकों में सम पाठ है । सनोतिषणुदाने तथा त्रि० अखण्डिते ॥ अथवा सं० सून वा सूनु का अपभ्रंश है ॥

१७४ पाठान्तरः—कंन्या । कीयौ । वृत । धर्यौ । पुहुकर ॥

† हिं० तेग from Sk. (तैग्म्य-(तिग to assail, to seek, to injure, to attempt to kill) or तिग्म = sharp as a weapon) इसी तरह हिं० तेज is not from the A. Tayz or P. Tez, but from the Sk. तेज m. Sharpness, puugency sharpness of a weapon. Brilliancy. Spirit.

‡ यह नागर जाति का ब्राह्मण था ॥

१७५ पाठान्तरः—प्रति । ध्रम । कीयौं । वंधे । स्रवंन । भयं । वुलाय । कुवर । तुम । ध्रम । धर्मं । वृत । वानिक । तैं । दुचित्त । ग्यांन । सुनियें । सुनीयै । कांनं । भंजैं । छित्ति ।

अनेक जाति उमराव सथ्य। है गै नर वाहन सुतर रथ्य ॥
तिहि बार धाय बानिक बुलाय। जिन जाहु कुँअर की सथ्य काय ॥ छं० ॥ ३५६ ॥
तुम कियौ पुत्र सौं मेक मुंड। षिझि बैन कह्यौ कहा देहुँ दंड ॥
अजमेर मेल्हि संभरि दिसान। जो जाहु तब्ब षंडौ परान ॥ छं० ॥ ३५७ ॥
इतनी कथ्थि नृप चल्यौ सथ्थ। रथ च्यार भरे तिन वार अथ्थ ॥
जोजनह एक कीनौ मिलान। अनेक भष्य तहां षान पान ॥ छं० ॥ ३५८ ॥
भय प्रात प्रसन पग लग्गि पुत्त। चलि सोष अंगि संभरि पहुत्त ॥
सर जाय पहूंचिय संभ राय। मन वच्च सुद्ध करि क्रंम नाय ॥ छं० ॥ ३५९ ॥
दस महिष भंजि तहां बल्नि सु दीन। जज होम धोम सुर प्रसन्न कीन ॥
कीनौ प्रवेस सुर महिम मौलि। तोरन कलस बंधि राज पौलि ॥
छं० ॥ ३६० ॥ रू० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ किय प्रवेश सारंग। देव संभरिय थान थिर ॥
आयेहु वैस्य षिचिय। अनेक पग लग्गि नस्सि नर ॥
तब कायथ किरपाल। सबन कौं आग्या दीनी ॥
सस्त्र वस्त्र दत वित्त। देय दिल्लासा कीनी ॥
जद्दवनि गौरि आइय जबहि। पाइ लगी परमार कै ॥
नव सगुन भए सगुनी कह्यौ। कुँअर होइ कुम्मार कै ॥
छं० ॥ ३६१ ॥ रू० ॥ १७६ ॥

दूहा ॥ देवराज रावत सुता। देवत्तनि जद्दौंन ॥
गौरि नाम सारंग वर। मनरति ब्रूरति जौंन ॥
छं० ॥ ३६२ ॥ रू० ॥ १७७ ॥

पेलो। सुनहु। रिण। धम। चार्स्यौं क्रम। कुंआर। वंधे। हथ्यार। हुव। प्रसन्न। रजधान संभरिय करह जाव। हैं। कुमर। थांन। करीय। प्रधांन। सारंग। चुहांन। चैहान। धनीय। भांन। दिये। हसंम। कियौ। वांनिक। बुलाई। सथ। सैं। मूठ। बन। कह्यो। दिसांन। खरांन। कथ। सथ। मथ्थ। सथि। जोजन। भरक। लगि। पहुंत। वच। नाद। भंजि। बली। प्रसन्न। तोरंन कलस वंधेति पौल ॥

१७६ पाठान्तर:—थांन। आय। आइ। षित्रि। कों। अग्या। ससत्र। शस्त्र। चित्त। दिलासा। किनी। जदवनि। पाय। कुंअर। कुंमार ॥

१७७ पाठान्तर:—देवतनि। जदौन। मनै। रति। मनोरति ॥

॥ बीसलदेवजी का मृगया से बाहुरना एक तलाव बनाने की आज्ञा देना और दरबार करना ॥

दूहा ॥ तब बाहुरि बीसल न्टपति । मृगया पेलत बन्न ॥
देषि थान सर * उद्धरन । मतो उपायौ मन्न ॥ छं० ॥ ३६३ ॥ रू० ॥ १७८ ॥

पद्धरी ॥ तब देखि नरिन्द अनूप ठाम । निर्झर गिरिन्द बन अभिराम ॥
वुल्लाय लिए मंत्री प्रधान । सर * रचौ इहां पहुकर समान ॥ छं० ३६४ ॥
फुरमाय † काम अप आय गेह । आनंद अंग उपज्यौ अछेह ॥
बैठौ सिंघासन भ्रम्म नंद । बीसल नरिन्द नर लोक इंद ॥ छं० ॥ ३६५ ॥
सिर छत्र पास दुय चमर ढार । अति रूप जानि अस्वनि कुमार ॥
आईय सु कुलि छत्तीस नाम । पावासर तोंवर गौर राम ॥ छं० ॥ ३६६ ॥
हजूर लए राजन बुलाइ । तंबोलि दियो सनमुष्य चाइ ॥
पढि वंदि छंद बोले विरद । मुसकाय सीस नायौ नरिन्द ॥ छं० ॥ ३६७ ॥
सब सभा पूरि जैसैं नछित्त । चहुआन बीच जनु चंद रत्त ॥
सनमान करे सब दइय सीष । फिरि वंदी जन दीनी असीष ॥ छं० ॥ ३६८ ॥
निसि गई पंच पल एक जाम । राजन्न महल ‡ प्रवेस ताम ॥
करपूर अगर मृगमद सु वास । सोंधे छिरक्कि उत्तिम अवास ॥
छं० ॥ ३६९ ॥ रू० ॥ १७९ ॥

---

* यह बीसल का तालाब अब तक अजमेर के पास विद्यमान है । उस के किनारे पर जहांगीर पादशाह ने एक महल बनाया था कि जिस में उस ने इंग्लिस्तान के पादशाह जेम्स पहिले के एलची से मुलाक़ात कियी थी । इस टिप्पण को हमने इस तालाब के किनारे पर खड़े होकर लिखी है । यदि कोई पुरातत्ववेत्ता इस तड़ाग की वर्त्तमान दशा अपनी आंख से देखे तो उस को बड़ा शोक और आश्चर्य होगा कि अंग्रेज सरकार के राज्य समय में ऐसे प्राचीन स्थलों के जीर्णोद्धार राज–कोष के द्रव्य से होता है परंतु रेलवाले अपनी रेल इस पर दौड़ा २ कर उस को छिन्न भिन्न करे डालते हैं कि पांच सात वर्ष पीछे वह समूल नष्ट हो जायगा । हमारी सम्मति में यह विषय पुरातत्ववेत्ता विद्वानों और समस्त भारतप्रजा को सरकार हिन्द की सेवा में मिमोरियल करने जैसा है कि जिस से यह ऐतिहासिक चिन्ह यथास्थित बना रहै ।

† यह भी हिन्दी शब्द है संस्कृत स्फुरितम् अथवा स्फूर्त्तिः = स्फुरणे, मनसः कल्पनायाम् से ॥

‡ यह भी हिन्दी है संस्कृत महल्ल = अंतःपुर inner appartments, palace. और महल्लिकः = अंतःपुर रक्षक से ॥ १७८ पाठान्तरः–न्रपति । वन । थांन । मतो । मन ॥

१७९ पाठान्तर :–नरिंद । निभर । नर्झरन । गिरंद । अभिराम । वुलाय । लये । रचो । समांन । बैठो । सुसिंघासन । ध्रम । नरिंद । समीप । दोय । चांनि । अश्वनि । आइय । कुली । छतीस । ताम । पावासिर । तूंवरं । वुलाय । वुलाहि । दीयौ । सनमुख । चाहि । चाय । छंद । वंदि । विरद । नाम्यौ । जैसं । चहुवान । सनमान । दईय । जांम । राजन । थांम । कपूर । सोंधे । छिरकि । उत्तम ॥

॥ बीसलदेवजी का रणवास में पधारकर विश्राम करना और उन की एक अप्रिय रानी का उन को नपुंसक कराना ॥

कवित्त ॥ सुरँग धाम अभिराम। तहां बिस्राम राज किय ॥
राग रंग नाटक। विनोद सुष महल बोल लिय ॥
पट रागिनि पांवार। रूप रंभा गुन जुब्बन ॥
प्रमुदा प्रान समान। नहीं विसरत्त इक्क छिन ॥
रति भोग सुरति तिन सौं सदा। कबहु आन न दिष्ष चिय ॥
षिष्षि सौंति सकल एकच भय। पुरषातन तिन बंध किय ॥
छं० ॥ ३७० ॥ रू० ॥ १८० ॥

पद्धरी ॥ तब सकल भइय एकच नारि। पुरुषातन तिन बंध्यौ विचार ॥
प्रचार सहर दूतिका च्यार। लै षबरि सहर पहुची मझार ॥ ३७१ ॥
प्रसताव भाव तिन कहि उचार। जोगिनिय बोल आदीतवार ॥
पहराइ वेस बदलाय भेस। इम कियो राजद्वारह प्रवेस ॥ ३७२ ॥
लै अथ्थ दई दरवान हथ्थ। इम किय प्रवेस सहचरिय सथ्थ ॥
जोगिनिय गई रागिनी मद्धि। सब बोलि कह्यौ ह्वै सिद्ध सिद्ध ॥ ३७३ ॥
आदेस कियौ सब पाइ लग्गि। आसन्न जोरि कर उभ्भ अग्ग ॥
किहि काज आज हूं बोलि लीन। किहि नारि तुमहि इह सीष दीन ॥ ३७४ ॥
सब सौति कह्यौ दुष सुनहु तुम्म। राजन्न तनय हम सौं न क्रम्म ॥
को जानि मात बिंझनी पीर। सौति कौसाल सालै सरीर ॥ ३७५ ॥
तुम कहौ कहूं जीव तें बद्ध। तुम कहौ करौं नारी विरुद्ध ॥
तुम कहौ करौं काम तैं भंग। ज्यौं नारि अंग त्यौं पुरुष अंग ॥ ३७६ ॥
सब चित्त बसी इह सौति बात। अब हौ इह कारज करो मात ॥
मंगाय अगिनि तब कियौ होम। षर स्वान मांस प्रति वास धोम ॥ ३७७ ॥
उच्चरयौ मंच आराधि इष्ट। तत काल भयौ काम तैं नष्ट ॥
दस दिसा लग्गि इह करी विद्धि। गत भौ पुरुषातन रहि न सिद्धि ॥ ३७८ ॥
दै द्रव्य कह्यौ माता सिधाव। इह सहर छंडि अनि सहर जाव ॥

---

१८० पाठान्तरः-सुरंग। मुष ताम। विश्रांम। मुष। पंवार। जुवन। प्रांन। समांन। इक्क। स्यं। नि। दरस। सौकि। भई ॥

॥ बीसलदेवजी का पुरुषत्व नाश होने से दुखित हो गोकर्णेश्वर की यात्रा करने को गुजरात में जाना ॥

अति दुचित राज भय काम नास। ब्रह्मचर्य नेम लियो चतुरमास ॥ ३७९ ॥
कातक्क करत पहुकर सनान। गोकन्न * महातम सुनत कान ॥
बुल्लाय नैतसिय गोत्तवाल। तुम भूमि पास नागरद † चाल ॥ ३८० ॥

---

* इन गोकर्णेश्वर महादेवों की उत्पत्ति—कथा स्कंध पुराणान्तरगत जो नागर ब्राह्मणों का एक परमपूज्य संस्कृत भाषा में २4000 हजार श्लोकों की संख्या का नागरखंड नामक ग्रंथ है उस के २६ वें अध्याय में लिखी है। यह संपूर्ण ग्रंथ मेरे पुस्तकालय में है॥

आज जो वडनगर और वीसननगर नामक नगर गुजरात में प्रसिद्ध हैं उन का प्राचीन नाम चमत्कारपुर था, उस की सीमा का प्रमाण उक्त ग्रंथ के १६ वें अध्याय में नीचे लिखे प्रमाण लिखा है अर्थात् इन गोकर्णेश्वरों को उस की दक्षिणोत्तर सीमा पर होना प्रकाश किया है:—

ऋषय ऊचु: ॥ चमत्कारपुरोत्पत्ति: श्रुतात्वत्तो महामते।
तत्क्षेत्रस्य प्रमाणं यत्तदस्माकं प्रकीर्तय ॥ १ ॥
यानि तत्र च पुण्यानि तीर्थान्याय तनानि च।
सहितानि प्रभावेन तानि सर्वाणि कीर्तय ॥ २ ॥
सूत उवाच ॥ पंचकोश प्रमाणेन क्षेत्रं ब्राह्मण सत्तमा:।
आयामव्यास तश्चैव चमत्कारपुरोद्भवं ॥ ३ ॥
प्राच्यां सस्यां गयाशीर्षं पश्चिमेन हरे: पदं।
दक्षिणोत्तरयोश्चैव गोकर्णेश्वर संज्ञिकं ॥ ४ ॥
हाटकेश्वर संज्ञं तू पूर्वमासी द्विजोत्तमा:।
तत्क्षेत्रं प्रथितं लोके सर्वपातक नाशनं ॥ ५ ॥
यत: प्रभृति विप्रेभ्यो दत्तं तेन महात्मना।
चमत्कारेण तत्स्थानं नाम्ना ख्यातिं ततो गतं ॥

† नागरद्द = उक्त नागरखंड जिस के भले प्रकार पढ़ने में आया होगा वह कह सक्ता है कि आनर्त देश में हाटकेश्वर क्षेत्र है उस में जो आज बड़नगर नाम से प्रख्यात है वह नगर यही है। इस के सतयुग में आनन्दपुर, त्रेता में चमत्कारपुर, द्वापर में मानपुर अर्थात् मनीपुर, और कलि में नगर अर्थात् बड़नगर नाम प्रसिद्ध हुए हैं। इस के अतिरिक्त यह भी ध्यान में रखने जैसी बात है कि नागर ब्राह्मणों में से जो आज बीसननगरा नामक नागर ब्राह्मण प्रसिद्ध हैं वह बड़नगरों में से इन ही बीसलदेवजी के समय में उन के दान लेने से पृथक हुए हैं और बीसननगर नामक जो नगर आज गुजरात में प्रसिद्ध है वह इस समय का इन ही बीसलदेवजी का प्रदान किया हुआ है। नागरखंड से यह भी ज्ञात होगा कि बीसलदेवजी के समय में जिन नागर ब्राह्मणों को दान दिये गये हैं उन में से कुछ उस समय पुष्कर में भी रहते थे और यही लोग बीसलदेवजी को पुनश्च पुंसत्व प्राप्त कराने को गोकर्णेश्वर की यात्रा जिस का

तुम देस कहीजै गोउक्कन्न। परवत्त सरोवर नदी रन्न॥
महाराज उहां महादेव थान। बानास नदी कौमारि कान॥ ३८१॥
गिर वर उतंग इक तीन कोस। निझ्झरना झरत मन आव जोस॥
केतीक दूर अजमेर हूंत। दिन दोय मंझ्झ नीके पहूंत॥ ३८२॥
चढ़ि चल्यौ राज गोक्कव दिसान। मै मंत गुरिय घूमंत निसान॥
आवाजि पहूंचिय दस दिसान। अरि भ्रमैं वन्न तजि थान थान॥
कं० ॥ ३८३॥ रू० ॥ १८१॥

दूहा॥ अरि उद्यान भ्रमि थान तजि। बजि पर षंड अवाज*॥
तच्छितपुर† गोक्कन्न दिसि। पहुँच्यौ बीसल राज॥
कं० ॥ ३८४॥ रू० १८२॥

कवित्त॥ गिरि उतंग सलिता। विहंग उद्यान थान हर॥
सघन छांह पंषी। असंषि रचि लता झूमि तर॥

वर्णन यहां कवि ने किया है ले गये थे और अजमेर के चाहुवान राज्य के पुरोहित भी यही नागर ब्राह्मण थे कि उन में से एक पुरोहित मुकुन्द का नाम १७५ रूपक में आय चुका है। नागरों की पुरोहिताई छुटने पर अन्य ब्राह्मण चौहानों के पुरोहित हुए हैं॥

* यह संस्कृत अ+वाज तथा आ+वाज अथवा अवाद तथा आवाद से है॥

† जो हाल में गुजरात प्रान्त में बड़नगर कहलाता है उसी का नाम है। नागरखंड के पढ़ने से उस के कितनेक अन्य नाम भी ज्ञात होंगे जैसे वृद्धपुर, वृद्धनगर आदि। उक्त ग्रंथ में यह भी पढ़ने में आवेगा कि इस स्थान में एक समय सर्पों का बड़ा उपद्रव हुआ था और वह महादेवजी के त्रिजात ब्राह्मण को "नगरम् नगरम्" मंत्र प्रदान करने से दूर हुआ कि इसी से वह नगर कहाया। इस नगर के रहनेवाले नागर ब्राह्मण अब तक प्रसिद्ध हैं। यह कथा नागरखंड के ११३ वें अध्याय में सविस्तार लिखी है॥

१८१ पाठान्तर:-भई। वंधन। प्रच्चार। सहस। प्रस्तार। उच्चार। जोगनीय। अथि। चहुवान। कीय। सहचरी। सथ। जोगिनी। आदेस। कीयै। आसन्न। उभ्भ कर जोगि अग। किह। हम। ताम। काम। जानै। बाभनी। कौ। साल। सालैं। कहीं। करीं। तैं। सौ। करों। अगनि। उचस्यौ। आराध। तें। लगि। विद्ध। रहित। कातिग। करंन। सानान। सुनहु। कांन। पांसल। पास कल। कहीजै। गोकन्न। परवत। माहाराज। वनास। कोमारिकान। निझरना। मझ्झ। नीकै। मैं घुम्मन। दिसांन। थांन॥

१८२ पाठान्तर:-उद्यांन। थांन। तछितपुर। गोक्कन। पहुंच्यौ॥

१८३ पाठान्तर:-उघ्यान। उद्यांन। छांह। असंख्य। झुमि। बरन। पुहुप्प। पीक। चकोर। च्चकोर। सारस। दिषि। अनूप। ठांम। आरांम। फरसत॥ इस रूपक की पहिली दो तुकों की पहिली यतियों में दस २ मात्रा हैं और दूसरी में चौदह २ कि यह कोई ऐसा दोष नहीं है कि जिस के लिये हम ग्रंथ-कर्त्ता को दोष दें। ऐसे उदाहरण अन्य बड़े २ कवियों के काव्यों में

वरन वरन्न पल्लव । पहुप द्रुमवेलि कोलि फल ॥
कीर पिक्क चक्कोर । मोर कोकिल कौतूहल ॥
वाराह सिंघ मृग जूथ जहां । दिष्षिराज अचरिज भयौ ॥
अनूप ठाम आराम अति । सिव परसत सब सुष भयौ ॥
छं० ॥ ३८५ ॥ रू० ॥ १८३ ॥

कवित्त ॥ परवत में कंदरा । तहां किन्नर सु विराजै ॥
वारि बूंद सिर झरै । पास सिंघ जूथ समाजै ॥
आनि अचानिक राज । पाइ लगो करि प्रन्न पति ॥
ॐ नमो सिव सकल । नमो अकलेस अकल मति ॥
फल पहुप द्रव्य पंचा अमृत । धूप दीप अग्गें धरिय ॥
अस्नान दान चहुवान करि । तब अस्तुति सेवा करिय ॥
छं० ॥ ३८६ ॥ रू० ॥ १८४ ॥

॥ बीसलदेवजी का गोकर्णेश्वर महादेव की स्तुति करना ॥

भुजंगी ॥ नमो वाय भूताय थानं भयानं । जटा मांहि गंगा झलक्कै प्रमानं ॥
चयं नेच ज्वाला जलं चंद्र भालं । विषं कंठ माला रुलै रुंड मालं ॥ ३८७ ॥
महा आदि मुद्रा नषं सिंगि नादं । सिधं देव देवं कथं साथ साधं ॥
धरा धूरि धूसं विभूतं घसंते । नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥ ३८८ ॥
गजं चर्म आछादितं भ्रंम नासं । रहै वीर भैरों गनं आस पासं ॥
पदम्मासनं पुष्टि नंदी प्रचंडी । चवं वेद आमोद चौसट्ठि चंडी ॥ ३८९ ॥

भी देखने में आते हैं अतएव इस को कवियों की एक शैली मानना चाहिये । ऐसे स्थलों में प्रायः शुष्क-कवि आपस में बहुत वाद विवाद कर सिर फोड़ा करते हैं अतएव हम एक और भी सूक्ष्म कारण बताते हैं कि चंद और सूर जैसे आर्द्र-कवि गान विद्या में पारंगत होने के कारण जहां एक ही यति में अनेक स्वर स्वरित हो गये हों वहां की एक दो मात्रा को दूसरी यति में मिला देते हैं कि जिस में स्वर न बिगड़े देखो यहां उतंग के तं और सलिता के ता पर स्वर स्वरित हो गये हैं ॥

१८४ पाठान्तरः—प्रबत्त । किंनर । बुंदि । नपै । सिंघ । पाय । प्रनति । उं । द्रबि । पंचे । दांन । चहुवांन ।

१८५ पाठान्तरः—झलके । वंदे । सधं । दूरि । दूसं । भैरूं । आसा । पासं । पदंमासनं । पुष्टी । कोद । चौसठि । डक । डौरू । तड़के । मेरे । धूजे । धनुंक । धरें । वांम । सूलपांणी ।

बजै डक्क डौरू डसंकं तडक्कै। धकै सेस धुज्जै हके गेंन हक्कै॥
धनूकं पिनाकं धरै बाम हस्ते। नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते॥ ३९० ॥
सिधं साध आराधयं शूलपानी। सिवा भ्रंम साधेति के साध जानी॥
नरं किंनरं गंध्रवं नग्ग जष्यं। सुरं आसुरं अच्छरी हूर रष्यं॥ ३९१ ॥
सनक्कादिकं सप्तर्षी बाल कालं। प्रथीवायुगेनाय तेजंस लालं॥
नमो भान चंद्रं नवं ग्रह समस्ते। नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते॥ ३९२ ॥
मिटै संकटं वाट घाटं विघट्टं। रटै नाम तो कोटि काटै कसट्टं॥
षरं षेचरं भूचरं जंच मंचं। जपै व्याधि आसाध भाजै अनंतं॥ ३९३ ॥
महादी पुरूषं महीमा मुरारी। नवं कौंन तो सों निपातिक परारी॥
गिरा गौरि अधंग कैलास वस्ते। नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते॥
छं० ॥ ३९४ ॥ रू० ॥ १८५ ॥

साधेंति। ज्यंनी। यंध्रवं। जखं। अछ्रदी। दिखं। सनक्रादिक्रं। सपत रिपी। सप्त रिपी। प्रथी-वायगेंनाय तेजं। भांन। मिटैं। नांम। तो। महा आदि। पुरिषं। पुरुषं। तवों। कोन। तो। नपातिग। अरधंग। कयल्लास॥

हमारे जो पाठक ऐसे हैं कि जिन को न तो कभी यह शंका हुई न अब है और न आगे होगी कि हिन्दी भाषा का यह अति प्राचीन महाकाव्य आदि से अंत परियंत जाली बना है उन को उचित है कि यूरोप देश निवासी मिस्टर ग्रोज़, डाकटर होर्नली, मिस्टर बीम्स और भरतखंड निवासी डाक्टर राजेन्द्रलालजी मित्र जैसे महाशयों को अनेक धन्यवाद दें कि उन के शोध और अनेक लेखों के कारण से यह महाकाव्य सर्वसाधारण लोगों के जानने में आय गया नहीं तो कुछ समय और व्यतीत होने पर कोई मनुष्य जैसी कि तर्क वितर्कों से अब दोष देते हैं वैसे ही इस रूपक में “नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते” का पाठ देख करके कदाचित यह अनुमान करलेते कि इस को स्वामी श्रीदयानन्द सरस्वतीजी के सिद्धान्तानुयायी किसी कवि ने झूंठा बना दिया है क्योंकि नमस्ते शब्द का प्रचार या तो वैदिक समय में था अथवा इन दिनों में आर्य समाजस्थों में है और आदि के चार रूपकों से चंद के धर्म संबन्धी विचार वैदिक समय के से होना प्रतीत होते हैं। यद्यपि आज यह महाकाव्य इतना प्रसिद्ध हो गया है परंतु भावी दोष देनेवाले के लिये वह कुछ बाधक नहीं हो सक्ता क्योंकि जो कुछ प्रमाण इस समय की प्रसिद्धि के उस को उस समय में मिलैंगे उन सब को वह निःशंक होकर वर्तमान समय के दोष देनेवालों की भांति जाली कह सक्ता है जैसे कि इस समय में सब राजपूताने के राज्यों के प्राचीन संवत इस रासे के ९१ वर्ष के अंतर के संवत के अनुसार मिलते हैं और उन सब को इसी रासे ने अशुद्ध कर दिये कहा जाता है। इसी तरह वह भी कह सक्ता है कि इस समय में जाल ही जाल फैल गया था क्योंकि जैसे आज चंद स्वयम् साक्षी नहीं दे सक्ता वैसे हम लोग भी उस समय में न होंगे। सारांश यह है कि एक नचा सैा दुःख हरता है और थोथी हठ के आगे किसी की कुछ नहीं बटती॥

॥ बीसलदेवजी से गोकर्णेश्वर के सिद्ध का उन का नाम ग्रामादि पूछना ॥

दूहा ॥ इति अस्तुति राजन मुषह । पढि पुज्जिव पग वंदि ॥
देषि सिद्ध चक्रित भयौ । भाजन बुद्धि नरिंदि ॥
छं० ॥ ३९५ ॥ रू० ॥ १८६ ॥*

कहत सिद्ध किहि पुरहुं तैं । कौंन गोत किहि नाम ॥
इहि तीरथ आये हुते । कै आगैं कोइ काम ॥
छं० ॥ ३९६ ॥ रू० ॥ १८७ ॥

बीसलदेवजी का अपना नाम गाम आदि बताना ॥

दूहा ॥ पुर अजमेर सु वास हम । गोत ग्याति चहुआन ॥
बीसल दे मो नाम सिध । आयौ करन सनान ॥
छं० ॥ ३९७ ॥ रू० ॥ १८८ ॥

॥ सिद्ध का गोकर्णेश्वर के तीर्थ की महिमा वर्णन करना ॥

अरिल्ल ॥ सिद्ध कहत सुन राजन वत्तिय । जो तू तजि आयौ निज घत्तिय ॥
इह गोपेसुर थान अपूरब । नित प्रति निसा उतरै सौ रंभ ॥
छं० ॥ ३९८ ॥ रू० ॥ १८९ ॥

इन थानक चारन वर पाए । तिनके नाम कहि इ समझाए ॥
भसमाकर रावन मधु कीटक । तिन उपास निराहर षट टक ॥
छं० ॥ ३९९ ॥ रू० ॥ १९० ॥

इहै तिथ की महिमा गाए । घेनु दुगधतैं आनि न्हवाए ॥
जैसैं ध्याए तैसैं पाए । इतनी कहि सिध उठि सिधाए ॥
छं० ॥ ४०० ॥ रू० ॥ १९१ ॥

---

१८६ पाठान्तर:—भौ ॥

*यह रूपक सं० १६४७ और १७७० की लिखी पुस्तकों में नहीं है जो इन से भी पुरानी पुस्तकों में यह न मिले तो इस को क्षेपक मानना चाहिये । किन्तु अभी तो हम इस को क्षेपक संज्ञा प्रदान नहीं कर सक्ते ॥

१८७ पाठान्तर:—परहुं । तें । क्यौंन । नांम । आगें । कांम ॥

१८८ पाठान्तर:—नांम । सनांन ॥ वीसल दे शब्द में जो दे है वह देव शब्द का संक्षिप्त रूप है इसी तरह समरसी में सी सिंघ वा सिंह का संक्षिप्त है ॥

१८९ से १९१ पाठान्तर:—वत्तीय । इह । धरत्तीय । इहां । गामेसद्द । थांन । प्रतै । थांनक । च्यारन वर । च्यार नर । नांम । उपवास । टंक ॥ ए हैं । घेंनु । तें । आंनि । जैसें । तैसें ॥

॥ बीसलदेवजी का तीन दिन निराहार उपवास कर गोदानादि करना और महादेव का अपछरा को उन्हें उठाने भेजना ॥

दूहा ॥ राजन मन चक्रित भयौ। सुनि थानक की विद्धि ॥
जे तो अभि अंतर* वसत। कहि ते तो सिध सिद्धि ॥
छं० ॥ ४०१ ॥ रू० ॥ १९२ ॥

अरिल्ल ॥ सहसं गौ मंगाइ सवच्छिय। देइ द्रव्य लै अच्छी अच्छिय ॥
सहस घट्ट सिव ऊपर कीनौ। तीन उपास नेम नव लीनौ ॥
छं० ॥ ४०२ ॥ रू० ॥ १९३ ॥

तीन दिवस रहै राव निराहर। जल फल तज्यौ पवन कौ आहर ॥
एक निसा इक अपछर आई। सब अपछरा न्रित्ति करि गाई ॥
छं० ॥ ४०३ ॥ रू० ॥ १९४ ॥

बहुत बेर पीछैं बोल्यौ हर। अपछर जाइ उठेउ वहै नर ॥
सो अपछर नर देषन आई। देषति न्रपति वसि नींदा माही ॥
छं० ॥ ४०४ ॥ रू० ॥ १९५ ॥

॥ अपछरा का बीसलदेवजी को महादेव के प्रसन्न होने और मन की कामना पूरण होने का कहना ॥

दूहा ॥ तुम कौं सिव सु प्रसन्न भय। कह्यौ मोहनि वर मोहि ॥
जाहु थान हरि थान तजि। तूठे संभर तोहि ॥
छं० ॥ ४०५ ॥ रू० ॥ १९६ ॥

तेरे मन की कामना। ऊपर शिव कौ पाइ ॥
इतनी कहि करि मोहिनी। दियौ सु न्रपति उठाइ ॥
छं० ॥ ४०६ ॥ रू० १९७ ॥

---

* चंद की भाषा का व्याकरण तो हम कुछ समय में बनाकर प्रकाश करैंगे परंतु एक सूत्र उस का यह स्मरण में रखना चाहिये कि उस में षट–भाषा–वत् संधि विकल्प करके होती है। होने के उदाहरण बहुत आवेंगे परंतु न होने के उदाहरण यह अभि + अंतर और पंचा + अमृत हैं ॥

१९२ पाठान्तर:–विधि। जि। तौक। तो। सिद्दु। सिध ॥

१९३ से १९५ पाठान्तर:–सहस। गऊ। मंगाय। सवछिय। देय। ले। अछीय। अछीय। घट। शिव। तिन। द्यौस। रहे। निशा। एक। आईय। अपछर। नृतत। गाईय। पीछे। बोले। उठाउ। वहे। आइय। देषि नृपति वसिं नीद अमाइय ॥

१९६–९७ पाठान्तर:–कों। सौं। शिव। हुव। थांन। संभू ॥ को। पाय। दीयौ। नृपति। उठाय ॥

॥ बीसलदेवजी का अपने को पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त होना देखकर वहां बीसलपुर बसाय महादेव का देवल बनने का हुकम देना ॥

कवित्त ॥ पहुर रात पाछिली । राज आए डेरा मधि ॥
वढिय काम कामना । भई पुरिषातन की सिधि ॥
प्रातकाल करि न्हान । धेन विप्रन कौं दीनी ॥
पंचा अम्रत धूप । दीप सिव सेवा कीनी ॥
तिहि वार हुकम * देवल करन । पुर † बसाइ वीसल † धरुह ॥

---

* यह हिन्दी शब्द हुकंम अथवा हुक्कम संस्कृत शब्द सूक्ष्म् से बना है ॥

† चाहुवान वंश की ख्यातिओं में बीसलदेवजी का उपनाम पुष्पक होना लिखा है और जो आज कल गुजरात में विशल नगर अथवा विसन नगर करके प्रख्यात है वही यह बीसलपुर बीसलदेवजी का बसाया हुआ है और उसी दिन से बडनगरे नागरों में के कुछ नागरों की विसननगरा नामक संज्ञा पड़ी है। हमारे इस अनुमान की कविराज श्रीदलपतरामजी सी० आई० ई० अपने ज्ञातिनिबन्ध नाकम ग्रंथ में नीचे लिखे प्रमाण पुष्टि करते हैं:—

जे रीते औदिच्यप्रकाश तथा श्रीमाली महात्म्य स्कंध पुराण मां छे, तेमज नागर ब्राह्मणोंनी उत्पत्ति नो ग्रंथ "नगरखंड" नामे घणो मोटो छे, ते पण स्कन्ध पुराण मां छे। ते नागरो नी उत्पत्ति गुजरात मां वडनगर गाम मां थई । पण ते क्यारे थई, तेनो संवत कांई ओ पुस्तक मां लख्यो नथी तेनूं कारण ओज जाणवूं के सवत लखवा थी तथा बनावनार नूं नाम लखवा थी ग्रंथ जूनो केहेवाय नही । पण नागर ब्राह्मणो नो प्रवराध्याय नामे ग्रंथ में जोयो छे तेमां लखे छे के,

श्लोक ॥ श्रीमदानंदपुर महास्थानीय पंचदशशतगोत्राणां ।
संवत् २८३ पूर्वतिष्ठमान गोत्राणां समानप्रवरस्य निबंधः ॥

अर्थ ॥ शोभायमान ओवा आनंदपुर, मोटास्थानवाला पंदरसें गोत्रोमांथी संवत् २८३ थी पेहेलां रहेलां गोत्रोना ओकज सरखा नामोचानो निबंध लखूं छूं ॥

ओ ऊपर थी आशरे मालम पड़े छे के ओ वखत मां नागरो नी नात बंधाई छे । अने त्यार पछी तेमां थी विसलनगरा नी नात जुदी पड़ी तेनूं कारण केहे छे के विसलदेव राजाओ विसल नगर बसावीने त्यां जग्न कीधो हतो । त्यारे बडनगर थी केटलाओक नागरो त्यां जोवा गया हता । त्यारे राजाओ तेओ ने दक्षणा आपवा मांडी । त्यारे ओ नागर ब्राह्मणो ओ कहूं के अमे कोई नी दक्षणा लेता नथी । त्यारे राजाओ कहूं के तमने पाननां बीड़ा आपी शूं । ओम कहीने पानना बीड़ा मां गाम नां नाम लखी नें ओ नागर ब्राह्मणों ने आप्यां । त्यारे ते ब्राह्मणो ओ पानना बीड़ां लीधां । तेमां जोयूं त्यारे गामनां नाम लख्यां हतां । तेथी पछी तो ओ गाम लेवां कबूल कीधां । ओ बात बड़नगरना नागरोओ जाणी त्यारे तेओ ओ कहूं के ओणे राजा नूं दान लीधूं वास्ते ओओ

संगाइ हस्ति असवार* हुइ। फिरयौ राज घर आतुरह ॥
छं० ॥ ४०७॥ रू० ॥ १९८ ॥

आपणी नातथी बाहर छे। ते दिवस थी विसलनगरानी नात जुदी थई। कोई केहे छे के तेज राजाये तेज वखतमां साठोद गाम नूं नाम पान मां लखी ने जेने आप्यूं हतूं ने साठोदरा नागर थया। चित्रोड़ लखी ने जेने आप्यूं ते चित्रोड़ा नागर थया। तेमज प्रश्नोरा तथा कृष्णोरा पण थया। ६ प्रकार ना नागरो नां नाम। बडनगरा नागर१ विसल नगरा नागर २ साठोदरा नागर ३ चित्रोडा नागर ४ प्रश्नोरा नागर ५ कृष्णोरा नागर ६ ॥ हवे विचार करो के विसलदेने विसल नगर सं० ९३६ वीं साल मां वसाव्यूं ये प्रथिराजरासा मां चंद कविये लखेलूं छे ॥ दोहा ॥ सो संवत नव शत अधिक। वर्ष तीस छह अग ॥ पुर प्रतिष्ट वीसल नृपति। राजत सकले जग ॥ १ ॥ त्यार पछी विसलनगरानी नात बंधाई छे। तेथी साफ जणाय छे के परमेश्वरे कांई नातो बांधी नथी। फकत माणसोये जुदा जुदा वाडा बांध्या छे। त्यारे ते बंधाया थी हालमां जे हरकतो पती होय ते बंध करवा चहाय तो करी शके खरा। विसल नगराओ राजानूं दान लेवा थी जो वटल्या होय तो हाल मां बड नगराओ मुसलमाननी सेवा करे छे तेओ एनाथी पण वटल्या कहेवाय। वास्ते एवो जूठो वेहेम छोड़ी देवो जोइये। अने जरूर समझवूं के तेओ एक वीजा थी कांई वटलाशे नही। इत्यादि ॥ ज्ञाति निबन्ध पृष्ट ४३ से ४५ तक ॥

नागरखंडना अध्याय २३ पछे तेमां १०८ मा अध्याय थी ४ था अध्याय मां लखे छे के आनर्त्त देशना राजाये चमत्कारनामे शेहेर वसावी ते ७२ गोत्र ना ब्राह्मणों ने आपवा मांड्यां, तेमा ८ गोत्र नाये लीधां नही ने ६४ गोत्रनाये लीधां। पछी त्यां कांई कारण थी नागनी उत्पत्ति घणी थई तेओये घणां माणसोने करडी खाधां तेथी केटला ब्राह्मणो नाशी छुट्या। पछी एक अपमान करेले ब्राह्मणे (त्रिजातकें) मन्त्र नो उपाय कर्यो तथा ए सऊ ब्राह्मणो ए मलीने लाकड़ी पथरा वगेरे थी हजारो नागने मारी नांख्या त्यारे ए शेहेरनूं नाम नगर (फेर विनानुं) ठर्यूं ने ते ब्राह्मणो नागर कहेवाया। पछी १५८ मां अध्याय मां लखे छेके एक पुष्पक नामने पुरुषे पर स्त्रीनो संग घणां वर्ष कर्यो, ते पछी पस्तावो करीने तेनूं प्रायश्चित करवा बडनगर मां आव्यो त्यारे सऊ नागरो ए कहूं के ए पाप मटवानो उपाय नथी। त्यारे एक चंडशर्मा नामने नागरे कांई प्रायश्चित कराव्यूं, तेथी नागरोये चंडशर्माने नात बाहर मुक्यो तेथी बाह्य नगरानी नात जुदी बन्धाई ॥

पृथ्वीराजरासा मां लख्यूं छेके बीसलनगर बसावनार बीसलदेव राजाये पुष्कर क्षेत्रमां परस्त्रीनो सङ्ग कर्यो हतो, तेथी ते स्त्रीये श्राप दीधो हतो जे तूं असुर थईश। पछी ए पाप मटवानो उपाय बीसलदेव शोधतो हतो। वास्ते पुष्पक नामनो पुरुष नगर खण्ड मां लख्यो छे ते बीसलदेव सम्भवे छे। ने वाह्य नगरा जे लख्या छे ते बीसलनगरा, साठोदरा वगेरे सम्भवे छे। इत्यादि० ज्ञात निबंध पृष्ट ७५-७६ ॥

* यह हिन्दी शब्द संस्कृत अश्ववार अथवा अश्व+आर अथवा अश्व+आर से बना है अरबी अथवा फारसी से अनुमान करना व्यर्थ है ॥

१९८ पाठान्तर:-पहुर। कामन। हुई। न्हांन। विप्र। कों। वसाय। वीसल पुरह। मंगाय। होइ ॥

॥ बीसलदेवजी का पीछा अजमेर आना और सब कथा प्रसंग पवांर जी राणी से कहना ॥

दूहा ॥ दो दिन के मग एक दिन। आए बीसल गेह ॥
किय प्रवेस न्नप सहर* सें। सुचित भये ग्रह मेह ॥
छं० ॥ ४०८ ॥ रू० ॥ १९९ ॥

ऊंच धाम विसराम किय। रंग साल चतुरंग ॥
प्रौढा महल पवार सों। कहिय सु कथा प्रसंग ॥
छं० ॥ ४०९ ॥ रू० ॥ २०० ॥

॥ सब काम-लुब्धाओं को शोच होना कि शंभू ने ऐसा क्या वर दिया ॥ ?

चौपाई ॥ काम लुबध बोली सब कामनि। च्यार जाम गई जागत जामिन ॥
सब नारिन कों सोच उपन्नौ। ऐसौ कहा संभु वर दिन्नौ ॥
छं० ॥ ४१० ॥ रू० ॥ २०१ ॥

॥ बीसलदेवजी का कामान्ध हो अकर्तव्य कर्म करना ॥

कवित्त ॥ राति दिवस एकसी। काम कामना सु वढ्ढिय ॥
प्रौढ मुगध वय हइ। सवैं थर हरि चिय गढ्ढिय ॥
पर घरनी लै बोलि। घरी नह विलंब लगावै ॥
जो विलंब करि रहै। ताहि हनिवे कों आवै ॥
भै भीत काम विसराम विन। नाम सुनत औदिक परै ॥
अजमेर नैर बीसल न्नपति। प्रमुदा देषत प्रज्जरै ॥
छं० ॥ ४११ ॥ रू० ॥ २०२ ॥

---

* हिन्दी सहर अथवा सहरि शब्द अरबी अथवा फारसी से नहीं है किन्तु संस्कृत स + हलि से ॥ SK. स + हलि = Agriculture, furrows. Hence a place where agriculturists reside. Dwelling & habitation, &c. The Hindi हर is also from the SK. हल A plough, the earth. In the same manner नगर a town is from नग a tree, a mountain & रल् off.

१९९–२०० पाठान्तर:- कै। कैं। सेव ॥ धांम। महिलए। वारि। कौ।

२०१ पाठान्तर:–कांम। याम गय। जांम। कों उपंनौ। ऐसों। सिंभु। दीनौ ॥

२०२ पाठान्तर:–कांम। कामना। बढिय तस। सवें। हरत नारी जस। कों। विलंब। ताहि के पहिले तो विशेष है। भय। कांमं। विसदांम। नहि। नाम। उन्दकि मरै। नृपति। प्रजरै ॥

दूहा ॥ पट्टन धनकनि देह दुष । ग्रेह कटन ग्रह हथ्य ॥
ध्रुरैं धन्न निज कोस मधि । दूहै वानि समरथ्य ॥
छं० ॥ ४१२ ॥ रू० ॥ २०३ ॥

कवित्त ॥ जिते जाइ इह मान । काम कामना सु वढ्ढिय ॥
अंदर ताहि उप्परह । बयन ब्बरष पर चढ्ढिय ॥
तिन दिष्षत बर बस्त । मंगि अप्पन मुष अष्षहि ॥
अबला सँग उल्हास । काहु की कानि न रष्षहि ॥
दुज पंचि बैस सूद्रह बरन । तजै न किह तक्कत नयन ॥
बीसल नरिंद इह भय अकलि । लहै न कहुँ निस दिन चयन ॥
छं० ॥ ४१३ ॥ रू० ॥ २०४ ॥

॥ बीसलदेवजी के दुराचरणों से दुःखी होकर नगर के लोगों का प्रधान के पास पुकारने जाना ॥

दूहा ॥ दीरघ जन मिल नयर के । गए द्वार परधान ॥
बढि अचैन नर नारि सब । नहीं रहै रजधान ॥
छं० ॥ ४१४ ॥ रू० ॥ २०५ ॥

---

२०३ पाठान्तर :—धनक्कन । मुष । ग्रिह । कट्टन । हथ । निसि । वांनि । समरथ ।

२०४ पाठान्तर :—मांन । कांम । कांमना । वढ्ढय । उपहर । चढिय । दिषत । मुष्प । संग । काऊ कांणि । रषहि । द्वीय । वईस । किहि । दूहै । लहैं । निसि ॥

हमारे पाठकों में से जो ऐसे हैं कि वे Political officers रहे हैं अथवा जिनों ने बीसल-देवजी जैसी अनीतियों के वृत्त गोप्य Political Reports में पढ़े हैं अथवा जो Mysteries of the Native Courts. के ज्ञाता हैं अथवा जिनों ने वाजिदअली शाह की सायवी का पूरा ज्ञान उपार्जन किया है; वह चन्द के लिखे बीसलदेवजी के वृत्तान्त पर अविश्वास नहीं करेंगे और न उसे अत्यन्ताभाव का समझेंगे किन्तु कवि के स्पष्ट—वक्तृत्व की प्रशंसा करेंगे। इतिहास लिखने वाले का यह मुख्य काम है कि वह चाल चलन, के विषय में स्पष्ट वृत्त लिखे कि जिस से उस के भावी संतान शिक्षा ग्रहण करें। हमारे इस देश में हम लोग इस बात को फांसी लगने जैसा अपराध समझते हैं और रात्रि दिन ऐसी ही अनीतियों में लगे रहते हैं अतएव पुरुषार्थ का बड़ा टोटा हमारे यहां आ गया है !!!

२०५ पाठान्तर :—मिलि । कै । परधांन । वढि । अचैन । नही । रहसि । रजधांन । रिसांन ॥

॥ सब का आपस में सलाह करके बीसलदेवजी को राजधर्म अरज करना ॥

कवित्त ॥ तिन मति तिहिं पुर होइ । लोइ मति समथ समंडव ॥
बहुत भूमि भूमियां । चढवि तिन धर पुर पंडव ॥
इह सु ध्रम्म राजेन्द्र । दुष्ट कंटक सिर कट्टै ॥
अनड अनड संहरै । धरा रप्पन धर अट्टै ॥
इह करयौ मंत तिन मंचियन । अरु सब सहर सु पंच जन ॥
इहकथिय वत्त न्रिप सम तिनह । दवरि विसेपक भूंमि यन ॥
छं० ॥ ४१५ ॥ रू० ॥ २०६ ॥

॥ बीसलदेवजी ने उत्तर दे कहा कि यह सब मैं जानता हूं पर काम ज्वाला के बढ़ने से मैं लाचार हूं अब तुम जो कहोगे वह करूंगा ॥

कवित्त ॥ दुज्जर काय सु कहत । राज मन मांहि समक्ख्यौं ॥
काम ज्वाल मो वढिय । तुम हि तिन कै दुप दक्ख्यौं ॥
हौं इह जानौं सवै । पै मुहि मन वसि न होई ॥
सदा पहर जिम क्राह । रहै कूई की कूई ॥
तुम कहौ सु हौं करि हौं अवसि । बोल्लि लेहि किरपाल हौं ॥
जहँ जहां दिसा तुम संचरौ । तहँ तहँ आजं चढि हौं ॥
छं० ॥ ४१६ ॥ रू० ॥ २०७ ॥

॥ इस पर बीसलदेवजी का किरपाल को बुलाना और उस का आना ॥

दूहा ॥ दै फुरमान * प्रधान तव । बुल्लाये किरपाल ॥

२०६ पाठान्तर:—मत्तिह । समथ्य । संडव । भूमीयां । ध्रंम । कहे । अनड अनड । रपन । कहिय । तिनहि । विशेपक । भुंमियन ॥

२०७ पाठान्तर:—दुजर । केत । समक्षौ । कांम । वढीय । कै । दक्षौं । हों । जांनों । सवैं । पैं । मोहि । क्रांह । हों । कू । तहां २ । चढि । हूं ॥

* यह हिन्दी शब्द संस्कृत स्फुर+मान से है जैसे कि स्फूर्तिमान्, स्फूर्तिमती और स्फूर्तिमत इत्यादि । इस फुरमान अथवा फुरमाना आदि शब्दों का प्रचार राजस्थानों अथवा बड़े प्रतिष्ठित लोगों की मंडली में आज भी बहुत है । वास्तविक यह उस कहने अथवा आज्ञा के अर्थ में

संभरि सैां आयौ सहर। लियै अनूप रसाल ॥

छं० ॥ ४१७ ॥ रू० ॥ २०८ ॥

॥ बीसलदेवजी का किरपाल को कहना कि तरवारि की पृथ्वी है सो हम नव खंड की षड्ग खोसने को षड्ग बांधते हैं तुम खजाना संग ले बीसल सरवर पर डेरा करो ॥

कवित्त ॥ आय तबै किरपाल। पाइ राजन कै लग्गौ ॥
सुह अग्गैं दुअ षग्ग। धरै नग जरित उनग्गौ ॥
वंधिय तेग विचार। सु गुन राजन इह कथ्यिय ॥
जिम जिम विद्या दान। तिमह तिम षगकी प्रथ्थिय ॥
इहै सगुन हम कैां भयौ। षग षोसैां नव षंड धर ॥
ब्रह्मांड मंड सब बसि करैां। मंडैां मेर सुमेर धर ॥

छं ॥ ४१८ ॥ रू० ॥ २०९ ॥

दूहा ॥ सुनि क्रिपाल सो मुष वचन। कढि षजीन* सँग लेहु ॥
बीसल सरवर ऊपरैं। ध्रुव दिसि डेरा देहु ॥

छं० ॥ ४१९ ॥ रू० ॥ २१० ॥

प्रयोग होता है कि जो किसी के द्वारा कहा जाय अथवा आज्ञा किया जाय। जैसे हमारे रजवाड़ों में जहां अभी प्राचीन देशी रीति प्रचलित है वहां जिस से राजा स्वयम् नहीं बोलते। तब राजा जी तो किसी अन्य पुरुष को कहते जाते हैं और वह पुरुष उस इष्ट मनुष्य को कहता जाता है। तथा किसी अपने से छोटे अथवा आधीन को कागद पत्र के द्वारा कहा अथवा आज्ञा किया जाय उस को फुरमान वा फुरमाना कहते हैं ॥

२०८ पाठान्तरः—फुरमांन। प्रधांन। बिल्लाये। बुलाए। सैा। अमूप ॥

२०९ पाठान्तरः—पाय। आगे। दुय। धरे। उनगौ। सगुन। कथिय। दानं। तेम पग की इह पृथ्वीय। इह सगुन अबैं हमकों भए। सों। ब्रह्म मंड मंड। ब्रह मंड मंड। करुो। दंडों ॥

* हिन्दी में खजाना और उस से बने शब्द आते हैं उस का वाचक यह प्राचीन हिन्दी शब्द सब के ध्यान में रहने योग्य है। यह संस्कृत खर्ज्जूर=रौप्य silver का अपभ्रंश है। इन शब्दों को अरबी और फारसी के अपभ्रंश अनुमान करना व्यर्थ है। देखो, सं० खज शब्द भी युद्ध और स्वार्थ के अर्थों में प्रयोग होता है। और वह भी इतने प्राचीन समय से कि ऋग्वेद ८। १। ७ में "अलर्षि युध्म खजकृत पुरन्दर०" कहा है ॥

२१० पाठान्तरः—क्रिपाल। संग। उपरें। उपरैं। दू। दिशि ॥

॥ वीसल सरवर पर वीसलदेवजी के आधीन तथा सहायक इष्ट मित्र राजाओं का उन के दिग्विजयार्थ अटन के लिये एकत्र होना और गुजरात के चालुक्य राजा का वहां न आना अतएव वीसलदेवजी का उस पर चढाई करना और वालुका राय का यह सुनकर सामना करने को आना ॥

पद्धरी ॥ भरि चले सुतर * रथ एक गाह। वीसल तडाग दिय वारि गाह ॥
फुरमान दए लिपि दस दिसान। सब आय मिले अजमेर थान ॥ छं० ॥ ४२० ॥
परिहार सहनसी मिल्यौ आय। मंडोवर के नर लगे पाय ॥
गहिलोत मिले सब सभा मोर। पावासर तोंवर राम गैार ॥ छं० ॥ ४२१ ॥
सेवंत धनी आए सहेस। कोछिल्ल ढुनांपुर दिए पेस ॥
वघ्घोच मिले सब पाइ बंधि। बांभन्या न्टपति तजि गए संधि ॥ छं० ॥ ४२२ ॥
भटनेर राय की आइ भेट। सुलतांन नाल वँध थटा थेट ॥
फुरमान गए जैसलहमेर। भोस्या सब भाटी भये जेर * ॥ छं० ॥ ४२३ ॥
जादैां रु वघेला मल्हवास। मोरी वड गूजर आइ पास ॥
अंतरहवेध कूरंभ आइ। सब मेर जेर होय लगे पाइ ॥ छं० ॥ ४२४ ॥
आए सपाइ चढि जैतसीह। तच्छितपुर के नर संग लीह ॥
आये सु चक्कि उदया पवार। निरवान डोड चढि चले लार ॥ छं० ॥ ४२५ ॥
चंदेल दाहिमा चरन लग्गि। वसि किये भूमिया धूनि पग्ग ॥
चालुक्क कोइ आयौ न पाइ। रहे मुक्करि जोर * तरवार * साहि ॥ छं० ॥ ४२६ ॥
सुनि बोल जैतसी गोलवाल। घर वार नगर को रष्पपाल ॥
सैां पैां सु तुमहि अजमेर थान। चालुक्क कितक पावै न जान ॥ छं० ॥ ४२७ ॥
दर * कूच कूच * चढि चल्यौ वीर। गिरि मग्ग होइ सर सुक्कि नीर ॥

---

* इस रूपक में के कई एक शब्द भाषा के शोधक विद्वानों के ध्यान में लेने योग्य हैं जैसे :—हि० सुतर (SK. सु + तर or तरि or तरु), जेर (SK. जूर or जूरी to reduce, to injure, to hurt, to decay, to grow old, to wound or kill) जोर (SK. जुड to bind, to join, as in making or mending, to direct, to grind or pound &c., or जुर् speed velocity, motion in general). तरवार (SK. तरवारि) दर (SK. दृ to divide, cut or break, to preserve, &c., and aff अप्) कूंच or कूच (SK. कुञ्च to go, to go to or towards.)

इस के अतिरिक्त यह भी पाठकों को ज्ञात हो कि इस प्रसंग में कहीं चालुक और कहीं बालुक पाठ है सो जहां जैसा पुस्तकों में मिला वैसा रक्खा गया है किन्तु जितनी पुस्तक जतियों

खोम्भति खोलंकी पहिलि चोट। सैं लोट किये धर पारि कोट॥ छं॰॥ ४२८॥
जारौर भंजि गढ रौर पार। अरि भाजि गए गिर बन मझार॥
आबू चढि भेच्यो अचलेस। तत्काल लियौ गिरिनारि देस॥ छं॰॥ ४२९॥
वागरि सोरठ छपन्न सुद्द। दंड मानि मिले नह मिले जुद्ध॥
गुजरात देस सित्तर हजार। बालुका राइ चालुक्क झुझ्झार॥ छं॰॥ ४३०॥
सुनि बत्त चढ्यो अहंकार बंध। शिव सकति पूजि धरि कुन्त कंध॥
असवार लार हज्जार तीस। मद झरत नाग पंचास वीस॥ छं॰॥ ४३१॥
जोजनह एक पर करि मिल्लान। आवाज सुनिय तब चाहुवान॥
छं॰॥ ४३२॥ रू॰॥ २११॥

॥ बालुकराव का आना सुनकर बीसलदेवजी का सेना लेचढ़ना॥

दूहा॥ सुनि अवाज बीसल न्रपति। आयौ बालुक राव॥
राज संगि है वर चढ्यौ। दियौ निसान * निघाव॥
छं॰॥ ४३३॥ रू॰॥ २१२॥

पद्धरी॥ दल चढ्यौ साजि वीसल सु राज। बज्जिय सु जांनि अरि पुर अवाज॥
सित्तर हजार सेना सु बाज। स्रिंगारि सलूर पावस निगाज॥ छं॰॥ ४३४॥

की लिखी हुई हैं उन में च और ब में बहुत ही कम फरक देखने में आया है कि जिस से मैं अनुमान करता हूं कि लेखकों ने धोका खाकर चालुक का बालुक पाठ न लिख दिया हो॥

* हिं॰ निशान अथवा निसान (SK. नि + शाण i. e. नि before and शाण coarse cloth, sack cloth, Canvas. A mall tent or screen used especially as a retiring room for actors and tumblers, &c.) Hence a standard, an ensign, flag, banner & colours, &c. इस निशान शब्द का प्राचीन देशी राज्यों में अभी तक प्रचार है और troop और Company के अर्थ में भी प्रयोग होता है जैसे अमुक राजा ने अपने अमुक सरदार पर दो निशान चढ़ा दिये। अमुक २ निशानों में झगड़ा वा लड़ाई हो गई। मैं अमुक निशान का हूं और वह अमुक का॥

२११ पाठान्तर:–दीय। फुरमांन। द्रिसांन। थांन। आई। गहिलोत। पावांसर। तूअर। मोहिल। वलोच। बंभन्या। सिंध। आय। बंध। फुरमांन। जेसलहमेर। जदों। मल्हनवास। आय। अंतरहवंध। आय। पाय। सपाय। जैतसिंह। तछितपु। साथ। सथ। सथ्य। लीय। चढि। पवांर। निरवांन। भूमियां। मुसकरि। रषवाल। सेपोस। थांन। कहांक। कितहु। जांन। कूच कुन। मगि। सोभत्ति। सोकत्ति। सोलंकि। सें।। जालोर। पारि। मझारि। लीयौ। छपंन। डंड। सतरि। राय। कूंत। पचास। जोजन। मिलांन। चाहुवांन॥

२१२ पाठान्तर–आवाज। मंग। हैवर। चढ्यौ। दीयो। निसांन। न। घाव॥

२१३ पाठान्तर:–जांन। सत्तरि। बाजि। स्रिंगर। कि गाज। ढलकंति। कूंत। जुंत। जुंतु। सिष। पष्पर। बंधि। भूमिया। मंडि। सं॰ १६४७ और १७७० में "करि अगम गम्य दल अटुल रक" है। जव। ऊजलो। ऊज्जलो पदक। मुकाम। मुक्कांम। गांम।

ढलकंत ढाल, झलकंत कुंत । चिकसंत सूर सकसंत जंत ॥
हल हलत सिंधु वर चल अनूप । झल मलत सिष्प पष्पर सनूप ॥ छं० ॥ ४३५ ॥
वर विजय वड्डि चालुक्क देश । वहु मिलत भूमियां लेय पेस* ॥
अरि गहत गाढ तिन धरनि षंड । इहि रीत राज वसु विजय मंड ॥ छं० ४३६ ॥
करि अग्ग मद्द गल सहस इप्प । वर माघ मास उज्जलौ पष्प ॥
दस कोस जाय मुक्काम† कीन । विच गाम नगर पुर लूट लीन ॥
छं० ॥ ४३७ ॥ रू० ॥ २१३ ॥

॥ बीसलदेवजी की खबर सुन वालुका राव का जलभुन जाना ॥

दूहा ॥ सुनिय षबरि‡ वालुक नवै । तमकि सु ऊठ्यौ साम ॥
मानों प्राजारिय अगिन । नर निरधूम विराम ॥
छं० ॥ ४३८ ॥ रू० ॥ २१४ ॥

॥ वालुका राव का नित्य नेम करके लड़ने को तयार होना ॥

पद्धरी ॥ वालुका राइ चालुक्क वीर । मंगाइ नीर मंज्यौ सरीर ॥
हरि चरन अंब अंजुली कीन । हरि कंठ विष्प धारिय कुलीन ॥ छं० ॥ ४३९ ॥
जुध आज करौं कहि कहा कालि । जो जाउँ भज्जि तौ गोत गालि ॥
इतनी भूमि पिचो न कोह । अड्डौ न फिरौ मिलि लेय लोह ॥ छं० ॥ ४४० ॥
पषरैत तुरिय पषरैत गज्ज । नर कस्से वगतर सिलह सज्जि ॥
असवार भये तव षबरि दीय । वालुका राइ आयो अवीह ॥ छं० ॥ ४४१ ॥

---

* हिं० पेस (SK. प्रेष्य m. A servant, a slave. n. Service, servitude. Hence a tribute or present such as is only presented to conquerors, princes, great men & superiors.

हिं० पेश अथवा पेस + कशी अथवा कसी (SK. प्रेष्य and कृष् = to draw, to draw out or off, to attract, to raise, to draw up, &c.)

† हिं० मुक्काम or मुकाम (SK. मुक्त + क्लम = परिश्रम labour). Hence a halt, a stop in a march, &c. Some think it from the SK. मकुष्ट mfn. going lazily, slowly, &c. or SK. मक or मकि or मुक्क to go, to move, &c, & अमनि a road or SK. मुक्त + अम to go.

‡ हिं० खबरि or खबर (SK. ख्या to relate, to recount, to say or tell, to celebrate, to make known, &c:)

२१४ पाठान्तर:—पब्बहि । जमि । तांम । सं० १८५६ की में "मनों प्रजारिय आगनि वन" ॥ विराम ॥

॥ बालुका राव का बीसलदेवजी के पास श्रीकंठ भट्ट को भेज संदेसा कहाना ॥

श्रीकंठ भट्ट चहुवान पास। तुम जाय कहौ इहि विधि प्रकास ॥
श्री कंठ भट्ट गय अरि सु थान। वीसलदे भेट्यौ चाहुवान ॥ छं० ॥ ४४२ ॥
आसीस दई उभ्भारि हथ्थ। बालुका राइ की कही कथ्थ ॥
जितनैं नृपति सौं सुदै काम। तितनैं रयति सौं कौन काम ॥ छं० ॥ ४४३ ॥
तुम बुरी करी करि रयति बंदि। ऐसी न करैं हिंदू नरिंद ॥
अब छंडि रयति फिरि जाहु धाम। अजमेर सहर मंडौ विस्राम ॥ छं० ॥ ४४४ ॥
हौं वह्म राय जुध करन जोग। जुध भाजि जाउं तौ परै सोग ॥
हम मरन दिवस है मंगलीक। सो पास जिते नृप सुद्ध लीक ॥ छं० ॥ ४४५ ॥
हम तुम्ह नहीं कबहू विरुद्ध। इह जानि जाहु फिरि तजौ जुद्ध ॥
हम तुम्ह काम इहि षेत आज। को रहै षेत को जाइ भाजि ॥ छं० ॥ ४४६ ॥

॥ यह सुनते ही बीसलदेवजी का लड़ने को आज्ञा देना ॥

इतनी जु सुनत ही चाहुवान। तिहि वार हुकम करि द्यौ निसान ॥
पषरैत किये है वर मतंग। संनाह पहरि सब नरनि अंग ॥ छं० ॥ ४४७ ॥
दोउ फौज निजर दिठाल मिल्लि। उपहै सिंधु जनु लहरि जल्लि ॥
छं० ॥ ४४८ ॥ रू० ॥ २१५ ॥

॥ बीसलदेवजी का चक्रव्यूह और बालुकराय का अहिव्यूह रचना ॥

दूहा ॥ चक्रव्यूह चहुवान किय। अहि मन बालुक राइ।
कै भेदै कै मधि रहै। दई करय निरवाह ॥
छं० ॥ ४४९ ॥ रू० ॥ २१६ ॥

---

२१५ पाठान्तरः—राव। चालुक। मंगाय। भभ्यौ। अंजुलि। विप। धारीय। जुद्ध। करों। काल्हि। काल। जौं। जाउं। जाऊं। भजि। गोतमालि। काय। अडो। फिर। पषरैं। पषरैंत। गज। कसे। सजि। भए। जाहुं। कहो। थांन। सं० १७७० में "भेट्यौ वीसलदे चाहुवान"। दीन। दइ। उभारि। हथ। राय। कथ। जितनैं। सों। कांम। तितनैं। सों। कोंम। कांम। बुरीय। करी। करै। हिंदू। धांम। विस्रांम। हों। ब्रह्म वंस। भागि। जाऊं। पासि। शुद्ध। तुम। तुंम। नही। विरुध। तुंम। कांम। जाय। चाहुवांन। निसांन। हैंवर। हैं वर। दोऊ।

२१६ पाठान्तरः—चाहुवांन। वालुका। राय। दइ।

॥ बीसलदेवजी और बालुकराय की फौजों का परस्पर युद्ध करना ॥

भुजंगी ॥ मिले प्रात कालं दुअं दिष्ट फौजं । मनों देषिऐ जानि सामुद्र मौजं ॥
गजं आय झूमे भले साव रोटं । पई षंड सुंडं करे अप्प चोटं ॥ छं० ॥ ४५० ॥
भई तीरकारी छुटे नाल वानं । परी सोर की धुंध सुझ्झै न भानं ॥
भले सूर वीरं धरै कुंत कंद्धं । उपारैं तुरी दो दिसा फौज मद्धं ॥ छं० ॥ ४५१ ॥
निसंकं तुरी थप्पि पष्परेत नष्पै । मनों बुंद सिंधं परै कौंन दिष्पै ॥
भए एकमेकं परे भार भारे । तनं तेग तुट्टे वहै फूल धारै ॥ छं० ॥ ४५२ ॥
भई फौज चालुक्क की पच्छ पायं । तवै वालुका राइ कीनी सहायं ॥
जपै भाय भायं करै मार मारं । लरै दोय जोधा कटैं सार सारं ॥ छं० ॥ ४५३ ॥
उपट्टै घटं गावरं तुंड तुट्टै । वहै संग कुट्टी फिरी अंग फुट्टै ॥
चपे चक्रव्यूहं नृपं अप्प चल्लै । फिरै मुष्प परिहार गह्लिोत मिल्लै ॥ छं० ॥ ४५४ ॥
चल्यौ भज्जि गह्लिोत तूंवर दिसानं । फटे चक्रव्यूहं भए एक थानं ॥
तिनं वार स्यावासि पावासु रानं । सनं मुष्प धाए मनों सिंघ जानं ॥ छं० ॥ ४५५ ॥
परी भूमि लोथं मिले हथ्थ वथ्थं । करैं जोर जोधा अकथ्थं सु कथ्थं ॥
तिनं वार पंधार पेले वलोचं । जुरे आय संमुष्प कीयौ न सोचं ॥ छं० ॥ ४५६ ॥
भभक्कं भकं हस्ति वोले भसुंडं । परे षंड षंडं रनं रुंड मुंडं ॥
वने लाल वाने झिले लोह मिल्लै । दुहू ओर जोधा मनौं फाग षिल्लै ॥ छं० ॥ ४५७ ॥
गजं श्रोन चल्लै रजं आस पासं । मनों माधुरी मास फूले पलासं ॥
मिली दिष्ट वालुक्क बीसल नरिंदं । मनौ सूर दूषे भये चंद्र मंदं ॥ छं० ॥ ४५८ ॥
तुरी चढ्ढि चालुक्क हत्थी चुहानं । भयौ राज सौं जुद्ध भारी भयानं ॥
उनें वाजि नंष्यौ इनें गज्ज पेल्यौ । दिए दंत पायं दुअं लोह मिल्यौ ॥ छं० ॥ ४५९ ॥
फिरयौ गज्जराजं उनें बाजि फेरयौ । दुअं वीर बाचा भई षेत हेरयौ ॥
छं० ॥ ४६० ॥ रू० ॥ २१७ ॥

२१७ पाठान्तर:—दुयं । दिठ । देषियैं । औन । जांनि । भूमे । रोटं । रोट्टं । सर्पे । सैाटं । सैाट्टं । धुंधु । सुझै । भांन । शूर । धरं । कंधं । उपारै । मंधं । पष्परे । कंध नपे । नष्पै । परं । कोंन । भइ । पछ पाई । पछ । राय । सहाई । जपे । भाई भाई । जोद्धा । कटै । घटं । तुंब । करी । चंपे । अप । चलं । फिरैं । मुदव । मिलं । भजि । तोंवर । फटे । मुप । पुहवि । पहुमि । हथ बथं । करे । अकथं । कथं । पेल्यो । सनमुष । भभकंत हस्ती सु बोलै भुसुंड । रुड । मुडं । मिले । दुहूं । मनों । पिले । चल्ले । रजे । मनैा । वालुक । मनो । दूपे । हुवं । चंद । चढि । चालुकं । करी । चाहुवानं । चोहानं । सों । नष्यैा । गज । दए । दुवं । गजराजं । दुहूं । भयं ॥

॥ चालुक का कहना कि रात में युद्ध नहीं करना प्रात भये युद्ध करेंगे ॥

दूहा ॥ राज सुनौ चालुक कहै। है थप्पंरि इह कंध ॥
रातिपरी जुध नहि करैं। प्रात करैं फिर जुद्ध ॥

छं० ॥ ४९१ ॥ रू० २१८ ॥

॥ दोनों योद्धाओं का अपने २ डेरों पर आना और चालुक के मंत्रियों का एक झूंठी पत्री बनाना ॥

अरिल्ल ॥ अपने अपने डेरा आए। सब घायल्ल के घाव बँधाए ॥
मिले सकल चालुक के मंचिय। झूठी एक वनाई पचिय ॥

छं० ॥ ४९२ ॥ रू० ॥ २१९ ॥

॥ चालुक के मंत्रियों का उसे एक झूंठी पत्री देकर घर भेज देना ॥

अरिल्ल ॥ सो कर जाइ राज कै द्निय। तुम घर जाहु कहा वक थन्निय ॥
डोली करि चालुक्क चलाए। सब मंची मिलबे कौं आए ॥

छं० ॥ ४९३ ॥ रू० ॥ २२० ॥

॥ चालुक के मंत्रियों का बीसलदेवजी के मंत्रियों से मिल संधि कर लेना ॥

अरिल्ल ॥ सब मंची परधान थान पर। बोलि लए पावासर तोंअर ॥ *
हम सु तुम्हारैं पाइन आए। कपट निपट करि राव चलाए ॥

छं० ॥ ४९४ ॥ रू० ॥ २२१ ॥

दूह सु बोल गज तोल चलावौ। राज कहै सो माल मँगावौ ॥

छं० ॥ ४९५ ॥ रू० ॥ २२२ ॥

---

२१८ पाठान्तर :—करें। करै। भये। करै ॥

२१९—२२ पाठान्तर ;—अपनें २। घाउं। बंधाए। मंत्री। पत्री ॥ २१९ ॥ जाय। दीनीय। थंन्निय। चालुक। करी। कों। कूं। आये ॥ २२० ॥ परधांन। थांन। तुम्हारे। पायन ॥ २२१ ॥ दूहां। सोल। चलायौ। मंगायौ। तहं ॥ २२२ ॥

* यह तुक सं० १६४१ और १७७० की पुस्तकों में नहीं है ॥

॥ पावासुर का वीसलदेवजी को संधिकर लेने के समाचार कहना ॥

अरिल्ल ॥ राजन पास गए पावासुर । तहां बोलि किरपाल लए नर ॥
चालुक को मंत्री आये मिल । संगो मान धरै प्रभु पग तल्ल ॥
छं० ॥ ४६६ ॥ रू० ॥ २२३ ॥

॥ वीसलदेवजी का संधि स्वीकार कर वहां महल्ल बनाने और नगर बसाने को कहना ॥

अरिल्ल ॥ फिर राजन्न कही तुम जानौ । मेरो इहाँ महल्ल हु थानौ ॥
एक मास में नगर वसावौ । इतनी कहि अरु पाइन आवौ ॥
छं० ॥ ४६७ ॥ रू० ॥ २२४ ॥

॥ माल लँगा कर बीसलपुर बसाना और वहां से पीछा फिरना ॥

दूहा ॥ पावासर तोंअर कहे । भरैं कोरि कौ भाग ॥
जव ही माल लँगाइ करि । नगर वसावन लाग ॥
छं० ॥ ४६८ ॥ रू० ॥ २२५ ॥

जीति षेत चहुआन न्टप । चालुक्क धाय अघाय ॥
फिरि वाहुरि वीसल्ल चल्यौ । वीसल नगर वसाय ॥
छं० ॥ ४६९ ॥ रू० ॥ २२६ ॥

सो संवत नव सत्त अधं । बरस तीस छह अग्ग ॥
पुर पट्टन बीसल न्टपति । राजत सयलह जग्ग * ॥
छं० ॥ ४७० ॥ रू० ॥ २२७ ॥

२२३-२२४ पाठान्तर:-कें । कै । पाइन । ताले ॥ २२३ ॥ राजंन । राजंन्न । जांनो । इहं । मेंल्हिहूं । हों । मैं । वंसायो । वसाउ । पायना । आयो ॥ २२४ ॥

२२५-२७ पाठान्तर:-कहै । भरै । भरैं । मंगाय । वसाउन ॥ २२५ ॥ जीती । चहुआंन । चहुवान । न्रप । घाय । फिरिं ॥ २२६ ॥ सत । अंध । अग्गि । जग्गि ॥ २२७ ॥

* इस रूपक में कहे संवत् के विषय में हमारी टिप्पण १६८ पढ़ो और विचार करो । इस ग्रंथ के रूपक १६८ में वीसलदेवजी के पाट बैठने का संवत् ८२१ कहा है परंतु ख्यातियों में सं० ९३१ भी मिलता है । उन के राज्य करने के वर्ष ६४ कवि ने बता ही दिये हैं अतएव यह रूपक पाट बैठने के रूपक १६८ में आठ सैं के स्थान में नो सैं अथवा नवं सैं का पाठ होना स्वयम् सिद्ध करता है क्योंकि जो ऐसा न माने तो । ११८ वर्ष का राज्य समय होगा । ख्याति में लिखे बीसलदेवजी के पाट बैठने के संवत् के अनुसार जो लेखा लगा कर हमने टिप्पण १६८ में संवत् १०८६ सिद्ध किया है वही कर्नैल टोड साहब भी नीचे लिखे प्रमाण अनुमान करते हैं:-

॥ एक दूती का बीसलदेवजी को एक बहुत सुन्दर वनिकसुता की खबर देना ॥

दूहा ॥ बनिक सुता कौमारि का। एक अनूप नरिंद ॥
कामलता दूती कहै। मनों सरद को चंद ॥
छं० ॥ ४७१ ॥ रू० ॥ २२८ ॥

॥ बीसलदेवजी का बीसलपुर में प्रविष्ट होना ॥

कवित्त ॥ संवत नव सत अद्व। वरष दस तीय सत्त अग ॥
पुर प्रविष्ट बीसल्ल नरिंद। राजंत सयल जग ॥
तिहि पट्टन इक वनिक। मंडि अह राज विबाहति ॥
रचिव देव न्रप सवद। दिष्पि तिय देव दूवाहति ॥
जै जै सबद वंदिन चवहि। मागध पुच पवित्त मति ॥
अन धन प्रवाह वहु पुहवि परि। वरष्यौ जेम पुरंद गति ।
छं० ॥ ४७२ ॥ रू० ॥ २२९ ॥

"Mahmood's final retreat from India by Sindh to avoid the armies collected "by Byramdeo and the prince of Ajmere," to oppose him, was in A. H. 417, A. D. 1026, or S. 1082, nearly the same date as that assigned by Chund, S. 1086," Vol. II, page 419.

इस के सिवाय पाठकों को यह भी विचार करना होगा कि इस समय गुजरात देश के पट्टन का चालुक राजा कौन सा था कि जिस से बीसलदेवजी का युद्ध हुआ। अतएव हम जैन ग्रंथ प्रबंध चिन्तामणि और कुमारपाल चरित्र आदिक के अनुसार शोध हुए संवत् मूलराजजी सोलंकी से लेकर करण तक के नीचें लिखते हैं:—

१ मूलराज	=	संवत् ९९८ से	५५	वर्ष	राज	किया
२ चामुंडराय	=	,, १०५३ से	१३	वर्ष	,,	,,
३ वल्लभराज	=	,, १०६६ से	११॥	मांस	६	दिन
४ दुर्लभराज	=	,, १०६६ से	११॥	वर्ष	राज	किया
५ भीम	=	,, १०७८ से	५०	वर्ष	,,	,,
६ करण	=	,, ११२८ से	३२	वर्ष	,,	,,

२२८ पाठान्तर:—कोमारिका। कहे। मनहुत ॥

२२९ पाठान्तर:—सं० १७७० की पुस्तक में "सर संवत् नव सत्त। वरष दस पंच सत्त अग" पाठ है। वीसल्ल। नृपति। राज्यंत। तिन। पट्टन। ग्रह। दिवि। तीय। दवाहित। पुत्त। पहु। पुहमि। पद्द। पुरिंद ॥

इस रूपक के संवत् के विषय में टिप्पण १६८ और २२५–२८ और बीसल नगर अथवा बीसलपुर के विषय में टिप्पण १८० और १८२ अवलोकन करो ॥

॥ बीसलदेवजी का पीछा अजमेर आना और वहां उन का हास होना ॥

दूहा ॥ इह विधि मंड्यौ राज वरि। जय्य वनिक्क अजमेर ॥
बरष चयोदस मद्धि वय। भयौ हास सब नैर ॥
छं० ॥ ४७३ ॥ रू० ॥ २३० ॥

॥ बनिकसुता गौरी का पुष्कर में तप करना और बीसलदेवजी का उस पर मोहित होना ॥

पद्धरी ॥ आषाढ मास उज्जास पष्प। दिन तीय सोम वंदन सरुष्प ॥
सटिवाय गज्जि नीसांन गेन। अति उंचि मंडि त्रिप अवधि श्रेन॥ छं० ॥ ४७४ ॥
किलकंत उपल आकाल अभ्भ। विथुस्यौ मद्धि जल पहुमि गभ्भ ॥
बिलसंत राज तिय देव साथ। निकसै वार कछु एक भाय ॥ छं० ॥ ४७५ ॥
चिहुँ कोद घूंमि घन पुव्व पूर। दिन पांच आनि दरसाइ सूर ॥
रस वार सोभ वीरंभ दिन्न। ते वंस सेव जन वंद किन्न ॥ छं० ॥ ४७६ ॥
सो षंड मास लगि रत स मान। घर हरे धुंम जल महिर आन ॥
छं० ॥ ४७७ ॥ रू० ॥ २३१ ॥

साटक ॥ स्यामंगं रवरंग अंग रवनी। अन्नी सु रंगेसत्रे ॥
साहंसं सक पाइ राइ मुगता। जुगता सरित्तारए ॥
नीलं वास वनूर वंध विधना। हरि हार धारा तनं ॥
भूमिं संकि स्वधीन पुन्य तनयं। देवा रहस्यं मनं ॥
छं० ॥ ४७८ ॥ रू० ॥ २३२ ॥

कवित्त ॥ धरतिय हरि उर वास। वास धर उर तिय धारिय ॥
दिग कज्जल लगि धार। धार कज्जल दिग धारिय ॥

---

२३० पाठान्तर:—परि। मधि ॥

२३१ पाठान्तर:—उजास। पष। रुरुप्प। सरुष। मिटिंवाय। गज। नीसांन। गैंन। उंच। वैन। उपिल। अभ। विथूस्यौ। मधि। पुहमि। गभ। निकसै। चिहुं। घुंमि। पुब। पंच। दरसाई। विरंभ। दिन। तें। बंध। किन। स नाभ। आभ ॥

२३२ पाठान्तर:—स्यामांगं। अवनी। पाय। जुगता। सरितारए। विधिना। हार। भूमि ॥

२३३ पाठान्तर:—धरतिय उर। धारि। मधि। हिय। रंगिय। नूपर। सा। पुहुप। पहुप। रहस्सि ॥

रह्यौ हार हिय मद्धि। मद्धि हिय हार सु रंमिय ॥
नूपुर पय सो श्रवंत। श्रवन नूपुर पय अंगियं ॥
अविसय न पुहप घन बन रसिय। रसय बनी घन पुप्फ सम ॥
भू इंद रहसि रसि वसि रमिय। बीसल्ल रस भू इंद रम ॥

कं० ॥ ४७९ ॥ रू० ॥ २३३ ॥

॥ पुष्कर की तपस्वनी की बीसलदेवजी के प्रति अरदासि ॥

दूहा ॥ हौं राजन मंगों यहै। इह मेरी अरदासि ॥
पुहकर की कहै तपसनी। रूप रंग की रासि ॥

कं० ॥ ४८० ॥ रू० ॥ २३४ ॥

अरिल्ला ॥ पिह सनेह सपून सवांनिय। देवनि भूमिन सब्ब संमानिय ॥
सो रति मांन थटें घन डंबर। असय मद्धि निज उज्जल अंबर ॥

कं० ॥ ४८१ ॥ रू० ॥ २३५ ॥

दूहा ॥ उज्जल पष दसमी दिवस। अरु दसरथ के नंद ॥
नयर वंद्ध अर कंध दस। रचिकैं किए निकंद ॥

कं० ॥ ४८२ ॥ रू० ॥ २३६ ॥

दीप माल दीपै सुरग। ग्रह ग्रह महल अवास ॥
हरिपुर हर मानत मनह। चितवत चिंतत वास ॥

कं० ॥ ४८३ ॥ रू० ॥ २३७ ॥

॥ बीसलदेवजी का पुष्कर में बनिकसुता गौरी का सतीत्व भ्रष्ट करना और उस का उन को दानव होने का शाप देना ॥

कवित्त ॥ एकादसमी दिवस। देव नर नाग सब्ब मिल्ल ॥
सुर सक्रव तजि वास। आनि पुहकर प्रसाद षिल्ल ॥
तहां बनिक नंदिनी। पुच्चि गवरी तप मंड्यौ ॥
दिष्षि ता ह बीसल्ल नरिंद। वढि मार प्रचंड्यौ ॥

२३४–३७ पाठान्तरः—हों। इहै। अरदास। दै। तपशनी ॥ २३४ ॥ मुरिल्ल। सवांनिय। सवांनीय। संवानीय। सब। समानिय। मांन। मधि। उज़ल ॥ २३५ ॥ नैर। बध। अरि। निकंव ॥ २३६ ॥ सुरंग। चिंतवत्त ॥ २३७ ॥

२३८ पाठान्तरः—एकादशमी। द्राव। मिलि। पास। आंनि। षिलि। देषि। द्वादशी। असू। सद। तितहिं। दिषिति। तहु। मंन। कहुं ॥

द्वादसी दिवस दिन अस्त करि। असद सह कीनी न्टपति ॥
जित तिनह दिष्यि निदि सन दुचित। न हिय दान काहु छिन विपति ॥
छं० ॥ ४८४ ॥ रू० ॥ २३८ ॥

पद्धरी ॥ वर विमल लोक पुहकर प्रकास। सुर नर सु नाग रिषि मुनि अवास ॥
धर धवल करम सुभ परम पाइ। जय सुर चवंत गुन अगम गाइ ॥ छं० ॥ ४८५ ॥
तिथि अगनवार दिन कर प्रकास। गय द्वार तपनि करि कपट पास ॥
तन रचित नीर उर ध्यान देव। न्रप मानि रहस करि वर अवेव ॥ छं० ॥ ४८६ ॥
वढि विकल ज्वाल तम धूम नैंन। गहि कुस सकुथ्य दइ दुसिप वैंन ॥
धर हरति अंग जल धार भार। हथ पटकि गंग जट समुष पार ॥ छं० ॥ ४८७ ॥
धरि ध्यान ध्यान तिन अगनि ईस। पंडे सु जग्गि तंफे जगीस ॥
रवि पदम पाय सासन सरूढ। उर धरे देव तिन देव गूढ ॥ छं० ॥ ४८८ ॥
जुग पानि नाभि ताली लगाय। रमि द्रिष्टि द्रष्टि गिरि वंभ राय ॥
तिर पुटिय भाल शिल कमलम्मूर। इह भांति ताव तप तपनि जूर ॥ छं० ॥ ४८९ ॥
तप चवल मुक्कि किय विरथ काम। कर मंक्कि राज सुक्क आप ताम ॥
छं० ॥ ४९० ॥ रू० ॥ २३९ ॥

दूहा ॥ पुची वनिक सराप दिय। भर पुहकर नर लोइ ॥
असुर होइ वीसल न्टपति। नरपलचारी सोइ ॥
छं० ॥ ४९१ ॥ रू० ॥ २४० ॥

॥ गौरी का बीसलदेवजी को भयभीत देखकर कहना कि तुम्हारा पोता तुम्हारी सुकीर्त्ति करे ॥

दूहा ॥ दिष्षि राज भय भीत तन। तन मंन धूजत तथ्य ॥
मो उद्धारन पय गहन। कथ कुसुमन वर कथ्य ॥
छं० ॥ ४९२ ॥ रू० ॥ २४१ ॥

२३९ पाठान्तर:—वर। प्रकाश। रिप। करकम। पाय। गाय। अनग। विन कर। ध्यांन। ज्वाल। नेंन। कुश। सकुथ। दथ। बैन। वैंन। हरत। पिट्टि। ध्यांन ध्यांन। जंगि। तंडे। तंभे। सरूटः। पांनि। नाभा। द्रष्टि द्रष्टि। राइ। तरपटीय शील शिल कमल मूल। नांति। तप प्रवल मुनिं कियय विरथ वंम। सराय। तांम ॥

२४०–४१ पाठान्तर:—वणिक। नृपति। नर भष्षन करे सोय ॥ २४० ॥ दिपि। तथ। कथ। कुसुम। चर। कथ ॥ २४१ ॥

दूहा ॥ तो सुत्र सुत्त उदार मति। गति तिन देव प्रकास ॥
धर मंडन डंडन भरन। सो तुम करहु सु वास ॥
छं० ॥ ४९३ ॥ रू० ॥ २४२ ॥

॥ तपस्वनी के कोप से बीसलदेवजी का सांप के काटने से अलोप होना ॥

कवित्त ॥ सपत दिवस अनुसिष्य। सुष्य मधि द्विग्ग प्रजारिय ॥
असि विष वड्डन अंग। अगनि गन दनुज उदारिय ॥
सहस अड्ड तन वड्ड। झार मुष चार विकारिनि।
सर्व असन करि असम। सैन छिन चैन निकारनि ॥
आहुट्ठ दीह साहुट्ठ मधि। पलप पदम विन कदम विन ॥
गुर गवरि ग्यान गन गल्ह करि। रम्य राज आरन्न छिन ॥
छं० ॥ ४९४ ॥ रू० ॥ २४३ ॥

दूहा ॥ भय दिवाह आहुट्ठ दुति। तप सरनी को कोप ॥
जल बेली विहु बाग व्रिष। ते छिन भये अलोप ॥
छं० ॥ ४९५ ॥ रू० ॥ २४४ ॥

॥ जिस तपस्वनी के श्राप से बीसलदेवजी असुर हुए उस के तप का आना कौ मा सविस्तर वर्णन करती है ॥

दूहा ॥ सुनहु पुच तिन तपनि तप। भिन्न भिन्न परिमान ॥
जिहि दुसिष्य न्रप असुर हुअ। रच्यौ सवर बरमान ॥
छं० ॥ ४९६ ॥ रू० ॥ २४५ ॥

बनिक पुच मन भूम धरिय। मो पति ताप अपार ॥
जो तप्पह मंडौं प्रबल। तौ छुट्टौं संसार ॥
छं० ॥ ४९७ ॥ रू० ॥ २४६ ॥

२४२ पाठान्तर:-सुत सुत। उद्धार। मंड ॥
२४३ पाठान्तर:-अनुसिष। सुष। द्रिग। उद भच्छिय। वार। विकारनि। सैंन। चैंन। आहुठ। साहुठ। ग्यांन। गल्ह। आरेंन ॥
२४४-४६ पाठान्तर:-भये। भए। आहुठ। को। कोपु। विहुं। वृष। भए ॥ २४४ ॥ भिंने। भिंन। परिमांन। जिहिं। दुसिष। नृप। भय। वरमांन ॥ २४५ ॥ धरीय। मो तन पाप अपार। मो पित ताप अपार। जो तप मंडो निय प्रवल ॥ २४६ ॥

कवित्त ॥ धन अप्पिय सब ब्रह्म। उत्तर निय ध्यान सु धारिय ॥
चिंतवि पुहकर तिथ्थ। रित्तु ग्रीषम मति चारिय ॥
पंच अगनि वर सीस। मेघ धारा धर मंडिय ॥
बरषा काल प्रचंड। सीत जल मद्धि सु बुड्डिय ॥
छंडिय सु वास संसार सुष। जोति निरंजन उर सचिय ॥
द्रुम कंक नालि मंडिय गगन। पीयै वाम दक्षिन सुचिय ॥
छं० ॥ ४९८ ॥ रू० ॥ २४७ ॥

पद्धरी ॥ पहु समय तिथ्थ वर सजर किन्न। उर नयर धारि तिन भुवन चिन्न ॥
रुष च्यार देव पद मेटि ठौर। मन धस्यौ ध्यान सब तिथ्थ मोर ॥ छं० ॥ ४९९ ॥
वढि बाहु मास तिन पान कीन। सिर अद्ध उद्ध दिग वरन दीन ॥
रुचि वेद अर्ध हवि पंच मंडि। दहि दर्प्प दर्प मन मयन षंडि ॥ छं० ॥ ५०० ॥
विहसित्त नगर नन प्रसध साध। सिर द्रवत उदक विष्र प्रातमाघ ॥
चव वरष अभ्भ घर धार भूमि। गिरि गुरनि गिरनि गन लूम झूमि ॥ छं० ॥ ५०१ ॥
परि मुद्द उद्द उपलंत विन्द। गहराय वाय दस दिसनि द्वन्द ॥
धर हरत अंग जल धार धार। हर थटिय गंग जट मुकट पार ॥ छं० ॥ ५०२ ॥
धरि ध्यांन ग्यांन तिन अग्र ईस। षंड्यौ स जग्य मंडै जगीस ॥
उर धरे देव तिन अंग गूढ। रचि पदम पाय सामन सरूढ ॥ छं० ॥ ५०३ ॥
जुग पानि नाभि तालो बनाय। रभि दिष्ट सिष्ट गिरवान राय ॥
नरपटी साल सिल कसल्ल झूर। इहि भंति भाव तप तपनि जूर ॥
छं० ॥ ५०४ ॥ रू० ॥ २४८ ॥

---

२४७ पाठान्तरः—ब्रंह्म। ताय। ध्यांन। तिथ। रितु। चारीय। शीस। मंडय। शीत। मधि। वुडय। साव। ज्योति। बंक। वांम। दषिन ॥

२४८ पाठान्तरः—तिथ। क्रिन। धार। चिन्ह। ध्यांन। तिथ। पांन। कीन। संचि। दर्प्प दर्प्प। मंन। विहसित्त। विहसीत। नगम। माध। अभ्य। अभ। धर। भूम। लूंबि। झूंमि। मूद्द। विंद। गहराव। वाव। दह। दिसा। द्वंद। भार। सुमुष। ध्यांन। ग्यांन। संरूढ। पांनि। शिष्ट। गिरवरन। राइ। मूल। इहिं ॥

इस रूपक के अंत की पांच तुकों को कवि पिछले रूपक २३९ में भी कह आया है। यह चंद की संस्कृत–काव्य–सम शैली का एक उदाहरण है और ऐसे उदाहरण इस महाकाव्य में अनेक आवेंगे। कवियों की ऐसी निज शैलियों को देखकर भाषा के क्षुद्र और अपरिपक्व कवि झट चंद जैसे हिन्दी भाषा के वास्तविक कविराज को दोष देने लग जाते हैं परंतु संस्कृत भाषा के

कवित्त ॥ देव चरित रमि धाइ। इक्क कर हीय मद्धि धरि ॥
सु रचि तिथ्य अडसट्ठि। मान पछुकर प्रकास करि ॥
द्दिग अंबर उर धारि। तारि तारी तप तारनि ॥
मन सुर भाग समान। लाइ रष्षै परि पारनि ॥
वर तर्प चंद अन दर्प करि। तामस द्रिग विकराल मन ॥
सम गवरि अंग अँग सिष उसिष। न्रपति ससंतन असुर वन ॥
छं० ॥ ५०५ ॥ रू० ॥ २४९ ॥

॥ श्राप से विमुक्त होने के विचार से बीसलदेवजी का गोकर्ण की यात्रा के लिये बीसल सरवर पर प्रस्थान करना ॥

दूहा ॥ तजि नरिंदं अजमेर पुर। चित गोकन हर थान ॥
बीसल सरवर ऊपरैं। बीसल दिय प्रस्थान ॥
छं० ॥ ५०६ ॥ रू० ॥ २५० ॥

॥ तपस्विनी के श्राप से बीसलदेवजी की बुद्धि का चल विचल होना ॥

दूहा ॥ काम कुमत्तौ उप्पनौं। दीय तपसनी स्राप ॥
बीसल दे बुधि चल विचल। प्रगटि पुव्व कौ पाप ॥
छं० ॥ ५०७ ॥ रू० ॥ २५१ ॥

महाकाव्यादि के पठित विद्वानों को चंद कवि पर तो नहीं किन्तु इन दोष देने वालों की कुशाग्र बुद्धि पर बड़ा आश्चर्य्य होगा क्योंकि संस्कृत काव्यों तथा अन्य बड़े २ ग्रंथों में प्रायः ऐसे उदाहरण मिलते हैं। देखो माघ के चतुर्थ सर्ग के २१ वें श्लोक में सहरितालसमाननवांशुकः। दो वार प्रयोग हुआ है और रघुवंश के दूसरे सर्ग के श्लोक ३१ की अंत की पंक्ति चित्रार्पितारम्भइवावतस्थे ॥ कुमारसंभव के तीसरे सर्ग के ४२ वें श्लोक में भी महाकवि कालिदासजी ने प्रयोग किये है। तथा रघुवंश के सातवें सर्ग के ६ छटे श्लोक से लेकर ग्यारहवें ११ तक के सब श्लोक जैसे के तैसे कुमारसंभव के सातवें ७ सर्ग के ५७ सत्तावनवें श्लोक से ६२ बासठवें तक महाकवि कालिदासजी ने प्रयोग किये हैं ॥

२४९ पाठान्तरः—द्वार। इक। रहिय। रहीय। मधि। तिथ। अडसठि। मांन। उधारि। समांन। रषे। पारन तर्प्प। दर्प्प। अंग अंग ॥

२५०–५१ पाठान्तरः—तजिं। नरेंद। चिंत। गऊक्रन। थांन। ऊपरे। प्रस्थांन ॥ २५० ॥ कांम। कुमतो। ऊपनौं। दिय। तप्रशिनी। सराप। कों ॥ २५१ ॥

॥ बीसलदेवजी को सांप का काटना और उस से उन का मरना ॥

दूहा ॥ वार रवी तिथि सत्तमी । चढ़ि रथ सुतर सतंग ॥
तिहि वेरां आयौ कहै । डेरा माँहि पनंग ॥
छं० ॥ ५०८ ॥ रू० ॥ २५२ ॥

कवित्त ॥ देषि राज करि क्रोध । वान को दंड धरिय कर ॥
वेधि पनग फन छिक्कि । पर्यौ धर तरफत वेसिर ॥
कुट तिहि वेर सतंग । षेल देषन कों धायौ ॥
एक मोजरी मद्धि । पनग फन आनि लुकायौ ॥
फिरि राय आय हैंवर चढ्यौ । पहरत मोजे पग डस्यौ ॥
भवितव्य वान आघात गति । इतनी कहि राजन हस्यौ ॥
छं० ॥ ५०९ ॥ रू० ॥ २५३ ॥

दूहा ॥ ओषद मंच अनंत जप । कितने करे उपाय ॥
ज्यौं ज्यौं तन लहरत चढत । त्यौं त्यौं दुचितौ राय ॥
छं० ॥ ५१० ॥ रू० ॥ २५४ ॥

कवित्त ॥ राज मरन उप्पनो । सव्व जन सोच उपन्नौ ॥
पट रागिनि पावार । निकसि तब ही सत किन्नौ ॥
तिन मुष इम उचर्‍यौ । होइ जदवनि सपुत्तय ॥
सो असीस इह फुरो । तुम्म भोगवहु धरत्तिय ॥
जिन रथौ मद्धि ऊठे अतुर । धपै ज्वाल तिन मुष विषय ॥
नर भषय जहां लसकर* सहर । मिलै मनिष ते ते भषय ॥
छं० ॥ ५११ ॥ रू० ॥ २५५ ॥

२५२ पाठान्तर:—तिथ । सपतमी । तिथि । कहै । डेरां । मांहि । माहि । पन्नंग ॥

२५३ पाठान्तर:—वांन । वंड । नाग । छिक्क । वेंसिर । कुट्यौ । सं० १७७० और १६४७ में "मिलि राजन मौजरीय" । कों । आयौ । मधि । पनंग । आंनि । आय राय ॥

२५४ पाठान्तर:—उपद । उपाइ । ज्यों ज्यों । लहरी । त्यौ त्यौ । दुचितो ॥

२५५ पाठान्तर:—ऊपनौ । ऊपनौ । उपंनो । निकसी । कीनो । इह । उचस्यौ । सपुतय । सपुतह । कुरैं । भोगवो । धरतय । इन । मधि उठै । भषै । शहर । मिलै । मनुष । भषै ॥

* हिं० लसकर (SK: लश To be skilful or clever, to do anything skilfully and scientifically or लस To play or sport, to work and कर Who or what does, makes or causes.) Hence a camp or cantonment &c.

॥ बीसलदेवजी के मरण और असुर हो नर भक्षण करने की बात सुनकर सारंगदेवजी का अपनी राणी को रणथंभ भेजना और आप उन से युद्ध करने को तयार होना ॥

दूहा ॥ सुनिय बात तो तात तब। हौं पठई रिनथंभ ॥
संच वद्दि तिन तेग बल। जुद्ध जुरन आरंभ ॥
छं० ॥ ५१२ ॥ रू० ॥ २५६ ॥

॥ सारंगदेवजी की राणी गवरी का चिंता करना ॥

दूहा ॥ उन गति मो गति इक्क होइ ॥ कै अवगत्ति मिलंत ॥
हास मिटै दुष को सहै। इहय चित्त मो चिंत ॥
छं० ॥ ५१३ ॥ रू० ॥ २५७ ॥

॥ सारंगदेवजी का सेना लेकर ढुंढा राक्षस से युद्ध करने को अजमेर पहुंचना ॥

दूहा ॥ एक सहस भरि सथ्थ करि। सबल सकर दिय फेरि ॥
है निसान चहुवान चढि। पहुँचिय गढ अजमेर ॥
छं० ॥ ५१४ ॥ रू० ॥ २५८ ॥

॥ सारंगदेवजी का तीन दिन कोट में रहना, वहां असुर का न मिलना और अजमेर की भ्रष्ट और भयानक दशा देखकर चिंता करना ॥

कवित्त ॥ अति उद्यान सब थान। भये गढ धाम भयानक ॥
दिष्ट देषि सारंग। देव चिंते तब बानिक ॥
ताकै कुल उपनीय। तपनि हम कौ कुल षोयौ ॥
तात पुकारे नीर। भरे नैंनह घन रोयौ ॥
दिन तीन रहत हुअ कोट मधि। असुर नयन दिष्यौ नहिय ॥
तब सुचित भए सारंग दे। पुरी बसाऔं इह कहिय ॥
छं० ॥ ५१५ ॥ रू० ॥ २५९ ॥

५६-५८ पाठान्तर:-वत्त। हों। मो। रन। वंदि। बर। जुध ॥ २५६ ॥ इन। इक। हुव। कें। अवगति। चित ॥ २५७ ॥ भर। सथ। निसांन। चहुआंन। वहुवांन। पहुचिय ॥ २५८ ॥

२५९ पाठान्तर:-उद्यांन। थांन। धांम। वांनिक। वाकै। नैंनन। रहैत। वसावो। वसावैं। कहीय ॥

॥ सारंगदेवजी और उन के पिता ढुंढा दानव का परस्पर युद्ध होकर सारंगदेवजी का मारा जाना ॥

कवित्त ॥ एका दसमी दिवस । प्रात दानव पुर आयौ ॥
सकल सेन लै सस्त्र । उठ्ठि लरिवे कों धायौ ॥
वे वाहैं तरवारि । इत्तै मुष पकरि सु कट्ट ॥
ज्यों वेली द्रुम सघन । देषि मरकट फल चुट्टै ॥
किय पिता पुत्त जुध सम असम । गिर सो जनु सारँग गिस्यौ ॥
मन जानि असुर नर घुसि रहै । सव ढूंढा ढूंढत फिस्यौ ॥
छं० ॥ ५१६ ॥ रू० ॥ २६० ॥

२६० पाठांन्तर:—दशमी । सैन । शस्त्र । उठि । कों । वाहे । ज्यां । चुट्टैं । किय पिता जुध सम अरु असम । सो । सारंग ॥

पाठक महाशयो ! चंद की वर्णन कियी हुई वीसलदेवजी की यह दानव कथा आप को अद्भुत मालूम होगी और इस में कुछ संदेह भी नहीं है कि मनुष्य मरकर फिर दानव नहीं हो सक्ता और न ऐसे चरित्र कर सक्ता है कि जैसे चंद ने वर्णन किये हैं। देखो अद्भुत वही पदार्थ है कि जो स्वयम् तो अद्भुत हो और दूसरों को अद्भुत ही प्रतीत हो परंतु जो आप किंचित् सूक्ष्म विचार करें तो आप को ज्ञात होगा कि चंद ने जो कुछ कहा है वह सत्य है अर्थात् जो आप को अद्भुत मालूम होकर असत्य निश्चय होता है वह वास्तविक सत्य ही है। जब तक मैं जो कुछ अंत में आप को कहना चाहता हूं वह नहीं कहूंगा तब तक मेरा वहां तक का कहना भी आप को अद्भुत ही प्रतीत होगा और वह वास्तव में है भी ऐसा ही क्योंकि जब तक कोई ताला कि जिस का खुलना विचार करने से भी कठिन दीखता हो और वह ऐसी सरलता से खुल न जाय कि जैसे कि "एक तिनके की ओट पहाड़" तो वह निःसंदेह अद्भुत ही प्रतीत होगा। खैर, अब आप चंद की इस कठिनता के ताले को इस कुंजी से खोलकर अद्भुत वस्तु को देखिये, कि जो कुछ वृत्त चंद ने वीसलदेवजी की दानव कथा में लिखे हैं, वह सब उनके जीवन समय में वरते थे अर्थात् वे वाजीकरण की औषधियों के खाने, कुकर्म्मों के करने और सांप के काटने से बहुत ही पागल हो गये थे और उनोंने इस पागलपने में अपने इकलौते पुत्र सारंगदेवजी तक को अपने हाथ से मारडाले थे और राज्य को नष्ट भ्रष्ट कर दिया था। इस वृत्तान्त को चंद ने अपनी काव्य शास्त्र संबन्धी विद्वत्ता दिखाने के लिये अद्भुत रस में लिखा है। अब आप इस प्रसंग को ध्यान देकर पढके समझ लेंगे कि महाकवि चंद ने ठीक अद्भुत रस दिखा दिया है। यह आप के ध्यान में होगा कि ग्रंथकर्ता ने पृष्ट २३ छंद ८३ रूपक ३९ में कि जो चंद की अनेक कठिनताओं के खोलने की कुंजिओं के गुच्छों में से एक बड़ा भारी गुच्छा है उस में कवि ने इस महाकाव्य को "नवं रसं" से नव रसों में लिखा कहा है कि अब यह हमारा काम है कि इस हिन्दी भाषा की महाभारत में से नवों रसों के प्रसंग खोज कर काढें। भला जो हम इस अथवा

॥ आना की मा का उसे कहना कि मनुष्यों को ढूंढ २ कर खाने से ढूंढा नाम पड़ा और उसने रम्य अजमेर को वेराम कर दिया ॥

दूहा ॥ ढूंढि ढूंढि षाये नरनि। तातैं ढूंढा नाम ॥
देवपुरी अजमेर पुर। रम्य करी वेराम * ॥
छं० ॥ ५१७ ॥ रू० ॥ २६१ ॥

॥ आना का माता से कहना कि अभी जाकर मैं उसे मार आऊं ॥

दूहा ॥ मात सुनौ तपसनि वचन। अरु दिय असिस पवारि ॥
अबहि जाय अजमेर गढ। अरि कौं आऊं मारि ॥
छं० ॥ ५१८ ॥ रू० ॥ २६२ ॥

॥ गवरी का आना को असंतन संत कहकर शिक्षा करना ॥

दूहा ॥ गवरि असंतन संत कहि। रष्षसि तोहि कुमार ॥
अरि रष्षस भर नग्ग सें। प्रजा राज संघार ॥
छं० ॥ ५१९ ॥ रू० ॥ २६३ ॥

कवित्त ॥ गवरि मात सिष्षवै। पुत्त आनल्ल इहि सिष्षिय ॥
मानव सौं मानवह। भिरंत दानव न पिष्षिय ॥
बहुत काल बहि गए। भरे जंगल्ल धर पूरन ॥
म्रग मयंद षंडियहि। छंडि पंषिय पति सूरन ॥
जं जीव हनजि मातुल घरह। अंजन घट अंगन करहि ॥
उर धरनि और रष्षस कहत। आनिन रष्षस उर अरहि ॥
छं० ॥ ५२० ॥ रू० ॥ २६४ ॥

ऐसी अन्य कथाओं को जो आगे आवेंगी अद्भुत रस में लिखी हुई न मानें तो फिर आप विचार करैं कि अद्भुत रस क्या होता है और उसका लेख कैसा होता है। मेरी सम्मति में तो चंद ने जहां जहां जो २ रस लिखा है वह ऐसा ही उत्तम लिखा है कि यदि हम उसको न भी मानें तथापि हमको लाचार होकर उसे वही संज्ञा देनी पड़ती है जैसे कि यहां हम अद्भुत रस में लिखी हुई यह दानव कथा न भी मानें तथापि हम को यही कहना पड़ेगा कि यह अद्भुत बात है कि मनुष्य मरकर दानव नहीं होता न ऐसे चरित्र कर सक्ता है ॥

* विराम से वेराम बना मालूम होता है ॥

२६१–६३ पाठान्तर:–ढूंढ। षाए। तातें। नांम। वे रांम ॥ २६१ ॥ दीय। असीस। अवें। जाई। कूं। कों। आंऊं ॥ २६२ ॥ मत। कहि। रषसि। अहिर रकस भर नगंम ॥ २६३ ॥

२६४ पाठान्तर:–सिषवै। पुत्र। सिषिय। सों। मानव। दांनव। ब्रह। पिषिय। म्रग। पंषि। पंषी जीवनहु तजि मातुल घरह। रषस। गहंत। आंनन। रष्यस। करहि ॥

दूहा ॥ उच्चरि मात ससंत दूह । जीवन मरन न सिद्ध ॥
दुहुं विधि धर वासन करौ । आराधन कि विरुद्ध ॥
छं० ॥ ५२१ ॥ रू० ॥ २६५ ॥

पुत्त असंत जु सिप्पयौ । सिष्यौ उरह दहंत ॥
ढूंढौ नर ढुंढै भषन । तू सेवनह कहंत ॥
छं० ॥ ५२२ ॥ रू० ॥ २६६ ॥

॥ आना का माता से कहना कि या तो मैं सिर समर्पूंगा वा छत्र धारूंगा ॥

दूहा ॥ तव आनल ऐसी कहिय । सुहि सुनिस्सय यह वत्त ॥
कै सिर उनहि समप्पि हौं । कै सिर धरि हौं छत्त ॥*
छं० ॥ ५२३ ॥ रू० ॥ २६७ ॥

॥ आना का माता से कहना कि सेवा ऐसी है कि जिस से सब कार्य सिद्धी होती है ॥

कवित्त ॥ सेव देव रंजियै । सेव रष्पस वसि सव्वह ॥
सेव सिंघ पत्तियै । सेव विष जरै न जख्खह ॥
सेव वैर भंजियै । सेव रख्ख पति पावन ॥
सेव दहै नह दहन । सेव वहु द्रव्य उपावन ॥
जिहिं सेव देव रष्पस धरहि । जियन मात तन जाइ नन ॥
आमूढ ढुंढ धावत भषन । नहि सु देव नहि दानवन ॥
छं० ॥ ५२४ ॥ रू० ॥ २६८ ॥

२६५–६६ उर्चरि । सु मंत्र । सिद्धि । दुहुं । बर । करो । करौं ॥ २६५ ॥ पुत । सिपियौ । सिष्यौ । भवन ॥ २६६ ॥

* यह रूपक सं० १६४० और १७७० की पुस्तकों में नहीं है और जब तक वह किसी और प्राचीन लिखित पुस्तक में न मिले तब तक हम उसे प्रसन्नतापूर्वक क्षेपक संज्ञा नहीं प्रदान कर सक्ते ॥

२६७ पाठान्तर:—सुभ्भिय । वत । कें । उनहि । हो । हो ॥

२६८ पाठान्तर:—रंजीयै । न सेव सिंध पत्तियै । जलह । भंजीयै । रचै । सेवह नह दहन । द्रिव्य । जिहि । नह । सो नह ॥

॥ आना की माता का तो उसे शत्रु न सेवने को कहना किन्तु उस का अजमेर जाना ॥

दूहा ॥ मात बरज्जत रत्त हुअ। सचु न सेव न सेव ॥
आइ अनल्ल अजमेर बन। असुर निरष्षन भेव ॥
छं० ॥ ५२५ ॥ रू० ॥ २६९ ॥

॥ ढुंढा दानव का अजमेर बन में बहुत दिनों तक मन्तु होकर रहना ॥

सो दानव अंजमेर बन। रह्यौ दीह घन अंत ॥
सुन्न दिसानन जीव को। थिर थावर जंग मंत * ॥
छं० ॥ ५२६ ॥ रू० ॥ २७० ॥

॥ अजमेर की नष्ट भ्रष्ट दशा और आना का खड्ग लेकर प्रेत के पास जाना ॥

चोटक ॥ तहँ सिंघ नं स्रग्ग न पंषि वनं। दिसि सून भई डर जीव घनं ॥
नह मातह मंत अमंत किये। पिय की धरनी रह तंत लियं ॥ छं० ॥ ५२७ ॥
तहँ ठाम भयानक सोच तयं। तहँ ठाम कला कल सोधि वयं ॥
तिहँ ठाम भरं नर नारि ननं। तिहँ ठाम नं पंथिय पंथ कनं ॥ छं० ॥ ५२८ ॥
तिहँ ठाम गजं बर बाजि ननं। तिहँ ठाम न सिद्धय साध कनं ॥
तिहँ ठाम नं दारिद द्रव्य गनं। हिय मात न तात न मोह मनं ॥ छं० ॥ ५२९ ॥
लय षग्ग रमक्किये प्रेत दिसं। बर बीर सु संडिय चित्त रसं ॥
अविलंघ करी सकरं विपनं। रिपु थान सपंत सु भै न मनं ॥ छं० ॥ ५३० ॥
नर दिष्षि अचंभ कियौ सु हियं। कहि आज बिधं भल भष्ष दियं ॥
छुध प्यास रु निंद्रय राज ननं। सु गयौ वर दानव ताप तनं ॥
छं० ॥ ५३१ ॥ रू० ॥ २७१ ॥

२६९–७० पाठान्तर:–वरजत। रतं। आंयं। अंनल। निरषन ॥ २६९ ॥ सून। सुंना। दृथिंर ॥ २७० ॥

* हिं० मंत = सं० मन्तु = राजा से बना है। यहां यह मंत्र का अपभ्रंश नहीं है ॥

२७१ पाठान्तर:–तहां। तहं। मृग। उर। वनं। मंसु। पीयकी। तत। तत्ति। लीयं। तहां। तिहां। ठांम। भयांनक। तहां। ठांम। तिहां। ठांम। तिहां। ठाम। नमं। तिहां रुक्क सु पंथि रु पंथि जनं। तिहां। ठांम। तिहां ठांम। तिहां। ठांम। द्रव। लै। लग। रु। मुकिय। अविलंब। थांन। संपत्त। सपत्त। दिषि। कीयौ। कोई। कोई आज भलो दूह भष दियं। बुध। न निद्रय। दांनव ॥

॥ आत्मा का अपने मन में विचार कर कहना ॥

श्लोक ॥ मनसाधार्य पुंसा स्याद् । विधिश्चिंतति नान्यथा ॥
ब्रह्माज्ञा लंघनेनापि । स्वयंपूरकमाधवः ॥ छं० ॥ ५३२ ॥ रू० ॥ २७२ ॥

कवित्त ॥ सो पूरक माधव्व । जगत जांनन अधिकारिय ॥
थावर जंगम दैन । कठिन चिंता न विचारिय ॥
सरव भूत है जाम । मध्य हरि दैन भुगत्तिय ॥
किं कारन नर झुरै । देइ मन वंछित वत्तिय ॥
सो पुरस चित्त धरकै नहीं । धरक चित्त कायर करहि ॥
तिहि काज देषि दानव वन्निय । वल वलिष्ट गुन उच्चरहि ॥
छं० ॥ ५३३ ॥ रू० ॥ २७३ ॥

---

२७२ पाठान्तर:—स्यात् । विधिचिंतति । ब्रह्माज्ञा । माधव ॥

हमारे पाठकों को ज्ञात होगा कि इस ग्रंथ को कृत्रिम बना हुआ कहनेवालों ने ऐसा अत्यन्ताभाव का वचन भी कहा है कि इस महाकाव्य के बनानेवाले को अनुस्वार और विसर्ग तक का भी ज्ञान न था। परंतु हमने इसी ग्रंथ में और इसी आदिपर्व में इस रूपक के पहिले आये हुए संस्कृत भाषा के श्लोक आप की दृष्टि के आगे धरे हैं कि आप न्याय कर सकें और ऐसे श्लोक आगे इस ग्रंथ में बहुत आवेंगे क्योंकि हमने इस महाकाव्य को कई आवृत्ति करके पढ़ा है। वैसे ही इस श्लोक को भी आप पढ़कर देखें कि पढ़ने में तो यह कैसा सरल है और अभिप्राय में कैसा विद्वानों के विचारने योग्य है। साधारण संस्कृत जाननेवाले से यह श्लोक लगना कठिन है अतएव हम उस का अन्वय नीचे संस्कृत भाषा में भी लिखते हैं:—

अन्वयः ॥ पुंसा मनसा आधार्य यत् स्यात् तत् स्वयंपूरक = माधवः, विधिः ब्रह्माज्ञालंघनेनापि चिन्तति अन्यथा न चिन्तति ॥

अर्थ। पुरुष करके मनसे धारके जो काम हो सकता है उसको स्वयं पूरा करनेवाला परमेश्वर (विधि) दैव विधान वा कर्म ब्रह्मा की आज्ञा को उल्लंघन करके भी सोचता है अन्यथा अर्थात् उस से उलटा नहीं सोचता ॥

सारांश यह है कि उद्योग के अनुसार ही फल दैव भी देता है चाहे प्रारब्ध उस से उलटा भी हो। इस से केवल उद्योग की प्रधानता कही है ॥

हे पाठको! क्या आप के अपक्षपात से विभूषित हृदय में यह दोष कुछ भी जंच सकता है कि इस महाकाव्य का ग्रंथकर्त्ता चाहे कोई भी हो ऐसा निर्बोध था कि जिस को अनुस्वार और विसर्ग तक का बोध न था?

२७३ पाठान्तर:—सो । माधव । जांनन । अधिकारीय । देन । दैन । विचारीय । सर्व । जांम । दैन । देन । भुंगतिय । देव । नहीं । तिहिं । दांनव । उच्चरहि ॥

॥ आना का दानव को कंदरा में देखना और उसके खड्ग मारने पर दानव का गाजना ॥

पद्धरी ॥ दिष्षौ सु बीर कंदला गेह। सैं पंच हथ्थ ता हथ्थ देह ॥
असि असी हथ्थ भारहि भनंक। मन सहस पाइ तो उर घनंक ॥ छं० ॥ ५३४॥
अग्गोष्ट उड्ड जठिय भनंक। उठतै सु रोम रोमनि सनंक ॥
बुल्यौ सु वैन निय सत्त मान। देषंत चष्ष वालक विनान ॥ छं० ॥ ५३५ ॥
अति सुषम वचन मधु मधुर कंत। दिष्षौ सु अंस राजन सुभंत ॥
जंभाइ बीर दसनं लहक्क ॥ उठ्यौ सु रोम रोमह पहक्क ॥ छं ॥ ५३६ ॥
उर चंपि षग्ग सिर नाइ राज। गहराय इंद्र दानव सु गाज ॥
छं० ॥ ५३७ ॥ रू० ॥ २७४ ॥

॥ इस पर दानव का आना से उसके मा बाप आदि के नाम पूछना ॥

कवित्त ॥ भेद वचन तन षेद। सुनन पंडुर चढि आइय ॥
उष्ट धरद्धर कंपि। सुनन प्राक्रम जं .इय ॥
चरन सु थिर मन लीन। जीव धर धर धर कांनिय ॥
कौन भाव कवि चंद। वलिय सात्वक रस भांनिय ॥
पुच्छन सु बाल बुल्यौ वलिय। करि सु चिंत अतिंत चित ॥
को मात तात कहि नाम को। को साँईं साधक सु मति ॥
छं० ॥ ५३८ ॥ रू० ॥ २७५ ॥

॥ ढुंढा दानव का आना के सिर पर हाथ धर गल्ह पूछना ॥

दूहा ॥ खरग हथेली वाम पर। ढुंढे मेलि अनल्ह ॥
करुना करि सिर हथ्थ धरि। पूछि विवर सब गल्ह ॥
छं० ॥ ५३९ ॥ रू० ॥ २७६ ॥ *

---

२७४ पाठान्तर:—कंदरा। येह। हथ। हथ। हथ। पाय। टोडर। उठिय। रोमह। वेंन। सत। मांनि। चषु। विनांन। सूषम। वाचन। करंति। राज राजन। जंभाय। हसनं। लहक। नांइ। गहरा इंद्र द्रा दानव कि माज ॥

२७५ पाठान्तर:—द्वर द्वर। कंप। प्राकंम। प्राकंप। धरा धर। कांनीय। कोन। भाइ। भांनीय। पुछन। वुल्यै। चित। अत्यंत। चिंत। कुमति॥

* इस के आगे के अर्थात् रूपक २७६ से २७८ तक सं० १६४० और १७७० की लिखित

गाथा ॥ असुर हथेली चंदं । बिसतारं कारी दस थम ईरं ॥
सुकता फल परिमानं । ता मध्ये लोहीयं आना ॥
छं० ॥ ५४० ॥ रू० ॥ २७७ ॥ *

॥ आना का मन में चिंता करना कि जो ढूंढा मुझे निगलेगा तो मैं उस का पेट चीर कर निकलूंगा ॥

दूहा† ॥ आंनें चिंतिय राज । जो मुहि ढूंढा निगलि है ॥
इंद्र ब्रतासुर जेम । निकसौं उदर बिदारि षग ॥
छं० ॥ ५४१ ॥ २७८ ॥*

॥ आना का उत्तर देना कि जिस से बीसलदेवजी का मन मैन होगया ॥

दूहा ॥ गवरि मात उर उद्धस्यौ । पित बीसल मन मैंन ॥
द्रुत आवन मन तरसयौ । तुअ तन देषन नैंन ॥
छं० ॥ ५४२ ॥ रू० ॥ २७९ ॥

साटक ॥ किं दारिद्र सु दुष्ट कुष्ट तनयं । किं भूमि सत्रू हरं ॥
किं वनिता च वियोग दैव विपदा । निर्वासितं किं नरं ॥
किं जन मानस रुष्ट जुष्ट जुगता । किं आपितं सद्गुरं ॥
किं माता छित रंग भंग सरसां । आलिंगता सुंदरी ॥
छं० ॥ ५४३ ॥ रू० ॥ २८० ॥

---

* पुस्तकों में नहीं हैं किन्तु इधर की लिखी पुस्तकों में मिलते हैं। जब तक इन से भी पुरानी पुस्तकों में यह रूपक न मिलें तब तक उन को हम क्षेपक कहना योग्य नहीं समझते हैं ॥

२७७ पाठान्तर:—करग । कर । गह । थेली । मेह्नि । छनल्ल । हय ॥

२७८ पाठान्तर:—ढुंढा । निकसों । विहारी ॥

† यह आज कल सोरठा छंद कहलाता है किन्तु प्राचीन समय में हिन्दी भाषा के कवि इस को दोहा भी कहते थे क्योंकि दोहा के जितने भेद भाषा के छंद ग्रंथों में लिखे हैं उन में सोरठा भी है अतएव चंद का यह दूहा संज्ञा देना कुछ आश्चर्यदायक नहीं है ॥

२७९ पाठान्तर:—वल । मेंन । आवनम । तुम । नेंन ॥

२८० पाठान्तर:—सत्रु । दैवपिवपदा । निर्वासितं । मांनस । जुगता । जगता । सतगुरं सरसा । आलिंगिता ॥

यह भी ध्यान में रहने जैसी बात है कि पुरानी हिन्दी भाषा की लिखित पुस्तकों में मृत और नृप जैसे शब्द म्रित और न्रिप लिखे देखने में आते हैं ॥

साटक ॥ नो दारिद्र न कुष्ट दुष्टन तनं । सत्रू धरा नो हरं ॥
नो वनिता च वियोग दैव विपदा । निर्वासितो नो नरं ॥
नो सन्मानस रुष्ट जुष्ट जगता । नो आपिता सत् गुरं ॥
मातुर्नाम्रित रंग अंग सरसा । ना लिंगिता सुंदरी ॥
छं० ॥ ५४४ ॥ रू० ॥ २८१ ॥

दूहा ॥ ना दारिद्र न कुष्ट तन । ना मुगधा रस सेव ॥
नानुरत्त संसार सुख । तो पग रत्तो सेव ॥ छं० ॥ ५४५ ॥ रू० ॥ २८२ ॥

साटक ॥ नैवां दुष्ष न सुष्ष साहस रने । नैवांन कालं क्षतं ॥
नैवां मात पिता न चैव धनयं । नैवांन कित्ती रतं ॥
नैवांनं चित मित्त साजन रसं । नैवांन किं रुष्टयं ॥
त्वं देवं तुअ देव देव मरनं । तोयं जयं राजयं ॥
छं० ॥ ५४६ ॥ रू० ॥ २८३ ॥

दूहा ॥ तब लगि कुष्ट दरिद्र तन । तब लगि लघु सुहि गात ॥
जब लगि हौं आयौ नहीं । तो पाइन सेवात ॥
छं० ॥ ५४७ ॥ रू० ॥ २८४ ॥

॥ दानव का आना से पूछना कि तू क्यों राज अरत्त है ॥

दूहा ॥ आलिंगन दै हथ्थ धरि । अरु पुच्छिय इह बत्त ॥
जा जीवन रत्तो जगत । तू क्यौं राज अरत्त ॥
छं० ॥ ५४८ ॥ रू० ॥ २८५ ॥

॥ आना का बीसलदेवजी दानव को उत्तर दे कहना ॥

दूहा ॥ जिय न रत्त नच एन दुष । भूमि न घर मुझ देव ॥
तिन उचाट जिउ कै मरौं । तुम पय रत्तौ सेव ॥
छं० ॥ ५४९ ॥ रू० २८६ ॥

---

२८१ पाठान्तर :—नां । धरा नं । तां । विनता । तां । ना । ता । सन्मांतस । आपितो । गुरुं । मातुर्नाम्रित ॥

२८२ पाठान्तर :—न । न मुगद्ध । नांनुरत्त । नरतु । तूअ पग रतो सेव ॥

२८३ पाठान्तर :—दुष । सुष । रस । पितं । मित । सजन । तुं । तुय ॥

२८४–८५ पाठान्तर :—नब । हूं । नहीं । तौ ॥ २८४ ॥ दे । हथ । पुछिय । रत्तो । सो तू केम अरत्ति ॥ २८५ ॥

२८६ पाठान्तर :—रत । तहि । भूमिन । तिहिं । जीऊं । जिउं । कि । मरां । पं । रत्तो ॥

दूहा ॥ राजा ज दिन बुलाइ हौ। मुह सुस्क्कै इह मत्त ॥
के सिर तुम हि समप्पि हौं। कै सिर धरि हौं छत्त ॥
छं० ॥ ५५० ॥ रू० ॥ २८७ ॥

इह धरनी सुभ्भ पित प्रपित। आदि अनादि सु देव ॥
सो मंगन तुम पाय हौं। आयौ आतुर सेव ॥
छं० ॥ ५५१ ॥ रू० ॥ २८८ ॥

॥ ढूंढा दानव का प्रसन्न होकर आना को अजमेर का राज देना ॥

चोटक ॥ सु प्रसन्नह देषित दैत तनं। नर रूप धरन्न कियौ सु मनं ॥
तुअ पुत्तह पौच बधू उरनं। जन मानस राज करौं धरनं ॥ छं० ॥ ५५२ ॥
असि हथ्थ लिये असमान गयौ। पग टोडर कंदल दी जु ठयौ।
तव पुज्जन कौं रवि वार कह्यौ। चहुआन सु आनल राज दयौ ॥
छं० ॥ ५५३ ॥ रू० ॥ २८९ ॥

॥ ढूंढा का आना को राज देकर गंगा की ओर उड़कर जाना ॥

दूहा ॥ दयौ राज आनल्ल गढ। उड़ि ढुंढा षह मग्ग ॥
दिसि गंगा तव गमन किय। उत्तर चिषा अति लग्ग ॥
छं० ॥ ५५४ ॥ रू० ॥ २९० ॥

॥ ढूंढा का नेमऋषि के उपदेश से गंगा की ओर जाते हुए दिल्ली पहुंचना ॥

पद्धरी ॥ नव द्वार रुक्कि तप पवन जोर। आयौ सु नेम रिष तथ्थ ठौर ॥
दिषि रिष्प लग्गि निसचर सु पाय। कहि रिष्प कवन तो कवन काय ॥ छं० ॥ ५५५ ॥
बीसलह राज कहि पुव्व कथ्थ। जहौं ताप उधरौं केम नथ्थ ॥
तुअ षिचि कौन इह ठांउ धारि। कासी सु जाइ लै तिथ्थ धार ॥ छं० ५५६ ॥
तें पाप कीन आनन्त मर्म। तिहि ठौरि सव्व छुट्टै सु कर्म ॥
सुनि श्रवन उड्यौ राषिस अकास। आयौ सु पंथ कमि दिल्ली वास ॥ छं० ॥ ५५७ ॥

२८७-८८ पाठान्तरः-ना। दिंन। मुहि। सूझै। मसि। कें। हों। कें। हूं। हों। छत्र ॥ २८७ ॥ प्रमित। हों ॥ २८८ ॥

२८९ पाठान्तरः-प्रसंन्नह। धरंन। कीयो। मांनस। करैं। हथ। असमांन। कूं। पूजन। कों। चहुआंन। चहुवांन। आंनल ॥

२९० पाठान्तरः-दीयो। आंनलहुं। कीय ॥

सुर थान निगम बोधह सुरंग। जल जमन आइ राषिस स्रसंग॥
कालिंद्र दह सु अति गहर वारि। पावन्न परम सीतल सु चारि॥
छं० ॥ ५५८ ॥ रू० ॥ २९१ ॥

॥ ढूंढा का हारिफ ऋषि से मिलना, अपनी पूर्व कथा कहना और तीन सौ अस्सी वर्ष महातप करके ऋषि से उपदेश ग्रहण करना ॥

कवित्त ॥ सीतल वारि सु चंग। तहां गय चल्लि निसाचर ॥
लगि पिपास स्रम अंग। वारि पिन्नौ अँदोलि वर ॥
भौ सीनल सब अंग। करै अति वारि विहारह ॥
रिष हारिफ गुह तपै। सोर सुनि आय निहारह ॥
दिषि प्रवल रिष्ष पूछ्यौ प्रसन। कवन रूप कीलै सु जल ॥
निसि मद्धि अद्द राषिस वर्चाहि। पाइ परस पुब्बह सकल ॥
छं० ॥ ५५९ ॥ रू० ॥ २९२ ॥

दूहा ॥ ढिंग जुग्गिनिपुर सरित तट। अचवन उदक सु आय ॥
तहँ इक तापस तप तपत। ताली ब्रह्म लगाय ॥
छं० ॥ ५६० ॥ रू० ॥ २९३ ॥

कवित्त ॥ ताली षुल्लिय ब्रह्म। दिष्षि इक असुर अदब्भुत ॥
दिग्घ देह चष सीस। मुष्ष करुना जस जप्पत ॥
तिन रिषि पूछिय ताहि। कवन कारन इत अंगस ॥
कवन थान तुम नाम। कवन दिसि करिय सु जंगम ॥

---

२९१ नेंम। तथ। ठार। रिप। लागि। पाइ। रिपि। वीसलह कथ कथि राज कथ। जोरां। उट्ठुरां। नथ। तुव। कोंन। इहि। ठाउं। जाउं। ल्यौ। तिथ। आनंत। आनत। अधम्म। तिहिं। ठोरि। सब। ति। क्रम्म। उझो। दिलि। सुर सुर। थांन। आय। राषिअमंग। कालिंद। पावन। परंम। सू सारि॥

२९२ पाठान्तर:—तिहां। चलि। सु निसाचर। श्रम। पीनो। अंदोलि। भय। सब्ब। देह। करैं। रिपि। पुछ्यो। कीलो। मद्ध। चर्वाहि। पाय परसि गय अप्प सकल॥

२९३ पाठान्तर:—तहां। आइ। लगाई। लगाइ॥

२९४ पाठान्तर:—षोलिय। ब्रह्म। दिपि। अदभुत। दिग्घ। चषु। रस जंपत। पुछिय। थांन। नांम। करीय। नांम। नृपति। आप। लभीय दइत। तजन। क्रत॥

सो नाम ढुंढ वीसन्न त्रपति । साप देह उसिराय दयत ॥
छुट्टन सु लेह गंगा दरस । तजन देह जन संत छात ॥
छं० ॥ ५६१ ॥ रू० ॥ २९४ ॥

दूहा ॥ तजन देह जन संत छत । सजन अजैपुर राज ॥
निय तन असि वर पंडि हौं । मधि गंगा रिषराज ॥
छं० ॥ ५६२ ॥ रू० ॥ २९५ ॥

तन सु पाप तापह तपन । किम उधार सो होइ ॥
तुम रिषिराज वसिष्ट वर । यो उपदेसह सोइ ॥
छं० ॥ ५६३ ॥ रू० ॥ २९६ ॥

तब मुनि वर हसि यौं कहिय । विन तप लहिय न राज ॥
अन धन सुत दारा मुदित । लहौ सवै सुष साज ॥
छं० ॥ ५६४ ॥ रू० २९७ ॥

तब सु तहां उपद्देस लिय । लगि धारन हरि ध्यांन ॥
तपत तप्प तिन रिषि गुहा । अंग उप्पज्यौ ग्यान ॥
छं० ॥ ५६५ ॥ रू० ॥ २९८ ॥

रिष्य सु उट्ठि तीरथ गयौ । दरी सु दानव छंडि ॥
जौ लौं आऊं तिथ्थ करि । तौ लौं तू तप मंडि ॥
छं० ॥ ५६६ ॥ रू० ॥ २९९ ॥

गाथा ॥ तपत निसाचर तप्पं । बीते वरष तीन सै असीयं ॥
भय वाधा विण अंगं । लग्गौ राम धारना ध्यानं ॥
छं० ॥ ५६७ ॥ रू० ॥ ३०० ॥

दूहा ॥ ढुंढा रिषि उपदेस लिय । तिहि ढिग दरिय उघोर ॥
वरष तीन सत असिअ लगि । महा प्रबल तप घोर ॥
छं० ॥ ५६८ ॥ रू० ॥ ३०१ ॥

२९५–९९ पाठान्तर :–क्रत । हो । हों ॥ २९५ ॥ सोह । सोइ ॥ २९६ ॥ यो । लहों । सवैं ॥ २९७ ॥ उहां ध्यांन । तब तप्पै । अंग अंग उपज्यो ग्यांन । अंग उपज्यो ग्यांन ॥ २९८ ॥ उठि । दांनव । लों । आंऊं । तिथ तूं ॥ २९९ ॥

३०० सनिचर । तापं । सैं । भो । वादक सब अंगं । लगों । ध्यानं ॥

३०१ पाठान्तर :–तिहिं । गदरीय । वरप तीन सै असीय लगि । अस अंगल ॥

॥ अनंगपाल राजा का दिल्ली बसाना ॥

दूहा ॥ पंडव बंस अनंग न्रप। पति हथिनापुर ठाम ॥
एक समै जमुना तटह। वसिय राज तहँ गाम ॥
छं० ॥ ५६९ ॥ रू० ॥ ३०२ ॥

अनँग पाल तूंअर तहाँ। दिल्ली बसाई आनि ॥
राज प्रजा नर नारि सब। बसे सकल मन मानि ॥
छं० ॥ ५७० ॥ रू० ॥ ३०३ ॥

॥ अनंगपाल की सुता का निगमबोध कालिंद्री तट पर गौरी पूजने जाना ॥

कवित्त ॥ अनंग पाल तूंअर। नरिंद धरमाधि राइ गुर ॥
सुता तास अति सुभग। बरष अठ्ठह सरूप वर ॥
सषी सु आनि समानि। सील गुन वर अठ्ठह तर ॥
सावन भावन मास। गवरि नित करै पुज्ज उर ॥
निगम-बोध कालिंदि तट। गई सकल पूजन गवरि ॥
तिहि काल मेघ व्रष्षह प्रवल। * भई लगि भींजन कुँअरि ॥
छं० ॥ ५७१ ॥ रू० ॥ ३०४ ॥

॥ अनंगपाल की सुता का ढूंढा को पूजना और उस का कारण पूछना ॥

कवित्त ॥ अनगपाल न्रप सुता। संग पुत्री ति पंच सित ॥
प्रोहित पुत्री एक। पुचि सा चंडि सेव हित ॥
सब मिलि जमना तीर। गई अस्नान सवारिय ॥
दिषि देवल म्रत पिंड। तेह ढूंढा तप धारिय ॥

३०२-३ पाठान्तर:-ठांम। यमुना। तहां। गांम। ३०२५ तोअर। दिल्लि। आनि। प्रज। बसे सकल तहां आंनि। मांनि ॥

* भई लगि भींजन = यह प्राचीन हिन्दी की वागरीति अर्थात् मुहावरा है ॥

३०४ पाठान्तर:-तूवर। राय। अठह। सषी आनि समांग। आंनि। समांनि। सीत। अठोतर। सावन। स पुज वर। निगमोध। कालिदि। गइ। वरसि। लगि। भीजन। कुवरि ॥

३०५ पाठान्तर:-अनगपाल पुत्री सु एक। सथ साथिणी पंसच सत। पंच सत। ता मड। मंहि। जमुना। बपु स्नान। मृत। तिहि। ढुठा। धारीय। पूजा। करीय। दूय। दैत। पूज्यो। तिनहि ॥

सव मिलि सु ताहि पुज्जा करिय । वरष पंच दुअ मास दिन ॥
दिन अवधि दइत पूछिय तिनह । को तुम कारन काम किन ॥
छं० ॥ ५७२ ॥ रू० ॥ ३०५ ॥

॥ अनंगपाल की सुता का ढूंढा को वर चाहने को पूजने का कहना ॥

गाहा ॥ इह सुनि अनंग नरिंदं । पुत्री सित पंच अवर दुज राजं ॥
वर चाहत तुम पासं । ए वर बीर वास इक ठामं ॥
छं० ॥ ५७३ ॥ रू० ॥ ३०६ ॥

॥ ढूंढा का राज-स्त्रियों की सेवा से संतुष्ट होना ॥

दूहा ॥ दिल्ली ढिग गहरिय गुफा । ढूंढा तहां वयट्ठ ॥
अट्ठोत्तर सौ राज त्रिय । सेवा करत सु तुट्ठ ॥ छं० ॥ ५७४ ॥ रू० ॥ ३०७ ॥

॥ ढूंढा का वर देकर काशी को उड़ जाना ॥

पद्धरी ॥ दिय वाच वाल दानव सु राज । सज्यौ सु अप्प वर वचन साज ॥
उडि चल्यौ अप्प कासी समग्ग । आयौ सु गंग तट कज्ज जग्ग ॥ ५७५ ॥
सत अट्ठ षंड करि अंग अप्पि । होमे सु अप्प वर मद्धि हव्वि ॥
मंग्यौ सु ईस पहि वर पसाय । सत अट्ठ पुत्र अवतरन काय ॥ ५७६ ॥
तन रह्यौ जोति गय देव थान । मिलि ताहि अक्करिय करत गान ॥
छं० ॥ ५७७ ॥ रू० ॥ ३०८ ॥

॥ ढूंढा का फिर जन्म लेना और उसका वृत्तान्त चंद का वर्णन करना ॥

दूहा ॥ इम आतम उद्धार करि । जनम लियो भुअ आइ ॥
सो वृतंत कवि चंद कहि । वरन्यौ कवित बनाइ ॥ छं० ॥ ५७८ ॥ रू० ॥ ३०९ ॥

॥ ढूंढा का वर देना और काशी में यज्ञ कर तन त्यागना ॥

दूहा ॥ तब ढूंढा वर दान दिय । सुति सत अट्ठ प्रसन्न ॥
कासी जाय रु जग्य किय । सित्त षंड किय तन्न ॥ छं० ॥ ५७९ ॥ रू० ॥ ३१० ॥

---

३०६ पाठान्तर :—अगंग । पुत्ती सय । काम वास ॥

३०७ पाठान्तर :—ठिल्ली । गुफा । ढुंढा । वयठ । अठोत्तर । सो । तुठ ॥

३०८ पाठान्तर :—दीय । दांनवह । स । अप । पचन । चल्यो मग । समग । कज जग । अठ अबि । स । मधि । हबि । सब्व । स । यसाई । पसाइ । अट्ठ । अठ । अवतार । काइ । ज्योति । थांन । अछरीय । ग्यांन ॥

३०९–१० पाठान्तर :—उधार । लीयो । भूअ । आइ । वृतांत । चंदनें । वरन्यो सकल बनाय ॥ ३०९ ॥ ढुंढे । बरदांन । अठ । कीय । सत्त । कीय ॥ ३१० ॥

॥ ढूंढा के दानव शरीर का मान और स्वरूप वर्णन ॥

कवित्त ॥ अंगह मान प्रमान। पंच सैं हथ्थ उने कह ॥
दूह उंचौ उनमान। विनय लछ्छिनह विवेकह ॥
हथ्थ षडग विकराल। मुष्य ज्वालघन सद्दह ॥
आनल दिन्नो राज। गयौ राषिस तन सद्दह ॥
जोगिनियं गुफा बोधह निगम। तप आदर किन्नो सु मन ॥
साधंत पवन तप उग्र करि। दूस रष्यौ उद्दार सन ॥
छं० ॥ ५८० ॥ रू० ॥ ३११ ॥

॥ ढूंढा का दिल्ली में पाषाणरूप हो जाना और स्त्रियों का उसे पूजना ॥

कवित्त ॥ असी बरस सत तीन। गुफा किन्नौ तप भारिय ॥
वैस वंस षिचित्र ग्रम। भरै जमुना जल नारिय ॥
सारँग वज्यौ वाउ। घटा वंधे जल वुट्टौ ॥
दौरी सब गुह मझ्झ। रूप पाषान सु दिट्ठौ ॥
मिलि नारि सबन अचरिज्ज करि। जल धोए उज्जल कस्यौ ॥
साषंड धूप दीपह चरिच। सित मन सिद्धौ आचस्यौ ॥
छं० ॥ ५८१ ॥ रू० ॥ ३१२ ॥

॥ ढूंढा का अनंगपाल की सुता को वीर पुत्र होने का वर देना ॥

कवित्त ॥ दिय वीसल बरदाज। कुष्य उपजै साहा भर ॥
बीरा रस उत्तान। जुद्ध मंडै न कोइ नर ॥
बीर जोति अवतार। भद्द जिह्वा तन भारिय ॥
नयन जोति संजोगि। पत्ति कुल पिता सँघारिया ॥

३११ पाठान्तर:—काहि अंग। मांन। प्रमांन। हथ। उन। लछनह। हय। मुष। आनल। दीनौ। जो गिनीय। कीनौ। पवन। रष्यो ॥

३१२ पाठान्तर:—अशी। बरष। शत। कीनौ। भारीय। षत्री अधम। षित्रीय अधंम। षित्रिय अधम। भरे। जमना। भारीय। नारीय। सारंग। बज्यौ। वज्या। वाय। वधे। वुठौ। दोरी। मझ। सुद्दिठौ। दीठौ। अरिज। धोय। उजल। तन मनि सुधि आवस्यौ। तन मन सुधि आवस्यौ ॥

३१३ पाठान्तर:—दीय। वीशल। वरदांनि। कुष। कुष्य। उपजे। महा। रश। उतांन।

दिप्पे सु नयन पुह कारि प्रनिध । किये पाप द्रन भ्रूव करि ॥
उप्पजै नारि अनि रूप तिन । तेन लिन्न जाहे सु धर ॥
छं० ॥ ५८२ ॥ रू० ॥ ३१३ ॥

॥ ढूंढा का वर देकर काशी जाना, वहां दानव योनि से मुक्त हो अवतार लेना-सोमेसर की परिग्रह के प्रबंध के लिये क्षत्रियों का उत्पन्न होना-जिन में से बीस अजमेर में और अन्य अन्यत्र हुए-सोमेस के वीर पुत्र पृथ्वीराज हुए ॥

कवित्त ॥ वर दिनौ ढुंढा नरिन्द । जाय कासी तट सिद्धौ ॥
अस्त लियौ अवतार । भट्ट रसना रस पिद्धौ ॥
सोमेसर परिगह । प्रबंध सित उपने पिचि नर ॥
हुए बीस अजमेर । विण उप्पने अपर धर ॥
सोमेस वीर सुत पिथ्थ हुअ । ठौर ठौर ऊपजि वलिय ॥
विधि विधि विनान अवलोक गति । अवर सूर आए मिलिय ॥
छं० ॥ ५८३ ॥ रू० ॥ ३१४ ॥

॥ पृथ्वीराज जी के परिग्रह के सामंतों के नाम और जन्म स्थानादि का वर्णन ॥

कवित्त ॥ हुअ निक्ष्स्कर कनवज्ज । जैत सलषं अव्वूगढ ॥
मंडोवर परिहार । करषि कंगुर चाहुलि दिढ ॥
वलि भद्र सु नागौर । चंद उप्पजि लाहौरह ॥
दिल्लिय अत्ता ताइ । बिया धर सामत सोरह ॥

ज्योति । जीद्धा । भारीय । पति । संघारिय । संधारीय । दीपे । प्रसिद्ध । कीयो । द्रूव । उप्पजी नारी । ऊपजी । तेन लिंन नाइ सुधिर । तेन लिंत्त जाहे सुधर ॥ *

३१४ पाठान्तर:—दीनौ । दीधौ । सिधौ । सिंधौ । अस्ति । लीयो । रशना । रश । सोमेशर । परिघह । सित । शत्त । उप्पने । पित्र । हूए । भये । वीए । वीरा । ऊपने । अवर । पिथ्थ । उपजि । विनांन । आय मिलीय ॥

---

* पाठकों को इस रूपक से फिर सावधान होकर पढ़ना चाहिये क्योंकि कवि इस रूपक से पृथ्वीराजजी के जन्मादि की कथा की भूमिका बांध कर वृत्त वर्णन करता है ॥

राम दे राव जालौर धर। गोइंद गढ्ढ धामनि ग्रसै ॥
हाहिम्म बयानै उप्पनौ। प्रिथियराज परिघह बसै ॥

छं० ॥ ५८४ ॥ रू० ॥ २१५ ॥

२१५ पाठान्तरः—निम्झर। चिम्झर। कनवज। जेन सल्लष अवुगठ। हाहुल्लि। उपजि। अता ताय। समंत। रांमदे गोइद। गठ। दाहिंम। वयाने। प्रिथीराज। परिगह ॥

इस रूपक से कवि ने पृथ्वीराजजी के सामंतो के नाम और उन की उत्पत्ति के स्थानादि का वर्णन करना प्रारंभ किया है। यह विषय पुरातत्ववेत्ताओं के ऐतिहासिक शोधों में बहुत उपयोगी होने जैसा है—किन्तु इस ग्रंथ के अक्रित्रिम होने में भी एक प्रमाण रूप हो सक्ता है—और यह भी भले प्रकार ध्यान में रखने जैसी बात है कि यहां चंद अपनी उत्पत्ति लाहोर की अर्थात् "चंद उप्पजि लाहोरह" कहता है। इस महाकाव्य में बहुत से पंजाबी भाषा के शब्द मिलने से पुरातत्ववेत्ता विद्वान चंद की जन्मभूमि के विषय में पंजाब देश का अनुमान किया करते थे और पंजाबी अति वृद्ध गृहस्थ भी अपने देश के महाकवि चंद का नाम वंश परंपरा से आज तक सुनते चले आते हैं परंतु अब हमको इस बात का निश्चय हो गया और पंजाब देश हिन्दी भाषा के काव्यों की अनुक्रमणिका में पहिली संख्या पर जाय स्थापन हुआ क्योंकि अब तक इस महाकाव्य से प्राचीन कोई अन्य काव्य नहीं उपलब्ध हुआ है। कोई २ विद्वान जो यह कहते हैं कि चंद कवि का होना केवल इसी महाकाव्य से विदित होता है। उन को अजमेर नगर के कैसरगंज में चांद बावडी अपने नेत्रों से देखनी चाहिये और चंद के पुरुषाओं का बनाया हुआ भाटाबाव भी उसी नगर में तारागढ को जाते हुए दृष्टि गोचर करना उचित है कि जो अजमेर के भाटों के कबजे से निकल कर बहुत समय तक टोंक के नव्वाब साहब के अधिकार में रहे हैं। फिर उनोंने एक मोची को चांद बावडी दे दियी थी कि अब म्यूनीसीपैल कमैटी ने उस की चारों ओर की दीवार बना दियी है और इस बावडी के चारों ओर एक बगीचा भी था कि जिस का हांसल कुछ थोड़े दिनों तक म्यूनीसीपैलीटी में जमा होता रहा है और अब वह बगीचा कट कर वहां बस्ती बसा दियी गई है। चांद बावडी में नीचे उतरते दहिने हाथ की दीवार में प्रशस्ति का स्थान बना है कि जिस के पाषाण लेख को एक ८३ वर्ष का मुसलमान फकीर कर्नैल टोड साहब का लेजाना कहता है। इस के महरावदार द्वार के दोनों ओर एक २ पत्थर के फूल खुदे हुए हैं कि जिस को अंग्रेजी में lotus अर्थात् कमल की जाति का फूल कहते हैं। यह फूल शिल्पशास्त्र के सिद्धान्तों में विज्ञ विद्वानों को बावडी की अति प्राचीनता सूचन करने वाला दृष्टि आवेगा। चंद के विषय में कुछ और भी प्रमाण हमारी रचित पृथ्वीराज रासे की प्रथम संरक्षा में पाठक देख लें। इस महाकाव्य में प्रायः फारसी शब्द भी प्रयोग हुए हैं उन के विषय में हमने अन्यत्र कई एक प्रमाण प्रकाश किये हैं परंतु यह भी विशेष करके हमारे पाठकों के ध्यान में रहने जैसी बात हैं कि चंद जिस समय लाहोर में उत्पन्न हुआ था उस के १०० सौ वर्ष पहिले से वहां महमूदी सन्तान का राज्य था। फिर क्या कोई यह अनुमान कर सक्ता है कि उस समय की हिन्दी में एक भी फारसी भाषा का शब्द नहीं मिल सक्ता था? इन रूपकों में जिन २ सामंतों के नाम आये हैं उन का पूरा २ वर्णन हम ग्रंथ के पूरे छप जाने पर लिखेंगे क्योंकि अभी हमारा काम केवल मूल पाठ शोध कर प्रकाश करने का है॥

पद्धरी ॥ उतपत्ति वास सामंत चंद। पाधरी छंद ब्रन्नै सु वंद ॥
दस तीन हुए दिल्ली प्रमान। हरिसिंघ बसै गढ्ढह बयान ॥ छं० ॥ ५८५ ॥
जैसलहमेर अचलेस भान। पज्जून बसै चीतोर थान ॥
कलि कुंड हुऔ जंघार भीम। चहुआन आन रष्पैत सीम ॥ ५८६ ॥
बड भ्रात छोरि लग्गो सु पाइ। चहुवान सु वर सामंत राइ ॥
समियांन गढ्ढ नरासंघ राइ। पित मात छोरि आए सु भाइ ॥ छं० ॥ ५८७ ॥
देवरा धीर रिनधीर सथ्थ। पछ्विान देस प्रिथिराज तथ्थ ॥
जंघार भीम गढ जून वास। किन्नो सु जुद्ध भीमंग आस ॥ छं० ॥ ५८८ ॥
लग्गौ सु लोह लिन्नौ दिलेस। सारंग राइ मोरी नरेस ॥
वारडह राइ सहसौ करन्न। असिर बसै गढ आसमन्न ॥ छं० ॥ ५८९ ॥
जुध करै जित्त कन्हाति राइ। चहुआन सूर उप्पारि घाइ ॥
सेवक्क कीन अप्पै सु जोर। तेजल्ल डोड वासी जुनोर ॥ छं० ॥ ५९० ॥
कैमास सद्धि बलवंत वीर। लग्गो सु पाइ चहुआन धीर ॥
तारन्न सूर भटनेर वास। प्रिथिराज पाइ कीनी सु आस ॥ छं० ॥ ५९१ ॥
भोंहा चँदेल गजनीय सेव। लग्गो सु घाव झूझंत तेव ॥
उप्पारि लियौ सामंत राव। कीनी सु सेव अप्पह सु भाव ॥ छं० ॥ ५९२ ॥
अरसी चँदेल मास्यौ सकज्ज। भौ हा चँदेल दीनो सरज्ज ॥
पानीय पंथ उत्तन्न देस। दीनौ सु फेरि दिल्ली नरेस ॥ छं० ॥ ५९३ ॥
कनवज्ज राइ झूझंत ताम। रष्यौ सु अप्प कलि जुग्ग नाम ॥
चालुक्क पाट भोरा भुअंग। रष्यै सु कचरा पिथ्थ रंग ॥ छं० ॥ ५९४ ॥

---

३१६ पाठान्तरः—उतपति। उत्तपत्ति। वाश। वरनैति। चंद वरनैति। वंध। दश। हूए। प्रमांन। गढह। वयांन। जेशलह। जेसल्लह। भांन। पांजुन। पजून। वसे। थांन। कूंड। हूवौ। हुवो। चहुआंन। चहुवांन। आंन। रषेति। आनर रषैति। श्रान्ट। लगा। सू। पाय। चहुवांन। राई। रांय। समीयांन। गढ। राय। छारि। भाय। निरधीर। रनधीर। पछिवांन। देश। प्रिथीराज। पृथीराज। तथ। जूंन। वाश। कीनैा। सू लिन्मैा। दिलेश। राय। नरेश। राय। सह। सो। करंन। आसमंन। करे। जित। कन्हांनराय। चहुंवान। उपार। उप्पार। सेवक। क्कीन। अपे। से जल। जुनैार। सद्ध। लगा। पाय। चंहुंवान। चहुवांन। तरंन। वाश। प्रिथीराज। प्रथीराज। पाय। सू। भोहा। भोंहा। गनीय। बूंदी राज्य के पुस्तकालय की पुस्तक लिखी सं० १९४५ में लगो—तेव के स्थान में "दम अप्प अप्पह सु भेव" करके पाठ है। और छंद ५९१ पिछली तुक उस में है ही नहीं। लगा। झुझंत। उपारि। लीयैा। किवी। चंदेल। सकज। भोहा। भैांहां। चंदल। सूरज। सुरज्ज। पांनीय। पानींय। उतन। उतंन। देश। सू। नरेश। कनवज राज झुझंत तांम।

जावलो जल्ह दष्षिनी देस। प्रिथिराज राइ किन्नौ प्रवेस॥
सतनंज नगर दीनो उतन्न। पूरन्न माल प्रिथिराज तन्न॥ छं०॥ ५९५॥

सूरत्ति वास चहुआन राइ। कढ्यौ सु श्रात रष्यौ सु दाइ॥
बडगुज्जरहराम अल्ली नरेस। दिन प्रत्ति षांन भंजै सदेस॥ छं०॥ ५९६॥

मुक्कले दूत प्रिथिराज तथ्थ। सेवा सु पाइ उप्पर जु हथ्थ॥
प्रिथिराज ताहि दो देस दिद्ध। मारून षांन अल्ली प्रसिद्ध॥ छं०॥ ५९७॥

करि वास तब्ब गुज्जर निसंक। मारयो षांन आलोल वंक॥
हड्डा हमीर नैन वारिद्ध। लग्गे सु पाइ दस देस दिद्ध॥ छं०॥ ५९८॥

षेता षँगार दै श्रात राइ। परयो दु काल देसं सु भाइ॥
दिल्लीय देस गुढ्ढा सु मंडि। रष्यै सु वास भट सुभट झुंड॥ छं०॥ ५९९॥

परमार कनक जैचंद वास। किन्नौ सु षून इक पाचि दास॥
लिय पाच अग्गौ प्रिथिराज देस। लग्गो सु पाइ आयो नरेस॥ छं०॥ ६००॥

सांषुलो सहसमल्ल सात पष्य। तप करत अनंगह गयो रष्य॥
लग्गो सु पाइ प्रिथीराज आइ। दीनो सु देस षटूय साइ॥ छं०॥ ६०१॥

अवतार लियो दिल्ली नरेस। तब हुए सत्त सामंत भेस॥

छं०॥ ६०२॥ रू०॥ ३१६॥

कवित्त॥ ढुंढा (नाम *) दानव उतंग। दियो फल अंब बिसालं॥
बंदि लीन न्टप राज। आय फिर गेह सु चालं॥
सत्त भाग कह अग्ग। बंटि दिय भ्रत्त समानं॥
तिनह सूर सामंत। कित्ति रष्षन चहुवानं॥

जुग। फंगं। नांम। चालूक्क। रष्वं। पिथ। रष्ये सुकंचरापिथ रंग। जांवल्लो जल्ल दिषिनीय। देश। दषनीय। प्रिथीराज। राय। कीनैा। दीन्नो। उतंन। पूरन माल। प्रथीराज। तंन। सूरति। त्रात। वडगुज्जर राय। अली। नरेश। सुदेश। मुक्कले। पृथीराज। तथ। पांय। सु। प्रिथीराज। देश। दिध। अली। प्रसीद्ध। तब। गुजर। मारीयो। हांडा। हामा। हमीर। नेन। लगे। पाय। षेतल षंगर। परियो। देसां। भांय। दिलियं। दलीय। देश। गूढा। भट्ट। जैद। पांचदास। यहो। प्रथीराज। देश। आये। मानि। पषि। करित। रिषि। प्रथीरांज। आयं। कीनैा। षटूच। लीयो। दिली। सित्त॥

३१७ पाठान्तरः–ढुंढुं (नाम * विशेष है) उतग। विसालं। गेहे। सु बालं। अय। भृत। समानं। चहुंवांनं। अति प्रथल। अमिय प्रकाल। संगह। ढूंक। सवंत। सवत। संवत॥

रजसेल चंद फल ञ्चमिय ग्रग्गु । सत्तर साहि सोपन सु गह्हु ॥
इक्कदस ससंत पंचह समै *। भण थान पंचस सु पहु ॥
छं० ॥ ६०३ ॥ रू० ॥ ३१७ ॥

॥ आना राजा का उजड़ी हुई अजमेर को फिर बसाकर राज करना ॥

दूहा ॥ अनल आनि मातह मिल्यौ । कहि सब वत्त सुनाइ ॥
लोग महाजन संग लै । भूमि वसाई जाइ ॥ छं० ॥ ६०४ ॥ रू० ॥ ३१८ ॥

पद्धरी ॥ आना नरिंद अजमेर वास । संभरिय कीन सौव्रन्न रास ॥
नियनाम कह्यौ आना नरिंद । अरि धरनि वीर संच्यौ सु दंद ॥ छं० ॥ ६०५ ॥
ग्रासान ग्राम तोरन उतंग । वन वढ्ढि कढ्ढि निधि निधि पुरंग ॥
पसु पंपि सद्द स्रुत मंडलेस । जल न्हान दान ब्रह्मन सु देस ॥ छं० ॥ ६०६ ॥
हारम्य रम्य फिरि मंडि लोइ । दालिद्र दीन दीसै न कोइ ॥
चौघट्टि सत्त बरषं प्रमान । आना नरिंद तपि चाहुवान ॥ छं० ॥ ६०७ ॥

॥ जैसिंह जी का गद्दी पर विराज राज करना ॥

पग भ्रम्म देस दिय पुच हथ्य । जैसिंघदेव तपि राज तथ्य ॥
छिति छच सीस जैसिंघ देव । निधि लई वीर वीसल पनेव ॥ छं० ॥ ६०८ ॥
विंटु लीय वीर आना नरिंद । बीसल तडाग मधि द्रव्य कंद ॥
पायौ न वीर तिन द्रव्य छेह । कंचनह काम मंडाय गेह ॥ छं० ॥ ६०९ ॥
सब द्रव्य दीन तिन विप्र हस्त । भंडार धरिय धन भ्रम्म वस्त ॥
स्रुति सुनहि स्रवन जंपत पुरान । साधरम करम चलि चाहुवान ॥ छं० ॥ ६१० ॥
कलि नीति गरुञ्ज गहि गरुञ्ज मुक्कि । कुल रीति चित्त रंचक न चुक्कि ॥
सो।बरस अट्ठ तप राज कीन । आनंद मेव सिर छच दीन ॥ छं० ॥ ६११ ॥

---

* यह पाठ हमने सं० १९५९ की पुस्तक का रक्खा है किन्तु सं० १६४७, सं० १७७० और सं० १८४५ की में "इक दस संवत पंचह समै" है कि इन में से जिसे विद्वान ठीक समझें उसे ग्रहण करें ॥

३१८ पाठान्तर:—अनिल । अनलि । सुनाय । लोग । वसाईय । बसाइय । जाय ॥

३१९ पाठान्तर:—आनां । नरिंद । नरंद । सभरीय । सोव्रंन । राशि । नांम । आंना । मंझौ । तोरन । वढि । कढि । पुरंगं । पंप । सदस्तुत । मंडलेस । न्हान । दांन । हारंम्य । मंड । लोई । लोय । दारिद्र । दीन दीन । दीसे । कोई । चौ घड़ी । सत । प्रमांन । नरिंदं । चहुवांन । ध्रम । हथ । हथ्य । तथ । छत्रचीस । जैसिह । निध । बीर सल । पनैव । बिंदुलीय । विटलीय ।

॥ आनन्दमेवजी का राज करना ॥

तहां तप्पि तेज आनन्द मेव । वाराह रूप दिष्यौसु देव ॥
धरनी विहार आयास साद । मंड्यौ सु राज पहुकर प्रसाद ॥ छं० ॥ ६१२ ॥
सो * वरष राज तप अंत कीन । सिर छत्र सोम पुत्तह सु दीन ॥

॥ सोमेश्वरजी का सिंहासन पर विराज राज करना ॥

सोमेस सूर गुज्जर नरेस । मालवी राज सब पग्ग पेस ॥ छं० ॥ ६१३ ॥
मारू मजाइ भट्टीन थान । घल भोमि लई बल चाहुवान ॥
दिल्लेस व्याह तोंवर घरेस । तिह ग्रब्भ भयौ पीथल्ल नरेस ॥ छं० ॥ ६१४ ॥
आनन्द राज नंदन सु सोम । मोरिया दलनि तिन कियौ होम ॥
निय पुर सु नयर सुर लग्गि धोम । आनन्द केलि अजमेर भोम ॥
छं० ॥ ६१५ ॥ रू० ॥ ३१९ ॥

॥ सोमेश्वर जी की शूरता का संक्षेप वर्णन ॥

कवित्त ॥ जिहि सोमेसर सूर । सूर जित्ते षुरसानी ॥
जिहि सोमेसर सूर । चढिवि गुज्जर धर भानी ॥
जिहि सोमेसर सूर । लियौ नाहर परिहारिय ॥
बल उप्पम कवि चंद । चंद राहा जिम मारिय ॥

नरिंद । छेह । द्रेह । कांम । गेह । येह । दिन । भंडारि । श्रवन सुनहि । जपत । पुरांन चाहुवांन । गरुव । गरुव मुकि । कलि । रीत । चित । रचक । चुकि सो । अठ । तिहां । तपि । रूप्प । देष्यो । सद्द । प्रसद । सो । सोम । सोमेस । शूर । गुजर । पग । पेस । मांरु । वजाय । भट्टी । थांन । लइ । बंल । चाहुंवांन । दिलेस । दिल्लेश । तुंवर । घरेश । गर्भ । ग्रभ । पित्यल । पीथ्यल । नरेश । मोरीयां । दल । दलह । कीयो । नैर । लगि । कल ॥

* चोसट्टि सत्त = इस के विरुद्ध कोई दूसरा पाठ हमारे पास की पुस्तकों में नहीं मिलता किन्तु कोई २ वृद्ध कवि चोसट्टि सत्त करके मूल में पाठ होना कहते हैं और उस से ६४+७ = ७१ वर्ष की संख्या निकालते हैं और कोई १०० वर्ष और चार घड़ी और कोई ७ वर्ष और चार घड़ी का वाचक पाठ कहते हैं किन्तु ऐसे सब स्थल पक्षपात रहित विद्वानों के सूक्ष्म विचार करने योग्य हैं ॥

* इस सो शब्द का पाठ किसी २ पुस्तक में सो भी है कि जिस से वर्ष की संख्या के समझने में बड़ी गड़बड़ हो जाती है । यह स्थल भी विद्वानों की बुद्धि को श्रम देने जैसे है । यदि कोई शुद्ध अंतःकरण से पूर्वापर का लेखा लगा देखेगा तो वह चंद कवि की संवत संबन्धी कठिनता को जान कर बहुत प्रसन्न होगा ॥

३२०. पाठान्तर:—जिहिं । सोमेस्पर । जिने । पुरसांनी । चढे । चढे । भांनी । भांती । लीयो । परिहारी । परिहारीय । वलि । उपम । राहां । सारी । मारीय । बैरन । दोरि । रांजोर । वर । पां । मइ । गुजर । गूजर । गजयो ॥

बर वीर धीर धारद्द धनी। संभरि वैरिन भंजयौ ॥
इक दौरि गौर राजौर वह। षां वड गुज्जर गंजयौ ॥

छं० ॥ ६१६ ॥ रू० ॥ ३२० ॥

॥ दिल्ली के राजा अनंगपाल जी पर कमधज्ज का चढना ॥

कवित्त ॥ ढिल्लीवै आनंग। राज राजंग अभंगं ॥
ता उप्पर कमधज्ज। सेन सज्जी चतुरंगं ॥
अग आतस आभूत। पुट्टि बंधे गज पत्तं ॥
ता पुट्ठे विजपाल*। सुभर सज्ज रन मत्तं ॥
धजनेज मोज नीसान ढल। मनु बसंत रंज्जिय विपन ॥
करि कूच कूच उप्पर धरा। आय वेध अंतर सपन ॥

छं० ॥ ६१७ ॥ रू० ॥ ३२१ ॥

॥ कमधज्ज की चढाई सुन अनंग का कालिंद्री उतर मुकाम करना ॥

कवित्त ॥ सुनी बत्त आनंग। अंग लग्गो रस वीरह ॥
भ्रकुटि वक्र रत द्रिग्ग। चित्त जुध रत्त सरीरह ॥
बोलि मित्त अप्पान।। कहिय सू वान मंत गुन ॥
चढत राइ दिल्लेस। करिय नीसान वीर धुन ॥
गज वाजि रथ्थ पइ भर गहर। सजिय सेन सनमुष चलिय ॥
उत्तरि कालिंद्रि मुक्काम किय। दस दिसान वत्ती हलिय ॥

छं० ॥ ६१८ ॥ रू० ॥ ३२२ ॥

* स्मरण में रखने की बात है कि संप्रत शोधों के अनुसार भी कनौज के राजा विजयपाल जी, दिल्ली के राजा अनंगपालजी और अजमेर के राजा सोमेश्वर जी परस्पर समकालीन थे ॥

३२१ पाठान्तर:–ढिली। ढिल्लावै। राजग। अभंगम। कनवज। सजी। चतुरंगम। अंग। अग्र। पुठिं। पुठि। बंधे। पंतं। पंत। पुठे। पुठिं। विज़ेपाल। सजे। मंतं। मंत। नीसांन। ढल्ल। मनों। वसंत। रज़य। विपन। कुच २। उपरि। धरहि। धरहिं। आइ। वेद्ध। संपन ॥

३२२ पाठान्तर:–सुनिग। सूनिग। वत। लगौ। लग्गे। दश। भृगुटि। चक्र। द्रिग रत। चिंत। भृत। अप्पांन। शवांन। स वांन। दिलेश। निसांन। धूंनि। रथ। पथ। मन मुष। संमुष। उतरि। कालिद्रि। मुकांम। दश। दशांन। वती। हलीय ॥

॥ कमधज्ज की चढाई सुन सोमेस का अनंग की सहायता को दिल्ली जाना और वहां पहुँच अनंगपालजी से एकान्त में संत्रणा करना ॥

पद्धरी ॥ संभरिय बत्त संभरि नरेस । आभास चित्त अप्पां असेस ॥
कमधज्ज राज तोंवर नरिंद । मत्तौ सु दुनै आवद्ध दंद ॥ छं० ॥ ६१९ ॥
अप्पन सहाय सज्जौं सपूर । वैठन्न ग्रेह नह भ्रम्म सूर ॥
करिकैं सु जीति आवें अपान । कै सजैं वास कैलास थान ॥ छं० ॥ ६२० ॥
मन्नेव सूर भर मंत वाम । घुस्सरे नह नीसान ताम ॥
चढि चल्या सेन सजि चाहुवान । उप्पटे जानि सत सिंधु पान ॥ छं० ॥ ६२१ ॥
अग्गे सु सोम दिल्ली सहाय । अग्गेव विष्य हर कंठ लाय ॥
अग्गेव मनी लक्ष्मी फुनिंद । अग्गेव सरद निसि उग्गि चंद ॥ छं० ॥ ६२२ ॥
अग्गे सु चक्र लिन्ना गुविंद । अग्गै सु वज्र कर चक्की इंद ॥
बिहु बाह सूर सज्जे समंत । वेनै विरद्द वंधे अनंत ॥ छं० ॥ ६२३ ॥*

---

* यह छंद सं० १६४० । १७७० । और १८४५ की पुस्तकों में नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी में है ॥

इस छंद की अंत की तुक में "वेनै विरद्द बंधे अनंत" है कि जिसका अर्थ यह होता है कि वेन ने अनेक बिरद बांधे अर्थात् कहे । यह वेन कवि इस महाकाव्य के रचनेवाले चंद का पिता था और वह सोमेश्वर जी के इस समय साथ था । अब तक चंद से पहिले का कोई काव्य किसी भी कवि का किसी के जानने में नहीं है किन्तु हमने जो एक चंद छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक सं० १६२९ की लिखी शोध कियी है उस के पीछे मेवाड राज्ज के महाराणा जी श्री उदयसिंहजी के महाराज कुमार श्रीसगतसिंहजी के पंडित विष्णुदासजी ने अकबर बादशाह के भाट गंगजी से अजमेर में पटोलावाय के मुकाम पर चंद के बाप कवि राव वेन का नीचे लिखा छप्पय अर्थात् कवित्त लिखा था वह हम प्रकाश करते हैं । इस छप्पय से वेन ने पृथ्वीराजजी के पिता सोमेश्वरजी को आसीस दियी थी :–

छप्पय ॥ अटल ठाट महि पाट । अटल तारागढ थानं ॥
अटल नग्र अजमेर । अटल हिंदव अस्थानं ॥
अटल तेज परताप । अटल लंका गढ डंडिव ॥
अटल आप चहुवान । अटल भूमी जस मंडिव ॥
संभरी भूप सोमेस नृप । अटल छत्र ओपे सु सर ॥
कवि राव वेन आसीस दें । अटल जुगां राजेस कर ॥ १ ॥

अग्गैं सुदंति पंतिय विहर । पज्जंत अंदु सद् करन भूर ॥
धजनेज चमर वंवर विनान । मन हू कि पव्व पहार किसान ॥ छं० ॥ ६२४ ॥
धमकंत धरनि अहि सिर निहाय । हल्ल हल्लिय द्रिग्ग उद्रिग्ग थाय ॥
पुर धूरि पूरि मुद्दिन भमित्ति । दिसि व दिसि राज पसरंत कित्ति ॥ छं० ॥ ६२५ ॥
रह परहि सोम पर चाउ कज्जि । मन हू कि दुलह वर व्याह रज्जि ॥
संपत्त जाय दिल्लिय पुरेस । आनंग राज मिल्ले असेस ॥ छं० ॥ ६२६ ॥
ग्रह वत्त कुसल्ल पूछिय अखेत । रस हास पेम वढ्ढे सु हेत ॥
विधि विद्धि भोज भोजंत राय । रुचि सु चित चित्त षट रस्स भाइ ॥ छं० ॥ ६२७ ॥
आहार पान घन सार पूर । वैठे सु आइ एकंत सूर ॥
सब कहिग विद्धि कमधज दिसान । सुद्दरै वत्त सो करहु पान ॥
छं० ॥ ६२८ ॥ रू० ॥ ३२३ ॥

॥ अनंग की बात सुन सोमेस का रोस में आय लड़ने को तयार होना ॥

कवित्त ॥ सुनिय वत्त जपि सोम । रोस उब्भार भार असि ॥
रसन दसन दव्वंत । रत्त द्रिग मुच्छ हथ्थ कसि ॥

इसी के साथ उसी पुस्तक में चंद के नागापत्रकरणा का कहा हुआ यह नीचे लिखा दोहा भी लिखा है :—

दोहा ॥ ले कूंजा नृप पीथुला, सांमत चमूं समंद ॥
वेन नंदन कनवज गमन, चंद करन कइ दंद ॥

३२३ पाठान्तर :—संभरीय । नरेवा । अभासि चित आपां । अपा । अशेश । कमधज । राव । तूंवर । नरिंद्द । दुन्हैं । आवद्दु । दुंद । सज्जै । वैवन । ग्रेह । धम । कैकरैं जीत आना नारंद । आनिग । अपांन । थांन । कैं सजैं थांन कैलास इंद । मनेव । मचैव मंत भर सूर टांम । घुघुमरद्दू नीसांन तांम । मनेव । घुमरे । चाहुवांन । उपटे । जांनि । सिंधू । पांनि । पानि । अग्गैं । अग्गें । अग्रैं । अगेंव । अगेव । अग्रेंव । विप । लाइ । अगेंव । अग्रेव । अग्रैंव । मंनि । मचि । लभी । फूनिंद । अग्रैंव । अगेंव । रत अग्गैं । अग्गैं । वेन । वानैं । अग्रैं । सदंत । पंभूर । पंडूर । भरन । वनांन । मत हूं । पव । क्रसांन । सर । हलीय । दुग । अद्दुग । दूग । अद्रूग । पुरि धूरि रिपुरि सुदिन भमित्त । पुररि पूरि धूरि मुदिन तगित्त । वि । पसरंति । पडइ । पडह । कज । मांन हूं । मानहु । रज । संपत । दिलियपुरेश । राय । मिले । ग्रह । कुशल । पुछिय । अशेत् । रश हाश । वढे । विधि विधि । चित । रश । पांन । आय । सव्व । विधि । कमद्दुज । दिसांन । सुद्दुरंहि । वत । हूं । पांन ॥

३२४ पाठान्तर :—वत । चत्त । जप । रोश । उभार । भारि । दुतिवंत । मुछ । हथ । विचारिय । अप्पांन । अपनीय । अचि । भारीय । चाहुआन । चहुवान । भंपो । दलां । मांनहुं ॥

हुच कमंध आसंध। राज सम जंग विचारिय ॥
सजौ सेन अप्पनी। भिरौ भंजौ अरि भारिय ॥
चहुआन राय आनन्द सुअ। अति उमाह भारथ मनह ॥
अह मग्ग लग्गि झंपी दलह। बात ••• मानहु तिनह ॥
छं० ॥ ६२९ ॥ रू० ॥ ३२४ ॥

॥ दोनों राजाओं का डेरों पर जाना और पिछली रात को युद्धारंभ होना ॥

दूहा ॥ इह परिट्टि * राजन उठे। गय अप्पाने ठाव ॥
निसा जाम रहि पाछली। भयौ निसान निघाव ॥
छं० ॥ ६३० ॥ रू० ॥ ३२५

॥ सोमेसकी सहायता से अनंग की विजयपालजी के साथ लड़ाई ॥

भुजंगी ॥ रही जाम एकं निसा पच्छि यानं। बजे नद्द नीसान बीसान जानं ॥
चढ्यौ राज आनंग सोमं समेतं। बढे हास रासं चितं प्रीति हेतं ॥ छं० ६३१ ॥
सुभै सेन छचं धजा नेज माही। मनों वद्दलं मश्झ रंज्जै सु राही ॥
सजे पष्षरं बाज दंती सनेनं। सनाहंत भ्रीतं चितं जुड जेनं ॥ छं० ॥ ६३२ ॥
दूतै आनि दूतं कही बत्त साजं। सजे सेन आयौ विजैपाल राजं ॥
स्त्रपं व्यूह आकार सज्जे सभारं। दढं फन्न पुछं रचे श्रित्त सारं ॥ छं० ॥ ६३३ ॥
सुने बत्त आनंग चित्तं बिचारी। कही सोम सीषी बँधै बंध भारी ॥
सजो सेन अप्पान व्यूहं गरूरं। गिलै स्त्रप्प तामं हुवै जित्ति सूरं ॥ छं० ॥ ६३४ ॥

---

* हिं० परिट्टि (सं० स्त्री० परीष्टि = Inquiry, research, &c.) से है ॥

३२५ पाठान्तर:—परट्टि। परठि। अप्पानै। ठाह। जांम। पछली। निसांन। नघाय ॥

३२६ पाठान्तर:—जांम। दुक्कं। दुक्कं। पछियनं। बजै। नीसांन। वरसांन। चढे। सोमे। सोम। समेंत। चढे। हाश। रास। राशं। चित। सुभे। छेत्र। नेन। मांही। मनो। बदलं। बदल्ल। मझ। रचे। रच्ये। पषरं। सनेनं। सनाहंति। भ्रितं। चित्तं। जूद्ध। जैनं दूत्ते। दूतें। आंनि। आय। सभे। आयो। त्रिजिपाल। विजेपाल। ग्रपं। स्त्रप। सजे। सु भारं। दंढं। फन्न। फन्न। पुछं। भृत्ति। श्रित। सुनै श्रवन वेनं वतं विचारी। सिरकं। सिषं। बंधो। सजो। अपान। गरूरं। गिले। श्रप। जिति। चंचु। राय। तिन। राजं। पिछ। चोरंग। तयं लुद्दु। जय। उधीर। पिछ। धरा धार उधार वीरं सु नेवं। पंड पिंड। षंड षंड। लज। सेजे। सजै। पुछ। पथ्य। कूरंभ। जिते। जित्तीया। जितिया। अनेक। अग्र। नंगं। तिन। अग। आतस। झारे। दुयं। गेनं। उडे। कंपे। कपे। बढे। झंडा। दिषानं। वजे। अचट्ट। आनंट्ट। अनट्ट। गजे। निसांनं ॥

सज्यौ चंद ग्रीवा सु सोमेस रायं । तिनं संस्करी लाज राजं सहायं ॥
दिसा दाहिनी पछ चौरंग वीरं । कुलं चाहुवानं जयं जुद्ध भीरं ॥ छं० ॥ ६३५ ॥
थियं पछ वीरंम वीरंग देवं । धरा धार उद्धार धारं सु नेवं ॥
षगं षंड आनंग राजंग पालं । धरा षंड षंडं भुजं लज्ज झालं ॥ छं० ॥ ६३६ ॥
सजे पुछ्छ कोरंभ जैसिंघ नामं । जिनैं जित्तिया जुद्ध अन्नेक ठामं ॥
सजे अग्ग पंती मदं मोष नग्गं । तिनं अग्ग आतस्स झारं उतंगं ॥ छं० ॥ ६३७ ॥
दुवे सेन मिल्ली उडी रेन पूरं । कँपे कायरं सूर वड्ढे सनूरं ॥
धजा नेज ढालं पताषी दिसानं । वजे सिंधु आनद्द गज्जे निसानं ॥
छं० ॥ ६३८ ॥ रू० ॥ ३२६ ॥

कवित्त ॥ वज्जि गहर नीसान । अग्गि अग वान विकुट्टिय ॥
*दरिया दधि किय मथन । †भोम फटिय षद्द तुट्टिय ॥
करषि मुट्ठि कम्मान । तानि क्रन वान क्रनं किय ॥
मनहुं चिल्ह दिसि सद्दल । ‡भोंर वासं नमनं किय ॥
रुधि मग्ग मिच षद्द मुद्दयौ । सुभर सोम मत्तौ गहन ॥
सर सार सार उप्पर सिलह । मनु मेघ बुँद मची महन ॥
छं० ॥ ६३९ ॥ रू० ॥ ३२७ ॥

विराज ॥ चुरंगी सु वीरं । जुटे जुद्ध भीरं ॥
छुटे मोष वानं । मुदे आसमानं ॥ छं० ॥ ६४० ॥
परे वप्प घायं । करै कूह कायं ॥
उभारंत सेलं । हुवं सेल भेलं ॥ छं० ॥ ६४१ ॥
तनं छिद्र कालं । रुधिंजा प्रनालं ॥
वहै धार षग्गं । निनारंध रग्गं ॥ छं० ॥ ६४२ ॥

---

३२७ पाठान्तरः—नीसांन । अगि अगिवांन विकुटीय । * कि । दरीया । कीय । मथन । † कि । फट्टीय । तुट्टीय । मुंछ । क्रमांन । कम्मांन । क्रंन । क्रिन । बांन । छनंक्रिय । मनहुं । चिलि । ‡ कि । भोर । भोंर । भोर । वास । नभनं । मग । मुदयो । सुभर भोम । मनो मेघ बुंदह महन । मंनों मेघ बुंद मह महन । महि ॥

३२८ पाठान्तरः—चोरंगीश । जुटें । जूटे । भारं । छुंटे । छूटे । वानं । सुदे । वप । थायं । करे । कुह । हुए । सैल । तिनं । छद्र । रुधिज्जा । रुधिजा । बहैं । पग्गां । डग्गां । रंगं । त्रुटै । तुटें । दन । करगै । करेंगे । चिहारी । परैं । परें । थांनं । कल कैाट जांरी । कोट । हय । धरे । रुंड । तुलं लोथ मत्तं । कटै वंधन भयतं । कटे । भंतं । चोरंगी । बरसिघ । बरंसिघ । बथ । टुत्र । मल । जम । दृठं । बठं । बरसिंघ । बरसिंह । पितं । परै । बधि । मैतं । पच । भीर । कटै । भगै । दंठि । जिंतै ॥

तुटे दंत जारी। करै गै विहारी ॥
परे भूमि थानं। कलं कूट जानं ॥ छं० ॥ ६४३ ॥
हयं षंड षंडं। धरं रुंड मुंडं ॥
लुथं लुथ्थ मत्तं। कटं बंन भत्तं ॥ छं० ॥ ६४४ ॥
चुरंगी सु तत्तं। बरं सिंघ उत्तं ॥
मिल्यौ बथ्थ आनं। दुअं मल्ल जानं ॥ छं० ॥ ६४५ ॥
झिलै जंम दढ्ढं। गलं लग्गि बढ्ढं ॥
बरं सिंघ षेतं। परे बंध नेतं ॥ छं० ॥ ६४६ ॥
भयं पंच भीरं। कटे पास बीरं ॥
भगे दढ्ढ वामं। जिते चाहुवानं ॥ छं० ॥ ६४७ ॥ रू० ॥ ३२८ ॥

गाथा ॥ भग्गो दल नर सिंघं। जंगं जित्ताइ राइ चौरंगी ॥
बाई दिसि बर बीरं। लग्गे जुद्धाइ षग्ग मग्गायं ॥
छं० ॥ ६४८ ॥ रू० ॥ ३२९ ॥

रसावला ॥ * षग्ग साहिं नगा। सेन सेनं अगा ॥
सार धारं मगा। कूह कूहं बगा ॥ छं० ॥ ६४९ ॥
धाय यों ठंनकी। आहिरं घंनकी ॥
कंठ गीरं मता। बारुनी पी मता ॥ छं० ॥ ६५० ॥
बीर लुथ्थं लुथं। मिल्ल बथ्थं बथं ॥
तुट्टि तंतं अती। गज्जनीयं दंती ॥ छं० ॥ ६५१ ॥
नालि ज्यों कढ्ढती। सूर यों बिढ्ढती ॥
उड्डि लोहं लुहं। मिल्ल जोहं जुहं ॥ छं० ॥ ६५२ ॥ रू० ॥ ३३० ॥

---

३२९ पाठान्तरः—भगो। बरसिंघं। बरसिह। जंग। जिताइ। राय। चउरंगी। वाइ। दीसि। लगे। मग्गइ। मगाइं ॥

* इस छंद का नामान्तर विमोह अर्थात् विमोहा भी है और वह दो २ रगण का होता है ॥

३३० षगं। संग। साहि। साहं। नंगा। सजै सैन अंगा। सजे सेन अंगा। सारं धार। कुंह कूह वमा। कुहं कूह वगा। विघायं ठनकी। अहीरन धनंकी। अहिचं धनकी। कठंगी रमता। कठंगी रमता। वारुणि पिमंत्ता। वारुणी पिमंता। परी लुथ लुथं। परी लुथा लुथ्थ। मिलै वथ वथ्थं। वथं। तुटीतंन अतीं। तुटी तंति अंती। गरजंत दंती। नालि ज्यों कढंती। सूरय्यों वढंती। सूर ज्यों बढती। उडे लोह लोहं। उडे लोह लोहं। मिलं जोह जोहं। मिले जोह जोहं ॥

इस रूपक के पाठान्तरों को विचारने से पाठकों को ज्ञात होगा कि वे कैसे २ अद्भुत और विद्वानों को भी भुला देने वाले हैं ॥

कवित्त ॥ बढन वीर वीरम्म। वीर कमधज्ज सौं जुथ्थौ ॥
ता उप्पर गजराज। आइ मद मोप उपन्यौ ॥
दूहित संग उभ्भारि। विरचि वाही गज मथ्यह ॥
जाइ ठनंकिय घंट। कंठ सोभा सुभि तथ्यह ॥
गहि संग सूर लीनी हवकि। जै जै सुर आकास कहि ॥
रुधि धार कुट्टि संमुह चली। मनों मेर सरसत्ति बहि * ॥
छं० ॥ ६५३ ॥ रू० ॥ ३३१ ॥

भंजि मुष्ष गजराज। अप्प सेना उर धारिय † ॥
ता मध्ये सै तीन। फिरग संमुष है डारिय † ॥
ता मध्ये वाघेल। राइ रिपु सल्ल महा भर ॥
घरी एक रन रंग। तुट्टि धर धार गही धर ॥
जित्तौ सु जंग धारह धनिय। विभक्क वीर † बित्तौ जहां ॥
भजि और अत्त कुंडे रिनह। गे राज विजपाल तहां ॥
छं० ॥ ६५४ ॥ रू० ॥ ३३२ ॥

दूहा ॥ वीर देव सम वीर लरि। भग्गि सेन कमधज्ज ॥
ता पच्छैं सोमेस पर। उड्डि सार वज रज्ज ॥ छं० ॥ ६५५ ॥ रू० ॥ ३३३ ॥

---

* यह तुक्कें बूंदी राज के पुस्तकालय की पुस्तक सं० १८४५ की में नहीं हैं ॥

३३१ पाठान्तर:—वीरंम। कमधज्ज। सों। सु। उपर। गजराजं। आय। दूहत। उभारि। वाहि। मथह। जाय। कंति। तथह। संगि। समुह। संमुंह हेडा रिय। चलिय। मनहु। सति। विहि ॥

† पाठको! हम बीसलदेवजी की दानव कथा को अद्भुत रस में कवि का लिखना टिप्पणी २६० में कह आये उसी तरह इस दिल्ली के राजा अनंगपाल जी और कनौज के राजा कमधज्ज विजैपाल जी की लड़ाई का वर्णन वीभत्स और वीर रसों में कवि ने लिखा है कि इस बात की वह हम को युक्ति से सूचना अपने "विभक्क बीर बित्तौ जहां" वाक्य से करता है। यह महाकाव्य कवि ने नव रसों में लिखा है अतएव जहां हम आप को सचेत न भी करें वहां आप विचार कर रस को समझ लीजिएगा ॥

३३२ पाठान्तर:—मुष। सेनहं। धारीय। मध। संमुंह हे। संमुह हहे डारीय। मधे। बघेल। बघ्येल। राय। सल। तुट्टि। गइ। गई। जितो। स। धनीय। जिहां। वीर। ओर। भत्तं। भित्त। छंडे। रनह। गइय। गईय। गये। बिजैपाल तिहां ॥

३३३ पाठान्तर:—दोहा। वीर। बीर। भग्ग। कमधज्ज। पिछे। पछे। सोंमेस। उडी। रज ॥

कवित्त ॥ परी भीर सोमेस । सोम बंसी सहाय भय ॥
मार मार उच्चरंत । सेन चतुरंग हयग्गय ॥
गजदंता बिक्कुरंत । बीर भेरी झननंकत ॥
टोप टूक बिक्कुरंत । षग्ग भागत रननंकत ॥
रस रास बीर कमधज्ज भय । संमुह बीर निहाइया ॥
संभरी राव संभारि छल । लग्गौ लोह उचाइया ॥
छं० ॥ ६५६ ॥ रू० ॥ ३३४ ॥

पद्धरी ॥ उचाय लोह लगि व्योम थान । मानों कि हरिय बल छलन वान ॥
जुट्टौ सु अरिन दल मझ्झ जाइ । मांनों कि सिंघ गज जूथ पाइ ॥ छं० ६५७ ॥
इन विद्ध सोम मिल लोह पूर । आवद्ध रीठ मत्ती करूर ॥
छननंकि बान बजि गोम धंक । कायर पुलंत सूरा निसंक ॥ छं० ॥ ६५८ ॥
हल मिलग सेन बे बाह बीर । बरसें अनंग ग्रज्जंत धीर ॥
माचंत कूह बजि लोह सार । जुट्टंत सूर रिन करि पहार ॥ छं० ॥ ६५९ ॥
राजंत राग सिंधू * कराल । बाजंत बज्ज जनु मेघ काल ॥
हलकंत घाव वाहंत धीर । किलकंत नद्द नारद्द बीर ॥ छं० ॥ ६६० ॥
डहकंत डक्क डाइन डरान । गहकंत गिद्धि सिद्धनिय थान ॥
नाचंत देव महकंत फूल । लहकंत दुष्ष्य मन मष्ष्य हूलि ॥ छं० ॥ ६६१ ॥
उररीय सेन सजि अनगपाल । भर हरो भोर कमधज विसाल ॥
सत पैंड जाइ फिर लग्गि घाय । आतार रीठ मत्तौ उराय ॥ छं० ॥ ६६२ ॥

---

३३४ पाठान्तर:-षरी । सैामेष । वंसी । हय गय । गजदिंता । झननंकंतः । टैाक । बिक्कूरंत । पग । भगंत । रननंक्रित । रननंकंत । रस सुर । बीर । समुंह वीर । विहादया । निहाईयां । संभरी । लग्गै । लगों । उचाईया । उचारिया ॥

* संगीत शास्त्रवेत्ता और अन्य सब को स्मरण में रखने की बात है कि संगीत के आचार्य भरत जो सिंधू राग को वीर रस में मानते हैं उस का प्रचार इस समय तक पाया जाता है अर्थात् लड़ाई में सिन्धु राग गाया और बजाया जाता था और व्यूह रच के लड़ना भी पृथ्वीराजजी के समय तक प्रचलित रहा है ॥

३३५ उचाय । लैाह । व्योम । योम । थांन । मांने । मनों । हरि । हरी वलि बलन बानं । हरीय । बांन । जुट्टो । जुटै । जुटो । मझ । जाय । मांनैां । मांनो । जुथ । पाय । इनि । विध । विधि । सैाम । मिलि । लैाह । पुर । रीट्ठ । मती । बांन । सूरा । हलि । मिलिग । वै वाह । बरसै । ग्रजंट । मांवत । जुटंत । सिंधुं । मैघ । घातय । घायु । बहंत । नद । नारद्द । डक ।

तिन मुष्प सोम मिल्ल चाहुवान । मानों कि रिष्पि दरिया असान ॥
तिन सीस वज्जि धारा निहाय । घरियार वज्जि मनुं वज्र घाय ॥ छं० ॥ ६६३ ॥
परि सोम सूर अरि वधिय जंग । चैासट्ठि घाय वेध्यौ सु अंग ॥
तिन अग्ग परिग पहु मान वीर । छिन भिन्न होय धारा सरीर ॥ छं० ॥ ६६४ ॥
सत पंच परिग है गै कहर । सैं पंच हून परि पित्त सूर ॥
सहसं च पंच कमधज्ज सेन । जीतै। अनंद सुत वीर सेन ॥ छं० ॥ ६६५ ॥
भाजंत सेन वर विजैराज । है गै सु वीर रिन छोरि लाज ॥
पलकंत श्रोन धर चल्लिग पाल्ल । कैातिग्ग देव हर रुंड माल्ल ॥ छं० ॥ ६६६ ॥
पल चरन चार वर रंभ कीन । जै जया सद्द वंदीन दीन ॥ ६६७ ॥ रू० ॥ ३३५ ॥

॥ सोमेश्वरजी का दिल्ली में बड़ा साहस करना ॥

कवित्त ॥ दिल्ली वै सोमेस । किद्धे साहस चहुवानं ॥
सो कमधज्ज नरिंद । वीर विजपाल भगानं ॥
अजरां परि अजमेर । मान वंधव परि चड्डुं ॥
अस्त्त वस्त्त अरु चर्म्म । टंक लभ्भै नन हड्डुं ॥
रघुवंस वीर दिष्यौ निजरि । पहु पंषिनिय रुडाइयां * ॥
अप मंस अप्प कर कड्डि कैं । चील्हां हंकि उडाइयां * ॥
छं० ॥ ६६८ ॥ रू० ॥ ३३६ ॥

डरांन । सिट्ठुनीय । थांन । फूंल । दुत्य । मथ । फूल । सैन । अनंगपाल । हरिय । हरीय । पंड । पैड । जाय । फिरि । मतैा । मुप । सैाम । मिलि । चाहुवांन । मांनैा । रिपि । दरीयायसांन । घरीयार । ननुं । मनैा । घरीयार मनैां । वज्जि ॥ वर्ज्ज । सैाम । जग । चैासठि । वैध्यो । अग । परिम । पहु मांन । होइ । शरीर । गैं । गह्वर । से । सुर । सहसच । परिक्रमध । जीतै। सु जंग सुत वीर सैन । जीतै। सु जंम सुत वीर सेन । हय । गय । कैातिग । चारु । वरं । जे जे जु सद्द । जै जै जु सद्द ॥

* ऐसे प्रयोगों को देख कर के राजपूताने के कवियों को भ्रम के वश न हो जाना चाहिये क्योंकि वे कवि की मातृ भाषा पंजाबी होने के कारण प्रयोग हुए हैं और राजपूताने की भाषा में बहुत से पंजाबी शब्द भी मिले हुए हैं । तथा राजपूताने की भाषा कोई स्वतंत्र भाषा नहीं है किन्तु भील और मेर आदि और जो २ क्षत्री और कवि आदि जिस २ प्रान्त से इस देश में आकर बसे हैं उन सब की भाषाओं से मिल कर बनी हुई एक खिचड़ी है ॥

३३६, पाठान्तर :—दिली । ढिल्ली । वे । सैामेस । चहुवांनं । कंमधिज्ज । नरेंद । विजैपाल । मांन । परचंड्डुं । परंचड्डुं । अस्ति । वस्ति । अरु चर्म्मः । चर्म्म । विर । पंपीनिय । पंषिनि । अप्प । मस । कढि । के । कें । चिल्हां हक्कि । हकि ॥

॥ कमधज्ज का पराजित हो घर जाना और सोमेस का अजमेर को चलना ॥

दूहा ॥ जित्ति भत्ति भारथ्थ भौ। गौ फिरि ग्रह कमधज्ज ॥
उप्पारे अजमेर पहु। डोला पंच सुरज्ज ॥ छं० ॥ ६६९ ॥ रू० ॥ ३३७ ॥

॥ अनंगपाल जी का सोमेश्वर जी को कन्यादान करना ॥

कवित्त ॥ अनग तूंअर नरिंद। अस्स संझो उछंग बर ॥
सुभ सोमेस नरिंद। ग्रहन पानिंग मंडि कर ॥
हेम हय ग्गय भार। दासि दीनी जु पंच सय ॥
सत हस्ती दै सहस। हथ्थ अप्पौ सु देस लय ॥
हिंसार कोट षच्चर विहर। मुत्ती माल सुरंग घन ॥
चल्यौ नरिंद अजमेर दिसि। बलि नरिंद डूक बंध मन ॥
॥ छं० ॥ ६७० ॥ रू० ॥ ३३८ ॥

॥ सोमेश्वरजी का अजमेर आना और वहां बडा उत्सव होना ॥

कवित्त ॥ श्रृंगारिय गजराज। आय ग्रिह जीतिव जानय ॥
प्रहिरावन परिवार। जानि रिति माधव मानिय ॥
बाल वृद्ध जुव्वनह। सुष ग्गावत अति मंगल ॥
रुचि रुचि विविध बचन्न। परसपर जानि सुष्य गन्न ॥
तरु अंब गौष तारुन त्रिविध। सषिय गौष उभ्भिय सरस ॥
प्रतिबिंब मुष्प राका दरस। मुह गावत चहुआन जस ॥
छं० ॥ ६७१ ॥ रू० ॥ ३३९ ॥

---

३३७ पाठान्तर :—जिति। भिति। भारथ। भय। गय। थिह। कम धज। डोला सुरज ॥

३३८ पाठान्तर :—अनंगथाल। तुंवर। शुभ। सैामेस। पांनिग। मडि। हैन हय गय। ज। सित। हथी। हय। हय। सुं। देवसलय। कोट। प्पचर। पचह बिहार। मुत्ति। मुत्तिय। दिशि। बल ॥

३३९ पाठान्तर :—श्रंगारीय। थिह। ग्रह। जीतिव। पारिवार। जांनि। मांनिय। बुद्धि। जुंवनह। मुष गावत। मुंष्प्रि गावत। विविधि। व्रचन्न। जांनि। सु पिंगल। तारुनि। त्रिविधि। सषीय। गौषि। उभीय। प्रति बिब मुष्क राका दरसन। प्रतिव्यंब। मुष चहुंवांन। चहुवान। चहुआंन ॥

॥ पृथ्वीराजजी की कथा का आरंभ करना ॥

पद्धरी ॥ अब कहौं कथ्य चहुआन राइ। जिम लई भूमि पल पग्ग घाइ ॥
जिम अनग राज दिय दिल्लि दान। वपनेंत बलिय कुल चाहुवान ॥ छं० ॥ ६७२ ॥
जिम अगम द्रुग्ग गढ लए कूटि। जिहि किति जिति संसार लूटि ॥
जिम मेछ सेन पग धार षंडि। कै वार साहि जिन बंधि छंडि ॥ छं० ॥ ६७३ ॥
जिम कमध सेन धर धरिय कीन। विध्वंसि जग्ग संयोगि लीन ॥
अब्बुआ राव रष्यौ वलेस। चालुक्क भंजि पट्टन नरेस ॥ छं० ॥ ६७४ ॥
परिहार सिंघ जिम जेर कीन। दरनी विवाहि रस वसि अधीन ॥
देवगिर द्रुग्ग है षुरनि गाहि। बालुका जीति दै जग्ग धाहि ॥ छं० ॥ ६७५ ॥
रिनथंभ द्रुग्ग जद्दव नरेस। कंन्या विवाहि तिन रष्षि देस ॥
भंजे मै वास बहु भील कंक। भर नीर ग्रेह तिन कढ्ढि बंक ॥ छं० ॥ ६७६ ॥
अनमी मसंद तिन नाम वारि। जुगवंत जीव म्रूरष गवार ॥
अवतार अप्प करतार होइ। हूऔ न और ह्वैहै न कोइ ॥ छं० ॥ ६७७ ॥
अजमेर द्रुग्ग न्रप सोम राइ। अदभूत तेज अरि धरन लाइ ॥
दिल्लिय अनंग तोंअर नरिंद। अनसंक कंक पहुमीस इंद ॥ छं० ॥ ६७८ ॥
तिह सुत्त नांहि ग्रह पुत्ति दोय। किय व्याह कमध चहुआन सोइ ॥
छं० ॥ ६७९ ॥ रू० ॥ ३४० ॥

॥ सोमेश्वरजी का अपने तेज बल से तपना ॥

कवित्त ॥ तपै तेज चहुआंन। सूर सोमेस अप्प बल ॥
तिन सु तेज तरवारि। मुक्ख अरु सुक्ख मुष्प जल ॥

३४० पाठान्तर :—कहों। कहौ। कथ। चहुवांन राय। लइ। पगा। पय। घाय। अनंग। द्विलि दां दांन। वपतैत। वपनेंति। चाहुवांन। दुगा। द्रुंगा। जुट्टि। जिंहि। किति। जिति। लुट्टि। लुंटि। जिंन। मेछ। मेछि। पिडं। के। जिन। कमंध। सैन। धर धरीय किंन। धरधरी। धीर। कींच। जिग्य। जगि। संजोगि। लिंन। लींच। अवुंआ। आंबूआ। जिंन। जेर। किंन। देवगिरि। हे। गाहि। दे। धाह। थःभ। द्रुग। दुंग। जदेव। कन्यां। रषि। भंजे। मेवास। मिवास। भरें। ग्रेह। कढि। नांम। जुंगवंत। किरतार। सोइ। हूंओ। हूउन। हूहे। हू हैं। कीय। दुग। द्रुंग। नृप। सोंम। घरन। दिलिय। दिल्लीय। तुंवर। पहुवीस। पुहवीस। तिहिं। सुत। यिह। गृह। पुत्री। चहुंवांन। चहुआंन। सोय॥

सुभट भाट सँग थान। चित्त चारन चतुरंगम ॥
जहँ तहँ लच्छि निवास। सु बसि विलसंत सुरंगम ॥
सुनियै न श्रवन पर चक्र भय। सुजस सकल जंपै जगत ॥
मानिक्क राइ कुल उद्धरन। सीम षलनि जहँ तहँ षगत ॥
छं० ॥ ६८० ॥ रू० ॥ ३४१ ॥

॥ अनंगपालजी का अपनी दो पुत्रियों में से सुन्दरी विजैपालजी को और कमला सोमेश्वर जी को प्रदान करना ॥

दूहा ॥ अनग पाल पुत्री उभय। इक दीनी विजपाल ॥
इक दीनी सोमेस कौं। बीज ववन कलि काल* ॥
छं० ॥ ६८१ ॥ रू० ॥ ३४२ ॥

एक नाम सुर सुंदरी। अनि वर कमला नाम ॥
दरसन सुर नर दुल्लही। मनों सु कलिका काम ॥
छं० ॥ ६८२ ॥ रू० ॥ ३४३ ॥

॥ जिस दिन सोमेस का विवाह हुआ उस दिन क्या २ हुआ ॥

कवित्त ॥ ज दिन व्याहि सोमेस। त दिन अमरन मन उद्दित ॥
त दिन बीर बेताल। काल कलहागम कुद्दित ॥
त दिन अवनि उमहीय। पुच इच्छि भार उतारै ॥
छच तेज छित छज्जि। देव दानव पुंतारै ॥

३४१ पाठान्तर:—तपे। चहुआंन। चहुवांन। मुछ। मुंछ। अछ। मुष। सुभट थाट संग भाट चित्त चोरन चतुरंगम। जहां तहां। जिहां तिहां। जह। तह। लछि। वशि। सुनीयै। जंपे। मांनिक्क। कुंल। षलन। जिहां तहां। जह। तह॥

३४२–३ पाठान्तर:—अनंगपाल। दिनी। विज्जैपाल। विजैचंद। सोमेस। चिप वपुन। चाल। दंद ॥ ३४२ ॥ नांम। शूर सूंदरी। सुदरी। वीअ कमला वड़ नांम। वै। अनि वर मलया नांम। दुल। मनौं। सुं। कांम ॥ ३४३ ॥

* चंद कवि का यह वाक्य "बीज बवन कलि काल" हमारे पाठकों के ध्यान देकर यह समझने योग्य है कि यद्यपि चंद सोमेश्वर जी के घर का कविराज था परंतु वह कैसा यथार्थ वक्ता था। क्या आज भी कोई कवि अथवा कविराज ऐसा स्पष्ट कह अथवा लिख सक्ता है?

ता दिन सु सार सज्या समह । अस अंतर कायर कपे ॥
मानिक्क राइ अनगेस घर । पानि ग्रहन ज दिन थपे ॥

छं० ॥ ६८३ ॥ रू० ॥ ३४४ ॥

सोमेश्वरजी की राणी के गर्भ रहना और उस का प्रतिदिन बढ़ना ॥

कवित ॥ कितिक दिवस अंतरह । रहिय आधान रानि उर ॥
दिन दिन कला वढंत । मेघ ज्यों बढन भद्द धुर ॥
चंद्र कला सित पष्य । जेम बाढंत दिनं दिन ॥
मुगधा जोवन चढत । मिलत भरतार षिनंषिन ॥
उदित अधान सुभ गातनह । जेम जलधि पुन्निम बढहि ॥
हुलसंत हीय जे प्रीय चिय । जिम सु जोति जनिता चढहि ॥

छं० ॥ ६८४ ॥ रू० ॥ ३४५ ॥

॥ सोमेश्वरजी की तुअरि राणी का पृथ्वीराजजी को जनना ॥

दूहा ॥ सोमेसर तोंअर घरनि । अनगपाल पुत्तीय ॥
तिन सु पिथ्य गर्भं धरिय । दानव कुल छत्तीय ॥

छं० ॥ ६८५ ॥ रू० ॥ ३४६ ॥

॥ सोमेसजी के प्रथम पुत्र ढुंढा के वर से होना स्मरण कर गंधर्वादि का प्रसन्न होना और उत्सव मनाना ॥

कवित्त ॥ प्रथम पुत्त सोमेस । गंधपुर ढुंढा गड्डिय ॥
भई सुद्धि गंध्रवन । पुहप मंगल दुज पड्डिय ॥
अद्ध रैनि अनु जानि । लियौ बालुक सिर सिद्धिय ॥
गयन बयन घन सद्द । जुद्ध जीवन जय दिड्डिय ॥

३४४ पाठान्तरः—व्याह । सैमेसं । ता । अमरंत । अमरंन । उद्दित । काम कलहागम कुदित । उंमहिय । उमहिय । नाथ मोहि भार उतारै । तेज । छिति । छनि । दिव वांनव्वि पुंतारै । पै । दीन कहुं दवि पुंतारै । कंपींय । कंपीयं । मानिक्क । रायं । अनगैस । जं दिन । थपिय । थपीय । थपै ॥

३४५ पाठान्तरः—कितकं । आधांन । रांनि । ज्यों मेघ वढंत भद्द धुर । ज्यो । ज्यों मेघ वढुंत भट्ट धुर । पप । पषि । जैम । यौवनं । पिन पिनं । षिनि षन । उदित्त अधान सुभगंतनह । जैम । पूनिम । पूंनिम । हुंलषंत । जै । जीय । ज्योतिं ॥

३४६ पाठान्तरः—सोमेशर । तुंअर । गभ्भ पिथं । पिथ्यं । छित्तीय ॥

खित सुभट सूर छह सथ्य चखि। चंद भट्ट कीरति करन ॥
संजोगि जोति तप राषि सत। वरष तीस दसह वरन ॥
छं० ॥ ६८६ ॥ रू० ॥ ३४७ ॥

कवित्त ॥ बल तापस तप तपिय। आप बीसल सिर धारिय ॥
बरष असी तीन सै। गुहा ढिल्ली ढिग तारिय ॥ †
खित अंजन रजनीय। पुरनि गंध्रव प्रग धारिय ॥ †
* * * * * *
अवतारलियो प्रिथिराज पहु। ता दिन दान अनंत दिय ॥
कनवज्ज देस गज्जन पटन। किलकिलंत कालंकनिय ॥
छं० ॥ ६८७ ॥ रू० ॥ ३४८ ॥

॥ जिस दिन पृथ्वीराजजी का जन्म हुआ उस दिन देशान्तरों में क्या २ हुआ ॥

कवित्त ॥ ज दिन जनम प्रिथिराज। षरिग बत्तह कनवज्जह ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज। त दिन गज्जन पुर भज्जह ॥
ज दिन जनम प्रिथिराज। त दिन पट्टन वै सड्डिय ॥
ज दिन जनम प्रथिराज। त दिन मन कालन षड्डिय ॥
ज दिन जनम प्रथिराज भो। त दिन भार धर उत्तरिय ॥
बतरीय अंस अंसन ब्रह्म। रची जुगें जुग वत्तरिय ॥
छं० ॥ ६८८ ॥ रू० ॥ ३४९ ॥

---

३४७ पाठान्तर:—सोमेस। गधपुर। ढुंढां धारीय। भट्ट मुद्दि गंध्रवन। गंध्रुवन। पढिय। रैंन। रेनि। जांनि। लयै। लीयो। वालिक। वालक। सुर। सद्दिय। गैंन वैंन। घसद। गेंन। वैंन घन सद। सुट्ठु जीपन जय दिट्टीय। सतं। सुर। जोति। सन ॥

† यह दोनों तुक सं० १८४५ की पुस्तक में नहीं हैं ॥

* यह तुक हमारे पास की किसी भी पुस्तक में नहीं है ॥

३४८ पाठान्तर:—वलि। सिल। धारीय। रंजनीय। गंध्रुव। धारीय। लीयो। प्रिथीराज। दांन। क्नवज। देसं। गजन। प्रटन। प्रट्टन। किलकंलं। कालक नीय ॥

३४९ पाठान्तर:—द्दिनि। जनमि। प्रिथीराज। परिग वत्तह कनवजह। जनमी। गंजन पुर भंजन। गजन पुर भजह। जा। ता। वे। सड्डीय। जनमी। ता। जनिमि। भय। जद्दिन जनंम प्रथिराज भुअ। भुय। ता। उतरिय। अवतरिय। अवतरीय। जुगे। जुग। वतरीय ॥

॥ अनंगपालजी का अपनी पुत्री के पुत्र को देखना और उत्सव करना ॥

कवित्त ॥ अनग पुछवै नरेस । व्यास जग जोत बुलाइय ॥
लगन लिद्धि अनुजा सुत । नाम चिह्नु चक्क चलाइय ॥
पुप्फ पानि धरि धूप । पिघ्य पाइन दो असह ॥
कलि अवतार कुलाह । असपति पारन कंसह ॥
वहु जुद्ध रुद्ध कलि जुग्ग वर । ख्रित्त सित्त दैतन भिरन ॥
कवि चंद दिली यह कारने । इह अपुव्व अवतार लिन ॥
छं० ॥ ६८९ ॥ रू० ॥ ३५० ॥

पुत्री पुत्र उछाह । दान मानह घन दिद्धिय ॥
धाम २ * गावत धम रि । मनहु अदि वन मनि लिद्धिय ॥
कनवज जैचँद मात । भयो संभरि वहनी सुत ॥
तिन पवंत दुज पठिय । थार जर चीर थपिय थुत ॥
प्रथिराइ परीगह दान दुज । किय समाप सव्वन विवरि ॥
दस दिवस रष्षि अप्पन अवर । अति उछाह आनंग करि ॥
छं० ॥ ६९० ॥ रू० ॥ ३५१ ॥

---

* इस को कोई नई बात नहीं समझना चाहिये किन्तु बहुत पुरानी रीति है कि काव्य में जहां एक शब्द दो बार प्रयोग होता है और दो बार उस का पृथक २ प्रयोग करने से छंद टूटता हो तो उस को एक बार लिख कर उसके आगे २ दो का अंक कर देते हैं और उस से अभिप्राय यह रहता है कि उस को गद्य में करने के समय अथवा उस का अर्थ करते समय उस शब्द को दो बार प्रयोग कर लेना कि उस के गौरव का नाश न हो जाय। ऐसे प्रयोग प्राचीन कवियों के काव्यों में आते हैं परंतु अब लोगों ने उन के स्थानों में नये पाठ धर दिये हैं और इस सूक्ष्म कारण पर ध्यान नहीं दिया है। किन्तु गद्य में तो अब तक यह रीति भले प्रकार प्रचलित है ॥

३५०—५१ पाठान्तर:—अनंगपाल । पुहवी । ग्रोति । बुलाईय । लिद्ध । दिट्ठ । सु । पानि । नांम चिहुं चक्र चलाइय । चलाईय । पुष्फ पांनि । पिय । यायन । द्रो । असह । कुलांह । असपति । वहुं । जुंद्ध । जुंगा । जुग । भ्यत । ख्रित सित । देतन । भिरिय । करत इह अपूरव अवतार लीय । अपुवः ॥ ३५० ॥ दांन । मांन दिट्ठीय । धांम धांम । धमारि । मनहुं आदि वंत मनि लट्ठीय । कनवजह । कन्नवज्जह । जैचंद । जेचंद । पिता बहिनी सुतनी सुत । तिम । यवंग । दुजि । पठीय । थपीय । थुति । श्रुति । प्रहिराय । परिगाह । परिगह । दांन । कीय । न्येमाप । समाप । सवन । विवर । दिस । रिष्षि । रषि । अपन ॥

॥ पृथ्वीराजजी का जन्म होना सुन कर सोमेसजी का उत्सव करना ॥

दूहा ॥ सुनि सोमेस वधाइ दिय। दै गै चीर गुराव ॥
अति उछाह आनंद भरि। न्रप मुष चढ्ढिय आव ॥
छं० ॥ ६९१ ॥ रू० ॥ ३५२ ॥

॥ सोमेसजी का पृथ्वीराजजी को अपने घर लाने को कहना ॥

दूहा ॥ तब बुल्लाइ सोमेस बर। लौहानौ अरु चंद ॥
लै आवहुँ अजमेर धर। पहोंनै घरह सु इंद ॥
छं० ॥ ६९२ ॥ रू० ॥ ३५३ ॥

॥ सोमेसजी का पृथ्वीराजजी को अजमेर ले आना ॥

दूहा ॥ करि आनौ * उछ्छाह किय। चल्लिय राज अजमेर ॥
सहस बाजि है सुभर बर। सत्त सषी मनि मेर ॥
छं० ॥ ६९३ ॥ रू० ॥ ३५४ ॥

॥ पृथ्वीराजजी का जन्म संवत् और उनके प्रागत्य का हेतु ॥

दूहा ॥ एकादस सै पंच दह। विक्रम साक अनंद ॥
तिहि रिपु जय पुर हरन कौं। भय प्रिथिराज नरिंद ॥
छं० ॥ ६९४ ॥ रू० ॥ ३५५ ॥

॥ पृथ्वीराजजी के शाक की संज्ञा का सूत्ररूप कवि का वाक्य ॥

दूहा ॥ एकादस सै पंच दह †। विक्रम जिम ध्रम सुत्त ॥
त्रतिय साक प्रथिराज कौ। लिष्यौ विप्र गुन गुप्त ॥
छं० ॥ ६९५ ॥ रू० ॥ ३५६ ॥

---

३५२ पाठान्तरः—दीय। हे। गे। वीर। भर। मुंष। चढिय। आब ॥

३५३ पाठान्तरः—चलाय। सैामेस। लैाहंनै। पुर गजब अति आसनह। महन तथ कवि चंद पुर गज्जन अति हरि आसनह। पुहन तथ कवि चंद। आवहु। घर।

* स्त्री को उसका पति अथवा पति के संगे संबन्धी आदि उसके पिता के घर से अपने घर लाते हैं वह आना अथवा आनौ कहलाता है ॥

३५४ पाठान्तरः—उछाह। कोय। चलीय। हे। वर सत। मति। मैर ॥

३५५ पाठान्तरः—एकादश। से। सं। शाक। तिह रिपु पुर जय हरन कों। हुअ। हुय। भे। पृथिराज ॥ बूंदी वाली सं० १८४५ की पुस्तक में इसके स्थान में ३५६ रूपक है और उस के स्थान में यह है ॥

† इसकी पहिली आधी तुक का पाठ हमारे पास की सब पुस्तकों में "एकादस समयै सु छत" करके है किन्तु जो हमने रक्खा है वह बूंदी राज की पुस्तक से उद्धृत किया है।

३५६ पाठान्तरः—एकादश। समप्रै। समयै। ध्रंम। सुंत। त्रीयति। त्रीयनि। शाक। पृथीराज। प्रिथीराज। कौं ॥

इन रूपक ३९५ और ३९६ पर हम यह टिप्पणी अत्यन्त आनन्द के साथ लिखकर हिन्दी भाषा के महा कवि चंद बरदाई की संवत् संबन्धी बड़ी कठिनता के इस शोध को पुरातत्त्व वेत्ताओं की सेवा में भले प्रकार विचार करने को प्रवेश करते हैं । यद्यपि हमारे ज्योतिष शास्त्रादि के अच्छे २ विद्वान इष्ट मित्रों में से कितनेक महाशय कि जिन को यह शोध विदित हो गया है हमको First discovery प्रथम शोध करने का मान देते हैं किन्तु हम उनकी परम प्रीति और न्याय बुद्धि के साथ गुण ग्राहकता के लिये अत्यन्त आभारी होकर तथापि यह कहते हैं कि जब अन्य पुरातत्त्ववेत्ता विद्वान् भी हमारे इस शोध को उसके गुण दोषों का अन्वेषण करके स्वीकार करेंगे तब हम अपने को स्वयंरीत्या कृत कृत्य समझेंगे ।

अब आप चंद की संवत् संबन्धी कठिनता को इस प्रकार से समझने का प्रयत्न करें कि प्रथम तो रूपक ३९५ को बहुत ध्यान देकर पढ़ें । तदनन्तर उसका अन्वय करके यह अर्थ करें कि (एकादस से पचदह) ग्यारह से पंदरह (अनन्द विक्रम साक अथवा विक्रम अनन्द साक) अनन्द विक्रम का साक अथवा विक्रम का अनन्द साक (तिहि) कि जिसमें (रिपुजय) शत्रुओं को विजय करने (पुरहरन) और नगर अथवा देश देशान्तरों का हरन करने (कों) को (प्रिथिराज नरिंद) पृथ्वीराज नामक नरेंद्र (भय) उत्पन्न हुए ॥

तदनन्तर इसके प्रत्येक शब्द और वाक्यखंड पर सूक्ष्म दृष्टि देकर अन्वेषण करें कि उसमें चंद की Archaic style प्राचीन गूढ़ भाषा होने के कारण संवत् संबन्धी कठिनता कहां और क्या घुसी हुई है । कवि के प्रतिकूल नहीं किन्तु अनुकूल विचार करने पर आप की न्याय-बुद्धि झट खोज कर पकड़ लावेगी कि विक्रम साक अनन्द वाक्यखंड में-और उसमें भी अनन्द शब्द में हम लोगों को इतने वर्षों से गड़बड़ा कर भ्रमा रखनेवाली चंद की लाघवता भरी हुई है । इतनी जड़ हाथ में आय जाने पर अनन्द शब्द के अर्थ की गहराई को ध्यान में लेकर पक्षपात रहित विचार से निश्चय कीजिये कि यहां चंद ने उसका क्या अर्थ माना है । निदान आप को समझ पड़ेगा कि अनन्द शब्द का अर्थ यहां चंद ने केवल नव-संख्या-रहित का रक्खा है अर्थात् अ = रहित और नन्द = नव ९ । अब विक्रमे साक अनन्द को क्रम से अनन्द विक्रम साक अथवा विक्रम अनन्द साक करके उसका अर्थ करो कि नव-रहित विक्रम का शक अथवा विक्रम का नव-रहित शक अर्थात् १०० — ९ = ९० । ९१ अर्थात् विक्रम का वह शक कि जो उसके राज्य के वर्ष ९० । ९१ से प्रारंभ हुआ है । यहीं थोड़ी सी और उत्प्रेक्षा करके यह भी समझ लीजिये कि हमारे देश के ज्योतिषी लोग जो सैकड़ों वर्षों से यह कहते चले आते हैं और आज भी वृद्ध लोग कहते हैं कि विक्रम के दो संवत् थे कि जिनमें से एक तो अब तक प्रचलित है और दूसरा कुछ समय तक प्रचलित रह कर अब अप्रचलित होगया है । और हमने भी जो कुछ इस के विषय की विशेष दंत कथा कोटा राज्य के विद्वान कविराज श्री चंडीदानजी से सुनी थी वह इस महाकाव्य की संरक्षा में जैसी की तैसी लिख दियी है अतएव विदित हो कि विक्रम के दो संवत् हैं । एक तो सनन्द जो आज कल प्रचलित है और दूसरा अनन्द जो इस महाकाव्य में प्रयोग में आया है । इसी के साथ इतना यहां का यहां और भी अन्वेषण कर लीजिये कि हमारे शोध के अनुसार जो ९० । ९१ वर्ष का अंतर उक्त दोनों संवतों का प्रत्यक्ष हुआ है उसके अनुसार इस महाकाव्य के संवत् मिलते हैं कि नहीं । पाठकों को विशेष श्रम न पड़े अतएव हम स्वयम् नीचे के कोष्टक में कुछ संवतों को सिद्ध कर दिखाते हैं:—

पृथ्वीराजरासे के अनन्द संवतों का कोष्टक।

पृथ्वीराजजी का	रासे में लिखे अनन्द संवत् में	सनन्द और अनन्द संवतों का अंतर जोड़ो	यह सनन्द संवत् हुआ उस में	पृथ्वीराजजी की शेष वय जोड़ो	परीक्षा के लिये अंतिम लड़ाई का सिद्ध संवत्
जन्म	११११५	९० । ९१	१२०५ । ६	४३	१२४८ । ९
दिल्ली गोदजाना	११२२ *	९० । ९१	१२१२ । ३	३६	१२४८ । ९
कै मास जुद्ध	११४०	९० । ९१	१२३० । १	१८	१२४८ । ९
कनोज जाना	११५१	९० । ९१	१२४१ । २	७	१२४८ । ९
अंतिम लड़ाई	११५८	९० । ९१	१२४८ । ९	०	१२४८ । ९

जो कुछ हमने यहां तक कहा है उस से और सब बातें तो हमारे पाठकों के मन में बैठ गई होंगी किन्तु ३५५ रूपक में जो अनन्द शब्द प्रयोग हुआ है उस में किसी २ को कुछ संदेह रहेगा; अतएव हम फिर उस के विषय में कुछ अधिक कहते हैं। देखो संशय करना कोई बुरी बात नहीं है किन्तु वह सिद्धान्त का मूल है। हमारे गौतम ऋषि ने अपने न्याय-दर्शन में प्रमाण और प्रमेय के पीछे संशय को एक पदार्थ माना है और उसके दूर करने के लिये ही मानो सब न्यायशास्त्र रचा गया है। यदि अनन्द का नव-संख्या-रहित का अर्थ किसी की सम्मति में ठीक नहीं जंचता हो तो उस से इस स्थल में बहुत अच्छी तरह घटता हुआ कोई दूसरा अर्थ बतलाना चाहिये। परंतु बात तब है कि वह सर्व तंत्र सिद्धान्त universally true से उसी तरह सिद्ध होसक्ता हो कि जैसे हमने यहां अपना विचार सिद्ध कर दिखाया है। सब लोग जानते हैं कि हमारे इस शोध के पहिले तक युवा और मध्य वय के कोई २ कवि लोग इस अनन्द संज्ञा वाचक शब्द का गुण वाचक अर्थ शुभ Auspicious का करते रहे हैं और चारण जाति के महामहोपाध्याय कविराज श्रीश्यामलदासजी ने भी अपने इस महाकाव्य के खंडन-ग्रंथ में यही अर्थ माना है। परंतु विद्वानों के विचारने और न्याय करने का स्थल है कि इस दोहे में आनन्द पाठ नहीं है और न छंद के लक्षण के अनुसार वह बन सक्ता है किन्तु स्पष्ट अनन्द पाठ है। यदि यहां संज्ञा वाचक आनन्द पाठ भी होता तो भी उस का गुण वाचक शुभ का अर्थ नहीं हो सक्ता था परंतु संस्कृत भाषा का थोड़ासा ज्ञान रखने वाला भी यह जान सक्ता है अथवा जिनके पास संस्कृत भाषा के कोषों की पुस्तकें हैं वह उनके बल से भी जान सक्ते हैं कि वाचस्पत्यबृहत् संस्कृताभिधान के पृष्ठ १४९ और शब्दार्थचिंतामणि के पृष्ठ ९९ में स्पष्ट अनन्द के यह अर्थ लिखे हैं कि "त्रि० न नन्दयति नन्द, आनन्दयितृभिन्ने, अनानन्दे असुखे" इत्यादि। देखो जब अनन्द शब्द का सत्य अर्थ दुःख का है तो फिर क्या सुख और शुभ का अर्थ करना अयोग्य नहीं है। यदि कवि लोग जैसे अलंकार और नायका भेद की सूक्ष्मता जान लेने के लिये परिश्रम करते हैं वैसे ही जो सूक्ष्म दृष्टि देकर देखते तो झट जान लेते कि यहां कवि गूढार्थ में संवत् का भेद बता रहा

* यह संवत् हमने पृथ्वीराजजी के जो परवाने हमको मिले हैं उन की छाप में लिखा हुआ है उन से ग्रहण किया है किन्तु रासे की अब तक प्राप्त हुई पुस्तकों में तो किसी में ११३८ और किसी में ११२८ लिखा मिलता है॥

है और सुख अथवा दुःख और शुभ अथवा अशुभ के स्थूल अर्थों को प्रयोग में नहीं लेता है। व्याकरण शास्त्र की रीति से भी आनन्द और अनन्द शब्दों की प्रयोग सिद्धी में अंतर है। अब हमारे अर्थ की पुष्टि में विचार कीजिये :—

१ प्रथम तो विचार करने पहिले ऐसे २ दुराग्रहों से अपने २ हृदय को अपवित्र नहीं कर रखना चाहिये कि चंद ऐसा मूर्ख था कि उसे अनुस्वार और विसर्ग तक का ज्ञान न था और न वह संस्कृतादि किसी भाषा में व्युत्पन्न पंडित था और जितनी भूलें इस महाकाव्य में मिलती हैं वह सब उसने ही किर्यो हैं॥

२ दूसरे देखो कि कवि यहां विक्रम के शक की संख्या के विशेषण में अनन्द शब्द का प्रयोग करता है और यहां संख्या-वाचक अर्थ का ही प्रसंग है। और इस बात की भी कुछ अत्याव श्यकता नहीं है कि हम यहां अनन्द को आनन्द का अपभ्रंश आदि समझ कर शुभ का ही अर्थ करें क्योंकि कवि इस के साथ ही रूपक ३५६ में स्पष्ट "तृतीय साक पृथिराज कौ लिख्यौ" कहता है। और संज्ञा वाचक आनन्द का अपभ्रंश रूप अनन्द कि जो तथापि संज्ञा वाचक ही होगा, उस का गुण वाचक अर्थ शुभ auspicious कदापि नहीं बन सक्ता॥

३ तीसरे इस स्थल के प्रसंग से अनन्द शब्द को अ + नन्द से बना मानना चाहिये। और अ का यहां रहित अर्थ करने के लिये इस श्लोक को प्रमाण में लेना चाहिये :—"तत्सादृश्यमभावश्च, तदन्यत्वं तदल्पता। अप्राशस्त्यं विरोधश्च नञर्थाः षट प्रकीर्त्तिताः"॥ और नन्द के नव संख्या वाचक अर्थ के ग्रहण करने को वैसे ही समझो तो ऋषि शब्द ७ सात के वाचक की भांति "नव नन्दा भविष्यन्ति-चाणक्यो यान् हनिष्यति' स्कं॰ पु॰। तथा श्रीधर स्वामी कृत भागवत की टीका में "तेषां सपुत्राणां नवसंख्यत्वेन तत्तुल्य संख्या के" स्पष्ट ही है अतएव अधिक प्रमाण नहीं लिखते हैं॥

४ चौथे चंद का अनन्द शब्द प्रयोग करने से उस का यह आन्तरीय अभिप्राय होना ज्ञात होता है कि विक्रम का जो प्रचलित संवत् है उस की मूल संख्या में संकर राजा नन्द का कुछ समय मिला हुआ है अर्थात् वह संवत् जिस गणित के अनुसार है वह उक्त नन्द के समय सहित थी और चंद ने जिस प्रकार से काल निरूपण किया है वह नन्द के समय रहित है अर्थात् चंद का लिखा विक्रमी संवत् शुद्ध विक्रमी है। इसी लिये हमने इन दोनों संवतों को अनन्द और सनन्द नामों से इस टिप्पण भर में ग्रहण किये हैं। यदि कोई मनुष्य यह हठ कर बैठे कि हमको चंद का अनन्द संवत् केवल प्रत्यक्ष प्रमाणों से ही सिद्ध कर दिखाओ तो क्या यह हमारा उसको उत्तर देना अन्यथा होगा कि जिस प्रमाण रूप प्रचलित विक्रमी संवत् की अपेक्षा से तुम चंद के लिखे अनन्द संवत् रूपी प्रमेय को सिद्ध कराना चाहते हो तो प्रथम तुम अपने प्रमाण को वैसे ही प्रत्यक्ष प्रमाणों से निर्दोषी सिद्ध कर दिखाओ कि फिर हम उसको प्रमाण रूप मान कर चंद के अनन्द संवत् रूपी प्रमेय को सिद्ध कर उसकी अशुद्धता समझ लें; क्योंकि यह दावा तुम्हारा है कि चंद का लिखा संवत् अशुद्ध है। अतएव वादी के करने का काम हम ही करके प्रचलित विक्रमी संवत् की सत्यता की परीक्षा करते हैं। परीक्षा करने के पहिले एक यह सिद्ध हुई सी बात स्मरण कर लेनी चाहिये कि आज तक सर विलियम् जोन्स, मिस्टर सैम्यूऐल डेविस, कौलब्रुक, बैन्टली, हाल, लैसन, डाक्टर भाऊ दाजी, बुलर, ह्विटनी, अलबीरूनी, डाक्टर हंटर और डाक्टर कर्ण आदि ने जो २ शोध बड़े २ परिश्रम से विक्रमादित्यजी का ठीक समय निश्चय करने के लिये कई एक प्रकारों से अर्थात् विक्रमादित्यजी के समकालीन राजा और ग्रंथकर्त्ता आदि के समयादि का भी विवर्ण करके किये हैं उन से सिवाय इस प्रकार से सिद्धान्त

कर लेने के कि वर्तमान विक्रमी में से १३५ वर्ष घटाने से शालिवाहन का शक और ५६ वा ५७ घटाने से ईसवी सन् और इसी प्रकार से अन्य संवत् भी और इसी हिसाब से ईसा मसीह के ५६ वा ५७ वर्ष पहिले कोई विक्रम नाम का राजा हुआ था कि जिस का यह संवत् प्रचलित है, न तो कोई और फल निकला है और न कोई वैसा प्रामाणिक प्रत्यक्ष प्रमाण किसी को मिला है और न कोई आज दे सक्ता है कि जैसा विचारे स्वर्गवासी चंद कवि के लिखे संवतों को सिद्ध करने के लिये बड़ी धूम धाम से हम चाहते हैं। क्या यह न्याय है कि विक्रम के प्रचलित संवत् को सिद्ध करने के समय तो हम गोल माल कर जावें और चंद के संवत् को सिद्ध करने के लिये दूसरे से प्रत्यक्ष प्रमाण मांगे? फिर विचार कीजिए कि संस्कृत भाषा के कोषादि में जो यह:-"तत्र शककारकस्य विक्रमादित्यस्य हननात् शालिवाहनस्य शक कर्तृत्वम्" लिखा प्राप्त होता है और आईन अकबरी के ग्रंथकर्त्ता ने भी यही आशय ग्रहण किया है। इस से विक्रमादित्यजी का मरण तो १३५ में होना निश्चित ही है तथा १३५ वर्ष तक राज्य करना भी स्वतः सिद्ध है। अब रहा यह कि विक्रम के संवत् का प्रारंभ उनके जन्म से अथवा गद्दी पर बैठने के दिन से अथवा गद्दी पर बैठने पीछे किसी बड़े कार्य के करने के दिन से हुआ है। यदि ज्योतिर्विदाभरण को कदाचित् सत्य होने की अपेक्षा असत्य ही मानें और उसे किसी भी समय में बना क्यों न ग्रहण करें तथापि उस के अतिरिक्त कोई अन्य प्रमाण दृष्टि में नहीं आता कि जिस के इस:-"निहन्ति यो भूतलमंडले शकात्। सपंचकोट्यब्जदलप्रमान् कलौ॥ स राजपुत्रः शककारको भवेत्। नृपाधिराज्ये ह्युतशाककर्तृ हा॥" वाक्य के अनुसार पचपन करोड़ शकों को अथवा किसी शक-कर्त्ता को मारने से विक्रमी संवत् का प्रारंभ होना ही अति संभवित प्रतीत होता है। तदनन्तर यह अनुमान करना भी अनुचित नहीं है कि विक्रम ने कुछ अपने बालकपन में तो ऐसा बड़ा साका किया ही न होगा किन्तु उस समय उस की कम से कम २५ वर्ष की वय तो भी होगी कि १३५ + २५ = १६० एक सौ साठ वर्ष की सब वय सिद्ध होती है। निदान उसको हम पृथ्वीराजजी और समरसीजी के ९० वर्ष तक न जीव सकने के अनुमान की अपेक्षा से बहुत ही असंभव समझ सक्ते हैं। सारांश यही है कि चंद ने विक्रम की १६० वर्ष की वय की असभाव्यता से जो अपने लिखे संवतों को अनन्द संवत् संज्ञा दियी है वह अन्यथा नहीं है और प्रचलित विक्रमी संवत् कि जिस को हम सनन्द कहते हैं उस में अवश्यमेव कुछ नन्द का समय मिला हुआ है और वह चंद के संवत् को दोष देने जैसा स्वयम् निर्दोषी प्रमाण रूप नहीं है। जब कि प्रचलित विक्रमी संवत् अपने को भले प्रकार सिद्ध कर प्रमाण नहीं दे सक्ता तो वह जिस प्रकार से आज माना जाता है उसी प्रकार पृथ्वीराजरासे के संवत् ९०। ९१ वर्ष के अंतर से माने जाने में भी कुछ हानि दृष्टि नहीं आती। हमको एक बड़ा शोक इस बात का है कि यदि विद्वानों ने रूपक ३५५ और ३५६ को एक दूसरे की संगति लगा कर विचारे होते और रूपक ३५६ को बिलकुल्ल ही न छोड़ दिया होता तो रासे के संवतों के विषय में संदेह ही नहीं हुआ होता क्योंकि वे दोनों रूपक मानों खड़े हुए पुकार २ कर कह रहे हैं कि हमारे आशय यह हैं॥

५ पांचवें चंद के नवें नन्द के समय को नहीं ग्रहण करने का एक यह भी प्रबल कारण सब के ध्यान में आय सकने जैसा है; कि महानन्द को नौ पुत्र थे, आठ तो विवाहिता रानियों से और एक चंद्रगुप्त नामक मुरा नाम की नाइन उपस्त्री से। हमारी इस बात को भी स्मरण में रखनी चाहिये कि मुरा नाम की नाइन से उत्पन्न होने के कारण चंद्रगुप्त और उस के वंशज मौर्य्य कहलाये हैं। अन्य देश देशान्तर के मनुष्यों की अपेक्षा हमारे स्वदेशीय बन्धुओं के

समीप कुलीन और अकुलीनों में परस्पर द्वाह वैर का होना कोई आश्चर्यदायक बात नहीं है क्योंकि यह व्यवहार सदा से चला आया है और आज भी सब छोटे बड़ों में विद्यमान है अर्थात् कोई अकुलीन चाहे जितनी उन्नति की दशा को क्यों न प्राप्त हो जाय और कोई कुलीन चाहे जैसा दरिद्री भी क्यों न हो जाय किन्तु वह कुलीन उस अकुलीन को संकर ही समझेगा। और इस से सदा दोनों में परस्पर द्वेष रह कर जो जब प्रबल होगा तब वह उस निर्बल को अवश्य नाश कर देगा और वे दोनों अपनी २ वंशावली में अपने २ वैरी का नाम तक नहीं गिनेंगे। इसी कारण से हमारे आर्य-काल-निरूपकों The Arya Chronologists की भी यह शैली होगई है कि जो स्वयम् कुलीन हैं अथवा कुलीनों के पक्षपाती हैं वह उस अकुलीन राजा के नाम और समय को अपनी संपादित् ख्यात में नहीं लिखते हैं और उस के समय आदिक को या तो उस के आगे पीछे के किसी कुलीन राजा में मिला देते हैं अथवा ऐसे स्थलों में यह लिख देते हैं कि इतने समय तक "कटार अथवा तरवारि ने राज किया इत्यादि"। इस के अनेक उदाहरण राजपुत्रों की वंशावलियों में मिल सक्ते हैं परंतु एक ऐसा आधुनिक उदाहरण है कि जिस को सर्व साधारण जानते हैं वह मेवाड राज की वंशावली में बनबीर का है कि उस से ही विचार देखिये। क्या तो मेवाड देश के परम कुलीन महाराणाजी साहब और क्या और कुलीन उमराव सरदार और पासवानादि लोग और क्या हम जो कदाचित् मेवाड की ख्यात Chronicles लिखें तो बनबीर का नाम और उस का समय हमारी कुलीन अवली में न तो किसी २ ने मिलाया है और न हम मिलावेंगे किन्तु उस का वृत्त सब के जानने के लिये हम एक पृथक टिप्पण में लिख देंगे कि जिस से हम को पुरातत्ववेत्ता वृत्त का चोर न ठहरावें और जो कोई कदाचित् हम को ऐसा करने के कारण मुतअस्सिब अर्थात् दुराग्रही भी कहेंगे तो हम उस को अपनी एक अति प्रिय पदवी समझ कर तथापि अभिमान करेंगे। इसी लिये कुलीन क्षत्रियों के अभिमानी चंद बरदाई ने विक्रमादित्यजी के समय में से अकुलीन मौर्य्य समय ९०। ९१ वर्ष का ह्रास करके शुद्ध क्षत्रिय समय ग्रहण किया है और उस का नाम विक्रम का अनन्द संवत् अर्थात् पृथ्वीराजजी का तृतीय शक रक्खा है। हम यह यहां तक भी मान कर कह सक्ते हैं कि यदि आज इस विषय को समर्थन करने को कोई भी प्रमाण न मिले तथापि चंद की निज-काल-निरूपण शैली होना तो स्वयम् सिद्ध ही है॥

६ छठें चंद के प्रयोग किये हुए विक्रम के अनन्द संवत् का प्रचार बारहवें शतक तक की राजकीय व्यवहार की लिखावटों में भी हमको प्राप्त हुआ है अर्थात् हम को शोध करते २ हमारे स्वदेशी अंतिम बादशाह पृथ्वीराजजी और रावल समरसीजी और महाराणी पृथा बाईजी के कुछ पट्टे परवाने मिले हैं कि उन के संवत् भी इस महाकाव्य में लिखे संवतों से ठीक २ मिलते हैं और पृथ्वीराजजी के परवानों में जो मुहर अर्थात् छाप है उस में उन के राज्याभिषेक का सं० ११२२ लिखा है। इन परवानों के प्रतिरूप अर्थात् Photo हमने हमारी ओर से ऐशियाटिक सोसाईटी बंगाल को भेट करने के लिये हमारे स्वदेशी परम प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता डाक्टर राय बहादुर राजा राजेन्द्रलाल जी मित्र एल० एल० डी० सी० आई० ई० के पास भेजे हैं और उन के अकृत्रिम होने के विषय में हमारे परस्पर बहुत कुछ पत्र व्यवहार हुआ है। यदि हमारे राजा साहब अकस्मात् रोग ग्रस्त न हो गये होते तो वे हमारे इस बड़े परिश्रम से प्राप्त किये हुए प्राचीन लेखों को अपने विचार सहित पुरातत्ववेत्ताओं की मंडली में प्रवेश किये होते। इन परवानों के अतिरिक्त हम को और भी कई एक प्रमाण प्राप्त होने की दृढ़ाशा है कि जिन को

हम उस समय विद्वत् मंडली में प्रवेश करेंगे कि जब कोई विद्वान् उन को क्त्रिम होने का दोष देगा। देखिए जोधपुर राज्य के काल-निरूपक राजा जयचंदजी को सं० ११३२ में और शिवजी और सेतरामजी को सं० ११६८ में और जयपुर राज्य वाले पज्जूनजी को सं० ११२० में होना आज तक निःसंदेह मानते हैं और यह संवत् भी हमारे अन्वेषण किये हुए ९१ वर्ष के अंतर के जोड़ने से सनन्द विक्रमी हो कर संप्रत काल के शोध हुए समय से मिल जाते हैं। इस के अतिरिक्त रावल समरसीजी की जिन प्रशस्तियों को हमारे मित्र महामहोपाध्याय कविराज श्यामलदासजी ने अपने अनुमान को सिद्ध करने को प्रमाण में मानी हैं वह भी एक आन्तरीय हिसाब से indirectly हमारे शोध किये इस अनन्द संवत् को और उस के प्रचार को पुष्ट और सिद्ध करती हैं। देखिए और इन दो ध्रुवों को अपने ध्यान में रख लीजिए कि प्रथम तो रावल बापाजी के नाम पर सब ख्यात की पुस्तकों में सदैव से सं० १९१ लिखा चला आता है कि जिस को कर्नेल टॉड साहब ने तो वल्लभी के नाश से चीतोड़ प्राप्त होने तक का समय माना है और मेवाड के छोटे २ लड़के तक इतना अवश्य जानते हैं कि बापाजी सं० १९१ में हुए और उनोंने १०१ वर्ष राज्य किया अथवा उनकी वय १०१ वर्ष की हुई और ऐसे आज तक के इस बड़े निश्चय के साथ सर्वसाधारणों के मानने को महामहोपाध्याय कविराजजी भी कदापि अस्वीकार नहीं कर सक्ते हैं। दूसरे रावल समरसीजी के नाम पर भी उसी तरह सर्व साधारणों के दृढ निश्चय के साथ ११०६ का संवत् ख्यातिओं में लिखा हुआ बराबर चला आता है। अब आप हमारे पाठक उक्त सब प्रशस्तियों के सब संवत् अर्थात् १३३२, १३३५, १३४२ और १३४४ में से बापा जी के पूर्व का समय १९१ घटा कर देखें तो ११४१, ११४४, ११५१ और ११५३ पावेंगे कि जो हमारे अनन्द विक्रमी से मिलजाते हैं। क्या यह प्रशस्तिये भी हमारे अनन्द विक्रमी संवतों से आंतरीय हिसाब से नहीं मिल जाती हैं? यह क्यों मिल जाती हैं इस बात के भेद को हम हमारी समझ के अनुसार जानते हुए भी अभी प्रकाश नहीं करते हैं किन्तु किसी उचित समय पर उसे शास्त्रार्थ के साथ प्रकाश करके हमारे मेवाड राज की वंशावली को शुद्ध और प्रतिपादन कर मेवाड देश की एक अमूल्य सेवा करेंगे॥

७ सातवें यदि कोई यह तर्क करे कि राजा नन्द के विक्रमादित्यजी से पहिले अथवा पीछे होने का मतान्तर प्राचीन समय के विद्वानों में होना कुछ भी सिद्ध हो जाय तब हम यह अनुमान कर सक्ते हैं कि अनन्द और सनन्द सवतों के भेद अवश्य हो सक्ते हैं। अतएव हमारा कहना यह है कि जिस किसी को इस विषय का कुछ मतान्तर होना समझना हो वह एशियाटिक सोसाईटी बंगाल के स्थापन-करनेवाले सर विलियम् जोन्स साहिब Sir William Jones के लिखित The Chronology of the Hindus हिन्दुओं का काल-निरूपण नामक विषय के अंतिम दो तीन लेख-खंड अर्थात् फिकरे पढ कर समझ लें (देखो एशियाटिक रिसर्चेज़ पुस्तक २ Asiatic Researches Vol. II) परंतु स्मरण रहे कि हम राजा नन्द का विक्रम से पहिले होना हमारे देशी शास्त्रों के अनुसार मानते हैं॥

पाठको! रूपक ३५६ भी पुरातत्व विद्या में बडा उपयोगी है। उस में आप को मालूम होगा कि चंद यह तात्पर्य्य वर्णन करता है कि जिस ११०० अथवा १११५ में पृथ्वीराजजी उत्पन्न हुए हैं वह संख्या कैसी है कि उसी ११०० अर्थात् १११५ में धर्म-सुत हुए थे तथा उसी ११०० अथवा १११५ में विक्रमादित्यजी भी हुए थे और उसी में अर्थात् विक्रम से ११०० अथवा १११५ वर्ष पीछे पृथ्वीराज जी हुए हैं कि जिन का यह तृतीय शक मैं ने विप्रगुप्त (ब्रह्मगुप्त)

॥ सोमेश्वरजी के अपूर्व तप से पृथ्वीराजजी उत्पन्न हुए ॥

श्लोक ॥ सोमेश्वर महाबाहो । तस्यापूर्वं तपो गुणैः ॥
तेने पुण्यं जगज्जेता । गर्भान्ते पृथुराडभूत् ॥ छं० ॥ ६८६ ॥ रू० ॥ ३५७ ॥

॥ सोमेश्वरजी का राव (वेन) को बधाई देना ॥

पद्धरी ॥ अनगेस पुत्रि हुअ पुत्र जन्म । बिज्जल चमंकि जनु मेघ घन्म ॥
बद्धाइ राव * सोमेस दीन । इक सहस हेम हय हुकम कीन ॥ छं० ६९७ ॥

को गुन कर लिखा है (लिख्यो विप्र गुन गुप्त) क्या चंद यह अमूल्य पुरातत्व इस रूपक में नहीं कहता है? नहीं-वह हम को निःसंदेह यही कहता हुआ दृष्टि आता है!! यदि यहां धर्मसुत का अर्थ युधिष्ठिर का समझा जो सक्ता है तो हमारे देशी महाकवि का विक्रम से युधिष्ठिर तक का ११०० अथवा १११५ वर्ष का अंतर मानना मिस्टर बैन्टली साहब के अनुमान ११२३ के से बहुत मिलता हुआ है अर्थात् उस में केवल २३ अथवा ८ वर्ष का ही अंतर है । और यह हमारे स्वदेशी काल-निरूपकों की गणना से भी मिलता हुआ है क्योंकि ११०० अथवा १११५ युधिष्ठिर से शेमक तक तथा उस से विक्रम तक ११०० अथवा १११५ और विक्रम से पृथ्वीराजजी तक ११०० अथवा १११५ और इस गणना के अनुसार ८१४ कलि गत में युधिष्ठिर हुए । तथा चंद के कहे विप्रगुप्त कि जिस को हम ब्रह्मगुप्त होना अनुमान करते हैं उस के विषय में मिस्टर बैन्टली साहब यह कहते हैं कि वह विक्रमी ५८३ तदनुसार ५२० ई० में हुआ था । उस ने ब्रह्म-कल्प की गणना का प्रकार स्थापन और प्रकाश किया था कि जिस पर आधुनिक ज्योतिष का आधार है और ऐतिहासिक संवत् भी उसी के अनुसार परिवर्तन हुए हैं (देखो एशियाटिक रिसर्चेज़ पुस्तक ८ पृष्ठ २३६-७ See Asiatic Researches Vol VIII. page 236—7.) इस ब्रह्मगुप्त की गणित में और अन्य ज्योतिषाचार्यों के सिद्धान्तों में कुछ अंतर है कि जिस के लिये अन्य कोई २ इस ब्रह्मगुप्त को दोष देते हैं कि इस का कुछ विवर्ण Mr. Samuel Davis मिस्टर सैम्यूऐल डेविस साहब के लिखित हिन्दुओं की ज्योतिष विद्या The Astronomical Computations of the Hindus नामक लेख के पढ़ने से ज्ञात हो सक्ता है (देखो एशियाटिक रिसर्चेज़ पुस्तक See Asiatic Researches Vol. II.)

इस संवत् सबन्धी झगड़े में हमारा अंतिम निवेदन यह है कि यह पुरातत्वविद्या ऐसी बड़ी सूक्ष्म और अथाह गहरी है कि जो विद्वान उस में कदाचित् थोड़ा सा भी चूक जावे तो वह उस में डूब जाता है और उस के खारे पानी के समुद्र में तिरना बहुत कठिन है और उस में पड़ी हुई किसी वस्तु को वही गोताखोर अर्थात् शोधक निकाल सकता है कि जिसे धर्मरूपी प्राण को शुद्ध अंतःकरण में स्थित करके गोता मारने का अभ्यास होता है ॥

३५७ पाठान्तर:—सोमेसर । सोमेस्वर । तस्या । पूर्वं । तयं । गुनं । गुणे । पुन्य । जगंज्जता । गर्भांतं । गंर्भान । प्रथिराजयं । प्रिथुराजयं । प्रिथीराजयो ॥

इस रूपक के शुद्ध और अशुद्ध पाठों को सूक्ष्म दृष्टि से देखने से ज्ञात हो सक्ता है कि दुष्ट लेखकों ने उन को कैसे २ भ्रष्ट कर दिये हैं कि जिस के लिये स्वर्गवासी विचारे चंद को हम लोगों के दिये अनेक दोष सहने पड़ते हैं ॥

* देखो मालूम होता है कि चंद यहां अपने बाप का स्पष्ट नाम नहीं लेकर महावरे से राव शब्द प्रयोग कर राव वेन का निर्देश करता है ॥

दिय ग्राम एक दय इक्क हथ्थ। परिग्रह प्रसाद सह कीन तथ्थ॥
नीसांन वाजि दरबार जोर। घन गर्ज्ज जान दरिया हिलोर॥ छं०॥ ६९८॥
पधराइ राइ सुष दरस कीन। कित क्रम्म पुब्ब फल मान लीन॥
करि जात क्रम्म मति ग्रंथ सोधि। वेदोक्त विप्प बर बुद्धि बोधि॥ छं०॥ ६९९॥
मंगल उचार करि न्रत्य गान। अच्छरि अलाप सुर भुवन जान॥
छं०॥ ७००॥ रू०॥ ३५८॥

॥ पृथ्वीराजजी के जन्मोत्तर गुणों का वर्णन ॥

साटक॥ जन्मोत्तरि गुन जन्म राजन् वरं, चालीस वर्षं घती॥
सा भोगं धर लक्छि टिल्लति वरं, पंजाब पंचो पथं॥
इंन्द्रंप्रस्थय संभरी ववरयं, सोमेसजा जोतयं॥
भुंक्तं सुक्तय वंधि गज्जन वरं, जन्मं कारं सुक्तयं॥ छं०॥ ७०१॥ रू०॥ ३५९॥

॥ सोमेसजी को पृथ्वीराजजी के जन्मोत्तर गुन सुन कर हर्ष और शोक होना ॥

कवित्त॥ सोम वत्त सुनि श्रवन। हर्ष अरु सोक उपन्नौ॥
दैव काल संजोग। तपै ढिल्ली घर थन्नौ॥
कहै व्यास संभरी। कन्न इह वत्त प्रमानं॥
किं जानै किं होइ। घरी इक घट्टन जानं॥
व्हिस्मान मान संभर धनी। सुनी कित्ति अनगेस बर॥
अंची प्रमान सब इष्ट गुरु। कहै राज प्रथिराज बर॥ छं०॥ ७०२॥ रू०॥ ३६०॥ †

---

३५८ पाठान्तरः—अनगेस। हुव। विजलं। बिजुंलि। चमंक। जुंनु। मेघ। जन्म। बद्दाय। राज। सोमेस। दीय। यांम। इक। इक। हथः। हथ। परिगह। परीग्रह। कीन। तथ। वज्जि। गर्ज्जि। जांचि। पधराय। राय। मुंष। सरसन। हरष। कर्म। पुब। मांनि। क्रम्म। मनि। वेदोक्त। विप्र। वुधि। प्रमोधि। गांम। ग्यांन। अछिर। अछर। सुरं। भूवन। जांनि॥

३५९ पाठान्तरः—जन्मोतरि। राजन्म। वर। च्यालीस। वर्ष। घटी। सोभाग्यं। सौभाग्यं। लछि। दिलित। दिल्लित। धर। पंचं। पंच। इंद्रप्रस्थ। ववरय। जोतियं। जोतियं। भुक्त। वर। जन्यं॥

३६० पाठान्तरः—सौम। वती। उपनौ। उप्पनौ। देव। संजोग। ढिली। धर। थंनो। कन। वत। जाने। होय। यक। घटिन। जांन वमांन। संभरि। सुतिकिती। प्रमांन। प्रिथीराज। पृथीराज॥

† यह रूपक हमारे पास की और सब पुस्तकों में तो है किन्तु सं० १७७० वाली में नहीं है॥

॥ विक्रम से सदृश पृथ्वीराजजी हुए कि जिन की बुद्धि का वर्णन चंद करता है ॥

दूहा ॥ विक्रम राज सरीस भौ। वुधि ब्रंनन कवि चंद ॥
भून भविष्यत व्रत्तमन। कहत अनूपम छंद ॥ छं० ॥ ७०३ ॥ रू० ॥ ३६१ ॥

॥ पृथ्वीराजजी के जन्म समय के ग्रहों की स्थिति ॥

दूहा ॥ ग्रह स पंच चव हंस हथ। लगन सु अष्टम मंद ॥
दुनिया गुरु मेषह तरनि। चिचह जनम नरिंद ॥ छं० ॥ ७०४ ॥ रू० ॥३६२॥

॥ सोमेश्वरजी का दरवार में वैठ ज्यौतिषियों से पृथ्वीराजजी की जन्मपत्री का फल पूछना और पंडितों का फल वर्णन करना ॥

पद्धरी ॥ दरवार वैठि सोमेस राइ। लीने हजूर जोतिग वुलाइ ॥
कहौ जन्म कर्म वालक विनोद। सुभ लगन महूरत सुनत मोद ॥ छं० ॥ ७०५ ॥
संवत्त इक्क दस पंच अग्ग। वैसाष मास पष कृष्ण लग्ग ॥
गुर सिद्धि जोग चिचा निषच। गर नाम करन सिसु परम हित्त ॥ छं० ॥ ७०६ ॥
ऊषा प्रकास इक घरिय रात। पल तीस अंस चय वाल जाति ॥
गुरु वुद्ध सुक्र परि दसै थान। अष्टमै वार शनि फल विनान ॥ छं० ॥ ७०७ ॥
पंच दुअ थान परि सोम भोम। ग्यारमै राह षल करन होम ॥ छं० ॥ ७०८ ॥
वारमै सूर सो करन रंग। अनमी नमाइ तिन करै भंग ॥
विन पेस सेव रहि दै न कोइ। भंजै मिवास सुष त दिन होइ ॥ छं० ॥ ७०९ ॥
प्रथिराज नाम वल हरै कंच। दिल्लीय तषत मंडै सु कच ॥
च्यालीस तीन तिन वर्ष साज। कलि पुहमि इंद्र उद्धार काज ॥ छं० ॥ ७१० ॥
पर लहै द्रव्य पर हरै भूमि। सुष लहै अंग जब होइ भूमि ॥
वरनीय अष्ट दुय लेय व्याह। तिन दुग्ग तात थपि अप्प वाहि ॥ छं० ॥ ७११ ॥

---

३६१ पाठान्तरः—सरीर। बुद्धि। ब्रनन। वर्त्तमन ॥

३६२ पाठान्तरः—हंस सह। लेग्न। थले। गुर। तसणि जन्म। नरिन। नरिंदः। अरिंद।

३६३ पाठान्तरः—सोमेस राय। हजुर। पंडित। बुलाय। कर्म्म। वालिक। मुहूरत। संवत्। संवतह। इक दस। दह इक। दश पंच अय। पंच अय। वेशाष। वैसाष त्रितीय। [illegible]। कृष्ट लय। सिद्धि। सिधि। जोग। योग। निषत्र। नषत्र। गुर। गुरु। सिसुं। घरी। जांति। गुरुं। दसम। दशम। थांन। अष्टमे थांन। शनि। विनांन। दूअ। थांन। सोम भोम। होम। बारमे। करण। करैं। सेव। हैं। कोई। कोय। भंजे। मेवास। मैवास। सुषं। तं। होइ। नांम।

संषेप विरद उच्चार कीन। क्यों सकौं जंपि मो बुद्धि हीन॥
सुनि राइ दान मंड्यौ अपार। दै गै सु वस्त्र द्रव्या न पार॥ छं०॥ ७१२॥
सब सहर नारि श्रृंगार कीन। अप अप्प झुंड मिलि चलि नवीन॥
थपि कनक थार भरि द्रव्य दूव। पट कूल जरफ जर कसी ऊब॥ छं०॥ ७१३॥
अक्षित अनूप रोचन सुरंग। मृदु कमल हास लोइन कुरंग॥
इक जात मद्धि इक फिरत गेह। पहिराइ परस पर बढत नेह॥ छं०॥७१४॥
दरबार भीर बरनी न जाइ। सूगंध वास नासा अघाइ॥
बिगसंत बदन छत्तीस बंस। जदुनाथ जन्म जनु जदुन बंस॥
छं०॥ ७१५॥ रू०॥ ३६३॥

हरे। स्तूत्र। शत्र। दिलिय। दिल्लिय। मंडे। बूंदीवाली में-चालीस वर्ष तिन मांस साज। -चालीस। पुहवि। हरे। भूंम। सुंप। भूंम। वरणीय। वरनीअ। अष्ठ बल। लेइ। थ्यांहि। दुंनग। दुंग। थैपि। चाहि। विरद्द। उचार। सकों। जपि। मो। सुंनि। राय। दांन। हय। गाय। द्रव्यान। नव्याम। श्रंगार। झुड। नवान। कुंल। कल। उव्व। अक्षित। रोचन। लोइन। कुंरंग। जाय। मधि। गेह। नेह। जाय। सुगंध। नाशा। अघाय। विगसत। छत्तीस। यदुनाथ। यदुन।

जैसे कवि चंद रूपक ३५५ और ३५६ में अपनी प्राचीन गूढ भाषा के गूढार्थ में पृथ्वीराजजी का जन्म संवत् वर्णन कर आया है; वैसे ही यहां भी वह इन रूपक ३६२ और ३६३ में उन की जन्मपत्री तथा उस के ग्रहों का फलादेश वर्णन करता है। इन दोनों रूपकों के पाठ जहां तक हमारे पास की पुस्तकों से शुध सके वहां तक हमने शोध दिये हैं; कि उन के इतने ही शुधने पर जो कई एक शंका अब तक लोग करते थे वह दूर हो गई। और जो इसी तरह और भी कुछ प्राचीन पुस्तकें मिल जावें और उन से यह रूपक फिर शोध दिये जावें तो आशा है कि इन रूपकों में लिखी ज्योतिष शास्त्र संबन्धी सब बात मिल जावें और विद्वानों की जो २ शंका अब भी बाकी रहती हैं वह भी निवारण हो जांय। इस के अतिरिक्त हमारे पाठक यह अच्छी तरह जानते हैं कि इस रासे जैसी भ्रष्ट लिखित प्राचीन पुस्तकों में अथवा वैसे ही कोई २ बडे प्रतापी मनुष्यों की जन्मपत्री अथवा ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जिस का कुछ अन्वेषण किया जावे ऐसा कुछ विषय हम को वर्त्तमान समय में कहीं लिखा हुआ प्राप्त होता है उस को यथायोग्य रीति से शोध लेना कैसा कठिन है। उस में भी फिर चंद की जैसी गूढार्थ की कठिनता और ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्तियों के मतान्तर पर दृष्टि दियी जावे तो प्रत्येक सज्जन मनुष्य सुख पूर्वक कह सकता है कि यह कार्य बहुत ही कठिन है और जो कदाचित् ऐसी कठिनता का कुछ पता लगा सकें तो हमारे स्वदेशी जगत विख्यात ज्योतिष शास्त्राचार्य पंडित वर श्री बापूदेवजी शास्त्री अथवा उन के शिष्य वर्ग में से भी कोई लगा सक्ते हैं; किन्तु अन्य के वश का यह कार्य नहीं है। इस जन्मपत्री को शोधने के लिये हमने बडा परिश्रम कर रक्खा है अर्थात् जितने पाठान्तर रासे की भिन्न २ पुस्तकों में से मिलते जाते हैं और जितनी भिन्न २ प्रकार की पृथ्वीराजजी की जन्मपत्रियें भरतखंड में से मिलती हैं वह भी एकत्र किये जाते हैं और ब्रह्मगुप्त का रचित ज्योतिष शास्त्र का पुस्तक भी प्राप्त करने का उद्योग कर रहे हैं, कि

जिस का चंद का आश्रय करना उसकी शैली से अनुमान होता हैं । इस प्रकार से शोध होने पर हम इस जन्मपत्री के विषय में जिस विद्वान के गणित के अनुसार जो बात निश्चय होगी वह प्रकाश करेंगे । किन्तु अभी हम कुछ उन शंकाओं के विषय में भी कहते हैं कि जो इस विषय में महामहोपाध्याय कविराज श्री श्यामलदासजी ने कवि का सरल और स्पष्ट अर्थ न समझ कर केवल प्रतिद्वन-अनुमान-जन्यभ्रम के वश हो अपने खंडन-ग्रंथ में किया हैं:-

१　प्रथम कविराजजी ने पृथ्वीराजजी के जन्म संवत् के प्रकाश करने वाले रूपक ३५५ के साथ का रूपक ३५६ जैसे अपने खंडन-ग्रंथ में छोड दिया है वैसे ही यहां भी उनोंने रूपक ३६२ को छोड कर केवल रूपक ३६३ के आधार पर जन्मपत्री के संबन्धित दोष दिये हैं । इन दोनों स्थलों को हमारे विद्वान पाठक विचार कर समझ सक्ते हैं कि रूपक ३५६ और ३६२ को छोड देना उचित था कि नहीं और उन का रूपक ३५५ और ३६३ के साथ पूर्ण संबन्ध है कि नहीं । यदि पूर्ण संबन्ध है तो निर्णय करने के समय उन का त्याग देना किसी वास्तविक पुरातत्ववेत्ता के लिये कैसा अनुचित कर्म है ॥

२　दूसरे जो कुछ दोष इस विषय में दिये गये हैं वह मालूम होते हैं कि किसी एक पुस्तक के पाठ पर ही दिये गये हैं । किन्तु मैं आशा करता हूं कि डाक्टर होर्नली साहब कि जिनों ने अपने हाथ से रासे के कुछ भाग को बड़ी सूक्ष्म दृष्टि देकर शोधा है वे भले प्रकार साक्षी दे सक्ते हैं कि इस ग्रंथ के पाठान्तर, अपपाठ, विशेष पाठ और न्यून पाठ आदिक की क्या दशा है और क्या किसी एक पुस्तक के पाठ पर ही किसी बात का निर्णय होना उचित है ॥

३　तीसरे यदि रूपक ३६२ न छोड दिया गया होता और पुरातत्ववेत्ताओं के निर्णय करने की रीति से ध्यान दिया गया होता तो कविराजजी अपनी कितनीक शंकाओं के समाधान स्वयम् इन रूपकों और भिन्न २ पाठान्तरों से जान सक्ते थे जैसे कि:-

(क)　रूपक ३६२ से पृथ्वीराजजी के जन्म की दूज तिथि ज्ञात होती है । यदि तिथि की संख्या का शब्द अशुद्ध भी हो तो भी हम कवि के कहे चित्रा नक्षत्र से स्पष्ट अनुमान कर सक्ते हैं कि या तो यह दूज कवि ने पड़वा उपरान्त की ग्रहण किया है अथवा किसी और तिथी की संख्या यहां भ्रष्ट हो गई है । हम ज्योतिष शास्त्र तो नहीं जानते हैं किन्तु हम लोग पंचद्रावड ब्राह्मणों में अभी तक प्राचीन प्रणाली चली आती है कि यज्ञोपवीत होने पर सात वर्ष के बालक को भी पितादि वेदाङ्गों के कुछ ध्रुवे अर्थात् गुरु सिखाये करते हैं उन के अनुसार हम यह कह सक्ते हैं कि हमारे आर्य मासों के नाम नक्षत्रों पर से पडे हैं और प्रत्येक महिने का नक्षत्र शुदी १४ किंवा पूनम अथवा वदी प्रतिपदा के दिवस में होता है अतएव इस दूज के स्थान में कोई ऐसी ही तिथि थी कि जो भ्रष्ट हो गई है । देखो कविराजजी ने "वैसाख तृतीय पख कृष्ण लग" पाठ लिखा है उस के स्थान में हम को सं० १६४० । १७७० और १८४५ की पुस्तकों में यह "वैसाख मास पष कृष्ण लग वा आग" पाठ लिखा मिलता है और वह एक प्रकार से ठीक भी दीखता है क्योंकि रूपक ३६२ में कवि तिथि कह आया है अतएव अब वह यहां शेष मास और पक्ष कहता है । चित्रा नक्षत्र के विषय में कुछ गोलमाल किसी पुस्तक में दृष्टि नहीं आती और वैशाख के विषय में कुछ गडबड सी दीखती है अतएव जो कोई चित्रा से चैत्र मास का होना अनुमान करे तो हमारी सम्मति में तो वह कोई आश्चर्य दायक बात नहीं है ॥

(ख) कविराजजी ने कवि के कहे "बारमे सूर सो करन रंग" पर ही विशेष दोष दिया है और उसका बारहवें घर में होना असंभव माना है तथा इतनी ही बात पर दोष देकर अन्य ग्रहों का कुछ शोध नहीं किया है। परंतु जो वे रूपक ३६२ के तीसरे चरण पर कुछ थोड़ी सी भी दृष्टि देते तो उनको मालूम हो जाता कि चंद कवि मेष का सूर्य होना स्वयम् कहता है कि जो संभव भी हैं "द्रुतिया गुरू मेषह तरनि" इस से यह भी समझ सक्ते थे कि जब मेष का सूर्य बारहवें घर में होना कवि कहता है तब वृष लग्न भी है और "ऊषा प्रकाश इक घरिय रात" से कवि का गूढार्थ भी यह है कि पृथ्वीराजजी का सूर्योदय के पश्चात् जन्म होने से ऊषा एक घड़ी थी अर्थात् ऊषा के एक घड़ी पीछे उनका जन्म हुआ॥

(ग) कविराजजी के खंडन ग्रंथ में "गुरु सिद्ध जोग चित्रा नखत्त" पाठ से सिद्ध योग ग्रहण किया है कि जो चित्रा नक्षत्र के साथ वा पास आना असंभव है परंतु थोड़ी सी भी सूक्ष्म दृष्टि देकर देखते अथवा पुस्तकान्तर में पाठ देखते तो कितनीक पुस्तकों में सिद्धि पाठ जैसे हम को मिल गया वैसे मिल जाता॥

(घ) कविराजजी ने अपने खंडन ग्रंथ में बड़ी २ सूक्ष्म युक्तिओं से सूक्ष्मतर अनुमान किये हैं परंतु एक इस स्थान पर वे बड़ी ही बेतरह चूक गये हैं। उनों ने "गुरु नाम करन सिसु परम हित्त" का गुरु पाठ से धोखा खाकर यह अर्थ किया है कि "गुरु ने बड़े प्रेम से बालक का नाम रक्खा" किन्तु यह अर्थ बिलकुल ही असत्य है। यद्यपि इस गुरु पाठ का पुस्तकान्तर में गर पाठ स्पष्ट मिलता है परंतु वह न भी मिले तथापि पुरातत्ववेत्ता विद्वान इस छंद की प्रत्येक तुक की एक दूसरी से संगति मिला कर भले प्रकार जान सक्ते हैं कि कवि "तिथि वारं च नक्षत्रं योगं करण मेवच" के अनुसार यहां यह कहता है कि "गर नामक करण शिशु को परम हितकारी है" न कि यह कि–गुरु ने बड़े प्रेम से बालक का नाम रक्खा–हमारे हे सज्जन पाठको! आप सोचो, विचारो, न्याय करो, और सत्य २ कहो कि यह महा अनर्थ करने वाली भूल है कि नहीं और जो हम इतना परिश्रम केवल स्वदेश वत्सलता से उत्तापित हो कर न करते तो हमारे देश की हिन्दी भाषा और ऐतिहासिक विद्याओं की कितनी हानि संभव थी। राजपूताने के कितनेक कवि लोग अपने को हिन्दी भाषा के काव्यों में ऐसा उत्कृष्ट समझते हैं कि मानो अन्यदेशीय उनके आगे कुछ माल ही नहीं है परंतु इस अवसर पर हमको मिस्टर जोन बीम्स साहब Mr. John Beames का यह कहना स्मरण आता है कि "The Pandits of Rajputana even do not understand Chand beyond the general drift of the poem." "राजपूताने के पंडित भी चंद के काव्य को उसके एक साधारण भावार्थ के सिवाय नहीं समझते हैं"॥

(ङ) कविराजजी के लिखे पाठ में "पंच में थान परिसोम भोम" है और हम को पुस्तकान्तर में "पंच दुअ थान परि सोम भोम" पाठ मिला है। क्या इस से जन्म पत्री के ग्रहों में कुछ अंतर नहीं पड़ जाता है? और क्या जब तक कि अनेक प्राचीन पुस्तकों से इन रूपकों का पाठ मिलान कर के शुद्ध न किया जावे तब तक जन्मपत्री को अशुद्ध कह देना मानों सहसा सिद्धान्त कर लेना नहीं है? यदि कोई २ विद्यमान पुरातत्ववेत्ता अपने सहसा सिद्धान्त कर लेने को अच्छा समझ लेना अयोग्य नहीं समझेंगे और वे इस प्रचार को एक कलम बंद नहीं कर देंगे तो पुरातत्वविद्या को निःसीम हानि पहुंचनी संभव है। यहां कन्या का चंद्रमा और पृथ्वीराजजी का पृथ्वीराज नाम होने के कारण उनकी कन्या राशी का होना स्पष्ट है। और

॥ पृथ्वीराजजी के जन्म होने पर क्या २ आश्चर्यदायक बात हुई ॥

कवित्त ॥ भयो जनम प्रथिराज। द्रुग पर हरिय सिघर गुर ॥
भयो भूमि भूचाल। धमकि धम धम्म अरिनि पुर ॥
गढन कोट सें लोट। नीर सरितन बहु बढ्ढिय ॥
भै चक भय भूमिया। चमक चक्रित चित चढ्ढिय ॥
पुरसान थान पल भल परिय। ग्रभ्भ पात भय ग्रभ्भनिय ॥
बेताल बीर विकसे मनह। हुंकारत पह देवनिय ॥
छं० ॥ ७१६ ॥ रू० ॥ ३६४ ॥

॥ पृथ्वीराजजी की बाल अवस्था के चरित्रों का वर्णन ॥

कवित्त ॥ बरष बधै बिय बाल। पिष्ष बद्धै इक मासह ॥
घरी दीह पल पष्प। मास लष्षिय व्रप तासह ॥
मनिगन कँठला कंठ। मद्धि केहरि नष सोहत ॥
घूघर वारे चिहुर। रुचिर बानी मन मोहत ॥

ज्योतिष शास्त्र के एक अचल ध्रुवे के अनुसार यह अनुमान कर लेने का काम भी चंद ने हमारे ऊपर ही छोड़ दिया है कि कन्या के चंद्रमा के साथ केतु भी है क्योंकि राहु और केतु सदा परस्पर सात में स्थान में रहते हैं ॥

३६४ पाठान्तर:—जन्म। प्रिथीराज। पृथीराज। प्रथिराज। द्रुग। द्रुंग। भूचाल। धंम। कोट। से। लोंट। बहि। बढिय। भैचक्क भय भूमियांन। भय चक्रित भूमिया। चमकि। चढिय। पुरसांन। थांन। परीय। ग्रभ। ग्रभ। वैताल। विकसैं। नयन। हुंकारन। देवनीय ॥

इस रूपक में जो कुछ आश्चर्यदायक बातों के भाव कवि ने कहे हैं वह कोई वास्तविक आश्चर्य नहीं है किन्तु कवि लोग बड़े २ प्रतापी पुरुषों के जन्मादि के वर्णन में अद्भुत रस का आश्रय करके प्रायः ऐसा प्रसंग बांधा करते हैं। देखो जैसे यहां "धमंकि धम धम्म अरिन पुर" अथवा 'पुरसान थान पल भल परिय" कवि ने कहा है। वैसे ही तबक़ात नासरी नामक फारसी तवारीख़ में देखो कि महमूद गज़नी जिस रात्रि को उत्पन्न हुआ था उसी समय सिन्धु नदी के किनारे के एक मंदिर का फट जाना उस में लिखा है। उस से केवल इतना ही समझ लेना चाहिये कि महमूद मंदिरों को भ्रष्ट करने और मूर्त्तियों को तोड़ फोड़ डालने वाला हुआ है अतएव कवि ने उस के जन्म समय भी वैसा ही उस के प्रताप का एक चिन्ह वर्णन किया है। इस रूपक में बीर और अद्भुत रस मिले हुए हैं अतएव आक्षेप करने वाले अथवा किसी कोमल हृदय वाले मनुष्य के कान उस के पढ़ते ही खड़े हो जाते हैं, अर्थात्, रस अपना प्रभाव उस को प्रत्यक्ष दिखा देता है ॥

३६५ पाठान्तर:—बधे। पिय। बाधे। पल पलघ। पष्य। पष। लष्षीय। लषीय। घष। मनिगनि। कंठला। मधि। केहरि। सोहत। बाले केस। वारे केस। केसरि। सुमंडि। सुभ। दरसन। ज्योति। ज्योति। जरत। इक। छिन। हुलसि। परत ॥

केसर सु मंडि सुभ भाल छवि। दसन जोति हीरा हरत॥
नह तलप दुक्क थह छिन रहत। हुलसि हुलसि उठि उठि गिरत॥
छं० ॥ ७१७ ॥ रू० ॥ ३६५ ॥

दूहा ॥ रज रंजित अंजित नयन। घूंठन डोलत भूमि॥
लेत बलैया मात लषि। भरि कपोल सुष चूमि॥
छं० ॥ ७१८ ॥ रू० ॥ ३६६ ॥

पद्धरी ॥ अंगुरिन लग्गि रगि चलत लाल। सर मद्धि उठत गज हंस बाल॥
मिलि बाल जाल फबि रही केलि। बढि रही दुंद जनु बीज बेलि॥ छं० ॥ ७१९ ॥
जनु रमत कमल हरत कमल अग्ग। तप तेज बड्ढि मुष सिच नग्ग॥
सब देव तेज देषंत अंग। उद्दार अंग अद्भुत प्रसंग॥ छं० ॥ ७२० ॥
सँग बाल बैठि भोजन करंत। परिवार वस्तु लै हठ धरंत॥
आदर अद्व्व सघ्थीन देत। बगसीस करत हिय परम हेत॥ छं० ॥ ७२१ ॥
है हथ्थि चढत बढ्ढन अनंद। मन मौज चोज कवि पढत छंद॥
जिन हृदय कमल विद्याह हेत। छल छेद भेद तिन बुद्धि लेत॥ छं० ॥ ७२२ ॥
पाइक्क संग कायक्क केलि। धरि धूप हथ्थ बाहंत भेलि॥
गहि बग्ग हथ्थ फेरत तुरंत। नट न्रत्य निपुन धावत कुरंग॥ छं० ॥ ७२३ ॥
जल केलि करत मिलि सजन संग। अल्लोल कलभ जनु सरति रंग॥
पकवांन पांन सूगंध पूर। मादक्क सु मोद सुष सुषन नूर॥ छं० ॥ ७२४ ॥
षेलत अषेट संग स्वानडोर। बग्गुर वधंत षर गोस कोर॥
सुष घरिय पहर दिन पष्ष मास। सोमेस सूर चित बढन आस॥ छं० ॥ ७२५ ॥
जिम राम क्रष्ण सुष नंद गेह। संभरिय राय तिम दसा देह॥
छं० ॥ ७२६ ॥ रू० ॥ ३६७ ॥

---

३६६ पाठान्तरः—अजांत। घूठन। डोलत। वलइया। मुंष चूंम॥

३६७ पाठान्तरः—लगि। लगि लगि। लोल। केलि। अय। तेजि। वढि। पचिग। पचि घग। तेज। दूषत। उद्दार। अद्भूत। सुरंग। संग। वैठ। करत। वस्तू। वस्त। हठि। अदब। सघीन। हीय। हथि। वढत। मोज। चोज। रिदे। सुंहेत। विद्या सु। छल। वेदि। भेदि। छेदि। बुधि। पाइक। काइक। केलि। धोप। धोप। हथ। बांहंत। वग। हथ। नृत्य विपुन्य। तुरंग। केलि। अलोल। सरमि। सुगंध। पुर। षेलत। अषेट। संगि। स्वांन। डोरि। वगुरि।

कवित्त ॥ कै दसरथ ग्रह राम । (कै) * धाम वसुदेव कृष्ण वर ॥
कै कलि कास्यप रूप । जानि उपज्यौ किरनाकर ॥
कृष्ण ग्रेह कै काम । (कै) * काम अंगज जनु अनुरध ॥
(कै) * नन्द कास्यप अवतार । किधौं कौमार इश्व रुध ॥
लषिन बतिस बहुर्तरि कला । बाल वेस पूरन सगुन ॥
क्रीडत गिलोल जब लाल कर । (तब *) मार जानि चापक सु मन ॥
छं० ॥ ७२७ ॥ रू० ॥ ३६८ ॥

दूहा ॥ छुटत गिलोला हथ्थ तैं । पारत चोट पयल्ल ॥
कमल नयन जनु कामिनी । करत कटाछ क्रयल्ल ॥
छं० ॥ ७२८ ॥ रू० ॥ ३६९ ॥

॥ पृथ्वीराजजी का गुरु राम से सब प्रकार की विद्या सीखना ॥

दूहा ॥ कोइक दिन गुर राम पैं । पढी सु विद्या अप्प ॥
चवदसु विद्या चतुर वर । लई सीष पट लिप्प ॥
छं० ॥ ७२९ ॥ रू० ॥ ३७० ॥

वंधत । पगोस । फेरि । कोरि । धारीय । परक । पय । सोमेस । सुर । चित्त । वढि । वढ्ढि । रांम । कण्णु । सुभि । येह । जिम रांम नंद सुप कृष्ण येह । संभरीय । राव । दैह ॥

* यह शब्द पाठ में विशेष हैं । ऐसे उदाहरण इस ग्रंथ की लिखित पुस्तकों में बहुत हैं और वह भी किसी २ में ऊपर से लिखे हुए हैं । इस का कारण मुझे विचार करने से यह मालूम होता है कि किसी कवि ने पढ़ने के समय अर्थ के लगाने की सुगमता के लिये इन संवन्ध के सूचन करने वाले शब्दों को संकेत की भांति लिख लिये होंगे और ऐसी पुस्तक से प्रती करने वाले लेखकों ने उन को पाठ में मिलाकर प्रती कर दियी है । इस मेरे समाधान की पुष्टि में कई एक ऐसे स्थल मैं मेरे पास की प्राचीन पुस्तकों में बतला सक्ता हूं । अतएव इन को कवि की भूल अथवा Poetical licience नहीं समझना चाहिये ॥

३६८ पाठान्तर:-कें । यिह । रांम । धांम । कें । कश्यप । जांनि । उप्पज्ज्यो । किरनांकरि । गेह । कांम । कांम । अनिरुद्ध । कश्यप । किंधों । किधों । कोंमार । ईश्व । लष्यन । लषन । बतीस । वहोतरि । वेश । सुगन । जांनि । चांपक । सुंमन ॥

इस रूपक की पहिली चार तुकों के चरण कई एक पुस्तकों में उलट पलट हैं जैसे कि पहिली तुक के दूसरे चरण के स्थान में तीसरी तुक का दूसरा चरण; दूसरी तुक के स्थान में चौथी तुक; तीसरी के दूसरे में पहिली का दूसरा; और चौथी के स्थान में दूसरी तुक है ॥

३६९ पाठान्तर:-हुथ । हाथ । तें । पयल । कांमिनी । कटाछि । कटाच । क्रयल ॥

३७० पाठान्तर:-पंचह । पंद्रह । पंच कोइक । पे । पें । सू । चउदह । चवदे । लइ सीषि षट लिय ॥

पद्धरी ॥ लिषि सिष्य कुँअर प्रिथिराज राज। गुरु द्रोन पास सुत ध्रम्म ताज ॥
ॐ नमो सिद्धि प्रथमं पढाय। सब भाव भेद अष्षर बताय ॥ छं० ॥ ७३० ॥
दस पंच † दिन्न अध्येंन कीन। दस च्यारि सार सब सीष लीन ॥
सीषी सु कला दस अठ्ठ च्यारि। तिन नाम कहत कवि अग्ग सारि ॥ छं० ॥ ७३१ ॥
गुरु गीत वाद्द वाजिंच न्रत्य। सोचक्क सु वाच्य संविचार व्रत्य ॥
मनि मंच जंच वास्तुक विनोद। नैपथ विलास सुनि नत्त मोद ॥ छं० ॥ ७३२ ॥
साकुन्न कला क्रीडन विसार। चिचन सु जोग कवि चवत चारु ॥
कुसु सेष कला जुत इंन्द्र जाल। सुचि क्रम विहार आहार लाल ॥ छं० ॥ ७३३ ॥
सैाभग प्रयोग सूगंध वस्त। पुनरोक्त छंद वेदोक्त हस्त ॥
बानिज्ज विनय भाषित्त देस। आवद्ध जुद्ध निर्जुद्ध सेस ॥ छं० ॥ ७३४ ॥
बरनंत समय हस्ती तुरंग। नारी पुरुष्ष पंषी विचंग ॥
भ्रू भ्रू कटाछ्छ सुस्लेष सल्य। हष क्रम्म प्रष्ण उत्तर विजल्य ॥ छं० ॥ ७३५ ॥
सुभ सास्त्र कहे गनिकह पढन्न। लिषतव्य चिच कविता वचन्न ॥
व्याकन्न कथा नाटक्क छंद। अविधांन दरस अलँकार बंध ॥ छं० ॥ ७३६ ॥
धातक्क सु कर्म सुभ अर्थ जानि। सुर सरी कला बहुतरि बषान ॥
छं० ॥ ७३७ ॥ रू० ॥ ३७१ ॥

दूहा ॥ कला बहुत्तर करि कुसल। अति निबद्ध जिय जानि ॥
हेत आदि जानन निपुन। चतुरासीत विग्यान ॥ छं० ॥ ७३८ ॥ रू० ॥ ३७२ ॥

---

† इस दसपंच शब्द को पंद्रह ही दिन का वाचक नहीं समझना किन्तु कुछ दिन अथवा कुछ समय अथवा थोड़े दिनों का वाचक समझना उचित है क्योंकि रूपक ३७० में स्पष्ट कोइक दिन्न पाठ आय गया है ॥

३७१ पाठान्तर:—लिपि। शिष्यि। सिषि। कुअरं। कुंअर प्रिथीराज। पृथीराज। गुरं गुर। द्रोण। पासि। धम। नमः सिद्धिं। पढाइ। भैद। अष्यर। बताइ। वताई। अध्ययन। अध्येन। दस पंच विद्य अध्येन कीन। सीषि। अठ। नांम। कहित। अंग। सार। गुर। न्रत्य। सोचक। व्रत्य। वास्तुन। विनैाद। नैपंथ। सुंनि। नत। साकुन। शाकुंन। वितार। विचार। सू जोग। कुंस। युत। सोभग। प्रयोग। पुनरुक्ति। वैदोक्त वस्त। वांनिज। भाषित आवध। युद्ध। निरयुद्ध। सैस। पुरुष। वचंग। भ्रूं भ्रूं। सुलेष व्रष। छंद। उतर। विजल्यं। कहै। पंठंन। लिषितं ध्याचित्र। लिषितव्य। वचन। व्याकन। नाटक। नाटिक। दरसन। अलंकार। शुभ। जांनि। जांणि। वर्षांनि।

३७२ पाठान्तर:—वहुतरि। जांनि। जांनन। विद्यांन। विग्यांन ॥

अरिल्ल ॥ चतुरासीत विग्यानन जानन । भर मन मन आसंका भाजन ॥
मतिद्दा वीर सदा मन मोदन । वहुतरि विचित्र छवीस विनोदन ॥ छं० ॥ ७३९ ॥
दरसन श्रवन गीत वर वादी । न्त्रत्य व्रत्य पाठक पुनि आदी ॥
लेषक वित्त वाज वक्रवनि । सस्त्र सास्त्र जुद्दाकर तत्वनि ॥ छं० ॥ ७४० ॥
जुद्ध गनित पंषी गज तुरगा । आषेटक्क दूतन जल उरगा ॥
अंचन मंच मद्दोछव पचन । पुप्फ कला फल कथा सु चिचन ॥ छं० ॥ ७४१ ॥
करन पदारथ आयुध केली । वलकरि सूचद्द तत्व पद्देली छं० ७४२॥ रू० ३७६ ॥

दूहा ॥ कमल वदन रवि तेज कर । लष्पन संति वत्तीस ॥
कल नित प्रति सीषत कला । आवध धरन छतीस ॥ छं० ॥ ७४३ ॥ रू० ॥ ३७७ ॥

साटक ॥ विद्या वंस विचार सत्य विनयं, सौच्यं समाधीनता ॥
सन्मानं संस्थान सौष्य विजयं, सौजन्य सौभाग्ययं ॥
संपूर्णं च सरूप रूप प्रसनं, चित्तं सदा चारनं ॥
सांगीतं च सजोग चारु सकलं, विस्तारयंते कला ॥ छं० ॥ ७४४ ॥ रू० ॥ ३७८ ॥

दूहा ॥ गुन गरिष्ठ गौ विप्र प्रति । पूजक दान वरीस ॥
सव्द आदि दै निपुन अति । सास्त्रह सत्तावीस ॥ छं० ॥ ७४५ ॥ रू० ॥ ३७९ ॥

स्लोक ॥ संस्कृतं प्राकृतं चैव । अपभ्रंशः पिशाचिका ॥
मागधी शूरसेनी च । षट् भाषाश्चैव ज्ञायते * ॥ छं० ॥ ७४६ ॥ रू० ॥ ३८० ॥

॥ पृथ्वीराजजी के बत्तीस लक्षणों का वर्णन ॥

स्लोक ॥ विनयीगुरजनज्ञाता । सर्वज्ञः सर्व पालकः ॥
शरीरं शोभतेश्रेष्ठं । द्वात्रिंश तस्य लक्षणम् * ॥ छं० ॥ ७४७ ॥ रू० ॥ ३८१ ॥

---

३७६ पाठान्तर :—चक्र रचिति । विग्यांनन । जांनन । भानन । मोदन । नृत्य २ । चक्रवनि । वक्रवन । शस्त्र । शास्त्र । सासत्र । युद्धा । तत्वन । युद्ध । तुरंगा । आस । पेटक्क । उरंगा । जत्रन । मद्दोछव । पुप्फ । किला । करया । कैली । आयुद्ध । पहेली ॥

३७७ पाठान्तर :—तेज । तेय । लष्यन । लषन । वतीस । शीषत । सीषति । आयुध आउध । रन ॥

३७८ पाठान्तर :—सार । सौख्यं । समांधीनता । समाधानता । सनमानं । संनमान । सोजन्य । सूरूप । चारणं संगीतं । संगीत । सयोंग । विस्तारयंते ॥

३७९ पाठान्तर :—चिप्र । दांन । सवद । दे । सासत्रह ॥

* इन रूपकों के इन चौथे चरणों में ९ नव अक्षरों को देख कर कुछ आश्चर्य नहीं करना चाहिये क्योंकि संस्कृत भाषा के ग्रंथों में भी ऐसे उदाहरण मिलते हैं जैसे कि दुर्गापाठ के अध्याय २ श्लोक १ में "महिषे सुराणामधिपे" ॥

३८१ पाठान्तर :—संस्कृतं । प्राकृतं । अपभ्रंसं । अपभ्रंसि । पिसाचिका । मांगधी । सूरसेनी ।

काव्यजाति ॥ अरि तर वर तुंगो। कट्टनार्थं कुद्दारो ॥
कुल कमल प्रकासो। तेज तप्तो दिनेस ॥
दरसन रस सेवी। कामिनी काम म्रूर्त्ति ॥
पर वर प्रति पंचं। पालनं पार्थवानां ॥ छं० ॥ ७४८ ॥ रू० ॥ ३८२ ॥

श्ररिल्ल ॥ सूरज ज्यौं तप सत्रु कमोदन। फूलत अंग मद्दा मन मोदन ॥
भूपति भूप प्रतापन भारी। दठ करि रावन ज्यौं अहंकारी ॥
छं० ॥ ७४९ ॥ रू० ॥ ३८३ ॥

श्लोक ॥ ध्यानधर्मार्थकामंच। बल श्रचु सिंहासनं ॥
समारंभच्चितेश्चैवा। भिधानं अष्टधा स्मृतं ॥ छं० ॥ ७५० ॥ रू० ॥ ३८४ ॥

दूहा ॥ पाघ वीराजत सीस पर। जरकस जोति निद्दाय ॥
मनों मेर के सिषर पर। रह्यौ अहप्पति आय ॥ छं० ॥ ७५१ ॥ रू० ॥ ३८५ ॥
ता पर तुररा सुभत अति। कहत सोभ कवि नाथ ॥
मनु सूरज के सीस पर। धिषन धस्यौ धनु हाथ ॥ छं० ॥ ७५२ ॥ रू० ॥ ३८६ ॥
श्रवन विराजत स्वाति सुत। करत न बनै बषान ॥
मनु कमल पच अग्रज रहै। ओास उडग्गन आन ॥ छं० ॥ ७५३ ॥ रू० ॥ ३८७ ॥
कंठ माल मोतीन की। सोभत सोभ विसाल ॥
मेरु सिषर पारस फिरत। जानि नक्षिचन माल ॥ छं० ॥ ७५४ ॥ रू० ॥ ३८८ ॥
मिस भींने सु मयंक मुष। निपट विराजत नूर ॥
मनों वीर उर काम के। उगे आनि अंकूर ॥ छं० ॥ ७५५ ॥ रू० ॥ ३८९ ॥

भाषां। चैव। ध्यायते। विनयं। जनं। ध्याता। सर्व्वज्ञं। पालकं। शरीरे। सरीरे। सोभ्यते। सोभते। श्रेष्टं। द्वात्रिंसमपि लक्षणै ॥

३८२ पाठान्तर:—अति। घर तुंगो। कट्टनार्थै। कुठारो। प्रकाशो। तप्तो। दिनेसः। सेवी। मूर्त्ति। पंच। पार्थचाना ॥

३८३ पाठान्तर:—सूरिज। सुरज। ज्यो। ज्यों। शत्रू। फूलति। भुप। ज्यों ॥

३८४ पाठान्तर:—ध्यानं। सत्रु। सिंघासनं। च्चत्ते चैव। अभिधानं ॥

३८५–८९ पाठान्तर:—शीस। ज्योति। के। शिषर। शिषर। परि। अहप्यति। अहपति। तुरा। सोभै मनुं। मनो। सूरिज। मनैां सूरज। कै। शीस षर। परि। धषन। विराजित। वषांन। मनो। मनैां। अग्रजु। रहे। श्रोस। पयोकन। पयोकण। आंनि। शोनत्व। शोभ। विशाल। सोभति। मेर। शिषर। पास। जनन। छिन्नन। मिसि। निषट। मनों। कांम। के। ऊगे। उगी। आंनि। अकूर ॥

अरिल्ल ॥ आनन इंदु उद्दोत सु मानौं । जानन भोज विचष्यन जानौं ॥
रवि ज्यौं सत्रुन कौ तन तापन । कामिनि कौं मकरध्वज मानन ॥
छं० ॥ ७५६ ॥ रू० ॥ ३९० ॥

अरिल्ल ॥ जा सरनागत मानव बंछै । जा सरनागत दानव इंछै ॥
जा सरनागत देव बिचारै । सो प्रिथिराज प्रिथीपति सारै ॥
छं० ॥ ७५७ ॥ रू० ॥ ३९१ ॥

दूहा ॥ प्रिथ्थिराज पति प्रिथ्थिपति । सिर मनि कुली छतीस ॥
नप सिप पर मित लस तजै। ते गुन बरनि बतीस ॥ छं० ॥ ७५८ ॥ रू० ॥ ३९२ ॥
तिन सहाय असुरह सुभट । सत सामंत रु सूर ॥
तिन सु कित्ति प्रगटी करन। कही चंद कवि पूर ॥ छं० ॥ ७५९ ॥ रू० ॥ ३९३ ॥

कवित्त ॥ चहूआन कै बंस । बीर मानिक्क पुत्र दस ॥
ता सु कित्ति कवि चंद । जनम लग्गै जंपत जस ॥
ज्यौं बीत्यौ भारथ्थ । आदि अंतह त्यौं जंपौं ॥
वय वानी सु प्रमान । लग्न मग्नह गुन थप्पौं ॥
ज्यौं भयौ जनम कवि चंद कौ । भयौ जनम सामंत सब ॥
इक थान मरन जनमह सु इक । चलहि कित्ति ससि लगि रब ॥
छं० ॥ ७६० ॥ रू० ॥ ३९४ ॥

॥ एक दिन रात्रि को चंद की स्त्रीका रस में आकर पृथ्वीराज जी की आदि से अंत तक कीर्त्ति वर्णन करने के लिये चंद को कहना ॥

गाथा ॥ समयं इक निसि चंदं । वाम वत्त वहि रस पाई ॥
दिल्ली ईस गुनेयं । कित्ती कहो आदि अंताई ॥ छं॥ ७६१ ॥ रू० ॥ ३९५ ॥

---

३९० पाठान्तर:—आंनन । इद्दु । इंद । उद्दोत । समानो । मानो । जांनन । जातन । भोज्ज । विचप्यन । जांनो । भांन । शत्रुन । सत्रुंन । कै । कांमिनी । कुं । मकरधज । मांनन ॥

३९१ पाठान्तर:—मांनव । इछै । दांन । वंछैः । सरनागति । सो । प्रथीराज । प्रथिपति ॥

३९२ पाठान्तर:—प्रिथीराज । प्रिथवीय पति । प्रथीराज प्रथीवी पति । शिर । कुंली । शिप । तजे । तै । छ तीन । छत्रीस ॥

३९३ पाठान्तर:—असुरह सुरह । कित ॥

३९४ पाठान्तर:—चहुआंनारै । चहुवाना कै । वंश । मांनिक्क । मानक । स । जन्म । लगै । लगें । ज्यो । वित्यो । भारथ । ज्यो । जंप्यो । वांनी । प्रमांन । लगन लगनह । मगनं । थप्यो । जन्म । को । सांमंत । थांन । मरण । जन्म दिन इक । जनंम । कित्त । शसी । ससी । रवि । रवि ॥

३९५ पाठान्तर:—यांद । इस । कहों ॥

॥ चंद का अपने घर में कथा कहना और उस की स्त्री का उसे सुनते हुए जो स्मरण आवे वह पूछते जाना ॥

दूहा ॥ एक दिवस कवि चंद कथ। कही अप्पनें भोन ॥

जिम जिम श्रवनत संभरी। तिम पुच्छि सारंग नैंन॥ छं० ॥ ७९२ ॥ रू० ॥ ३९६ ॥

॥ चंद की स्त्री का उस से पूछना कि कौन दानव, मानव, और नृप कीर्त्ति करने के योग्य है ॥

दूहा ॥ कह्यौ कंत सौं कंति इम। चौं पूछों गुन तोहि ॥

को दानव मानव सु को। को नृप कित्तिक होहि॥ छं० ॥ ७९३ ॥ रू० ॥ ३९७ ॥

॥ चंद का अपनी स्त्री को गूढ उपलक्षों के द्वारा उत्तर दे कहना कि केवल हरि कीर्त्ति करने योग्य है क्योंकि उस की भक्ति के विना मुक्ति नहीं है ॥

कवित्त ॥ पेट काज चढि बंस। परैं फर हरैं अवनि पर ॥

पेट काज रिन भौम। मरैं मारैं सु ढुरैं धर ॥

पेट काज बंधि भार। पार पाहारन पारैं ॥

पेट काज तरु तुंग। चिन्न परि घर पर ढारैं ॥

इति पेट काज पापी पुरुष। वधै बहु लक्छी हरन ॥

नर वर सुक्रम्म कहा नह करै॥ इहै उदर दुभ्भर भरन ॥

छं० ॥ ७९४ ॥ रू० ॥ ३९८ ॥

इस रूपक से अंत तक कवि इस आदि पर्व का तो उपसंहार और दशम की कथा का प्रसंग अपनी स्त्री के वार्त्तालाप के द्वारा बड़े गूढार्थ में वर्णन करता है। हम आशा करते हैं कि काव्य के रसिक इस प्रसंग के दोहों और उन के अर्थ के गांभीर्य को अनुभव करके बहुत ही प्रसन्न होंगे ॥

३९६ पाठान्तर:—सुदिन। वद। कहीय। अप्पनै। भौन। श्रवनंत। श्रवनन॥ श्रवनह। पूछीय। सारंग। नेन॥

३९७ पाठान्तर:—कंति। सो। सों। सौ। कंत। ईम। हों। हौ। पुछौं। पूछूं। गुंन। तोहि को। दांनव। मांनव को। कों। कौ नप। कसि। कहोहि॥

३९८ पाठान्तर:—काजि। वंस। वंश। परयइ फरअकहरैं। परइ। फरहरइ। पैट। काजि। रन। भोमि। मरे। मारे। मरै। मरें। मारें। सुं। ठरे। ठरइ। पैट। काजि। पाहारम। पेट्ट। काजि। तरु। त्रिंच। त्तिन। त्रिन। परि। परिय। टारै। इन। इत। काजि। पुरुष। बंधे। बधे। लछी। वर। सुक्रम्म। कह। करहि। इहइ। ईह। भरण॥

कवित्त ॥ मेह विना नहि नेह । नेह बिन गेह अरस रस ॥
पिय बिन तिय न उमंग । अंग शृंगार रूप रस ॥
नायक बिन नह सेन । दंत बिन भुक्ति न होई ॥
नेग त्याग तैं रहित । कहै कीरति को लोई ॥
बिन नीर मीन राजन कहूं । छत्री बिन सूर त्तरिन ॥
मन वच्च क्रम्म तिम जानि जिय । न है मुक्ति हरि भक्ति बिन ॥
छं० ॥ ७९५ ॥ रू० ॥ ३९९ ॥

॥ चंद की स्त्री का उसे कहना कि चित्रनेवाले को चित्र कि जिस से तू दुस्तर के पार उतरै-चहुवान की कीर्त्ति कविने से वह क्या रंजैगा ॥

दूहा ॥ चित्रनहारे चित्रि तूं । रे चतुरंगी नाह ॥
का चहुआन सु कित्ति कवि । मन मनुष्य हरि लाह ॥ छं० ॥ ७९६ ॥ रू० ॥ ४०० ॥

कवित्त ॥ तत्त हीन पुत्तरी । पंच बंधी कर नंचै ॥
आसा नदी सपूर । जीय मनोरथ संचै ॥
बहु तरंग तिस्नाह । राग बहु ग्रेह कुरंगी ॥
का चहुआना कित्ति । कंत धीरज तिर भंगी ॥
मन मोह मूढ विस्तरि रह्यौ । चिंता तट घट भंजइय ॥
उत्तरहि पार दुत्तर कवी । का चहुआना रंजइय ॥
छं० ॥ ७९७ ॥ रू० ॥ ४०१ ॥

॥ चंद का अपनी स्त्री को कहना कि मैं चहुआन का ऋण उतारता हूं ॥

दूहा ॥ कहे गुपत गुन तैं भले । मो जिय इय अंदेस ॥
रिन अप्पौं चहुआन कौ । पुब्बह पिथ्थ नरेस ॥ छं० ॥ ७९८ ॥ रू० ॥ ४०२ ॥

---

३९९ पाठान्तर :—विना । नह । त्तेहु । ञेह । येह । गेह । पीउ । त्रिय । तीय । श्रिंगार । सैंन । दत्त । बिन । भुंक्ति । हाेइ । तैग । त्यांग । ते । नन । लोइ । जीवन । नही । सूरं तरिन । सूर तरिन । वच । क्रम । क्रंम । जांनि । जीय । सु न । है । नही मुक्ति हरि भक्ति विनां ॥

४०० पाठान्तर :—चित्रनहारै । त्रं । चहुंवांन । क्वि । मनुछ ॥

४०१ पाठान्तर :—तत्र । तत । पुतरी । पूतली । बंधा । नचै । नच्चे । नंदी । संपूर । जीव । मनोरथ । वहां । संचे । बहुंत । रंग । तृश्नाह । बहुं । येह । कुंरंगी । कां चहुवांना । मोह । मुंढ । थतां । भंजदंय । उत्तरिहि । उतरहि । दुतर । कट्टो । कां । चहुवांन । रंजदंय । रंजइह ॥

४०२ पाठान्तर :—कहे । ते । तें । भलो । भलैं । मो । इह । अंदेश । रिण । अप्पो । कौ । पुवह पंथ नरेस । पुब्बह पिथ्थि नरेस ॥

॥ चंद की स्त्री का कहना कि राजा को ऋण देता है तो गोविन्द को क्यों नहीं सुमरता ॥

दूहा ॥ चित्रनहारे हेरि चित । चित्रन हेरि कविंद ॥
जो रिन अप्पै राज कौ । तौ सुमरै न गुविंद ॥ छं० ॥ ७६९ ॥ रू० ॥ ४०३ ॥
श्रम जल मन मंदान करि । श्रम जल भेष न फेरि ॥
चित्त न अप्पै चित्र कौं । चित्रनहारे हेरि ॥ छं० ॥ ७७० ॥ रू० ॥ ४०४ ॥

॥ चंद का उत्तर देना कि मैं कमलासन को देख कर अकुलाया हूं केवल भक्ति विलंब करने वाली है ॥

दूहा ॥ कमलासन देषत थक्यौ । भगत विलंबन हार ॥
क्रोध अप्प सब जग ग्रसै । ग्रसंत न लग्गै वार ॥ छं० ॥ ७७१ ॥ रू० ॥ ४०५ ॥

॥ तथा चंद का कहना कि संसार में जो कुछ और सर्वव्यापी है वह कमलासन ही है उसी की उपमा करके मैं पृथ्वीराज जी की कीर्त्ति वर्णन करता हूं ॥

भुजंगी ॥ वही तत्त त्रैलोक संसार सारं । वही तारनं सत्त भौ सिंध पारं ॥
जगत्तं अधारं निराधार वोही । वही अव्वदा संपदा नित्य सोही ॥ छं० ॥ ७७२ ॥
वही भेद मंचं गजानंत लोयं । वही पूरनं ब्रह्म संसार भोयं ॥
नवं भक्ति कौ संव ही छत्र धारी । भम्यौ ब्रह्म बुझ्यौ वही सिद्ध तारी ॥ ७७३ ॥
जगत्तं सुरत्तं वही है निनारं । वही वासना वासुदेवं प्रकारं ॥
वही भत्त हथ्थं नच्यौ कप्पिमानं । वही यै वही यै वही यै निधानं ॥ छं० ॥ ७७४ ॥
दूकं एक आचिज्ज कीनें गुसांई । चवै चंद जो रंग गोव्यंद पाई ॥
वही की उपम्मा करै कित्ति भासैं । वही सब्ब संसार मझ्झै प्रकासैं ॥ छं० ॥ ७७५ ॥
वही अंतरंगी सुरंगी निनारं । वहै राज राजीव लोचन्न सारं ॥ छं० ॥ ७७६ ॥ रू० ॥ ४०६ ॥

४०३-४०४ पाठान्तर:-चित्रनहारे चित्र तूं । कवि चंद । ज्यो अप्पो । अपैं । को । तो । समरे । समरि । गोविद ॥ ३९८ ॥ मंदा करि । भेष न फेरि । चित्रन अप्पो । अपें । कों । चित्रनहारै ॥

४०५ पाठान्तर:-देषत । क्रोध । सप्पे । ग्रहे । लगो । लगैं ॥

४०६ पाठान्तर:-तत । नारणं । भव । सिंधु । जगतं । सोही । कंही । कही । सरदा । सोही । भेद । मंत्र । गजा मंत । लोयं । पुरनं । सोयं । भोयं । नव । भांति । शव । भम्यो । जगतं । सुरंतं । हेनि । हैनि । वासता । वास । है वं । वास हेव । भक्ति । हथं । कप्पिमानं । कपिमानं । नधानं । वहीं ये वही ये निधानं निधानं । दूक । अेक । अेक । अश्चिर्ज । कीनै । कीने । गुसाइ । गुसाईं । जो । रंगी । गोविद । उपमा । करे । भासो । कही । सकल । मझे । प्रकासो । कहे । लोवंच ॥

॥ चंद की स्त्री उसे कहती है कि ब्रह्म को ब्रह्म में देख जो उसे देखता है उसे वह दीखता है, हर की कीर्त्ति गा क्योंकि उस से और कोई बलवंत नहीं है ॥

दूहा ॥ ब्रह्म देषि ब्रह्मान्तरव । हरि दिपियन दिप्पाइ ॥
विज्ज छुटा अग्यांन मन । गोपी हरि गो गाइ ॥ छं० ॥ ७७७ ॥ रू० ॥ ४०७ ॥

ब्रह्म ब्रह्म हरात वर । नर जानी न गुविंद ॥
सकल घटं घट हरि रमै । ज्यौं अनेक घट चंद ॥ छं० ॥ ७७८ ॥ रू० ॥ ४०८ ॥

जस अपजस लाभिष्ट होइ । अवगति गति न बुझाइ ॥
गोप ग्वाल बूझे नहीं । गोपन बूझी गाइ ॥ छं० ॥ ७७९ ॥ रू० ॥ ४०९ ॥

कवित्त ॥ कहि महियन बल कित्तौ । एक दट्टं हरि धारिय ॥
कहि वासिग बल कित्तौ । सु फुनि करि नेचां सारिय ॥
सुमुंद कित्तौ गरुअत्त । अप्प भुज जोर हिलोरिय ॥
कित्तौक सबल मेरु गिरि । कमठ होइ पिट्ठह तोलिय ॥
लघु बली सेस बंभानवे । सुर असुरायन दिट्ठ सह ॥
कवि चंद अवर बल कैम कहि । कह तौ हरि बलवंत कह ॥
छं० ॥ ७८० ॥ रू० ॥ ४१० ॥

॥ चंद का अपनी स्त्री को उत्तर दे कहना कि अंग २ में हरि रूप रस है ॥

दूहा ॥ त्रिय वर ज्यौ नर ज्यौ सु कवि । नर कित्ती नन गाइ ॥
अंग अंग हरि रूप रस । ब्रन्न दिषाइ सुनाइ ॥ छं० ॥ ७८१ ॥ रू० ॥ ४११ ॥

---

४०७ पाठान्तर :—ब्रह्मांतरवर । हरिपिदिपियंन दिपायं । विन । ग्यांन । गोपो । गो । पाय ॥

४०८ पाठान्तर :—ब्रंह्म ब्रंह्म । जांनी । गोविंद । घटमै । ज्यो । मै रामचंद ॥

४०९ पाठान्तर :—लाभिष्टकी । बुझाय । ग्योप । बुझो । बुझै । गोपन । बुझी । गाय ॥

४१० पाठान्तर :—दठह । धारीय । कितो । किनो । फुंनि । सारीय । सारी । समुंद । किसो । गुरु यत्त । गुरुवत्त । अप्प व । भूज । जोर । हिलोरीय । कितक । मेरु । मेर । गिर । होइ । पिठह । तोलिय । शेस । असुराईन । दिठं । कहै । त । बलिवंत । कहि ॥

४११ पाठान्तर :—त्त्रीय । सुं किती लाई । गाय । ब्रचि । दिषाई । दिषाय । सुंनाई । सुनाय ॥

॥ चंद की स्त्री का उसे कहना कि अंग २ में हरि रूप रस वर्णन कर दिखाओ ॥
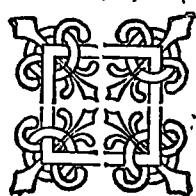
दूहा ॥ अंग अंग हरि रूप रस। विविधि विवेक वरेन ॥
मुकति समप्पन कंत रस। जुग तिनि जोग सरेन ॥ छं० ॥ ७८२ ॥ रू० ॥ ४१२ ॥

॥ चंद का उत्तर दे कहना कि कान दे सुन मैं वर्णन कर दिखाता हूं ॥

दूहा ॥ कह्यौ भांमि सौं कंत इम। जो पूछै तत सोहि ॥
कान धरौ रसना सरस। अग्नि दिषाऊं तोहि ॥ छं० ॥ ७८३ ॥ रू० ॥ ४१३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते पृथ्वीराज रासा के आदि पर्व्वनाम प्रस्ताव संपूर्ण ॥

---

४१२ पाठान्तर:—विविध। वरनं। सुगति। जुंग। जोग। सरनं॥

४१३ पाठान्तर:—भांमिन। सो। जो। पुछइ। पुछै। कांन। दिषांऊं तोहि॥

॥ उपसंहारिणी टिप्पणी ॥

यद्यपि इस महाकाव्य के महाकवि चंद बरदाई ने इस आदि पर्व्व का उपसंहार अपनी निज काव्य-रचन-शैली के अनुसार ३९५ रूपक से लेकर ४१३ तक में बड़े गूढार्थ के साथ वर्णन कर दिया है परंतु यह भी उचित और अत्यावश्यक है कि हम भी हमारी शैली के अनुसार हमारी टिप्पणों के उपसंहारार्थ कुछ थोड़ा सा अपने पाठकों की सेवा में सविनय निवेदन करें कि जिस से सर्व साधारणों को हिन्दीभाषा के इस महाकाव्य का कुछ स्वरूप-ज्ञान हो ॥

ग्रन्थ-संज्ञा

इस महाकाव्य का नाम पृथ्वीराजरासो है और वह दो शब्दों से मिलकर बना है अर्थात् पृथ्वीराज और रासो। इस संज्ञा का अर्थ यह होता है कि "पृथ्वीराज को रासो"। ग्रंथकर्त्ता ने पृथ्वीराज नामक सज्ञा से, हमारे उन पृथ्वीराजजी चौहान को अपने इस महाकाव्य का नायक वर्णन किया है, कि जो विक्रम के बारहवें शतक में हमारे स्वदेशी अंतिम राजराजेश्वर अर्थात् बादशाह हुए हैं; कि जिन की शूरवीरता का अभिमान आज तक प्रत्येक आर्य को है, और जिन के नाम का ओठा रात्रिदिन की बोल चाल में हमारे देश के सर्व साधारण दिया करते हैं। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि वे एक कैसे बड़े कट्टड आर्य और शूरवीर राजा हुए हैं; कि जिनों ने सुलतान शहाबुद्दीनजी गोरी को कई बार घोर युद्ध कर २ के पराजित किया था परंतु होनहार परम बलवान होती है कि जिस से अचिंतित् घटना भी झट उपस्थित हो जाती है। देखो, ईश्वरही की इच्छा हिन्दुओं की बादशाहत स्थिर रखने की न थी, कि दैवयोग से पृथ्वीराजजी चौहान जैसे सूरवीर राजा, सुलतान शहाबुद्दीनजी गोरी के हाथ से, अपनी अंतिम लड़ाई में, अंत को प्राप्त हुए। वह भी फिर कैसे-कि वे हिन्दुओं की बादशाहत के सब ठाठ पाटरूपी सर्वस्व को मानो अपने साथ ही लोकान्तर में लेगये और जगत को यह निर्देश कर गये कि लौकिक में जो प्रायः यह कहा करते हैं कि किसी के अंत समय उसके साथ कुछ नहीं जाता है वह एक प्रकार से असत्य है-अब रहा हिन्दी रासो शब्द वह संस्कृत रास अथवा रासक से है और संस्कृत भाषा में रास के "शब्द, ध्वनि, क्रीडा शृंखला, विलास, गर्ज्जन नृत्य और कोलाहल आदि" के अर्थ और रासक के काव्य अथवा दृश्यकाव्यादि के अर्थ परम प्रसिद्ध हैं। मालूम होता है कि ग्रंथकार ने संस्कृत भारत शब्द के सदृश रासो शब्द को भावार्थ से महाकाव्य के अर्थ में ग्रहण कर प्रयोग किया है। यह रासो शब्द आज कल की व्रज भाषा में भी अप्रचलित नहीं है किन्तु अन्वेषण करने से वह काव्य के अर्थ के अतिरिक्त अन्य अनेक अर्थों में भी प्रयोग होता हुआ विद्वानों को दृष्टि आवेगा, जैसेः-"हमने चौदैके गदर को एक रासो जोड़यो है-कल बहादर सिंघजी की बैठक में बंदर नें गदर को रासो गायो हो-फिर मैं ने भरतपुर के राजा सूरजमल को रासो गायो सो सब देखते ही रह गये-अजी ये कहा रासो है-मैं तो कल्ल एक रासे में फँस गयो या सूं तुमारे यहां नाँय आय सक्यो-अजी रामगोपाल बड़ो दिवारिया है, वाके रासे में फँस कैं रुपैया मत बिगाड़ दीजो-हमनें आज बिन को रासो निमटाय दीनो है-देखौ साब! रासे के संग रासो है, बुरी मत मानों"-तथा लुगाइयें भी गाया करती हैं।

गीत ॥ मत काची तोन्ह रखियो धानी
नान्ह करूंगी औंत रासा
गुर राख, पछतावा, मत काचा । इत्यादि ॥ १ ॥
जिय लोगन की रास उठेगी तौन्ह के खाक उठावेगा,
हल जोत, नहीं पछतावेगा । इत्यादि ॥ २ ॥

२ यद्यपि इस महाकाव्य का केवल नाम सुनते ही उस का विषय यह प्रतीत होने लगता है कि उस में पृथ्वीराजजी चोहान के जन्म से लेकर मरण तक के ही सब चरित्र वर्णन किये गये हैं;

विषय

परंतु उस के गर्भित वृत्तों की परीक्षा करने से जानने में आता है कि महा कवि चंद ने उस में पृथ्वीराजजी के चरित्रों के साथ ही उन के सब समकालीन शूर, सामंत, आधीन राजा दुष्ट मित्र और सगे संबन्धी और सहायक यावदार्य राजकुलों के भी कुछ न कुछ चरित्र और शौर्य्य वर्णन किये हैं । अतएव यह कदापि नहीं समझा जा सक्ता कि यह महाकाव्य पृथ्वीराजजी चोहान के नायक होने के कारण से केवल चोहानों की ही बापौती का ग्रंथ है किन्तु वह वास्तव में यावदार्य राजकुलों का सर्वस्व है । देखो, पृथ्वीराजजी से लेकर जिन २ शूर वीरों के चरित्र उस में वर्णन किये गये हैं उन सब की विद्यमान संतान वर्तमान काल की हमारी श्रीमती भारत–राजराजेश्वरी विक्टोरिया के सिंहासन के चारों ओर उपस्थित होकर अपनी २ प्रतिष्ठा के अनुसार तन मन और धन के द्वारा परम राज–भक्ति को प्रकाश कर रहे हैं और श्रीमती के प्रस्वेद के साथ मानों अपना रक्त तक बहाने को प्रस्तुत खड़े हैं । क्या पृथ्वीराज-जी के एक बड़े शूर वीर सामंत पज्जूनजी के वंश में श्रीमहाराज साहब जयपुर और उनके राज वंशीय सरदार नहीं हैं? क्या पृथ्वीराजजी के सगे संबन्धी जयचंदजी के वंशज श्रीमहाराज साहब जोधपुर और कृष्णगढ़ और उनके भाई बेटे नहीं हैं? क्या पृथ्वीराजजी के बहनेऊ और परम शूर वीर सहायक रावल समरसीजी की कुलीन संतान में श्रीमहाराज साहब नैपाल, श्रीमहाराणाजी साहब उदयपुर, श्रीदरबार डूंगरपुर और प्रतापगढ़ अपने २ राजवंशी उमराव और सरदारों के सहित नहीं हैं? क्या चोहानजी के अनेक वंशज बूंदी, कोटा सिरोही, नीमराणा, भदावर, बेदला, कोठारिया, और पारसोली आदि के राजा महाराजा और सरदारों को आज हम अपनी आंखों से नहीं देखते हैं? इसी तरह अन्य सब की विद्यमान संतानों को भी हमारे पाठक स्वयम् विचार देखें और इस थोड़े में ही बहुत कर के समझ लें कि इस महाकाव्य का विषय बारहवें शतक के यावदार्य राजकुलों के संवलित चरित्रों से परम विभूषित है ॥

३ इस पृथ्वीराज रासे को जो हम अपने लेखों में महाकाव्य कर के लिखते हैं वह कुछ

काव्य

अन्यथा और आश्चर्यदायक नहीं है किन्तु साहित्यदर्पण में महाकाव्य का जो नीचे लिखा हुआ लक्षण लिखा है उस से वह विशेषांस में मिलता हुआ है:–

सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैको नायकः सुरः । सद्वंशः क्षत्रियो वापि धीरोदात्त गुणान्वितः ॥
एकवंशभवा भूपाः कुलजा बहवोऽपि वा । शृङ्गारवीरशान्तानामेकोऽङ्गी रस इष्यते ॥
अङ्गानि सर्वेऽपि रसाः सर्वे नाटकसन्धयः । इतिहासोद्भवं वृत्तमन्यद्वा सज्जनाश्रयम् ॥
चत्वारस्तस्य वर्गाः स्युस्तेष्वेकं च फलं भवेत् । आदौ नमस्क्रियाशीर्वा वस्तुनिर्देश एव वा ॥
क्वचिन्निन्दा खलादीनां सताञ्च गुणकीर्त्तनम् । एकवृत्तमयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृत्तकैः ॥
नातिस्वल्पा नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह । नानावृत्तमयः क्वापि सर्गः कश्चन दृश्यते ॥

सर्गान्ते भाविसर्गस्य कथायाः सूचनं भवेत् । सन्ध्या सूर्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासराः ॥
प्रातर्मध्यान्हमृगयाशैलर्तुवनसागराः । सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वराः ॥
रणप्रयाणोपयम मन्त्रपुत्रोदयादयः । वर्णनीया यथायोगं साङ्गोपाङ्गा अमी इह ॥
कवेर्वृत्तस्य वा नाम्ना नायकस्येतरस्य वा । नामास्य सर्गोपादेयकथया सर्ग नाम तु ॥
सा० द० ५५९ ॥

जब कि वह महाकाव्य के लक्षण के अनुसार वास्तविक एक महाकाव्य है तो फिर उस के रचनेवाले का भी साहित्यशास्त्र में एक अच्छा व्युत्पन्न महाकवि होना क्या अनुमान नहीं किया जा सक्ता है? जैसे कि इस महाकाव्य का विषय पृथ्वीराजजी चौहान और उन के समकालीन यावदार्य राजकुलों के चरित्रों से संवलित् है वैसे ही उसका काव्य भी भिन्न २ प्रकार के छंदों से विभूषित अनेक प्रकार के काव्यों का एक ऐसा संवलित काव्यात्मक है कि जिस को हम किसी एक प्रकार के काव्य की संज्ञा प्रदान नहीं कर सक्ते हैं। उसके काव्य को श्राव्य-काव्य की संज्ञा देने में तो हम आशा करते हैं कि किसी विद्वान को भी कुछ शंका न होगी किन्तु सूक्ष्मतर अन्वेषण करने से ज्ञात होगा कि उस में दृश्य-काव्य के अनेक अंगों का भी कवि ने अपनी सूक्ष्मतर युक्तियों से ऐसा समावेश किया है कि उस को कोई दृश्य-काव्य का अच्छा व्युत्पन्न परीक्षक झट शोधकर जान सक्ता है। क्या हम यह नहीं विचार सक्ते कि इस महाकाव्य के छंदों को कवि ने रूपक के क्रम से क्यों गिने हैं? इस महाकाव्य की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से यहां तक भी स्पष्ट विदित हो सक्ता है कि महाकवि चंद ने उसको काव्य की अनेक उत्तमताओं के इन तीन मूलों से भी भले प्रकार विभूषित किया है। प्रथम तो महाकवि ने अपने वचन का शृंगार, रस, अनुप्रास, और अलङ्कारादिक से परम विचित्र किया है। दूसरे उसने भाव में चोज रक्खा है। तीसरे इस महाकाव्य के सब छंद प्राचीन और नवीन प्रकार की गानविद्या के अनुसार गाये भी जा सक्ते हैं। इस के अतिरिक्त महाकवि ने पृथ्वीराजजी और उनके समकालीन यावदार्य राजकुलादि के इतिहास भी जहां तक उस से हो सके हैं भले प्रकार से वर्णन किये हैं। हिन्दी भाषा में साहित्यशास्त्र और सब पौराणिक अनुवाद विषयिक ग्रंथ जो अब तक प्राप्त हो सके हैं वह बारहवें शतक के अथवा उस के पहिले के नहीं है किन्तु वे सब इधर के समय के रचित हैं अतएव हम को समझना चाहिये कि चंद ने संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथों के आधार से ही यह महाकाव्य रचन किया है और जब कि यह बात ऐसे ही है, तो फिर हमको उस के परम परिश्रम के लिये कितना आभारी होकर उसकी प्रशंसा करना चाहिये। क्या हमको इस महाकाव्य की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से चंद की उक्ति, साहित्यशास्त्र विषयिक नियम, और पौराणिक कथा आदि में उसका संस्कृत भाषा के अनेक विद्या ग्रन्थों का अनुकरण करना नहीं दृष्टि आता है? जहां तक हिन्दी भाषा के ऐसे अनेक ग्रंथ कि जो चंद के पीछे के रचित हैं हमारे पढने में आये हैं, उन सब से यही ज्ञात होता है कि उनके रचनेवाले चंद कवि जैसे संस्कृत भाषा से भले प्रकार परिज्ञात नहीं थे और उन्हों ने चंद की शैली का ही निःसंदेह अनुकरण किया है। हमारे कहने का सारांश यह है कि इस महाकाव्य को उसके अति क्लिष्ट और हमारी बुद्धि को चल विचल कर देनेवाला होने के कारण निन्दनीय नहीं ठहराना चाहिये किन्तु साहित्यशास्त्रादि के संस्कृत भाषा के अनेक ग्रंथों को हाथ में लेकर और अपने हृदय को चारण और भाटादि के वंश परंपरा के हाड-वैर के दुराग्रह से शुद्ध करके सूक्ष्मतर परीक्षा करनी चाहिये कि उस से हमको निःसंदेह यह ज्ञात हो जावेगा कि हमारे स्वदेशी और यूरोपियन बड़े २ विद्वान जो इस महाकाव्य की प्रशंसा अब तक करते चले आये हैं वह वास्तव में वैसा ही अमूल्य महाकाव्य है और वह ऐसा भी है-कि मानों चंद अपने समय

तक के हिन्दी भाषा के सर्व प्रकार के काव्यों का एक अमूल्य संग्रह हमारे लिये प्रस्तुत कर के हमारी हिन्दी भाषा को अति धनाढ्यकर गया है। क्या यह बात पक्षपात रहित विद्वानों को अति आश्चर्य और अट्टाट्टहास कराने वाली नहीं है, कि हम इस महाकाव्य को अभी तक बहुत ही अच्छी तरह से पढ़ पढ़ा और समझ समझा तो सके ही नहीं और न इस महाकाव्य में यूनीवर्सिटी University की परीक्षा की शैली के अनुसार परीक्षा देकर उत्तीर्ण हो सके हैं किन्तु उसको टोप देकर विध्वंस करने को तो हम सब से आगे आखड़े होने को प्रसन्नतापूर्वक तयार हैं? निदान किसी कवि के कहे अनुसार जो जिस के गुण को नहीं जानता वह उस की निन्दा निरंतर करता है:—"न वेत्ति, यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निन्दां सततं करोति। यथा किराती करिकुंभजाता मुक्ताः परित्यज्य बिभर्ति, गुंजाः" ॥

जैसे इस महाकाव्य का काव्य अनेक प्रकार के काव्यों का एक संवलित् काव्य है वैसे ही उसकी भाषा भी उसके ग्रंथकर्त्ता के समय तक की अनेक प्रकार की प्राचीन हिन्दी भाषाओं की एक अति संवलित्

भाषा

हिन्दीभाषा है। यदि किसी को इसमें कुछ संदेह हो तो वह इस आदि पर्व्व को ही ध्यान देकर पढ देखे कि उसके किसी छंद की तो कैसी भाषा है और किसी की कैसी। क्या विद्वानों से यह बात छिपी हुई है कि भाषा और काव्य का नित्य-संबन्ध नहीं है? जब कि उन में नित्य-संबन्ध का होना यथार्थ है तो फिर क्या प्रत्येक का अपने २ अनेक प्रकारों से संवलित् होना भी स्वतः सिद्ध नहीं है? इस महाकाव्य की भाषा के चोज को वह विद्वान भले प्रकार से जान सके हैं कि जो वर्तमान समय में फिलोलोजिस्ट Philologists अर्थात् शब्दोत्पत्तिविद्याज्ञ कहलाते हैं। और वैसे तो हमारे पढने में वर्तमान समय के ऐसे २ सहसा सिद्धान्त कर लेने वाले विद्वानों के भी लेख आये हैं कि जिनों ने ऐसा अत्यन्ताभाव का वाक्य भी कहा है, कि इस महाकाव्य के महाकवि को अनुस्वार और विसर्ग तक के प्रयोग करने का बोध नहीं था। और विद्वान भलेई ऐसा कहने में सम्मत हों परंतु हमारे मुख से तो इस महाकाव्य के काव्य को देखते हुए ऐसा सुन कर वारंवार यही निकलता है कि—त्राहि गोविन्द! त्राहि गोविन्द!! ग्रंथकर्त्ता ने इस ग्रंथ को जिस भाषा में लिखा है वह उसने स्वयम् ही इस आदि पर्व्वके रूपक ३९ में स्पष्ट कह दिया है और जैसा उसने कहा है वैसी ही भाषा हम इस महाकाव्य की पाते भी है। फिर आश्चर्य क्या है? वह यही है—कि न तो हम इस ग्रंथ को आदि से लेकर अंत पर्यंत पढते हैं, न समझते हैं, न कवि के अभिप्राय को लक्ष में लाते हैं, न यह विचारते हैं कि बड़े २ विद्वान कि जिन के वचन पर अनेक मनुष्य विश्वास करते हैं उनके सिर पर कुछ सम्मति देते समय बड़ी भारी जिम्मेदारी अर्थात् अनुयोज्यता का बोझ भी रक्खा हुआ है कि नहीं—किन्तु, जो मन में आया वही हम लिख डालते हैं; क्योंकि न तो चंद कवि, न पृथ्वीराजजी चौहान, और न रावल समरसीजी हम से हमारे ऐसा कहने के लिये अब लड़ने को आ सके हैं, और न किसी क्षीर-नीर का सा न्याय करने वाले विद्वान का हमको डर है। देखो, हमने हमारी प्रथम टिप्पणी में ही कह दिया है कि इस महाकाव्य की हिन्दी भाषा तीन प्रकार की है। प्रथम षट-भाषा-और-कुरान-की-भाषा-की-योनिवाली दूसरे षट-भाषा-और-कुरान-की-भाषा-के-सम, और तीसरे देशी—प्रसिद्ध। इसके अतिरिक्त विद्वानों को इस महाकाव्य की भाषा की सूक्ष्मतर परीक्षा करने से ज्ञात होगा कि चंद कवि ने साहित्यदर्पण में लिखे हुए भाषा के प्रयोग के निम्न लिखित नियमों का भी अपने निज विचार और शैली के संस्कार सहित इस महाकाव्य के रचने में कुछ अनुकरण किया है:—

पुरुषाणामनीचानां संस्कृतं स्यात्कृतात्मनाम् । शौरसेनी प्रयोक्तव्या तादृशीनाञ्च योषिताम् ॥
आसामेव तु गाथासु महाराष्ट्रीं प्रयोजयेत् । अत्रोक्ता मागधीभाषा राजान्तःपुरचारिणाम् ॥
चेटानां राजपुत्राणां श्रेष्ठीनां चार्द्ध मागधी । प्राच्या विदूषकादीनां धूर्तानां स्यादवन्तिका ॥
योधनागरिकादीनां दाक्षिणात्या हि दीव्यताम् । शकाराणां शकादीनां शाकारीं सम्प्रयोजयेत् ॥
बाह्लीकभाषा दिव्यानां द्राविडी द्रविडादिषु । आभीरेषु तथाऽभीरी चाण्डाली पुक्कसादिषु ॥
आभीरी शावरी चापि काष्ठपत्रोपजीविषु । तथैवाङ्गारकारादौ पैशाची स्यात् पिशाचवाक् ॥
चेटीनामप्यनीचानामपि स्यात् शौरसेनिका । बालानां षण्डकानाञ्च नीचग्रहविचारिणाम् ॥
उन्मत्तानामातुराणां सैव स्यात् संस्कृतं क्वचित् । ऐश्वर्य्येण प्रमत्तस्य दारिद्र्योपस्कृतस्य च ॥
भिक्षुबन्धधरादीनां प्राकृतं सम्प्रयोजयेत् । संस्कृतं संप्रयोक्तव्यं लिङ्गिनी घृत्तमासु च ॥
देवीमन्त्रिसुतावेश्या स्वपि कैश्चित्तथोदितम् । यद्देशं नीचपात्रन्तु तद्देशं तस्य भाषितम् ॥
कार्यतश्चोत्तमादीनां कार्य्यो भाषाविपर्ययः । योषित् सखीबालवेश्या कितवाप्सरसां तथा ॥
वैदग्ध्यार्थं प्रदातव्य संस्कृतं चान्तरान्तरा ॥ सा०द० ४३२ ॥

इस बात की कुछ परीक्षा हम इस आदि पर्व्व में ही कर सक्ते हैं । देखिये रूपक ३३, ३९, आदि शुद्ध संस्कृत भाषा में हैं और रूपक १६, २२, ४७, ५७, ५९, इत्यादि में षटभाषाओं का सादृश्य और साटकों में प्रायः संस्कृतादि भाषाओं का सादृश्य है । इसी प्रकार हमारे पाठक इन भाषा संबन्धी सब बातों को इस समग्र ग्रन्थ में अन्वेषण कर जाच देखें । यदि इस प्रकार की परीक्षा करने पर सब विद्वानों की सम्मति में यही तुलेगा कि चंद कवि वज्र-मूर्ख था तो हम भी उस को-बड़ा वज्र-मूर्ख कहने लगेंगे क्योंकि वह हमारा कोई संबन्धी नहीं है और न हम को हमारे कहे का कुछ हठ है वरुक हमारा सिद्धान्त यही है कि सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग । इस महाकाव्य की भाषा में दो एक वर्ष से एक यह भी बड़ी भारी शंका लोगों ने खड़ी किथी है कि उस में आठ या १० दस भाग में एक भाग के फारसी शब्द हैं और फारसी शब्द अकबर बादशाह के समय से हिन्दी भाषा में मिले हैं अतएव यह महाकाव्य सं० १६४० से १६७० के बीच में क्रित्रिम बना है । हम इस बात से बिलकुल्लही असम्मत हैं और ऐसा अनुमान करने वाले को हम समझते हैं कि उसने न तो यह पृथ्वीराज रासा कभी आदि से अंत परियंत अच्छी तरह से पढ़ा है और न उसको ऐतिहासिक विद्या का पूरा २ बोध है क्योंकि यह अनुमान बिलकुल्लही अदृढ़ और अपरिपक्व है । वरन अब तक के ऐतिहासिक शोधों के अनुसार हमारी सम्मति में फारसी शब्दों का मेल हमारे भरतखण्ड की बोलचाल की भाषाओं में सातवें शतक तक पाया जा सक्ता है कि फिर इस बारहवें शतक की हिन्दी भाषा की तो क्याही कथा कहनी है । टुक विचार कर देखिये कि किसी देश की भाषा में अन्य देशीय भाषा के शब्दादि का मेल बहुधा करके प्रथम बोलचाल की भाषा में ही हुआ करता है न कि किसी मृतः प्रायभाषा में और वह विदेशियों के किसी देश में आने जाने, बसने बसाने, रहने सहने, मिलने मिलाने वाणिज्य करने कराने राज्य के बदलने बदलाने, मत के बिगड़ने बिगड़ाने आदि के कारणों से ही हुआ करता है । तदनन्तर आप नीचे लिखे कारणों को विचार कर देखिये और निर्णय कीजिये कि चंद की हिन्दी में जो फारसी शब्दों के प्रयोग संबन्धी दोष दिये जाते हैं वह वास्तव में यथार्थ हैं अथवा नहीं:—

१ पृथ्वीराज रासे के किसी भी समय में आठ या दस भाग में एक भाग के फारसी शब्द नहीं हैं और जब प्रत्येक समय में नहीं हैं तब समग्र ग्रन्थ में भी न होना स्वतः सिद्ध है ।

यदि किसी को निश्चय करना हो तो इस आदि पर्व्व से ही गिन कर निश्चय करले । हां ऐसा तो हम निःसंदेह कह सक्ते हैं कि उस में अनेक फारसी शब्द हैं किन्तु विना गिने ऐसी असत्य संख्या स्थिर नहीं कर सक्ते हैं ॥

२ ग्रन्थकर्त्ता ने रूपक ३९ में स्वयम् कहा है कि उस ने कुरान की भाषा का भी आश्रय किया है ॥

३ ग्रंथकर्त्ता महाकवि चंद पंजाब देश के लाहौर नगर में उत्पन्न हुआ था, जहां कि उस के जन्म होने के १०० वर्ष पहिले से ही महमूदी सल्तनत का होना और उस का पृथ्वीराज जी के साथ ही साथ नाश होना तबक़ात नासरी से ही सिद्ध है। फिर क्या कोई विद्वान यह अनुमान कर सक्ता है कि इस सौ १०० वर्ष के समय में लाहौर नगर की भाषा में कोई एक भी शब्द मुसलमानी भाषा का नहीं मिल सका था और न चंद कवि एक भी फारसी शब्द जानता था और न उस के सुनने में कभी कोई एक भी फारसी शब्द आया था किन्तु वह इस वाक्य "नवदेत यावनी भाषा कंठे प्राण गते रपि" का ही अनुरूप था? क्या महमूदी सल्तनत के राज्य समय में कोई एक भी हिन्दू मुसलमान नहीं हुआ था, न कोई मसजीद बनी थी, न कोई नगर आदि मुसलमानी नाम से बसे थे? ।

४ क्या पृथ्वीराजजी के राज्य की और महमूदी सल्तनत की परस्पर सीमा नहीं मिली हुई थी? क्या इन दोनों राज्यों के दूत एक दूसरे के राज्य में आते जाते और नहीं रहते थे? क्या इन दोनों राज्यों में कभी एक वार भी कुछ परस्पर लिखने पढ़ने का काम नहीं पड़ा था? यदि परस्पर लिखा पढ़ी का काम पड़ा था तो क्या वह शुद्ध वैदिक संस्कृत भाषा में लिखा पढ़ी हुई थी और क्या महमूदी सल्तनत् वाले भी संस्कृतादिमृतः प्राय भाषाओं में ही अपना राज कार भार चलाते थे?

५ क्या हसन निजामी आदि से हम को यह ज्ञात होता है कि पृथ्वीराजजी के राज्य समय में उन की सेवा में अथवा उन के राज्य में न तो कोई फारसी जानने वाला था न कोई सुलतान की ओर से कभी कुछ सँदेसा लेकर पृथ्वीराजजी के पास गया, न कोई मुसलमान सिपाही थे, न कोई मुसलमान सौदागर था न कोई मुसलमान यात्री वहां आया था न कोई मुसलमान उन के आधीन देश में रहता था; मानों पृथ्वीराजजी के राज्य समय की हिन्दी भाषा को मुसलमानी भाषा की किंचित् वायु ही नहीं लगी थी? क्या चित्ररेखा नाम की सुलतान शहाबुद्दीनजी गोरी की एक परम प्रिया पासवान को हसननामक का उड़ा लाना तबक़ातनासरी से कुछ भी सिद्ध नहीं होता और क्या यही सुभगा पृथ्वीराजजी की शरणागत में रह कर हमारी हिन्दुओं की बादशाहत को समूल नाश को प्राप्त कराने वाली नहीं हुई है?

६ क्या सुलतान शहाबुद्दीनजी गोरी ने कई वार पृथ्वीराजजी और लाहौर की महमूदी सल्तनत पर चढ़ाईयां नहीं कियीं थी? क्या इन अवसरों में भी जो फारसी शब्द चंद ने प्रयोग किये हैं वह चंद और पृथ्वीराजजी की सेना के सुनने और समझने में कभी नहीं आये थे और न उन में का कोई एक शब्द भी उन की भाषा में मिल गया था? क्या जब शहाबुद्दीनजी ने लाहौर की महमूदी सल्तनत पर चढ़ाईयां कियीं तब लाहौर वालों ने पृथ्वीराजजी से कुछ मंत्रणा नहीं कियी थी और न उन की कुछ सहायता लियी थी?

७ क्या मसूद ने हांसी पर चढ़ाई नहीं कियी थी? क्या वह लाहौर के एक वाईसराय Viceroy के साथ बनारस तक नहीं आया था और न उसने उस शिवपुरी को लूटा था? क्या इस सयम में भी कोई एक भी शब्द मुसलमानी भाषा का हमारी हिन्दी भाषा में नहीं मिला था?

८ क्या महमूद गजनी की १६ वा १७ चढ़ाईयां (सन् ९९६ से १०३० तक) हमारे देश की भाषाओं में कोई एक भी मुसलमानी शब्द नहीं मिला सकी थीं? क्या हमारे गुजराती बन्धुओं को महमूद गजनी के निज मुख के "बुतशिकन्" और "बुत्फरोश" शब्द सोमनाथ के नाश के दिन से आज तक नहीं याद रहे हैं? क्या गुजरात के नागर ब्राह्मणों में से जिनोंने अपने देश की संरक्षा के लिये पुरुषार्थ किया और मुसलमानी बादशाहों की सेवा करना अंगीकार किया उनका नाम "सिपाही नागर" नहीं पड़ा है? क्या महमूद के समय में कोई भी हिन्दू मुसलमान नहीं हुआ था? क्या मथुरापुरी में उसके लशकर में अनेक हिन्दू गुलाम दो २ रुपियों में नहीं बिके थे? क्या उसकी १००००० एक लाख सवार और २०००० बीस हजार पैदल फौज के साथ हमारे स्वदेशी व्यापारियों की बोलचाल देववाणी में होती थी और कोई एक भी मुसलमानी शब्द उस की फौज हमारे देश के अनेक नगरों में अपने पीछे अपने स्मारक चिन्ह की भांति नहीं छोड़ गई थी? क्या महमूदाबाद नामक कोई भी नगर महमूद का बसाया हुआ हमारे देश में नहीं है?

९ क्या अब्दुलअसी ने सन् ६३६ ई० के लगभग बंबई के समीप के थाना पर चढ़ाई नहीं किथी थी? क्या इराक के परम प्रसिद्ध जालिम गवरनर Governor हज्जाज के समय में राजा दाहिर से सिंध विजय नहीं किया गया था? क्या फिर सन् ७१२ ई० में महोम्मद कासिम ने सिंध पर चढ़ाई करके सिन्ध को नष्ट भ्रष्ट और लूट खसोट नहीं किया था और राजा दाहिर को नहीं मारडाला था? क्या राजा दाहिर का लड़का जयसिंह इस समय कितनेक और छोटे मोटे सिन्ध के राजा और सरदारों सहित मुसलमान नहीं होगया था और क्या तब से ही मुसलमानी धर्म्म का आज तक सिन्ध में बराबर चला आना ऐतिहासिक शोध नहीं सिद्ध करते हैं? क्या सिन्धी मुसलमान पृथ्वीराजजी के पीछे हुए हैं? क्या इस दशा में कोई एक भी अरबी शब्द हमारी देश भाषाओं में उस समय नहीं मिला है?

१० क्या ऐतिहासिक शोध हमको यह नहीं विदित करते हैं कि पारसी लोग सैसेनियन् Sassanian Dynasty वंश की अवनति के समय Persia परशिया से भाग कर हमारे देश के बंबई नगर के आस पास आकर बसे हैं? क्या इन लोगों ने अपनी मातृभाषा का कोई एक शब्द भी पृथ्वीराजजी के समय तक हमारी देश भाषा में नहीं मिलाया था? क्या उन को हमारे देश के लोग पारसी के बदले कोई अन्य वैदिक शब्द से पुकारते थे?

११ क्या गुजराती भाषा में फारसी शब्दों के मिलने का शोध सं० १३५६ तक शास्त्री व्रजलाल कालिदासजी के रचित गुजराती भाषा के इतिहास नामक ग्रन्थ से पहुंचना नहीं विदित होता है? जो इसी तरह हम को देश भाषा के प्राचीन ग्रन्थादि बराबर मिलते जांय तो क्या हम सातवीं सदी तक कोई एक भी मुसलमानी शब्द हमारी देश भाषाओं में मिला हुआ नहीं शोध सकते हैं?

१२ क्या पुरातत्ववेत्ताओं ने यह शोध लिया है कि हिन्दी भाषा का अमुक समय में प्रागट्य हुआ है? क्या बारहवें शतक के पहिले और उसके एक दो शतक पीछे के कोई पुस्तक ताम्र-पत्र प्रशस्ती पट्टे परवाने आदि हम को ऐसे प्राप्त हो गये हैं कि जिन की अपेक्षा से हम यह कह सकें कि बारहवें शतक के पहिले अथवा उसके कुछ पीछे के समय तक भी मुसलमानी भाषा के शब्द हिन्दी में नहीं मिले थे? क्या अब तक के प्राप्त हुए पुरातत्व संस्कृतादि मृतः प्राय भाषाओं में नहीं हैं और उन की अपेक्षा से हिन्दी भाषा के विषय में कल्पना करना बहुत ही आश्चर्य दायक और अयोग्य नहीं है?

१३ क्या संस्कृत भाषा के उन ग्रंथों में, कि जिनको पुरातत्ववेत्ता बारहवें शतक से पहिले के बने हुए मानते हैं, ऐसे २ शब्द हमको प्राप्त नहीं होते हैं कि उन नाम के देश और मनुष्य यूरोप आदि अन्य खंडों में आज भी विद्यमान है? क्या विक्रमादित्यजी की "शाकारि" पदवी साधु संस्कृत भाषा की है? क्या रावल समरसीजी की आबू की प्रशस्तिके ४५ वें श्लोक में "तुरुष्क" शब्द नहीं प्रयोग हुआ है? क्या व्याकरण महाभाष्य से बहुत सी धातुओं के प्रयोग द्वीपान्तरों में होना विदित नहीं होता है? क्या महाभारत में पांडवों का यावनी भाषा में बात करना नहीं लिखा मिलता है?

१४ क्या वर्तमान समय के अच्छी हिन्दी लिखनेवालों में से कोई किसी विद्वन मंडली में खड़े होकर यह कह सक्ते हैं कि चिट्ठी पत्री से लेकर ग्रन्थ तक जो कुछ उनोंने आज तक हिन्दी भाषा में लिखे हैं उन सब की हिन्दी एक सी ही है अर्थात् उनके अनेक लेखों में से ऐसे २ उदाहरण बिलकुल्ल नहीं मिल सकेंगे कि उनके किसी लेख में तो एक भी फारसी शब्द नहीं आया होगा और किसी में अनेक फारसी शब्द प्रयोग हुए होंगे? यदि पृथ्वीराज रासे की भांति एक हजार वर्ष के पीछे कोई ऐसे हमारे स्वदेशीय बन्धु के ऐसे लेखों को हाथ में लेकर वाद विवाद करें तो क्या दोनों पक्षकारों को प्रत्येक के अनुकूल तर्क नहीं मिल सकेंगी? जब आज ही हम लोगों की यह दशा है कि कभी कैसी हिन्दी लिखते हैं और कभी कैसी तो फिर प्राचीन समय के ग्रंथकर्त्ताओं में से जिसने यह स्पष्ट कह दिया है कि मैं कुरान की भाषा को भी प्रयोग में लेता हूं उसको हम क्योंकर दोष दे सक्ते हैं? क्या हम अनुमान नहीं कर सक्ते कि प्राचीन ग्रंथकारों में से जिसने जैसी हिन्दी पसंद कियी उसने वैसी ही लिखी है?

१५ क्या आज कल के विद्यमान देशी राजस्थानों में अस्मार्त्त समय से अब तक मुसलमान बादशाह सिपहसालार, सरदार, सौदागर, मोलवी मुल्ला और काज़ी आदि के नाम अपनी देश भाषा हिन्दी और मृतः प्राय भाषा संस्कृतादि के होते हुए भी फ़ारसी अक्षरों और उसी भाषा में चिट्ठी पत्री और फ़रमान खरीते आदि के लिखे जाने का प्रचार नहीं प्रचलित है? क्या आज के एक-डंकी अंग्रेजी राज्य शासन समय में भी राजपूताने के अंतरगत राज्यों से श्रीमान् वाइसराय और गवरनर जनरैल साहब बहादुर के नाम उभय की विदेशी फ़ारसी भाषा और लिपी में ख़रीते नहीं लिखे जाते हैं? बहुत समय के व्यतीत होजाने पर जब कि वर्त्तमान समय के वृत्त पुरातत्व संज्ञा से माने जावेंगे और वे ऐसे ही अलभ्य होंगे जैसें कि आज पृथ्वीराजजी के समय के हैं तब फिर क्या उस समय के विद्वानों का वैसी ही तर्कों से कि जैसी से आज हम लोग रासे में दोष देते हैं इन देशी राज्यों के इन फ़ारसी लिपी और भाषा में गवर्मेन्ट हिन्द के नाम लिखे हुए ख़रीतों को भी जाली समझना यथार्थ होगा? क्या यह व्यवहार भी वर्तमान समय में देशी राजस्थानों में प्रचलित नहीं है कि जब गवर्मैन्ट हिन्द के नाम ख़रीता लिखने का काम पड़ता है तब फ़ारसी भाषा के विद्वानों को घेर घार कर, फ़ारसी कोषों में शब्दों को ढूंढ ढांढ़ कर, और एकान्त में बैठ बाठ कर, कई दिनों तक अति परिश्रम कर के नहीं लिखे जाते हैं; उसी तरह जब किसी मंदिर आदि की प्रशस्ति का काम पड़ता है तब वैसेही देशी और विदेशी पंडितों को चाहे वे राज के नोकर हों अथवा नहीं परंतु उने घेर घार कर संस्कृत भाषा में प्रशस्तियें नहीं लिखाई जाती हैं और जब किसी राजा की बिरदावली का कोई कवित्त बनवाने का काम पडता है तब षट भाषाओं की भाषा से बिगड कर बनी हुई डिंगल भाषा में काव्य नहीं रचवाया जाता है और जब लाट साहब की पधरावनी का उत्सव किया जाता

है तब उस में Address अर्थात् अभिवादन अंग्रेज़ी भाषा में नहीं दिया जाता है? क्या यह सब भाषा आज प्रचलित हैं और क्या आज मुसलमानों की बादशाहत है? क्या जो आज हम महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के राज्य शासन समय के सर्व प्रकार के सब राजकीय लेख एकत्र कर के देखें तो वे सब एक ही भाषा में हम को लिखे मिलेंगे? क्योंकि क्या सब राजा साहबों के स्वर्गवास होने पर राज की मोहर छाप और स्टाम्प और सिक्के आदि में उसी दिन नवीन राजा साहब का नाम पलट कर के वैसे ही हुक्म जारी हो जाते हैं कि जैसे आज अंग्रेज़ी राज्य में होते हैं कि जिस राजकीय व्यवहार के संस्कार से विद्यमान पुरातत्ववेत्ता Antiquarians उपलब्ध पुरातत्वों को जांचा करते हैं? क्या मेवाड राज्य में महाराणाजी श्री शंभूसिंहजी के नाम का स्टाम्प आज तक नहीं जारी है? क्या महाराणाजी श्री सज्जनसिंहजी के नाम की छाप वर्त्तमान महाराणाजी साहब के राज्य शासन समय में कई वर्षों तक नहीं जारी रही है? क्या ऐसे स्टाम्प पर लिखी हुई दस्तावेज़ें और ऐसी छाप लगे पत्र बहुत समय के व्यतीत हो जाने पर जाली समझे जांयगे और जिन २ के पास यह राजकीय लेखादि उस समय में मिलेंगे वे सब जाल के अपराधी समझे जाकर क्या फांसी लगाये और कालेपानी भेजे जावेंगे?

सारांश हमारे निवेदन करने का यह है कि हिन्दी भाषा में अन्य देशीय भाषाओं के शब्दादि के मिलने का प्रश्न बड़ा ही सूक्ष्म और कठिन है और जो हमारी तरह विद्वान लोग यह मानलें कि जब जिस अन्य देशीय का आना हमारे भरतखंड में हुआ तब ही से उसकी भाषा के शब्दों का भी मेल होना अति संभवित् है तो यह प्रश्न बड़ा ही सरल है। हमारे सिद्धान्त को माने विना इस प्रश्न का निर्णय होना बहुत दुस्तर है क्योंकि जो चंद कवि के पहिले अथवा उसके समय के भी हिन्दी भाषा के पुस्तकादि मिल जांय और उनमें मुसलमानी भाषाओं के शब्द न भी मिलें तो भी हम सुखसे यह अनुमान कर सक्ते हैं कि उनके रचने वालों ने उनको जानकर प्रयोग नहीं किये हैं और चंद ने रूपक ३९ की प्रतिज्ञा पूर्व्वक प्रयोग किये हैं जैसे कि वर्त्तमान समय में भी हिन्दी भाषा के अनेक विद्वान अनेक प्रकार की हिन्दी लिखते हैं॥

कविराजजी ने इस महाकाव्य की भाषा के प्रसंग में जैसे मुसलमानी शब्दों के प्रयोग होने का दोष दिया है वैसे ही उनों ने इन सत्त। चार्वट्टिस। भारत्थ। पारत्थ। सारत्थ। और चूक शब्दों को भी राजपूताने की कविता के ही शब्द होना समझ कर इस महाकाव्य का मेवाड राज्य में जाली बनना भी अनुमान किया है। तथा इस ग्रंथ में बहुत से शब्द अनुस्वार सहित प्रयोग हुए हैं उनके विषय में भी उनों ने महाकवि चंद पर आक्षेप करके यह कहा है कि "अनुस्वार लगाने से यह स्पष्ट जान पड़ता है कि वह संस्कृत कुछ भी नहीं जानता था क्योंकि उस को बिन्दु विसर्ग का भी ठीक ज्ञान न था" परंतु हमारी तुच्छ सम्मति में महामहोपाध्या कविराज श्री श्यामलदासजी महाशय का यह सब कहना बिलकुल्ल ही असत्य और निर्मूल है। अब जो प्रमाण हमारे इस कहने को समर्थन करने को हम आगे दिखावेंगे उन से यह भी स्पष्ट सिद्ध होगा कि जिन २ ग्रंथों से हमने उन को उद्धृत किये हैं वे कविराजजी के पढ़ने में नहीं आये होंगे नहीं तो वे ऐसे अत्यन्ताभाव के अनुमान कदापि नहीं करते:—

१ यद्यपि सत्त शब्द का आज कल की बोल चाल की व्रजभाषा में भी प्रयोग होना हमने हमारी लिखित प्रथम संरक्षा में इन वाक्यखंडों के उदाहरणों मे सिद्ध कर दिखाया है जैसे:— जबै वाकूं सत्त चढ़ आयो तबै वो सत्ती भई—सत्त हर दत्त गुरु दत्त दाता—राम राम सत्त है, दो

चार नित्त हैं-तथापि एक यह दोहा भी हम कविवचनसुधा से उद्धृत कर के प्रमाण में प्रवेश करते हैं-"सत्त सुबचन कबीर के, चित्त देय सुन लेहु ॥ अरु नानक गुरु के वचन, सत्त मत्त करि गेहु" ॥ तथा खालशाकृत विनयपत्रिका में:-"दान्व मोल पात्र देख हर्ष सर्व सत्त ज्ञेय मो दीन रेख मेख मार भाल मन्द के" । यह शब्द ऐसा अप्रसिद्ध नहीं है कि जिस के प्रयोग के विषय में हिन्दी भाषा के विद्वानों को किंचित् भी संदेह होय अतएव हम अधिक उदाहरण नहीं लिखते हैं ॥

२ श्रीमद्वल्लभ संप्रदाय में जो अष्ट-छाप कर के प्रसिद्ध हैं उन में के एक कुंभनदासजी ने "चावद्दिसि हरि रूप रम्यो" अपने एक कीर्त्तन में कहा है ॥

३ इन भारत्थ । सारत्थ । और पारत्थ शब्दों के प्रयोग के विषय में हमने हमारी प्रथम संरक्षा में बहुत कुछ कहा ही है परंतु फिर भी हम एक प्रमाण अष्ट-छापवाले छीत स्वामी के एक कीर्त्तन में से यह बताते हैं "भारथ्थ में सारथ्थ है हरि जू कहाये सारथी" और पंडित कन्हैयालालजी कृत छंद! प्रदीप नामक ग्रंथ से वैसे ही अन्य शब्दों के प्रयोगों के उदाहरण भी विदित करते हैं यथा:-(१) करि गहि भार समथ्थ । (२) यश पायो नृप मथ्थ । (३) मत्थन नत करि लज्जित दिग्गज । (४) सुसज्जिय भ्रमगति । (५) उत्थिय समुद वट्टिय लहरि । (६) रहि तदत्थकि जियसुआरि (७) लखि दव्वन सब नृपति (८) सिंहवली समरत्थ हत्थिवर मत्थ विदारन ॥

४ अब शेष चूक शब्द के विषय में भी हमारी लिखित संरक्षा में लिखे के सिवाय हमको यह कहना है कि उस के शब्दार्थ तो वहीं हैं कि जो डाक्टर होर्नली साहब ने हिन्दी शब्दों की धातुओं के संग्रह में वर्णन किये हैं. किन्तु यह शब्द जिस विषय के प्रसंग में प्रयोग होता है वैसा ही उसका भावार्थ हो जाता है जैसे कि छल के अर्थ में अष्ट-छापवाले परमानन्ददासजी ने उस को प्रयोग किया है "अहो हरि बलि सों चूक करी" इसी तरह समझ लेना चाहिये कि जब वह छल से मारने के प्रसंग में प्रयोग होता है तब उस का वैसा भावार्थ ग्रहण किया जाता है । राजपूताने के किसी २ कवि को हमने ऐसा भी कहते हुए सुना है कि यह चूक शब्द राजपूताने की भाषा में ही प्रयोग हुआ मिलता है और हिन्दी भाषा के किसी काव्य में किसी भी अर्थ में यह शब्द प्रयोग नहीं हुआ है परंतु उनका यह कहना हमारे नीचे लिखे प्रमाणों से बिलकुल्ल ही असत्य प्रतीत होता है ॥

॥ वृन्द सतसही ॥

दोहा ॥ पिशुन छल्यो नर सुजन सों, करत विसास न चूक ।
जैसे दाध्यो दूध को पीवत छाछहि फूंक ॥
मूरख गुन समझै नहीं, तो न गुनी में चूक ।
कहा भयो दिन को विभो, देखै जो न उलूक ॥

॥ नाथ कवि अर्थात् कवि लोकनाकजी चौबे कृत ॥

कवित्त ॥ सुखद रसाल को रिसाल तरु तापे बैठि, ऐंठि बोल बोले पिक, मधुप दुहू दुहू ॥
कुंज कुंज कारे हैं कुटिल अलि पुंज पुंज, गुंज गुंज फूल रस, चुहके चुहू चुहू ॥
चूक बिन प्यारी कीन्ह मेरो मन टूक टूक, कूक सुने हूक परै, करत उहू उहू ॥
नाथ दिसि चार अंधियार ही जनात मोहि तातें किल कोकिला, कहत कुहू कुहू ॥

॥ सूरसागर ॥

राग काफी ॥

मैं अपने कुलकानि डरानी । कैसे श्याम अचानक आये मैं सेवा नहीं जानी ॥
यहै चूक जिय जानि सखी सुनि मन लै गये चुराई । तनतैं जात नहीं मैं जान्यें लियो श्याम अपनाई ॥
ऐसे ठगत फिरत हरि घर घर भूलि कियो अपराध । सूर श्याम मन देहि न मेरो पुनि करिहों अनुराध ॥

राग विहागरो ॥ कहा करों गुरजन डर मान्यों ।

आये श्याम कौन हित करि कैं मैं अपराधिनि कछु न जान्यों ॥
ठाडे श्याम रहे मेरे आँगन तब तैं मन उन हाथ विकान्यों ।
चूक परी मोकों सबही अंग कहा करों गई भूलि सयान्यों ॥
वे उनही को नए हरय मन मेरी करनी समुझि अयान्यों ।
सूर श्याम संगम उठि लाग्यो मो पर बार वार रिसान्यों ॥ ३७ ॥
वीच कियो कुल लज्जा आई ।
सुनि नागरी वकस यह मोकों मन मुख आये धाई ॥
चूक परी हरि तैं मैं जानी मन लै गये चुराई ।
ठाडे रहे सकुच तो आगें राख्या बदन दुराई ॥
तुम हो बडे महर की वेटी काहे गई भुलाई ।
सूर श्याम हैं चोर तुम्हारे छांडि देहु हरपाई ॥ ९० ॥

॥ कवि लल्लूलाल कृत ॥

दोहा ॥ धरम राज सों चूक करि । दुरजोधन लै लीन्ह ॥
राज पाट अरु वित्त सब । बनोवास दै दीन्ह ॥
करी चूक प्रहलाद पै । हिरन असुर परचंड ॥
हरि सहाय हित अवतरे । असुरन किये विखंड ॥

॥ रामायण ॥

छमहु चूक अन जानत केरी । चहिये विप्र अरु कृपा घनेरी ॥

॥ स्त्रियें गाया करती हैं ॥

मेरा भया चुकान हियारी । कार करत मैं बर बर चूकूं
फुंका जात सई जीया री ॥

॥ कबीर ॥

काशी का मैं वासी कहिये, करम दशा का हीना ।
राम भजन में चूक पडी तब पकर जुलाहा कीना ॥

॥ कहावत ॥

आहार चूके वह गये व्योहार चूके वह गये ।
दरबार चूके वह गये सुसराल चूके वह गये ॥

॥ चूरनवाले ॥

है चूरन खट्टा चूक । जिस से नित्त लगेगी भूक ॥

५ हम अनुस्वार सहित शब्दों के प्रयोग के विषय में जो ऊपर कह आये हैं उस के नीचे लिखे उदाहरणों को अवलोकन करने से आशा है कि हमारे पाठकों को पूर्ण संतोष हो जावेगा:—

॥ सूरसागर ॥

राग भैरवी ॥ भजि श्री विट्ठल चरण सरोजं । नखमणि दीधिति दमित मनोजं ॥
इच्छसि यदि सततं सुख सारं । त्यजसि न किमिति विषय धृतभारं ॥
यदि वांछसि हरि भक्ति सुखं । कुरु चपलं शरणागत यत्नं ॥
प्राप्य सुदुर्लभ नर वर देहं । परि हर सकल निगम संदेहं ॥
मानय हृदय मयोदित वचनं । तदणा सिनो चेदतिशय पवनं ॥
वत्सपदं भावय भव जलधिं । अंत समे भवधिन बवधिं ॥
नाथ तवाह मतीरण रावं । पूरय सतत मिमं मयि भावं ॥
तव गुण गण कथिता मृत गाथे । प्रार्थ्य मिदं दिश तव रघुनाथे ॥

॥ रामायण ॥

छंद ॥ हे भक्ति रमा निवास त्रास हरण शरण सुखदायकं ॥
सुखधाम राम नमामि काम अनेक छवि रघुनायकं ॥ १०४ ॥
सुर वृंद राजत द्वंद भंजन मनुज तनु अतुलित बलं ॥
ब्रह्मादि शंकर सेव्य राम नमामि करुणा कोमलं ॥ १०५ ॥

तोटक छंद ॥ गुण ज्ञान निधान अमान मजं । नित राम नमामि विभुं विरजं ॥
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं । खल वृंद निकंद महाकुशलं ॥ १०६ ॥
बिनु कारण दीन दयालु हितं । छबि धाम नमामि रमा सहितं ॥
भव तारण कारण कार्य परं । मनसं भव दारुण दोष हरं ॥ ९० ॥
शर चाप मनोहर तूणि धरं । जल जारुण लोचन भूप वरं ॥
सुख मंदिर सुंदर श्रीरमणं । मद मार महा ममता शमनं ॥ ९१ ॥

॥ खालसा कृत विनय पत्रिका ॥

भैरवी ॥ रे मन सन्त चरण धरु माथं ।
निस वासर जिनके जग नायक वास करत हैं साथं ॥ १ ॥
तिन को छोड़ विश्व में भटके वेश्याको करि नाथं ।
भक्ति सहित सेवा तुम करते वह मारत है लाथं ॥ २ ॥
तज्ञापी कछु लाज न आवत मलत चरण धरि हाथं ॥
सिंह मदन गोपाल साधु पद गहु अघहर सम पाथं ॥ ३ ॥

॥ गोस्वामी श्री लक्ष्मीनाथजी परमहंस कृत पदावली ॥

नमो नमो गीता हरि यशं । सुर नर मुनि सज्जन अवतंसं ॥
कोमल पद उपनिष श्रुति अंसं । हरि मुष कथित सन्त हिय हंसं ॥
विमल व्यास भाषित गन संसं । देव दनुज मानव ऋषि वंशं ॥
भक्ति विराग ज्ञान परगासं । काम क्रोध मद मोह विनाशं ॥
सकल शास्त्र सम्मत निति शोशं । अर्थ धर्म सुख दायक हंस ॥
मुक्ति सागर तीरथ फल देशं । कलि मल तिमिर प्रकास दिनेशं ॥
गुण अनन्त कहि गावत सेशं । चतुरानन गण देव महेशं ॥
सुनत सकल मन होत हुलाशं । लछमीपति अति पाप विनाशं ॥ १ ॥

॥ नरहरदास कृत अवतार चरित्र ॥

भुजंगी ॥ सुगन्धं विगन्धं न अस्तूति गारी । विभेदं न सत्रुं न मित्रं विचारी ॥
न महिमा न माया न मद्दं न मोहं । न रंगं विरंगं न दाया न द्रोहं ॥
न सीतं न तापं न संगं कुसंगं । न भावं न भिय्यान अंगं अनंगं ॥
सुखं भूमि सय्या न हासं न वासं । यहै वांहैं आनै ततो पंच ग्रासं ॥
सम विग्गहं भूमि पंथ सहज्जं । वसनं दिगं वीत रागं विलज्जं ॥
विमोहं विदेहं न दुन्द्री विकारं । अघानें रहे निति वातं अहार ॥
विलेपं न ओपंड आगी विचार । धरी पुष्प माला गलें विप्र धारं ॥
प्रकासी जु निंदा महा मोद पावै । हसे तारा दे आप औरै हसावै ॥
अलेपं अछेपं रहै अप्रकासं । निरा पेख निर्वंध नग्नं निरासं ॥
अनाजूत अवधूत माया अतीतं । अमोहं अछोहं अद्रोहं अभीतं ॥
अनाम अकामं अठामं अजेयं । अनाधार आकार महिमा अमय ॥
पशू वृत्ति लीनें भये पान पानी । विचारं प्रचारं विहार विमानी ॥

यह महाकाव्य आज तक महाकवि चंद का बारहवीं शताब्दी का रचा हुआ एक बड़ा प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रंथ कर के हमारे स्वदेश में प्राचीन काल से चला आता है

अकृत्रिमता

और उसकी यथार्थता में आज तक क्या तो स्वदेशी और क्या किसी विदेशी विद्वान को कोई वैसी शंका नहीं हुई है कि जैसी हमारे परम प्रिय मित्र महामहोपाध्याय कविराजजी श्री श्यामलदासजी को बैठे बैठाये हो गई है । यद्यपि हम इस महाकाव्य को अभी तक अनुकूल दृष्टि से ही देखते हैं किन्तु उसी के साथ हम उसकी परीक्षा करने में प्रतिकूल दृष्टि देकर उसके गुण–दोषों को भी देखते जाते हैं और जब हमको उस में कोई दोष देने जैसी बात नहीं मिलती तब उसी स्थान पर हम अपनी टिप्पण में अपना अभिप्राय लिख प्रकाश करते हैं । हमारे पाठकों को यह भले प्रकार समझ रखना चाहिये कि जिस दिन जिस स्थान में जो कुछ हम को कृत्रिम दीखेगा उसे हम उतने ही बल पूर्व्वक दोष देकर प्रकाश कर देंगे कि जैसे हम उसके गुणों को प्रकाश करते हैं और जो कोई बात हमको उस में दोष देने जैसी मिलेगी ही नहीं तो फिर हम अशक्त हैं । इस महाकाव्य को कृत्रिम अनुमान करने में जितने हेतु दिये गये हैं उन में से प्रत्येक के विषय में हम निम्न लिखित कुछ निवेदन करते हैं :—

१ इस महाकाव्य में संवत् लिखे हुवे हैं वह मुसलमानी तवारीखों में लिखे और संमत शोध हुवे संवतों से नहीं मिलते और उन में ९० वा ९१ वर्ष का अन्तर पड़ता है अतएव इस वात का निर्णय करने को हमारी टिप्पण १६८ और ३५५ । ५६ वादी पढें कि उनके पढ़ने और पक्षपात रहित मनन करने से हम आशा करते हैं कि वादी की संवत् के अंतर विषयिक शंका निवारण हो जायगी ॥

२ इस ग्रंथ में मुसलमानी भाषादि के शब्द प्रयोग हुवे दृष्टि आते हैं उनके विषय का समाधान हमारी इसी उपसंहारिणी टिप्पण का भाषा संबन्धी चौथा लेख खंड अवलोकन करने से भले प्रकार हो सक्ता है ॥

३ अब तक पृथ्वीराजजी के समकालीनों में से केवल रावल समरसीजी को ही आक्षेप करने वाले ने उदाहरण में ग्रहण किये हैं कि उसके विषय में केवल आबू और चीतोड़ की पांच चार प्रशस्तियों से ही संशय–करने वाले को संशय होता है अर्थात् संशय का आधार उन ही प्रशस्तियों पर है । यदि उन प्रशस्तियों के संवतों को विद्वान लोग भले प्रकार परीक्षा कर के यह निश्चय कर लें कि वे रावल समरसीजी के ही समय की हैं और उनके संवत् अमुक प्रकार के हैं और हसको पृथ्वीराजजी समरसीजी और पृथाबाईजी के जो पखाने प्राप्त हुवे हैं उन के संवतों को भी उसी प्रकार जांच देखें तो फिर रावल समरसीजी के समकालीन होने में कुछ झगडा ही न रहेगा क्योंकि झगडा तभी तक रहता है कि जब तक किसी विद्वान को किसी प्रकार का पक्षपात होता है और वह दर्पण लेकर मुख दिखते हुवे भी नहीं दूर होता है । जहां तक हमने रावल समरसीजी के विषय में शोध किया है वहां तक हमको इस बात में कुछ संदेह नहीं है कि वे पृथ्वीराजजी के बहनेऊ और समकालीन थे । आबू और चीतोड की प्रशस्तियों के संवतों को समझ लेने के लिये एक खोज की बात हमने हमारी टिप्पण ३५५ । ५६ में अति संक्षिप्त रूप से कही है । इस के अतिरिक्त हम एक बडी अद्भुत अपूर्व बात पर विद्वानों का ध्यान दिलाते हैं कि कविराजजी ने इस महाकाव्य के संवत १६४० से १६७० के भीतर जाली बनने के सिद्ध करने में नीचे लिखे प्रमाण कहा है :–

"इस किताब में मेवाड के राजाओं की बहुत सी प्रशंसा रावल समरसिंहजी के नाम से की है और एक स्थान में उनको आशीस देने में यह शब्द लिखे हैं–

(१) कलंकियां राय केदार ॥

(२) पापियां राय प्रयाग ॥

(३) हत्यारां राय बणारसी ॥

(४) मदवान राय राजान री मंग ॥

(५) सुलतान ग्रहण मोरखन ॥

(६) सुलतान मान मलन ॥

इन पदवीयों से मेवाड़ के महाराणा संग्रामसिंहजी (सांगा) की ओर संकेत है"–इत्यादि ॥

अब विद्वानों को रासे के उस रूपक को अवलोकन कर के परीक्षा कर समझना चाहिये कि जिस में से यह वाक्यखंड उद्धृत किये गये हैं, वह रूपक नीचे लिखे प्रमाण हैं :–

छंद पद्धरी ॥ सामंत सब्ब मनुहार कीन । प्रोहित्त राम आसीस दीन ॥
हरि सिद्धि दिद्ध बरदान भट्ट । उच्चस्यो चंद पैपै सु थट्ट ॥
हुहु पण्य चँवर सिर धरिय छत्र । बरदाद देत आसी तत्र ॥

उट्टियो सिंघ बरदाइ देपि । बोल्लंत विरद बहु विधि विसेपि ॥
चीतोर राव काइम्म कीन । पुम्मान पाट पग अचल दीन ॥
मेर गिरि सरिस चित्तोर मानि । किरनाल तेज बढ्ढो पुमान ॥
जैचंद समह जिन जुद्ध कीन । मानों कि उरग जनु मोर पीन ॥
कलंकिया राय केदार राय । कवदेत विरद मनउमँग चाय ॥
पापी राय प्राग वड समान । क्रप्पन दरिद्र करतार जान ॥
हित्यार राइ कासी अभंग । मदुआंन राइ गंगा उतंग ॥
सुरतान मलन बंधन समोप । हिंदून राइ टालन दोप ॥
उज्जैन राइ बंधन समथ्थ । आचार राइ जुजष्टरह पथ्थ ॥
भोमंगराइ भंजन सुपेत । जस लयो धवल राजिंद जैत ॥
रिनथंभ राय सिर दंड कीन । अब्बुआ राइ गढ लेइ दीन ॥
उथ्थाप राइ थापन समथ्थ । सोंपन सरीर प्रथिराज सथ्थ ॥
दष्यनी साह भंजन अलग । चंदेरि लिद्ध किय नाम जग ॥ ४१ ॥

हमारे पाठकों को इस रूपक का तात्पर्य निकालने के पहिले यह जान लेना अत्यावश्यक है कि वह रासे के समरसी दिल्ली सहाय नामक समय में का है । रासे की किसी पुस्तक में तो वह समय पृथक है और किसी में वह वड़ी लड़ाई नामक समय के आदि में ही मिला हुआ है। इस रूपक के अन्तरगत वृत्त का प्रसंग यह है कि रावल समरसीजी अपनी महाराणीजी श्री पृथाबाईजी सहित अपने साले पृथ्वीराजजी की सहायता करने को चीतोड़ से दिल्ली पहुंचे और वहां उन का आदर सन्मान वहां के सब राज–पुरुषों ने करना प्रारंभ किया कि उसी प्रसंग में महाकवि चंद बरदाई ने भी वैसे ही रावलजी को आशीस दियी कि जैसे वर्तमान काल में प्रत्येक देशी राजस्थानों में चारण और राव आदि स्तुति पाठक दिया करते हैं । रावलजी श्रीसमरसीजी में जो २ मुख्य गुण थे और उनों ने जो २ बड़े २ काम अर्थात् शौर्य्य किये थे उन सब को उन की प्रशंसा में कवि चंद ने प्रयोग कर के यह बिरदावली कही है । अब इस में यह बात विचारने की है कि कविराजजी ने जो इस रूपक में के–"कलंकिया राय केदार"–जैसे विशेषणों का महाराणाजी श्रीसंग्रामसिंहजी (सांगा) की ओर संकेत होना अनुमान करके रासे के जाली बनने के समय के प्रारंभ का सं० १६४० निश्चय किया है वह इस मूल रूपक के अवलोकन करने से सत्य मालूम होता है कि नहीं । यदि हम कविराजजी के अनुमान को यथार्थ होना भी मान लें परन्तु इस रूपक में–"कलंकिया राव केदार"–आदिक के साथ ही–"जैचंद समह जिन जुद्ध कीन–" और–"सोंपन सरीर प्रथिराज सथ्थ" जैसे स्पष्ट विशेषणों के वाक्यखंडों को हम महाराणा जी श्रीसांगाजी में कैसे घटा सक्ते हैं । क्या यह बात विद्वानों के कहने की है कि–"जैचंद समह जिन जुद्ध कीन"–और–"सोंपन सरीर प्रथिराज सथ्थ"–जैसे स्पष्ट विशेषणों को छोड़ देना–और–"कलंकिया राय केदार"–आदिक को ग्रहण कर लेना । यदि कविराजजी ने इन–"कलंकिया राय केदार" आदिक को सांगाजी पर घटा कर केवल उन ही तुकों को क्षेपक बताई होतीं तो भी यह एक प्रकार से कुछ ध्यान में बैठने जैसी बात होती । हम यह भी नहीं समझ सक्ते हैं कि इस रूपक से सं० १६४० कैसे सिद्ध होता है क्योंकि महाराणाजी श्रीसांगाजी का राज्य समय कविराजजी के मानने के अनुसार सं० १५६५ से सं० १५८४ तक ही [illegible] और संवत् १६४० का वर्ष महाराणाजी श्री बड़े प्रतापसिंहजी के राज्य समय सं० १६[illegible] [illegible] तक के में आता

है । रासे की सं० १६३१ । ३२ और १६४५ की लिखित पुस्तकें हमारे पास विद्यमान हैं । तथा अकबर बादशाह ने पृथ्वीराज रासे की कथा अपने दरबारी भाट गंगजी से सं० १६२७ । २८ में सुनी थी कि जिस के वृत्तान्त की एक सं० १६२९ की लिखी हुई चंद्र छंद वर्णन की महिमा नामक पुस्तक हमको प्राप्त हो चुकी है और उसी के साथ जो समय स० १६४० से १६७० तक का रासे के जाली बनने का अनुमान किया गया है उस समय में मेवाड़ में एक राणारासा नामक ग्रंथ राव दयाल कवि ने बनाया है कि जिस को भी हमने शोध काढ़ा है । इस राणारासे की पुस्तक सं० १६७५ की लिखी हुई से हम ने हमारे पुस्तकालय के लिये एक प्रति करवाई है और हमारी प्रति से बहुत से अन्य भद्रपुरुष प्रतियें करवाते हैं । खैर यह सब बातें तो जाने दीजिये और एक इस छोटी सी बात पर ही ध्यान दीजिए कि रासे की उन सब पुस्तकों के अंत में कि जो मेवाड राज की एक पुस्तक से प्रति हुई हैं मूल पुस्तक के लिखने वाले लेखक के लिखे हुए नीचे लिखे छंद प्राप्त होते हैं कि जिन में यत्किंचित वृत्त लिखा हुआ है । यह छंद हम आशा करते हैं कि उन पुस्तकों में भी अवश्य होंगे कि जो एशियाटिक सोसाईटी बंगाल के पुस्तकालय में हैं :—

कवित्त ॥ मिलि पंकज गन उदधि । करद कागद कातरनी ॥
कोटि कवी काजलह । कमल कटिकर्तें करनी ॥
हितिथि संख्या गुनित । कहै कक्का कवियांने ॥
इह श्रम लेपन हार । भेद भेदै सोइ जानै ॥
इन कष्ट ग्रन्थ पूरन करय । जन बभ्या दुष नां लहय ॥
पालिये जतन पुस्तक पवित्र । लिपि लेपक विनती करय ॥ १ ॥
गुन मनियन रस पोइ । चंद कवियन कर द्दिट्ठिय ॥
छंद गुनीतें तुट्टि । मंद कवि भिन भिन किद्दिय ॥
देस देस बिप्परिय । मेल गुन पार न पावय ॥
उद्दिम करि मेल वत्त । आस बिन अलस आवय ॥
चित्रकूट रान अमरेस नृप । हित श्रीमुष आयस दयो ॥
गुन बीन बीन करुना उदधि । लषि रासो उद्दिम कियो ॥ २ ॥
दोहा ॥ लघु दीरघ ओछो अधिक । जो कछु अंतर होइ ॥
सो कवियन मुष सुद्धतें । कहो आप बुधि सोइ ॥ ३ ॥

इन छंदों से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि किसी कक्का नामक पुरुष ने मेवाडराज्य के अधीश बड़े श्री अमरसिंहजी (चित्रकोट रान अमरेस नृप) के आज्ञानुसार राज के पुस्तकालय के लिये उक्त पुस्तक लिखी थी । इन महाराणाजी का राज्य समय कविराजजी के मानने के अनुसार सं० १६५३ से १६७६ तक का है । जब कि मेवाड राज की पुस्तक का उसकी अन्य प्रतियों से सं० १६५३ से १६७६ के बीच में लिखा जाना अनुमान होता है तो फिर इस समय में जाल बनना भला कोई कैसे मान सक्ता है । अब रहा संवत १६७१ की भविष्य वार्ता का विदित करने वाला दोहा उसके विषय में हमने हमारी संरक्षा के लेखखंड २७ पृष्ठ ३५ में सविस्तर कह दिया है अतएव यहां कुछ अधिक नहीं वर्णन करते हैं ॥

४ यद्यपि इस महाकाव्य के जाली बनने के अनुमान का प्रश्न तो रीति से किया गया है कि "इस ग्रन्थ में लिखे पृथ्वीराजजी के समय के मनुष्यों के नाम और वृत्त उस समय की मुसलमानी तवारीखों में लिखे हुओं से नहीं मिलते हैं परन्तु जिस प्रकार से उस प्रश्न का निर्णय किया

गया है उस से प्रश्नकर्त्ता की प्रतिज्ञा हानि और हेत्वाभास स्वयम् सिद्ध हैं। हमने इस विषय में हमारी लिखी पृथ्वीराज रासे की संरक्षा की अंग्रेज़ी पुस्तक के पृष्ट १५ और ३७ लेखखंड ११ और २८ और हिन्दी की के पृष्ट १८ और ३९ और लेखखंड ११ और २८ में बहुत कुछ लिख कर प्रकाश किया है। क्या जितना अंश इस महाकाव्य का मुसलमानी तवारीखों से मिलता हुआ है वह उसके बनाने वाले ने उन तवारीखों को सोलहवीं सद्दी में पढ कर यह जाल निर्माण किया है? क्या उस समय की हसन निज़ामी की तवारीख़, तबक़ात नासरी, और अब्बुलफ़िदा, आदि नामक तवारीख़ों में परस्पर कोई ऐसे विरोध नहीं हैं और क्या वे एक दूसरे से सर्व प्रकार से परम सम्मत हैं? कविराजजी ने स्वयम् यह स्वीकार किया है कि तब-क़ात नासरी ने मनुष्यों के अशुद्ध नाम लिखे हैं और अब्बुलफ़िदा ने संवत ही नहीं लिखे हैं फिर उनके दोषों से यह महाकाव्य क्योंकर दूषित हो सक्ता है? क्या उक्त मुसलमानी तवारीख़ों के कर्त्ताओं ने सब वृत्त यथातथ्य लिख कर केवल सत्य ही लिखने और मिथ्या कुछ भी न लिखने का एक झंडा हाथ में लिया है? देखो क्या यह शोक की बात नहीं है कि तबक़ात नासरी का ग्रंथकर्त्ता विचारा स्वयम् कहता है कि जिस वर्ष में पृथ्वीराजजी की अंतिम लड़ाई हुई थी उसमें तो वह उत्पन्न हुआ था और उसके ३५ वर्ष पीछे वह पहिले ही पहिल हिन्द में आया था, उस ने जो कुछ इस विषय में लिखा है वह उसने एक मनुष्य से सुनकर लिखा है, फिर हम नहीं जानते कि कविराजजी मिनहाज-इ-सिराज जैसे एक भले आदमी को क्यों प्रत्यक्ष प्रमाण की साक्षी में घेरते हैं। हम पृथ्वीराजरासे और उस समय की सब मुसलमानी तवारीखों को एक दृष्टि से देखकर यह कहते हैं कि जिस२ ग्रन्थकर्त्ता ने जो, जितना, और जैसा, देखा और सुना, वह उसने अपनी इच्छा और शैली के अनुसार लिखा है; यदि उन में से किसी की कोई बात हमको अयथार्थ प्रतीत और सिद्ध हो तो हम उसको अस्वीकार कर सक्ते हैं, किन्तु हम उनमें से किसी को भी लोर्ड हेस्टिङ्गस् के समय में जैसे नन्दकुमार को जाल के अपराध में फांसी की शिक्षा दियी गई है वैसी शिक्षा विद्वानों के हाथ से कदापि नहीं दिलाना चाहते हैं। निदान हम फिर भी प्रसन्नता और विचार पूर्व्वक कह सक्ते हैं कि प्रत्येक ग्रन्थकर्त्ता ने अपने२ ज्ञान के अनुसार ऐतिहासिक वृत्त लिखे हैं चाहे उसमें कोई बात असत्य भी क्यों न हो परन्तु उस असत्य बात के कारण से आदि से अंत पर्य्यंत कोई ग्रन्थ जाली नहीं हो सक्ता। इस बात के मान लेने में हमको कोई लज्जित होने की भी बात नहीं है कि यह पृथ्वीराज रासा चंद का लिखा हुआ सच्चा है, उसके दो एक समय उसके बड़े बेटे जल्ह के लिखे हुवे हैं और उसमें जो कहीं२ कुछ क्षेपक अंश पीछे से किसी ने मिलाया होगा वह विद्वानों के परीक्षा करने से स्वयम् तरजावेगा। अब तो कोई बात अडचल की रही ही नहीं है क्योंकि यह आदि पर्व्व तो हमने यथाशक्ति संशोधित करके हमारे पाठकों की सेवा में अर्पण कर ही दिया है, कि उसी से हम इस महाकाव्य की अक्रित्रिमता की परीक्षा करना प्रारंभ कर सक्ते हैं और प्रति मास में हम यह भी सिद्धान्तकर सक्ते हैं कि यहां तक तो कुछ जाली अंश है अथवा नहीं।

इस बात के जानने से हमारे पाठकों को बहुत प्रसन्नता होगी कि हमको शोध करने से पृथ्वीराजजी और रावलजी श्रीसमरसीजी और महाराणी श्रीपृथाबाईजी के थोडे से खास रुक्के और पट्टे परवाने प्राप्त हुवे हैं कि जिन में वही अनन्द विक्रमी संवत् है कि जो पृथ्वीराज रासे में लिखा हुआ मिलता है। इन सब के फोटोग्राफ हमने एशियाटिक सोसाइटी बंगाल को

पृथ्वीराजजी, समरसीजी और पृथाबाईजी के खास रुक्के पट्टे परवाने आदि

भेंट करने तथा उनकी सत्यता की परीक्षा करने के लिये हमारे स्वदेशी परम प्रसिद्ध विद्वान मित्र राय बहादुर डाक्टर राजा श्रीराजेन्द्रलालजी मित्र एल० एल० डी०, सी० आई० ई० की सेवा में भेजे हैं। उक्त डाक्टर साहब अकस्मात् रोगग्रस्त हो गये कि जिससे यह हमारे बड़े परिश्रम से शोध किये हुवे लेख उक्त विद्वत् मंडली में प्रवेश नहीं हो सके हैं किन्तु हम को आशा है कि राजा साहब के नैरोग्य होते ही उक्त लेख सोसाईटी में प्रवेश होकर यह विषय विद्वत् मंडली में छिड़ेगा। यह विषय अभी हमारा सोंपा हुवा एक महान पुरातत्ववेत्ता विद्वान के हात में है अतएव हम उन लेखों की प्रतियें तथा अपने निज विचारों को प्रकाश नहीं कर सक्ते परंतु इतना तो निःसंदेह कह सकते हैं कि अभी तक हम उनको अक्रित्रिम समझते हैं और ऐसा समझने को सतर्क सिद्ध भी कर सक्ते हैं। इसके साथ हमको इस कहने में कुछ भी लज्जा नहीं है कि यदि उक्त डाक्टर मित्र, हमारे विद्या–गुरु डाक्टर होर्नली साहब, मिस्टर ग्राउज साहब और मिस्टर ग्रियरसन साहब, जैसे पक्षपात रहित और सहसा सिद्धान्त न करने वाले पुरातत्ववेत्ता विद्वान उनको अप्रमाणिक सिद्ध कर ग्रहण करेंगे तो हम भी उनही से सम्मत होंगे क्योंकि हमको किसी बात का वास्तव में दुराग्रह नहीं है बरूक इसमें भी कुछ संदेह नहीं है कि जो कोई अन्य मनुष्य बिना किसी योग्य कारण के हमारे स्वदेश और उसकी विद्या पुस्तकों को दोष दे तो हम उस दशा में उन के एक बड़े कट्टड पक्षकार हैं॥

अंत में हमारा सब विद्वानों से यही सविनय निवेदन है कि इस महाकाव्य को उस की भले प्रकार परीक्षा कर के पढ़ें और पढावें और जो कहीं उस में कुछ हमारा कहना तथा कोई अनुमानादि का करना अयोग्य प्रतीत हो तो हम को क्षमा करें। यही प्रार्थना हम विशेष कर

समाप्ति

के हमारे मित्र महामहोपाध्याय कविराज श्रीश्यामलदासजी की सेवा में भी करते हैं क्योंकि उनके विचारों और अनुमानों का हमने विशेष कर के एक बलिष्ट भाषा में खंडन कर हमारे स्वदेशाभिमान और उसकी हिन्दी विद्या की संरक्षा कियी है। इस के साथ यह भी वक्तव्य है कि जैसे हम ने इस उपसंहारिणी टिप्पण में इस महाकाव्य के पांच चार विषयों के विषय में अपने विचार प्रकाश किये हैं वैसेही चंद के व्याकरणादि जैसे शेष विषयों के विषय में भी हम यथावकाश लिखेंगे इत्यलम्॥

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या।

अथ दसम* लिख्यते

अर्थात्

द्वितीय समय ।

—◦—

॥ हरि रूप का मंगलाचरण ॥

साटक ॥ सो ब्रह्मा सो इन्द्र ईति भजनं, ईपाल ईयं हरं ।
पिठ्ठे निठ्ठ कमठ्ठ साइर उरं, जठराग्नि वारी वरं ॥
सो भानं विधि भान नेच कमलं, वाचो गिरं ग्रभ्भियं ॥
जंघा अष्ट कुला चलं न ग्रभितं, जै जै हरी रूपयं॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

॥ दशावतार का नाम स्मरण ॥

चोपाई ॥ मक्क कक्क वाराह प्रनम्मिय । नारसिंघ वामन फरसम्मिय ॥
सुअ दसरथ्थ हलद्धर नम्मिय । वुद्ध कलंक नमो दह नम्मिय ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

॥ दशावतार की स्तुति ॥

विराज ॥ करे मक्क रूपं । धरेना अनूपं ॥ बधे संष धूपं । वरे वेद भूपं ॥ ३ ॥
* * * । * * * ॥ * * * । नमो मक्क रूपं ॥ ४ ॥
धरा पिठ्ठ तिठ्ठं । कनंगे गरिठ्ठं ॥ जले धार दिठ्ठं । नमो ते कमट्ठं ॥ ५ ॥
स्वयं हे वराहं । हयग्रीव गाहं ॥ रदग्गे इलाहं । उपम्माति चाहं ॥ ६ ॥

---

* इस समय में दशावतार की कथा होने के कारण चंद ने उस का नाम दशम रक्खा है ॥

१ पाठान्तर:—सो । सो । ईंद्र । भजनं । इयाल । हारे । हरिं । प्पिठैं । पिठे । निठ । निह । कमठ । कमह । साईर । जराग्नि । वर । सो । भांन । नैत्र । कमल । बांहो । गरभितं । यभ्भितं । जघा । गभ्रितं । हरि ॥

२ पाठान्तर:—मछ । कछ । प्रनंम्मियं । नारसिघ । फरस्सम्मिय । क्रसरंम्मियं । सुत । सूंत्र । दसरथ । हलधर । नंमियः । रंम्मीयं । बुध । कमल । नमैां । दद । नम्मांयं । रमिय ॥

३ पाठान्तर:—करै । मछ । सिरैनारनुपं । बंधे । धुपं । धरै । वैद । भुपं । नमैा । मछ ॥ ३-४ ॥ पिठ । तिठं । तठ्ठं । तठं । कणंजो । गरिठं । दिठं । नमो ते । कमठं ॥ ५ ॥ सुवं । दै । हयं । याहं । रदयै । इलादं । उपम्मांति । उपंमाति । सैवराहं । नमैा । तै । त ॥ ६-७ ॥ हरंनप्प ।

* * * । * * * ॥ ससी सेष राहं। नमो ते वराहं ॥ ७ ॥
हिरन्नष्य वीरं। प्रह्लाद पीरं ॥ उठे थंभ चीरं। महा वीर वीरं ॥ ८ ॥
* * * । * * * ॥ बढी पंक नीरं। नमो ध्रम्म धीरं ॥ ९ ॥
मृगंकस्य जरं। नषं तोरि तूरं। बजी दठ्ठ पूरं। थपे जान जूरं ॥ १० ॥
दया सिंधु मूरं। कुकंपीस भूरं ॥ नटी लच्छि नूरं। धवी ऋषि घूरं ॥ ११ ॥
भयं देव दूरं। नियं भत्ति सूरं ॥ थुती पानि जूरं। नमो सिंघ सूरं ॥ १२ ॥
बली राइ अग्गी। छली भूमि मग्गी॥ लुके बंभ तग्गी। मुषे वेद जग्गी॥ १३ ॥
निषे गंग लग्गी। सु लोकी सु भग्गी॥ तिहूं लोक बानी। रिजे देव गानी॥ १४ ॥
प्रसन्नो बलिज्जा। दई भोमि सज्जा॥ त्रिलोकी तिडग्गी। नमो वाम लग्गी॥ १५ ॥
पिता बाच मानं। हते अभ्भ थानं॥ सहस्त्रं भुजानं। रुधिद्राधरानं ॥ १६ ॥
नछ्ची छितानं। दई विप्र दानं॥ सुरानं प्रमानं। नमो पर्सरामं ॥ १७ ॥
हरे राम ग्यानं। सु रामं सुरानं॥ रघूबीर रायं। दया देह कायं ॥ १८ ॥
सु वैदेहि दायं। सुमित्रै सषायं ॥ विसामित्र सष्षं। षरं दूष नष्षं॥ १९ ॥
सुपर्नी सहायं। तडिक्की निहायं॥ वटीपंच पत्ते। मृगं चाप हत्ते ॥ २० ॥
रजं वारि दंती। जमं जाममंती ॥ मतं मेघ कंती। * * * ॥ २१ ॥
धनं धार भारी। मरीचं प्रहारी ॥ सुग्रं सुङकारी। हनुम्मान धारी॥ २२ ॥
गऊतम्म नारी। सिला तुंग तारी॥ जरी लंक चाही। पुरी हेम दाही॥ २३ ॥
रिछं बानरायं। भए सो सहायं ॥ हनुम्मान तायं। दधी सीस आयं॥ २४ ॥
पषानं तिरायं। सुहिद्रा सहायं ॥ हनूमान रद्दो। समुद्देस बद्दो॥ २५ ॥

हिरनंष। हरिणाष्यदाहं। प्रहलाद। प्रहल्लाद्द। उठै। मत्तो। थ्रंप। डरं। नूरं। जांनि। दया। दधिपुरं। कुकंपिस मूरं। लछि। नुरं। धषी। ग्रंब। धुरं। धुर। दैव। दुरं। भंति। भति। भुरं। थूती। बानि। पांनि। जुरं। नमै। सि ॥ ८–१२ ॥ राप। अग्गै। लछी। छलै। भुमि। मग्गै। मयी। लुकै। तग्गै। तगी। मुष। मुष्र। वैद। वेदं। जग्गै। जगी। नषै। नषे। लग्गै। लगी। लैाकी। स। भंगै। भगी। तिहैं। लैाक। बांनी। रिझै। रिझैं। दैव। ग्यांनी। गांनी। प्रसन्नो। बलीजा। दइ। भुमि। भूमि। सजा। सिज्या। त्रिसैाकेतडगो। ठगै रूठ ठगै। तडकी। वांम-नयौं ॥ १३–१५ ॥ ता वचमारं। यभ। थांनं। सहस्रं। रूधिजा। रुधिजा। नछित्री। दइ। प्रनांमं। नमै परसरामं। प्रशुरामं ॥ १६–१९ ॥ हरै। रांम। राम। सुमित्रे। विश्वामित्र। मष्पं। मषं। हरैदुकरिष्यं। सपत्नी। सुपर्णी। सुर्पनी। तडिका। बढी। वठी। पती। मृगै। हते। हते। रज। जंम जाम मतीः। मत। मैघ। भांरी। भरी। मरीवं। सय संधिकारी हनुमांन। गउतम्। गउमंत। सिलाक त्रुंग तारी। चाहा। हेन। हैम। रिबं। बांनरायं। बंनरायं। सौ। हनुमांन। दरदी।

तजे वीर हथ्थं । सँदेसं सु कथ्थं ॥ जहां लंक गढ़्ं । तहां वग्ग वढ्ढं ॥ २६ ॥
उहां सीय दिष्षी । हुँती दुष्प सुष्षी ॥ दियं मुद्रि तासं । सहिन्नान रामं ॥ २७ ॥
दसानन्न आदं । गयं मेघनादं ॥ करे कुंभ चूरं । भरे वान भूरं ॥ २८ ॥
सती सीय अंभी । कियं काज वंभी ॥ त्रिकूटेस नाथं । वभीषन्न हाथं ॥ २९ ॥
प्रसूनं विमानं । चढे वेगि यानं ॥ अजोध्या सपत्ते । नमो राम मत्ते ॥ ३० ॥
वसुद्देव अैनी । वरी कंस भैनी ॥ वियं पानि वद्धे । पुरानं प्रसिद्धे ॥ ३१ ॥
जयं जग्ग धारी । दियं दान भारी ॥ रथं आप रूढे । समं कंस मूढे ॥ ३२ ॥
अकासे सु वानी । श्रवन्ने गियानी ॥ उवं पग्ग झारे । अनुज्जां प्रहारे ॥ ३३ ॥
वरं पानि वद्धे । सु वाले अवद्धे ॥ इयं ग्रभ्भ पुत्तं । रुके तथ्थ दत्तं ॥ ३४ ॥
सनं किस्न दिस्सं । भये राम किस्सं ॥ प्रथंमं सुभद्दं । तियी पष्प अद्दं ॥ ३५ ॥
नषत्रं सु रोही । भुजं जन्म सोही ॥ चतुर्वाहु चारं । किरीटं सुहारं ॥ ३६ ॥
सनं पच नेनं । क्रने कुंडलेनं ॥ नियं मुत्ति नासी । इयं अव्विनासी ॥ ३७ ॥
सदा लछ्छिदासी । चरंनं निवासी ॥ मुखं मंद हासं । चतुर्वेद भासं ॥ ३८ ॥
भ्रगू लत्त गत्तं । प्रभासी प्रभुत्तं ॥ मनी नील सीतं । कटी पट्ट पीतं ॥ ३९ ॥
स्वयं ब्रह्म देही । नियं नंद गेही ॥ विपं पूत नायं । पियं दूध तायं ॥ ४० ॥
सकट्टं प्रहारै । व्रजज्जा विहारै ॥ तिनं व्रत्त तानी । उवं आस मानी ॥ ४१ ॥
प्रभू ग्रीव लग्गे । तिनं ताम भग्गे ॥ रिषी श्राप आपं । नलं कूव तापं ॥ ४२ ॥
दहं देवदारं । व्रजंजा कुमारं ॥ नवं नीत चोरं । दही मट्ट ढोरं ॥ ४३ ॥

रही । समुदेम । वही । तिनै । हाथ्थं । हथं ! सद्देसं । संदेमं । कथ्थं । कथं । तहा । गढं । तहा वग वढं । उहा । दष्पी । दिषी । हुंती । दुप मुषी । दीयं । सहं । दानरामं । सहंनान । दसानन । आदी । मयं । नादी । करै । चुरं । भरै । वांनं । भुरं । अभी । किय । वभी । कुंटं । वभीषन । प्रसूत । विमांनं । चडैवेगि आनं । अन्योध्या संपत्ते । संपन्ते । नमै । रांम । मतै ॥ १७–३० ॥ वसुदेव । अैनी । वसूदेव । भेंनी । वीयं । पांनि । प्रसिद्धै । प्रसट्टै । जगिधारी । सूढं । मुढै । अकासै । वांनी । श्रवन्मै । गियांनी । ऊवं । पग । झारै । अनुजं । प्रहारैं । पांनि । वध । वद्धै । बालै । अवद्धै । अवधे । गभ । पुतं । रुकै । तथ । दंतं । दतं । किसन दिसनं । किदमं । प्रथमं सभद्दं । प्रथमं सभदं । परक । पष । पप्य । निपित्री । निपित्रं । रौहो । सोही । चत्रवहुं चारु । किसढो सुं हारु । चतुर्वाहि । किरीटी । नेनं । नैनं । क्रंनं । कुनै । कुडलैन । कुंडलें मंनं । अयं अयं अविनासी । अयं । अविनासी । लछि । चरंनै । चरंने । चतुर । वेदं । भृगू । भगूं । प्रभुतं । देही । येही । पुतनायं । पीयं । धूत नाये । सकट्ट । सकटं । व्रजंजा । व्रज्जजा । विहारे । तिना । व्रतं । प्रभु । ग्रीव लगै । तांम । भगैः । भये । रिपि आप आपं । देव दारं । व्रजना । कुंमारं । चोरं । मटढोरं ।

क्रियं गोप चोरं। अनोषं किसोरं ॥ अही दान पानी। जसोदा रिसानी ॥ ४४ ॥
सिसू उव्व सद्दे। किद्दों बंध बंधे ॥ सुयं ब्रह्म लेष्यो। अचिज्जंस पेष्यो ॥ ४५ ॥
लघू दीर्घ डुंदं। कला को गुविंदं ॥ ररोषं सहासी। सुकत्ती निवासी ॥ ४६ ॥
सुतं जष्य राजं। क्रियं ऊर्द्ध काजं॥ द्रुमं गात बीची। परे व्रष्य सिंची॥ ४७ ॥
घुली बंध पानं। प्रसिद्धे पुरानं ॥ वरूनं पिवासी। ग्रहे नंद ग्रासी ॥ ४८ ॥
जिते लोक पालं। व्रजं जाल बालं ॥ बधी धेन मारै। प्रलंबं प्रहारै ॥ ४९ ॥
सुषे काल व्यालं। सिसू बच्छ पालं ॥ कली उत्तमंगं। क्रियं न्रित्त रंगं ॥ ५० ॥
व्रजं बारि लोपं। मघू मेघ कोपं ॥ परी व्रज्ज धारा। गिरं धारि धारा ॥ ५१ ॥
नषे सैल सारं। त्रिभंगी त्रिसारं॥ पुरंदं पुलानं। व्रजे वानि सानं ॥ ५२ ॥
निसा अंध घोरं। क्रियं गोप चोरं ॥ धरा नील रैनं। तज्यौ देव सैनं ॥ ५३ ॥
कचं वक्र बेंनी। भ्रमी भूरि सैंनी ॥ स्रुती कुंडलीनं। दुती काम लीनं ॥ ५४ ॥
चषं पुंडरीकं। वपं मेघ लीकं ॥ नसं सुत्ति सारै। निसामेक तारै ॥ ५५ ॥
धरा सुद्ध हासं। करै देव बासं ॥ रदं छद्द मुद्दं। नगं कोक नद्दं ॥ ५६ ॥
ग्रिवा कंबु रेषं। भुजाक्रित्त लेषं ॥ बयज्जंत मालं। उरै सो विसालं ॥ ५७ ॥
लियं वेत हेली। बने नाम केली ॥ जसोदा जगायं। म्रगे सिंग वायं ॥ ५८ ॥
जिते गोप सथ्थं। दही पत्त हथ्थं ॥ बनेजा बिहारी। गऊ बच्छचारी ॥ ५९ ॥
अगं कांन मुद्दे। दिये हेरि सद्दे ॥ नियं ग्रेह चारी। हँसे गोप भारी ॥ ६० ॥
सतं पच पुत्तं। अचिज्जं सुहित्तं ॥ नियं तप्प लागं। हरे बच्छ भागं ॥ ६१ ॥
स्वयं स्याम चित्तं। धस्यो ध्यांन हित्तं ॥ नियं नंद पुत्तं। मला नंस जुत्तं ॥ ६२ ॥

गोप। चोरं। अनोषं। क्रिसोरं। गहीदांन पांनी। जसोदा रिसांनी। सिसुउव्य। सोयं। आचिज्जंस। लघु द्वीघ। जप्य। उरद्व। उर्द्ध। उर्द्व। द्रूम। परै वृष्य। सीचीं। सीची। घुंती। प्रसिद्दे। विपासी। गीहे। गृहे। जिते लोक माल। व्रज। बंधी धैन सारे। प्रलबे प्रहारे। मुषे। वछ। उतमंग। क्रियन्नंत्यरंगं। नृत्यान्नस्त। व्रिज। वृजं। लोपं। मधुमैघ कोपं। वृज। धाए। गिर धारि वाए। नषै सैारसालं। शैल। त्रिभगी त्रिसालं। पुरदं। व्रजेवा। व्रजेवा निसांनं। घोरं। कीयं व्रजसोरं। रेन। कंचवक्र श्रेनी। त्रेनी। भृमी। भर्मो। भुरि। सैंनो। स्रुती कुंद्र लीनं। कांम। पुडरीकं। वपं मैघ लीकं। नासं सुतिसारे। निशा। मेक। तारे। सुद्दि। सुधि। करें। रद छंद मुदं। रदं सद मुद्दं। नागं कोक नद्दं। कबु। रेषं। सेषं। शेषं। वयजंत। उरे। सो। वेत। सैनी। वनै जांम कैली। जसोदा। मृगेसिगंवायं। जितै। गोप सथं। दहीपन हथं। वनेजा। गोवछ चारी। वछ। अग कांन मुदे। दिऐ। सदे। निय गहै चारी। गेह। हसे। हसै। गोप। पत्र पत्रं। अचिजं सुहितं। तप। हरै। वछ। स्यांम वितं। ध्यांन। हितं। निय। मिलानंस। कीयं। सोक।

क्रियं सोक कोपं । कहां वछ्छ गोपं ॥ हरे ब्रह्म ध्यानं । पुरष्पं पुरानं ॥ ६३ ॥
रचे क्रिष्ण सोची । चियं अंब रोची ॥ तिनें रंग नेहं । अपं अप्प गेहं ॥ ६४ ॥
तनं संप चक्रं । चतुर्बाह वक्रं ॥ पियं पट्ट बंधे । सुहं ग्वाल नंधे ॥ ६५ ॥
अचिज्जं बिहारी । नले ब्रह्मचारी ॥ भ्रमे लोक पालं । बियापै सु कालं ॥ ६६ ॥
* * * । * * * ॥ थुती सा सुरारी । सु ब्रह्मं बिचारी † ॥
छं० ॥ ६७ ॥ रू० ॥ ३ ॥

भुजंगी ॥ न रूपं न रेषं न सेपं न सापा । न चंद्रं न तारा न भानं न भापा ॥
अविद्या न विद्या न सिद्धं न सादी । तुही ए तुही ए तुही एक आदी ॥ ६८ ॥
न अंभं न रंभं न रुद्रा न पाया । न सेतं न नीलं न पीतं न गाया ॥
न काया न साया न पाया न छाया । तुही देव सद्देव सिद्धे न पाया ॥ ६९ ॥
तुही सर्ब माया दिपायान माया । तुही सर्ब माया तुही घाम छाया ‡ ॥
न थंभा न रंभा न रुद्रे न देहं । न मंद्रे न माया न राया न गेहं ॥ ७० ॥
न सैलं न गैलं न तापं न छाया । न गाहा न गीतं न श्रोता न ताया ॥
न प्रब्बी न पालं मृजादं न मादं । न तारी न वारी न हारी न नादं ॥ ७१ ॥
नवे मेप रेषं न भूरी न भारी । नवे ध्यान मानं न लगे न तारी ॥
न लोकं न सोकं न मोहं न मादं । तुही ए तुही ए तुही एक आदं ॥ ७२ ॥
तहां पै न तारं न वारं न वीरं । नयं दट्ठ मट्ठं न ध्यानं न धीरं ॥
नहं जोति हस्तं न वस्तं सरुष्पं । तहां तू तहां तू तहां तू पुरष्पं ॥ ७३ ॥
प्रक्तत्तं प्रथमं चयं तत्त जोई । तहां नभ्भ नेता सरोजं न सोई ॥
न माया न काया न छाया न होई । तुही देव सा देव साधा न होई § ॥ ७४ ॥

कोपं । कहा । वछ । गोपं । हरै । ध्यांनं । पुरुषं । रचंक्रिष्ण सोची । सोर्को । अप चंव रोची । चयं चंव रोची । तिनं रंग नेहं । अप अप्प गेहं । तन । चतुर । बंधै । नधे । अचिज्जा । नले । भ्रमै । लोक । सारारी । ब्रह्मं । * पाठ नहीं मिले ॥ † सं० १८५९ में है अन्य में नहीं ॥

४ पाठान्तर:—रूवं । रैपं । सैपं । शेपं । शापा । चंद्र । नरूभान । भापां । चंद्द । नरूभान । भापां । तुहीं । अदी । अभ्भं । अंभ । रभं । रुद्रा । सैनं । नील । नं । नकाया । वाया । तुहीं । दैव । सदैव । सिद्दै । पीया । ‡ यह तुक सं० १८५९ की में नहीं है अन्य में है । सरव । दिपांयान । सरव । तुंही । थांम । थंभा । संभा । घंभां । रुद्रा । रुद्रा । मदै । नया । गेहं । येहं । शैनं । मगाहा । श्रोत । नं । प्रबीनं । नंपालं मृजांदं । मृजादं । नवारी नवारी । हारीं । नांदं । नवैं । मेप । रैपं । भुरी । नवै । ध्यांन । मांनं । लगे । लोकं । सोक । शोकं । मोदं । पैं । नंय । दठ । मठं । ध्यांन । धारं । तही ज्योति । नहायोति । सरूपं । तु । तू । तो । सुरूपं । पुरुष । प्रक्रतं । प्रथमं । चथं । तत । जोइ । तोही । तहा । नभ । नेता । सरोजं । सोइ । § सं० १७७० और १८४५

तुही अंबुजा अंबुकासिन्नि कामं। तुही तत्त कै तत्त रासं न रासं ॥
तुही दीप सूरं सिरं नभ्भ तेरैं। भुजा इंद्र तूही नभं नाभ फेरैं ॥ ७५ ॥
सुयं सायरं पेट सा मुष्ष अग्गी। तुही तेज ब्रह्मंड सासीस लग्गी ॥
तुही बाल वृद्धं तुही एक आदी। तुही तंत्र मंत्रं कवी चंद वादी ॥ ७६ ॥
तुही राग जंत्रं जगत्रं बजावै। तुही सार पंचै सु पंचै चलावै ॥
भगव्वांन जंत्री सु वज्जंति लोई। सुरं राग बंधे बँध्यौ आप सोई ॥ ७७ ॥
प्रलै अंभ अंबं तुही हन्य बोधै*। तहां मोहि अग्या सु सिष्टं समोधै ॥
छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ४ ॥

साटक ॥ किं सन्मान सबेव देव रजयं, दुष्टान उस्सासय ॥
किं सुष्षानि दुषानि सेवन फलं, आयास भूमी मयं ॥
किं ईसं न सुरेस सेस सनकं, ब्रह्मात ग्यानं लहं ॥
किं रंनं छितया छितं सु कमलं, वंदे सदा विप्पयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥ रू० ॥ ५ ॥

दूहा ॥ नंदकिसोर किसोर मग। निसि पुन्निम ससि अच्छ ॥
ब्रह्म स्तुति ब्रह्मा करिय। गोन मिले गुन बच्छ ॥ छं० ॥ ८० ॥ रू० ॥ ६ ॥

॥ ब्रह्मोक्ति ॥

दूहा ॥ ब्रह्म कहै सुर सकल सों। गोकल हरि अवतार ॥
नारद सुर पति स्तुति करन। अप आए तिन वार ॥ छं० ॥ ८१ ॥ रू० ॥ ७ ॥
प्रथम कित्ति रवि ससि करी। अहो देव देवेस ॥
तुम गुन बरनत जनम लौं। पार न पायो सेस ॥ छं० ॥ ८२ ॥ रू० ॥ ८ ॥

कीं में नहीं है। तुहां। अबुजा। मनि। तत। तत। राम। सूर। नभ। तैरं। तेरं। तेरें। तुहों। नभ। नांम। फेरैं। सोसुष। सामुष। अंगी। अप। ब्रहमड। सुसीस। लगी। वृद्ध। तत्र मंत्र। वाही। रगयंत्रं। तुही सार पंचे चलावै। भगंवान। सुवज्जेति। लोई। बंधे। बंध्यां। सोही।
* सं० १७७० की में नहीं है। प्रलै अभ अंब तुही। हन्यं बाधै शिष्टं। समोधै। समोधे ॥

५ पाठान्तरः—इसकी पहिली तुक सं० १७७० की में "किं प्रलै अभ अबं तूहा हन्य बोधै" है। सान्मांन। सैव। दैवं। दुष्टांन। उक्कासयं। उसासयं। सुंषानि। दुषांनि। सैवनि। कि। इसं। सुरैस। सैस। शेस। ब्रंह्मान। ब्रह्म्यान। ग्यांन। रन। दै सदा विपय। विपयं ॥

६ पाठान्तरः—नदकिसैार। किसैार। मिशि। पुनिम। यूनिम। शशि। अछ। ब्रह्मस्तुति। ब्रह्मा। ब्रह्मां। गैान। गोंन। मिलै। बछ। बछा ॥

७ पाठान्तर—ब्रंह्म। कहे। सैाः। गैाकल। किरन ॥

८ पाठान्तरः—कित्ती। करिय। अहा दैव दैवेस। देवेश। तुमि। लां। पावै। पायो। शेश। सैस ॥

॥ मच्छावतार की कथा ॥

॥ छंद नाराच ॥

प्रथम्म मक्क रूपयं, सरूप अंग नूपयं। सु पव्वं रिष्पि तानयं, तमात संत भूपयं ॥ ८३ ॥
ठठुक्कि एक घट्टवांन, ता निसांन वज्जही। अनेक देव रंजए, सुरंभ रयांन सज्जही ॥ ८४ ॥
विवान छित्त रंग कित्त जित्त पंड पंडही। करन्न एक छेन सेत ता समंद मंडही ॥ ८५ ॥
सुरंभ हद्द तव्विकांन कित्त कथ्थि चंदयं, वरन्न वांन संकरे, जमात मोद कद्दयं ॥ ८६ ॥
सु चंद सूर नेक भंति कित्ति जीह जंपही। कमल्ल केलि वंक मेलि वंधि सिंधु चंपही ॥ ८७ ॥
सु दौरि दो दिसांन छोरि तोरि झोरि झंझही। सुरंज तंज जेज जेत तिप्प किप्प रंजही ॥ ८८ ॥
सुरं सु देह विड्डार कित्त कथ्थि चंदयं। सु जोग थांन जोगयं सपूरयं निकंदयं ॥ ८९ ॥
सुमानयं न माल देव मानयं सुरज्जयं। दिसान दिस्स उच्चरं सुरूप मक्कयं जयं ॥ ९० ॥
श्रवंत लोक लोक पाल फूल्ल माल रंभयं। सुमन्न देव सीस रज्जि वंचयं जयं जयं ॥
छं० ॥ ९१ ॥ रू० ॥ ९ ॥

कवित्त ॥ सायर मद्धि सु ठाम। करन त्रिभुवन तन अंजुल ॥
देव सिंगि रषि धरिनि। सिरन चक्री चष झंपल ॥
नैन भुजा ग्रज्जंत। रसन दसनं झुकि झाड्य ॥
एक करन ओढंत। एक पहरंत सवांड्य ॥

९ पाठान्तर:—मक्क। सुरूपयं अनूपयं। सुपव्वं। सुपरव। रिषि। भुपयं। ठठुकि। घंटवान। घट्टवांन। निसांन। अनेक। देव। सज। छिछोह। छित। रंकग। कित। जित। करन। सैन। हैंन। सुरभ। हर। हद। तविकान। किति। कत। कथि। चंदयं। सु जोग थान। संकरैज। मोद। कंदयं। सुं चंव। सुर। नैक। भंति। जीह किति। जंपही। भंति जीह किति जंपही। कमल। कैलि। मैलि। मंधि। सुदौरि बोरि दो दिसांन दोरि छोरि झंपही। दिसाने। छोर। छोरि। सुरंगजतजजजेज तिपकिप रंजही। सुरंग। जतं। जज। तेज। तिप।। तिप्प। किप। देव। विड्ड। किति। कथि। काथे। वंदयं। सुं। जोग पांन। जोगयं। संपूरयं। नमाजयं न। माल देव मालयं सुरजयं। दिशान। दिशि। दिसि। उचर। उचरं। सूरूप। मक्कयं। श्रवन। लोकं। पाल आय। रजयं। सुमान। दिव। जय जयं ॥

१० पाठान्तर:—ककित्त। मद्धि सु मद्धि। मध्य। ठांम। करे। करै। अजुल। "देव संगि सठि हय। सिवनं चक्रीवप झंझल"॥ "देव संगि सठि हथ सिर चक्री चष झंझच"॥ नैन। गैन। गुरजन। गजंत। रसन रसन। झाइयं। झाड्य। झंन। झव। उदयन। उदयं त। पहरत। सवाड्य। † बूंदी वाली में नहीं है। चलं। सप्त। सायर। दद्र। चलत। पग नलन कहि। लैंन। यहि ॥

चल चले सपत साइर अधर * । इंद्र नाग मन कवन कहि ॥
गिर धर चलंत पग मलनमल । लेन बेद अवतार गहि ॥ छं० ९२ ॥ रू० १० ॥
भुजंगी ॥ धरें गेन सीसं चले बेद रीसं । गदा मुदगरं दंत पारंत चीसं ॥
पगं पिठ्ठ नठ्ठं कमठ्ठं डरानं । थके बेद ब्रह्मा कमठ्ठं भजानं ॥ ९३ ॥
भगे जोग जोगं कुटे थांन थानं । कुटे विश्व लोकं मह्वा लोक जानं ॥
फटे कन्न रानं प्रथी लोक जानं । चितं रक्त लोकं भ्रमं लोक मानं ॥ ९४ ॥
पुले पिच लोकं ब्रह्नं लोक देवं । * * * * ॥
सिवं कूट थानं हरं थान लोकं । जह्नू रस्त लोकं परे सत्य सोकं ॥ ९५ ॥
परे दिव्य लोकं सुरंगं सु पालं । ब्रह्नं राषिसं लोक भग्गेस कालं ॥
परे निठ्ठ तठ्ठं कमठ्ठं रहानं । चले दैत संषं जुटे बेद रानं ॥ ९६ ॥
ब्रह्मा भजानं न जानं कि जानं । धरंजा फटानं ग्रहं निठ्ठ भानं ॥
परे लोक सोकं करे देव कुक्कं । डकं डक्क वज्जी करै ईस डक्कं ॥ ९७ ॥
ग्रहे ब्रह्म लिड्डं धरै बेद मुष्षं । गजे जोग सट्टी हुवं दैत दुष्षं ॥
करे मच्छ रूपं धरै धार धूपं । छिले सत्तयं सायरं अंध कूपं ॥ ९८ ॥
परे छोनि छक्कं विछक्कं बरानं । करे कुंभ नहं विहहं सुनानं ॥
तहां संषनं पानि संषा सुरानं । नहीं पाव संषं प्रलंबं बरानं ॥ ९९ ॥

११ पाठान्तर:-धरे । गैंन । चलै । मुद्गर । मुद्गरं । पंग । पिठ । नठं । नंठं । कमठं । भरानं । थकै । ब्रंह्मा । कमठं । भगै । जोग जोगं । कुदे । कुदे । विश्वलोकं । महालोक । त्तानं । जांनं । फदे । कंन्न । प्रिथी । पृथी । जांनं । चित । लोकं । भ्रमं । लोक । मानं । पुले । लोकं । ब्रह्मलोक । ब्रह्मलोक । देवं । * * यह तुक किसी पुस्तक में नहीं मिली । कूंट । थांन । लोकं । जह्नूरस्त । जहुरस्त । नोकं । परै । सत्यको । सोकं । सोकं । लोकं । सुरंग । ब्रह्म । ब्रह्मं । लोक । भगै । परै । निठ । तठ । तठं । कमठ । कमठं । रंहानं । राहामं । चलै । सषं । जुटै । वेद । व्रह्मां । बृहंमा । जांन । फटांन । गृहं । निठ । निठं । ठ । जानं । शोकं । कोकं । कोकं । डक । वज्जी । इस । डकं । ग्रहै । लिड्डु । धरे । बंद । मुषं । गज्जै । जोगि । सठी । हुंग्रं । हुग्रं । दुषं । मछ । धरे । रूपं । द्रुपं । छिले । सतयं । अध । परै । छोनि । थकं । छकं । विछैकं । विछकं । करै । कुभ । नंद । विहदं । सुरानं । पांनि । सुरांनं । नही । संष । शंषं । प्रलवं । प्रलंब । धुमर । धुमरं । अंवर । अब । दभी । मभ । षोडस । कला । सुभी । धरै । गैंन । मैम । पांनं । लरै । आउदानं । मनौं । मनौ । आसुर । वासुर । सत । सुत्त । करकंत । मछी । कटि । कटि । मछं । मनौ । मनौं । आउधं । बजि । जनु वज्र वछं । वज्जि । वछं । धपै । पांनि । फटै । छेदं । कढै । पैट । मभं । सुर वेद । वेदं । धरै । चलै । ब्रष्य । थांनं । किए । बजं । बज्ज । पुरात । वृष्टि । वृष्ट । देवं । सुरंब्रह्म । सेवं । † बूंदीवाली में इस तुक के दोनों पाठ उलट पुलट हैं । मुंष । वेद । पांनि ।

धजा धूसरं अंमरं अंब दक्ष्मी। तिनं सक्षक पोडष्काला अप्प सुक्ष्मी ॥ १०० ॥
धरे गेन पानं लरे आवधानं। मनों आसुरं वासुरं सत्त पानं ॥
करक्कंत सच्छी कटिं कढ्ढि मच्छं। मनों आवधं वज्जि जौं वज्र वक्कं ॥ १०१ ॥
धपे पानि लद्दं फटे पारि छेदं। कढे पेट सक्ष्मं सुरं वेद वेदं ॥
धरे अप्प पानं चले ब्रह्म थानं। किये जैत वज्जं पुरानं सुरानं ॥ १०२ ॥
करी विष्टि फूलं सुरं सिद्ध देवं। सुअं ब्रह्म जप्यं कियं अप्प सेवं ॥
सुषं वेद पिढ्ढं न लै पानि ब्रह्मं। जन्नै षोनि पानं भजै भ्रंति भ्रंमं ॥ १०३ ॥
† दियं चारनं भट्ट वेदं सु पानो। रहे ब्रह्म ग्यानं हरी सिद्धि रानी ॥
अपं इंद्र आपं भगं कोरि कोरं। कियं मक्क रूपं कुटे वेद रोरं ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ११ ॥

॥ कच्छावतार की कथा ॥

दूहा ॥ मंडि गजिन बहु बल उअर। नल कल बल जल जाल ॥
मँदिराचल बल विपुल पुल। थल थरहर हल पाल ॥ छं० ॥ १०५ ॥ रू० ॥ १२ ॥

दंडमाली ॥ धरि कच्छ रूप सरूपयं। कुस कूप मंडित भूपयं ॥
धरि मंद प्रब्बत पुट्ठयं। जल जात चाल गरिट्ठयं ॥ १०६ ॥

---

† हमारे पाठकों को यह स्मरण में रखना योग्य है कि चंद के इस वाक्य "दियं चारनं भट्ट वेदं सु पानी" से वास्तव में चाहे यह ऐसा ही हुआ हो अथवा न हो किंतु ज्ञात होता है कि इन दोनों जाति के मनुष्यों में जो वर्तमान समय में अनबन दृष्टि आती है वह चंद के समय में विद्यमान न थी किन्तु कुछ थोड़े ही काल से उस का जन्म हुआ है। यदि हम यह भी मान लें कि चंद के समय में इन दोनों जातियों में परस्पर विरोध था; तथापि चंद कवि प्रशंसा करने के योग्य है, क्योंकि उसने चारनों का नाम अपने इस ग्रंथ में कहीं नहीं छिपाया है बरुक पहिले उन का नाम उसने प्रयोग करके फिर अपनी जाति का नाम प्रयोग किया है। तथा इन दोनों जाति के मनुष्यों की उत्पत्ति के शोधकों को यह वाक्य बारहवें शतक तक का प्रमाणरूप भी उपलब्ध समझना चाहिये। इस महाकाव्य में आगे अनेक स्थानों में ऐसे प्रयोग आवेंगे। इन दोनों जातियों की उत्पत्ति के विषय में अनेक प्रकार के शंका समाधान हैं। परंतु इन लोगों की उत्पत्ति का कुछ विषय हमारे पास एकत्र किया हुआ है वह अवकाश मिलने पर यदि कहीं आवश्यकता हुई तो हम किसी टिप्पण में लिख विदित करेंगे ॥

ब्रह्म। जल। जलं। पोलि। बोलिं। पांन। वति। भ्रमं। वेद्दं। पांनी। हरे ब्रह्मम ग्यान हरि सिद्धि रानी। हरे। रांनी। अयं। इद्र। भगो। भगे। कोर। सार। कोर कोडिरं। किय मन रूप कुटैं वेद जोर। मक्क। छुटे ॥

१२ पाठान्तर:—गजि गन। उर। मंदिरा। बव ॥

१३ पाठान्तर:—छंद दंडमाली। कछ। त्रुस। कुंप। जुयंयं। जूपयं। प्रबत। पुठयं। गरिड्यं। गरिठयं। गरिष्टयं। वांम। दिन। अदिन। वस। प्रचंडयं। श्रुति। सुति। अहिगुन। गुनगनं।

दिव वाम मान न छंडयं। दित अदित वंस प्रचंडयं॥
स्तुति चवत सुर नर गुन गनं। * * * * ॥ १०७॥
लिय रतन चवदसु वीनयं। बँटि बंटि निज कर दीनयं॥
वर बिहरि बिहरि वोरयं। सुर असुर मिलि जलफोरयं॥ १०८॥
जै चवत चंद कविंदयं। कलि कूरमं बर इंदयं॥ छं०॥ १०९॥ रू०॥ १३॥

दूहा॥ कहि सनकादिक इन्द्र सम। किम लिय पाथर तन्न॥
कहै इन्द्र सनकादि सों। सुनो कहों करि म्यन्न॥ छं०॥ ११०॥ रू०॥ १४॥
दैत राज धर प्रबल हुत्र। अमर परे सब मंद॥
गए पुकारन सकल मिलि। जहां लछ्छि गोविंद॥ छं०॥१११॥ रू०॥ १५॥
कही ईस इन्द्रादि सों। सजो सेन चतुरंग॥
तुम सहाय असहाय अरि। करो दैत सब भंग॥ छं०॥ ११२॥ रू०॥ १६॥

लघु नाराज॥

कियंति नद्द भद्दयं। लियंति रथ्थ वद्दयं॥ चले सु देव इंदयं। करे सु सेन द्वंदयं॥
अनेक धानुषं धरं। अनेक चक्र संवरं॥ चले अवद्ध षेदयं। षरे भरेति वेदयं॥
धजा पताष धूमली। सनूह सेन*संमली॥ दईत दूत दोरयं। करे सनाह जोरयं॥
चले सु दैत चंचलं। मनों अषाढ धूमलं॥ मिले जु रिष्षि मानयं। जुँ देवता दधानयं॥

*यह तुक घटती है। लीय। चउद। सु वीनयं। बंटि। विदुर विदुर। विदुर। चिहुरि वारय। असुर। सोमयं। ववत। कविदय। कवींदयं। त्ररमं। कुउमं। चर॥

१४-१६ पाटान्तर:-पाथो धिर। पार्थेधिर। सनकदि। सो। कहू। कहो। भिंच भिन्न॥ १४॥ देतराज। हुअ। परै। लछि। गोबिंद॥ १५॥ ईश। ईद्रादि। सैा। सजो। सहाय। दैत्य॥ १६॥

१७ पाठान्तर:-नद। भद्दयं। लियंरति। रथ। वदयं। चलै। इद्र। दैवयं। करै। सैन। एवयं। अनैक। संचरं॥। चलै सु वंद्दु षैदयं। षरै भरैति वैधयं। वेधयं। पताक। धुमली। सस्त्रह फैाज संमली। समूह फैाज संमली। करै। जोरियं। चलै। चंवलं। मनैा। धुमलं। मिलै। सु रिषि। रिष। ज्यों। ज्यैा। दैवता। त्रिलैाक। नैवता। लछमी। लछिमि। * यह बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है। कैसवं। केशवं। भालयं। यो। यों। यें। दद्दत्त। यो। यो। दैव। झुरयं। मिलै। कछावनिर। किद्दुयं। लछंमि। लछमी। जित। गिरि। धरै। पिठ। नैत। मथयं। दद्दत। मुष। दषयं। पुछ। दैव। रषयं। विरैालि। घुमही। घूंमही। प्रथम। लछिमी। लछमी। लतमी। वष्यमी। लतमी। स्त्रपारिजात। सोम। उगि। ऊगि। सु कला। सुं धैन। गज। उजला। सु रग मैाधनी परा। सु रंग मेघनी परी। अस्व। धनुष। समैत। पषयं। दस। दर। दैव। दझयं। फैन। मझयं कितैक सैन कुकही। मुए सु। मांन। मुकही। लषंत रन इंदयं। लयं। अमृत। अप।

दियं सराप देवता । त्रिलोक मध्य तेवता ॥ श्रवंत लछ्छिमी गई । नराधि देव न्रिम्मई† ॥
न केसवं न दानवं । न नागयं न भानवं ॥ युँ देवता विचारयं । नहीं सनाह भारयं ॥
दईत भग्गि दूरयं । युँ देव दूत भूरयं ॥ मिले त्रिलोक संमिली । विना पराग विह्वली ॥
कछ्छावतार किद्दयं । लछ्छिम जीत लिद्दयं ॥ मदाचलं महा गिरं । धरे सु पिठ्ठ उप्परं ॥
सु नाग नेत किद्दयं । महा समंद मंथयं ॥ दईत मुष्य दष्ययं । सु पुच्छ देव रष्ययं ॥
विरोलि दद्धि ज्यौं मही । घटा तटाक घूंम ही ॥ लियं प्रथंम लछ्छमी । सु कौस्तुभं च वछ्छमी ॥
सु पारिजात पानयं । सु राधनंत मानयं ॥ जु सोम उग्गि सुक्कला । सु धेन गज्ज उज्जला ॥
सु रंभ मोहिनी परी । सु सप्त अस्व सुद्दरी ॥ धनुष्य ईस संधयं । विषं समेत पष्ययं ॥
सु च्यारि द्दिस्स पंचही । दिए सु देव संचही ॥ दईत वंस दझ्झयं । सु नाग फेन मझ्झयं ॥
कितेक सेन कुक्कही । मुएति मान मुक्कही ॥ लियं सु रत्न इंदयं । दईत किद्द दंदयं ॥
अमृत्त अप्प अच्चरं । कियं सु देव कच्चरं ॥ अनाथ नाथ अप्पियं । दईत देव चप्पियं ॥
पवंत दोय पष्पिली । दईत देव रुप्पली ॥ अमृत्त देव पिद्दयं । सुरा सु दैत सिद्दयं ॥
जु सोमनाथ सों कही । रवी सुरा सु देत ही ॥ हरी सु चक्र सद्दयं । जु दैत वंस बद्दयं ॥
छं० ॥ ११३—१२९ ॥ रू० ॥ १७ ॥

कवित्त ॥ दानव तव गय दौरि । करे हूक वंध कटक्कं ॥
हुअ देवासुर जुद्ध । चढे देवता चटक्कं ॥
परे रथ्थ पष्परे । आइ लग्गे सम धारं ॥
रथ सौं रथ भंजियहि । कूक लग्गी पुक्कारं ॥
जोगनी जोग माया जगी । नारद तुँबर निहस्सिया ॥
दस एक रुद्र दारिद्र गत । दानव तामर हस्सिया ॥ छं० ॥ १३० ॥ रू० ॥ १८ ॥

अचरं । अचर । कवरं । कचरं । आथ । अपयं । दांनव । दानव । चपय । चपयं । पावत । पावंत । दोय । पपली । दानव । रुपली । अमृत । दैव । सुरा ज । सुरा जु । ज्यु । सोमनाथ । रवी सुरा स दौर ही । संधियं । सदयं ॥

† इस महाकाव्य में मुसलमानी भाषा के शब्द प्रयोग हुए देख कर शंका करनेवालों को जानना और विचारना चाहिये कि किसी पुस्तक में फौज और किसी में सेन पाठ मिलते हैं । क्या यह दोनों पाठ चंद ने प्रयोग किये हैं?

१८ पाठान्तर:—गय तब । करै । कटंक । कटक्कं । दैवासुर । चढै वता चटक । चढै । चटक्कं । परै । रथ । पषरै । पपरे । लगै । सम धार । सुं । सों । लगी । पुकर । पुकारं । जुगिनी । जोग । तुंबर । विहसिया । दरिद्र । तांमर । हसिया ॥

भुजंगी ॥ इतें चक्रधारी कियो चक्र रूपं। उतें कुंभनी कुंभ सो दैत्य भूपं ॥
उतें दानवं बोल † बोले करारे। इतें देवता गज्जयं सार भारे ॥ १३१ ॥
रिषं हथ्थ सादिष्ट दीनी असीसं। तिनं वज्रमै कोप दानव्व दीसं ॥
कुकी जोगमाया बकी थान थानं। रटैं नारदं तुंवरं ब्रह्मगानं ॥ १३२ ॥
कियौ कुंभ कोपं चली संग माया। इतें इंद्र ब्रह्मादि सब देव धाया ॥
षरे देव देवाधि चारथ्थ चूरे। धजा की पताषं लगी धूरि धूरे ॥ १३३ ॥
कुट्यौ पट्ट पीतंबरं कट्टि कुट्टी। मनों स्यांम आकास तें बीज तुट्टी ॥
हुए सिथ्थलं देव दानव्व धाए। करे रूप अन्नेक अन्नेक काए ॥ १३४ ॥
तबें भूत बेताल नच्चैंति घाए। धरे षग्ग त्रीशूल अन्नेक धाए ॥
ततथ्थे ततथ्थे नचे तार बिद्धी। कतथ्थे कतथ्थे कहे देव किद्धी ॥ १३५ ॥
परथ्थे परथ्थे कियं आर पारं। मनथ्थे मनथ्थे कियं देव मारं ॥
असित्ते असित्ते हुए एक सेनं। ग्रसत्ते ग्रसत्ते महादेव मेनं ॥ १३६ ॥
अलुझ्झे अलुझ्झे करी अंत झुझ्झे। हुए देवता दानवं अंग दझ्झे।
फिरे रथ्थ सो देव कीनं अनूपं। षरे रथ्थ अप्पं करे कच्छ रूपं ॥ १३७ ॥
न लग्गै न लोहं न संगी न सारं। न अस्त्रं न लेपं न छेपं न पारं ॥
फिरे चक्रधारी सु राषीस द्वंदं। किए एकठे एक एकं मुनिंदं ॥ १३८ ॥
हुए चक्र अन्नेक अन्नेक भारी। मरे राषिसं द्वंद दैत्यान मारी ॥
इसौ एक अज्जेज जुद्धं अनूपं। हुअं देव देवा सुरं कच्छ रूपं ॥ १३९ ॥
इसं कच्छरूपं रूप ओप्यौ अपारं। धरा पिट्ठ रष्षी सरापं सु धारं ॥
जुगं अंत दानव्व भूमी उपारी। तबै कोल रूपं कियौ श्री मुरारी ॥
छं० ॥ १४० ॥ रू० ॥ १९ ॥

---

१९ पाठान्तर :—इतै। कियो। उतै। कुंभनि कुंभ। सा दैत। भुपं। उतै। † बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है। बोलें। बोलैं। करारै। इतै। दैवता। सजिय। भारै। रिष। हथ। तिमं। मैं। कोप। दानव। जोगमाया। थांभ। थांनं। रटैं। रहे। नारनं। तुम्बरं। ब्रह्मगानं। कीयौ। कोपं। इतै। इद्र। सादेव। षरै। चारथ। षुरैं। धुरि धुरै। छुट्यां। यट्ट। पीतंवर। कटि। छुटी। मनौ। श्यांम। तैं। हुअै। सथलं। सतलं। दैव। दांनव। करै। अनैक। आये। कायें। तबै। भुत। वैताल। नचैत्रि घाइ। नच्चै त्रि थाई। षरै। षग। त्रिसूल। अनैक। अंनेकं। अधाई। धाई। ततथै। ततथे। नचै। नचें। तारि। विद्दा। कतथै। कतथे। कहै। दैत्र। किधी। परथै। परथे। मनथै। मनथे। दैव। असितै। असितै। हूंए केक सैनं। हुए केक सेनं। यसितै। यसितै। मनं। अलुझै। अलुझे। झुझै। झुझे। हुअै। दैवता। दांनवं। दझे। दझै। फिरै। रथ। दैव।

कवित्त ॥ धरि कक्छप कौ रूप । भूप दानव संहारे ॥
लइ लक्छि सागर सुमथि । रिष्य आपान सुधारे ॥
राह सीस किय षंड । मंडि दानव सब भंजिय ॥
किय देवासुर जुद्ध । ईस वर करि अरि गंजिय ॥
धारी सु धरा हरि पिठ्ठ पर । दिए रत्न वंटिय सुरनि ॥
कवि चंद दंद मेटन दुनो । श्री कक्छप तेरे सरनि ॥ छं० ॥ १४१ ॥ रू० ॥ २० ॥

॥ वाराह अवतार की कथा ॥

दूहा ॥ हिरनाषह प्रिथवी हरी । धर दानव अवतार ॥
इन्द्रादिक नागन सजिय । प्रति अवतार पुकार ॥ छं० ॥ १४२ ॥ रू० ॥ २१ ॥

कवित्त ॥ प्रति अवतार पुकार । लीन प्रथवी सर पारिय ॥
जवन जिहां न सु ठाम । धरनि सत साइर गारिय ॥
किन्न रूप वाराह । जोति मन जोति सु कढ्ढिय ॥
वहुल रूप तन दुरद । रिसन वैश्या नर वढ्ढिय ॥
कवि चंद चवत दानव भिरन । धरन धरा रद अग्र वर ॥
सुर राज काज उप्पर करन । कोल रूप जगदीस धर ॥
छं० ॥ १४३ ॥ रू० ॥ २२ ॥

कानं । अनुपं । परै । रथ । अयं । आय । करै । कक्ष । लग्गैं । स लोह । सु लोहं । मंनं सगी । कुसस्त्र । कुशस्त्रं । न लगै । न लग्गैं । न छेत्र । न छेवं । कुशस्त्रं न लग्गैं न छेवं न पारं । फिरै । सु रापिस । वृदं । कीए । मुनींदं । अनेकर । अंनेक । मुरै । मरै । मुरे । दसो । अजैज । अजेज । अनुपं । हुअ । सुर । कछ्यं । औय्यौ । पिठ । रपो । जुग । दान । भुमी । उधारी । उधारी । तैवै । कैाल । कयो ॥

१४० पाठान्तर:—कबय । को । भुप । दांनव । संहरि । लई । लछ्छि । सुमरिपिथी । सुमथ्यि । रिपि । स्त्रायंन । सुधारि । शीश । काय । मोंड । दांनव । भजिय । भंजीय । दैवासुर । युद्ध । इससर वर करिं मक्रिजिप । ईशवर । धारि । पिठ । परं । दए । वट्टिय । सुरन । दट । मैटन । कछ्छप । तैरै । सरण । सरन ॥

१४१ पाठान्तर:—हयग्रीवहि पिथवां हरी । हयग्रीर्वाहं पृथिवी हरी । प्रथमं । धुर । दांनव । ब्रह्मचार । ब्रह्मच्चार । ब्रह्माचार सुर । इद्रादिक । सुर इन्द्रादि ॥

२२ पाठान्तर:—नील प्रथी सर पारीय । जब्बन । जिहांन । ठांम । सायर । गारीय । कीन । किंन्न । जोति । मनि । मोनों । जोति मनि प्रगटी । कट्टिय । क्कट्टिय । कट्टिय । बढिय । ववत । धरनि । ऊपर । कैाल ॥

कवित्त ॥ बल प्रचंड बल मंड। ज्वाल विकराल काल कल ॥
घर वितंड वाराह। बीर वीरन विदारि पल ॥
हरि हरनक्छि सु अक्छि। बक्छि वर जक्छि विभावस ॥
विधि विधार वीधार। विद्दर विकरार भार असि ॥
उद्धारि धरा रहि अग्र वर। सुर विकास किय चंद वर ॥
जै जया सवद धुनि सुर चवत। जोरि पानि वंदै सु चिर ॥

छं० ॥ १४४ ॥ रू० ॥ २३ ॥

वृद्धनाराच ॥

परठ्ठि प्रान मै सुरांन भांनि अष्षि भज्जयं। कला गुहीर नीर तीर आय दैंत गज्जयं॥१४५॥
पयं पताल सीस स्वग्ग अस्व मुष्ष दष्षयं। रटंत वेन भुज्ज गेंन रैंन नैंन रष्षयं॥१४६॥
भुजाग्र भाग मेर नाग इंद्र दाग दक्ष्भयं। वरन्न धुम्म धुम्मरं, सुरं पुरं सु धुज्जयं॥१४७॥
पया पुरं धरा धुरं, नरा नरं न रष्षयं। इसौ अवाह अस्व दाह एक राह दष्षयं॥१४८॥
जुटे जुरं भरे भरं, सुरे सुरं सु वाहयं। चटे चटं नटे नटं लटे लटं सु साहयं॥१४९॥
करंत कूक मान मूक दैंत दुष्ष मानवं। पगांनि पानि साहि कांनि खेह चीरि दानवं॥१५०॥
करी सु कित्ति दैंत देव नीति जीति रष्षयं। हयं सु ग्रीव किद्दरी बकाट्टि जीव नष्षयं॥१५१॥
सुरा निसार लिद्ध भार दैत्य मारि धारनं। अये वराह अस्व दाह दैत्य दाह दारुनं॥

छं० ॥ १५२ ॥ रू० ॥ २४ ॥

---

२३ पाठान्तर:-मंडि। वितुंग। वितुंड। हरनछि। अछि। चछि। वछि। जछि। जगि। वढ्ढि विधार विद्दार। विधि विधार विद्दार। विकराल। उद्धरि। धारा। रह। शवद। सुरि। जोरि। पांनि॥

२४ पाठान्तर:-परठि प्रंन मेथ रान। परठि प्रांन मेथ रांन। भांन। अवि। अंवि। भजयं। नार। आइ। देत। गज्जय। गजयं। प्रिथी पताल। पृथी पताल। स्वग। मुष। दषयं। रटंनैतवेनभुजनैं:न। वैन। भुजनेन। रैंन। नेंन। नैन। रषयं। मैर। इद्र। दागभक्ष्यं। दक्ष्यं। वरत्तं। वरन। धुंम। धुम। धुंम्म। धूमर। सुर। स। धुजयं। पयांपुर। रषयं। इसो। दषयं। जुंदै। जुदे। सुरै सुर। सूरं। स। बाहयं। चटै चट। नटै नटं। लटै। अक। कुंक्क। मांन। मुक्क। मुक। दैत्य। दुष। साहिकांन। चीरे। वीरि। किति। दैव। नीति रषयं। केद्दुरी। बकाट्टि। नषयं। नंषयं। सुरांन सार। सुरां नसार। धारिनं। अराह। धाह दारुनं॥

कवित्त ॥ करि विरूप वाराह । परनि पुर अविगत पिल्लिय ॥
जनु कि मेघ उतकंठ । कला ससि षोडस झल्लिय ॥
असिय सुप्प दंतल्लिय । तरुन तिप्पिय आधारिय ॥
मेर चंद मनु बीज । चंद्र मनि परह सुधारिय ॥
आरोपि प्रथ्थि अंबर पुरह । सत साइर संसै परिय ॥
कहि चंद दंद करि दैत सों । धरनि धार अद्धर धरिय ॥
छं० ॥ १५३ ॥ रू० ॥ २५ ॥

भुजंगी ॥ वपू वीर वीरं धृतं धृत्त मारं । दिठं दुष्ट दाने कलं कोल्ल कारं ॥
वरं तुंड तुंगं विसाल्लंत नेंनं । छिनं छीन लोकं जुरे दूत सेनं ॥ १५४ ॥
रुधिं फट्टि वज्जंग वज्जे वितूरं । गनं आंन कंतं वजं पंच पूरं ॥
श्रवं सोर भारं भिरे भूर भारी । तिनं मेक मानी अफाली असारी ॥ १५५ ॥
घटे घोष छोनी वलं छीन नूरं । धरे सुद्ध उद्दं दिवं संम जूरं ॥
धरे दंत धारा वरं सेष ओपं । मयं कंक लंकं कियं कंठ लोपं ॥ १५६ ॥
जयं जोगधारी महापान पानं । हयंग्रीव नंषे तिनं तोरि तानं ॥
करे तुंड तुंडं वितारंत तारं । तियं लोक सोकं विलोकन्न पारं ॥ १५७ ॥
सुरे सूर कंतं जयं जो करालं । समं गुच्छ अच्छं करं जूल जालं ॥
चवै चंद चंडी नमो वेद चारं । नमो देव कोलं वरं रूप सारं ॥
छं० ॥ १५८ ॥ रू० ॥ २६ ॥

---

२५ पाठान्तर:—कर । करी । अविगति । पलियं । पिलिय । जजु कि । जनु कें । षोडस । झलिय । ईसी । इसी । सुप । दंतलीयं । दितलीय । तरुनि । तरुन । तिपिय । तिपीय । आधारीय । मेर । मनै । मनैं । सुधारीय । आरोप । आरोप । पृथी । प्रिथी । सायर । कवि चंद दंद करि दैत सैं । कवि चंद दंद करै दैत सै । कहि चंद दंद कहि दैत सैं । धरनि धार ॥

२६ पाठान्तर:—वयं । वपं । धृत । धृत । दिवं । दानै । कोल । तुग तुडं । तुंगं तुंडं । नैंनं । छिन । लोकं । दूत । सैनं । दरुधि । रुट्टि । वज्ज । वज्जै । विनुरं । आनं । पुरं । अवं । सोर । भिरै । भुर । मैक । मांनी । घटै । घोष । छोनी । छलं । ललं । वीत । नुरं । धरै । जुद्ध उद्धं । जुद्धं उद्धं । दिव । समजुरं । समजूरं । धरै । वर । सैष । औपं । कीयं । लोपं । जोगधारी । पांन । पानं । हयग्रीव । नंषै । तोरि । करै । विलोकंत । सुरै । कौतिं । जौं । गुछ । अछं । जुल । निमोदेचारं । देव चारं । नमो । कोल ॥

कवित्त ॥ कोल रूप जगदीस। हत्यौ हयग्रीव सु दानव ॥
जय जय सबद चवंत। सुमन वरषिय सुर मानव ॥
पड्डारे हरि लोक। सोक मेट्यौ सव्वन सुर ॥
कोइक काल अंतर। हुऔ हिरनंकस आसुर ॥
तप ईस उग्र परसन्न हुअ। ब्रह्म सिष्ट नह तौ मरन ॥
कवि चंद कष्ट मेटन कलू। कोल रूप तेरे सरन ॥ छं० ॥ १५९ ॥ रू० ॥ २७ ॥

॥ नृसिंह अवतार की कथा ॥

दूहा ॥ सुबर ईस बरदान दिय। किय सुरपति अनुकाज ॥
अवनि असुर अदभुत तप्यौ। चप्यौ तीन पुर राज ॥ छं० ॥ १६० ॥ रू० ॥ २८ ॥
जाइ पुकारे सब्ब सुर। जहां आप जगदीस ॥
दानव तप त्रैलोक लिय। वर अप्पौ तिन ईस ॥ छं० ॥ १६१ ॥ रू० ॥ २९ ॥
ब्रह्म सिष्ट सौं नां मरै। सस्त्र अस्त्र नहि जाम ॥
तब हरि नरहर रूप किय। असुर विदारन काम ॥ छं० ॥ १६२ ॥ रू० ॥ ३० ॥
षरक षंड षंडे अखिल। तिल तिल षल मै भीर ॥
बिहरि थंभ सुअंभ बर। उदर डारि डर क्षीर ॥ छं० ॥ १६३ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

विराज ॥ जयं सिंघ रूपं। भयं भीत भूपं ॥ बजे षग्ग षंभं। स्वरूपं स्वयंभं ॥ १६४ ॥
द्रिगं तेज तामं। हवी जान जामं ॥ मुक्कं सेन सारं। जयं देव धारं ॥ १६५ ॥
हयं रूप दानं। मृगंकस्य भानं ॥ स्वरूप पूरं। लवी लोक सूरं ॥ १६६ ॥
तिषी तषि चूरं। कनंकीक नूरं ॥ दिढं दिट्ठ न्हूरं। बजी तार तूरं ॥ १६७ ॥

---

२७ पाठान्तरः–कौल। हन्यौ। जै जै संवद चवंत। बर्षै। बर्षे। पाधारै। पधारे। शोक। सौक। मैट्यौ। सबन कौईक। केईक। कल। अंतरै। अंतरे। हूऔ। भयौ। हिरनंकुस। ईस। ईश। प्रसन। प्रसन्न। तह। तौ। मेट्टन। कलु। श्रीकौल रूप्प तैरै सरनं। शरन ॥

२८–३१ पाठान्तरः–सुवर। ईश। बरवान। बरदांन। करि। सुर पलि। अदभत्त। चंप्यौ ॥ २८ ॥ जाय। पुकारै। सवनि। सब। निबर। जहां। रानव तप भै लौक लिय। दांनव। अप्यौ। ईस। ईश ॥ २९ ॥ ब्रंम्ह। शिष्टि। सों। सुं। षह जाम। शस्त्र। नह जांम। नह्नर। करि। मैछ विदारण काम। मेछि। कांम ॥ ३० ॥ पंडन। आषलं। बिदरं। बिरद। पंभ। अब। अंव। भर। वर। उदरि झार झर झीर। उदर डारि डर डीर ॥ ३१ ॥

३२ पाठान्तरः–सिघ। भुपं। वजै। पंभ। स्वरूप स्वयंसं। तैज। जांनि। जांमं। सैत। चारं। दैव। मृगकस्य। पुरं। लौक। शूरं। सुरं। तिषी। तिष्य। चुरं। नुरं। दिठं दिठ नुरं। हिय

जयं देव दूरं । सिरं संस जूरं ॥ दिपे त्रिप्पनन्दी । भयं भी अनंदी॥ १६८ ॥
द्रिगं दिट्ठ चक्की । रही मेंान पक्की॥ मनं जोग जक्की । थलं थूर थक्की ॥ १६९ ॥
प्रह्लाद नक्की । करं हूरि वंकी ॥ दिवं काम अंकी । सुपं लोक जंकी ॥१७०॥
वदी वेद वानी । कवित्ता वषानी ॥ कथं गच्छ कच्छी । चवं लोक वच्छी॥१७१॥
जयं देव रच्छी । वटं वीर मच्छी ॥ डरं मझ्झ पच्छी । तिनं तांम अच्छी॥१७२॥
सुपं सुप्प सानी । हरी रूप रानी ॥ वजी दिव्य भेरी । श्रियं सिंघ केरी ॥२७३॥
कवी चंद चंदं । जयं जै अनंदं ॥　*　*　।　*　*

॥ छं० ॥ १७४ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

कवित्त ॥ वीर हक्क वर वज्जि । थंभ फट्यौ धर फहिय ॥
निडर जोति निव्वरिय । लयौ भ्रगकस्य दवट्टिय ॥
धरनि धूरि धुंधरिय । तीन भुवनं परि भग्गिय ॥
भयौ सद्द हुंकार । जोग माया ते जग्गिय ॥
प्रह्लाद थप्पि उथ्थपि अरिन । तीन लोक सुर असुर डरि ॥
खिल अखिल षेल षेलन षलन । कहर रूप नरसिंह धरि ॥

छं० ॥ १७५ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

॥ लघुनाराच ॥

लियंत रूप नारसं । वदंत वेद चारसं ॥ अरुन्न तेज उग्गयं । सरक्कि देव भग्गयं॥ १७६ ॥
उचाय धाय उंडले । हिरन्नकस्य षंडले ॥ कुटंत कढि टुंमरं । उठंत मुच्छ धुंमरं ॥ १७७ ॥
ललंत लट्ट लै लटा॥झटा पटाक कू कटा॥षटाक पट्ट षक्करी॥कटाक वज्जि गल्हरी॥१७८॥

दिट्ठ मूरं । त्रूरं । दैव । सिर । सम । जूरा । द्विपै । त्रिप । वृप्य । भयं भीय नदी । भयं अनंदी । दिवाहे छवकी । रदी मैान यकी । दिव । दट्ठ । चकी । मैांन । पकी । मन । जोग । जांग । जंकी । थुर । थुन । थकी । प्रहिलाद तकी । प्रह्लाद तकी । कर । हूर । कांम । लोक । वैद । वषांना । कवै गछ कछी । लोक । चछी । जय दैव रछी । खटं वीर मछी । मंभ । मभ । पछी । अछी । सुखी सुख सानी । रांनी । भैरी । श्रीयं । सिंघ कैरी । कवि । अनंद: ॥

३३ पाठान्तर:—वीर । हक । वरज्जि । निभर ज्योति निधरयं । ज्योति । निवरी । लीयों लीयो । दवट्टिय । धुरि । भवनं । भगिय । सबद । हुकार । जोग । तैं । थपि । थापि । उथपि. लोक । लिषि अपिल पैल पैलन पुलन । पिल अपिल पेल नषचन कहरु ॥

३४ पाठान्तर:—लीयंत । वदत । वैद । वारसं अरुनं । तेज । उगयं । भरकि । दैव । भगयं । उंडलै । हिरंन्यकस्य । हिरन्नकस्य । पंडलै । वुदंतं । कटि । कट्ठि । त्रुम्मरं । टूंमरं । उछंत । मुछ । धूमरं । धुंमरं । धुमर । ललिंत । ललित । लट । लै । कु । पट्टाकि पद पिलरो । पटाकि । पट ।

दटाक वज्जि दोटयं। कला अनेककोटयं॥ नषं बिदारि नष्षयं। भराकि भंजि भष्षयं॥ १७९॥
उरत्त माल अंतयं। भगे भगत्त श्रंतयं। नराधिपन्न देवता। न नागयं न सेवता॥
छं० ॥ १८० ॥ रू० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ मुनिवर नरहर कथ्थ सुनि। भए सकल मन पंग॥
कौंन समै नरहर असुर। जुटे जुद्ध जोधंग॥ छं० ॥ १८१ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

॥ वेली भुजंग * ॥

* * चरन्नं सरन्नं सु मित्रं। प्रभा सूर सेवं सु पावं पवित्रं॥
तिहूं लोक कौ सोक मेटन्न काजं। धस्यौ रूप अत्युग्र अद्भुत्त राजं॥ १८२ ॥
तिनं तेज तं त्रास (अति)* आसूर जारे। सुतौ अर्भ भे गर्भ प्रद्दीय डारे॥
महा मुद्दितं (अति)* तेज तिं रत्त नैनं। प्रलैकाल (रवि)* कोटी प्रगट्टंत गैनं॥ १८३॥
करं कंपितं चंपितं सेस सीसं। गजं गर्जितं तर्ज्जितं ब्रह्म ईसं॥
डिगे षंभ ब्रह्मंड दिग्पाल हल्ली। धरा चन्न भारंतु लाजे मतुल्ली॥ १८४ ॥
दूसौ देष रूपं असूरेस धायौ। ग्रहे षग्गता बीरसों षेत आयौ॥
उठ्यौ सज्जि आवद्ध सन्मुष्ष वर्त्ते। मनों मत्त द्वै जुद्ध तथ्थैं निवृत्ते॥ १८५ ॥
गह्यौ धाइ दानं भुजं बीच गाढौ। न जुट्यौ विकुट्यौ भयौ दूरि ठाढौ॥
दिषै इंद ब्रह्मा भयौ त्रास हीयं। गयौ हाथ तैं तथ्थ आचिज्ज कीयं॥ १८६ ॥

षटाकि। वजि किलरी कल्लरी। दडाक। दटाकि। वजि। दौटयं। अनैक। कौटयं। नष। नष्यं। भजि। भष्यं। अरंत्त। आरत्त। आतयं। भगै। भगंत्त। भ्रतयं। नराधियंत। दैवता। सैवता। मनागयं न सेवता॥

३५ पठान्तरः—सुनि। नरहर। कथन। भयं। मुनि। कोंन। कौन। समे। जुदै। जोधयं॥

३६ पाठान्तरः—चरन। वरन। सरनं। सुमित्र। प्रना। सैव। पावन। लौक। सौक। शोकं। मेटंन। मेटन। प्रति उंग्र। अदभूत। अदभुत्त। अद्भुत। राज। विराजं। तिन्। तैज। तन * अधिक पाठ है। असुर। असूर। जार। सुतो। अरभ। भयं। भयं। गरभ। अति दीप भारै। अति दिए डार। मुदित। * अधिक पाठ है। तैज। तिन। नेंनं। प्रले। * अधिक पाठ है। कोट। कोटि। कौट। प्रगटेत। प्रगटंत। प्रगटंत। गेगैनं। कर। कपितं। कंपित। चपितं। सैस। सीस। गय। गय। गरजितं। तरजित। ब्रह्म। ईस। डिगैं। षंड। ब्रहमंड। बृहमंड। दिगपाल। हली। चरन। लाजै। मतुली। दषतें। दैप सरु रूप। रूप। असुरेस। असुरैस। गृहे। ग्रहै। बीर। सो। षैतं। सजि। आउद्ध। सनमुष। प्रवृत्ते। वरतं। मनो। मनौं। भत। द्वय। दुय। तथै। तथैं। तथे। निवृते। गृहभो। ग्रहभो। धाय। दांनव। दानव। भुज। बीच। बीचि। न जुग्रा। दूर। दिषे। ब्रम्हा। भयो। त्रांस। हथ। ते। तें। तथ। आर्वारजं। अचि-

भयौ जुद्ध तिं वेर तासों अपारं । कहा बर्नियै सेष पावै न पारं ॥
दवट्यौ झवट्यौ उक्कास्यौ पछास्यौ । हुती जुद्ध की आस तातें न मास्यौ ॥ १८७ ॥
तवै कोपिकै दुष्ट उक्कंग लीनौ । हिदै फारि तत्काल सो डारि दीनौ ॥
गरज्यौ गुँजास्यौ अरी चंपि ऐसें । कहा ब्रन्नि कौं रूप तिं वेर तैसें ॥ १८८ ॥
रही दंत बिच्चंत सोहंत सारं । मनों मेरु गिरश्रृंग तैं गंग धारं ॥
सुभै सीस पै मुच्छ कौ झौंर ऐसें । महाराज सीसं ढुरै चौंर जैसें ॥ १८९ ॥
ज्वलित् पावकं तेज लोचंन भारी । सकैं दिष्ट को देव दानं सहारी ॥
तप्यौ हेम ज्यों देह की क्रांति सोहै । सुजोती रवी कोटि दिव्यंत मोहै ॥ १९० ॥
तिनं तेज ज्वाला जरे दुष्ट तेतं । रहे संत सरनं लहै पुष्ट हेतं ॥
हुतौ दुष्ट दानं अमानं सु हत्यौ । सुतौ मृत्यु तत्काल सुर् पुर् पहुत्यौ ॥ १९१ ॥
भई जैत जै सद्द सुर सर्व हर्षे । सिरं देव नर्सिंघ पै पुप्फु वर्षे ॥
अये देव अस्तूति के काज सोई । महा रूप कौ भेद पावै न कोई ॥ १९२ ॥
सवै सोचि आलौ चिहारे निहारे । जिनं दिष्ट पल्लेक कोई सहारे ॥
फुरै वाच काहू न भै भीत सथ्थैं । कह्यौ जाइ कैं श्रीय देवं सुतथ्थैं ॥ १९३ ॥
तवै लच्छमी आप सोचे विचास्यौ । दूसौ रूप गोविन्द कवहू न धास्यौ ॥
दूतो तेज जाजुल्य कवहू न देष्यौ । प्रलै पावकं जोति ताथें विसेष्यौ ॥ १९४ ॥

रज । अविरज्ज । युद्ध । तन । तिन । बैर । तासो । कहां । बरणीये । बरनीये । बर्निये । सेस । सेस । दपट्यो । झपट्यो । हुंती । हनी । युद्ध । ताथैं । तातें । तवें । कोंपिक । कोपिकें । उछंग । रिदै । तत्तकाल । सैां । दीनैं । गरज्यो । गरज्यों । गुजास्यो । गुंजास्यो । चपि । ऐसे । ऐसे । वरनि । बरंनि । कहुं । कहूं । तिन । वैरि । बेर तैसे । तैंसे । दंति । दंतं । विच । विवि । बिचि । अंत । सैाभंन । सोंहंत । सोभंत मनो । मैर । मेर । गिरि । गिर । श्रंग । ते । तें । तै । पर । पुछ । मुछ । को । डोंर । ऐसे । सीस । ढुरे । ढुरि । चैार । चोंर । जोसे । जैसे । जुलित । ज्वलित । पावक । तेज । लोचन । लोचन । सकै । दिष्टि । कौ । दैव । दांनव । संहारी । हैम । ज्यो । देह । क्रांति । महा जोति रवि । जोति । क्योटि । मोहै । जो है । तेज । जरै । रहै । संस । सरन । लहे । हेतं । हुंतो । दानव । अमांनं । हत्यो । सुतो । मृत्य । तकाल । तत्तकाल । सुर । पुर । पुहत्यो । पहुतो । सद । सर्व्वे । सरन । हरषैः । सिर । दैव । नरसिंघ । रनसिंह । पर । फल पुफ । पुष्प । बरषै । बरपे । अए । आय । आए । दैव । अस्तुति । कै । सोई । को । भैद । पावे । कोई सबैं । सोचि । आलो । विहारै । निहारै । जिन । पल एक । कोइन । कोइ । संहारै । संहारे । काहूं । भय । सथे । सथ्थें । सथै । जाय कर । करि । देवे । दैव । तथ्थे । त्तथे । लछिमी । सोचे दूसो । रूप । गोविद । कबहून । कबहुन । दूसो । तेज । कबहूंन । देष्यो । दिष्यो । जोति ।

धरे रूप जेते तिते सर्व जानों। लगै वार कहते न ताथें वषांनों॥
अबै आइ प्रह्लाद जो होइ ठाढौ। जिनं हेत कीनों इसौ रूप गाढौ॥ १९५॥
इहै बत्त ब्रंह्मादि के चित्त आई। सुतौ जाइ प्रह्लाद कों कै सुनाई॥
छं०॥ १९६॥ रू०॥ ३६॥

दूहा॥ सुनत वचन प्रहलाद गय। श्री नरसिँह के पास॥
स्तुति जुति सों ठाढौ रह्यौ। फुल्यौ नहीं कछु सास॥ छं०॥ १९७॥ रू०॥ ३७॥
सीस नाइ कर जोरि तब। रह्यौ सनंमुख चाहि॥
क्रिपा दृष्टि देख्यौ हरी। भगत वछ्ल प्रभु आहि॥ छं०॥ १९८॥ रू०॥ ३८॥

॥ वेली भुजंग॥

क्रिपा दिष्ठ दिष्यौ सु ठट्टौ निनारौ। सु तौ प्रान कै प्रान तें अत्ति प्यारौ॥
लयौ लाइ छाती धस्यौ जंघ दोसं। दियौ हथ्थ मथ्थं कियौ दूरि दोसं॥ १९९॥
चुम्यौ मुष्ष नैनं प्रहल्लाद केरौ। जरा मृत्यु भै दूर दोसं न नेरौ॥
भई बुधि न्निंमल महा सुद्ध बानी। तवै अस्तुतं कन्न प्रंल्हाद ठानी॥ २००॥

ताथै। विशेष्यो। विसिष्यौ। धरै। जैते। तिते तंते। सरव। सर्व्वे। जानै। जांनैं। लगें। वार। कहते। कहतें। ताथै। बषानु। वषानैं। अबैं। आस। आई। आय। प्रहलाद। जौ। होई। टढौ। ठंढौ। तिनं। हेन। कीनौ। गढौ। इहि। इहैं। वत। चित। कै। सुढौ। जाय। प्रहलाद। कौ। कुं। कहिं। ककहि। कह॥ * * इस रूपक की पहिली पंक्ति के खाली स्थान में हमारे पास की सब पुस्तकों में–"वंदे वरुन हारे"– यह अशुद्ध पाठ है। इस को शोधने को कोई प्रामाणिक आधार हम को अभी नहीं मिला और यही दशा अंत की पंक्ति, की भी है अतएव वह खाली प्रकाश कर दियी गई हैं कि विद्वान लोग विचार कर पाठ को निश्चय करैं। हमारी सम्मति में तो इन का पाठ हमारे पास की पुस्तकों से भी पुरानी पुस्तकों के मिलने पर ठीक २ शुधना संभवित है। इस की अंत की तुक भर का पाठ बूंदीवाली पुस्तक में–"सुनत प्रहलाद इह बात चल्यौ। रहे पछ ब्रह्मादि निज गौ इकलै";–सं० १७७० वाली में–"सुनिन हत्ति प्रहलाद इह बात चल्यौ॥ दहे पछ ब्रह्मादि निज गौ इकलौ";–सं० १८५९ वाली में–"सुनत हेत प्रहल्हाद इहै बात चल्ल्यौ॥ रहे पछ ब्रह्मादि निज गौ इकल्ल्यौ";–और सं० १६४५ वाली में इस का पाठ संवत् १७७० के सदृश ही है॥

३७–३८ पाठान्तर:–दौहा। सनत।। प्रदलद गौ। श्रीनंसिंघ। श्रीनृसिंह। कै। युत। सैं। ठढौ। ठाढौ। फुंस्यौं कुस्यौ॥ शीश। नांइ। जौरि। सनमुख। चाहिं। क्रियादिष्ट। क्रियादृष्ट। कियाद्रिष्टि। दिष्यौ। संही॥

३९ पाठान्तर:–छंद भुजंगी प्रयात्। द्रष्टि। दृष्टि। ढठो। ठढौ। ठट्ठो। प्रांन। कै। प्रान तै। अति। पियारो। लाय। कोसं। यमथं। सथं। मन्थं। कीयौ। दोसं। चुंम्यो। चुम्यो। मुष। नेंनं। नैंनं। प्रहलाद। केरो। मृत्य। दूरि। दोस। होसं। नेरो बूंदीवाली में–भंय भइ बुधि निमल उन्नु ही अ। आय बोल महा सुद्ध बानी– निर्मल। बांनी। तबें। अस्तुंतं। अस्तुति।

अहो देव देवेस देवाधि देवं। तुही अलप अप्पार पावै न भेवं॥
अभेदं अछेवं तुही सर्ब वेदं। तुही सर्ब विद्या विनोदं सुभेदं॥ २०१॥
तुही ग्यान विग्यान सोग्यान कर्त्ता। तुही बुद्धि कर्त्ता तुही बुद्धि हर्त्ता॥
तुही धरनि आकास है पौन पानी। तुहीं सर्ब में एक अनेक वानी॥ २०२॥
तुही जोति संसार सारं सरूपं। तुही अघकालं अकालं अरूपं॥
तुही कोटि सूरज्ज सें तेज साजै। तुही चंद्रमा कोटि सीतं विराजै॥ २०३॥
तुही कोटि ब्रह्मा महादेव जेते। तुही कोटि कंदर्प लावण्य तेते॥
तुही हेत संतोष आनंद कारी। तुही सोक संताप सर्वं प्रहारी॥ २०४॥
तुही जोग जोगेस जोगी सु भोगी। तुही भेद अभ्भेद संदेस सोगी॥
तुही मानवं देव दानं सिधानं। तुही कोटि ब्रह्मादि अंतरसमानं॥ २०५॥
जिती थावरं जंगमं पांन चार्यौ। तिनी आप ही आप तें भेद धार्यौ॥
करे जे गुसांई अगें रूप तेते। कहै ब्रन्नि को देव रिष नाग जेते॥ २०६॥
कियौ मच्छ औतार पैल्लै अनूपं। गयौ वेद लै दैत्य सागर अलूपं॥
हते स्वामि संषासुरं वेद लीने। सुतौ आनि ततकाल ब्रह्मादि दीने॥ २०७॥
महापिष्ठ के धार धारी धरत्ती। करी न्त्रंमलं कस्यपं रूप कत्ती॥
वली वामनं पावनं कित्ति राजै। पगं नष्प अग्रं सु गंगा विराजै॥ २०८॥
सवै षंडि षिची सुतौ विप्र तासं। महापुण्य समकर सकै फरसरामं॥
श्रियं राम रघ्वीर लीनौ वतारं। कियौ रावनं कुंभ कर्नं सहारं॥ २०९॥

अस्तुतिं करन। प्रहलाद। टांनी। अहो। दैव। दैवम। दैवाधि दैवं। तुहीं। अलप। अपार। पावे। भैवं। अछेद। अभैदं। सरव। वैदं। तुहीं। सरव। वीद्या। विनैाद। सु भैदं। तुंहीं। ग्यांन। व्रिग्यांन। सैाग्यांन। करता। तुहीं। करता। तुहीं। वुधि। हरता। तुंहीं। हैं। पोंन। पांनी। तुहीं। सरव। मै। ए। अनैक। वांनी। तुंही। जैाति। ज्योति। तोही तुहीं। अघ-कालं। तुहीं। तोहो कोटि। सुरज। सूरज। मै। तेज। तोही। तुंहीं। कोटि। सीतल। तुंही। तोंही। कोटि। ब्रह्मा। महादैव। जैतं। तुहीं। तोही। कोटि। कंदरप। लावन्य। तैते। तोही। शंतोप। तोहो। तुहीं। सैाक। शोक। सरवे। तोही। जैाग। जैागेसं। भैागीसं। छैागी। तुहीं। तोहो। भैद। अभैद। संदैस। रोगी। तोहीं। तुंहीं। दैव। दानव। तोही। तुंही। कोट्टि। व्रह्मादी। अंतर। समानं। जिनी। पांनि। च्यारैा। च्यारैं। तिनी। आपतै आप हों। भैद। धास्यों। करै। जै। अगै। तै तै। कहैं। वरानै। को। रिषि। रिष। जै तै। कीयो। मछ। अवतार। पहिलै। अनुपं। जे। दैत्यं। सागर। अलुपं। हनै। स्वामि। शंपासुरं। वैद। लीनै। सुतै। सुतो। ततकाल। दीनै। महापिष्ट। कै। भार। धरनी। धरंती। नृमली। रूपकंती। रूपकती। वल्यं। वलिं। वामनं। किति। नष। सुरंग। सुरंगं। सबै। षंड। षिभी। महांपुन्य। सम। करि सकै। पर्शरामं। फरसरामं। श्रीय। श्रीयं रांम रघुवीर। अवतारं। कियैां। कियो।

वसुद्देव ग्रेहं गह्यो कृष्ण वासं। हते दुष्ट सर्वं कियौ कंस नासं॥
करे जग्य लीयं धरा ध्रंम सुद्धं। प्रगट्यौ कली काल अवतार बुद्धं॥ २१०॥
जुगं अंत सो सत्ति ह्वै है कलंकी। इहै बात सांची सदा देव अंकी॥
जिते सैल सुर्हेति सुर्पत्ति कीने। तिते सेस गन्नेस जात्रै न चीने॥ २११॥
सबै दुष्ट भंजे सु सेवक्क उगारे। करे काम निज धाम नरहर पधारै॥
छं०॥ २१२॥ रू०॥ ३९॥

कवित्त॥ पद्धारे निज धाम। काम सुर सेव किए सब॥
जुग जुग सब जन हेत। लिए अवतार तबहि तब॥
निकसे थंभ विदारि। हने हिरनंकुस दानव॥
प्रह्लाद उद्धार। कियौ पूरन पद जाह्नव॥
श्री न्रसिंघदेव समरंत जन। कलि कलंक दुष्षन हरन॥
बलिरूप सरूप अनूप किय। श्रीन्रसिंघ तेरे सरन॥ छं०॥ २१३॥ रू०॥ ४०॥

॥ वामनावतार की कथा॥

दूहा॥ बहुत काल हरि सुष कियौ। सम देवादिक रिष्य॥
पाछै बलि प्रगट्यौ बली। किये सत्त जिन मष्य॥ छं०॥ २१४॥ रू०॥ ४१॥
तब इंद्रासन डग मग्यौ। जेम तुलाकी डंड॥
सुर सुरपति आकंपि भय। जाहि कहां हम छंड॥ छं०॥ २१५॥ रू०॥ ४२॥
जाइ जगाए श्रीपती। बलि आसुर अनपार॥
तब सु पधारे नरहरी। धरि वामन अवतार॥ छं०॥ २१६॥ रू०॥ ४३॥

गवन। कुभंकरण। सहार। संहारं। वसुद्देव। वसुदेव। गेह। गेहं। ग्रह्यो। यह्यो। कृष्णावासं। हते। सरव। कीयौ। कंश। करै। ध्रम। बुद्धिं। बुधं। जुग। सो। सति। वै है। व्है हे। यहै। यहैं। साची। देव। जितं। जिते। शैलसुर। सुलसुर। है त। हे त। सुरपति। कीनै। तिते। सैसं। गंनेस। जात्रे। चिन्है। चीन्हे। दुष्टं। भंजै। सेवक्र। उधारै। करै कांम। धांम। पधारै॥

४० पाठान्तर:–पधारे। पधारै। धांम। कांम। सैव। कीए। युग। युग। हैत। लीए। बहि तब। निकसै। हनै। हिरणंक्रिस। प्रहलादे। प्रहलादैं। उधारि। कीयौ। बूंदीवाली में–नरहंसूदेव–सं० १७७० में–नरहसु देख–दुषन। रुप। सरू। अनुप। श्रीन्रसिंघ। तैर। शरन॥

४१–४३ पाठान्तर:–बहत। सुषि। कीयौ। सम। ऋषि। रिषि। पाछे। पाछैं। बली बल। बूंदीवाली में–वरि कीए सित जित जिमन मख–कीए। सित। मष॥ ४१॥ इद्रासन। जैन। आकंप। जाहि। छंडि॥ ४२॥ जाय। पधारै। नरहीरी॥ ४३॥

कवित्त ॥ सवा लाष वर विप्र । दियौ इक इक प्रति दानं ॥
दुरद अयुत रथ अयुत । एक हज्जार के कानं ॥
दासि दास दुय सहस । चरचि आभूषण अंवर ॥
साठि सहस मन कनक । अवर बहु भंति अडंवर ॥
अैसै कि जग्य पूरन्न करि । निंनानू बलि राय जब ॥
वामन सरूप धरि चंद कहि । अप पधारि गोविंद तव ॥ छं० ॥ २१७ ॥ रू० ॥ ४४ ॥ *

दूहा ॥ बलि लग्गौ जुध इन्द्र सम । सुर आसुर मन षेध ॥
साहस संकर विष्णु वर । षेद समव्वर वेध ॥ छं० ॥ २१८ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

॥ गीता मालची † ॥

लग्गेति षेधं वानवेधं, इंद्र वज्रं सज्जयं । कुहंत तारं नंषि भारं, काम कामं कज्जयं ॥
धमकंत धारं वार पारं, मार मारं मुष्पए । संधेति वानं कर कमानं, कान तानं नष्पए ॥ २१९ ॥
विकसंत व्योमं सट्टि गोमं, भिरे भोमं धुज्जए । देवकी नंदं अरिनिकंदं, चले गंजन रज्जए ॥
वलिराइ वढ्ढिय देव दढ्ढिय, इंद्र कढ्ढिय आसुरे । मिलि तथ्य सथ्यं लथ्य वथ्यं पारि रथ्यं पासुरे ॥ २२० ॥
देवता मारे घन संघारे, हार भारे वलि जुरं । डक्कंत डक्कं पारि धक्कं, हारि थक्कं चैपुरं ॥
कुहंत पट्टं वान कुट्टं, तीन षुट्टं चच्चलं । वलिराय जग्गं मान मग्गं, भिरे भग्गं अच्चलं ॥ २२१ ॥

---

४४ पाठान्तरः—दानं । दोय । वांमन । धारिं ॥

* यह रूपक हमारे पास की पुस्तकों में से सं० १६४१ और सं० १७८० और बूंदीवाली में नहीं है किन्तु सं० १८५९ की लिखी हुई में है ॥

४५ पाठान्तरः—लगौ । जुद्ध । आसूर । मनि । पैध । विष्णु । पैध । समर । वैध । समवर ॥

† इस रूपक के छंद के निर्णय को सहज में यों समझ लेना चाहिये कि जिस को इन दिनों हरिगीत छंद कहते हैं, वह यह है। उसके नामान्तर इस महाकाव्य के पाठान्तरों से विदित ही हैं तथापि The Revd. Joseph Van. S. Taylor B. A. साहब ने इस को गीय नाम से लिखा है । इस के चार चरण होते हैं, उनमें से प्रत्येक चरण में दो यति १६+१२ और २८ मात्रा होती हैं, जिन में ९+७+१२ पर विश्राम और ८ ताल होते हैं ॥

४६ पाठान्तरः—गीता । मालती धुर्य्यः । छंद गीतामालती । छंद माधुर्य्यः । छंद गीत मालती । लगेत । लगेत्त । पैदं । पंध । वांन । वांन । वैधं । इद्रवज्ज । सझयं । कुटंत । तार । भार । कांम । काम । धार । वारं । पार । मुषए । सधे । वांनं । नषरा । विहसंत । व्यौम । सठि । गौम । भिरै । भौमं । देवकीनंद । चले । रजए । बलिराय । बढिय । कढिय । दैव । दढिय । आसुरे । मिलितथ सथं लथवथं पारि रथं पासुरे । देवता । मारै । संघारै । भारे । युरं । जुर । डक्कहक्कंतडक्कं पारि धक्कंहारि थक तैपरं । थ्यक्कं । कुटनें पट्टं तीनषुटं बांन कुट्टं चवलं । कुटंत पट्टं तीन षुट्टं बान कुट्टं चलं । बलिराय जंग मांन भंग भिरैमरां अचलं । बलिराय जगं भिरे मगं अंचलं । चौसठि । जैागं ।

चौसट्ठि जोगं करे सोगं, देव सोगं दष्षए। रुडुंत भुंडं मुंडि सुंडं, हार लंडं रष्षए॥
लग्गंत वानं भान छानं, इंद्रढानं वाहए। भूमी भजानं गरि गुमानं, राह भानं दाहए॥२२२॥
बलिराइ अग्गै भूमि मग्गै, भूमि षग्गै पारनं। वरदान रहे वेद पढे, काल कहे कारनं॥
वामनं रूपं धारि भूपं, ऐस नूपं इल मभ्भं। हुंकार सद्दं कियं नद्दं, वेद वद्दं संमभ्भं॥२२३॥
धोमंत लग्गं चेवदग्गं, कियं जग्गं कारनं। दिसि दिसिन दौरं कियं सोरं पौरि पौरं धारनं॥
नषसिष्षभोरंकाथ्थथोरं, कालकोरंकलकरी। आहुट्टपेंडंभोमषंडं छोरिछंडंडरवरी॥२२४॥
बलि दौरिआयोइंद्रभायौ, वेदगायोवच्छयं। मुहमंगिदानंतियपुरानं, मंडिभानंलच्छयं॥
बाजिचवायंदेवगायं, बलिसुरायंदिठ्ठयं। आहुट्ट पग्गं दीनमग्गं, भीरभग्गंसिठ्ठयं॥२२५॥
नाषंत बानं गंग तानं, राह भानं रुक्कयं। चालंत धारं सुक्कसारं, रुक्क धारं सुक्कयं॥
ढेलंतझारीबारपारी, चष्षचारीमझ्झयं। बलिराइअग्गंभूमिमग्गं, बलसुजग्गंभज्जयं॥२२६॥
पाताल पग्गं दान स्रग्गं, सीस स्वग्गं सज्जयं। भरि पाउभारं धरनधारं, पगउभारं मग्गयं॥
असुरान भज्जं बलिय गज्जं, पीठ सज्जं अग्गयं। चंपंत पीठं दाझदीठं, दैतरूठंतारयं॥२२७॥
*बंधांन बद्धं वरष अद्धं, देव किद्धं सारयं। धर पिट्ठ नट्ठं मारि सुट्ठं, स्वग्ग दिट्ठं पारयं॥
रहिअट्ठपष्षंसषिलष्षं, धाररष्षंध रयं। चंप्यौपयानंनचींकालं, राज भालं भालयं॥२२८॥
तुट्ठं सुनाथं रष्षिनाथं, स्वब्ब साथं पालयं। असुरान भग्गं षेलषग्गं, इंद्र स्वग्गं वासयं॥
वामन्न रूपं कला अनुपं, बलिय कूपं चासयं॥ छं०॥ २२९॥ रू०॥ ४६॥

करे। भोग। दैव। सोग। दषए। रुंडंत। भुडं। मुडि। सुडि। सुडं। रूड। रपए। लगंत। बांन। भांन। छांनं। द्रढानं। वाहए। गुमान। भान। दाह। दाहये। बालिराय। आगै। अयें। भुमि। मृगैं। मयें। भुमि। षगैं। षग्गैं। गारनं। दरवांन। रटै। वेद। पढै। काल कटे। वामना। रूप। नुपं। इलमझं। हुंकारणादं। शद्दं। कीयं। कीय। सदं। नदं। वेद। वद। वदं। मसमझं। धोमंत। लगं। जेवदगं। जेवदग। कीय। जगं। षगं। कारणं। दौर। कीयं। सोरं। सिष। भोरं। कथि। थोर। काल कोरं। आहुंठ। प्राहुठ। पिंड। भोम। षंड। छोरि। छंड। परवरी। वलिदौरि आयौ इद्र भयै। वछयं तिय। पुरांन। मझि। लछयं। वयं। दिठयं। आहुंठ। आहुठ। पेंडं। मंग। भगं। सट्ठयं। नाषंत ताल। गंगबानं। भांनं। रुकयं। रूकयं। बलंत। सुकतारं। शुक्कषारं। रुक। मुकयं। ठेलंन। चष। मझयं। वलिराय। अंग। भुमि। मंग। मगं। वलि। जिगं। जगं। भजयं। पगं। दांन। मगं। अग अृगं। सजयं। धरनं। मंगयं। असु राण। भजं। बलीय। गंज्जं। गजं। पीर। सजं। अगयं। अृगयं। चपंतं। दाव। दाड। रूपठं। रुठं। पारयं। * यह तुक स० १८५९ की लिखी पुस्तक में तो है अन्य किसी में नहीं है। आछे। पष। संषिन। सष्षं। रपं। चप्यौ। पयालं। नही। नहींय। तुसं। सनाथं। रषि। अव। भगं भंग। षंगं। षगं। अग अृगं। वामनं। रूप। नुपं। नूपं अनूपं। वलीय॥

साटक ॥ नारद्दं कद्दि जाय विष्णु पुरयं, स्यामं कले वायकं ।
जग्यं फल्ल उतपन्न दीन वर्यं पाताल ह्नरनं सदा ॥
वंभावल्लि वल्लि चीय पास लष्मी, पारष्षिआने हरी ।
चौकी वंधि चौमास पास सरितं, पद्मारनं सत्तलं ॥ छं० ॥ २३० ॥ रू० ॥ ४७ ॥ *

॥ परशुरामावतार की कथा ॥

दूहा ॥ षिति षिची अति प्रवल हुअ, महामत्त असरार ॥
ताहि हनन विति दुज दियन, परसराम अवतार ॥ छं० ॥ २३१ ॥ रू० ॥ ४८ ॥
दुय पुच्छिय राजन सुपति, व्याही षिची दान ॥
जमदग्गिनह रिषरेनिका परिनठ्ठिय अरि पान ॥ छं० ॥ २३२ ॥ रू० ॥ ४९ ॥

कवित्त ॥ अनुकंपा अुत सुवर । दिद्ध षिचीय अरज्जन ॥
रेनुक रिष जमदग्न । षिचि सहसार्जुन षप्पन ॥
सहस भुजा सिर टूक्क । सरित मन हथ्थ सुवाहै ॥
नव षंडन उग्रहै । लोग सहसं तन दाहै ॥
जमदगनि सुतन दुज धर दियन । फरसराम अवतार धर ॥
षिचियन मारि ढंढ्ह वरिय । करी टूक भ्रज सहस कर ॥
छं० ॥ २३३ ॥ रू० ॥ ५० ॥

छंद भुजंगी ॥ पुची दोइ राजं सुराजं विचारी । इकं रूप सारं बियं चत्रुनारी ॥
दई सैस भुज्जं अनुक्कंप ताहं । बियं जम्मदग्गं सुरेनक्क व्याहं ॥ २३४ ॥

---

४७ पाठान्तर :—वरयं । लषिमी ॥

* यह रूप हमारे पास की सं० १८५९ की लिखी पुस्तक के सिवाय और किसी में नहीं है ॥

४८—४९ पाठान्तर :—छिति । प्रवलं । हुअं । हुय । हुवं । महामत । हनन । छिति । परसरांम । परसिराम ॥ ४८ ॥ दोय पुत्रि । पुत्री । पत्री । दांन । जमदग्गनह । रेणका । परिनहिय । परनठय । अरिपांन ॥

५० पाठान्तर :—अनुंकंपा । सबर । षित्रि । षित्री । अरयुन । अरजुन । रैनक । रेणुक । यमदग्न । षित्री । सहस्रार्जुन । सहसारजुन । षपन । टूक । हथ । सुवाहे । लौग । नन । यमदगनि । जिमदगनि । दीयन । फरसरांम । अवतारि । धरि । करि । टुक । अजसकर ॥

५१ पाठान्तर :—दोई । दोइ । राज । सु राज । इक । सरसं । बीयं । चत्रुरनारी । चतुरनारी । दइ । सहस । भुजं । सु अनुकंप । सु अनंकंप । बीयं । जमदग्गं । सुरेनक । सुरैनक ।

अहं बंधिरन् मझ्झ रेनक्क राषै । मनं मझ्झ विम्रं मरिष्षं सु दाषै ॥
तनं जानि त्रैलोक आरुन्न बढ्ढी । भरे अंव वस्त्रं रिषं पास ठढ्ढी ॥ २३५ ॥
ब्रषं अट्ठदस्सं बनव्वास रह्यं । करुन्ना मुषं मझ्झ षचीन कह्यं ॥
गई तट्ट सम्मुद्द सथ्थें सु भट्टं । सथं अनु कंपं असुरान थट्टं ॥ २३६ ॥
धरनीं चक्कड्डोल अस्मान चल्ली । मिलै सथ्थ सुथान धर्थान हल्ली ॥
गहरं दुरंदान भद्रान मद्दी । भिली सादूरं जानि निव्वान नद्दी ॥ २३७ ॥
पुरं तीन दर्दीन मग्गं अमग्गं । नहीनं चिहूं लोग तिन् सम्म षग्गं ॥
छं० ॥ २३८ ॥ रू० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ सत षोहनि पानन सहस । रत हथ्थी सत लष्ष ॥
धवल दुरद सत लष्ष भर । सत लष अस्सित् पष्ष ॥ छं० ॥ २३९ ॥ रू० ॥ ५२ ॥
मनहु क्रूर षिची मरद । पन अप्पन प्रति पार ॥
मनहु सूर ससि डरन डर । भर षिची भर भार ॥ छं० ॥ २४० ॥ रू० ॥ ५३ ॥
पुज्जि आव षिचीन रन । उप्पन्नो रिषि राज ॥
फरसी दीनी विष्णु पुर । कलि ब्रह्म स्तुति काज ॥ छं० ॥ २४१ ॥ रू० ॥ ५४ ॥

भुजंगी ॥ चली अनुकंपं सथं सिषन् सिष्षं । धरीयं मनं मझ्झ पत्ती सुरुष्षं ॥
भरी नेह अंबं तिनं वस्त्र भारी । डरी मन्न मझ्झा ग्रहं द्रष्ष नारी ॥ २४२ ॥
अई हथ्थ जोरी मुहं मोरि कह्यं । भरी नेह नीरं मनं पीर रह्यं ॥

थिहं । बधि । रिन । मझ । रेनक । रैनक । मझ । मरियं । जांनि । त्रयलोक । अरुनक । अरुनंत । बढी । भरे । अंवं । ठठढी । वरष । बरष । बरषं । अठदस । वनवास । रहि । रहियं । करुनं । सुषं । मझ । षित्रीन । कहीयं । कहियं । जाई । जाइ । तट । समुद्द । समुद्र । सथै । सथं । सथ्थै । सथ । अनुकंप । अनुकप । असुरान । असुरांन । धरनिं । धरनी । धरंनी । चक्रडोल । चक्र-डोल । असमान । वली । मिलै । सथ । सुरथांन । धरथांन । हली । गहर । गहंर । दुर दांन । मदी । भिलै । सायरं । जांविनिनिवाननदी । जांनि । निवान । नदी । पुर । दरदीन । मग । मगं । अमगं । अमंग । नहिन । नहिन् । नहिनं । त्रहुं । लोग । तिन । समन । षंग । षगं ॥

५२–५४ पाठान्तर:—सत्त । षोहुनि । षोहनी । पांनन । हथी । सित । लष । सित । लष । सित । हसत । हसित । परव । परद । परष ॥ ५२ ॥ मनहुं । अपन । मनहुं । सुर । शशि । षित्री ॥ ५३ ॥ पुजि । पूजि । उपंनौं । ब्रह्मास्तुति ॥ ५४ ॥

५५ पाठान्तर:—भुजंगप्रयात । चलिय । अनुकंप । सथ सिषन । सिषं । धरीय । धरिय । मन । मझ । यत्री सरूपं । सरूपं । भरीय । नह । अंव । अबं । तिन । डरपी । भरिय । डरिय । डरपि । मन । मझ । मझ्झ । यह । द्रषि । द्रष । आइ । हथ । कर । जोर । जोरि । मुह । मोरि । कहियं । कहीयं । भरिय । भरीय । नह । नीर । मन । रहिय । रहियं । रहीयं । रिषि । रष्षि । मन ।

रिषी मन्न मैहल्ल भोजन्न कज्जी। किधे दस्स ब्रष्षं सु आगंम सज्जी ॥ २४३ ॥
अए रिष्षि थानं सु डेरा दिवानं। जनौं चंद्रि नभ्भं प्रगट्टीय थानं ॥
दुसंकन्न झुंडं कियं झुंड झुंडं। जु सोभीय षंभं दूभं दूष्ष सुंडं ॥ २४४ ॥
दई वंब नीसान वौ वज्जि भेरी। मनों इंद्र इंद्रासनं धुज्जि हेरी ॥
स्मरीयं रिषं धेन कैलास थानं। किधों विट्टियं गज्ज गाहं सुनानं ॥ २४५ ॥
जु आतिथ्य आकर्षनं धेन आई। सुरं आसुरं नाग मझ्झै कि भाई ॥
तवै आनि तुट्टी मझ्झै थान थायं। जिहंनं जु जो भाव भोइन्न भायं ॥ २४६ ॥
तवै षोदनी अट्ठ भोयन्न भष्षी। कहां पाक सासंन आतंक दिष्षी ॥
तुरत्तं भगंनीन चिंता चितानी। इतं पुज्जिवै कौन अंनं रु पानी ॥ २४७ ॥
दिषीयं अनूकंप धेनं सु दुझ्झी। कही राज अग्गै सु भोजंन गुझ्झी ॥
मुषं दैत वंकं सुरं संक साझ्झै। दिषं नैन ते चित्त गातन्न दाझ्झै ॥ २४८ ॥
करौ कंक अनूसंक लै चल्ल वच्छी। किधों दौरि षिची सुरं धेन गच्छी ॥
परे रुंड मुंडं सुरं सब्ब मारे। जितैं लात मारे तितै सत्र तारे ॥ २४९ ॥
तिनं लोम लोमं प्रगट्टी दहानं। मुषं मुग्गलं पुक्क पक्कार भानं ॥
षुरं षुप्परं रासि भं सिंग सिद्धं। लगे लेष आए तिनं मुत्ति लिद्धं ॥ २५० ॥
कियं पुच ता माय धेनं दहानं। सुने बान षिची धरे पिट्ट पानं ॥

महल। महल्ल। भोजन। भैाजंन। कजी। किट्टि। किट्ठ। किध। दस। बरष। आगम। आंगंम। सजो। आई। आए। रिषि। रषि। थांनं। डेरा। जनूं। जनैा। चदरं। बद्दूरं। नभ। नभ्भ। प्रगटीय। दुत्यं कनक। दुसंकन। दुत्य कनक। झुंड। किता। जनु। सैाभियं। सोभीयं। सोभिय। पंभ। दूभ। दूष। सुंड। दइ। तीसान। बहु। भैरी। मनैा। इन्द्रासणं। हैरी। समरीयं। समरियं। धैन। थांनं। किधूं। किधु। किधुं। विटीयं। विंटिय। गज। गाह। अतीत। अतिथ्य। आकरषन। आकर्षनं। धैनै। सुर। असुर। मझैं। मझं। आंनि। कुट्टी। त्रुट्टी। त्रुठी। मझैं। ठायं। जो। जिहिन भाव भैाइन भायं। भोइन। जै। पैाहनी। अठ। भैाजंन। भषी। कहर। दिषी। त्रुरत। तुरतं। गनीन। भग्नान। भग्गीन। विंता। वितानी। इतं। पुज्जंवं। पुजवै। पुज्जिवे। कांन। कैान। अन। अनं। आन। चितांनी। षांनी। पांनी। दिषि। दिषी। दिष्षि। दिष्षी। अनुकंप। धेन। सुदुझी। सुदझी। करी। अग्रें। भोजनं। गुझी। दैत मुष। दिष नै चित गातनं दाझै। दिष नैं चित गानं न दाझै। दिष नैन चित्त गातं न दाझै। करों। करैां। अनसंक। चलैा। वलैा। चलैां। वछी। बछी। किधैा। दारि। गछी। परै। रूड। रुड। मुंड। मुडं। सुर। सब। मारै। जितैं। षात। मारै। लोम। संलोम। प्रगटी। दहनं। दहांनं। मुष। मुगलं। मुंगल। पुछ। परछाय। परठाय। भांन। षुर। षुपरं। सीग। सींग। सिग। लगै। लष। लष्ष। आंरा। मुक्ति। लद्धं। कीयं। तैा। तो। तै। धेन। दसहनं। दसनं। सुनै। बांन। कांन। कान। धरै। पिट। पांनं। मनों। मनैा। मनो। तें। तै। किधों। किधैा। चलियं। ब। बहु।

मनों भंजि कैलास ते आनि धेनं। किधों चल्लियं राज वो उड्डि रेनं ॥ २५१ ॥
मनं रिष्य आपन्न तापन्न तापं। किधों पुच पारथ्य रेनंक कापं ॥
मनं पुचनं काज आसिष्य वष्षं। कियं पुच वृष्षं दियं आप रिष्षं ॥ २५२ ॥
तबै फर्सरामं फरस्सी उभारी। कियं रिष्य कामं सुमत्तं सुमारी ॥
भयो पुच तंसंगि जों दिड्ड मातं। किधों पावनं पाइ ढोई स आतं ॥ २५३ ॥
करी पैज सैसार्जुनं काम धेनं। चल्यौ रामफर्सी धरै गज्जि गेनं ॥ *
कहां जाइ सैसार्जुनं रुक्कि अग्गं *। चल्यौ राम रिष्षं पयं लग्गि मग्गं ॥ २५४ ॥
दियो रिष्य बरदांन जा जुद्द कज्जं। जबै दिष्षियं षिचियं फर्स भज्जं ॥
मनों अर्क वारं मधं अग्गि लग्गं। भयो दिट्ठ सैसार्जुनं भीर भग्गं ॥
छं० ॥ २५५ ॥ रू० ॥ ५५ ॥

दूहा ॥ फरसराम फरसी ग्रही। लग्यौ षचियन काल ॥
हुक्कम रिष्य दाहन चल्यौ। जगि जोगिनि विकराल ॥ छं० ॥ २५६ ॥ रू० ॥ ५६ ॥

त्रिभंगी ॥ जगि जोगिनि कालं, ईस सभालं, किद्धा चालं, रुंडालं।
मिलि भैरव भूतं, देविय दूतं, चष्य सरूतं, अंतालं ॥
मिलि फरसंरामं, करुना कामं, भामनि भामं, सुर दूंदं।
धर धुज्जे गैनं, उड्डिय रैनं, जग्गिय नैनं, जोगिंदं ॥ २५७ ॥

उडि। रैनं। मनों। मनो। मन। रिषि। आंपं। न तांप। किधों। पारथ। रैनंक। कायं। मनो। मनों। पुत्र नह। आसिष। आशिष। वाषं। विषं। वषं। कीयं। वृषं। वृषं। दीयं। रिषं। रिषं। फरसरामं। फरसराम। फरसी। रिषि। सुमतं। सुमातं। तमंगि। तंमांगि। जब। किधो। कियों। पावन। दोइ। दोइ। सहस्रार्जुनं। सहसारजुन। कांमधेनं। रांम। फरसी। धरे। गज्जि। गैंन। गैन। गैनं। जाय। सहसार्जुनं। सहसार्ज्जुनं। सहस्रार्जुनं। मुष। अग्रं। * यह दोनों बूंदीवाली पुस्तक में नहीं हैं। रिषं। लगि। मग्ग। सगं। रिषि। वरदांन। काजं। जंबे। जबइ। दिषियं। षत्रियं। फरस। भज्ज। भजं। मनो। मनों। अरक। अर्क्कं। अगि। लयं। लग्यं। दिढ। दिट्ठ। सहसारज्जुन। सहसार्ज्जुनं। भगं ॥

५६ पाठान्तर:—दोहा। फरसरांम। ग्रहो। षित्रियंन। षित्रीयन। रिषि। जग। युगिनि। जोगिन ॥

५७ पाठान्तर:—छंदत्रिभंगी। जुगिन। काल। ईश। संभालं। किधा। रुडालं। रुंडाली। भिल। भेख। भुतं। भुत। देवीय। द्रुत। चंष। चरूतं। अंताल। फरसरामं। फरसरांम। करुनां। काम। भामिनि। दूंद। धुजे। गै। गैंनं। उड्डीय। रेनं। जगीय। नेंनं। जोगिंदं। रांम। लगिय।

कवित्त ॥ सहस भुजा सिर इक्क। नाम अर्जुन घन सज्जिय ॥
सुर अठ षोहनि मरहि। करे सुर अप्पन कज्जिय ॥
भरि रुद्धि षप्र जुगनीय। ईस मुंडन भर बध्यिय ॥
पलचर रुधि चर पूरि। सक्क करि कारज सध्यिय ॥
दिय दान पानि पृथिवी दुजन। करे रुधिर कुंडन चपन ॥
सुर नरन नाग कित्तिय उचरि। फरसराम षित्रिय षपन ॥
छं० ॥ २६३ ॥ रू० ॥ ५८ ॥

॥ रामावतार की कथा ॥

दूहा ॥ फरसराम छिति पति हते। छिति अप्पी निज वंस ॥
रघुवंसी दसरथ्थ घर। श्रीरघुपति अवतंस ॥ छं० ॥ २६४ ॥ रू० ॥ ५९ ॥
रघुवंसन राषिस रमन। भयौराम अवतार ॥
वेद भ्रात दसरथ सुतन। नयर अजुध्यासार ॥ छं० ॥ २६५ ॥ रू० ॥ ६० ॥
भये राम लषिमन सुबर। भरथ सत्रुघन भ्रात ॥
अरि रावन रष्षस हरिय। तिन वन लिष्षिय तात ॥ छं० ॥ २६६ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

कवित्त ॥ तरुनि नाम तारिका। ग्यांन हरि परसीरामं ॥
वरि सत्ती धानुष्ष। किए सब सुभ्भह कामं ॥
केकइयै बर मंगि। राम बन भरत सुराजं ॥
तब दसरथ दुष कीन। भयौ धुर काज अकाजं ॥
दसरथ्थ पाइ परसे उभय। पंच बटी बंधी कुटिय ॥
कहि चंद छंद परबंध करि। लंक कंक जिहि बिधि जुटिय ॥
छं० ॥ २६७ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

---

५८ पाठान्तर:—इक। नांम। अरयुन। अर्ज्जुन। सजिय। षोहनि। मरद। करै। सुरै। कजिय। रुधिर। युगिनिय। जोगिनिय। इस मुंडम। बधिय। पलवर। रुधिवर। सक। कारिज। सधिय। दीय। दांन। पांनि। प्रिथवी। करि कुंडन रुधिर सु त्रपन। नग। कित्तीय। षित्रीय ॥

५९–६१ पाठान्तर:—फरसरांम। हते। अपी। भिज। दसरथ॥ ५९ ॥ राषि। रवन। रांम। श्रीरांम। वैद। दसरथं। सुतंन। अयौध्या ॥ ६० ॥ भये। भयौ। राम। लछिमन। लछमन। भरत। शत्रुघन। रषसंहरिय। वन। लषियं। लिषय ॥ ६१ ॥

६२–६४ पाठान्तर:—नांम। ग्यंन। परसीरांम। बरी। सती। धानुष। कीए। सुभह। केकइय। केकइयें। रांम। भत। दुषि। किन। दसरथ। पाय। व। बंटी। पटबंध। जिहिं ॥

सूपनषा राषसी। रहै वन नक्कार ढाली ॥
रूप नष्य चष धुंम। रंग अवनं तन काली ॥
नाक वक्र नष तिष्य। जाइ षरदूषन दष्यिय ॥
दौरि दौरि धरि ढौरि। राम सब राषिस भष्यिय ॥
हरिं सीत नीत रावन गयौ। भयौ चित्त राषिस हरन ॥
कहि पवन पूत दूतह चलिय। सुर सुकाज सांईं करन ॥
छं० ॥ २६८ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

गयौ लंक हनुएस। भ्रमत सुधि सीता पाइय ॥
घन उपवन संघरिय। धरे मन राम दुहाइय ॥
वाय चढ्यौ प्राकार। दसन जुद्दह दनु भष्यिय ॥
अषै कुमारन हनिय। दौरि इंद्राजित दष्यिय ॥
नषि पास रास द्रढ वंधयौ। कहि सुमरन अंबर धरौ ॥
लगगाय पुक्छ लंका जरिय। कनक पंक किन्नौ षरौ ॥
छं० ॥ २६९ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

दूहा ॥ जलन जलिय रष्यस करिय। धरिय बग्ग विपरीत ॥
मनौं अर्क कमलनि दरस। सुनि रावन मन भीत ॥ छं० ॥ २७० ॥ रू० ॥ ६५ ॥

कवित्त ॥ वंधि पाज सागरह। हनुअ अंगद सुग्रीवह ॥
नील जंबु सु जटाल। वली राहुन अप जीवह ॥
धाम धरनि वाराह। दाह धारन कटि मारन ॥
स्वामि भ्रम्म धुर धवल। उड्डि असमान सुधारन ॥

---

६२ ॥ सूर्यनषा। तुर्य्यनषा। सूपनषा। राक्षसी। राषिसी। मध्य। रढाली सूपनपत्रयं धूम। सूप। नष। श्रवन। तिष। जाय। परदूषण। दखिय। घर। धर। रांम। भषिय। हरि। वित पुत। पूतह। तद। चवलिय। सांई ॥ ६३ ॥ गयौ हनू लंकेस। एसं। लंकेश। पाईय। संघरीय। संहरीय। घेर। रांम। दुहाइयं। दुहाईय। चाय वढीय प्रकार। दरसनयुहदनुभषिय ॥ वाय चढीय प्रकार। जुदह। जुधह। भषिय। कुमारनि। हतिय। जित्त। जीत। सु। दषिय। तषि। दृढ। बधयौ। मरन। अबर। लगाय। पुक्छ। पूंछ। जारिय। किनौ। कीनौ ॥ ६४ ॥

६५ पाठान्तर:—जलनि। जरिय। रषिस। छरीय। धरीय। बग। बिपरीति। मनौ। अरक। कमिलनि। दरसि। सुनी ॥

६६–६९ पाठान्तर:—बंधि। सुज। बलि। रहुन। स्वमि। स्वांमि। घम। धृंम। धुरव। धवलं। उडि। असमांन। प्रकार। पुत। अवधुत। सर। थपन। वर ॥ ६६ ॥ वंधि। बर बीर।

प्राकार धरनि दसकंध हरि। पवन पूत अधधूत भर ॥
सर * करन लंक ल्यावन सती। थप्पन लंक बभीष वर ॥

छं० ॥ २७१ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

बंधि पाज बर वीर। नंषि साइर सु अष्ट कुल ॥
बय तरंग तपि तथ्य। भरे जनु अगस्त्रि (सु) † अंजुल।
सिर मच्छी उझरी। मनौं रचि मनि धर सेसं ॥
पिठ्ठ राम भर हनुअ। किन्न मन कारन भेसं ॥
चक्र चक्रित नाथ दस बेद पुर। छोरि देव सेवन ग्रहय ॥
घर लंक सदा थप्पन सुथिर। अगह गहन हनुमंत भय ॥

छं० ॥ २७२ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

जब सु राम चढि लंक। तब सु मच्छी गिर तारिय ॥
जब सु राम चढि लंक। तब सु पथ्थर जल धारिय ॥
जब सु राम चढि लंक। तब सु चक्र चक्की चाहिय ॥
जब सु राम चढि लंक। तब सु लंका पुर दाहिय ॥
जब राम चढे दल बंनरन। भिरन राम रावन परिय ॥
भिर कुंभ मेघ राषिस रसन। सीत काम कारन करिय ॥

छं० ॥ २७३ ॥ रू० ॥ ६८ ॥

उतरि समुद्द अथाह। धाह लंका धुर धुज्जिय ॥
चलिय सेन रघुवंस। जोर सामंत सु सज्जिय ॥

सायर। कुलं। कुंलं। बिप तुरंत तिप तथ। भरै। अंजल। शिर। मच्छी। उबरी। मनों। मनै। सैसं। शेसं। पिठ। रांम। कीन। नैसं। चक्रित। वदनपुर। बदपुर। छोरि। देवन ग्रहय। गृहय। धर। थपन। अग मग। हनमंत ॥ ६७ ॥ रामं। रांम। मछी। गिरि। तारिय। तारीय। रांम। लिंक। पथर। धारीय। रांम। चकी। रांम। दाहीय। रांम। चढै। बंदरन। रांम। परीय। सीन ॥ ६८ ॥ उत्तरि। समुद। धुज्जि। सैन। रघुवंस। जो। ससज्जिय। ससाज्जिय।

* इस शब्द का किसी पुस्तक में सर और किसी में सरु पाठ है। मैं इस का फारसी ,... शब्द से हिन्दी का बनना नहीं समझता हूं किन्तु संस्कृत सरः=गतौ। गमने ॥ भेदके। भेदने ॥ अथवा Sk. सरु=Thin, Small, minute. Hence conquest, victory, triumph. के अर्थ में कवि का प्रयोग करना मानता हूं। बहुत से संस्कृत और हिन्दी शब्द ऐसे २ हैं कि जो उच्चारण और अर्थ में फारसी और अरबी भाषाओं के शब्दों से मिलते झुलते हुवे हैं। क्या उन का अन्य देशीय भाषाओं से ही उत्पन्न होना स्वीकार करना परम प्रशंसनीय है? । † अधिक पाठ ॥

लुट्टि लंक गढ घेरि। फेरि बभ्भीषन थप्पिय ॥
इंद्र जीत असि सज्जि। चढे रथ अप्पन जप्पिय ॥
परि सार धार परि वंनरन। मार मार उचरंत मुष ॥
चल चलिय सेन लषमन सधर। देव बिमान सु मानि दुष ॥
छं० ॥ २७४ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ मेघ नाद नादन कस्यौ। धस्यौ लंक उर धाह ॥
छुट्टि लोग सब भोग तजि। जुट्टं जंग उक्काह ॥ छं० ॥ २७५ ॥ रू० ॥ ७० ॥

विराज ॥ छुटे वान इंदं। घटा जानि भद्दं ॥ भिरे वान भानं। करंतं बषानं ॥ २७६ ॥
धरे ईस सीसं। किरे वानरीसं ॥ वकी थान थानं। जकी जोग मानं ॥ २७७ ॥
वहै रत्त धारा। छुटे भद्द भारा ॥ फिकारंत फक्कं। डकारंत डक्कं ॥ २७८ ॥
भये राम रीसं। मनों काल दीसं ॥ धरा अंग बज्जै। परे रथ्थ भज्जै ॥ २७९ ॥
भिरे भ्रात पारं। मनों राम सारं ॥ छुट्टे इंद्र जीतं। भए देव भीतं ॥ २८० ॥
करे रूप कोरं। सबैलोक सोरं ॥ * * । * * ॥ छं० ॥ २८१ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ धरनि धार धुकि धरनि। भिरन इंद्राजित सरभर ॥
मुक्कि वान रुकि भान। परिय सागरन पलच्चर ॥
जग्गि वान मोहनिय। परिय लषि मनं पथारिय ॥
परि षट दस सामंत। सार मोहनिय सुधारिय ॥
गजि इंद्र भद्द करि इंद्र रव। गयौ लंक गाढौ अछ्यौ ॥
रघुवंस सेन बानन पस्यौ। सार ब्रह्म मोहनि सछ्यौ ॥ छं० ॥ २८२ ॥ रू० ॥ ७२ ॥

घेरि। वभीष्यन। वभीषन। थपिय। सजि। बंदरन। भ्रुष। चलि। सैन। लपिमन। षमन। देव। देबि। बिमांन। समांन ॥ ६९ ॥

७० पाठान्तर:–"धस्यौ लंक उर धाहु" के स्थान में सं० १७७० की पुस्तक में "लंक उर-धाह" मात्र है। भैाग। तिन। जुट्टे। उछह ॥

७१ पाठान्तर:–छंद विराज। छुटै। बांन। जांनि। भदं। भिरै। बांत। भिग। इस। ईश। रीशं। वकी। थांन। जोक। रत। छुट्टै। भद। फिकांरंत। फक्कं। डकं। भय। रांम। मनों। मनौ। बजे। परै। रथ। भजे। भिरैं। भिरै। मनौ। मनों। रांग। छूटै। छुट्ट। इद्र। देव। कोरं। सबें। सबे। लोक। सोर ॥

७२ पाठान्तर:–कवित। धरनिरं। धरनं। धरन। इंद्रजीत। सरभ्भर। मुक्ति। बांन। भांन। भानं। भानि। सागरह। पलचर। लगि। बांन। मोहिनीय। लषिमनं। पथारीय। मोहनीय। सुधारीय। भद। वंश। सैन। बांनन। मोहनि ॥

वपु नंषत षुप्परिय । क्रिनन क्रिन नाट कुरंगिय ॥
गनन गनन गय नंग । छलन छक्किय उछरंगिय ॥
सनन सोक भिल्लरिय । षनन धर धार पलक्किय ॥
गिलन डक्क डिल्लरिय । भनन भूभार भलक्किय ॥
धरनी धरीय बनरं रषिय । परिय पंति सोहन प्रबल ॥
असुरान गंजि लंका नथह । इंद्रजीत जीतित अतुल ॥

छं० ॥ २८३ ॥ रू० ॥ ७३ ॥

कवित्त ॥ फिरि सज्जिय रघुवंस । हनूगढ कोट उडायियं ॥
मरन छोरि मरजाद । इंद्रजीत न सुधि पाइय ॥
मंच होम रथ जग्य । सरन देवी सुध जापं ॥
लषिमन हनु सुग्रीव । लंकपति भीषन थापं ॥
आरूढि रथ्थ अप्पन अवर । धवर पत्ति द्वारह धरिय ॥
छर छरिय बान छकि छंछटिय । भरिय पच अभरन भरिय ॥

छं० ॥ २८४ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

धरनि तरनि आकास । वास रथ सासन रुक्किय ॥
दसन अंब लगि बान । धरनि बट साषन धुक्किय ॥
कुक्किय कंत बिन कोर । सोर जोरह चौसट्ठिय ॥
मंच जप्प सब भूल । करुन कारुन अन दिट्ठिय ॥
रथ च्यारि चक्र फिरि चक्क चव । बान दृष्टि लषमन वलिय ॥
करि कंक संक आसुरनि डर । कहर बत्त ता दिन कलिय ॥

छं० ॥ २८५ ॥ रू० ॥ ७५ ॥

---

७३ पाठान्तर:—वत्रु । नंषन । कुरंगीय । छक्रिय । उछरगिय । उछरंगीय । सनत । सैांक । भलरिय । भिलरिय । षलकिय । डक । डलरीय । डिलरिय । भलकिय । धरनि । धरिय । धरय । बनरं । बनर । बनरपिय । परीय । मोहिन । असुरांन । गजि । इद्रजीति । जितयं । अतुलं ॥

७४ पाठान्तर:—सजीय । रघुवंस । हनु । कौट । उडाइय । मरण । मारन । छोरि । पाईय । हैाम । जागी । देवी । लषमन । बभीषन । थांपं । आरूढ । रथ । अधन । अपन । धवर । पति । धारह । छरय । बांन । भरय । अभर ॥

७५ पाठान्तर:—आकाश । रुकियं ।दरसन । अब । वांन । धुकिय । बिन । कोरं । सैार । सैार । चैासटिय । जप । अब । भुलि । भूलि । करन । अनादीतिय । अनदिठिय । चक्र । बांन । लषिमन । बत ॥

साइर सत सोपनह । बाज दिनौ ता हथ्थं ॥
गुन औगुन संधियहि । कह्यौ तिन जीवन सथ्थं ॥
कुसुम दृष्टि सुर कीन । भयौ रावन तन भारी ॥
सकल लोक रापिसन । हनूं जब लंक प्रजारी ॥
जैजया सद्द जोगिन जपिय । मंदोदरि कीनौ रुदन ॥
लछिमन्न राम सीता सुग्रहि । तदिन लंक लग्गौ कुदिन ॥
छं० ॥ २८६ ॥ रू० ॥ ७६ ॥

वसि निद्रा अध वरष । धाम अंवर धर धुज्जिय ॥
गैांन गज्जि सुर सज्ज । षुधा वन चर वर पुज्जिय ॥
गौर मुष्य वपु स्याम । गिरन समनष्य अकारिय ॥
काल ग्राम नासाग्र । तार तारन तप धारिय ॥
सधि कुंड मुंड सर्गन वसै । सूर चंद संधन सषिय ॥
करि धूम नास नासत तपिय । अकल जोति कालन भषिय ॥
छं० ॥ २८७ ॥ रू० ॥ ७७ ॥

कवित्त ॥ भरत काल चलि सथ्थ । धाम धामन अरु छड्डिय ॥
सहस जष्प भषनीय । मनह अचलं चल वढ्डिय ॥
तिप्प नष्प अनुचार । झाल रसना झक झाइय ॥
करन काल बंदरन । धरे अग्गा सिर नाइय ॥
उत्तरिय लंक असमान सिर । तरुन भार भारन तज्जिय ॥
करि कूह डक्क गिर बंदरन । भिरन राम लषमन भरिय ॥
छं० ॥ २८८ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

७६ पाठान्तरः—सायर । सै । वांन । दिनै । दीनै । हथं । अवगुन । तिन । सथं । कुशम । सैाक । हनु । सबद । शवद । जुगिनौ । योगिनि । मंदोवरि । क्रिनै । लपमन । सम । स्व । दृह । दित । लंगौ । लंक गैाक्रं । दिन ॥

७७ पाठान्तरः—धांम । धुजिय । धुजिय । गैन । गैंन । गैंन । गज । सज । वन । पुजिय । पुजय । मुष । स्यांम । गिरण । समनृष । ज्ञाकारिय । अकारीयं । थांम । तपि । धारीय । सरगन । वसै । सधन । सपीय । धुम । धूंम । नांस । तपिय । ज्योति । जैाति । कलन । भषीय ॥

७८ पाठान्तरः—सथ । धांमन । छंदिय । जप । अचललंचल । बदिय । तिप । नप । रसनां । झाईय । झाईक । धरै । शिर । साईय । साइय । उतरीय । असमांन । कुह । डक । गिर धर वरन । रांम । लषमिन । भिरिय ॥

रिन रत्तौ कुम्भक्रन्न। पस्यौ भूषै वैसन्नर ॥
धर बंदर धक धाह। दुन्त कटि षड्डे बन्नर ॥
पंष भष्ष पलचरिय। नही लड्डे तिहि वारं ॥
सोषि सरित रत धार। पानि लै पिये अपारं * ॥
सा हंत सित्त बंदर सुघट *। गिरन धार उप्पर पस्यौ * ॥
रघुवंस नाम रावन कस्यौ *। करन फट्टि दारुन धस्यौ ॥
छं० ॥ २८९ ॥ रू० ॥ ७९ ॥

परत स्रात धर † धरनि। पदम अट्ठह दमि पालन ॥
जनु कि सद्द साद्दरन। आनि प्रथ्थी जर तारन ॥
परिभष्षन रष्षिसन। कुट्टक चीसन सुष सासन ॥
कर सुपिट्ठ (मस लिग ‡) कमंध। भरत सुष ढ्ढष्पिय भासन ॥
करि लंक कंक पंकन पलन। पलन राम हथ्थी दुतिय ॥
धर भरत नारि कंतन क्रसन। कूटि कूटि दारुन छतिय ॥
छं० ॥ २९० ॥ रू० ॥ ८० ॥

त्रिभंगी ॥ गढ लंकक्रनन्दा, अग्गि जरंदा, धाह करंदा, मिलि जंदा।
कै जंघह्किंदा, सूपरकंदा, डेढकरंदा, मुष गंदा ॥
पल सव्वन षंदा, बघ्घ चवंदा, आप अनन्दा, § कुर जंदा §।
किलकी कूकंदा, माता मंदा, भारी भंदा, जारंदा § ॥ २९१ ॥
परि कुंभ धरंदा, § बान चलंदा, राम कहंदा, सारंदा।
धर रावन रुंदा, करै ति संदा, लष्षै जंदा, दीसंदा ॥

---

७९ पाठान्तर :—रतौ। कुंभक्रनः। भुपै। वैसंनर। वंदर। पधे। पधे। भष। पलचरीय। नाहि। लधे। लधेति। सैाषि। सरतर। पांनि। ले पिए। पीय। * यह तुकें सं० १७७० की पुस्तक में नहीं हैं। सित। उपर। करनं ॥

८० पाठान्तर :—† धर शब्द सं० १७७० की पुस्तक में है ही नहीं। अठ। सह। सद। साईरनिः। आंनि। प्रिथी। प्रथी। परिभषन। रषिसन। कौट्टक। कोट्टक। चीसनि। शासन। सुपिठ। ‡ "मसलिग" अथवा "मत्यलिग" अधिक पाठ मालूम होता है। कमध। भिरत। ढूषिय। दषीय। लकवं। कक। रांम। हथी। दुतीय। क्रसनं। कुटि। कुट्टि। छतीय ॥

८१ पाठान्तर :—छंद तिभंगी। आगि। के। जंघदूकंदा। सुपरकं। सुपरकंदा। डेढकरंदा। संबन। श्रवनं। वघ। § यह तुक तथा तुक के टुकड़े बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है। आपनदूंदा। भट्टा। बांन। बलंदा। रांम। रुदा। रूंदा। करे। सट्टा। लषै। लष्षे। लषे। रावस। रूपं।

घन राषिस हंदा, रूप अनन्दा, पिठ्ठ द्रगंदा, दाहंदा।
घन वान चलंदा, भान छदंदा, राम रवंदा, पारंदा ॥ २९२ ॥
भर रावन हंदा, रूप करंदा, तारन चंदा, जानंदा।
सुर वेद चवंदा, हूर फुलंदा, वाजन हंदा, ईसंदा ॥
जनु कीर चलंदा, हाटे हंदा, तरवूजंदा, नाषंदा।
तट सागर हंदा, रावन हंदा, रूप करंदा, रथ्थंदा ॥ २९३ ॥
तर कोर चवंदा, रावन हंदा, स्यार सुनंदा, उसरंदा।
कर लषिमन हंदा, वान चलंदा, रुंड परंदा, धारंदा ॥
परि पथ्थर हंदा, वानर हंदा, द्रोन ग्रहंदा, नाषंदा।
पति लंक भगंदा, हनु आहंदा, नील निषंदा, फिरि जंदा ॥ २९४ ॥
चक चूर करंदा, अश्व परंदा, राषिस संदा, पाइंदा।
रथ इंद अनंदा, वान नषंदा, रथ्थ रहंदा, झारंदा ॥
नह ईस रहंदा, पूरा हंदा, विरदन वंदा, धायंदा।
रिषि देव हसंदा, राषिस हंदा, बीस भुजंदा, ढाहंदा ॥ २९५ ॥
परि रावन मंदा, भीषन संदा, काज करंदा, रामंदा।
रचि कोट सुरंदा,† हाटक हंदा,† फूल अवंदा, माल्हंदा।
लै सीत चलंदा, लषिमन संदा, सागर वंदा, आनंदा ॥
छं० ॥ २९६ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

भुजंगी ॥ कियं षंड षंडं बली मुष्य चारं। महावाहु वाहं बलं वेद धारं।
हनूमान हथ्थं सँदेसं सुकथ्थं। धरै पिठ्ठ तोनं लक्षी वीर सथ्थं ॥ २९७ ॥

पिठ। द्रगंधा। द्रगंदा। हदा। हाहंदा। वांन। छवंदा। अवंदा। नाम खंदा। तारन षंदा। वैद। हुर। वनजवृदा। इसदा। कीर बलदा। हाटै। तरबुजंदा। रावनं। रथंदा। कौर। दंदा। उसुरंदा। करि। लपमन। वान। रुड। पथर। वांनरहद। द्रौन। ग्रहंदा। चकचुर। पइंदा। वान नपंदा। रथ। झारंदा। इस। पुराहंदा। विरदत। रषि। दैव। हसदा। राषिसं। छंदा। वीस भुजिंदा। मदा। भीषव। सदा। रांमंदा। रवि। रिव। कोट्टि। सुरिंदा। हट्टक। फुलं। मालंदा। लैं। चंलंदा। सदा। सद्दु। † इस तुक के यह टुकड़े सं० १७७० वाली पुस्तक में नहीं हैं ॥

८२ पाठान्तर:—छंद भुजंगी। कीय। षंड। मुष। बाहु। वैद। हनुमांन। हथं। सदेसा। संसंदे। सुकथं। धरे। पिठ। तौनं। सथं। धनुरवान। हन। धरे। पांनि। वर। चंमु। सैां।

धनुबीन त्रासं जरं हन्न कारी। धरं पानि आवं वरं पारि तारी।
चन्द्र लंक सो गढ्ढ विंव्यौ विहानं। धरं धार धुक्की करग्गे अहानं॥ २९८॥
कियं कोप कोपं धरं धार धोपं। सिला वंधि सिंधं कुसं लूप लोपं।
रनं रावनं कज्ज आरज्ज काजं। वनी थप्पि थर थान दिन राज राजं॥ २९९॥
सुरं सूर सुष्पं वरं वाद वद्दं। महा मोह कोहं वरं जे अनन्दं॥
छं० ॥ ३०० ॥ रू० ॥ ८२ ॥

कवित्त॥ जनक सुता हरि दुष्ट। हरी लंका तन दावन॥
जीव जगत जगि छरन। हरन रिपु अहन सु रावन॥
हरन रिद्ध नव निद्ध। सिद्धि हर सागर सिद्धिय॥
हरन पुत्र इंद्रजित। हरन भीषन अह लिद्धिय॥
तिन हरिय सीत क्षत दूह करिय। भरिय पत्र पलचर भषन॥
गढ जारि लंक दसकंध हनि। राम कित्ति चंदह चवन॥
छं० ॥ ३०१ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

॥ कृष्णावतार की कथा ॥

कवित्त॥ नमो देव देवाधि। नमो नाभाय कमल वर॥
नमो माल पंकज (प्रमां*) न। नमो वर कमल कमल कर॥
नमो नैंन वर कमल। नमो चित्तह अधिकारिय॥
नमो विकट भंजनन (मित†)। नमो संसार सुधारिय॥
नम नमो (सु‡) चंद नंदन नवल। नंद ग्रेह ब्रह्मंड गुर॥
दिष्षहि जु देव देवाधि तुहिँ। सुगति समप्पन तिनह उर॥
छं० ॥ ३०२ ॥ रू० ॥ ८४ ॥

गढ। विव्यौ। विहायं। धुकी। करं गे। करं गं येहानं। कीयं। कोप कोपं। वधि। सिधं। कुशंलूप। लोपं। रणं। आरज। वनि। थपि। थांन। सुर। सुपं। वंदं। कोहं वर। जे। अनंद॥
८३ पाठान्तर:-कवित। जीवन। छरन्। रिपुं। स। हरिसा। रद्धि। रिद्धि। निद्धि। हस्सागर। सिधियं। इद्रजित। इंद्रजित। इंद्रजीति। हरल्ल। ग्रह। लद्धिय। हरीय। शीत। छत। भरीय। पलवर। दसकध। रांम। वंदह। तवन॥
८४ पाठान्तर:-नमौ। विर। नमौ। मल। पंकज प्रमानं। * अधिक पाठ मालूम होता है। नमौ। नैन। नमौ। चितह। अधिकारीय। नमौ। विकटि। भंजन निमित। † अधिक पाठ मालूम होता है। नमौ। सुधारीय। नमौ नमो चंद नंद नंदनहि। ‡ अधिक पाठ ज्ञात होता है। गेह। व्रह मंड। ब्रहमंड। दिपिहि। दिषहि। न। गुरन। दैव। त्रुहि। तुहिं। सुगति। समपन॥

दूहा ॥ प्रति सुंदरि सुंदरनमह, सुंदरि सुभति सनेह ॥
सुंदरि त्रिभुवन पुरुष पहुँ, निज आवन तन ग्रेह ॥
छं० ॥ ३०३ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

पद्धरी ॥ जो कमलनाभि द्रिग कमल पानि। कोमल सु मधुर मधु मधुर वानि ॥
दुति मेघ पीत अंमर सुनंद। धर धरनि धरत सिर मोर चंद ॥ ३०४ ॥
चौ वज्र पद्म धज अंकुसीय। गद संष चक्र भ्रगु लत्त हीय ॥
सँग सरै दीह सिसु कर विलाल। आचिज्ज अक्छ वियचरै वाल ॥ ३०५ ॥
तुहि दिष्य ध्यान धरि वधु अकाम। व्रत करहि उमा पुज्जन सुभाम ॥
छं० ॥ ३०६ ॥ रू० ॥ ८६ ॥

कवित्त ॥ ससिर वाल तप करहि। कमल दक्ष्क्षय सु वदन अलि ॥
हेमवंत वन दहिग। दक्ष्क्ष जल्ल सुष सुष्प मिलि ॥
वर वसंत डुलि पच। चित्त डुल्लत अलि रष्पहि ॥
द्रक्क पाइ तप करहि। पवन चावद्दिसि भष्पहि ॥
वरषा रु सरद लग्गिय करद। मरद मैंन जग्गै सु तन ॥
सुग्गंधि दिव्य मिष्टह पवन। करहि सेव उमया सु मन ॥
छं० ॥ ३०७ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

सीत सु जल उष्णह सु (अग्ग*)। पवन हप्पह घन झुल्लहि ॥
उमया उर उच्चार। सु डर गुर जन वर भुल्लहि ॥

---

८५ पाठान्तर:–दोहा। सुंदर। सुंदर। सुभत। सनेह। सुदर। सुंदर। त्रभुअन। पुरिय। पहु। पहुं। आवत। ग्रेह ॥

८६ पाठान्तर:–जो। पांनि। कोमोल। मिष्ट वांनि। दुती। मेघ। अंवस्सु। अंबिर। मोर-च्चंद। चो वज्जयचद्मधज़ अजसीय। चौ वर्ज। ध्वज। भृगु लत पीय। संग। संष। सिसि। कारि विलाल। आविज्ज अर्छा बयचरै बाल। आचज्ज। अछ। त्रुहि। दिपि। ध्यांन। धुर। अकांम। पुजन। सु भांन ॥

८७ पाठान्तर:–कवित। सिसिर। करहि। करीह। कमल। दक्षय। दक्ष्क्षइ। वदन। हेमवंत। वन। दक्षि जल सुप मिलि। दक्षिक्ष। सुप सुष। वर। वसंत। पत। चित। डुलत। रषहि। रपंहि। द्रक। पाय। चावसि। भषहि। बरषा। लगिय। मयन। मैन। जगै। सुगंधि। सुगंध। मिष्टांन। पवन। मिष्टान पन। सैव ॥

८८ पाठान्तर:–सीतल। शीत। अगि। अयि। अग। * अधिक पाठ है। हृपह। वन भुलहि। हर। चार। वर। भुलहि। नंदुलं। घृत। मिष्टांन। पांन। हर। मगैं। मयें। हरनक्ष

दधि तंदुल अत षीर। बहुत मिष्टान पान कर॥
हरि मग्गहि हर नक्क। करहि तलपत्त पत्त धर॥
स्नानं च जम्म भगिनी करहि। सुरति सेव कात्यायनिय॥
हूह कहि रु अंन कुंडल करहि। गरथि माल पुहपै घनिय॥
छं०॥ ३०८॥ रू०॥ ८८॥

हनुफाल॥ मुहि अष्पि भगवति कंन्ह। देवाधि देव सुनंन्ह॥
अति सीय पुहप सुरंग। विनि पीन अंबर चंग॥ ३०९॥
घन मद्धि तडिता तेज। चमकंत दुति सम केज॥
बिय ब्रन्न उप्पम देषि। कंचन कसौटिय रेषि॥ ३१०॥
हरि धरन तुरसिय माल। घन पंति सुक्क विसाल॥
मंजरिय मुत्तिन माल। सुर चाप सोभ रसाल॥ ३११॥
मधु मधुर मिष्ट सुबानि। कल अम्रत सुम्रति जानि॥
ढिँग स्याम कमला लच्छि। उप्पंम गुन कवि अच्छि॥ ३१२॥
तरु स्याम तेज तमाल। चढि हेम वेलि विसाल॥
सिर मोर मुकुट जु स्याम। नचि मोर गिरवर ताम॥ ३१३॥
झलकंत कुंडल कान। कवि कहै उप्पम वान॥
नर अरक सोम प्रमान। सित पुर्निमा निस थान॥ ३१४॥
घन सघन सज्जल ताम। उठि इन्द्र चाप सु काम॥
बर बजति मुरलिय मुष्ष। संसार हरति सु दुष्ष॥ ३१५॥
इक पाइ तप कर न्याइ। हरि धरै अधर सु धाइ॥
हरि लियै अंकुस वज्र। कविराज उप्पम सज्ज॥ ३१६॥

हरनछि। तलपत। पत। पन। त्रमु। जमु। सैव। कात्यायनीय। करहिं। गरुय। गरुग्र। गरुय पहुपें। धनीय॥

८९ पाठान्तर:—छंद हनूफाल। मुह। कहु। दैवाधिदैव। सुनन्ह। अति सीस। पहुंप। वनि। पीत। धन। मधि। तैज। कैज। उपम। दैषि कसैाटीय। रैषि। त्रुरसी। तुरसी। घन पंत। सुक्र। सैाच। बांनि। अमृत। सुमृत। जानि। स्यांम। लछि। उपंम। अछि। अछ। श्यांम। स्यांम। तैज। माल। हैम वैलि। मैार। मुकट। मुगट। यु। स्यांम। सु स्यांम। नवि। तांन। कांन। कहि कहै। बांन। वांन। सैाम। प्रमांन। पुरनिमा। धाम। धांन। सजल। तांम। इद्र। कांम। चर। वजति। मुरली। मुष। सु दुषु। स दुषु। पाय। करै। न्यांय। लियैं। अंकुस। वज्जं। कविराय। औपम। सज। वर। भुक्त। मत। करीय। हट्टक पाट.

वर भक्त सत्त करीव। तिन हटक पार नरीव॥
यों पाइ धरि इह्नि भंति। ससि बीय बनि परि कंति॥ ३१७॥
हरि चरन कमल सु कोर। जनु मिलन कुमुदिन भोर॥
नप ब्रमल कमल सु कंति। जनु उग्गि तार कपंति॥ ३१८॥
नटवत्त भेष त्रिभंग। दुति कोटि करत अनंग॥
सुप कमल दधिकन स्याम। नभ फुल्लि मालति काम॥ ३१९॥
सो इकंत अप्पहि मात। अधमान त्रिमल गात॥
छं०॥ ३२०॥ रू०॥ ८९॥

दूहा॥ च्यार घटी निसि सुन्दरी। प्रान पपत्ते थान॥
जल अंदोलित सो भई। उदै होन वर भान॥ छं॥ ३२१॥ रू० ९०॥
कंस मेर चढि सोम बहु। सकल हरत रवि पुव्व॥
हंस माल भंजन सकल। सज्यौ चंद मनु सव्व॥ छं०॥ ३२२॥ रू०॥ ९१॥

चौपाई॥ गावति विरति अचारे वालं। हेम संत कष्टं तन सालं॥
उरमा निसि रविनी रस जामं। हरि निरदोष निहारत कामं॥
छं०॥ ३२३॥ रू०॥ ९२॥

दूहा॥ दूंद उदंत सरद उद। मुद आनन्द अनंद॥
नंदन नंद सु हंद व्रज। विहसिय चंद सु चंद॥ छं०॥ ३२४॥ रू०॥ ९३॥
नव रवनी सस्वर सु नित। स्तुति श्रुति रचि रुचि भेद॥
निरप निमेष विसेष विधि। असम सरन मन * षेद॥
छं०॥ ३२५॥ रू०॥ ९४॥

मरीय। हटक पाट। यों। पाय। ससी। कोर। जुनु। मिलित। कुंमदत। भोर। भोंर। नप। निमल। त्रंमल। उगि। कंपंति। नट्टवत। भैष। दुति। कोर कटित अनंग। स्यांम। फुलि। फूलि। मालनि। कांम। सो। अपहि। अधमांन। त्रिमल॥

९० पाठान्तर:—दुहा। च्यारि। संदरी। प्रांन। पयते। पयत्ते। थांन। अंदोलित। सो। भइ। होत। वर। भांन॥

९१ पाठान्तर:—मेर। सोम। पुव। भजन। वंद। मनों। मनौं। सब। सवस॥

९२ पाठान्तर:—छंद अरिल। अरिल्ल। विरति। अवरि। वालं। हैमवंत। हेमवंत। उरमां। रिविनी। जांम। दोष। नहारनि। निहारति। काम॥

९३ पाठान्तर:—दूंद। दुदं। सरद। मुंद। अनद। वृंद। व्रजं। वृज। वंलिय॥

९४ पाठान्तर:—स्तुति सुति रुचि भेद। स्तुति स्तुति रचि रचि भेद। निरषि। निमेष। विसेष। विशेष। वुधि। * बूंदीवाली में मन शब्द नहीं है। पैद॥

॥ वृद्ध नाराच ॥

जिते जितेक्क धाम धाम काम कामनी मनं। तिते तिते सुरासुरेस सूच भामिनी गनं॥ ३२६॥
रते रते घने घने बने बने बनंचरं। त्रिभंग वंस अव्वयं, अवन्न लग्गए हरं ॥ ३२७॥
मुकट्टयं मयूर चंद्र सीसयं सुलष्पयं। सु गोपिका सु गोप बाल्ल तालयं सु सप्पयं॥ ३२८।
पतीव्रतं सुभ्रम्म धाम भामिनी सुभग्गयं। अपत्ति ईसनी सयं सु पातकं सु लग्गयं॥३२९॥
सु मोह म्रग्ग काम म्रग्ग कामिनी बुलत्तियं। अमोहमोह मारगे अलोक नर्क्क जत्तियं३३०
अपत्ति सुत्त छंडि स्वामि वाम वाम मारगे। कहंत चंद भेदयं अकज्ज वप्पु सारगे॥ ३३१॥
तमेव ध्रम्म धामयं सुध्रम्म धामयं सुनं। तमेव काम कामयं सुकाम *कामनी गनं॥ ३३२॥
तमेव देव देह अंस देह हंस वेदनं। तमेव स्त्रब्ब अव्वयं सु सर्वदा सु भेदनं॥ ३३३॥
तमेव लोक लोक लज्ज भज्जनं सदा हरी। तमेव सुष्प दुष्पयं सु माधवं अहं करी॥ ३३४॥
तमेव दिष्ट दृष्ट पुष्ट दुष्टनं प्रतीयते। तमेव सत्ति सत्ति बाद गोपिका महं गते॥
छं० ॥ ३३५ ॥ रू० ॥ ९५ ॥

गाथा ॥ दृष्य सु नाम अहनं। नष्यं यत्तेमि कहन कारन यं॥
यत्ते पतंग दीवे। हं माधव माधवं देवं॥ छं० ॥ ३३६ ॥ रू० ॥ ९६ ॥

---

९५ पाठान्तर:-छंद वृद्धि नाराच। जित। जितेक। धांम धांम। कांम। कामि। कांमिनी। तितै तितै। सुरासुरैसु। सुत्र। रतै रतै। घनै घनै। वनै वनै। वरं। रते रत घने वने वनं चरं। यवयं। अवंच। लगए। सुकट्टयं। मुकट्टयं। मयुर। शीशयं। लपयं। गोपिका। गोपवाल। सुत्पयं। सुसरवयं। पतिव्रतं। धृत। धांम। भगयं। अपति। इसनी। पातगं। लगयं। मोह। मृग। म्रिग। कांम मृग। कांमृग। कांमिनी। बुलंतियं। अमोह। मोह। मारगे। अलोका। तरक। जतियं। अपति। सुत। स्वाम। स्वांम। वांम। वांम। मागरे। मागरे। भेदयं। अकाज। वपु। सागरे। तमेव। तमैव। * बूंदीवाली में सुकाम शब्द नहीं है। तमेव। दैव। अस। देह। वेदनं। तमेव। अव। सव। अवयं। अवदा। सवदा। भेदनं। तमेव। लोक। लोक। लज। भजनं। भंजनं। तमेव। सुष। दुषयं। तमेव। दुष्टयं। प्रतीपते। तमेव। त्पतिसानि। सति सति। गोपिका। गने॥

इस छंद का कहीं तो वृद्धि नाराच और कहीं लघुनाराज नाम लिखा मिलता है, जैसे कि इसी समय के रूपक ९ और १७ और २४ आदि में परंतु अभी तक कोई वृद्ध और लघु का भेद सूचक छंद नहीं आया है, जहां आवेगा वहां हम उसके विषय में कहेंगे। अभी यह समझ लेना चाहिये कि यहां तक उन में प्रमाणिका नामक छंद का लक्षण घटता है अर्थात् वह आठ ८ अक्षर और बारह १२ मात्रा=लगुलगुलगुलगु-का होता है कि जो परस्पर नामान्तर हैं॥

९६ पाठान्तर:-गाहा। दछ। दछं। नांम। गहनं। नयं। पतेवि। पते। पते। पतंगा दीवं। पतंग दीव। दैवं। वंदे॥

कवित्त ॥ मधु माधव वैसाप। रष्पि साधव साधव रित ॥
वन घन तन वनि रम्य। सोभि मारुत मारुत अति ॥
वंसी सुर संभस्यौ। हस्यौ गोपी सु चित्त सुर ॥
कछुव कस्यौ कछु कस्यौ। गये सातुक सुभाव गुर ॥
सु सुगति सोह एकंग यहि। अध दूपि चपि अंजत चली ॥
एक ही वार संभरि सु सुर। कंत चित्त चिंता पुली ॥

छं० ॥ ३३७ ॥ रू० ॥ ९७ ॥

गाथा ॥ वाले विभ्रम चरितं। मुत्तं तथ्य चिंतयं होई ॥
रति कन्हं सम रमनं। छित छित्तं मुक्ति सा वाले ॥

छं० ॥ ३३८ ॥ रू० ॥ ९८ ॥

दूहा ॥ देव देव वसुदेव सुन। नित नित गुन गन पूर ॥
छिन इक नाम लियंत वर। घन अघ उड्डि कपूर ॥

छं० ॥ ३३९ ॥ रू० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ ध्यान सु प्रति प्रति कन्ह। देव देवाधिदेव वर ॥
मधुर नरम अति बैन। मकर कुंडल चंचल गुर ॥
नाचत चित्त चिभंग। वंस वंसोधर राजै ॥
अति उतंग (माया *) बीभंग। नाम लेयंत सुराजै ॥
देवत्त देव देवाधि वर। नीत न मानत भजि सु वर ॥
कहियंत गोप गोपी सु वर। विधि विधान निरमान नर ॥

छं० ॥ ३४० ॥ रू० ॥ १०० ॥

---

९७ पाठान्तर:—कवित। मधु माध वैशाष। मधु माधव वैसप। रिपि। रषि। रिति। तवनि। सैाभ। गैापी। सु वित। स चित। कछु कह्यौ कछु कछु कस्यौ सातुक्र सुभाव गुरु। सैा। सैाह। यहि। दृष्पि। चष्पि। अजत। वारं। संभरी। चित। चिंत ॥

९८ पाठान्तर:—गाहा। बालै। अुत्तं। तथ। चितयं। चित्तयं। होइ। कन्ह। स्मरमन। वालै ॥

९९ पाठान्तर:—दैाहा। दैवदैव। वसुदैव। यूरि। छिनक। नांम। लीयंत। वर। अघाकुंडि। उडीय। कपुर ॥

१०० पाठान्तर:—कविता। ध्यांन। कन्हं। दैवदैवाधिदैव। बर। मरम। वैंन। वंन। गुरु। बंसीधरा (माया *) अधिक पाठ। विभंग। दैवत। दैव। दैवाधि। बर। मांनत। भंजि। बर। कहीयंत। गैाप। गैापी। विधांन। निरमांन ॥

दूहा ॥ अलक लोक बज्जत विषम। गन गंध्रव्व विमांन ॥
सुर पति मति भूल्यौ रहसि। रास रचित व्रज कांन ॥
छं० ॥ ३४१ ॥ रू० ॥ १०१ ॥

चोटक ॥ ततथे ततथे ततथे सुरयं। तत थुंग मृदंग धुनि द्धरयं ॥
उघटें चिघटी हरि विक्क्रमयं। भ्रमरी रस रीति अनुक्क्रमयं ॥ ३४२ ॥
व्रज बालिन आलिन आलिनयं। द्रूक द्रूक्कति कान्ह विचं व्रजयं ॥
निज नर्त्तित वर्त्तिक किं नमनं। द्रिग पाल मिले कल कौतिगनं ॥ ३४३ ॥
पहु यंजुलि अंजु सुरंग बनं। वर बज्जति छंद विनं धुनिनं ॥
निसि निर्म्मल चंद मयूषनयं। घन घंटिक नूपुर झंभनयं ॥ ३४४ ॥
धरनीधर न्रित्यत निद्धरयं। नव नाग कुली कुल सुम्मरियं ॥
षट मास निसानिसि न्रत्य कियं। तब गोविंद अंतर ध्यान हुयं ॥ ३४५ ॥
सब गोप वधू मिलि ढुंढतियं ॥ छं० ॥ ३४६ ॥ रू० ॥ १०२ ॥

कवित्त ॥ गोपति अंतर (सु*) ध्यान। भये भ्रम भ्रंम उपंनिय ॥
बिरह वान भय दीन। प्रान छुट्टिय वरतंनिय ॥
ज्यौं तर वर बिन पत्त। आस तर वर बन करई ॥
ज्यौं सुद्धि भई मुष बाल। बहुरि चिंता नन धरई ॥
सांवरी स्याम म्मूरति सुबर। अतिस पहुप संमान बर ॥
सिर मोरपिक्क सोभत वसन। तरुन बाल पुक्कै सुतर ॥
छं० ॥ ३४७ ॥ रू० ॥ १०३ ॥

---

१०१ पाठान्तरः—दोहा। लोक। बजत। वज्जत। विषम। गंध्रव। गंधर्व। विमांन। सुररि। मत्ति। भुल्यौ। भुल्यै। वृज ॥

१०२ पाठान्तरः—तथनैनतथैनतथै सुरयं। ततथंग। म्रदंग। धुन। धरयं। उघटै। उघटं। विक्रमयं। भृमरी। अनुक्रमयं। व्रज। वालिन। दूकति। विच। वृजयं। नरतति। नर्तित। वर्तिक। वर्तिक। कि। क्यं। नमयं। दृगपाल। मिलै। मिल। मिलै। कोतिगयं। कौतिगयं। कोतिगनं। पुह। पंजुलि। पंजु। वयं। वर। बजत। वज्जत। विन। बिनं। घुंनयं। धुनयं। निशि। निर्मलि। मयुषनयं। नुपुर। नृतति। न्रत्यत। निद्धुरयं। कुंली। कुंल। सुभरियं। सुमरियं। निसांनिस। निशानिश। कीयं। कायं। गोव्यंद। गोवींद। ध्यांन। हुअं। गोप वधु। तयं। तीयं ॥

१०३ पाठान्तरः—कवित ॥ गोपी। गोपी। अंतर ॥ सु* अधिक पाठ। ध्यांन। भयों। भयै। भ्रंम भ्रम। भ्रम भ्रम। उपतिय वांम। भयं। दान। प्रांन। छुटीय। छुटिय। छुट्टीय। बरतंनिय। जों। विन। पत्र। विन। बिन। जों। सुधि। भइ। चिता। धरइ। स्यावरी। स्यांम। मुरति। सुवर। वर। पिछ। सोभन। तरुन। पछै। पुछै। पुछैं ॥

कवित्त ॥ क्रिष्ण विरह गोपिका । भई व्याकुल सु विकल मन ॥
वर गह्वर बन भ्रमै । कै इक गह्वी ग्रिथलं तन ॥
विषम वाय जिम लता । मोरि मारुत झंझोरै ॥
कै चित्र लिपी पुत्तरी । जोरि जोरंत निहोरै ॥
कै पषान गढि केक मग । भ्रमत माल पुक्कत फिरिय ॥
कवि चंद चवत हरि दरस बिन । होय कपोतह बिछ्छुरिय ॥
छं० ॥ ३४८ ॥ रू० ॥ १०४ ॥

स्याम रंग पिष्षहिन । घटा घनघोर गरज्जत ॥
कोइल मधुकर वयन । श्रवन संभरै वरज्जत ॥
कालिंदी न्हावहि न । नयन अंजै न म्रगंमद ॥
कुचा अग्र परसै न । नील दल कवल तोरि सद ॥
पर पीर अहीर न जानि मन । ब्रज वनिता मिलि कहत सब ॥
जिहि मग्ग कंन्ह वन संचरिय । तिहि मग जल पीवहि न अब ॥
छं० ॥ ३४९ ॥ रू० ॥ १०५ ॥ *

दूहा ॥ सुतन दुष्ष अति वाल ससि । भयौ पुरन बिन मंत ॥
तिम सुष घटि दुष्षह दरस । भोर भौंर उडि जंत ॥
छं० ॥ ३५० ॥ रू० ॥ १०६ ॥

भयौ सु उडगन गात वर । पूरन ससिय अकास ॥
सुवर वाल बछ्छौति दुष । सिंधु उलह्यो भास ॥
छं० ॥ ३५१ ॥ रू० ॥ १०७ ॥

---

१०४ पाठान्तर:-बिरह । गोपिका । भई व्याकुंलविकलं मन । बन गह्वर वन भ्रंमे । के । गढिय । गढी । यथलं । मोरि । झझैरै । के चित्र छिपी । फुतरी । जोरि । जोरितं । निहोरे । कें । के । पषांन । कैक । भूमत । बाल । पुक्षत । फिरीय । विनु । होय । कपोतकि । विछुरिय । विछुरीय ॥

१०५ पाठान्तर:-स्यांम । पिष्षहिमः । घोर । कोइलम । वरज्जत । कालंदी । परसे । मील । तोरि । जांनि । वनिता । मग । कन्ह । वन । व्रल ॥

* यह रूपक सं० १६४० और १७७० की पुस्तकों में नहीं है ॥

१०६ पाठान्तर:-दोहा । सुनत । दुष । पूरन । तिम सुघट्टि दुषह दरस । सरस । ज्यों भोर भोरं उडि जंत ॥

१०७ पाठान्तर:-भयो । वर । समिय । शसिय । सुबर । बछोति । उलट्यो ॥

गाथा ॥ राधापतीतमारं। राधा भई भुजंगयं वैनं ॥
राधावल्लभ वंसी। बरनं षंत सु भोग्रनं जातं॥ छं०॥ ३५२॥ रू०॥ १०८॥

कवित्त ॥ रास बाल हरि बाल। बाल आई न बाल हरि ॥
सघन कुंज घन कुसुम। सज्जि सुष सैन चैन करि ॥
कंध चढन व्रषभान। धाय सुक्की तिन बेरह ॥
कोइ लभै नह सुद्धि। बिरह संभह्यौ घने रह ॥
पावै न बाल पुक्कृत सुव्रक्ष। दै देवाधि देवाधि कह ॥
आरति चरित्र बहु कंन्ह कौ। को जंपन जानन कलह ॥
छं० ॥ ३५३ ॥ रू० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ बग्ग मग्ग गोपिक गमन। कंध अरोहन मग्ग ॥
द्रुम द्रुम बल्लिन अलिन अलि। हरि पुक्कृन अक्कि लग्ग ॥
छं० ॥ ३५४ ॥ रू० ॥ ११० ॥

मोत्तीदाम॥ सुन् कैरि कदंम कयथ्य करील। कमोदनि कुंदह केतकि बील ॥
कनैर कसोंदिय कैवर कोह। करोंदिन कांन्ह कहां कहु सोह ॥ ३५५ ॥
सुनो सुनि सोक समीर सुगंध। सकुंजन कुंज निरष्पत रंध ॥
कहूं बल बंधि बिजोरनि जांनि। कहूं वट हंस दिषावत आनि॥ ३५६॥
सुनौ तुम चंप कदंम चकोर। कहौ कहुं स्याम सुने षग सोर ॥
लही ललिता बन लोचन चंग। कहौ कहु कांन्ह जुहे तुम संग॥ ३५७॥

---

१०८ पाठान्तर:—राधापतित। राधापतित्त। राधामतीत। भार। बेंनी। वैनी। वैनं। राधावलभ। वसी। वरन। षंत। भोग्रन। जानं॥

१०९ पाठान्तर:—कविता। आईय। आइय। सजि। सेंन। वैन। वेंन। कं। वृषभांन। धीय। मुकी। सुकी। वैरह। कोइ। लतै। सुधि। विरह। धनेरह। पावे। पुक्कत। पुक्कति। व्रिक्ष। दइ। दैवाधि। आरत। कन्ह। कै। कौ॥

११० पाठान्तर:—दोहा। वग मगोपिय। मनह। अरोहन। मग। मगि। द्रुं। चेलिन। बेलिन। मिलि। पुछन। पूछन। लग॥

१११ पाठान्तर:—छंद मोतीदांम। सुनि। कोरि। कंदंम। कयथ। कमोदनि। केतकि। कसेंदिय। कसोटीय। कंबर। कोह। कसोदिन। कान्ह। कदा। कहा। कहो। मोह। सुनि सूनि। सुनि सुनि। सोक। नरपत। निरषत। कहुं। वंध। बिजोरनि। जांनि। कहुं। दिषावहु। आंनि। सुनो। कदम। चकोर। कहो। कहीं। कहुं। स्यांम। सुने। मोर। वन। लोचन। कहु। कहुं।

हुँ मान कियो उन मानह भंग। सह्यौ नहि अव्व तज्यौ हम संग॥
दुरे अब ही तजि कुंजन मांह। गए कर ही कर छांडहि बांह॥ ३५८॥
चली मिल पंछिनि पुच्छत भीर। कुरं कुर रंगिन कोकिल कीर॥
परी धर मुच्छि गहै कर एक। तिनं लगि सास उड्यौ उडि केक॥ ३५९॥
चले अँसु धार तरंगिनि वाढि। गहे दह सासति प्रानन काढि॥
मगें डग चालि गिरै धर धाइ। गहै कर साहिस लेइ उठाइ॥ ३६०॥
गई जमुना जमुनानिन तीर। करै सब कामिन स्याम सरीर॥
जु पूतनि रूप धरै तन आप। ग्रहै द्रह कन्हर कालिय साप॥ ३६१॥
धरै कर पव्वय गोप सहाय। परै जल धार तडित्त निहाय॥
धरै चिय ध्यान न लग्गइ नैन। परै पतिपत्त सुनै सुन वैन॥ ३६२॥
कहंत क्रिपा निधि भक्त सहाय। भए तब आनि प्रगट्ट दिषाय॥
कियो फिरि रास जु सुंदर स्याम। विचं विच कान्ह विचं विच वाम॥ ३६३॥
भए श्रम अंग कलिंद्रिय तीर। छिरक्कत स्याम गहै भुज भीर॥
करी जल केलि चरित्त सु जानि। लियौ दधि दूध चियानि सु दान॥ ३६४॥
यूँ रास विलास अकास प्रसून। अनंदिय अंमर अंवुज सून॥
छं०॥ ३६५॥ रू०॥ १११॥

दूहा॥ कहिल वाल प्रत्तिय जमुन। रमन केलि जल वाल॥
मानहुं मदन महीप गुन। कहत फंदन काल॥ छं०॥ ३६६॥ रू०॥ ११२॥

कान्ह। है। मे। मैं। वांन। कीयो। यव। दुरै। तिजि। माहि। छंडि। छांडि। कें। कै। वांहि। वाह। चलि। मिलि। पुछत। कुंरंग। कुरंनि। कोक्रिल। मुछि। गहे। गहैं। कैक्र। चले। अंसुधार। चढ़ि। गहै। दहसति। प्रांनन। काटि। कढि। डगै डग। मगै मग। गिरं। गहें। गहैं। साहस। लैइ। लेई। गइ। यमुना। यमुनान। यमुनानि। कै। कं। करें। कांमनि। स्यांम। पूतना। जु पूतना। ग्रहें। धरें। पव्वय। गोप। तडित। धरें। अन। ध्यांन। लगहि। लगेंइ। लागेइ। नैन। परें। पितपता। सुनें। सुत। बैंन। क्रपानिधी। भक्ति। दई। आंनि। प्रगट दिषाइ। स्यांम। बिचि। वांम। भई। कलंद्रीय। छिरकत। स्यांम। कैलि। चरित। जांनि। लियो। पें। दूद। पै दांन। यों। यौं। अनंदियं। अमर॥

यह मोतीदाम नामक छंद चार लगुल का होता है उस में बारह वर्ण और सोलह मात्रा होतीं हैं॥

११२पाठान्तर:- दोहा। बालि। चाल। पतिय। यमुन। कैल। मानहुं। म्यंनहु। दमन। कटत। कहना॥

पद्धरी ॥ क्रीडंत जमुन सुंदरि विसाल। प्रापत्त षट्ट सत बरष बाल ॥
पौगंड छंडि किस्सोर पीय। जोती सु सिसिर अति तोर जीय ॥ ३६७ ॥
अप्पै सु अरघ रिन पानि जोरि। मनु प्रफुल्लि कुमुद ससि चित्त चोरि ॥
तजि बाल वस्त्र क्रीडंत वारि। प्रति धरे अंबरह मिलन धारि ॥ ३६८ ॥
आधिक्क बचन व्रत रषन वाम। हरि बसन कदम चढि कोटि काम ॥
तजि बाल वस्त्र भांवरि सु देस। निकरीय लपट वडवान लेस ॥ ३६९ ॥
नव किसल धनुक जनु कनक बेलि। तिरि चलिय जमुन जनु कद्दम केलि ॥
लटकै सु बाल बैंनिय सुरंग। सोभै सु दुत्ति बिच जल तरंग ॥ ३७० ॥
जानैं कि सदन न्टप रहसि जोर। जवनिका ओट नच्चै चकोर ॥
मानों कि दुत्ति द्रप्पनह व्योम। निचोल स्याम मधि हसिय सोम ॥ ३७१ ॥
सुष केस पास बिंटिय बिसाल। बंध्यौ कि सोम सोभा सिवाल ॥
गहि पानि वारि रवि अरघ देहि। उप्पमा चंद बरनैति नेहि ॥ ३७२ ॥
सैसवसु पानि जुब्बन सु अर्घ। मनु देहि मनंमथ मिलन स्वर्ग ॥
जल कनक बुंद मुष पर विसाल। पुज्यौ कि चंद मनों मुत्तिमाल ॥ ३७३ ॥
कुंकुम सु नीर कुटि लग्यौ चारु। नग रतन धरे मनु हेम थारु ॥
उर बीच रोमराजीव रेष। गुरु राह मेर मधि चल्यौ भेष ॥
छं० ॥ ३७४ ॥ रू० ॥ ११३ ॥

---

११३ पाठान्तर:—छंद पद्धरी। क्राडंत यमुन। सुदरि। प्रापत। सत षट। सत षट्ट। वरष। वाल। किसैार। किसोर। जैानी। जु। ससिर। तैारि। अरिन घरि। पांनि। जैारि। मज। सिसि। चित। चैारि। धरें। धरै। अबर। मिलैत। मिलित। धार। अधिक। टृति। वृति। वाम। वसन। चहि। कैाट्टि। कांम। वाल। भावरि। दैस। निकरिय। पट्ट। लैस। कीसल। कनक्क। वैलि। वलिय। कंद्दम। कैलि। लटंकै। लटके। वाल। वैनिय। सैाहै। सोचै। दुति। विच। बिचि। जानै। रहस। जैार। जवनका। उट। उद। नचै। चकैार। मांनैा। मानैा। दुति। द्रपनह। व्यैाम। निचैाल। निचोल। स्यांम। हलिय। सैाम। कैस। विटीय। विसाल। बिंध्यैा। बंध्यैा। सैाम। सैाभा। विसाल। पांनि। अरध। देंहि। दैाहि। औपमा। उपमा। बरनेंति। वरनैति। नैहि। नेह। सेसबसु। पांनि। जुवन। अरघ। मन्यें। मनैा। दैहि। मिलत। स्वरग। नग कनक। वुद। पुज्यैां। मनैा। मनैां। मुक्तिमाल। कुंकम। कुकम। कुट्यैा यु चारु। रत। धरै। मनों। हैम। उर वीच। उठोस। रैामराजीव। रैष। मैर। भैष ॥

दूहा ॥ जहां पत्तवर क्रष्ण गुरु। चढि तमाल हरि वस्त्र ॥
मानहु सुंदरि अंग वर। करत सुमित्त पवित्त ॥ छं० ॥ ३७५ ॥ रू० ॥ ११४ ॥

कवित्त ॥ पीत वस्त्र सु निकंत। जलालंबन तन दुति दुरि ॥
दीपक करि पुंडरिक। द्रिग्ग लगि गुंज सुत्ति हरि ॥
क्रिसन त्रिभंगी तन्न। धस्यौ किस्सोरति रूपं ॥
दिष्ट वाम सैा कोटि। मोह माया तन ओपं ॥
आनंद कंद जुग चंद वद। वृंदावन वासी विहर ॥
दै वसन रसन तुट्टनन करि। देहि गारि तिय नंद पर ॥
छं० ॥ ३७६ ॥ रू० ॥ ११५ ॥

कुंडलिया ॥ धुनि वंसी सुनि सुनि श्रवन। चक्क चक्कित चित पाहि ॥
मन माया की पुत्तरी। रही स्वामि तन चाहि ॥
रही स्वामि तन चाहि। मदन दावानल बढ्ढी ॥
मीन तनं तन फिरै। अवल व्याकुल भइ गढ्ढी ॥
चित जल रजि पग परै। जलसायी सु सरूप सुनि ॥
निगम प्रमोद मृणाल (हरि *)। सो भइ वंसी वैन धुनि ॥
छं० ॥ ३७७ ॥ रू० ॥ ११६ ॥

दूहा ॥ वरषि कदम्म सु वन्न चढि। लज्जित बहु वर बाल ॥
हथ्थ जोरि सम सो भई। प्रभु-बुल्ले वक्कपाल ॥
छं० ॥ ३७८ ॥ रू० ॥ ११७ ॥

---

११४ पाठान्तर:—दोहा। तहां। पतैवर। चटि। मांनहुं। मानहुं। सुंदर। वरत। सुमित। पवित ॥

११५ पाठान्तर:—कवित। कवित्तः। जलालंवत। करी। पुंडरीक। द्रिग। गुत्ति। हरिः। मुत्ति हरि। क्रिसल। तनं। किसैाकिरति। किसोरति। दिष्टि। वांम। कोटिचैा। सोह। ओपं उपं। बद। विहर। तुट्टंनिम। तुटनिम। दैहि। दैंहि ॥

११६ पाठान्तर:—कुडलिया। वंसी। चकं। पाइ। पाय। मनि। फुत्तरो। फूतरी। स्वांमि। दढी। तिनंतन। फिरैं। अवल। भई। हुई। गठ। लत। लज्जति। परें। जल सु हंस रूपंह सुनि। प्रमोद निगम। मृताल। * अधिक पाठ। सो। वंसी। वैनि। वैनं ॥

११७ पाठान्तर:—दोहा। वरपि। कमोद। श्रवंन। लजित। वर। हय। जोरि। सो। भइ। बुलल्यो। भुलै। भूलै। कुपाल। वक्कपाल ॥

दूहा ॥ चढि कदम्म बुल्ले सु प्रभु। मधु रित मिष्टत वानि ॥
बंधि बसन कर कन्ह बर। लेहु न सुंदरि आनि ॥
छं० ॥ ३७९ ॥ रू० ॥ ११८ ॥

ब्रजपति ब्रजलालनि कही। रमे रमन इक काल ॥
काम अरथ करि सुंदरी। घेनन मुक्कै बाल ॥ छं० ॥ ३८० ॥ रू० ११९ ॥

दूहा ॥ थुति पानी जुग जोरि करि। फिर लग्गी चिहुँ पंति ॥
मानों राहैं बंधनह। सोमहि पारस कंति ॥
छं० ॥ ३८१ रू० ॥ १२० ॥

दूहा ॥ इह कालिंदी कदम चढि। लैन चीर सब नारि ॥
प्रभु बैठे पातन पतन। मानहु ग्रह पति मारि ॥
छं० ॥ ३८२ ॥ रू० ॥ १२१ ॥

दूहा ॥ तट कील्ले पीले वसन। रतन छतन छुँटि छित्त ॥
इल अपक्कर सरवर रवन। भई भ्रम्म मन मित्त ॥
छं० ॥ ३८३ ॥ रू० ॥ १२२ ॥

कवित्त ॥ अरध बिंब जल अरध। नहिन वस्त्रं छिति कारिय ॥
मनौ षंभ अहि कील। किद्ध छित्तन व्रत धारिय ॥
कितक जोरि कर जुग्ग। कितक नम्री तन तारुन ॥
कितक कूह मुहु कीन। कितक मन मध्य सु वारुन ॥
तरु पत्त गत्त निय वसन करि। सुनि ब्रह्मा संकर हस्यौ ॥
तिन टेर बेर बंसी बजिय। रास कील माधव रस्यौ ॥
छं० ॥ ३८४ ॥ रू० ॥ १२३ ॥

---

११८ पाठान्तर:—बुलै। स। मध। वांनि। बानि। वसन। कान्ह। चर। लैहु। आनि ॥

११९ पाठान्तर:—व्रजलालति। रमै। कांम। करी। मुक्कै। मुकै। वाल ॥

१२० पाठान्तर:—पुति। पांनि। युग। जोरि। कर। फिरि। लगी। विहुं। मनो। मांनों। राहु। जु। सैाम कि। सोम कि। पारस पंति ॥

१२१ पाठान्तर:—कालिंदि। कालिद्री। कदंम। लैंन। बैठो। पातन। पवन। मांनहु ॥

१२२ पाठान्तर:—कीलै। पीलैं। छुंटि। छुटि। छित। सुमन। भईय। भ्रम। मित ॥

१२३ पाठान्तर:—कवित। छित। कारीय। मनैां। मनों। छितन। वृत। धारीय। जोरि। युग। जुग। तारन। मनमथ। यत। गत। शंकरि। तिन बेर टेर। बंसि। वजिय। भाव ॥

कवित्त ॥ तह उप्पर हरि चल्यौ । सबै सपियन मन संध्यौ ॥
कंल चाम तप पल्यौ । इन्द्र आसन मन बंध्यौ ॥
ब्रह्मा मन उल्हस्यौ । रुद्र रुद्रासन रष्यौ ॥
ससि कालह षल भल्यौ । दैत दारुन बल दिष्यौ ॥
सुर सज्जि बज्जि गोपह सरस । अति आकर्ष नवेस सुर ॥
रचि रूप भद्द तह अद अली । मनि दामिनि गोपिय सु घर ॥
छं० ॥ ३८५ ॥ रू० ॥ १२४ ॥

दूहा ॥ चल्यौ राह कैलास पर । फिरि राका चिहुँ चक्क ।
सुरत सथ्य ध्वहि परत नष । चढि कर्दम रस रक्क ॥
छं० ॥ ३८६ ॥ रू० ॥ १२५ ॥

दूहा ॥ फिरि गोपी चिहुँ मग्ग हरि । कारन रास रस रंग ॥
इक इक कन्ह अनंग दल । बिच बिच सुंदरि अंग ॥
छं० ॥ ३८७ ॥ रू० ॥ १२६ ॥

कवित्त ॥ अप्पि वस्त्र कहि रमन । रास मंडल अधिकारिय ॥
एक एक बिच गोप । कृष्ण एकह बिचारिय ॥
थुत्ति पत्ति वर बंध । मंच चावद्दिसि जोरहि ॥
मनौ इक्क घन मद्ध । विज्ज कुंडलि संकोरहि ॥
वर फिरति सुवर दंपति दिपति । दंपति कुंडलि मंडि करि ॥
सुझ्झै न अंग बिय अंषि कैं । ठौर नहीं इक आंषि भरि ॥
छं० ॥ ३८८ ॥ रू० ॥ १२७ ॥

---

१२४ पाठान्तर:—तर । ऊपर । हर । सबें । सपीयन । इद्र । इल्हसौ । उलस्यौ । शशि । भस्यौ । दैत । सजि । बजि । आकरषनवैस । भद्द । अलि । मन । दामिन । सुं । हरि ॥

१२५ पाठान्तर:—दोहा । रीहु । विहुं । चहु । चक । सथ । परन । नव । रकि । रषिक्ष । रक्ष ।

१२६ पाठान्तर:—गौपी । चिहु । मग । हरी । करत । बिचि । विचि । सुदरि ॥

१२७ पाठान्तर:—कविता । अधिकारीय । बिचि । गौप । विचारीय । थुति पति । चायदिसि । जोराहि । मनौं । इक । थन । मधि । धि । बिजहि । कुंडल । सकोरहि । वर । फिरत । सुझै । कै । ठोर । वौरि । नही । अंप । करि ॥

दूहा ॥ पावस रितु बित्तीत हुअ। सरद संपतौ आइ ॥
दिन आयौ सुंदरि रमन। सुवच सुबंसी गाइ ॥
छं० ३८९ ॥ रू० ॥ १२८ ॥

दूहा ॥ सरद राति मालति सघन। फूलि रही बन बास ॥
दीपक माला काम की। हरि भय मुक्किय चास ॥
छं० ॥ ३९० ॥ रू० ॥ १२९ ॥

पद्धरी ॥ उग्गिय मयंक कंदर्प रूप। दुरि गयौ तंम बिन क्रित्ति भूप ॥
द्रुम द्रुमति भार फुल्लि लता साज। जनु भार नंमि गुरु राज लाज ॥ ३९१ ॥
उज्जास बध्यौ धवलंत छेह। सुझ्झै न हंस हंसनिय देह ॥
कुरलंत सुनत धावै न पाइ। अप अप्प तेज सहजै समाइ ॥ ३९२ ॥
पावै न पुप्फु अलि लहै वास। ज्यौं अंधचीय चाहंत भास ॥
अप धरिय वस्त्र पाईन जाइ। ढूंढंत हला पावै सु पाइ ॥ ३९३ ॥
नव बधू सजत भूषन सँवारि। ससि बढी किरन अति तेज तार ॥
म्रगतिह्न भई उर मुत्ति माल। भुल्लै चकोर ससि नैन चाल ॥ ३९४ ॥
कुरलंत हंस चुन लह्नि सार। सुझ्झै न नैन गहरत्त माल * ॥
नाछिच छिपिग ससि क्रन प्रताप। उज्जास आप घन मार चाप ॥ ३९५ ॥
सुझ्झै न दंत गज इन्द्र धार। कामिन कटाछ बल बुद्धि चार ॥
नागिनी भद्र गुन गरुअ अंग। दिष्षै न पत्ति मन भइय पंग ॥ ३९६ ॥
गजराज इंद्र दिष्षै न तथ्य। मीडंत मष्षिका जेम हथ्थ ॥
भए गुनित गाव अति सेत चार। नव बधू मुष्ष इष्षै कुमार ॥ ३९७ ॥

---

१२८ पाठान्तर:—दोहा। ऋतु। रित। वितीत। भय। आय। अप्पो। सुवचं। गाय ॥

१२९ पाठान्तर:—फुलि। फुल्लि। वन वास। हर। मुकिय ॥

१३० पाठान्तर:—रंद्रय। गयौं। तम। भूव। गुर। उजास। बंध्यौ। वध्यौ। छेह। सुझै। हंसह। हंसिनीय। हंसनी। क्रुरलंत। धीवै। पाय। अप्प अप्प। अप अप। तेज। समाय। पुफ। लहैं। ज्यौ। ज्यौं। अधचीय। धरीय। वस्तु। जाय। ढुंढत। पाय। वधु। वधू। भुषन। संवार। संवारि। बढि। किराने। तेज। मृगत्रिष्णा। मृगतृष्णा। भइ। मुक्ति। मुति। भजै। भुजै। चकोर। नेंन। क्रुरलत। क्रुरलंत। लहित। सुझै। नैंन। गहरत। * सं० १७७० "में सुझैं न दंत गहरत माल" पाठ है। नाषित्र। क्रंन। उजास। आपि। वाप। सुझै। सुझैं। कामिनि। कांमिन। कटाछि। बुधि। विचार। नागिनीय। गुरुअ। दिषै। पति। भईय। इंद। दिषै। तथ। मषिका।

बाजा प्रताप सुप सुभत बार । सो भई गंग धारान धार ॥
हारीति रास करि आस पूर । मन वंछि चियन दीनो हजूर * ।
छं० ॥ ३९८ ॥ रू० ॥ १३० ॥

दूहा ॥ सो वंसी बज्जी बिषम । सैारस वंसी पाय ॥
ब्रह्मादिक सनकादि सिव । रस तन बज्जै गाय ॥
छं० ॥ ३९९ ॥ रू० ॥ १३१ ॥

मोतीदाम ॥ सुने सुर बाल बिलासत सद्द । तजे ग्रिह काम पियार समद्द ॥
परे घन भेद सु वच्च प्रमान । चितै कुइ आन कहै कुइ आन ॥ ४०० ॥
चले मनु ते चिय भुल्लिय देह । सती सत जानि चले तव नेह ॥
छिनं छिन अंगन तापन जाय । मनो सव की तडिता चमकाय ॥ ४०१ ॥
भयो तन स्वंद प्रकंपि जँभाति । ठगी मनु म्हारि ठगोरि सिषाति ॥
तजे ग्रह काम मनो ग्रसि काल । रची बिरहानल के बसि बाल ॥
छं० ॥ ४०२ ॥ रू० ॥ १३२ ॥

दूहा ॥ कै स्यामा किस्सोर कै । कै पैागंड प्रमान ॥
रसै रसिक रस रमन कों । चल्लि वंसी धुनि कान ॥
छं० ॥ ४०३ ॥ रू० ॥ १३३ ॥

ज्ञेम । हय । भइ । गुनीत । स्याह । सेत । वथु । दृष्प दृष्पे । मुप । दूपे । प्रतांम । वार । सो । भइ । रास । पुरः । पूर । वंछिय । हजुर ॥

* इस "हजूर" शब्द को यहां कवि ने गोपियों के परम प्राण वल्लभ प्रेयस् श्रीकृष्ण के लिये प्रयोग किया है । उस को मुसलमानी भाषा के पक्षपाती लोग अरबी "हुज़ूर" शब्द का अपभ्रंश होना अनुमान करैंगे किन्तु मैं उसको संस्कृत "सजुष्" से बना हुआ हिन्दी भाषा का शब्द मानता हूं । इस के संस्कृत–योनि–वाला होने के विषय में मैं इस दशम समय की उपसंहारिणी टिप्पणी में अपनी सविस्तर और सतर्क सम्मति प्रकाश करूंगा अतएव पाठक इस के विषय में अधिक वहां अवलोकन करैं ॥

१३१ पाठान्तर:–दोहा । सो । वंसी । वजी । सोरस । पाई । सिवं । रसनन । वजैं । गाई ॥

१३२ पाठान्तर:–मैातीदाम । सुनै । विसालत । तजै । ग्रह । कांम समद परै । भ्रैद । सुवचन । प्रमांन । चितें । कोई । कैाइ । कोइ आंन । कैाइ । कोइ । आंन । चलै । मनैं । त्रीयन । भुलीय । भूलीय । देह । जांनि । चलै । नैह । छिन छिन । अंगन अंगन । जाइ । झमकाई । स्वेद । जंभाति । ठगी । मनो । मनैं । मूर । मुर । ठगैारी । सियाति । गृह । कांम । मनैं । मनो । तैा । कै । वसि ॥

१३३ पाठान्तर:–दोहा । के । स्यांमा । किसैार । किसोर । के । के । पंगाड. । पेगांक । प्रनांम । कैा । कैां । वंसी । कांन ॥

दूहा ॥ सुत पति गुरजन बंचि वर । तजि ग्रिह काम प्रमान ॥
धुनि बंसी संभरि स्रवन । चलि सुंदरि तजि प्रान ॥
छं० ॥ ४०४ ॥ रू० ॥ १३४ ॥

दूहा ॥ सजि सिँगार नग नग उदित । मुदि मजूष ससि हीन ॥
मुदित दीप राका दिवस । काम कामना कीन ॥
छं० ॥ ४०५ ॥ रू० ॥ १३५ ॥

दूहा ॥ चंद दरस गोपी बदन । गयौ समीप सु सज्ज ॥
धरक हीन तन छीन भौ । कला षोडसी भज्ज * ॥
छं० ॥ ४०६ ॥ रू० ॥ १३६ ॥

चौपाई ॥ फिरि फिरि चंद चंद बिचारै । ग्रैन गैन उप्पम बल हारै ॥
घटि बढि पंच दिसा फिरि आयौ । कवि मुष तौ सामित्त करायौ ।
छं० ॥ ४०७ ॥ रू० ॥ १३७ ॥

कवित्त ॥ नगनि जोत उद्योत । बहुत सोहै बालं तन ॥
बिंद म्रगमद रज्जि । तिलक चिलकै भालं घन ॥
अंग अंग की क्रांति । बाल ससि जोति प्रगासी ॥
कामी म्रग मारनैं । तिलक कैसार हगासी ॥
जग जोति जुवति जौवन बनिय । कनिय ओर कामिनि कहिय ॥
व्रजनाथ साथ गोपी मिलिय । राग रंग बंसी लहिय ॥
छं० ॥ ४०८ ॥ रू० ॥ १३८ ॥

---

१३४ पाठान्तर:—बंवि । वर । ग्रह । प्रमांन । बंसी । श्रवनं । सुदर । पांन ॥

१३५ पाठान्तर:—तजि । सिंगार । मयूष । शशि । सुदित । कांम ॥

१३६ पाठान्तर:—दरसि । सज्जि । भज्जि । सजि । भजि ॥

* यह रूपक बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है ॥

१३७ पाठान्तर:—अरिल । अरिल्लः । चंद वंद । विवारै । ग्रैंन । गैंन । ग्रंन । गेंन । उपम । हारे वढि । सामित । कहायौ ॥

१३८ पाठान्तर:—कवतः । कवितः । यौति । ज्योति । उद्योत । सोहै । बालपन । बिंन । विन । मृग । मृगद । रजि । तलक । तःलकि । वाल । सजि । जौति । प्रकासी । प्रागासी । कांमी । मारनें । हगांसी । जौति । युवति । जोवन । बनिक । ओर । व्रजनाथ । गौपी । राम । वंसी । बंसीय ॥

चंद्रायना ॥

कमलनि चंपक चारु, फूल सब विद्धि फल। सरद रित्त सलि नील, मरुत्त चि वद्ध चल॥
भमर टोल झंकार, उडग्गन छिप्प छिप। ललिन चीभंगी मद्धि, सबै लहि दीप त्रप॥

छं० ॥ ४०९ ॥ रू० ॥ १३९ ॥

जंगतपत्ति रतिपत्ति प्रगट्टय मध्य मन। गोपि असोकति कंगुर कंचन पंति जन॥
वाल सुप्प कवि चंद कि कंगुर चंद वनि। कंन्ह विराजत वीच, सुमेर सु चंद तन॥

छं० ॥ ४१० ॥ रू० ॥ १४० ॥

दूहा ॥ दे कपाट लक्की अवल। भइ विहवल उडि हंस॥
सहिय गोपि सुंदरि सकल। रस लुट्टैं वर वंस॥

छं० ॥ ४११ ॥ रू० ॥ १४१ ॥

कवित्त ॥ जदपि सु पति धन हीन। हीन जीतेस रोग वसि॥
व्रिद्ध कुष्ट विन रूप। हीन गुन्नेस काम नसि॥
गुंगा उध सुर अवन। विकल मति तामस धारी॥
ब्रह्म हत्यानि सम्मूह। पुरुष गुन तदपि विचारी॥
उडगन सम्मूह तप्पत जदपि। तदपि सुक्कि नन पत्ति रहि॥
जं जोग भोग पति संग वर। त्रियन अंम उर गाह रहि॥

छं० ॥ ४१२ ॥ रू० ॥ १४२ ॥

कवित्त ॥ पति मुक्कै सुनि पत्ति। वाल मुक्कै लड्छिय वर॥
पति चित जो त्रिय क्रित्त। मान मुक्कै सु मोह धर॥

---

१३९ पाठान्तरः—चद्रायना। चंद्रायणाः। चारु। फुल। सवै। विधि। रित। रिति। मरुत। विधि। चलि। भवर। टोल। उडगन। छिप। त्रिभंगी। मधि। सबै। सवैं। भ्रपा॥ जो आज कल पवंगम नाम से प्रसिद्ध है वह यह चंद्रायना २१ मात्रा ५ ताल और ११ + १० यति का छंद है॥

१४० पाठान्तरः—जगतपति। रतिपति। प्रगटय। गौपी। गोपी। यसोकति। वाल। वनि। कन्ह। विराजित। वीच। मेरु। मेरु। तनि॥

१४१ पाठान्तरः—दोहा। देवपाट। दे किपाट। रुकिय। अवल। भई। विहवल। गौपि। गोप लुंट्टै। लुट्टै। वर वंस॥

१४२ पाठान्तरः—कवित। कवित्तः। यद्यपि सुत पति धन हीन। जुतेस। जुतेस। रोग। वंसि। वसि। वृद्ध। वृध। कुंष्ठ। विन। गुण सठि। गुन सठ। कांम। चिकल। समुह। गुण। विचारी। समुह। तदपि। मुकि। पति जोग। भोग। वर। भ्रम। भ्रंम॥

१४३ पाठान्तरः—मुक्के। पति। मुके। लछिय। जो। त्रीय। क्रित्र। मांन। मुके। स।

जीव हित्त सुप चित्त। देषि जीती धर मुक्के ॥
लाज जीति गुरजन (सब्ब*) ह। मोह माया चित रुक्के ॥
सा अद्ध काम कह कह करै। भ्रंम अभ्रंमन दिष्षई ॥
चाहंत सब्ब वंसीय सुर। अंध काम नन विष्षई ॥
छं० ॥ ४१३ ॥ रू० ॥ १४३ ॥

चौपाई ॥ जिन आराध्यौ काम विनासं। गली गली वामा सुध नासं ॥
बनी रमंत रूप रस रंगं। अंकुरि बर केली मद नंगं ॥
छं० ॥ ४१४ ॥ रू० ॥ १४४ ॥

॥ व्रद्धनाराज ॥

रमंत केलि कंह्न वाम चंपियं छतीसयं। बिरीज कन्ह हथ्थ वाम लिज्जियं दुती जयं ॥
चमंक्किता तडित्त मेघ मद्धि जोति ठाहरी। दुती उपम्म चंद की कलं † कलंकता हरी ॥
विराज प्रीत पीत वस्त्र दंपती सु नैन यौं। तडित्त मेघ मध्य मौज इंद्र कौ धनुन्नयौ ॥
छं० ॥ ४१५ ॥ रू० ॥ १४५ ॥

गाथा ॥ ग्रब्ब आदि लघु प्रेम। जं जं चित्तम्मि प्रेम अनुसरियं ॥
अप्पानं ऊ रहितं। मानं कीअ हित्त ऊ पुरुषं ॥
छं० ॥ ४१६ ॥ रू० ॥ १४६ ॥

मोह। हित। मुप। हित। जिती। मुकैः। * अधिक पाठ। मुह। मोह। रुके। ध्रम। अध्रम। दिषइ। दिषई। सब। वंसीय। कांम। विपई। विपइ ॥

१४४ पाठान्तरः—अरिल। छंद। कांम। विनास। विणासं। गलिय। वासं। बनि। बनि। रंमत। रगै। रंगैं। अंकुर। वर। कैलि। मदमंगे। मगैं ॥

१४५ पाठान्तरः—छंद वृद्धिनाराचः। कैलि। कन्ह। वांम। चंपीय। चंपीयं। वी। बि। रीयु। कुन्ह। हथ। वांम। लिजयं। लीज्जियं। हुती। चमकिता। तडित। तढित। मैघ। मधि। जोति। विराजि प्रीति। चीत। प्रीत। दंपाति। नैंन। यो। यो। तडित। मैघ। मधि। कौं। धनु। नयो। नयो ॥

† इस शब्द का प्रयोग विदित करता है कि कवि संस्कृत पढ़ा था और भागवत के "जगौ कलं वाम दृशां मनोहरम्" स्कं० १०। २९। ३ के अर्थ और भाव में उसने उसे यहां प्रयोग किया है ॥

१४६ पाठान्तरः—गाह। यब। यव लहु। चित्तंमि। प्रेम। अनुसरीयं। अप्पांन। अप्पांनं। उं। उ। मांन। हित। उ। उं ॥

दूहा ॥ रही रही चैां कन्ह ढिग । चल्यौ चलन नह जाइ ॥
मो इच्छो प्रिय प्रेम वर । लै चलि कंध चढ़ाइ ॥
छं० ॥ ४१७ ॥ रू० ॥ १४७ ॥

गाथा ॥ वाला रत्त सुजानं । ता चित्तं करन लोपनं नथ्थी ॥
रत्तं वाल सुजानं । अप्पानं दाहए अग्गी ॥ छं० ॥ ४१८ ॥ रू० ॥ १४८ ॥
वष्षे गुन गाहानं । जं गुनप्पि मांइ वंधए चित्तं ॥
हीनं सूर कमोदं । औगुनं जुता इकं ताई ॥ छं० ॥ ४१९ ॥ रू० ॥ १४९ ॥

गाथा ॥ दुद्धं सक्कर जुत्तं । विनै सहितं तुरूव साधिक्कं ॥
पंथं निगम सु भ्रंमं । ते वाला देव मुकंदं ॥ छं० ॥ ४२० ॥ रू० ॥ १५० ॥

दूहा ॥ चित्त स्वामि तन वाम तन । जड़ भौ मन गुन जड्ड ॥
गोवरधनधारी सुमन । अरु गोवरधन चड्ड ॥
॥ छं० ॥ ४२१ ॥ रू० ॥ १५१ ॥

संषेपक जंपी सु कथ । माधव माननि मझ्झ ॥
जो चित हित्त विलंवियौ । (सो *) हरि हर विघ्घन सुझ्झ ॥
॥ छं० ॥ ४२२ ॥ रू० ॥ १५२ ॥

इस रूपक के छंद के विषय में सर्वत्र यह ध्यान में रखना चाहिये कि कहीं तो इस को गाथा और कहीं गाहा नाम से वर्णन किया है। वास्तव में यह छंद वह कहाता है कि जिसे को संस्कृत में आर्य्या कहते हैं। इस के अनेक भेद हैं किन्तु विशेष करके मात्रिक छंद आठ ताल और १२+१८=३० मात्रा अथवा १२+१५=२७ मात्रा का होता है। चंद कवि के इस महाकाव्य में इस छंद में विषमता के भेद भी दृष्टि पड़ते हैं अर्थात् कहीं २ उस के दूसरे और चौथे चरण १५ वा १८ वा १६।१७ आदि मात्रा के विषम भी होते हैं॥

१४७ पाठान्तर:-दोहा। दूहाः। हो। है। जाय। मै। इछो। इछो। प्रेय। पेम। "तो बूंदीवाली में अधिक पाठ है। लें। चढाय॥

१४८ पाठान्तर:-गाहा। रत्न। रत। चितं। कर न। लोपनं। नथि। रतं। सु जांन अपानं। दाहये। अग्गि॥

१४९ पाठान्तर:-चषे। चषे। गुण। गुणपि। गुनपि। माइं। माइं। मांइ। बंधए। औगुण। औगुन। जुत्तां। जिता। ताइ॥

१५० पाठान्तर:-दुद्धं। दुग्द्ध। सकर। युतं। विनय। चहव। साधिकं। पंथ। ध्रंमं। वाला। मुकंद॥

१५१ पाठान्तर:-दोहा। चित। स्वांमि। तवांम। भो। जड। जडः। गोवरधनधारी। गोवर्द्धन। चड॥

१५२ पाठान्तर:-संषेपक। जंपिय। जंपीय। मांननि। मझ। जो। चित्त। हित। विलंबियो।(सो *) बूंदीवाली और सं० १७७० की पुस्तकों में अधिक पाठ है अन्य में नहीं। विधिन। सुझ॥

चोटक* ॥ तन सीथल त्रं मन पंग बलं । जमभाति प्रस्वेद प्रकंप ढलं ॥
फिरि बैठि वधूवर रंग मिलं । जँपयौ सु कह्यौ व अनंग वलं ॥
॥ छं० ॥ ४२३ ॥ रू० ॥ १५३ ॥

कवित्त ॥ मांग मुत्ति गँग तिलक । चय सु नेचह जट्टालट ॥
सित दुकूल विभूत । नीलकंठी नष तारट ॥
मुष भुवि चंद्र लिलाट । असित वर माल माल मुति ॥
सेत सिषर आसन्न । सब्ब सम दिष्षि सम्म दुति ॥
नह ईस हरिय हरनक्छि अक्छि । आवद्ध जानि अड्डीक रिपु ॥
इहि विधि अवल्ल वर मुक्ति वर । पुरुष अवल मोरंन अपु ॥
॥ छं० ॥ ४२४ ॥ रू० ॥ १५४ ॥

दूहा ॥ अंतर दुष अंतर सुपन । जिय मन सजि गोपीय ॥
दरस देवि व्रजपति सु वर । दिषि आंनन प्रिय कीय ॥
॥ छं० ॥ ४२५ ॥ रू० १५५ ॥

कवित्त ॥ मोरपंष तन जलद । प्रीति कौ सेव देव उर ॥
गुंजहार तुलसी सु मार । उभयै सोभित चंद कर ॥
जलद बीच सुक पंति । भ्रंग रस दंडति लंबी ॥
मुरली सुर नट बाद । चिभंग उर आयत कंबी ॥
नैव्रत आय गोपी हरी । नैन मुदित चामोद चर ॥
चर चारु चारु चर बर चक्रित । सो ओपम्म उचार कर ॥
॥ छं० ॥ ४२६ ॥ रू० ॥ १५६ ॥

१५३ पाठान्तर:—* चौपाई । त्रौटक । सिथल । चरन । चरण । मण । जंभाति । सुस्वेद । प्रस्वैद । टलं । वधुवर । बंधूवर । जंप्यौ । चरणंग । बरनंग ॥

१५४ पाठान्तर:—कवित । मुत्ती । गंग । मैत्रह । जटा । सुत । दूकुंल । दूकूल । विभूत । विभुत । नय्यै । तरट । भुलि । माल । मुत्ति । सैत । आम्रन । सब । दिषि । संम । सम । नह । इस । नछि । अलि । आवध । जांनि । जां । अधिक । अट्ठिक । रिष । विधि । अंबल । अबल । वर । मुंकति । बल । मोरंच । मोरन । अपं । अष ॥

१५५ पाठान्तर:—दोहा । सुयत । सुर्यात । गोपीय । दरसन । दैव । व्रजपति । सु बर । आंनन प्रीय ॥

१५६ पाठान्तर:—कवित । कवित्तः । मोरपंष । पीत । को । जुगहार । तुरसी । उभै सुभित । सोभित । जलदं । वीच । बीचि । भृंग । भृग । रसं । मंडति । डंडति । मुरलि । सुश्वर । त्रिभंग । आंयौ । नैरृत । गोपी । नंन । चारु । वर । सो । औपम । उंपम ॥

दूहा ॥ बंसीवट विश्राम किय । सुरभी गोप सहाइ ॥
मन वंछित दीनौ चियन । सुर सुंदरि सच पाइ ॥
छं० ॥ ४२७ ॥ रू० ॥ १५७ ॥

दूहा ॥ मुक्कि रास मंडल सुचिर । वर अक्रूर सुजान ॥
मानहु मदन वसंत रितु । करि उछव सुस्थान ॥
॥ छं० ॥ ४२८ ॥ रू० ॥ १५८ ॥

॥ विराज ॥

मषं विप्प भत्तं । सुयं स्याम पत्तं ॥ लियं ग्वाल सथ्थं । मधुन्नीर रथ्थं ॥ ४२९ ॥
सुनी जोपि कथ्थं । गही नथ्थ वथ्थं ॥ परी भूमि तथ्थं । मिली क्रष्ण सथ्थं ॥ ४३० ॥
अचिज्जं सुकथ्थं । * * * * ॥ व्रजं भ्रंम भारी । सपते विहारी ॥ ४३१ ॥
सुषे संभ्र्र ओपं । व्रपं भेस रूपं ॥ कियं केस मद्दं । सुनी कंस नद्दं ॥ ४३२ ॥
सतं सत्त साधी । सुधं चाप आधी ॥ सुअं माल मंडी । प्रजापाल दंडी ॥ ४३३ ॥
गयं दीस पुत्तं । अक्रूरं पवित्तं ॥ कथं कन्ह लग्गं । अहो मात भग्गं ॥ ४३४ ॥
रथं हेम सज्जं । चयं चक्र गज्जं ॥ सिरं कीट मंड्यौ । उरं माल पंड्यौ ॥ ४३५ ॥
न्नपं वाच मानं । इहं जीव ठानं ॥ व्रजे नंद रानं * । तहां जाइ आनं ॥ ४३६ ॥
वियं पुत्त चैनं । वसुद्देव ऐनं ॥ सिता स्याम गत्तं । तहां देव पत्तं ॥ ४३७ ॥
व्रजं ग्राम तातं । अजं देव आतं ॥ ह्रदै जग्य सद्दं । लियं उच्च वुद्दं ॥ ४३८ ॥
तुसं रूप चायं । करौ अज्ज भायं ॥ रथं जोति जायं । चितं चित्त तायं ॥ ४३९ ॥
भलै भाग मातं । ह्रदै चित्त रातं । व्रजे व्रज्ज मग्गं । अयं क्रूर लग्गं ॥ ४४० ॥

---

१५७ पाठान्तर :–दोहा । वंसीवट । विश्राम । गोप । सहाय । नृपन । सुंदर । सचि । पाय ॥

१५८ पाठान्तर :–मुकि । अक्रूर । सुजानि । मांनहु । मानु । मांनो । रित । उछव । सुस्थांन ॥

१५९ पाठान्तर :–मंष । प्प । भतं । श्याम । स्यांम । यत्तं । सथं । मधु । मधू । नीर । रथं । सुणी । जोपि । कथं । नथ । वथं । भुमि । तथं । क्रिष्ण । सथं । अनिज्जं । असिजं । कथं । वृजं । भ्रम । संपते । सपंते । संपत्ते । मुषै । ओपं । उपं । उंपं । वृप । वृपोभस । भेस । कीयं । केस । मदं । नदं । मत । साधीः । सुयं । साल । डंडी । गय । पुतं । अक्रूर । अक्रुरं । पवितं । कथ । कन्ह । लंग । लगं । अदो । भंग । लगं । सजं । चक्रं । गजं । काट । नृप । वाच । इद । वृजे । * यह बूंदीवाली पुस्तक में नहीं है । जाय । पुत । चेनी । वसुदेव । ऐनी । श्याम । स्यांम । गतं । पतं । आजं । * यह सं० १६४७, १७७० और बूंदीवाली में नहीं हैं । रिदै । जिग । सद्दं । उंच । बुद्दं । करौं । करो । अज । जोति । वित । चित । भलै । रिदै । व्रजै । वृजे । व्रजं । वृज । मंगं । मयं । लंयं ।

बने ब्रंद पथ्थं। पथे पथ्य हथ्थं। चितं किन्न क्रिष्णं। मृगे तिष्ण दिष्णं॥ ४४१॥
तज्यौ रथ्य भूमी। सिरं रेन भूमी *॥ बने बल्लि बल्ली। विचिचं मुरल्ली॥ ४४२॥
धने दीह अज्जं। धने ब्रज्ज मज्जं॥ धने ब्रज्ज धारी। धने एक्क सारी॥ ४४३॥
धने गोप लक्की। मुरारी सुरक्की॥ उडी रेन संभं। दुजं देव मंभं॥ ४४४॥
व्रषभ्भान पुत्ती। गवं दोदुहत्ती॥ कुसं भीय चीरं। तनं हेम भीरं॥ ४४५॥
करं हेम दोही। निकट्टं ससोही॥ सिरं स्याम सेली। गवं दोह मेली॥ ४४६॥
दिठी दिट्ठ लग्गी। उतक्कंठ भग्गी॥ निधं रंक रासी। लही ब्रज्ज भासी॥ ४४७॥
चरं नस्य मंडं। मनौ हेम डंडं॥ उठे कंठ लाई। मधू माध पाई॥ ४४८॥
चले नंद गेहं। जसोमत्त जेहं॥ कहे दुष्ष सुष्षं। जदूनंद रुष्षं॥ ४४९॥
असूधार नंदं। चरंनस्य बंदं॥ कहे कंस गेहं। सहं भ्रंम छेहं॥ ४५०॥
उतप्पात पत्ते। ब्रजं लोक जत्त॥ भई कंस मुज्जं। करे भोग भुज्जं॥ ४५१॥
रथं चार दृष्यौ। गनै गोप सष्यौ॥ विलष्यौ सुमुष्षं। दस्यौ देह दुष्षं॥ ४५२॥
निसा जग्ग कंडी। उठं चंड चंडी॥ रथं जोति जंतं। वियं बंध मंतं॥ ४५३॥
दधी ग्वाल गल्ली। समं नंद कल्ली॥ कियौ ग्रीव लत्ती। मनौ चंद पत्ती॥ ४५४॥
करेवा विचारं। निरत्ती † निहारं॥ * * *। * * *॥ छं०॥ ४५५॥ रू०॥ १५९॥

दूहा॥ अभिनव विरह बिलाप चिय। दिष्षन नंद कुमार॥
निरगुन गुन बंध्यौ सकल। मनु पंछिय परिहार॥
॥ छं०॥ ४५६॥ रू०॥ १६०॥

लगं। विनं। वनं। वृंद। पथं। पथे। पथ। हथं चित। कीन। किंन्न। क्रष्णं। विष्णं। मृगै। दिष्ण दिष्णं। रथ। भूमि। रैंन। भूमि। *बूंदीवाली में नहीं है। वनै। वलि। वली। वचिन्नं। मुरली। धनै। अजं। धनै। व्रज। मंडं। धनै। वज्जं। धनै एक्क। धनै। गोप। लक्की। सुरक्की। रैन। सभं। दैव। वृषं। वृष। भान। दोदुहनी। चीर। तनम। भीर। दोहा। निकटं। ससोही। करं। श्याम। सैली। गयं। मैली। दिठि। दिठ। उतकंठ। भगी। निध। व्रज। व्रज। चरं निस्य। मंड। मनों। हैम। लाइ। मधुं। मधु। पाइ। चलै। ग्रेहं। ग्रेहं। जसोमति। जसोमति जेहं। कहे। सुष दुषं। यदूनंद। रुषं। अंसुधार। नंद। चरनस्य। वंदं। कहे। ग्रेहं। ग्रेहं। सहधंम। छेहं। उतपात। पतै। व्रज। व्रजं। लोक। जतै। भइ। संक। मुजं। करै। भोजभुजं दिष्यों। दष्षे। गनै। सष्षे। संष्यो। मुष्यो। मुषं। दम्यो। देह। सष्यो। दुषं। जग। उव। जोति। विय। मत। गली। सम। कली। कीयो। लती। ल्लती। मनों। पुती। करैवा। निरती॥ † किसी में भी पाठ नहीं है॥

१६० पाठान्तरः—दोहा। अभिनिव। विरह। विलाप। दिषन। नद। निरगुण। गुण। मनुं। मन॥

दूहा ॥ टगमग नयन सु मग्ग मग । विमग सु भुल्लिय अंग ॥
रथ द्वित सु द्वित सु स्याम द्वित । चित्त लिए मनु संग ॥
॥ छं० ॥ ४५७ ॥ रू० ॥ १६१ ॥

दूहा ॥ व्रज दिय कुसलनि कुसल हुअ । जसु तन कुसलिन काम ॥
विकुरन नंद कुमार चिर । सब भए धामनि धाम ॥ छं० ॥ ४५८ ॥ रू० ॥ १६२ ॥

विराज ॥ व्रजन्नाभि नैंनी । चितं चाप चेंनी ॥ जमुन्नेस कूले । ग्रहं वास भूले ॥ ४५९ ॥
अयंकूर ध्यानं । रथंगं विहानं ॥ चितं चित्त बढ्ढी । इयं बाल पढ्ढी ॥ ४६० ॥
वधे रान कंसं । लगे द्रोए वंसं ॥ रहे जोतिसाई । सु लच्छी सुहाई ॥ ४६१ ॥
हसे द्रिष्पि सुप्पं । हुअो दीय सुप्पं ॥ भए भेपथाई । सिरं सेप साई * ॥ ४६२ ॥
जलं केलि न्यानं । दिठे क्रिप्पा ध्यानं ॥ चतुर्बाह चारं । किरीटी सुहारं ॥ ४६३ ॥
पियं पट्ट कट्टी । गदा चक्र तुट्टी ॥ नियं पानि कंवं । सयं सेन अंवं ॥ ४६४ ॥
अहो धीर जद्दौं । धरं क्रूर सद्दौं ॥ कला कंस केही । नियं ब्रह्म देही ॥ ४६५ ॥
गई चित्त वीरं । रथं पानि तीरं ॥ चले क्रूर संगं । हरे राम रंगं ॥ ४६६ ॥
मधूरी सु दिट्ठी । सुपं स्याम इट्ठी ॥ * * * । * * * ॥ छं० ॥ ४६७ ॥ रू० ॥ १६३ ॥

दूहा ॥ वारी विद्रुम सद्रुस द्रिग । लगि जगि नंद कुमार ॥
मनु विगास फुल्लिय कुसुम । इय कवि चंद उचार ॥
छं० ॥ ४६८ ॥ रू० ॥ १६४ ॥

---

१६१ पाठान्तर :—टग टग । सु । गम मग । मग टग । भुलिय । स्यांम । चित । लये । मनो । मनैं ॥

१६२ पाठान्तर :—वृज । दीय । कुशलन । कुशल । कसल । हुय । कुशलन । कांम । धांमन । धांम ।

१६३ पाठान्तर :—वृजं । नेनी । चैांनी । चैंन । जमुनेस । जमुनेस । रह । भुलै । अयकूर । ध्यांनं । रथग । विहानं । चित । बढी । इय । वाल । पढी । वंधे । कंसी । लगे । लगी । द्रोप । वंसी । रहै । जोतिसांई । जोतिसाइ । लछी । सुहाइ । हसै । दिपि । मुपं । हूअो । सुपं । भैप-थाइ । सिरसेपसांई । जल । कंलि । न्यांनं । क्रप्पा । किप्पा । ध्यांनं । चत्रु । बांहु । कीरीटी । सुंहारं । पीय । पट । कटी । गहा । तुटी । पांनि । पानी । सैन । अहो । जदौं । धरो । धरं । सदौ । केही । निय । देही । गए । चित । वीरं । पांन । चलै । क्रुर । संग । रंग । मधुनैर । मधूरं । दिप्टं । तिप्टं ॥

* किसी २ पुस्तक में यह छंद ४६४ के आगे हैं ॥

१६४ पाठान्तर :— दौहा । बारी । बिद्रुम । कुंमार । मनैं । विगास । कुंलिय । फुलिय । कसम । कुसम ॥

भुजंगी ॥ कहूं अंब विद्रुम्म सीतल्ल छाया। कहूं द्रष्ष वट्टं निहट्टं सिछाया ॥
कहूं कीर कोक्किल्ल नादं सुलीनं। कहूं केलि कप्पोत से बोल भीनं॥ ४६९॥
कहूं बीय बिज्जौर पीयूष भारं। जुटी भूमि लुट्टी मनों हेम तारं ॥
कहूं दाडिमी चूव चिंचन्न चंपी॥ मनों लाल * मानिक्क पीरोज † थप्पी॥ ४७०॥
कहूं सेव देवं करनं कलापं। कहूं पंष पारेव सारो अलापं॥
कहूं नीवनाली अकेली षजूरी। षुले काम भंडे सुहल्ले हजुरी ‡ ॥ ४७१॥
कहूं ताल तुंगे सुचंगे सुचारं। कहूं काम लष्षे सुदष्षे विहारं॥
कहूं चंप चंपी सु कंपीय वातं। कहूं जंबु जंभीर गंभीर गातं॥ ४७२॥
कहूं नागवेली निवेली निवेसं। कहूं मालची घेरि भैरं सुवेसं॥
कहूं पांडरी डार पाछै विहारं। कहूं सेवती सेव भोंनी सुभारं § ॥ ४७१॥
§ कहूं अष्षरोटे निहट्टे तिवेली। कहूं बील विद्दाम कादंम केली § ॥
कहूं केतकी फूल दल्ली विगस्से। कहूं बंस विश्राम गंठी निकस्से॥ ४७४॥

---

१६५ पाठान्तर:- कहुं। अव। विद्रुम। सीतल। कहें। व्रिप। वटंनि। हटं। हट्टं। कहें। कहुं। सं० १७७० की में- कहूं केलि कोकिल सोहिल हीनं। कहूं कोइलं बोल सोहलं भीनं॥ सं० १८५९ की में-कहें केलि कैाथल्ल सो जल्ल भीनं। कहूं कादूलं बोलि सोहिल्ल भीनं॥ कहो बिजोर। बिजोर। पीयुष। जुदी। भुम्मि। लुटी। मनो। कहो। चुत्र। चूत्र। चिंचिया। मनो। मांचिक। मानिक। पीरोज। थपो। कहो। सैव। दैवं। करयां। कहो। पारै। वसारो। अलाषं। कहो। नीव। अकेली। पजुरी। पुले। भंडे। सुहले। हजुरी। कहो। चुंगे। कहो। कैामि। कांम। लषै। दपे। दपै। कहो। वांतं। कहो। जंवु। जंभीरं। कहो। नागवंली। निवली। निवेसं। कहो। कहो। घैर। घेर। भैारं। भोरं। सुदेसं। कहो। पडुरी। पंडरी। पडरी। पंडुरी। छप्पे। पछे। विहारं।

* हिं० लाल (सं० लल् वा लड्) लालरंग का वाचक राधालालजी ने अपने हिन्दी शब्द कोश में माना है अत एव लालरंगवाले रत्न का वाचक भी अनेक प्राचीन कवियों ने प्रयोग किया है॥

† हिं० पीरोज (सं० पिरोज तथा पेरजं तथा पेरोजं=उपरत्न विशेषः) उपरत्न पिरोजा॥

‡ हिं० हजूरी (सं० सजूः वा सजुस्=स with जुष to please) Associated, an associate or companion. With, together with.

§ यह तीन पाद बूंदीवाली पुस्तक में नहीं हैं। अषरोंटं। निहटेत। विद्याम। कहो। कैतकी। कैलि। केली। दली। विगसै। विगसे। बिमसे। कहो। बंस। विश्रांम। निकसै। निकसे। वैर। बैरि। बेर बंद्रीव। पुकारै। कहों। मोर। टेरं। सुहेरं। विहारै। कहों।

कहूं बेर वद्रीव पंपी पुकारं । कहूं मोर टेरी सुभ्मेरी विहारं ॥
कहूं सारसं सारि सारन्न सोरं* । मनों पावसी वुट्टि दादुल्ल रोरं ॥ ४७५ ॥
कहूं सेंसिषंडी सुपंडान फुल्ली । कहूं लुब्भि लोंगी रची वेलि फुल्ली ॥
कहूं अप्प आसोक तें सोक हीनं । दिषे आसिषं रूप तासं प्रवीनं ॥ ४७६ ॥
कहूं दाडिमी पिंड षज्जूर भुल्ली । कहूं मालची मल्ल भर भार भल्ली ॥
हसे स्याम वलभद्द अक्रूर कुल्ली । जहां कूवरी रूप पेषंत भुल्ली ॥ ४७७ ॥
दई मालिया आनि सोदाम दानं । भए रंजकं सव्व सुं हाल कानं ॥
रची मंडली गोप व्रजलोक वासी । गए जग्गसाला तहां धनुष चासी ॥
छं० ॥ ४७८ ॥ रू० ॥ १६५ ॥

दूहा ॥ धनुष भंग कीनौ सु प्रभु । वर वजि गव्व हतीस ॥
विमल लोक मधु पुरि परिय । विहसत स्वामि सदीस ॥
छं० ॥ ४७९ ॥ रू० १६६ ॥

रंग भंग मंडप उथपि । अरु धनुक्क तिन थान ॥
मानौं धान कपाव की । लीला ही हति आन ॥
छं० ॥ ४८० ॥ रू० ॥ १६७ ॥

मधुरिपु मधुरित मधुर मुष । मधु संमत मधु गोप ॥
मधुरित मधुपुर महिल सुष । मधुरित नयन स ओप ॥
छं० ॥ ४८१ ॥ रू० ॥ १६८ ॥

गोष निरष्षत सुभ चिय । रूप सरूप रसाल ॥
भगति भाव हित चित्त धरि । हिये हरष्पहि वाल ॥
छं ॥ ४८२ ॥ रू० ॥ १६९ ॥

सोर । सारान । सारोन । सोरं । मनों । पायसी । वुठि । बुठि । दादुल्ल रोरं । कहो । सै । सुपांन । सुपानं । सुफुल्ली । सुफुली । कहीं । भुलि । लोंगी । वेलि । भुली । कहीं । अप । आसोंक । ते । ते । सोक । दिषै । रूपतामंतआकं । कहो । पिंड षजूर षज्जुर । पुज्जर । भुली । कहो । ममल्ल । मल । भार । भारं । भुंली । भुल्ली । हस्यैं । स्यांम । वलिभद्र । वलभद्र । अक्रूर । कुली । कूंवरी । पेषंत । भुली । दइ । मोलियां । आंनि । सोदाम । रजक । मूहाल । मेहाल । सव । सुनी । सुनिय । गोषी । व्रैजलोक । जिग । जग । जग्य ।

* हिं० सोरं (सं० स्वर) sound, noise, tone, tune.

१६६–१७० पाठान्तर :–दोहा । धनषं । विहोस । वर । भजि । गरु । पुर । परीय । स्वांमि ॥ १६६ । अरु । धनुप । धनुक । थांन । मानों । कयाचि कीं । आनि । १६७ । रिझ । समंत । गोप । मधुपुर । नैंन । सउप । सओप । १६८ ॥ निरषत । सुभि । हितु । चित । हिये हरषहि । १६९ ।

प्रजा प्रसंसत भेट दधि । सत सिर परसत पग्ग ॥
पट गुन प्रभु बलिभद्र सम । हरि मिलि गोचर लग्ग ॥
छं० ४९१ ॥ रू० ॥ १७५ ॥

राज सुराजत मातुलह । मत लहि अतुल प्रचार ॥
कुवलय गज मुह लय मुदित । विदित बली दरबार * ॥
छं० ॥ ४९२ ॥ रू० ॥ १७६ ॥

दिठि दल दिन बालक विहसि । कुसलिय कुसदिव गब्भ ॥
सुत रोहिन रोहित रिसह । दिठ दिग लग्यौ अब्भ ॥
छं० ॥ ४९३ ॥ रू० ॥ १७७ ॥

व्रज सरनागत बसत व्रज । व्रज कहि मंगै सग्ग ॥
हम गज दिट्ट निरष्ययो । निसप उसारहु पग्ग ॥
छं० ॥ ४९४ ॥ रू० ॥ १७८ ॥

रिस लोचन रन रत्त किय । रत्तंमर व्रजपाल ॥
रति रत कंस उदंसि सिष । किस पंचित निय काल ॥
छं० ॥ ४९५ ॥ रू० ॥ १७९ ॥

भुजंगी ॥ सदंक्कारि भूरंग हूरं गरज्जं । अहो बाल बालं निवारं वरज्जं ॥
अयं बाद बद्दं पथं पीलुवानं । ठिहैं ठट्ट नट्टें जुधं जूँजुं आनं ॥ ४९६ ॥
कटिं पट्ट पीतं सिरं स्याम सेली । सिता नील दसनाय इसनाय केली ॥
धरै मोरछलं सुवज्जंत फूलं । हसै विक्कसे मुष्प गेंनं गहूलं ॥ ४९७ ॥
गही सुंड सुंडील षंडी अषारं । नटी जानि बंसी सुचुक्की विहारं ॥
पयं पात भूमी सुभ्भूमी जु आनं । दिठी कंस लग्गी सुबज्जे निसानं ॥ ४९८ ॥

प्रज्जा । प्रसंसंत । भैट । दधि । सत । पंग । पट्ट । गौचर । लग । १७५ । राजुन । राजन । मातुलह । मतु । कुंवलय । गजु । मुदिता । विदती । १७६ । दिनि । विहसि । गभ । रौहिनि । रौहित । रोदित । लगौ । अभ । १७७ । वृज । मंगे । मग । हमन । दिठन । नरपयौ । उपारहु । पग । १७८ । लौचन । रततकिये तक्किये । रतंवर । उदंस । किस । १७९ ॥

* हिं॰ दरबार (सं॰ दर or दरि, A natural or artificial excavation in a mountain, a cave, cavern, a grotto &c. and वार A door-way, a gate.) Hence at door-way or gate. अर्थात् द्वार पर ॥

हतं हंत हंतं हहत्तं सुरष्षं। प्रसिद्धे पुरानं प्रसादं पुरूष्षं॥
दुवं बैर पुब्बं दनं देव पक्छी। मदं जे ह्रिदं ते ह्रिदै जानि लच्छी॥ ४९९॥
हरन्नक्किहारी बिहारी सुगोपं। बिरंनष्षि वैरी जदों जावि कोपं॥
रमे रास क्रिष्णं गजं केलि मंडी। तमं तेज तेजं तपैता चिपंडी॥ ५००॥
हुअं हूह हक्कं सुभाषं सुचारी। अहो साधुसाधं अजुत्तं निहारी॥
किसोरं किसावर्त गातं सुक्रीसं। वपं एस वल्लं मदोमत्त दीसं॥ ५०१॥
छुटे पट्ट पीतं कियं क्रिष्ण रासं। बलीभद्र भद्रं अनूंजा नितोसं॥
तुअं बालबुद्ध न सुद्धं सु देहं। गही पट्ट पंचे सु अच्छै सनेहं॥ ५०२॥
मनों संकला हेम तें सिंधु कुट्टं। गही सिंधु बल्ली [अ + द्र] धपी धाम पुट्टं॥
गहो पुंछ फेरे सिरं तीन वारं। उड्यौ हंस हंसीन भूमी प्रहारं॥ ५०३॥
दुवं बंध दंतं धरे कट्ठि कंधं। लगी श्रोनि छिंछं मनों गुंज बंधं॥
हतें गज्ज गज्जै दुवं मल्ल मल्लं। परी रौरि पौरं प्रसारं बिहल्लं॥ ५०४॥
मिले रंग भूमी बलंरास किल्लं। नवं रंग दिष्टो तनं तेज तिल्लं॥
बदी बाय चानूर मामल्ल जुद्धं। रनं राज अग्या सु मेटौ बिरुद्धं॥ ५०५॥
समं डोरि बंध्यो निबंध्यो निबंध्यो। हमं जोति तेजं मिलं मुत्ति संध्यो॥
छं० ॥ ५०६ ॥ रू० ॥ १८० ॥

१८०—पाठान्तरः—भुरग। रजं। अहो। बलं। बरजं। अय। वदं। पयं पीलवांनं। ठिलें। टिले। ठट। वट्ट। नदै। नटें। ज्वट्टुं। जूंजूं। जुजु। जूजु। कट। कटि। पट। सरं। स्यांम। सैली। वसनाय। कैली। धरा। मोरसलंत। वाजंत क्रूरं। हसे। विकसै। विकसे। भुप। गेंनं। गहूरं। गफूलं। अपारं। जांनि वंसी। सुचुको। पय। भुमी। सुभुंमी। लगी। सुवज्जे। निसांनं। हत। हहतं। सुरषं। प्रसिद्धै। पुरुषं। बैर। पुवं। पुंव। दनु। दनुं। पछी। जै। हूदतै। हूदे। जांनि। लछी। हरनंछि। सगोपं। विरंनबि। वैरी। जदो। कोपं। रमै। तैजनैजंतपैता विपंडी। तपैता। हुंअ। हुंह। हकं। सुंभाषं। सुंचारी। अहो। सांधं। अयुतं। किसोरं। क्रुंसावरत। बलं। मदोमत। छुटै। पट। क्रिष्ण। क्रष्ण। रौसं। अनुजा। नितोसं। तूअं। पट। पंचे। अछे। सनेहं। मनो। मनों। हेमतें। सिघ। सिंघ। छुटं। सिंघ। बली। * अधिक पाठ है॥ धपि। धम। पुट्टं। पुठं। पुछ। फैरे। दुयं। बंध। कठि। कट्ठि। कटि श्रोन। छंछं। मनो। गुज। हते। हतें। गज राजे। गजगज्जे। दुअ। दुअं। मल। मलं। प्रसादं। विहलं। मिलै। भुमी। बल्यं। बल किष्णं। तिनं। तेज। तिष्णं। चाप। पाय। चानुर। मामल। युद्धं। रणं। मैटो। मेटो। विरुद्धं। डोरि। निवंध्या निबंध्या। जोति। तैजं। मुति॥

* हिं० पीलुवानं (सं० पीलु, An elephant and वान, going, moving or driving). Hence an elephant driver.

दोहा ॥ हम बनचर बालक सुब्रज । तुम जुध मल्लनि मल्ल ॥
अपति जुद्ध तुम प्रति करहि। बिहतन होइ न वल्ल ॥ छं०॥ ५०७ ॥ रू०॥१८१॥

प्रथम मत्त गजराज दर । दस सहस्र बल ताहि ॥
सो अग्या बल कीन भैा । लीला ही हति ताहि ॥ छं० ॥ ५०८ ॥ रू० ॥ १८२ ॥

हति रूपति गजराज भैा । मंच सुमंडिय कंस ॥
चानूरह मुष्टिक वलिय । मुकति समप्पन अंस ॥ छं० ॥ ५०९ ॥ रू० ॥ १८३ ॥

कवित्त ॥ स्त्री निकेत तन स्याम । पीत कैा सेव देय दुति ॥
धूंमकेत वर जलद । काम उद्दित सु कोट रति ॥
नयन उदय पुंडरिक । प्रसन अमरीय सुराजै ॥
गुंजहार जंजरित । तड़ित वद्दरि सु बिराजै ॥
नहिं बाल वृद्ध किस्सोर तुअ । धुअ समान पै डिढ्ढरै ॥
पावै न जोग जोगी जुगति । किन गुन तुम गुन बिस्तरै ॥
॥ छं० ॥ ५१० ॥ रू० ॥ १८४ ॥

साटक ॥ किंवा जोग सहस्र कोटित गुना, आवै न ध्यानं उरं ।
नैवानं सनकादि रिष्य बहुलं, नो ब्रह्म कर्म्मं गुरं ॥
किं किं जै बर गोकलेस हरि सो, कष्टं घनं अद्भुतं ॥
किं निर्मोय सु बालयं अभिनवं, नो तोय बानी वदं ॥ छं० ॥ ५११॥ रू० ॥१८५॥

दूहा ॥ पुव्व स्राप सम दिट्ठ करि । वचन ति लक्खिय काज ॥
हर हर बानी देव गुरु । रोकि देव सिर ताज ॥ छं० ॥ ५१२ ॥ रू० ॥ १८६ ॥

१८१–८३ पाठान्तरः–दैाहा । वनबर । वचनचर । बालिक । व्रन । वृन । युध । मल्लन । मल । अपत्ति । युद्ध । युध । होइ । नवल ॥ १८१ ॥ मत । सहश्र । सैा । छांन ताही ॥ १८२ ॥ रुपति । फिर । जहां । मच । कस । चानुरह । मुष्टक । बलियं ॥ १८३ ॥

१८४ पाठान्तरः–निक्कैत । नकेत । स्यंम । स्यांम । को । सैव । रति । धुमकेस । क्कांम । उद्दित । कोट । जंडरीत । बदरीं । नहि । किसोर । तुव । धम्रं । समांन । पैं । हिठ । हइ । जैाग । जोगी । युगति । गुण ॥

१८५ पाठान्तरः–सट्टक । किवा । जोग । कैाटित । गुणा । ध्यां । रिष । नो । ब्रह्मं । करम । कमै । कि । कि । गैाकलैस । सैा । धनं । अंदंबुदः । अदबुदं । निरम्माय । नै । तोयं । बानी ॥

१८६ पाठान्तरः–दैाहा । पुब । श्राप । दिष्ट । वचनति । बचनति । दैव । गुरु । रुकि । दैव ॥

कवित्त ॥ एक समै हरि लच्छि। रोहितह ब्रह्म ब्रह्म सिसु ॥
सनक सनंद रु सनत। सकल रुक्कोसु पवरि उसि ॥
तिन सराप भयौ पतन। वैर आवद्द हरि किन्नौं ॥
हरनकस्स हरनच्छि। हूक्क अवतारह लिन्नौं ॥
अवतार एक सिसुपाल भय। दंतवक्क रुकमनिवयर ॥
रावन्न कुंभकरनह बलिय। चित अवतार सुमंत भर ॥ छं०॥५१३॥ रू०॥ १८७॥

स्लोक ॥ पूर्वशापं समंदृष्ट्वा स्वामिवचन प्रीतये।
क्रोधमुक्तस्त्वाविनाशी पीडितो गजराडयम् ॥
छं० ॥ ५१४ ॥ रू० ॥ १८८ ॥

गीतामालची ॥ गजराज दंतिय अमति कंतिय मद मंतिय कीजयं।
बल कन्द अग्गै करिन भग्गै रोस रंगै नीलयं ॥
फरहंत पीतं वल अभीतं भीम भीतं संजुरे।
गहि दंत षंतिय कंध कंतिय रोस मंतिय उभ्भरे ॥
श्रियषट प्रमानं वल बखानं सेन मानं दुस्तरे।
दिषि कंस सैनं काल ऐनं हथ्थ गैनं उभ्भरे ॥ छं० ॥ ५१७ ॥ रू० ॥ १८९ ॥

भुजंगी ॥ न थालं न बालं किसोरं न तोन्ही। न वृद्धं जुवानं न ब्रन्नं न जोन्ही ॥
हतं हंत हंतं विषं वीर बुल्ली। धरे कंध दंतं रने नेच पुल्ली ॥ ५१८ ॥
बलंतो बलिंद्री बजानं न देवं। न ब्रन्नं न देहं न सेसं न सेवं ॥
मथा भाग भागं जुरं जप्य केवं। दिवं दिष्ट मल्लं सुमुष्टीक एवं ॥
छं० ॥ ५१९ ॥ रू० ॥ १९० ॥

त्रिभंगी ॥ रन रंगे थालं, जेहा कालं, तेहा मालं, चानूरं।
तोसल्ल तिसूलं, मुष्टिक थूलं, हस्त विहूलं, धूसल्लं ॥

---

१८७ पाठान्तर:—कवित। हक। रोहितह। ब्रम्ह ब्रम्ह। रू। रुकैसु। तन। भये। कीनो। हरणाकसप। हरणाकस्य। हरनच्छि। हूंक। लीनौं। हक। भयं दंतवत। रुकमनि। वयर। रावन। कुंभकरनह। त्रिना। त्रितय ॥

१८८ पाठान्तर:—पुर्वे। पुब्ब। श्रापं। दिष्टा। स्वामी। सु। प्रीतयं। मुक्तं। अविनासी। गजराज ॥

१८९ पाठान्तर:—दंतीय। अमत। मद। मंतीय। उभरे। नैनं ऐनं। हथ। गैंने। उभरे ॥

१९० पाठान्तर:—वालं। बजानं। ब्रनं। सूली। देहं। वर्षा। शेसं। जरक। स ॥

रन रंग गतानं, मेछि सितानं, अंग समानं, झम कंते ।
धध धूसर दंते, मन हर धंते, रज विलसंते, बलवंते ॥
षव गझ्झ सतानं, जम सम पानं, बलि बलवानं, बोलंते ।
रन रत वैनं, बहु बल मैंनं, कन्ह समेंनं, उचरंते ॥
आवर्त्तति हल्लं, में पर गल्लं, वज्जन मल्लं, झूझल्लं ।
धर धर थर हल्लं, पीपर पल्लं, अंमर हल्लं, भू भल्लं ॥
वज्जियते सूलं, हस्त विकूलं, गेंने हूलं, गेतूलं ।
गेवर गत्तानं, घन गत्तानं, परि बघ्थानं, मल्लानं ।
धस धम लत्तानं, बहु गत्तानं वजिविन्नानं, उभ्भानं ॥
सक्के घन बल्ले, क्रति धूसल्ले, कीन विहल्ले, झूझल्ले ।
अन रोम रिसल्ले, रंग रिझल्ले, जिन बल झल्ले, धरहल्ले ॥
कसि डोरिय भेवं, हल धर केवं, हवि बत भेवं, दै वीरं ।
चानूरं सक्कं, धरि मुष्टिक्कं, तत गुर बक्कं, बल नीरं ॥
कटि थान परंसं, पोषित कंसं, जानि जुगंसं, गिरिदंते ।
अन पग्ग पुलंते, सास उलंते, मन दम षंते, अनषंते ॥
तरवर संतज्जे, आयत वज्जे, घाये गज्जे, भैभानं ।
दोऊ तन वीरं, जम्म सरीरं, वधि गुनतीरं, विधि भानं ॥
गुरु जन विरुझानं, वद्द असमानं, धर धर थानं, वजिपानं ।
उप्पारे पग्गं, ब्रह्मंड लग्गं, फिरि फिरि जग्गं, सिर भग्गं ॥
फिरि कंसं दिष्षिय, आचिज्ज लष्षिय, जग सहु भष्षिय, तपितानं ।
आतम गुरु पानं, तजि उभ्भानं चंपिय कानं, सिर भानं ॥
उच्चारहि वीरं, बहु व्रत नीरं, जम्म सरीरं, जुग भीरं ।
कसि कसि उत्तंसं, डोरिय दंसं, करि रिपुनंसं, विनुहीरं ॥

छं० ॥ ५३३ ॥ १९१ ॥

१९१ पाठान्तर;-चानूलं । तोसल । त्रिशूलं । विफूलं । सधूलं । समांनं । गज । बलमानं । मेंनं । कंन्ह । समैनं । हलं गलं बजत । मलं । झूझलं । हलं । पीपरि । पलं । अंबर । हलं । भलं । बजिय । भूलें । गैनैं । गतानं । घत्तानं । बथानं । मलानं । लतानं । बहुर । विनानं । उभानं । सकैं । धन । बलैं । धुसल्ले । धूसलैं । भूभलें । दिसल्ले । रिझल्ले । झले । हल्ले । डोरीय । चाणूरं । सकं । धर । मुष्टिकं । बकं । पयंसं । गिरिदंस । अनं अमषंते । नरवर । संतजे । बजैं ।

दूहा ॥ हहकारत मल्लन सुभर। अति बल दिन बल वीर ॥
सुर नर नाग निबद्ध नर। भई कुलाहल भीर ॥
छं० ॥ ५३४ ॥ रू० ॥ १९२ ॥

रसावला ॥ उत्तमल्लं भरी। अत्ति धारं धरी॥ जांनिमत्ते करी। होइहायं घरी॥ ५३५ ॥
घाय बज्जे घरी। गज्जि भद्दों भरी॥ मच्छ फल्लं टरी। भ्रम्म भ्रम्मं धरी॥ ५३६ ॥
मल्ल झुम्भैंहरी। वारि स्वेदं झरी॥ मेघ लग्गं गिरी। हेम कंपं ठरी॥ ५३७ ॥
हीय ता कित्तरी। प्रान पक्कै लरी॥ जानि धक्के धरी। उन्न उन्नं हरी॥ ५३८ ॥
धूरि भूमी भरी। डोर लग्गी ढरी॥ श्रोन सुष्पं झरी। द्रोन द्रुग्गं षरी॥ ५३९ ॥
मुट्ठ चुक्कं परी। राम कामं हरी॥ मल्ल भूमं परी। कंस चासं डरी॥ ५४० ॥
मंच मुक्की मुरी। धाय जद्दों धरी॥ केस षंचै करी। * * ॥
छं० ॥ ५४१ ॥ रू० ॥ १९३ ॥

दूहा ॥ सत्तपुत्त बंधवं सपत। लब्ब असी गनि भृत्त ॥
काम आय बलिभद्र कर। कन्ह कंस नव हत्त † ॥ छं० ॥ ५४२ ॥ रू० ॥ १९४ ॥

कवित्त ॥ राति कंस सुपनंत। कंध दिष्षौ न कंध पर ॥
बर ग्रिद्धव उच्चार। षोज लब्भै न अंग उर ॥
चिन्ह हीन तन चित्त। बीर जग्यौ स्रम षंडे ॥
मुकति बंस मति हीन। रंग मंडप फिरि मंडे ॥
चानूर बीर मुष्टक बलिय। तोसल्लह रन रंग सजि ॥
कलि काल मल्ल कलि काल गति। कलिय काल भंजन सुरजि ॥
छं० ॥ ५४३ ॥ रू० ॥ १९५ ॥

गने। जंम्म। बंधि। विंधि। छिल। छह। उपारें। पगं। ब्रह्मग्र। जगं। दिषिय। लषिय। भषिय। उभानं। चंपय। उहक्कारहि। डोरीय। बिन हंसं ॥

१९२ पाठान्तर:—हहकारति। मलनि।

१९३ पाठान्तर:—मलं। अति। अधि। दुरी। करी। धुरी। मछ। मल। झुझैं। कितरी। प्रांन। पछैं। जांनि धके। ऊन। उनं। द्रुगं। मुठ। चुकं। झरी। मरी। मुकी। यद्दो। * * मेरे पास की किसी पुस्तक में पाठ नहीं ॥

१९४ पाठान्तर:—सत। पुत। भृत। कांम हत ॥

† यह रूपक सं० १६४७ की लिखित पुस्तक में नहीं है और उसके पीछे का सं० १९५८ की में है ॥

१९५ पाठान्तर:—बंधव। उचार। मुगति। चाणूर। मुष्टिक। तोसलह ॥

दूहा ॥ जमुन सपत्तौ कंस हनि। दिस्स विराजत साथ ॥
वर विश्राम विश्राम घट। धनि जदुनाथ सुहाथ॥ छं॰ ॥ ५४४ ॥ रू॰ ॥ १९६ ॥

अरिल्ल ॥ सल्लन मारि पछारति कंसह। बंधव के रिपु कोरि पुनंसह ॥
सूरसेन पुत्तिय सुत छंडिय। उग्रसेन सिर छत्तह मंडिय ॥ ५४५ ॥
जनस धाम वसुदेव देवकिय। किय वरपान प्रसन्न अंसु किय ॥
विप्रदान ग्रहगान सुमंडिय। कवि कविचंद छंद मुष वंदिय ॥
छं॰ ॥ ५४६ ॥ रू॰ ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ हत्यौ कंस केसी हत्यौ। कालग्रहित जिन मात ॥
नंद कह्यौ नन्दादि सौं। जाहु ग्रेह अब तात ॥ छं॰ ॥ ५४७ ॥
जननि जसोदा सौं कह्यौ। राम किस्न संदेस ॥
ह्वां दधि मांषन चोरते। ह्यां हत कंस नरेस ॥ छं॰ ॥ ५४८ ॥
गोधन गोपी ग्वाल सब। सुष रहियो ब्रज वास ॥
दिन दस पाछें आय हौं। मात जसोदा पास ॥ छं॰ ॥ ५४९ ॥
बंसी बेत बषांन बन। गेंद हौंगुरी जोरि ॥
धरियो सवै दुराय कै। लेइ न राधा चोरि ॥ छं॰ ॥ ५५० ॥
अंसुधार अँसुरार मुष। परत नंद सब गोप ॥
जो छांडे अब दीन करि। कतराषे जल कोप ॥ छं॰ ॥ ५५१ ॥
अघ बक धेनक चासतें। अरु दावानल पान ॥
कतराषे इन विघनतें। जमला अरजुन ठान ॥ छं॰ ॥ ५५२ ॥
इह कहि सब अंकन मिले। नंद गोप सब साथ ॥
पगन परत ब्रज जात मग। कहत सुनाथ अनाथ ॥ छं॰ ॥ ५५३ ॥
डग मगि पग पेंडन चले। फिरि चितवै गोपाल ॥
का जाइ जसोदा कहैं। बिना संग ब्रजलाल ॥ छं॰ ॥ ५५४ ॥
जाइ जसोदा सों कह्यौ। रहे राम बलबीर ॥
सुनत जसोदा यों टरी। ज्यों तरु काटे नीर ॥ ५५५ ॥
गोपी गोप गुपाल विन। यों दीषत दीनंग ॥

१९६ पाठान्तर:-संपतौ। विस्व। विश्रांम।

१९७ पाठान्तर:-मालन। जरासिंध। पुतिय। धांम। देवकीय। पांन। अंशु। गृह गाम ॥

कहूं न मन माने निमष। ज्यों मनि बिना भुयंग॥ छं०॥ ५५६॥
सद माषन खाटी दही। धर्यो रहै मनमंद॥
षाइन बिन गोपाल को। दुषित जसोदा नंद॥ छं०॥ ५५७॥
प्रभुमाया फेरी प्रबल। सब लागे ग्रिह दंद॥
पलन सुहाई राधिका। बिन हंदावन चंद॥ छं०॥ ५५८॥

दूहा॥ घर अंगन गायन षिरकि। जमुना जल बन कुंज॥
फिरत उचाटी सी भई। बिन हंदावन चंद॥ छं०॥ ५५९॥
वंसीबट बनबीथिकनि। दधि रोकन की ठौर॥
नैकु न भानैं कहुं न मन। कहों कहां लौं और॥ छं०॥ ५६०॥
लीला ललित मुरार की। सुक मुनि कही अपार॥
ते बड भागी देव नर। जपत रहत नित्यार॥ छं०॥ ५६१॥
नंद तात पत्तौ सु ग्रह। सिसु बसुदेव प्रमान॥
कोइ काल मथुरा सु बसि। चलि द्वारिका निधान॥ छं०॥ ५६२॥
मधु मंडित मधु पुरित मधु। मधु माधुर सु अजोग॥
कवि बरनिय सुरस्वामि को। कहत दसम संभोग॥
छं०॥ ५६३॥ रू०॥ १९८॥

भुतिचाल॥ बाले जसोदा मतिलाले। कंस कालेसुकाले॥
जसोमति नंदा गोप बंदा। कंदो गुठिगो। बाल चंदा॥
हीन बंदो न बंदा। जयो बासुदेव नन्दा॥ छं०॥ ५६४॥ रू०॥ १९९॥

॥ बौद्धावतार की कथा॥

दूहा॥ उतपन कैकट* देस कलि। असुर जग्य जय हारि॥
जय जय बुद्ध सरूप सजि। है सुर सिद्धि सुधार॥ छं०॥ ५६५॥ रू०॥ २००॥

---

१९८ पाठान्तरः—सैं॥ ५४७॥ सुं। मार्यौ॥ ५४८॥ रहीयो। पाछें। आदहों॥ ५४९॥ षठ। गिंद। हिंगूरी। हिगुरी॥ ५५०॥ असुरार। असरार। छांडे॥ ५५१॥ पांन। ठांन॥ ५५२॥ कहा। कहे। विना॥ ५५३॥ सें। यें॥ ५५५॥ विन। दिषत। हीनंग। निषम। विना॥ ५५६॥ मांषन। विन॥ ५५७॥ फेरि। वृंदाबन॥ ५५८॥ परकि। बन॥ ५५९॥ नैकुं। लों॥ ५६०॥ नित्यार॥ ५६१॥ पत्तौ। प्रमांण। निधांन॥ ५६२॥ स्वामि। कों॥ ५६३॥

२०० पाठान्तर। ककट। किकट॥

* श्रीमद्भागवत पुराण में बुद्धकी उत्पत्ति "कीकट" में होनी लिखी हैः—

विराज ॥ जयो बुद्ध रूपं। धरंतं अनूपं ॥ हरी वेद नंदें। दया देह वंदे ॥
पसूहंत रष्षे। कियं सष्पभष्षे ॥ जयं जग्य जोपं। कियं हच्च भोपं ॥
त्रिगंधा विहारं। सुरष्षे दयारं ॥ असूरं सुगत्ती। षहं रष्पिपत्ती ॥
कला संजि कालं। दया धंम पालं ॥ सुरं ग्यान मत्तं। प्रवत्तेसुजत्तं ॥
धरे ध्यान नूपं। नमो बुद्ध रूपं। छं० ॥ ५७० ॥ रू० ॥ २०१ ॥

कल्कि अवतार की कथा ॥

दूहा ॥ कलि कलिंग उतपन असुर। हनी धंम धर भूप ॥
कलि कलिमल सों हरन हरि। कियौ कलंक सरूप ॥
छं० ॥ ५७१ ॥ रू० ॥ २०२ ॥

विराज ॥ भयं भूप लिंगं। अनीतं उतंगं ॥ विपंनी दयारं। अधर्मं विचारं ॥
कलंकं सुकालं। बिया पुक्क आलं ॥ धरा ध्रम्म लोपे। चवं एक रोपे ॥
वधे मेक्क मत्तं। चितं काल रत्तं ॥ जुगं वेद हारी ॥ न ग्यानं विचारी ॥
नयं दान ध्यानं। सुषं जानि मानं ॥ नहो मन्न पूजा। न सोचं अनूजा ॥
न जग्यं न जापं। सवै आप आपं ॥ न देवं न सेवं। अहं मेव मेवं ॥
न गाहा न गीयं। न पत्थं सुहीयं ॥ न ग्रंथं पुरानं। धरायन्न जानं ॥
धरे ध्यान सामं। कियं ग्यान नामं ॥ कलंकी सरूपं। धरंतं अनूपं ॥
हयं स्याम रोहं। किरीटी ससोहं ॥ जुगं बाहु चारं। मनीजोति तारं ॥
कटी पीत पट्टं। महा बिप्प भट्टं ॥ करे षग्ग धारं। विकट्टं करारं ॥
मुठी हेम सेतं। मनों धूमकेतं ॥ करे खग्ग धारं। असूरं प्रहारं ॥
कियं षंड षंडं। धरा पूर रुंडं ॥ धरं ध्रम्म चारं। पवित्रं विहारं ॥
कियं अब्ब सत्तं। सुषैनी पवित्तं ॥ सुरं पुष्फ विष्टं। सुचारं सुतिष्टं ॥
रचे सत्त जुग्गं। कलीकाल भग्गं ॥ कृतं सत्य नूपं। जयो ता सरूपं ॥
छं० ॥ ५८४ ॥ रू० ॥ २०३ ॥

ततः कलौ संप्रवृत्ते संमोहाय सुरद्विषाम्। बुद्धो नाम्ना ऽजिनसुतः कीकटेषु भविष्यति १।३।२४ ॥

२०१ पाठान्तर:—रष्षे। भष्षे। ध्यांन ॥

२०२ पाठान्तर:—हति। सौं ॥

२०३ पाठान्तर:—कलिंगं। पुछ। मेछ। ग्यांनं। ध्यांनं। मानं। सांमं। ग्यांन। सांमं। स्यांम। कटिं। धूंम। किरवार। ध्रंमचारं। सुष्योनी। पुष्फं। सत्यं ॥

॥ उपसंहार का कथन ॥

दूहा ॥ राम किसन कित्ती सरस । कहत लगै बहु बार ॥
कुक्क आव कवि चंद की । सिर चहुवाना भार ॥
छं० ॥ ५८५ ॥ रू० ॥ २०४ ॥

कवित्त ॥ सिर चहुवाना भार । राम लीला किन गाइय ॥
सनक सनंद सनत्त । कही सुकदेव न जाइय ॥
वालमीक रिषराज । किसन दीपायन धारिय ॥
कोटि जनम संभवै । तोय हरि नाम अपारिय ॥
मानुक्क मंद मति मंद तन । पुब्बभार चहुआन सिर ॥
जं कह्यौ अलप मति सुलप करि । सुहरि चित्त चित्यौ सुथिर ॥
छं० ॥ ५८६ ॥ रू० ॥ २०५ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराजरासके दसावतार
बर्ननं नाम द्वितीय प्रस्ताव संपूर्णम् ॥

२०४ पाठान्तर:—रांम । कुक । चहुवानां ॥
२०५ पाठान्तर:—चहुवांनां । रांम । सुनंद । नांम । मांनुक्क । चहुंआंन ॥

अथ दिल्ली किल्ली कथा लिख्यते।

(तृतीय समय)

मंगलाचरण।

चंद की अपनी स्त्री के प्रति उक्ति कि विधना ने दिल्ली सोमेसरनंद के बसने को निर्म्माण की है॥

साटक॥ राजं जा अजमेर कोत्ति कलयं, व्रंदं व्रतं संभरी।
जुद्धारा भर भीर मीर वहनौ, दहनौ दुरंगो अरी॥
सो सोमेसरनंद ढंढ गहिला, वहिला वनं * वासनं।
न्रिम्मानं विधना सुजान कविना, दिल्लीपुरं वासनं॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

चंद का अपनी स्त्री को कहना कि अनंगपाल की पुत्री को पुत्र उत्पन्न होने से दिल्ली की पूर्व्व कथा का प्रसंग प्राप्त हुआ हैं॥

कवित्त॥ अनगपाल पुत्तीय सुरंग †, पुत्त इच्छा फल दिन्नौ।
नालिकेर फल सुफल, मंत आरंभन किन्नौ॥
तव प्रसाद उप्पनौ, पुब्ब संढो कथ भारिय।
बर बीसल वै बंस, कह्यौ वर द्रुग्ग विचारिय॥
प्रथिराज जोति बरनीह कवि, अस्तिमंत सामंत भर।
चंदानि वदनि सुनि चंदमति, भयौ दानवी बंसवर॥ छं०॥२॥ रू० ॥२॥

---

१ पाठान्तर—वहिला। वासन। सुजांन। वासनं॥

विदित रहे कि यहां कवि ने किसी देवता का मंगलाचरण न कर के पदार्थनिर्देशवत् मँगलाचरण किया है॥ * जहां दिल्ली बसी है उस बन का पुराना नाम है।

२ पाठान्तर—† अधिक पाठ है। पुत्र। इछा। दीनौ। कीनौ। प्रशाद। ऊपनौ। चारिय। वै। दुग्ग। विचारीय। प्रथीराज। अस्तमंत। दानव॥

बालकपन में पृथ्वीराज का दिल्ली प्राप्त करने का स्वप्न देखना ॥

दूहा ॥ बालप्पन प्रथिराज ने, इह सुपनन्तर चिन्ह ।
लै जुग्गिनि जुग्गिनि पुरह*, तिलक हथ्थ करि दिन्ह ॥ छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥
कछु सोवत कछु जागतें, निसि सुपनंतर पाय ।
अद्ध रयन के अंतरै, सुष सुत्तह सुभदाय ॥ छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥
अभयदायिनी नाम तिहिं, जुग्गिनि जग आधार ।
सुपनंतर सुभदायिनी, आयै आप पधार ॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥
कनक कंत्ति दुति अंग की, निरषि सु पातग जात ।
परमानन्दप्रदायिनी, पार करन जग मात ॥ छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥
नष सिष प्रभा प्रकास दुति, चव्र सुष कमल सुफूल ।
ब्रन्न ब्रन्न नग जोति जग, जरकस कंत्ति दुकूल ॥ छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज की माता का उससे स्वप्न का वृत्तान्त पूछना ॥

दूहा ॥ सुपन पुच्छि माता तवै, कहौ पुत्र सब भाय ।
जो दिष्षिय तुम अर्द्ध निसि, सो कारन समझाय ॥ छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

पृथ्वीराज का माता को उत्तर दे स्वप्न का वृत्तान्त कहना ॥

कवित्त ॥ करि जुग्गिनी रत भेस, सुरँग सिंगार अभासिय ।
चंद पंति तारक्क, चरन परि बिंटि प्रहासिय ॥
अंबर दिय उचार, दिव्य बानी धुनि मंडिय ।

ध्यान में रहे कि यहां से सब कथा चंद और उसकी स्त्री के संवाद में है और उस संवाद के अंतर्गत अन्य सब संवाद वर्णन किए गए है, अतएव छंदो का लगाना कुछ गूढ सा हो गया है । निदान हमारे दिए शीर्षकों के बल से अर्थ सुगमता से लग सकता है ॥

३–७ पाठान्तर–बालापन । पृथ्वीराज । निसि । जुगिनि । जुगिनिपुरह । हथ ॥ ३ ॥ निशि । पाइ । अध । रयनिकै । सुभ सुत्तं सुभदाइ ॥ ४ ॥ अभैदायिनी । तिहि । जुगिन । सुभदायिनी । आपै ॥ ५ ॥ अंगसह । पातक ॥ ६ ॥ सफूल । सुफूलि । बरन बरन नंग । जर्कस ॥ ७ ॥

इनमें सं० १६४७ की लिखित पुस्तक के अनुसार दोहा ६ और ७ का पाठ है, परन्तु, उसके इधर की लिखी नवीन पुस्तको में उनके पहिले पाद तो ऐसे ही हैं, किन्तु शेष तीन पाद ६ के ७ में और ७ के ६ में लिखे मिलते हैं ॥ * जुगिनिपुरह–दिल्ली का एक पुराना नाम है ॥

८ पाठान्तर–सुपिन । पुछि । कहौ । कहह्ना । समभाय । सवभाइ । दिपिय । दिष्यवि । समुझाइ ॥

सुपनंतर चहुवान, जाय जुग्गिनिपुर मंडिय ॥
जाग्रंत मात दिष्यो सुपन, प्रकाति न कोय तिन थान रहि ।
भय प्रात मात पुच्छिय प्रगट, सो सुपनंतर अरथ कहि ॥
छं० ॥ ९ ॥ रू० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज की माता का स्वप्न का वृत्तान्त सुन अद्भुत रस में रंजित होना ॥

अरिल्ल ॥ सुनि सुनि वचन मात नव वुल्लिय, सुभ अद्भुत्त चित्तरस झुल्लिय ।
सुष दुष द्रिग्ग भरी जल आंइय, मन भौ हास करुन फुनि आइय ॥
छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ १० ॥

उसका ज्योतिषियों को बुला स्वप्न का सत्यफल पूछना ॥

दूहा ॥ तब बुलाय सब जोतगी, कही सुपनफल सत्य ।
दिवस पंच के अंतरे, होय सु दिल्लीपत्ति ॥ छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ११ ॥
गाथा ॥ ढिल्ली वै स्वपनं तं, प्रातं कहिय* प्रगट विप्पायं ।
जोतिग गनिक गुनीसं, सुनियं सो सत्ति कत्तायं ॥ छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १२ ॥

ज्योतिषियों का उत्तर दे कहना कि पृथ्वीराज दिल्ली का राजा होगा ॥

दूहा ॥ न हुइ बात जोतिग घटै, मनस ध्रुच थिरभाव ।
जोग नैर† जोतिग कहै, प्रभु सु होय प्रथुराव ॥ छं० ॥ १३ ॥ रू० ॥ १३ ॥

---

९ पाठान्तर—कवित्त षट्पद । जुग्गिनि । सुरंग । शृङ्गार । अभ्यासिय । तारक (के) अधिक पाठ है । भांन । महाबीय । उचार । बानी । मंडीय । चहुवांन । चहुआंन । जाइ । जोगिनपुर । छंडिय । जाग्रन । मंत । दिख्यौ । सुपनः । प्रक्रत । कोइ । पुछि । सुपनंतर । अर्थ ॥
१० पाठान्तर—वचन । चित । झुलिय । द्रिग । भरि । भए ॥
११ पाठान्तर-बुलाय । बुलाइ । जोतषी । कहि । कहै । सति । कहे । होइ । दिल्ली । पति ॥
१२ पाठान्तर—कहीय । * यहां "आग" पाठ सं० १८५९ की, पुस्तक में अधिक हैं । विप्रायं । सति । मता ॥
१३ पाठान्तर-नह । बात । मनिसु । ध्रुच । जोगनयर । जोतिषि । होइ । पृथुराज ॥
† दिल्ली का पुराना नाम ॥

ज्योतिषियों को बिदा कर माता और पुत्र का एक गृह में जा बैठना ॥

दूहा ॥ न दूह कथ्य दुजराज कथि, प्रनमि करी सु विदाय।
सात पुत्त दो इक्क ग्रह, बरसंति वैठे आय ॥ छं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ १४ ॥

अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र के आगे दिल्ली की पहली किल्ली की पूर्वकथा का कहना और राजा कल्हन का वनक्रीडा करते सुसा और स्वान के चरित्र से भूमि का वीरत्व देखना ॥

कवित्त ॥ तब अनगानी पुत्ति, कहै सुनि पुत्त सु वत्तह।
पुब्ब कथा ज्यों भई, सुनौ त्यों कहूं अपुब्बह ॥
हम पितु पुरिषा पुब्ब, न्टपति कल्हन*वन क्रीलत।
सुसा छंडि ता पुट्ठ, स्वान संचरिय सचीलत ॥
सिसु संमुष हुइ वैठी सु तहां, भग्गि स्वान भै भीत हुन्र।
सब सथ्य तथ्य आचिज्ज भय, करि पारस ठट्ठे सुभय ॥ छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ १५ ॥

उस वीरभूमि में व्यास का कीली गाड़ना ॥

दूहा ॥ व्यास† जोति जग जोति तहँ, सिद्द महूरत ताव।
दैव जोग सेसह सिरह, किल किल्लित सु ग्राव ॥ छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ १६ ॥

---

१४ पाठान्तर–नह। कथ। विदाय। पुत। दोइ। इक। ग्रह। वैठ। आइ॥

१५ पाठान्तर–पुत्रि। कैह। पुत्रि। पुत्र। वतह। ज्यों। सुनै। त्यूं। कहौं। पित्त। पुवि किल्हन। स्वांन। सचीलति। सव्वीलत। समुष। होय। होइ। वैठीज। स्वांन। श्वान। भय। होइ। सथ। तथ। आजिज। ठट्टे॥ * कल्हन चन्द्र का वाचक होने से राजा चन्द्र। उपसंहरणी टिप्पण देखो॥

१६ पाठान्तर–दैवयोग। सिरनि। कील। कलित॥

† व्यास राजगुरु का वाचक है। तँवर राजपूतों के पांडववंशीय गिने जाने से उनके राजगुरु व्यास कहाते थे। यह वह व्यास था जो कल्हन राजा के समय में राजगुरु था॥

वहां काल्हन का काल्हनपुर बसा कर राज करना और फिर उसके कितनीक पीढी पीछे अनंगपाल का होना ॥

दूहा ॥ काल्हनपुर * काल्हन नृपति, वामी नृप निज साज ।
　　कितक पाट अंतर नृपति, अनगपाल भय राज ॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ १७ ॥

इतनी कथा सुनकर राव (पृथ्वीराज) के मन में अचरज हुआ ॥

दूहा ॥ सुनत राव इह कथ्य फुनि, उग्जिय अचरज अंग ।
　　लियत्त अंग धीरज रहित, भयो दुमति मति पंग ॥ छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ १८ ॥

विपरीत समय का आना देखकर सकल सभा का शंकित होना ॥

दूहा ॥ सकल सभा संकित भई, व्यास वयन वर वेद ।
　　क्रमयं समय विपरीत भय, उपज्यो अंतर षेद ॥ छं० १९ ॥ रू० ॥ १९ ॥

† दूसरी किल्ली की कथा ॥

अनंगपाल की पुत्री का अपने पुत्र (पृथ्वीराज) के आगे अपने पिता के फिर से दिल्ली बसाने के लिये पाषाण और किल्ली गाड़ने की कथा का कहना ॥

कवित्त ॥ अनगपाल पुत्तीय, फेरि बुल्ली सुत सम्मह ।
　　एह वत्त आचिज्ज, उपजि मो पित्त तु तव्वह ॥
　　पुच्छि व्यास ‡ जग जोति, राज मंझौ उक्कव घन § ।

---

१७ पाठान्तर–किल्हनपुर । किल्हन । अनंगपाल । भयो ॥

* कल्हन राजा के दिल्ली बसाने के समय का दिल्ली का पुराना नाम कल्हनपुर है ॥

१८ पाठान्तर–कथ । अचंरिज ॥

१९ पाठान्तर–वचन । विपरति ॥

† ध्यान में रहे कि कल्हन के पीछे कई पीढी तक तँवर कल्हनपुर में सुख से राज करते रहे और रूपक १८ और १९ कवि ने दूसरी किल्ली की कथा का प्रसंग मिलाने के लिये कहे हैं। क्योंकि जो कुछ विपरीत हुआ है वह दूसरी किल्ली के पीछे हुआ है ॥

२० पाठान्तर–अनंगपाल । पुत्रीय । बोली । संमुह । बत । आचिज । पित । तव्वह । पुछि । व्यास । उछव । नांम । कुशल । सद्दि । गढयो ॥　　‡ अनगपाल के समय का राजगुरु ॥

§ इससे स्पष्ट है कि अनगपाल ने दूसरी वार दिल्ली बसाने का प्रयत्न संतान की कामना से किया था। इसी लिये कवि ने–ग्राम नाम अप्पिये, कुसल जिन होय गेह धन–कहा है। और "धन" शब्द यहां सन्तान का वाचक है ॥

ग्राम नाम अप्पियै, कुसल जिन होय ग्रेह धन ॥
चिंतयौ चित्त दुजराज तब, अगम निगम करि कढ्ढयौ।
सुभ घरी महरत संधि कैं, फिरि पाषान सु गढ्ढयौ* छं० ॥ २० ॥ रू० ॥ २०

व्यास का कहना कि पांच घड़ी तक पाषाण को हाथ न लगाने से वह शेष के सिर पर दृढ हो जायगा परन्तु राजा का इसे अनर्थ कर मानना ॥

कवित्त ॥ कहै व्यास जग जोति, सुनहि तूंवर नरिंद तुग्र।
एह सेस सिर ग्राव, अचल निहचल सुरंग धुग्र ॥
सोहि अरथ पल एह, छेह अप्प नह राजन।
पंच घरी इह मुक्कि, राज रहियो इन काजन ॥
इतनौ जु कह्यौ वर व्यास तहँ, इन अनथ्थ का मानयौ।
भवङ्गित्तबत्त मिट्टै न को, क्रत्त क्रम्म नह जानयो ॥ छं० ॥ २१ ॥ रू० ॥ २१

साठ अंगुल की कीली गाड़ना अर्थात् शंकुपात कर्म्म करना ॥

अरिल्ल ॥ सुनी बत्त इह तत्त प्रमानं, व्यास करी किल्ली पुर†थानं।
साठि सु अंगुल लोहय किल्लिय, सुकर सेस नागन सिर मिल्लिय ॥
छं० ॥ २२ ॥ रू० ॥ २२ ॥

सब के बरजने पर भी उस कीली को उखाड़ डालना ॥

अरिल्ल ॥ मुंध लोइ आचिज्ज सु मान्यौ, भावी गति सो व्यास न जान्यौ।
बरजे सह परिगह परिमानं, उष्पारी कील्ली भू थानं ॥ छं० ॥ २३ रू० २३

पाषाण के उखाड़ते ही रुधिर की धार चलना और आश्चर्य्य होना ॥

कवित्त ॥ अनंगपाल पृथ्वी, नरेस आचिज्ज सु मान्यौ।
भवसि बत्त जो होय, सोय अज्ञान न जान्यौ ॥

---

* "फिर पाषान सुगढ्ढयौ" अर्थात् वास्तुशास्त्रानुसार शिलान्यास कर्म्म किया ॥

२१ पाठान्तर-तूँअर। शेश। फिर। निश्चल। धुय। इक। मुक्कि। सु। तहां। अनथ। मांनयौ। कों। मिट्टै। क्रत। क्रम। जांनयौ ॥

२२ पाठान्तर-बत्त। प्रमांनं। किलीपुर। किलीय। मिलिय ॥

† अनंगपाल के समय का दिल्ली का नाम "किल्लीपुर" ॥

२३ पाठान्तर-लोय। अचरिज। मान्यौ। जान्यो। बर्जे। सब। उषारिय। क़िल्लीय ॥

आराधन वर ध्यान, होइ संसार सुपाल्यौ।
द्वैकल्प करि जोग, सोइ पाषान उपाल्यौ॥
रुधि इंद्र कुट्टि संमुह चलिय, अति अद्भुत्त सु दिप्पियौ।
परिगह व्यास मंत्री न्रपति इन आच्छिज्ज सु लप्पियौ। छं० ॥ २४ रू० ॥ २४॥

पाषाण का उखाड़ लेना सुन व्यास का दुखित हो राजा के पास आना॥

दूहा॥ सुनि आयौ वर व्यास तँह, दुष पायौ मन मझ्झ।
का जंप्यौ सुप न्रपति सौं, हुह मति मूढ अनुझ्झ॥ छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ २५ ॥

अनंगपाल का पश्चाताप करना और व्यास का आगम कहना॥

कवित्त॥ अनंगपाल चक्कवै, बुद्धि जो इसी उकिल्लिय।
भयौ तुअँर मति हीन, करी किल्लीय तैं ढिल्लिय॥
कहै व्यास जग जोति, अगम आगम हौं जानौं।
तूंअर तैं चहुआन, अंत ह्वैहै तुरकानौं॥
तूंअर सु अवहि मंडव घरह, दुक्क राय वल्लि विक्कवै।
नव सत्त अंत मेवात पति, दुक्क छत्त महि चक्कवै॥ छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ २६॥

व्यास का अनंगपाल को खेद न करने का उपदेश करना॥

पद्धरी॥ उच्चर्‌यौ व्यास जग जोति वीर। म्रत सुग्ग लोक पाताल नीर।
त्रयकाल दरस दरसिय सु देव। व्यासह समान जोतिगिय तेव॥ छं० ॥ २७
संसार सार अस्सार कीन। वर व्यास बुद्धि कोविद प्रवीन॥
मंडयौ सु राज सौं क्रोध नूप। बरज्यौ सुकिष्ण व्यासह सरूप॥ छं० ॥ २८॥

---

२४ पाठान्तर—अनंगपाल। प्रथवी। अचरिज। वत। होइ। सोइ। जांन्यौ। ग्यान। सोय। सोइ। चलीय। अदभूत। दिपियौ। परिग्रह। न्रपति। आचिज। लिपियौ॥

२५ पाठान्तर—तहां। तह। मंझ। न्रपति। सों। मूढ मति असमंझ॥

२६ पाठान्तरः— अनंगपाल। यज्ञी। उक्लिल्लि। भय। तोंअर। तें। ढिल्लीय। किल्ली। हूं जानौ। तोअर। तें। चहुवांन। हुहें। होइ है। तुरक। दक्र। राइ। बिकवै। अंति। मनि। दुक। छत्र। चकवै॥

२७ पाठान्तर—उचर्‌यौ। म्रत। स्वर्ग। समांन। जोत्तगी। असार। बुधि। सौ॥

२८ जनमेज। मत। मांन। आंनी। ग्यांन॥

ग्राम नाम अप्पियै, कुसल जिन होय ग्रेह धन ॥
चिंतयैा चित्त हुजराज तब, अगम निगम करि कढ्ढ्यौ।
सुभ घरी महरत संधि कैं, फिरि पाषान सु गढ्ढ्यौ* छं० ॥ २० ॥ रू० ॥ २०

व्यास का कहना कि पांच घड़ी तक पाषाण को हाथ न लगाने से वह शेष के सिर पर दृढ हो जायगा परन्तु राजा का इसे अनर्थ कर मानना ॥

कवित्त ॥ कहै व्यास जग जोति, सुनहि तुंवर नरिंद तुअ।
एह सेस सिर ग्राव, अचल निहचल सुरंग धुअ ॥
सोहि अरथ पल एह, केह अप्प नह राजन।
पंच घरी इह मुक्कि, राज रहियो इन काजन ॥
सुननो जु कह्यौ वर व्यास तहँ, इन अनथ्थ का मानयैा।
भवक्खित्तबत्त मिट्टै न को, कत्त क्रम्म नह जानयो ॥ छं० ॥ २१ ॥ रू० ॥ २१

साठ अंगुल की कीली गाड़ना अर्थात् शंकुपात कर्म्म करना ॥

अरिल्ल ॥ सुनी बत्त इह तत्त प्रमानं, व्यास करी किल्ली पुर†थानं।
साठि सु अंगुल लोहय किल्लिय, सुकर सेस नागन सिर मिल्लिय ॥
छं० ॥ २२ ॥ रू० ॥ २२ ॥

सब के बरजने पर भी उस कीली को उखाड़ डालना ॥

अरिल्ल ॥ सुंध लोह आचिज्ज सु मान्यौ, भावी गति सो व्यास न जान्यौ।
वरजे सह परिगह परिमानं, उष्पारी कील्ली भू थानं ॥ छं ॥ २३ रू २३

पाषाण के उखाड़ते ही रुधिर की धार चलना और आश्चर्य्य होना॥

कवित्त ॥ अनंगपाल पृथ्वी, नरेस आचिज्ज सु मान्यौ।
भवसि बत्त जो होय, सोय अज्ञान न जान्यौ ॥

* "फिर पाषान सुगढ्ढ्यौ" अर्थात् वास्तुशास्त्रानुसार शिलान्यास कर्म्म किया ॥

२१ पाठान्तर-तूँअर। शेश। फिर। निश्चल। धुय। हक। मुक्कि। सु। तहां। अनथ। मांनयैा। कें। मिट्टै। क्रत। क्रम। जांनयो ॥

२२ पाठान्तर-बत्त। प्रमांनं। किलीपुर। किलीय। मिलिय ॥

† अनगपाल के समय का दिल्ली का नाम "किल्लीपुर" ॥

२३ पाठान्तर-लोय। अचरिज। मान्यैा। जान्यैा। बर्जे। सब। उषारिय। किल्लीय ॥

आराधंत वर ध्यान, होइ संसार सुधारौ।
दैवकाल्ह करि जोग, सोइ पापान उगारौ ॥
रुधि इंछ छुट्टिट संमुह चल्लिय, अति अद्भुत्त सु दिष्पियौ।
परिगह पवास संची न्रपति इन आजिज्ज सु लष्पियौ। छं० ॥ २४ रू० ॥ २४॥

पाषाण का उखाड़ लेना सुन व्यास का दुखित हो राजा के पास आना ॥

दूहा ॥ सुनि आयौ वर व्यास तँह, दुष पायौ मन मझ्झ।
का जंप्यौ सुप न्रपति सौं, इह मति मूढ अबुझ्झ ॥ छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ २५ ॥

अनंगपाल का पश्चाताप करना और व्यास का आगम कहना ॥

कवित्त ॥ अनंगपाल्ल चक्कवै, बुद्धि जो हूती उक्किल्लिय।
भयौ तुअँर मति हीन, करी किल्लीय तैं ढिल्लिय ॥
कहै व्यास जग जोति, अगम आगम हौं जानौं।
तूंअर तैं चहुआन, अंत ह्वैहै तुरकानौं ॥
तूंअर सु अवहि संडव घरह, इक्क राय बलि विक्कवै।
नव सत्त अंत मेवात पति, इक्क छत्त महि चक्कवै ॥ छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ २६॥

व्यास का अनंगपाल को खेद न करने का उपदेश करना ॥

पद्धरी ॥ उच्चर्‌यौ व्यास जग जोति वीर। म्रत सुर्ग लोक पाताल नीर।
त्रयकाल दरस दरसिय सु देव। व्यासह समान जोतिगिय तेव ॥ छं० ॥ २७
संसार सार अस्सार कीन। वर व्यास बुद्धि कोविद प्रवीन ॥
मंडयौ सु राज सौं क्रोध नूप। वरज्यो सुकिष्ण व्यासह सरूप ॥ छं० ॥ २८ ॥

---

२४ पाठान्तर–अनंगपाल। प्रथत्री। अचरिज्ज। वत। होइ। सोइ। जांन्यो। ग्यान। सोय। सोइ। चलोय। अद्भूत। दिषियै। परिग्रह। न्रपति। आचिज्ज। लिपियौ ॥

२५ पाठान्तर–तहां। तह। मंझ। न्रपति। सों। मूढ मति असमंझ ॥

२६ पाठान्तरः– अनंगपाल। यत्री। उक्किल्लि। भय। तोंअर। तें। ठिल्लीय। किल्ली। हूं जांनै। तोअर। तें। चहुवांन। ह्वैहैं। होइ है। तुरक। इक। राइ। विकवै। अंति। मनि। इक। छत्र। चक्रवै ॥

२७ पाठान्तर–उचर्‌यौ। म्रत। स्वर्ग। समांन। जोत्तगी। असार। बुधि। सो ॥

२८ जनमेज। मत। मांन। आंनी। ग्यांन ॥

जनमैज राज तस मत्त मान। आनो न चित्त तिन निमष ग्यान ॥
षिति राज सरिस रिष राइ बोलि। कीनीय वत्त तुम गत्त षोलि*॥छं०॥२९
हूं गड्डि गयौ किल्ली सजीव। हल्लाय करी ढिल्ली सदैव ॥
तूंअर अवट्टि संडव सुथान। भोगवै भूमि सुरतान पान ॥ छं० ॥ ३० ॥
सो मत्ति जानि तूंअर चिनेत। मति करै रोस राजन सुहेत ॥
जान्यौ सु कह्यौ वर व्यास रूप। झूंटी सु बत्त बरजित्त भूप ॥ छं० ॥ ३१ ॥
हिन्दून † जानि पंडव सु वंस। तिन भयौ अंस पारथ्थ नंस ॥
तिहि वंस भीम अरु ध्रम्म सुत्त। तिहि वंस बली अनगेस तुत्त॥ छं० ॥ ३२
मति करहु सोच मम अंच मानि। हुअ राज काज वर चहुवान ॥
बर वंस सुमति अति मति प्रताप। दिन कितक तपै चहुवान आप ॥ छं० ॥ ३३ ॥
फिरि व्यास कहै सुनि अनग राइ। भवतव्य बात मेटी न जाय ॥
रघुनाथ हाथ त्रैलोक देव। ते कनक मृग्ग लागे पछेव ॥ छं० ॥ ३४ ॥

---

* ये दोनो पाद सं० १६४७ की लिखित पुस्तक में नहीं है और उसके इधर की संवत् १८५९ की में हैं ॥ २९ ॥ हुं। क्रिलि। किली। गडि। हलाय। ढिली। इव। तुंअर। अवटि। सुथांन। सुरतानं। पांन ॥ ३० ॥ मति। जांनि। तोंअर। जांन्यों। झूठी। स। वरदत्ति ॥ ३१ ॥ जांनि। पारथ। ध्रम्म सुत। वमं। वली। तुत ॥

३२ पाठान्तर–मांनि। हुय। चाहुआंन। चाहुवांन ॥ ३३ ॥ राय। मृग। लगे ॥ ३४ ॥

† इस महाकाव्य में "हिन्दू" शब्द यहां पर आया है। उसकी व्युत्पत्ति वाचस्पत्य बृहत्संस्कृताभिधानकर्त्ता और शब्दकल्पद्रुमवाले ने पुल्लिंग में यह की है–

"हीनं दूषयतीति। दुष+डुः पृषोदरादित्वात् साधुः। जातिभेदे। जातिविशेषः ॥"
और उसका प्रयोग मेरुतंत्र में यह दिखाया है–

पश्चिमाम्नायमंत्रास्तु प्रोक्ताःपारस्यभाषया। अष्टोत्तरशताशीतिर्येषां संसाधनात् कलौ ॥
पंच खानाः सप्तमीरा नव शाहा महाबलाः। हिन्दुधर्म्मप्रलोप्तारो जायन्ते चक्रवर्त्तिनः ॥
हीनं च दूषयत्येव हिन्दुरित्युच्यते प्रिये! मेरुतन्त्रे २३ प्र० ॥

और भविष्यपुराण के प्रतिसर्गपर्व्व के तृतीय खंड के दूसरे अध्याय में लिखा है कि विक्रमादित्य के पौत्र शालिवाहन ने पितृराज्य पाने पर शकादि को जीत कर आर्य्यदेश और म्लेछदेश की सीमा इस प्रकार से स्थापित की–

एतस्मिन्नन्तरे तत्र शालिवाहन भूपतिः ॥ १७ ॥
विक्रमादित्यपौत्रश्च पिताराज्यं गृहीतवान् ॥
जित्वा शकान्दूराधर्षांश्चीनतैत्तिरदेशजान् ॥ १८ ॥
बाल्हीकान्कामरूपांश्च रोमजान्खुरजांछठान् ॥
तेषां कोषां गृहीत्वा च दंडयोग्यानकारयत् ॥ १९ ॥
स्थापिता तेन मर्य्यादा म्लेच्छार्याणां पृथक् पृथक् ॥

मारीच अप्प आवी हरन्न । छुइ छोन दार सीता हरन्न ॥
पंडवन जाग आरंभ कीन । वरज्यो सु व्यास पंडित प्रवीन ॥ छं० ॥ ३५ ॥
दुरवास द्वारिका दिपन आइ । जद्दवन बाल संज्यो उपाइ ॥
करि पुरुष नारि रचि गर्भ हास । कह देव याहि उपजै सु आस ॥
पिजि कही विप्र तस उदर जोइ । जद्दवन वंस नष्षै सु षोइ ॥
वरजे सुब्रम्ह सुत रसन जूप । देषंत अंध ते परे कूप ॥ ३७ ॥
केतेक कहौं सुनि अनंग राइ । जानति जान कीनौ उपाय ॥
भवतव्य बात उतपात मोटि । मिटै न बुद्धि कोइ करो कोटि ॥ ३८ ॥
जिन करौ षेद उपदेस मोहि । यों जानि ध्यान इह कहौं तोहि ॥
करि धरा ध्रम्म उद्धारि देह । संसार अनित छंडौ सनेह ॥ ३९ ॥
त्रैलोक जीत्ति जिन जेर कीन । ते गये अंत छुइ आपु हीन ॥
इक गल्ह अमर संसार सार । रष्षै न पहुमि ते वड़ गमार ॥
छं० ॥ ४० ॥ रू० ॥ २७ ॥

सिंधुस्थानमितिज्ञेयं राष्ट्रमार्य्यस्य चोत्तमम् ॥ २० ॥
म्लेच्छस्थानं परंसिंधोः कृतं तेन महात्मना ॥ २१ ॥

यदि यह माननीय है तो स्पष्ट है कि "हिंदु" शब्द तो "सिंधु" का और "हिन्दुस्थान" शब्द "सिंधुस्थान" का अपभ्रष्ट है अर्थात् वह यावनी नहीं है। यदि उनको यावनी भी मानें तो भी तो आजकल हमारे देश में बड़ी ही प्रबलता से यह माना जाता है कि संसार भर की सब भाषा हमारी संस्कृत से ही निकली हैं। अत एव फिर हम को बतलाना पड़ेगा कि यावनी "हिंदु" शब्द किस संस्कृत शब्द का अपभ्रष्ट है ? और जब वह संस्कृत का अपभृष्ट है तो फिर उससे घृणा क्यों करनी चाहिये ?

तथा हमारे दिये इस प्रमाण से पुरातत्ववेत्ता विद्वानों के विचारार्थ एक यह प्रश्न भी उपस्थित होता रहे कि इससे तो शालिवाहन का विक्रम का पोता होना विदित होता है और अन्य शोधों के अनुसार प्रचलित शालवाहन शककर्त्ता कनिष्क नामक सिदियन राजा माना जाता है। हमारी देशीसाक्षी से विक्रम और उसके पोते शालवाहन का १३५ वर्ष का अंतर असंभव होना प्रतीत नहीं होता है। इस के अतिरिक्त शालवाहन का बौद्ध हो जाना भी कहा जाता है और शक भी बौद्ध धर्म्मावलंबी माने जाते हैं। क्या आश्चर्य्य है कि यह शालवाहन ही शक धर्म्मावलंबी हो कर कनिष्क नामक राजा हो गया हो और हमारे यहां उसके पहिले नाम से ही शक प्रख्यात चला आया हो ?

पाठान्तर—अप । होइ । होय होनहार । जाय ॥ ३५ ॥ दिपिन । आय । जदवन । उपाय । कहो ॥ ३६ ॥ जदवन । नंषिय । अंत ॥ ३७ ॥ कहों । अनंगराइ । जानंत । जांनि । जान । कीनसु । मोट । मिटै । बुधि । को । कोट ॥ ३८ ॥ उपदेश । हूं । जांनि । धर्म्म । उद्धारि । छंडो ॥ ३९ ॥ जोर । तेउ । गए । होइ । रषै । पहमि । गवार ॥ ४० ॥

अनगपाल के पीछे जो जो दिल्ली के राजा होंगे उनके विषय में व्यास का भविष्य कथन करना ॥

तुंअरों का नाश और चौहानों का राज्य होगा ॥

कवित्त ॥ सुनि अनगेस नरेस, मोहि इह आगम बुझ्झै ।
अंत राज चहुआन, मोहि इह बेगो सुझ्झै ॥
सब तूंअर षग मग्ग, भिरिग मंडव आहुट्टै ।
सार धार धर धूमि, सुगति पय बंधन छुट्टै ॥
इह दोस राज दिज्जै नहीं, मैं बहु बार बरज्जयौ ।
भवतव्य बात मिट्टै न को, होइ सु ब्रह्म सिरज्जयौ ॥ छं० ॥ ४१ ॥ रू० ॥ २८ ॥

चौहानों के पीछे मुसलमान और उनके पीछे फिर हिन्दुओं का राज्य होगा ॥

कवित्त ॥ ता पच्छै सुनि राज, राज भज्जै चहुआनिय ।
बहुत काल अन्तरै, तपै पुहमी तुरकानिय ॥
मेच्छ अवनि तप अहुटि, प्रलै हुइ है तिन बंसह ।
बहुरि जोर हिन्दून, राह हुइ है इक अंसह ॥
संघारि सकल दानव कुलह, धर्म्म राह सह विस्तरै ।
जितै जगत तप प्रबल करि, आनि दिसा विदिसा फिरै ॥
छं० ॥ ४२ ॥ रू० ॥ २९ ॥

फिर मेवातपति सं० १६७७ में दिल्ली जीत लेंगे* ॥

कवित्त ॥ नव सत्तै वर अंत, बहुरि ढिल्ली पति होई ।
षग्ग षोद षुरसान, पहुमि चक्कवै सु जोई ॥

---

२८ पाठान्तर—चहुआंन । बेघो । सूझै । तोंअर मग । मैं । वरजयौ । मेटै । होय । सिरजया ॥

२९ पाठान्तर—पछै । चहुआंनिय । चहुआनीय । तुरकानीय । मेछ । मेछि । हूै हैं । हिद्दून । हूं । दांनव । आनं । दिशा । फिर ॥

* यह ३० और ३१ दोनों रूपक पुरानी पुस्तक सं० १६४० की लिखी में वास्तव में तो नहीं हैं । परंतु उसके पत्रे के किनारे पर किसी अन्य ने पीछे से इन दोनों को लिख दिया है । और उस के पीछे की नवीन पुस्तकों में इन दोनों के पाठ हैं । संवत् १८३८ की में तो "मेवातपति"

मदि मेवात मवीप, दीप दीपनि दल मंडे ।
किक्क रहें पथ आप, इक्क पल पंड निपंडे ॥
मंडे सु पहुमि प्रथिराज जिम, सत्त वात जोतिक जपिय ।
मानी सु सत्ति करि सवनि इह, व्यास वचन व्यासह थपिय ॥
कं० ॥ ४३ ॥ रू० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ सोरै सै सत्योतरै, विक्रम साक वदंति ।
ढिल्ली धर मेवातपति, लैहि पग्ग बल जीत ॥ कं० ॥ ४४ ॥ रू० ॥ ३१ ।

व्यास का कहा हुआ भविष्य नहीं टरेगा ॥

कवित्त ॥ तिहि जथ वत्त प्रमान, सुनहि दिठ तुच्छ सुत्तं ।
वर म्लेच्छनि सत घटइ, भ्रम्म पारस रस रंतं ॥
हुइ नव सत्त प्रमान, ध्रुअ टरइ रवि टरइ ।
टरै न व्यास वचन्न, मान जस तें अजु टरई ॥
ए सब अजान सुना जु ही; परी इक्क मक्खी मुही ।
परि पै प्रसन्न परतीत करि, तब काढन आवह जुही ॥कं०॥४५॥रू०॥३२॥

माता का दान और होम करना ॥

मुरिल्ल ॥ सनि श्रोतान भए चखुआनं, कही मान मति तत्त सुजानं ।
बहुरि पुच्छि दुजराजन आनं, कियै होम दै दान प्रमानं॥ कं० ४६॥रू०३३॥

पाठ है और सं० १६४७ की प्रति में "मेवारपति" पाठ है । वैसे ही पहिली में १५७७ और दूसरी के में १८७७ पाठ हैं । निदान ये दोनों तो स्पष्टरूप से चेपक हैं । तथा हमारे पाठकों के ध्यान में रहे कि उदयपुर वाले स्वर्गवासी कविराज श्यामलदासजी ने जो इस महाकाव्य का आद्योपान्त जाली बनना संवत् १६४० से लेकर १६७० तक के भीतर माना है उसका आधार इन चेपक रूपकों में से रूपक ३१ पर रक्खा है। उसके जाली बनने के समय के विषय में हमने आदि पर्व्व की "उपसंहारणी टिप्पणी" पृ० १७५-१७८ तक वाक्य ३ और "पृथ्वीराजरासे की प्रथम संरक्षा" के पृष्ठ ३४ से ३७ तक वाक्य १७ में सविस्तर कथन किया है अतएव यहां अधिक नहीं कहते हैं ॥

३० पाठान्तर-सतैं । डिली । पग । पोहि । चकवि । मेवाद । दिक्क आइ रहि पाद । सति । जपिव । थपीय ॥

३१ पाठान्तर-सोरैं । सतरिसे । सित्योतरि । विक्रम । शाक । ढिल्ली । मेवारपति । लइ । पग ॥

३२ पाठान्तर-अथ । वत । प्रमांन । तुछ । म्लेछनि । होय । सत । प्रमांन । मांन अजांन इक । मखी । घरी इक मखी मही । परियें । प्रसन ॥

३३ पाठान्तर-छंद वाघा । बहुआंनं । सुंनांनं । पुछि । दुजराजनि ॥

मातुल का अपने मन में मोह करना ॥

दूहा ॥ सुनत सुपन सोमेस सुत्र, बज्जाए बर बाज।
गिन्यौ सु मातुल मोह मन, औ अवन्निय काज ॥ कं० ॥ ४७ ॥ रू० ॥३४ ॥

पृथ्वीराज का स्वप्नफल सुन आनन्द में फूला न समाना ॥

पद्धरी ॥ सुनि सुपन मात फल कहै राइ। दरिया तरंग मनं मोज पाइ ॥
ज्यों मोर मेह आगम अनंद। राका चकोर ज्यों मुष्ष चंद ॥ ४८ ॥
चंदनह बन्न ज्यौं पाय चिह्न। तिह नाह पिष्प ज्यौं सुभग सिह्न ॥
संग्राम भूमि ज्यौं सुभट पिष्प। गुरु विद्यवंत ज्यौं पाय सिष्प ॥ ४९ ॥
घत्तार घत्त ज्यौं द्रष्ष चोट। दातार पाइ जाचिक्क टोट ॥
पंडित्त पाइ ज्यौं गुनियग्राह। व्यापार पाइ ज्यौं साह लाह ॥ ५० ॥
परि वित्त पेपि ज्यौं षेल ज्वारि। कुल कैल पाइ लंपट्ट नारि ॥
आनंद सु यों प्रथिराज पाइ। फुल्ल्यौ सु अंग अंगह न माइ ॥ ५१ ॥
बज्जे अनंत्त वज्जहि अनंद। दिय दान विदुष दुज भट्ट वृंद ॥
दिन दिन नरिंदं तन दसा वड्ढि। चढढंत दीह जो दसा चढ्ढि ॥ ५२ रू० ३५

स्वप्नफल सुन कर पृथ्वीराज की सर्वस्व वृद्धि कैसे होने लगी ॥

कवित्त ॥ चढत नदी जिम मेह, नेह नवला जुवनागम।
सिद्धदाह दिन चढत, सु गुरु सिष्पक विद्या क्रम ॥
सस्त्र ओप ज्यौं भरनि, लच्छि व्यापारह वड्ढत।
बढत भट्ट गज बंस, बेलि द्रुम सीसह चड्ढत ॥
जिम सरद रयनि सुद पष्प तिथि, बढत कला ससि तम गमत।
चहुआन सूर सोमेस सुत्र, इम सुदसा दिन दिन जमत ॥कं०॥५३॥रू०॥३६॥

कवित्त ॥ बढत पटन उमराव, बढत साहन तुरियन दल।
बढत भँडारन दाम, बढत कोठार अन्नबल ॥

---

३४ पाठान्तर–अवनिय ॥

३५ पाठान्तर–राय। दरीयाव। पाय। मुष। पाइ। चिन्ह। पषि। सील। पिषि। विद्यावंत। सिषि। द्रषि। जाचिग। पंडित। गुनयग्राह। लंपट। पाय। माय। दांन। चढंत। दशा। चढि ॥

३६ पाठान्तर–लछ। बढत। चहुआंन ॥

जमद्दर पालान बस्त्र, वढत दानन दिन दी दिन।
षड्ग मंस तरवारि, वढत सस्त्रन्न पिन षि पिन॥
वढ्ढंत कित्ति दिन दिन अमल, प्रथीराज सोमेस सुअ।
दस दिसा जोति दिन दिन वढत, मद्दा निसा पष जानि धुअ॥

छं० ॥ ५४ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

पृथ्वीराज का अजित अवतार होना॥

कवित्त॥ लहरि गईमद सूर, नूर नवत्तन नवद्दा सुप।
चार वरन चिर आव, गेद विलसंत मद्दा सुष॥
पदन मेवासन षाद, दाद दिज्जन दुज्जन घर।
अडटनि दटत सुदंड, थप्पि थिर करन अप्प घर॥
चिंहु चक्क चक्क धर थर धरत, पिसुन पिंजि किज्जय नरम।
अवतार अजित दानव मनुष, उपजि सूर सोमद करम॥

छं० ॥ ५५ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

लोहाना का गौरव में से कूदना और अजानबाहु नाम और जागीर पाना॥

कवित्त॥ षोडस गज उरद्द, राज जथ्थे गवष्प तस।
संझ समय चीतार, पच कीनो पेसकस॥
देषत संभीरनाथ, हथ्थ छूटन हथ सारक।
तीर कि गोरि विकुट्टि, तुट्टि असमान की तारक॥
अधवीच नीच परतें पदिल, लोहाने लीनो झरपि।
नट कला षेलि जनु फेरि उठि, आनि हथ्थ पिथ्थद अरपि॥

छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ ३९ ॥ *

३७ पाठान्तर-भंडारन १ दांम। तरवार। वढंत॥

३८ पाठान्तर-लहरि। च्यारि। दुजन। अटटन। दटत। थपि। अप। चिंहु। चक। चक। किजय॥

३९ पाठान्तर-गवष। चित्रकार। हथ। असमांन। आनि॥

* ये ३९। ४० दो रूपक सं० १६४० की पुरानी पुस्तक में नहीं हैं और इधर की सं० १८५९ में हैं॥

गाथा ॥ हरषि राज प्रथिराजं, कीरति कीन सूर सामंतं ।
बर्गसि ग्राम गजबाजं, अजानबाह दीनयं नामं ॥ छं० ॥ ५७ ॥ रू० ॥ ४० ॥ *

दिल्ली किल्ली कथा का उपसंहार ॥

दूहा ॥ सुपन सुफल दिल्ली कथा, कही चंदवरदाय ।
अब अग्गे करि उच्चरौं, पिथ्य अकुँर गुन चाय ॥ छं० ॥ ५८ ॥ रू० ॥ ४१ ॥

इति श्रीकविचंदविरचिते पृथ्वीराजरासके दिल्ली किल्ली कथा वर्णन नाम त्रतीय प्रस्ताव संपूर्णम् ॥

४० पाठान्तर—ग्रांम । बान । अजांनं ॥

४१ पाठान्तर—दिल्लोय । वरदाय । अगें । उचरों । पिथ । कूँअर । गुनचार ॥

उपसंहारणी टिप्पण ।

जो कुछ हमने प्रथम और द्वितीय समय की टिप्पणी और उपसंहारणी टिप्पण में कहा है वह हमारे पाठकों के ध्यान में होगा औ जो अब निवेदन किया जाता है वह भी उसी के साथ सदैव स्मरण में रहेगा। क्योंकि वह सब इस महाकाव्य के विषयक अनेक वाद विवादों के विचार और निर्णय करने के समय बहुत ही उपयोगी होगा ॥

अब इस तीसरे समय—दिल्ली किल्ली कथा—का मूल लेख हमारे पाठकों की सेवा में उपस्थित है। और जो कुछ उन्हों ने अब तक इस महाकाव्य के नाम से अनेक दंत कथा और वृत्तान्त पुस्तकादि में पढ़े और सुने हैं वे भी उन्हें ज्ञात हैं। अत एव अब यह एक बहुतही अच्छा अवसर है कि हम उन दोनों का मिलान कर के देखें कि क्या आज कल के ग्रन्थकर्त्ताओं ने भी अपने लिखे वृत्तान्त ठीक ठीक इस महाकाव्य के वृत्तान्त के अनुकूल ही लिखे हैं, अथवा उनको बदल कर उनमें कुछ और अपनी मनमानी घढ़न्त भी करी है? यदि उनमें परिवर्त्तन किया गया है तो क्या उनका ऐसा करना ठीक है? मूल में मिला हुआ अगला क्षेपकांश तो अब निश्चित होना कैसा कठिन हो रहा है, तिस पर भी क्या आधुनिक ग्रन्थकर्त्ताओं का मूल से विरुद्ध कथन करना मानो नवीन क्षेपक मिलाना नहीं हो सकता है? आश्चर्य्य यह है कि आज कल के ग्रन्थकर्त्ता प्रतिज्ञा तो पृथ्वीराजरासो वा कवि चंद के कथनानुसार अपने कथन करने की करते हैं और जब उनकी ऐसे मूल से मिलान कर के परीक्षा की जाती है तब उनके वृत्तों में रात्रि दिन का सा अन्तर दीख पड़ता है! इसके केवल दो तीन ही उदाहरण हम यहां पर दिखाते हैं, अन्यों का विचार हमारे पाठक स्वयं कर लेंगे—

(क) हिन्दी रीडर नंबर ५ अर्थात् हिन्दी शिक्षावली भाग पंचम नामक पुस्तक जो पाठशालाओं में पढ़ाई जाती है और जिससे बालकपन से ही हमारे बालकों के हृदय पर संस्कार होता है उसमें कवि चंद के नाम से यह कहा हुआ है—

"चंद कवि लिखता है कि तोमर वंश के १६ वें राजा अनंगपाल ने पृथिवीराज के जन्म के उत्सव के लिये व्यास नामक एक ब्राह्मण से मुहूर्त्त पूछा। ब्राह्मण ने कुछ सोच कर उत्तर दिया कि यही शुभ समय है, इस कीली को गाड़िये और यह शेषनाग के सिर में जा लगेगी और फिर तुम्हारा राज्य अचल हो जायगा। यह कह कीली को धरती में गाड़दी। परंतु राजा को विश्वास न हुआ। निदान उसने उस कीली को निकलवा डाला जो निकालने पर लोहू से भरी मिली। तब ब्राह्मण ने राजा से कहा कि तुम्हारा राज्य कीली के समान अस्थिर हो जायगा और तोमर वंश के बाद चौहान वंश के राजा राज्य करेंगे और उनके बाद मुसलमानों का राज्य होगा। राजा ने क्रुद्ध होकर उस ब्राह्मण को देश से निकाल दिया परंतु वह अजमेर में चला गया जहां कि उसका मान अधिक हुआ ॥"

(देखो हिन्दी शिक्षावली पंचम भाग पृष्ठ ४१) ॥

(ख) तथा उसी पुस्तक में शाहजहां के समय में हुए खड्गराव कवि के लिखे इस वृत्तान्त को भी पढ़िये—

"व्यास ब्राह्मण ने तोमर वंश के प्रमर राजा अनंगपाल के एक पच्चीस अंगुल लंबी कीली दी और उसने कहा कि इसको धरती में गाड़िये। शुभ संवत् ७९२ अथवा ईसवी सन् ७३५ में बैशाख बदी त्रयोदशी को राजा ने इस कीली को पृथिवी में गाड़ दिया। तब व्यास ने राजा से कहा कि अब तुम्हारा राज्य अचल हो गया क्योंकि यह कीली शेषनाग के माथे में गड़ी है। जब ब्राह्मण चला गया तब राजा ने उस की बात का बिश्वास न कर कीली को उखाड़ देखा तो उस को लोहू से भरी पाया। राजा ने भय भीत हो उस ब्राह्मण को फिर बुलवाया और कीली को फिर गाड़ने की आज्ञा दी। परंतु कीली उन्नीस ही अंगुल पृथिवी में धसी और ढीली रही। तब ब्राह्मण ने कहा कि तुम्हारा राज्य इस कीली के सदृश अस्थिर रहेगा। और उन्नीसवीं पीढ़ी के बाद चौहानों के हाथ जायगा। और उनके बाद मुसलमान राज्य करेंगे"॥

(देखो हिन्दी शिक्षावली पंचम भाग पृष्ठ ४१)॥

तदनन्तर "पृथ्वीराज चरित्र" नामक पुस्तक को पढ़िये। उस के कर्ता ने भूमिका में हम को यह कह कर उस के लेख की परम प्रामाणिकता का विश्वास कराया है—

"प्रगट है कि पृथ्वीराज रासा नाम का पुस्तक भारतवर्ष के इस प्रान्त (राजपूताना) में अति ही प्रसिद्ध है और प्रत्येक क्षत्री व चारण भाट इस के लिये निर्विवाद ऐसा मानते चले आये हैं कि दिल्ली के अंतिम महाराजाधिराज पृथ्वीराज चौहान के प्रधान कवि व मित्र चन्द बरदाई ने इस पुस्तक को बनाया है।"

"मैंने चाहा कि इस प्रसिद्ध पुस्तक का, जो छन्दबद्ध है, सरल साधुभाषा में कथारूप से सारांश लिख कर इसके सत्यासत्य विषय में जो कुछ प्रमाण मिल सकैं वे भूमिका में लिख दूं"॥

"तथापि ऐतिहासिक विषय में मूल पुस्तक के विरुद्ध कुछ भी नहीं लिखा गया है।"

मैंने जो यह आशय गद्य में किया वह उदयपुर राज्य के विक्टोरिया हाल के पुस्तकालय में रासे की एक लिखित पुस्तक से लिया है।"

और अपनी इस प्रतिज्ञा के अनुसार उसने इस महाकाव्य के मूल पद्य का यह गद्य किया है:—

"यमुना तट पर हस्तिनापुर नामी नग्र प्राचीन काल से विख्यात है जहां पांडववंशी राजा अनंगपाल तंवर राज्य करता था। राजा की सुनीति और धर्माचरण से सर्व प्रजा सुखी और राज्यकार्य्य आनन्द पूर्व्वक चलता था। इस राजा ने अपने भुज बल से कई भूपालों का गर्व्व गंजन कर अपनी प्रभुता के सूर्य्य का प्रकाश दूर दूर तक फैला दिया था सहसों सामन्त देश देशान्तर से आकर इस की सेवा करते थे। राजा के दो कन्या थीं बड़ी का नाम सुरसुन्दरी और छोटी का नाम कमला। सुरसुन्दरी का बिवाह कनौज के राठौड़ राजा बिजयपाल से हुआ था और कमला जो रूप में रति को भी लज्जित करती थी अपनी बालक्रीड़ा से माता पिता के हृदय को हुलसाती हुई शुक्लपक्ष की चद्रकला के तुल्य सुन्दरता सुघड़ाई और यौवन में वृद्धि को प्राप्त होती थी॥

एक दिन राजा अनंगपाल अपने सुभट सामन्तों सहित हस्तिनापुर से कुछ दूर आखेट के वास्ते वन में गया। अपनी हिनहिनाहट से वज्र के तुल्य हृदय को भी कपाने और टापों के प्रताप से शेष के सीस तक धरा को धुजाने का अभिमान रखने वाले चंचल तुरंगों पर कई बांके क्षत्री शिकारी पोशाक पहने नेजे हाथ में लिये चलते थे, काली रात्रि के तुल्य कई मदोन्मत्त हस्तियों के झुंड साथ थे जिन के गंडस्थल में से झरने वाले सुगन्धित मद के पान करने

को आये हुए भ्रमरों का गुंजार शब्द ऐसा प्रतीत होता था कि मानो कई बन्दीजन मधुर वाणी में महाराज का यश गाते हों। रेशमी डोरियों से बन्धे हुए कई कुत्ते अपने रक्षकों को ताने लिये जाते थे मानो सूअर सामर कुरंग आदि पशुओं का गंध पाकर उनके रुधिर से अपनी पिपासा बुझाने को आतुर हो रहे हों। पायदलों के ठट्ट ने चारों ओर बिखर कर वन को घेर लिया और भेरी नफीरी आदि कई वाजिंत्र बजा कर पशुओं को डराने और उनका स्थान छुड़ाने लगे। राजा और उनके साथी सामंतों ने सेल संभाले सूअरों के पीछे घोड़े छोड़े और बात की बात में कई बड़े बड़े बराहों को भूमि पर गिरा दिया। वन में चारों ओर धूम मच रही थी बिचारे पशु प्राण भय से इधर उधर भागते फिरते थे कि कंज कली को प्रफुल्लित करने वाले सूर्य्यदेव ने सिर पर आकर मानो इस हिंसा से शिकारियों को निवारण करने के लिये क्रोध दृष्टि धारण की हो, प्रचंड ताप से पृथ्वी को तपा दिया सूर सामन्त व सिपाहियों ने जहां तहां वृक्षों की छाया देख कमर खोली और जलपानादि करके श्रम दूर करने को लेटे, राजा भी एक वट वृक्ष की सघन छाया में बैठा हुआ था कि अचानक उसकी दृष्टि वन में एक स्थान पर पड़ी तो क्या देखता है कि झाड़ी की ओट में एक अजा अपने दो बच्चों को लिये बैठी है उधर से एक भेड़िया आकर बच्चों पर लपका चाहता था कि दोनों को उठा कर ले जावे इतने में माता ने सचेत हो भेड़िये से युद्ध करना आरंभ किया और भेड़िये को भगा कर बच्चों को बचा लिया। यह कौतुक देख राजा को बड़ा आश्चर्य्य हुआ। उस स्थान पर कुछ चिन्ह कर दिया कि भूल न जावे जब अपनी राजधानी को लौटा तो दिन भर के परिश्रम से थका हुआ भोजनोत्तर वह शयन गृह में आकर निद्रा निमग्न हुआ। प्रभात होते ही गुरु व्यास देव के आश्रम पर जा हाथ जोड़ कर ऋषि से वह वन का चरित्र वर्णन किया। व्यास देव कुछ काल तक समाधिस्थ हो बोले कि राजन्! वह भूमि महा पवित्र और वीर है यदि वहां गढ़ बनाया जावे तो उस गढ़ का स्वामी सर्व भूमंडल के अधिपतियों का सर्दार होवे। राजा ने निवेदन किया कि महाराज मैं वहां एक नय बसा कर गढ़ बनाऊंगा व्यास देव बोले कि आज तिथि, नक्षत्र वार योगादि सर्व शुभ हैं अत एव एक लोहे की कीली मंगवाओ कि वहां गाड़ दी जावे आज्ञानुसार कीली मंगवाई गई व्यास राजा सहित उसी स्थान पर गये और मंत्र पढ़ कर कीली वहां गाड़ दी जहां बकरी ने वृक को भगाया था। फिर राजा से कहा कि यहीं गढ़ की नीम दिलवाना इस कीली को निकालने का साहस मत करना यह कीली शेषनाग के सिर में जाकर बैठ गई है सो जब तक यह अचल है तुम्हारा राज्य भी अचल रहेगा व्यास के मुख यह सुन कर कि "यह किल्ली शेष के सिर में जा बैठी है" राजा को बड़ा आश्चर्य्य हुआ और कहने लगा कि महाराज! इतनी सी किल्ली शेष के सिर तक कैसे पहुंच सक्ती है? एक दिन कुतूहल वस राजा ने अपनी शंका निवारण करने को बिना बिचारे उस कीली को निकलवा ली कील के निकलते ही भीतर से रुधिर की धारा छूटी और कील का मुख भी रुधिर से भींगा हुआ देखा। राजा को बड़ा पश्चाताप हुआ कि मैंने केवल अपने संशय युक्त चित्त का संतोष करने के निमित्त उस महर्षि की आज्ञा उल्लंघन की और अपने को महा हानि पहुंचाई फिर उस स्थान पर एक नय बसाया क्योंकि उस किल्ली को राजा ने ढीली कर दी थी अत एव उस नय का नाम भी ढिल्ली ही रहा जो वर्त्तमान काल में दिल्ली करके प्रसिद्ध है राजा की आज्ञा से वहां बड़े २ महल चौहट्टे और विशाल भवन बनाये गये और फिर वहीं राजधानी स्थापन हुई"॥

(पृथीराज चरित्र पृष्ठ ३२–३५)

निदान इन तीनों वृत्तान्तों को जिस चंद कवि के नाम के ओट से ग्रन्यकर्त्ताओं ने लिखा है उनको उसी कवि के मूल पद्य से मिलाने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि उन्हों ने (ग्रन्यकर्त्ता) इस दिल्ली किल्ली कथा के मूल पद्य को भले प्रकार पढ़े और समझे विना जैसा जिसके ध्यान में केवल दंत कथाओं पर से आशय आया वह अपने अपने ग्रन्थों में लिख लिया है। इन को मूल पद्य से मिलाने पर वृत्तों में यह बड़े बड़े अंतर स्पष्ट देख पड़ते है—

हिन्दी शिक्षावली के कथन में ॥

१ चंद का मूल पद्य चाहे शुद्ध वा अशुद्ध वा जाली कैसा ही क्यों न हो परंतु उसके अनुसार वृत्तान्त लिखने की प्रतिज्ञा करने वाले को उसके विरुद्ध कुछ भी नहीं लिखना चाहिये उपन्यास और नाटकादि लिखने के भी नियम हैं। ऐसा कदापि नहीं हो सकता कि जहां से मूल कथा ग्रहण करी हो उस लेख के वृत्तों को ऐसे बदल देना कि उनमें रात्रि दिन का सा अंतर पड़ जाय। देखो-चंद ने अपने मूल पद्य में दो दिल्ली किल्ली कथा वर्णन करी हैं। एक तो कलहन वा कल्हन वा किल्हन राजा के समय की और दूसरी राजा अनंगपाल के समय की। परंतु इन ग्रंथकर्त्ताओ ने दोनो के वृत्तों को घेल मेल करके एक ही कथा कर दी है। क्या मूल पद्य को पढ़ और समझ कर लिखने वाला ऐसी भूल कर सकता है?

२ चंद ने मूल पद्य में कहीं नहीं कहा है कि राजा अनंगपाल तोमर वंश में १६ सोलहवां राजा हुआ था ॥

३ और उसने यह भी नहीं कहा है कि अनंगपाल ने पृथ्वीराज के जन्म उत्सव के लिये व्यास नामक ब्राह्मण से किल्ली गाड़ने का मुहूर्त्त पूछा था ॥

४ और न यह कहीं मूल में कहा है कि भविष्य कहने पर राजा ने अप्रसन्न हो कर व्यास को निकाल दिया और वह अजमेर चला गया जहां कि उसका अधिक मान हुआ ॥

खड्गराय के कथन में ॥

५ व्यास का राजा को पच्चीस अंगुल कीली देना मूल पद्य में वर्णन नहीं किया हुआ है। किन्तु जो किल्ली कलहन के समय में गड़ी उसका कुछ परिमाण नहीं लिखा है और जो अनंगपाल के समय में गड़ी थी उसका रूपक १२ में-साठि सु अंगुर लोहय किल्लिय-साठ ६० अंगुल का परिमाण लिखा है ॥

६ कीली गाड़ने का संवत् ७९२ बैशाख बदी १३ मूल पद्य में कहीं नहीं कहा है ॥

७ कीली को उखाड़ने पीछे फिर उसका गाड़ना और केवल उन्नीस ही अंगुल पृथ्वी में धसना कहीं भी मूल पद्य में नहीं कहा हुआ है ॥

८ व्यास का अनंगपाल को कहना कि तुमारी उन्नीस पीढ़ी पीछे राज्य चौहानों के हाथ में जायगा मूल पद्य में कहीं नहीं वर्णन किया हुआ है ॥

पृथ्वीराज चरित्र के कथन में ॥

९ हस्तिनापुर का नाम तक मूल पद्य में नहीं है और न उसका और अनंगपाल के राज्यशासन की अत्यन्त प्रशंसा उस में चंद ने कथन की है ॥

१० एक दिन राजा अनंगपाल का हस्तिनापुर से आखेट के लिये वन में जाना मूल पद्य में बिल्कुल नहीं है। किंतु रूपक १० में कलहन राजा का वन क्रीड़ा करना कहा हुआ है॥

११ आखेट का सविस्तर वृत्तान्त, जैसा कि वर्णन किया गया है, मूल में नहीं है॥

१२ राजा अनंगपाल का एक वट वृक्ष की सघन छाया में बैठना भी मूल में नहीं है॥

१३ राजा अनंगपाल का एक खजा का एक भेड़िये के साथ युद्ध करना देखना लिखा है उसके स्थान में मूल पद्य के रूपक १७ में कलहन राजा के प्रसंग में "सुसा और स्वान" शब्दों का प्रयोग हुआ है॥

१४ इस कौतुक की भूमि पर राजा अनंगपाल का चिन्ह कर देना कि भूल न जावे मूल में नहीं है॥

१५ दूसरे दिन राजा अनंगपाल का गुरु व्यासदेव के आश्रम पर जाना आदि भी मूल में नहीं कहा है॥

दिल्ली में कुतुबमीनार के पास जो एक लोहे की बड़ी कीली अब तक विद्यमान है उसके विषय में पुरातत्ववेत्ता विद्वानों में मत भेद है। तवरों की ख्यातिओं में कलहन, कालिहन, कल्हन और किल्हन का चंद भी नामान्तर मिलता है। तथा कलहनादि नामान्तारों की चंद्रवाचक व्युत्पत्ति हो सकती है। अत एव अनुमान होता है कि कीली पर जो नीचे लिखे श्लोक खुदे हुए हैं और उनमें जिस राजा चंद्र का नाम है वह यही राजा कलहन उपनाम चंद होगा—

यस्योद्वर्त्तयतः प्रतीपमुदघेः शत्रून् समेत्यागतान् ।
वङ्गेष्वाहववर्त्तिनोविलिखिता खड्गेन कीर्तिर्भुजे ॥
तीर्त्वा सप्तमुखानि येन समरे सिन्धोर्ज्जिता वाल्हिका ।
यस्याद्याप्यधिवास्यते जलनिधि वींर्यानिलैर्द्दक्षिणः ॥ १ ॥

खिन्नस्येव विसृज्य गा नरपतेर्गामाश्रितस्येतराम् ।
मूर्त्या कर्म्मचितावनिं गतवतः कीर्त्या स्थितस्य चितौ ॥
शान्तस्येव महावने हुतभुजो यस्य प्रतापो महान् ।
नाद्याप्युत्सृजति प्रणाशितरिपोर्यत्नस्य लेशः चितौ ॥ ३ ॥

प्राप्तेन स्वभुजार्जितञ्च सुचिरं चैकाधिराज्यं चितौ ।
चंद्राह्वेन समग्रचंद्रसदृशीं वक्त्रश्रियं बिभ्रता ।
तेनायं प्रणिधाय भूमिपतिना भावेन विष्णौ मतिम् ।
प्रांशुर्विष्णुपदे गिरौ भगवतो विष्णोर्ध्वजस्स्थापितः ॥

इस कीली के परिमाण के विषय में इलाहाबाद लिटेरेरी इन्स्टीस्टट की बनाई हुई हिन्दी रीडर नम्बर ५ अर्थात् हिन्दी शिक्षावली भाग पंचम में जो सन् १८८७ ई० में पांचवी बार छपी है, यह लिखा है:—

"इसी लाट के पास एक बड़ी लोहे की कीली लग भग १६ इञ्च मोटी धरती में गड़ी हुई है। धरती से ऊपर इस कीली की ऊंचाई २२ फुट है और कनिंगहम साहब लिखते हैं कि यह निश्चय नहीं हुआ कि यह कीली पृथिवी के नीचे कितनी दूर तक गई है। एक बार २६ फुट तक धरती खोदी गई थी परन्तु कीली की जड़ का पता न लगा"।

सो अशुद्ध है। मालूम होता है कि ग्रन्थकर्त्ता ने जनरैल कनिंघाम साहब की सन् १८७१ की रिपोर्ट पुस्तक १ पृष्ठ १६९ ही पढ़ कर यह वृत्तान्त लिख दिया कि जिस को अब तक अनेक बालक पढ़ कर मिथ्याज्ञान उपार्जन करते चले आते हैं। यह तहकीकात पीछे के अन्वेषण से रद्द हो गई है कि जिसका वृत्तान्त उक्त जनरैल साहब की रिपोर्ट पुस्तक ४ पृष्ठ २८ में लिखा है। पिछली तहकीकात के अनुसार इस कीली की ऊंचाई धरती से ऊपर २२ फुट और धरती के नीचे केवल बीस इंच और कुल लंबाई २३ फुट ८ इंच निश्चित हुई है। उक्त सभा जो अपनी पुस्तक में इस भूल को सुधार दे तो अत्युत्तम है॥

इति।

अथ लोहानो आजान बाहु समय लिख्यते।

(चौथा समय)

पृथ्वीराज का अपने समन्तों को बत्तीस हाथ ऊंची गोष से कूदने की उत्तेजना देना ॥

कवित्त ॥ इक्क समय प्रिथिराज । राज ठढ्ढा सामंतह ।
हथ बतीस इक गौष । चित्रसारी कहवत्तह ॥
घटिय सेष दिन रह्यौ । सबै भर और गहम्मह ।
नग्रनाथ नागौर । पहराजंत इन्द्र पह ॥
उच्चरिय बत्त इमि मत्ति करि । लोइ जोधा पब्बह जिसौ ।
ऐ भित्त चित्त मैं भित भिरै । इह सुथान कुद्दै इसौ ॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

लोहाना का कूदना ॥

कवित्त ॥ दुचित चित्त सामंत । चाहि लग्गिय टगटग्गिय ।
चित्त जानि पुत्तरिय । नयन जुब्बैं पग सग्गिय ॥
रज्जि मत्ति नादान । कन्ह उच्चरिय बत्त इह ।
चामुंडा जैतंसि । रोस आक्रस्तं कियौ वह ॥
ठढ्ढौ सु इक्क लोहान भर । कहर कवुत्तर कुद्दयौ ।
जो नेक चूकि ऐसो गिर्यौ । साष अंब हू हल्लयौ ॥ छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

यह समय हमारे पास की संवत् १६४७ की लिखित पुस्तक में नहीं है किन्तु उसके इधर की लिखी सब पुस्तकों में मिलता है। तथा इस कथा का संदर्भ तीसरे समय के रूपक २९ "षोडस गज कद्ध"—से लगाकर अभिप्राय समझने से ध्यान में आवेगा कि एक दिन राजा पृथ्वीराज सायंकाल के समय सोलह गज वा बत्तीस हाथ ऊंची चित्रसाली की गोख में सामन्तों सहित खड़े थे और एक चित्रकार ने एक पत्र अर्थात् चित्र पेश किया उसको संभरी नाथ देख रहे थे कि देखते देखते वह हाथ में से छुट पड़ा। उसको लोहाना अजान बाहु ने कूद कर अधवीच में ही झड़प लिया इत्यादि।

१ पाठान्तर—अजान बाहं। प्रथीराज। ठट्ठा। ठट्टा। वट्टा। सामतह। बत्तीस। कहैं। वर गहंम्मह। वत। मति। ज्जोधा। ज्जिसो। भित। चित। कुट्टैं॥

२ पाठान्तर—मति। वत। चामडां। जैतंसी। आक्रस। चठ्ठौ। नेकि। चेक। असै॥

लोहाने के कूदने की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ दूक्क कहै धर जीव । काज पंषिनी श्वरप्पिय ।
दूक्क कहै सो ब्रन्न । इन्द्र को पुरषेव नंषिय ॥
दूक्क कहै आकास । तास चै उडियन तुट्टा ।
दूक्क कहै सुरलोक । तास कोई नर लुट्टौ ॥
कविचंद किति उप्पम कहै । लोहाना तोंवर सुभर ।
जाजुल्लि राइ सुत किद्द चित । नथ्थि हुवै दुज्जै सुभर ॥
॥ छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का दौड़ कर लोहाना के पास आना और उसे हिये लगाना ॥

अरिल्ल ॥ दौरि राज पृथ्वीराज सु आयो । षमाषमा अष्षै उच्चायो ।
और सूर सामंतह अग्गी । हियरा मझ्झिझए परि लग्गी ॥
छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

उसे आप उठाकर अपने घर ले जाना और इलाज करना ॥

अरिल्ल ॥ अप्प उचाइ अप्प ग्रह आने । सब तबीब बहुत सनमाने ।
मौज मना मझ्झि होइ सुमंगौ । च्यारि पहर दिवसह मझ्झि चंगौ ॥
छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

हकीमों का लोहाना को दवा के लिये ले जाना और नवें दिन उसका अच्छा हो कर पृथ्वीराज के पास आना ॥

दूहा ॥ नव तबीब तसलीम करि, लै घरि आइ लुहान ।
नव दीहे सिर भल्लयो, ढंढोलन गय ठान ॥ छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

---

३ पाठान्तर-कहैं । कों । कहै । उंडियन । कोइ । कहैं । तोवर । किद्दु । दुजे ॥
४ पाठान्तर-राजा । प्रथीराज । उचायो । मझिए ॥
५ पाठान्तर- आनैं । बहुसत । सनै मानै । सुमग्गा ॥
६ पाठान्तर-झलयो ॥

चंद पंचमो अति सुभक्ष, दिय विप्र बहु दानं ।
तिथि तेरस रविवार दिन, पय लग्गौ चौहान ॥ छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का प्रसन्न हो कर लोहाना को ग्वालियर, रणथम्भौर, उड्छा आदि पांच हज़ार गांव देना ॥

कवित्त ॥ पय लग्गत चहुवान । मौज ग्वालेर सुदिन्नौ ।
रिनथंभह ऊड्छो । कहर सूरव्वर किन्नौ ॥
लोहाना आजान (बाह) * नाम थप्पै बहु ऋप्पै ।
सहस पंच दिय ग्राम । जैत कविचंद सुजप्पै ॥
तिहि घरिय सल्लिष्य यह अप्पियै । लै पटा सीसह धरिय ।
रक्खी सुवत्त दिन तीन संह । पग्ग मग्ग अप्पी परिय ॥
छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

आजानुबाहु का आना और पृथीराज का हाथी घोड़े आदि देना ॥

दूहा ॥ पूनम तिथि मंगल दिनह, गृह तेरिय आजान ।
आसन छंडि सु अप्प दिय, बहु आदर सनमान ॥
॥ छं० ॥ ९ ॥ रू० ९ ॥

छंद पद्धड़ी ॥ नव दून अप्पि मदभ्भर गयंद । कज्जल सकोट उज्जल अनंद ॥
सै पंच दिन्न बाजी पवंग । गो अप्प सैक (बान) * अहना कुरंग ॥
॥ छं० ॥ १० ॥

सै पंच दिन्न अति उंट अच्छ । कत्तार भार फक्कार कच्छ ॥
दोइ सै दिन्न दासी सुचंग । झलकंत नास द्रप्पन सुअंग ॥ छं ॥ ११ ॥

---

७ पाठान्तर-पंचमी । दिये । तेरसि । लग्गे । चहुवान ॥

८ पाठान्तर-लगात । चहुवान । दिनौ । रिनथिंभह । उंडछा । सूरबर । किंनो । * अधिक पाठ है । थप्पे । अप्पे । जंप्पे । लैं । रषी सरवत दिन तीन पर ॥

९ पाठान्तर-पूनिम ॥

१० पाठान्तर-अनंद्द । सैं । * अधिक पाठ है । द्दिन । अछ । कछ । से नये । सरस । गनैं । अस । मुपि । वा डराय । सुक्कि । सब्ब । सुंनीर । तोहर । सुरत्त । गृहि । डोरै ॥
* पाठ उपस्थित पुस्तकों में नहीं है ॥

सिरपाउ भाउ नष्षे सरस्स। को गनै द्रव्य भंडार अस्स॥
सामंत सूर सुख नूर नष्ष। * * * छं० ॥ १२ ॥
अब्बूसराइ जामानि जद्द। चामंडराइ मन मुक्कि मद्द॥
गोयंद राइ षीची प्रसंग। उर लग्गि अग्गि नह सुष्प अंग॥ छं० ॥ १३॥
अष्पंत सूर सामंत और। खरगोस लहै पै कीस दौर॥
ऐ सरस सब्ब सामंत सूर। तिन चढ़ै नाम आजान नूर॥ छं० ॥ १४॥
जुग्गिन पुरेस काजि अप्पि जीव। पती सबत्त हथ्थें सुदीव॥
सिर पटा छाप लोहान छोइ। लग्गे सुसरह सब पाइ लोइ॥ छं० ॥ १५॥
कप्पूर चीर सागर सुनीर। सह धन्न धान जौहर सुहीर॥
फुल्लेल अरगजा बहु सुगंध। कोठार भार उग्गह सुबंध॥ छं० ॥ १६॥
कामंसु अप्पि ऐसे सुक्कित्त। परधान मान करि मानमत्त॥
रत्तौ सुस्वामि अम्मह सुसब्ब। अद्धि चलैं स्वामि डारैं सुतब्ब॥
छं० ॥ १७ ॥ १० ॥

लोहाना के वीरत्व का वर्णन॥

गाथा॥ लोहाना आजानं। वानं पथं भीम जुद्धानं॥
आ आरूप सरूपं। बंकं भरं पद्धरं करनं॥ छं० ॥ १८॥ रू० ॥ ११ ॥

दूहा॥ लोहाना तौंवर अभंग, सुहर सब्ब सामंत।
सांई काज सुधारना, ढंढोलन गय दंत॥ छं० ॥ १९॥ रू० ॥ १२ ॥

लोहाना का पांच हज़ार सेना लेकर ओड़छा के राजा जसवन्त पर चढ़ाई करना॥

कवित्त॥ उंडच्छा अरि थान, कच्छ ईहां धर रत्तौ।
नाम तास जसवंत, षग्ग राजन धर पुत्तौ॥
लोहाना अनबीह, लीय वारत्त समथ्थै।
सज्जि सेन सामंत, कलह रष्पन जस कथ्थै॥

११ पाठान्तर-पथु। वंकं॥
१२ पाठान्तर-सब। ढंढोल गनय दंत॥

हज्जार पंच सेना सजय, करि जुहार भर चल्लयो ।
कलहन्ति गसंत सावरत दिन, चाक सेर गिर हल्लयो ॥
छं० ॥ २० ॥ रू० ॥ १३ ॥

ओड़छा पर चढ़ाई की शोभा का वर्णन ॥

छंद गीता मालती ॥ सजि चल्यो तामं जुद्ध धामं कोन कामं पूरयं ।
घन घोर घट्टा समुद्द फट्टा धूम उलट्टा सूरयं ॥ २१ ॥
धुंधरिग थानं षुरेसानं केस जानं चल्लयं ।
कनवज्ज थानं परि भगानं सूरतानं सल्लयं ॥ २२ ॥
आजानुबाहं परे थाहं गज्ज गाहं घुम्मरे ।
चह चहे महं गज्ज सहं घटा भहं उप्परे ॥ २३ ॥
नारद बक्कं सूर हक्कं लेयन लंकं जुट्टरे ।
जड़छा उप्परि कंठला करि घराभप्पुरि अप्पुरे ॥
छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥ १४ ॥

ओड़छा के राजा जसवन्त का सामना करने के लिये प्रस्तुत होना ॥

दूहा ॥ सुनी धाह जसवंत न्रप, आयो सेन सुसज्जि ।
ढलकि ढाल वद्दल मिलिय, पुव्व झड़ाउ अवज्जि ॥
छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ १५ ॥

लड़ाई होना और लोहाना का जीतना ॥

छंद विराज ॥ बजे सिंधु नहं । करी सुक्कि सहं ॥
हक्कं सूर बज्जे । मनों मेघ गज्जे ॥ २६ ॥
छुटे अग्ग बाजी । भ्रमे सार भाजी ॥
मचे गोम धोमं । मनों राह सोमं ॥ २७ ॥
लिये हथ्थ बथ्थं । मनों जुद्ध पथ्थं ॥
धरे धीर धारी । बकें मार मारी ॥ २८ ॥

---

१३ पाठान्तर–उंडछा । थांन । कछ । दूहां पंगा । सजि गसत ॥
१४ पाठान्तर–पुरेलानं । सलयं पुम्मरे । क्कं । लेयन । उंड़छा । कंवला ॥
१५ पाठान्तर–न्रप । पुब । झझाउ ॥

ग्रहे सीस ईसं । करा रंत दीसं ॥
जुटंतं मरद्दं । मचे एम कद्दं ॥ २९ ॥
लरै यों लुहानं । अभंगं जुवानं॥
जसव्वंत जोरं । चहंक्कोति घोरं ॥ ३० ॥
गसैते गसानं । गए अग्ग थानं ॥ छं० ॥ ३१ रू० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ षेचर भूचर जलचरह, सूर गए सुर थान ।
जुद्ध जुरे जसवंतसी, रन जित्यो लोहान ॥ छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ १७ ॥

लोहाना का गढ़ पर अधिकार कर लेना ॥

कवित्त ॥ सहस उभय लोहान, सुभट परि षेतह मज्जे ।
सार धार परहार, उभय गजराज विभज्जे ॥ *
सय सत्तह हय षेत, नेत बड्डे रिन जित्यौ ।
षट सहस (अरि) † पवंग, कवी चंदह कहि कित्यौ ॥
परि लुथ्थ कोस सुर हून प्रति, धर लिन्नी गढ़ भंजियै ।
करि जेव बयट्ठो गढ्ढ परि, हूक्क यानि मन रंजियै ॥
छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ १८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके लोहाना आजानबाहु समय नाम चतुर्थ प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४ ॥

१६ पाठान्तर—भनैां । अग्गि । मनैां । हथ । मनै । राम । मचैं । लरैं । यीं ॥
१७ पाठान्तर—थलचरह । सुर । जसवंतसा ॥
१८ पाठान्तर—लुहान मजे । * यह पाद संवत १८५९ की लिखित पुस्तक में नहीं है ॥
† यह अधिक पाठ है । कित्तो । लिंनी । भंज्जियो । बयठो । रंज्जियो । लोहान ॥

अथ कन्हपट्टी* समय लिख्यते ॥

(पांचवां समय)

पृथ्वीराज के भोरा भीमंग से वैर होने का कारण ॥

दूहा† ॥ सुकी कहै सुक संभरी, कहौ कथा प्रति प्रान ।‡
प्रथु भोरा भीमंग पहु, किम हुअ वैर विनान ॥ छं० १ ॥ रू० ॥ १ ॥

---

१ पाठान्तर–शुकी । शुक । कहैं । संभरी । कहो । पांन । पान । प्रथु प्रिथु । वीर ॥

* कन्ह पृथ्वीराजजी का चाचा अर्थात् काका था । वह सदा आँखों के पट्टी क्यों बांधे रहता, था उसका वर्णन इसमें होने से इसका "कन्हपट्टी समय" नाम हुआ है ।

इस समय में गुजरात के दूसरे चालुक्य राजा भोला भीम का नाम और उससे पृथ्वीराज के वैर होने की कथा प्रथम ही आई है । और इसमें कहीं भी यह नहीं कहा हुआ है कि सोमेश्वरजी को भीम ने मार डाला था और उसका वैर लेने को पृथ्वीराजजी ने उस पर चढ़ाई करके उसे मार डाला था । जिन लोगों के हृदय में यह रासो कांटा सा सलता है उनके ही मानने के अनुसार भीम देव दूसरा सं॰ १२३५, ई० ११७८ में गद्दी पर बैठा था और ६३ वर्ष राज्य करके सं॰ १२९८, ई० १२४१ में परलोक को सिधारा । और पृथ्वीराजजी का जन्म सं॰ १२०६ में होकर वे ४३ वर्ष की वय में सं॰ १२४९ में मरे । इस से सिद्ध है कि सं॰ १२४९ तक तो दोनों राजा निर्विाद समकालीन रहे । अब रहा उनके मारे जाने का हाल सो यहां है नहीं । जहां वह आवेगा वहां हम उसके विषय में भी ऐसी ही सत्यविवेचना करेंगे । अतएव यह समय तो क्षेपक सिद्ध नहीं होता ॥

† एक पाठक की शंका है "क्या दूहा और दोहा की मात्रा में कुछ भेद है"? उत्तर–कुछ भेद नहीं है । दूहा पुराना और दोहा नया प्रयोग है । उनमें से दूहा "दु + ऊह" से बना है अर्थात् जिसमें दो ऊह हों उसे दूहा कहते हैं । और हिन्दी दोहा शब्द संस्कृत द्रोहा से इस प्रकार बना हुआ जान लेना चाहिए–द् + अ + उ = द् + अ + ऱ् = द्र । द्र + ऊहा = द्र + अ + ऊहा = द्र + ओ + हा = द्रोहा = हिंदी दोहा । षट्भाषा के प्रचार के समय में इसको दूहड़िका या दोहड़िका भी कहते थे । उसका संस्कृत में लक्षण और उदाहरण यह है–

माात्रा त्रयोदशकं यदि पूर्व्वे लघुक विराम । पश्चादेकादशकंतु दोहड़िका द्विगुणेन ॥

तथा उसका प्राकृत उदाहरण यह है :–

माई दोहडिपठण सुण हसिओ काण गोआल । वृन्दावणघणकुंज चलिओ कमल रसाल ॥

अस्यार्थः–

हे मातः! दोहड़िकापाठं श्रुत्वा कृष्णा गोपालो हसित्वा कमपि रसालं चलितः कुत्र वृन्दावनघनकुंजे वृन्दाबनस्य निविड़निकुंजे । राई इति क्वचित् पाठः तन्मतेन राधिकाया दोहड़िका पाठं श्रुत्वा । गुरुलघु व्यत्ययेन बहुधा भवति ॥

यह २४ मात्रा का छंद है । उसमें यति १३ । ११, १३ । ११ पर हैं । और उसमें ६ ताल होते हैं–४ ४′ २ १२″, ४ ४′–, ऐसा दोहा गाने में ठीक दीपता है ॥

पृथ्वीराज के कुंअरपन का तपतेज वर्णन ॥

कबित्त ॥ कुँअरप्पन प्रथिराज । तपै तेजह सु मह्हावर ॥
सुक्कल बीजु दिन छुतें । कला दिन चढत कलाकर ॥
मकर आदि संक्रमन । किरन बाढें किरनाकर ॥
यौं सोमेस कुँआर । जोति छिन छिन अति आगर ‡ ॥
हय हथ्थि देत संकै न मन । षल षंडन गढ गिरन वर ॥
चिँहु ओर जोर दसहूं दिसा । कीरति विस्तरि मह्यिय पर ॥ छं० ॥ २ ॥ रू०२ ॥

गुजरात के राजा भोरा भीम का तपतेज वर्णन ॥

कबित्त ॥ भोरा भीम भुअंग । तपै गुज्जर धर आगर ॥
है गै दल पायक्क* । षग्गबल तेजह सागर ॥
काका सारँगदेव । देव जिम तास बड़ाइय ।
तासु पुत्त परताप । सिंघ सम सत्त सु भाइय ॥
परतापसीह अरसीह वर । गोकुलदास गोविंद रज ।
हरसिंघ स्याम भगवान भर । कुल अरेह मुष नीर सज ॥ छं० ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

उसके काका और चचेरे भाइयों की वीरता का वर्णन ॥

दूहा ॥ जोरावर जुरि जंगमति, भरे बथ्थ नभ गाज ।
हुकम स्वामि छुट्टत सु हूम, मनौं तितर पर बाज ॥ छं० ॥ ४ रू० ॥ ४ ॥
तिन पर तुट्टै बीज जौं, जिन पर राज अरुट्ठ ।
राजकाज संमुह भिरन, दई न कबहू पुट्ठ ॥ छं ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

---

‡ यहां शुक्र और शुकी से कविका अभिप्राय चंद और उसकी स्त्री से है। क्योंकि यह सब महाकाव्य उनके ही संवाद में रचा गया है और आगे भी कई एक समयों में यही प्रयोग आवेगा। चंद प्रायः कवि को कीर की उपमा देता है—"आस असन कवि कीर" ॥

२ पाठान्तर—कुअरपन । कुंअरप्पन । प्रथीराज । * ज्यों ज्यौ अधिक पाठ है । जिम । बढै । कुवार । कुंआर । छिन ही छिन । हथि । गिनर । चिंहु । चिहुं । दिशा विसतरि ॥

३ पाठान्तर—गुजर । हय । गय । पादक । * प्रचंड अधिक पाठ । पायक । सु । सारंग-देव । बढाई । तास । भाई । सिंह । सिंघ । श्याम । भगवान । सजि ॥

४ पाठान्तर—जग । बथ । गाजि । स्वांमि । कुटत । मनों । तीतर ॥

५ पाठान्तर—ज्यों । असट्टं । पिट्ठ ॥

गाथा ॥ मारे रान सुरानं । स्हाबुद्दनं घोरं सुल्तानं ॥
जिन संजे जैतानं । काओ आनराजसि पंचं ॥ छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

पाट बैठने पर प्रतापसी को गर्व होना ॥

दूहा ॥ सारँग दे सुरलोक गत, भौ प्रतापसी पाट ।
रान आन सेवा करैं, तपै तेज थिर थाट ॥ छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥
पञ्चदल दलबल अनँत, बहुत भव्य वर अप्प ।
सत्तरि सहस धर गुज्जरनि, मधि ओपत जिमकप्प ॥ छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥
स्वामि भव्य रत्ते सुमन, जे ठेलैं गजठट्ट ।
ढरै परव्वत सिषर डर, करैं सघु दषवट्ट ॥ छं० ॥ ९ ॥ रू० ॥ ९ ॥

प्रतापसी के देश उजाड़ने की पुकार भोरांग के पास होना ॥

दूहा ॥ भोरा भीम भुआल को, कोई एक नैवास ।
तिन उज्जारत देस कौं, परि पुकार न्रप पास ॥ छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ १० ।
गाथा ॥ प्रात समै पुकारं, आई नरिंदं भीम दरवारं ।
करि नीसान सुधावं, चढि राजं साजि आतुरयं ॥ छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ११ ॥
दूहा ॥ चालुक्कह गुज्जर धरा, ईस नेति कियं भीम ।
सो उज्झैं तिहु पुर सुवरं, को चंपैआरि सीम ॥ छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १२ ॥

भोरा भीम की उनसे लड़ाई ॥

छंद पद्धती ॥ चढि चलन राज आवाज कीन । नीसान नद्द वज्जे नवीन ॥
चिहु ओर भरनि कुद्दे तुरंग । सजि सिलह भाँति नाना अभंग ॥ छं० ॥१३॥

६ पाठान्तर-रांन । भंजे ॥
७ पाठान्तर-सारंगदे । भय । करै ॥
८ पाठान्तर- यव । अप । सत्तरि । गुजरति । उपति ॥
९ पाठान्तर-स्वांमि । रते । धूंम्म । ठट । ढरत । परबत । शिषर । करता । शत्रु । वट ॥
१० पाठान्तर-भुवाल । सं० १६४७ की में "कोई एक" के स्थान में "धर जादव" पाठ है । उजारत । देशकों ॥
११ पाठान्तर-पुकारं । आई । निसानं । निसांन । धांव । साजि ॥
१२ पाठान्तर-किये ॥ यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक नहीं है किन्तु उसके इधर की लिखित पुस्तकों में है ॥
१३ पाठान्तर-नीसांन । बजे । चिहुं । चिंहु । उर । कुट्टंति तुंग । तितुंग । भांति ॥ १३ ॥

धम धमकि धरनि थाने सुभंग। गज्जिय अकास कै गद्दर गंग॥
भय हूह हाक आतंक जोर। सद्द सुरन फेरि भेरीन घोर॥ छं० ॥ १४ ॥
उडि रेन सेन मुंदिग अकास। परि रोर सोर जहां तहां मेवास॥
धरि रोस मुच्छ मुररंत भीम। रस बीर वक्र संक्रोध चीम॥ छं० ॥ १५ ॥
चंपी सु सीम अरियन सुजाम। डेरा सुदीन न्टप सरित ताम॥
जुररा सिकार तीतर बटेर। षेलंत सरित तट भट्ट अबेर॥ छं० ॥ १६ ॥ *
इहि समय ताम परतापसीह। लहु बंधु साथ अरसी अबीह॥
ए हुते सकल बाहुर ते बेर। नय मझ्झ आइ षेलत अबेर॥ छं० ॥ १७ ॥
गजराज नाम साहन सिंगार। सरितान मझ्झ बह पिये वार॥
सुनि सोर दान कुहे कंकार। जनु भूत भंति भय भीत भार॥ छं० ॥ १८ ॥
जमुना कि जग्गि काली करार। सिर धूंनि महावत दियौ डार॥
गज एक वारि पीवंत दूरि। तिन पर सु तुहि जनु सिंघ चूरि॥ छं० ॥ १९ ॥
धरि पंष पब्ब जनु धप्पि धाय। भुज पर्‍यौ नभ्भ बद्दर सुमाय॥
दिषि दुरद उनहि आवंत आन। धुनि करि सु डारि उन पीलवान॥ छं० ॥ २० ॥
धायौ ति समुह साहन सिंगार। जनु बंध जंम उप्पर अपार॥
कलपंत पाइ जनु पवन आइ। हल हले पब्ब जित तित बिठाइ॥ छं० ॥ २१ ॥
जम रूप हूअ जनु जंम द्वार। हय भ्रात बीच घेरे असार॥
इक ओर वारि द्रह गद्दर गूल। इक जोर जोर बर उंच कूल॥ छं० ॥ २२ ॥
परताप सनंमुष पर्‍यौ जाइ। डारंत अस्व असि कियौ घाइ॥
बहि सीस परन दो हय करार। परबूज जानि बिफर्‍यौ विफार॥ छं० ॥ २३ ॥
जगनाथ हंडि जनु बंटि दोइ। इह भंति कुंभ कुंभी न होइ॥
गज पर्‍यौ धरनि साहन सिंगार। किन्नो अकाम परताप पार॥ छं० ॥ २४ ॥

थांने। गजिय। गग॥ १४ ॥ रेंन। सेंन। भिवास। मुंछ। कर्क॥ १५ ॥ सुजांम। तांम॥ १६ ॥ * इस छंद की चारो तुकें सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं। तांम। परतापसिंह। बाहुरत। मभ्क। अबेरि॥ १७ ॥ नांम। सिरतांन। द्रि। पीवंत। वारि। दांन। कुटे। छंकार। भै॥ १८ ॥ जगि। डारि। चूर॥ १९ ॥ पंबय। जनुं। धपि। नभ। बदर। किमाय। आंनि। पीलवांन॥ २० ॥ साहंन। शंगार। पाय। पबय। बठाइ॥ २१ ॥ जंमरूप। जंम्म। और। जोंर॥ २२ ॥ जाय। घाय। बिकस्यौ॥ २३॥ बंटिय कि दोय। कुभिय। होय। शंगार। सिंगार। कीनौ॥ २४ ॥ अरसिंह। पुंठ। देषि। सनमुष। एही। शिर। पघ। चीरि। हथ।

अरसीह पुट्ठ जग धर्यौ देष। सनमुष्ष झस्यौ सस सीह लेष॥
गज गही दौरि सिर परघ सुंड। दिय गुरज चीर हय हथ्थि मुंड॥ छं०॥ २५॥
फर्यौति सीस भइ पंच फारि। गज ढर्यौ जानि गिरवर विसारि॥
सुनि बत्त राज भोग सु भीम। पायौ अनंत ढुप आप होम॥ छं०॥ २६॥
कह वाव कियौ न्टप अप्प साम। तुम सो न हमहि चाकरह काम॥ छं०२७॥ रू०॥ १३॥

उन सातों भाइयों का चलचित्त होना॥

दूहा॥ भा उभय अहंकार करि, हन्यौ सुवर गजराज।
दोस हमहि लग्यौ नहीं, आप हि कीन अकाज॥ छं०॥ २८॥ रू०॥ १४॥

पृथ्वीराज का उन चलचित्त सातों भाइयों को जागीर और सिरोपाव देना॥

दूहा॥ सात भ्रात निज वात सुनि, भए अप्प चलचित्त।
प्रथीराज सुनि कुँअर नें, आप बुलाये हित्त॥ छं०॥ २९॥
दिये हथ्थ लिषि गाम पट, रहे वास थिर आनि।
चालुक चातुर वीर वर, जिन उंपत मुष पानि॥ छं०॥ ३०॥
वाजी सत दीने वगसि, संबोधे सत भ्रात।
एक एक सिर पाव दिय, बहु आदर किय वात॥ छं०॥ ३१॥
गुरु लज्जा गुरु मत्ति गुरु, पन गुरु साष नरेस।
गुरु उर सत गुरु सूरतन, गुरु गति मति गुरु भेस॥ छं०॥ ३२॥ रू०॥ १५॥

पृथ्वीराज का दर्बार करके बैठना–उसमें प्रतापसी का आना और उसे मूछ मरोड़ने पर कन्ह का मारना॥

सोरठी दूहा॥ सम इक सोम कुमार, सम सामंतन सूर सम।
सोभ सीस भुअ भार, सो वैठे सुभ सभा रचि॥ छं०॥ ३३॥ रू०॥ १६॥

२५॥ सुसीस। भय। फ़ार। गै। जांनि। बिसाल। बत। हॊम॥ २६॥ कहवाय। कीयो। अय। शाम। साम। सों। सैां। न कांम॥ २७॥

१४ पाठान्तर–भ्रात। अहंकारि॥ यह सं० १६४० की पुस्तक में नहीं है। और भा शब्द भ्रात का वाचक है॥

१५ पाठान्तर–निजि। भये। अय। अचल। चित्त। कुंआर। वुलाए। हित॥ २९॥ हथ। गांम। ओयत॥ ३०॥ बाज। सपत्त। दिने। शिरपाव॥ ३१॥ गुर। नरेश। गुर॥ ३२॥

१६ पाठान्तर–सोरठा। समै। समैं। एक। कुआर। सामंतह। शीश। भू। बैठें॥

छंद मोतीदाम॥ रची सुभ सोम सभा प्रथिराज। बिराजित मेरु जिसे भर साज॥
सुजा सम कन्ह रजे चहुवान। तिनैं मुछ राजत है मुह पान॥ छं०॥ ३४॥
जिनैं चष चाहि कँपे भर मान। कँपै जनु मोरन अप्प बिवान॥
रहै चष वारि सुरानन एम। जवा अन प्रात कियो सस जेम॥ छं०॥ ३५॥
तहां वर चावँड राइ रजंत। जुधं मधि चावँड रूप सजंत॥
न्रसिंघ बिराजत सिंघ जिसौह। बिभीषन भा कयमास जिसौह॥ छं० ३६॥
सबैं भर और उतथ्य सुभंत। तिनं मधि पीथ कुँआर रजंत॥
मनों सुकलं पष बीज कौ चंद। निया रस राजत तारन बृंद॥ छं०॥ ३७॥
प्रतापसि सातउ भ्रात सरीस। प्रथी पति आइ नमाइय सीस।
ति सोहत मानुस तं सत सेर। किधों सत सिंधु सुहंत उजेर॥ छं०॥ ३८॥
सनंमुष कन्ह प्रतापसि आइ। ठई तिन बैठक साह सुभाइ॥
कहै भर भारथ वत्त स बांन। धच्यौ परतापसि मुच्छन पांन॥ छं०॥ ३९॥
लषी चहु आंन सु कंन्ह अपंन। काढी असि तव्व असंष अभंन॥
दई असि दौरि जनेउ उतारि। द्रुही धर अद्ध उपंम विचारि॥ छं०॥ ४०॥
मनों सब नागर साबु कटंत। द्रुही जनु गंठि बिचें बिच तंत॥
पच्यौ परताप प्रथी पर चाप। भई भर मध्य सुजोर अमाप॥
छं०॥ ४१॥ रू०॥ १७॥

भाई के मारे जाने पर अरिसिंह का क्रोध करना और कन्ह चौहान पर वार करना॥

दूहा॥ भई दूह मश्झह मचल, पच्यौ भुंमि परताप।
हाक बीर बज्जे विषम, अरसी कुप्यौ आप॥ छं०॥ ४२॥ रू०॥ १८॥

---

१७ पाठान्तर–पृथीराज। मेर। कन्हं। रचे। चहुवांन। तिनं। मुछ पांन॥ ३४॥ जिनं। कंपै। चंपै। अप्पन मोर। रहे। कि उसकनेम॥ ३५॥ चांमुंड। चांवंड। राय। चामुंड। नरसिंघ। विराजित। जिसैा। सिसु। भीषन। जिसैा॥ ३६॥ सबें। चोर। उतथ। पिथ। कुमार। कुंआर। मंनों॥ ३७॥ पृथीपति।

नमाईय। शीका। सोहति। मानैं। मांनुस। किधों॥ ३८॥ प्रतापसी। आय। कहैं॥ बत। मुछन। मुंछन॥ ३९॥ चहुवांन। अपान। तारि। वही॥ ४०॥ मनैं। नीगर। बिवे। पृथी॥४१॥

१८ पाठान्तर–दोहा। भइ। भुमि। यह रूपक सं॰ १६४७ की पुस्तकमें नहीं है॥

कवित्त ॥ भई हूह परताप। पर्यो दिष्यौ आरसी वर।
उठ्यो कढ्ढि तरवारि। दई भुज कान्ह वाम कर॥
इक्कक सीह वर और। गरै पष्पर गहि डारी।
एक अगनिता मद्धि। आनि कूंपी घृत धारी॥
चहुआन कन्ह अग्गै सुवर। ता पच्छै लोहनदग्यौ।
जाजुलित सत्त वर वीर मति। वीर वीर रस सौं क्रग्यौ॥
छं० ॥ ४३ ॥ रू० ॥ १९ ॥

पृथ्वीराज का महल में जाना और अरिसिंहादि की लड़ाई का होना॥

दूहा॥ उट्ठि कुंवर प्रथिराज लषि, गयौ महल निज मद्धि।
दे किवाट मिलि थाट जुध, मच्यौ कलह सभ मद्धि ॥ छं०४४॥ रू०॥२०॥

गाहा॥ कढ्ढी असि अरसिंघं। नरसिंघस्य झारयं सीसं।
दई गुरज गुर अड्डुं। वड गुज्जरं रंभ कंदाइं॥ छं॰॥ ४५॥ रू०॥ २१॥

चालि॥ दिषि चावंडं॥ षिजि चावंडं॥ लोह चावंडं॥ मन चावंडं॥ चावंडं॥
छं० ॥ ४६ ॥ रू० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ वढिय जंग उत्तंग। दंग जनु दाह जुलग्गिय॥
परिय रौर राव रन। जुरिय जुध कन्ह अभिग्गिय॥
मारि ढारि अरिसीह। हक्यौ गोयंद मेह गति॥
कढ्ढि हथ्थ जम दढ्ढ। दई चहुआंन कूप घत॥
करि रोस कन्ह कर चंपि सिर। दो हथ्थन भेजी उलिय॥
निकसीय प्रान गोविंद उर। जोति भेदि जोतिह मिलिय॥
छं० ॥ ४७ ॥ रू० ॥ २३ ॥

---

१९ पाठान्तर–वांम। एक। और। डारीय। आंनि। चहुआंन। अगें। पछै। मत्त। सों॥
२० पाठान्तर–उठि। लिपि। मधि। सम। मधि॥
२१ पाठान्तर–गाथा। वरसिंघं। शीसं। वडगुजरं। कंदाई॥
२२ पाठान्तर–वचनीका। छंद। चामुंडं। षिजें चामुंडं। चामुंडं॥
२३ पाठान्तर–उतंग। यु। लगिय। परीय। रौरि। अभिगिय। अवागीय। हथ। दठ। कुपि। घति। हथन। निरस्सि॥

हरसिंह का युद्ध ॥

कवित्त ॥ हकि कहर हरसिंघ। बथ्थ नरसिंघ विलग्गिय ॥
लथ्थ बथ्थ लोहान। उपर तर तर परि दग्गिय ॥
नंषि अद्ध नरसिंघ। भयौ हरसिंघ उद्ध वर ॥
दौरि राव चामंड। दई तरवारि पिठ्ठ पर ॥
कर फौरि मुक्कि डर अद्धधर। भयौ विवंधव वंटि घर ॥
हरिसिंह बस्यौ हरिसिंघ पुर। रवि मंडल वल भेदि करि ॥
छं० ॥ ४८ ॥ रू० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ भेद्यौ रवि मंडल सु पहु। करि प्राक्रम्म प्रमान ॥
धनि चालुक पित मात धनि। निकसि न षोयौ मान ॥
छं० ॥ ४९ ॥ रू० ॥ २५ ॥

नरसिंह का युद्ध ॥

कवित्त ॥ करि उप्परि तें टूरि। तरह नरसिंघ सु उट्ठिय ॥
तवै भरक्कि भगवान। आइ सिर सार सु वुट्टिय ॥
जव नरसिंघ नरंन। करन कट्ठी कट्टारिय ॥
घल्लि हथ्थ गल बथ्थ। तेन उदरं विच फारिय ॥
पर भूमि सूर भगवान भिरि। चल्यौ प्रांन जरद्ध अय ॥
है है सु सवद म्रत लोक भय। जै जै सुर सुर लोकजय ॥
छं० ॥ ५० ॥ रू० ॥ २६ ॥

कैमास का युद्ध ॥

मोकल गढि गोकल सुजान। मद मोकल कुट्टिय ॥
तुट्टिय वीज अकास। सीस कैमास अछुट्टिय ॥

---

२४ पाठान्तर—बथ। लथ। बथ। लोहांन। उप्पर। धर लगिय। चामुंड। फौरि। मुकि। अध। विंवधव ॥

२५ पाठान्तर—प्रमांन। मांन ॥

२६ पाठान्तर—उठिय। तव। भगवांन। कटारिय। हथ। बथ। विचि। फारी। भगवांन। सुसद। मृत ॥

तुरस फट्टि कटि गुरज। मुकुट कारि रेष रिपेसर ॥
असि कढ्ढन बर रोस। उदर बर बढ्ढिय सु ओभ्भर ॥
बिन पत्त मत्त जनु डंड डक्क। रंभ पंभ कर कटीयस्वज ॥
तिहि काज साज साकल सुरर। सु गुरुर पठाइय गुरुरध्वज ॥
छं० ॥ ५१ ॥ रू० ॥ २७ ॥

माधव खवास का युद्ध ॥

कवित्त ॥ काम धाम रिम राह। स्याम जिम धाम पिथ्थपति ॥
पत्त लत्त दिय रोस। फट्टि किप्पाट थाट भजि ॥
धसिय मध्य माधव षवास। आय पत्तौ तहां आरौ ॥
लग्गि वथ्थ बिन नथ्थ। संड मल मच्चि अपारौ ॥
जम दढ्ढ कढ्ढि चालुक्क चँपि। दिठ्ठ पाँनि पावार उर ॥
मंडल दिनेस में भेद करि। सुपाट परट्ठिय ब्रह्म पुर ॥
छं० ॥ ५२ ॥ रू० २८ ॥

कन्ह का युद्ध ॥

कवित्त ॥ परि भूमि पावार। उररि भंजन किवार दुव ॥
तव लगि कन्ह तमंकि। आइ पहुंच्यौ अंतकलुअ ॥
मुक्कि रोस असि तमसि। घाइ सिर जाइ रह्यौ उन ॥
मनहुं सक्ति वल दैन। अंग जनु हन्यौ अजा सुत ॥
तिन हनत सिँभु धुन हनिय सिर। राज ग्रेह मधि समर हुअ ॥
हल हलक्कि मचि कोलाहलह। हाय हाय दरबार हुअ ॥
छं० ॥ ५३ ॥ रू० ॥ २९ ॥

२७ पाठान्तर–सुजांनि। वीज। आकास। शीस। रिपीसर। ओभ्भर। उभ्भर। कटीय। स्वज। तिहिं। तक्के सुरर ॥

२८ पाठान्तर–कांम। धांम। स्यांम। धांम। प्रिथपति। पत। लत। पटि। क्रिपाट। मधि। लगि। बथ। नथ। मचि। जभदढ। चालुक। चंपि। दिठ। में। परठिय ॥

२९ पाठान्तर–तमंकि। कुअ। मुकि। शिर। मनहुं। शक्ति। देन। हलहलिकि। मचि। हाइहाइ ॥

चालुकों के मारे जाने से दरबार में कोलाहल होना॥

दूहा॥ कोलाहल दरबार भौ। सुनि चालुक म्रत सथ्थ॥
धसिय पौरि गज मत्त सम। पुच्छत पुच्छत कथ्थ॥ छं०॥ ५४॥ रू०॥ ३०॥
छिंछ रुधिर उट्ठत गिरिय। परिय सच परिधारि॥
दिषि चालुक म्रत तेह टग। कुलह बाजि जनु डारि॥ छं०॥ ५५॥ रू०॥ ३१॥

कवित्त॥ संकर सिंघ कि कुहि। कुहि इन्द्रह कि गरुअ गज॥
कि महिष कुहि मय मत्त। भरिय दीयौ कि दुष्ट कज़ि॥
भौ कि हास रस रोस। मझि रावत्त विरचिय॥
कोलाहल बल कूक। मज्झ रावर हल मच्चिय॥
चालुक्क षवास ताकथ्थ कथि। कोलाहल इन जानि घर॥
छंडिय सयल बोहिथ न्टपति। हनिग कन्ह सारंगधर॥
छं०॥ ५६॥ रू०॥ ३२॥

दूहा॥ भर प्रताप दरबार के। हार षरे मय मत्त॥
सुनत बत्त इह कहि परे। मनु निस तुहि नक्त्त॥ छं०॥ ५७॥ रू०॥ ३३॥

कवित्त॥ निसि षह तुहि नछिच। रोस महिषा कुटि वातन॥
परि कि दीप पातंग। सिंघ जनु कुहि कुधा तन॥
यों तुहें भर भरन। भररि भैभीर सुभग्गिय॥
मनहुँ परा पति चुनत। परिय सिंचान अचिंतिय॥
परि रौर पौरि दीनी दरकि। धरकि कूह कल पौरि बिचि॥
षेलत सब संत कलहंत जनु। पारथ सम भारथ्थ मचि॥
छं०॥ ५८॥ रू०॥ ३४॥

दूहा॥ माया मोह विरत्त मन। तन तिनुका सम डारि॥

---

३० पाठान्तर–सथ। मत। पुछत। कथ॥
३१ पाठान्तर–बाज। यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है॥
३२ पाठान्तर–भरीय। दीपि। मधि। रावत। विराचिय। मझ। मचिय। कथ। जांन॥
३३ पाठान्तर–मत। बत। मनौं। नछित्र॥
३४ पाठान्तर–नछित्र। परिय। संघ। मनौं। मनहुं। अचिंतीय। दीनीय। बच। षेलंत। स। भारथ॥
३५ पाठान्तर–विरत। पिय॥ यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है॥

दूहा ॥ पच भरैं जुग्गिनि रुधिर । ग्रिध्धिय मंस डकारि ॥
नच्चौ ईस उमया सहित । रुंड माल गल धारि ॥ छं० ॥ ६६ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

छंद पद्धरी ॥ दरवार ताल रुधि भरित वारि । इक हथ्थ रत्त चढ्ढी किनारि ॥
तिन मध्धि मग्न तरु जिम मजंत । धर धारि मारि जे धुकत मंत ॥
॥ छं० ॥ ६७ ॥ रू० ॥ ४० ॥

दूहा ॥ * षेल मच्यौ दरवार सझि । सत्त गवार बसंत ॥
सिर स्रुअ बिनु घावह करै । सुभट सुअंगध कंत ॥
॥ छं० ॥ ६८ ॥ रू० ॥ ४१ ॥

छंद लघुनाराच ॥ धुकंत धार धार सौं । बकंत मार मार सौं ॥
झुकंत झार झार सौं । तकंत सार तार सौं ॥ ६९ ॥
डकंत भूत डाक सौं । कसंत बीर बाक सौं ॥
परंत हीन पाइहै । झरंत हथ्थ घाइहै ॥ ७० ॥
लरंत मंत मंत सैं । घुरंत घाइ घंत सैं ॥
सुषग्ग अंगुली षिरैं । फली सुकैर बिथ्थुरैं ॥ ७१ ॥
नचंत घाइ नारदं । ठटे सुघाइ ठारदं ॥
भभक्कि रुद्दि भब्भसे । बबक्कि रह बह से ॥ ७२ ॥
हबक्कि हाक हक्कए । चवक्कि कुंभ चक्कए ॥
सोरित्त मुच्छ मुच्छए । चढ़ी सु आनि चच्छए ॥ ७३ ॥
चलंत हाथ चंचलं । परंत बांन पंचलं ॥
भिदंत भांन मंडलं । भयौ सु नह कुंडलं ॥ ७४ ॥
बहंत सोष बट्टए । हराकि लग्गि हट्टए ॥
कटंत सीस कट्टए । रिनंक षत्त फट्टए ॥ ७५ ॥
फटंत फंफ फेफरं । गटंत पेषि केफरं ॥
वजंत घाव घुंमरे । मनौं परेव घुंमरे ॥ ७६ ॥

३९ पाठान्तर–ग्रिधय । ग्रिधिय ॥
४० पाठान्तर–हय । रत । चढ़ी । मधि । ते ॥
४१ पाठान्तर–मत । गवांर । बनु । घावहं ॥
* यह रूपक सं॰ १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

कुटैं सिरं करारयं। कपास ज्यौं पिंजारयं ॥
फुटंत यौं सुषेपरी। कि जोग पत्र टोपरी ॥ ७७ ॥
कटंत जंघ कुंभए। मनौं सुरंभ गिंभए ॥
* परीय संझ सामयं। चलुक्क रष्षि नामयं ॥ छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

सांझ हो गई परन्तु लड़ाई न रुकी।

कवित्त ॥ परिय संझ जग मंझ। टरिय कंकन रंकन धन ॥
भरिय पत्र जुगिनीय। करिय सिव माल सीस घन ॥
मुरिय न भ्रित चालुक्क। धरिय रसरोस कन्ह हिय ॥
पैरि चलिय दरबार। सोह गज घट्टि उपट्टिय ॥
मय मत्त मार मत्तौ उररि। भररि भररि भग्गिय अनिय ॥
दै घरिय लोह वुब्बौ लहरि। षेल कस्यौ किगवारनिय ॥
॥ छं० ॥ ७९ ॥ रू० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ कान्ह जाइ संमुह परत। कला एक मचि रारि ॥
सत सारथ दूनौ कटै। भजै अवर तजि ढार ॥ छं० ॥ ८० ॥ रू० ॥ ४४ ॥

कान्ह चौहान का युद्ध जीतना।

करषा ॥ झरै (*सार) सिर मार विकरार रत्तन झरत।
परत धरनीय ढरैं जरकि जूपी ॥
चक्क चहुवांन चालुक्क भ्रत उपर चर।
कोपियं कन्ह मनौं काल रूपी ॥ छं० ॥ ८१ ॥
रुंड भकरुंड किय तुंड मुंडन ररत।
वाहि सिर सार मनौं मेह बुट्ठै ॥

४२ पाठान्तर-धकंत। सों। हकंत। हूं। हथ। घाय। पिरैं। पीरैं। बिस्तरैं। घाय। भभकि। रुधि। भट्ट। भट्ट। बवकि। रद। बद। हवकि। हकए। चवकि। चकए। मोरित्त। मोरिर। मुंकु। मुकु। मुकुए। आंनि। चकुए। नट। रिनैंकि। यत। मनों। कुटं। शिरं। ज्यों। यों। मनों। * यह पाद सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

४३ पाठान्तर-शिव। चालुक। पैट। चलीय। घट। उपटिय। भाठीय ॥

४४ पाठान्तर-जाय। समुह। दूनौं। कटे। भजि ॥

४५ पाठान्तर-* अधिक पाठ है। धरनि। मनौ। जम। दारि। नृघात। † यह रूपक सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

कूह करि जूह संमूह को कोक हर ।
रोस रिम राह जेम जीव कुहै ॥ छं० ॥ ८२ ॥
पांनि करि पांनि अरि पांनि करनीय हक ।
सीस अरी पारि सब षेत सीच्यौ ॥
भ्रात सोमेस न्रघ्घात भंजन भरम ।
षेत षयकार षय काल षीज्यौ ॥ छं० ॥ ८३ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

स्लोक ॥ हनिनं निनायकं सेना, कथितं न च पूर्वयम् ।
अयुद्धं चक्रतं एषां, विना स्वामि रणे युधम् ॥ छं० ॥ ८४ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

प्रतापसिंह आदि के मारे जाने का समाचार सुनकर पृथ्वीराज का अप्रसन्न होना ॥

दूहा ॥ नीठ बिसासत अप्प भर, गह्यौ कान्ह चहुआंन ।
गए ग्रेह लै सकल मिलि, प्रथीराज अकुलान ॥ छं० ॥ ८५ ॥ रू० ॥ ४७ ॥
पारि भ्रित्त चालुक्क भर, मध अजमेर प्रमान ।
सात भ्रात भीमह हते, रन जीत्यौ भर कांन ॥ छं० ॥ ८६ ॥ *रू० ॥ ४८ ॥

पृथ्वीराज की अप्रसन्नता सुनकर कान्ह चौहान का घर बैठ रहना, तीन दिन तक अजमेर में हरताल पड़ना ॥

बत्त सुनी तब कन्ह नें, षिज्यौ कुंअर प्रथिराज ।
बैठि रहे तब निज सुघर, औदरबार समाज ॥ छं० ॥ ८७ ॥ †रू० ॥ ४९ ॥
तीन दिवस अजमेर में । परी हट्ट हटनार ॥
हूह कोह वज्यौ विषम । लग्यौ सु भून भुआर ॥ छं० ॥ ८८ ॥ रू० ५० ॥
मधि बजार चलि रुधिर नदि । रुरत तुंड घन मुंड ॥
बरकि कन्ह चहुआंन कारि । तिल तिल सम तन तुंड ॥
॥ छं० ॥ ८९ ॥ रू० ॥ ५१ ॥

४६ पाठान्तर—हननं । यं । असुद्धं । स्वामी । रिने । जुधं ॥
४७ पाठान्तर—अप । चहुंआंन । अकुलांन ॥
४८ पाठान्तर—मंध्य । प्रमान । * यह रूपक सं॰ १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥
४९ पाठान्तर—बत । षिजय । कुंअर । प्रथीराज । रहे । † यह रूपक कौलफील्ड वाली पुस्तक में नहीं है ॥
५० पाठान्तर—हट । हटतार । भुतार ॥ ५१ पाठान्तर—चहुवांन । तिन ॥

सात दिन तक कान्ह के न आने पर पृथ्वीराज का उनके घर मनाने को जाना और कहना कि संसार में यह बुराई हुई कि घर बुलाकर चालुक्यों को मार डाला ॥

कवित्त ॥ सात दिवस जब गए । कन्ह दरबार न आए ॥
तब प्रथिराज कुँआर । अप्प मनए ग्रह जाए ॥
तुम ऐसी क्यों करौ । अप्प सिर चढिय सुकाई ॥
कहिहैं सब चहुआंन । हने चालुक्क सुराई ॥
आएनि विषैं अप्पन सुघर । सो रावर ऐसी करिय ॥
इह दोस अप्प लग्गो खरौ । वत्त वित्तरिय जग बुरिय ॥
॥ छं० ॥ ९० ॥ रू० ॥ ५२ ॥

कान्ह का कहना कि मेरे सामने दूसरा कौन सभा में बैठकर मोछ पर ताव रख सकता है ॥

दूहा ॥ कही कन्ह चहुआंन तब । मो बैठें कोइ आनि ॥
सभा मद्धि संभरि अवर । मुच्छ धरै क्यौं पानि ॥ छं० ॥ ९१ ॥ रू० ॥ ५३ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि तो आप आंख में पट्टी बांधे रहा कीजिए ॥

करी अरज प्रथिराज वर । जो मानौ इक कन्ह ॥
सभा बुराई जौ मिटै । चष बँधि पट्ट रतंन ॥ छं० ॥ ९२ ॥ रू० ॥ ५४ ॥*

पृथ्वीराज का जड़ाऊ पट्टी बनवाकर अपने हाथ से कान्ह के आंख में बांध देना ।

तब प्रथिराज विचार करि । चष आछौ हो पट्ट ॥
बहुरि कोइ भर भोरही । धरत परै इह बट्ट ॥ छं० ॥ ९३ ॥ रू० ५५ ॥

---

५२ पाठान्तर—कुंआर । अप । शिर । काइय । कहिहैं । चालुक । राइय । विषै । करीय । लग्यौ । विस्तरिय ॥

५३ पाठान्तर—कोई । आंनि । मधि । संभरी । मुछ । पांनि ॥

५४ पाठान्तर—प्रथीराज । जों । मांनैां । जों । बंधि । * संवत् १६४० की प्रति में यह नहीं है ॥

५५ पाठान्तर—प्रथीराज । पंट । बट ॥

मनी बत्त सुसत्थ मन। लै जराव को पट्ट॥
राजन कन्ह चष बंधही। मनौं सिरी गज घट्ट॥ छं० ॥ ९४ ॥ रू० ॥ ५६ ॥

कवित्त॥ पाव लष्ष परिमान। मोल किंमति ठहराइय॥
तोल टंक इकईस। नयन आकार सवारिय॥
जरिय जवाहर मद्धि। अरक उद्योत प्रकासिय॥
दिष्टि मंडि देषंत। दुअन उर अंदर चासिय॥
कंचन किलाव लगाय कल। पट्टी बंधिय चंद भट॥
तिहि वेर कन्ह चहुआंन चष। रूप प्रगटि अति षिचि वट॥
छं० ॥ ९५ ॥ रू० ॥ ५७ ॥ †

दूहा॥ पाटी बंधिय कन्ह चष। इह ओपम करि अष्षि॥
तन सरवर जल बीर रस। ओटा बंधि सुरष्षि॥ छं० ९६ ॥ रू० ॥ ५८ ॥ †

पट्टी रात दिन बँधी रहती थी॥

दूहा॥ सो पट्टी निस दिन रहै। छोरि देइ द्वै ठाम॥
कै सिज्या वामा रमत। कै कुहत संग्राम॥ छं० ॥ ९७ ॥ रू० ॥ ५९ ॥
करि सुचित्त चित कन्ह कों। प्रथीराज रस भाइ॥
अवर सूर सामंत सब। रहे हीय सुख पाइ॥ छं० ॥ ९८ ॥ रू० ६० ॥
एक बाज ऐराक वर। हंस नाम अवनीस॥
साजि साजि राजन रजक। कन्ह कीन बगसीस॥ छं० ॥ ९९ ॥ रू० ६१ ॥
जम दढ इक्क जराव जरि। एक उंच सिर पाव॥
नर (सु*) नाहर वर कन्ह कों। कीनौं कुंअर पसाव॥
छं० १०० ॥ रू० ॥ ६२ ॥

५६ पाठान्तर–मानी। सति। पट। राज हय चष कन्ह बंधि। मनु। सरी। घट॥
५७ पाठान्तर–परिमांन। ठहराईय। तोल। मधि।
५८ पाठान्तर–अषि। रषि॥ †ये दोनो रूपक संवत १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं॥
५९ पाठान्तर–निशि। सेज्या। संग्राम॥
६० पाठान्तर–चित्त। भाय। चाय। पाय॥
६१ पाठान्तर–ए। नांम॥
६२ पाठान्तर–शिरपाव। *अधिक पाठ है॥ कों। कीनी। कुंअर।

कान्ह चौहान की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ इसौ कन्ह चहुआंन । जिसौ भारथ्थ भीम वर ॥
इसौ कन्ह चहुआंन । जिसौ द्रोनाचारज वर ॥
इसौ कन्ह चहुआंन । जिसौ दससीस वीसभुज ॥
इसौ कन्ह चहुआंन । जिसौ अवतार धारि सुज ॥
जुध वेर इम्म तुट्टे जुरिन । सिंघ तुट्टि लषि सिंघनिय ॥
प्रथिराज कुंअर साहाय कज । दुरजोधन अवतार लिय ॥
छं० ॥ १०१ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

दूहा ॥ जहँ जहँ राजन काज हुअ । तहँ तहँ होइ समथ्थ ॥
मेर हथ्थ वथ्थह भरै । नर नाहां नर नथ्थ ॥ छं० ॥ १०२ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

चालुक्य राजा भीम का अपने भाइयों के मारे जाने का समाचार सुन कर बहुत दुःखी होना ॥

गाथा ॥ फुट्टिय वत्त प्रहासं । अनिलं वसिजेम परिमलयं ॥
सुनियं चालुक भीमं । सारँग सुत हंति चहुआनं ॥
छं० ॥ १०३ ॥ रू० ॥ ६५ ॥
जलियं चालुक नाथं । अग्गि विलग्गिय उअर मझायं ॥
मुक्किय न्टप नीसासं । मंनिय दुष भ्रात अप्पायं ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

भीम का पृथ्वीराज से भाइयों के पलटे में लड़ाई मांगना ॥

दूहा ॥ अति दुख मन्यौ भीम हिय । लिखि कग्गद चहुआंन ॥
सत्त भ्रात मेरे हते । इहै वैर अप्पांन ॥ छं० ॥ १०५ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

---

६३ पाठान्तर–इसों । चहुवान । जिसो । भारथ । द्रोणाचारिज । एम । इम । सिंहलीय । प्रथीराज । दुर्जोधन ॥

६४ पाठान्तर–जहां २ । तहां २ । होय । समथ । हथ । बथह । भरैं । नृथ ॥

६५ पाठान्तर–वत । सुनीयं । सारंग । चहुवांनं ॥

६६ पाठान्तर–लगि । मनीय ॥

६७ पाठान्तर–कगर । चहुवांन । सात । अप्पांन ॥

पृथ्वीराज का उत्तर देना कि हम तयार हैं जब चाहे आओ ॥

सुनिय राज चहुआंन वर । दिय कग्गद फिरि तेह ॥
जब तुम मंगौ बैर वर । तब हम बैर सुदेंह ॥ छं० ॥ १०६ ॥ रू० ६८ ॥

भीम का चढ़ाई के लिये तय्यार होना पर सरदारों के कहने से वर्षा ऋतु भर ठहर जाना ॥

कवित्त ॥ बँचि कग्गद चालुक्क । रोस लग्यौ अथान कह ॥
करो सेन सब एक । चलो अजमेर देस रह ॥
तब कह्यौ बीर परधान । मास पावस्स रहें घर ॥
करि कातिग घन कटक । हनैं चहुआंन सोम बर ॥
सुनि राज अप्प मन्यौं सुहिय । भत्तरु सब जन अवर नर ॥
उपसम्म रोस चालुक्क न्टप । षिन षिन वित्तिय जेम थिर ॥
छं० ॥ १०७ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

उपसंहार का कथन ॥

दूहा ॥ रहै राज अजमेर मद्धि । संभरेस चहुआंन ॥
निसि दिन यों क्रीला करै । ज्यौं अवतार सुकान्ह ॥
छं० ॥ १०८ ॥ रू० ॥ ७० ॥

इति श्री कवि चन्द विरचिते प्रथिराजरासके कन्हाष्षपट्ट बन्धनं नाम पञ्चम प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५ ॥

६८ पाठान्तर–कग्गर । मगौ ॥

६९ पाठान्तर–बंचि । कग्गर । लगौ । अयासकह । अयासकहि । रहि । प्रधांन । मांस । पावस । कातिक । मन्यो । उपसंमि । वित्तीय ॥

७० पाठान्तर–चहुवांन । यों । ज्यों ॥

अथ आषेटक वीर बरदान वर्णन समय लिख्यते ॥

(छठां समय)

पृथ्वीराज के कुँअरपने के तपतेज का वर्णन ।

कवित्त ॥ कुँअरप्पन प्रथिराज । वर्ष विय सपत समर तन ॥
समुह तेज असहेज । हरन तम रोर समर गन ॥
उर किवार भुज वज्र । अंग वज्रंग पलन लुअ ॥
भुज भुजंग वर जोर । जोर ब्रंनह सत्रुन भुअ ॥
अनभंग अंग जनु अंगदह । पवन पाइ आषेट सहि ॥
सँग डोरि श्वान जीवन लषै । सवन अग्ग अपजह तिवहि ॥
छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ वर्षंत सोभा नैंन । मैन जनु मुदित सरित सर ॥
हरष हास मुष कंति । विकसि जनु कमल सूर वर ॥
मधुर सवद गुंजार । जानि गंभीर हरिय सद ॥
गयन गरूअ गज भंति । चलत कुल चालि वेद वद ॥
चहुआंन सूर सोमेस सुअ । भुअ जनु भुअ अवतार लिय ॥
मन हरनि हरत मन पिष्षि कै । जनुं विधिना अप हथ्थ किय ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

छंद पद्धरी ॥ रचै सुभट थट्ट प्रथिराज संग । जै पैज गंग सुअ कप्पि पंग ।
षट रस विलास अंनन अपार । भुत्तंत भोग भट सुभट सार ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

१ पाठान्तर–सं० १६४७ की पुस्तक में इस का ऐसा पाठ है:–"कुअरपन पृथीराज । वर्ष विय बीस समर वरय । समुह तेज अस हेज । जोर ब्रंनह सत्रुन भय । भुज भुजंग वर जोर । हरन तरोर समरगन । उर किवार भुज वज्र । अंग वज्रंग पलन मन" ॥ बाकी दोनों तुक जैसे के तैसे हैं ॥

२ पाठान्तर–शोभा । नैंन । मैंन । उदित । सरनि । कांति । विकसित । जांनि । कुलि । चहुआंन । सुय । मंन । पिषिकैं । हथ ॥

सुरनाथ संग सुर सकल सोभ। बंसह छतीस चहुआंन ओप ॥
नव कुलन मध्य नव नाग जानि। तिम जूथ मद्धि गज राज बानि ॥ छं० ॥ ४
उडगनन मद्धि गुरदेव कंति। बरनी न जाइ सुत सोम भंति ॥
छह पंच मद्धि ज्यों हनुअ लंक। तिम पिथ्थ कथ्थ षल परन बंक ॥ छं० ॥ ५ ॥
नव ग्रहन मद्धि जनु सूर तोष। षग भ्रंम क्रंम संमर अदोष ॥
क्रीडंत अंग रंगह हुलास। विश्रवा पुत्र जनुँ अलक वास ॥ छं० ॥ ६ ॥
कर तांनि बान कंमांनि धारि। अनभूल घात नंषे उतारि ॥
अद्भूत बान विद्या अभंग। लच्चै दाव घाव वज्जंग अंग ॥ छं० ॥ ७ ॥
पाइक्क अंक षेलत कितेक। गहि चिन सुदंत कुहंत एक ॥
आषेटनि पुन लषि जीव घात। गज सिंघ रिंछ कपि कोल पात ॥ छं० ॥ ८ ॥
है लषै सक्क करि भेद छेद। दिष्षंत नयन सालोत्र षेद ॥
गज चिगछ दुच्छ जानंत सव्व। नाटिक निवास सम लेस कव्व ॥ छं० ॥ ९ ॥
सम सिल्प सास्त्र वसु क्रंम क्रंम। सब वेद रीत रोपंत भ्रंम ॥
यों तपै पिथ्थ अजमेर मांहि। सोमेस सूर चहुआंन छांहि ॥
छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज की दिनचर्या का वर्णन।

कवित्त ॥ प्रथम जामि निसि रज्ज। कज्ज चैगै दिष्षत लगि ॥
दुतिय जाम संगीत। उक्कव रस कित्ति काव्य जगि ॥
त्रितिय जाम भोजन्न। ससय चव जाम विलंसिय ॥
सुष्ष सुलष उर अप्प। वारि अप्पी उर वंसिय ॥
घरियार रढिय बंदी पढ़िय। आनि सूर सोमेस जस ॥
उठि ब्रह्म मुहूरत राज बर। हय पष्षरिय सिकार रस ॥
छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ४ ॥

---

३ पाठान्तर–प्रथीराज। कपि। अनन। ज्यों वंश। छतीश। चहुआंन। उप। मधि। जांनि। मधि। प्रथीराज। बांनि। मधि। गुरदैव। जाय। मधि। ज्यों। पिथ। कथ। मधि। समेर। विलास। बांन। अनभूल। वांन। पायक्क। अंग। जन। सिंह। रींछ। यह। हय। सक। दिपंत। चिगिछ। दुछ। शिल्प। शासन। यों। पिथ। छाह ॥

४ पाठान्तर–जांमि। निसरज। काज। दिषत। जांम। त्रतीय। जांनि। भोजन। समय। जांम। बिलसीय। अप। अप्पियं। वंसीय। बंदिन। ब्रहम। महूरत। पषरीय ॥

पृथ्वीराज का आखेट के लिये निकलना।

कवित्त ॥ कर पद मत्त धनुष्य। ढाल आनन सुचक्क रथ ॥
पटह घोंस घन सद्द। विपुल बड्डीय समग पथ ॥
इक वंधिय इक वधिय। एक भंभिय भ्रम भीर ॥
इक सु मृग विफुरीय। इक्क चिकरीय दीन सुर ॥
कवि चंद सोर चिहुँ ओर घन। दिग्घ सद्द दिग अंत भौ ॥
संकिय सयल्ल जिम रंक उर। द्रुम अरन्य आतंक भौ ॥
छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ ५ ॥

अकेले कवि चंद का बन में भूल जाना।

कवित्त ॥ जंगल धर सुकुमार। करत आषेट सपत्तौ ॥
संग सूर सामंत। गहन गिरि षोह सुरत्तौ ॥
एक सहस सँग स्वान। एक सत चीते संगह ॥
उभै सत्त सँग हिरन। करत मन पवन सुभंगह ॥
सम विषम विहर वन सघन घन। तहां सथ्थ जित तित्त हुअ ॥
भूल्यौ सुसंग कवियन वनह। और नहीं जन संग दुअ ॥
छं० ॥ १३ ॥ रू० ॥ ६ ॥

एक आम के पेड़ के नीचे एक ऋषि से उसकी भेंट होना।

दूहा ॥ विपन विहर जपल अकल, सकल जीव जड जाल ॥
परसंपर बेली विटप, अवलँबि तरल तमाल ॥ छं० ॥ १४ ॥
सघन छांह रवि करन चष, पग तर पसु भजि जात ॥
सरित सोह सम पवन धुनि, सुनत श्रवन झहनात ॥ छं० ॥ १५ ॥
गिरि तट इक सरिता सजल, झिरत झिरन चिहुँ पास ॥
सुतरु छांह फल अमिय सम, बेली विसद विलास ॥ छं० ॥ १६ ॥

---

५ पाठान्तर-घत्त। धनुंक। धनुंक। धनुष। आंनन। चक। चथ। सद। बढ़िय। इक। म्रग। विफुरिय। चिहु। उर। दिघ। अंस। सकल। सयल ॥

६ पाठान्तर-करन। आषेटक। संपतौ। हद। षोहर। संग। साथ। तित्त। भूंल्यो। कबियन ॥

तहां सु अँबतर रिष्ष इक, कास तन अंग सरंग।
दव दड्ढौ जनु द्रुम्म कोइ, कै कोइ भूत भुअंग॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

गाहा ॥ जप माला मृग काला। गोटा विभूतं जोग पट्टायं॥
कुविजा खप्पर हथ्थं। रिद्धं सिद्धाय बचनयं मझ्झं॥
छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ ८ ॥*

कविचन्द का ऋषि के पास जाकर पूछना कि आप कौन हैं?

दूहा ॥ चंद पिष्षि चरच्यौ सुमन, इह कोइ रूप अलेष।
पग परसौं दरसौं दरस, उत्तिम भूत अरेष॥ छं० ॥ १९ ॥
करि बंदन कविचंद कहि, को तुम आदि अनादि।
तुम दरसन बिन दिन गए, ते सब बीते बादि॥ छं० ॥ २० ॥
तु †धाता करतार तु, भरता हरता देव।
तुं दत्ता गोरस तुही, प्रसन होउ प्रभु मेव॥ छं० ॥ २१ ॥ रू० ॥ ९ ॥

ऋषि का पूछना कि तुम कौन हो इस बीहड़ बन में कैसे आए।

दूहा ॥ कहै जंगम तु कौन नर, क्यों आगम ह्यां कीन।
जीव जंत घन विघन बन, जीव जीव बल कीन॥
छं० ॥ २२ ॥ रू० ॥ १० ॥

चन्द का अपना परिचय देना।

गाहा ॥ दरसन देव मुनिंदं। चंदं विरहं च दुष्षदं दायं॥
अब मुझ्झ क्रम्म सुफलियं। दिष्षे सुफल रूप तपसीयं॥ छं० ॥ २३ ॥
देवान वरं सिद्धाण दरणं। गुरं नरिंद सनमानं॥
गय भुम्मि दब्ब नठ्ठा। पां मिज्जे पुण्य रेहायं॥ छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥ ११ ॥

---

७ पाठान्तर–ऊपरल। परसपर। अबलंबि ॥ १४ ॥ झहनांत। झहनाट ॥ १५ ॥ गिर। झरत। झरन ॥ १६ ॥ अंतर। तह। जती। अंग न रंग। द्रुम ॥ १७ ॥

८ पाठान्तर–विभूत। पटायं। मझं। मंझं ॥

* यह रूपक सं० १६४७ वाली पुस्तक में नहीं है।

९ पाठान्तर–पिषि। को। परसें। दरसें ॥ १९ ॥ तूं। भर्ता। तूं। दंता। तुहीं। होहि ॥ २१ ॥ † यह संस्कृत त्वम् का पहिला हिन्दी रूप है।

१० पाठान्तर–जती। तूं। कौन ॥

११ पाठान्तर– गाथा। दसनं। चंदं न विरहं इदेहं दंदायं। चंदम। दंदाई। कर्म। दिषे। सकल ॥ २३ ॥ सिद्धान। दसनं। भूम्मि। भूमि। पा। मिजै। पुन्य। रेहा इं ॥ २४ ॥

दूहा ॥ भट्ट जानि कथियन न्टपति, नाथ नाम सो चंद ।
आलस सें गंगा बही, अब्ब गए सब दंद ॥ छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ १२ ॥

जती का प्रसन्न होकर एक मंत्र बतलाना जिसके वश में बावन वीर हैं।

कवित्त ॥ प्रसन चंद सम जतिय । दिन्न इक मंच इष्ट जिय ॥
इह आराधन भट्ट । प्रगट पंचास वीर विय ॥
करि साधन इह साध । व्याधि नासत फल धारिय ॥
गुरु उपदेसह पाइ । सकल आधीन अकारिय ॥
धरि कान मंच लीनो कविय । परसि पाइ अग्गैं चलिय ॥
करवे सुपरिष्या मंच की । रचि आसन अग्गैं बलिय ॥
छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ १३ ॥

चन्द का मंत्र की परीक्षा करना और वीरों का प्रगट होना।

दूहा ॥ भली बुरी न्त्रिमित कछू, मेटि न सक्कै कोइ ।
याही सों भवतव्यता, कहत सयाने लोइ ॥ छं० ॥ २७ ॥
पसु आषेटक करन कैां, संग न्टपति वरदाइ ।
ऐसे में इह भावई, अकसमात हुअ आइ ॥ छं० ॥ २८ ॥
मंच परिष्या करन कैां, बन मझ्झ बैठ्यौ चंद ।
रचि रचना सुचि स्नान करि, धूप दीप पढ़ि छंद ॥ छं० ॥ २९ ॥
रचि आसन्न गनेस तँह, सिद्धि बुद्धि लछि लाभ ।
फुनि मंचह भैरव जपत, डक्कु गरज्जिय आभ ॥ छं० ॥ ३० ॥
गैंन गघर गंभीर धुनि, सुनि ससंक भय गात ।
आनन अग गअ्र गंज हुअ्र, जानि उलक्का पात ॥ छं० ॥ ३१ ॥
सुष दाता माता पिता, सेवक सरन सधार ।
उपवन बैठे चंद जहँ, दै पंचास पधार ॥ छं० ॥ ३२ ॥
मंच जंच धारंत मन, आकरषे जब चंद ।
प्रगट दरस दीने सबन, कवि उर बध्यौ अनंद ॥ छं० ॥ ३३ ॥

---

१२ पाठान्तर-न्रपति । नांम । आल सर्मे । आल समय । अब ॥
१३ पाठान्तर-दीन । भट । प्रंचास । ए । नासन । धारीय । अकारीय । पाय । अग्गें । आगे । करनें । करनैं । परंष्या । अगें ॥

मद्दा पुरिष पिष्षे जबै, तब हुअ हरष सरीर ।
दंडवत अंजुलि करिय, मन आनंद सधीर ॥ छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ १४ ॥

बीरों के रूप आदि का वर्णन ॥

छंद पद्धरी ॥ आनंद चंद दरसंत इंद । सोभा सुभंत वज्रंग दंद ॥
तन तेज तरनि ज्यों घनह ओप । प्रगटी कि किरनि धरि अग्नि कोप ॥३५॥
चंदन सुलेप कसतूर चित्र । नभ कमल प्रगटि जनु किरन मित्र ॥
जनु अगनित नग छवि तन विसाल । रसना कि बैठि जनु भमर व्याल ॥३६॥
मृग मद मयूष जनु पिउष पान । प्रभु मुदित मगन नासा रसान ॥
मद्दन कपूर छवि अंग हंति । सिर रची जानि विभूत पंति ॥ ३७ ॥
कज्जल सुरेष रचि नैन पंति । सुत उरग कमल जनु कोर पंति ॥
चंदन सुचित्र रुचि भाल रेष । रजगुन प्रकासतें अरुन भेष ॥ ३८ ॥
रोचन लिलाट सुभ मुदित मोद । रवि बैठि अरुन जनु आनि गोद ॥
घूंघर घसंकि पाट्टन विसाल । न्टत्तंत जननि जनु अग्ग बाल ॥ ३९ ॥
धूसरस भूर बनि बार सीस । छवि बनी मुकट जनु जटा ईस ॥
बनि विसद कंठ इक बेलि माल । आभाति उडग्गन निसापाल ॥ ४० ॥
चंपकनि पुहप बनि कंठ कंति । रस रमत भ्रमर जनु पीत पंति ॥
न्टत्तंत एक संगीत भंति । नारद्द रिझ्झ कर धरत तंति ॥ ४१ ॥
इक परत बथ्थ इक लरत हथ्थ । गज तरुनि केलि जनु सरित सथ्थ ॥
इक प्रगट होत इक दुरै जात । परसंत परस्पर सुमन दात ॥ ४२ ॥
छिन एक होत गिर गरुअ देह । गरजंत एक जनु घटा मेह ॥
इक उघटि सब्द संगीत ताल । इक पढत भाष नागह विसाल ॥ ४३ ॥
इक ब्रह्म पोष स्रम करत घोष । पौरान प्रगट इक वचत मोष ॥
दाढाग्र इक्क चर्वंत फुनिंद । इक धरत ध्यान जानिक मुनिंद ॥ ४४ ॥
इक गरनि मुंड मुष रुंड एक । कुंजर सहार गिर तरन तेक ॥
इक मुष्ष अग्गि ज्वाला उठंत । इक परह देह बरिषा उठंत ॥ ४५ ॥

---

१४ पाठान्तर–विमित । भवितव्यता । सयानें ॥ २७ ॥ कों । नृपति । ऐसें । आय ॥ २८ ॥ परिष्या । कों । बैठा । स्नांन । परि । चंद ॥ २९ ॥ गनईस । तहां । बुधि । उक । गरजिय ॥ ३० ॥ गगन । आंनन । अंगं । गज गंज । भैा । जानिक । उलका ॥ ३१ ॥ जहां । तहां द्वै ॥ ३२ ॥ धारता । आकर्षे । बढयै ॥ ३३ ॥ पुरुष । पिषे । जवें । हर्षे । शरीर ॥ ३४

इक करत गाज चिक्कार एक। इक कहत सुहन गिरि उठत कोक ॥
इक करत रूप गिरि शिषर कोइ। इक रूप बहुत इक एक होइ ॥ ४६ ॥
घमकंत धरनि इक लात घात। इक स्वास उडत उपवनह पात ॥
दिष्षीय चरित ए चंद भट्ट। हर्षित हुलास मन में अघट्ट ॥ ४७ ॥
रोमंच अंग उल्सार देह। ऐभीति भंति तहाँ दिष्षि एह ॥ छं० ॥ ४८ ॥ रू० ॥ १५ ॥

कवित्त ॥ जिन देवन दरसंत। देव दानव हिय संकहि ॥
किंनर जष गंध्रव्व। सर्व सनमुष जिन कंपहि ॥
सिध साधक जिन दरसि। तरसि संकत हिय विभ्रम ॥
महावीर बलवंत। कवन रहि सकै तिनं क्रम ॥
अद्भुत चरित चंदह चरचि। सुर विचित्त चिय हथ्थ किय ॥
आराधि मंच मनताप सह। साव धान सम्भारि जिय ॥ छं० ॥ ४९ ॥ रू० ॥ १६ ॥

दूहा ॥ फुनि लुदिष्ट दूरी करन, अकल भयानक भीर।
विना मंच को वसि करै, महाकाय वे वीर ॥ छं० ॥ ५० ॥
अनरिति फल काहू करन, किहिकर अनरित फूल।
दिव्य वस्त्र काहू करन, नाना वरन अहूल ॥ छं० ॥ ५१ ॥
सत्त मंत को दिष्षियत, रज मय के दीसंत।
तामस के पिष्षे प्रवल, क्रोध कलह किरतंत ॥ छं० ॥ ५२ ॥
को इक कुंजर मद वहत, कोइक सिंघ सरूप।
को इक पन्नग विष गरल, को इक दिष्षित भूप ॥ छं० ॥ ५३ ॥
ब्रह्मरूप को इक वदत, को इक तापस भेष।
जूप रूप तसकर लुके, किन में भेष अलेष ॥ छं० ॥ ५४ ॥
अग्निज्वाल किन तन उठत, किन तन बरसै मेह।
चक्क पवन डंडूर के, केतन कंकर षेह ॥ छं० ॥ ५५ ॥

---

१५ पाठान्तर—ज्यों। उप। अन ॥ ३५ ॥ अगिनत। भ्रमर ॥ ३६ ॥ मिगमद। पियूष। पानि। अंगहुंति। विभूति ॥ ३७ ॥ नैंन। प्रकाश ॥ ३८ ॥ आंनि। घुघर। घमंकि। पायंन। रसाल। नृत्यंत। अग ॥ ३९ ॥ वेलि। आभाकि। उडगन। निशापाल ॥ ४० ॥ नृत्यंतं। नारद। रीझ ॥ ४१ ॥ हथ। तरुन। स्वछ्य। दुरे ॥ ४२ ॥ शब्द ॥ ४३ ॥ ब्रह्म पोप। पोरान। एक। ध्यांन जांनि के। जान कि। मुष। अग्नि। वुठंत ॥ ४५ ॥ चिकार। उठंत ॥ ४६ ॥ धमकंति। स्वांस। पिपिय। पिष्षिय। चरित्रं। भट। मैं। अघट्टि। ॥ ४७ ॥ उभार। भय। तहां। दिषि ॥ ४८ ॥
१६ पाठान्तर—जष्य। गंधर्व। सिद्ध। महावीर। अदभुत। चरितं। हथ। सावधांन ॥

सुमन वृष्टि कोइक करत, के फल अन्न रसंस।
रुधिर मंस तन चमकते, आप परस्पर संस ॥ छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ १७ ॥

चन्द का बीरों को देख कर प्रसन्न होना ॥

दूहा ॥ दिष्षि चंद आनंद मन, धनि मुझ गुर उपदेस।
महा पुरुष पिष्षे प्रसन, सो मन मिटि अंदेस ॥ छं० ॥ ५७ ॥ रू० ॥ १८ ॥

चन्द का बीरों की पूजा करना ॥

कवित्त ॥ सनमुष अंजुलि जाइ, करी दंडौत सबन कहुँ ॥
कुसुमंजलि सिर मंडि। धूप नैवेद समुह सहुं ॥
आरति सबनि उतारि। नयन नैनह सब मिल्लिय ॥
रहे पिष्षि सब बीर। जांनि पंनग वच षिल्लिय ॥
किंनी सुभ गति भव भावना। चित चंचल सुथ्थिर करिय ॥
अथ चंद चंद तन मन प्रसन। अस अक्षूत पुज्जिय रलिय ॥ छं० ॥ ५८ ॥ रू० १९ ॥

चन्द का पृथ्वीराज के लिये शत्रुशमन मंत्र ग्रहन करना ॥

कवित्त ॥ जिन बीरन बसि करन। जोग जोगी हठ मंडहि ॥
जिन बीरन बसि करन। दुंद आराधत तंडहि ॥
जिन बीरन बसि करन। चरन सत गुर अभ्यासहि ॥
जिन बीरन बसि करन। प्रेत भूतन विसवासहि ॥
सो बीर पंच हुअ सहज में। जती एक परसाद किय ॥
प्रथिराज भाग वरदाइ बर। सचु समन दूह मंच दिय ॥
छं० ॥ ५९ ॥ रू० ॥ २० ॥

क्षेत्रपालों (बीरों) का पूछना कि हम लोगों को क्यों बुलाया है ॥

१७ पाठान्तर–करण। भयांनक। बे ॥ ५० ॥ काहूं कदण। बर्ण ॥ ५१ ॥ सत। मत। दिषियत। मैं। पिषे। अत्यंतं ॥ ५२ ॥ पंनग। दिषित ॥ ५३ ॥ कोई। भेस। अभेस ॥ ५४ ॥ बरसं। मंडूर ॥ ५५ ॥ केह। करतह। रसस। मंसं। आपस पद परसंस ॥ ५६ ॥

१८ पाठान्तर–दिषि। पिषे। प्रसंन। अंदेश ॥

१९ पाठान्तर–जाई। दंडोत। कहौं। कहुं। नैवद। सहौं। सहुं। सबन। नैंन। नैंनन। मिंलिय। पिषि। जांनि। षिलिय। किनी। भवना। सुथिर। प्रसंन। पूजित ॥

२० पाठान्तर–अधंम आतम भ्रम मंडहि। वाशिकरन। विसवासहि। सोइ। पृथ्वीराज। शत्रु ॥

दूहा ॥ षेतपाल तब चंद सौं । किन्न हुकम लुहेप ॥
जंच मंच आराध हुत । कौं आकर्ष मेव ॥ छं० ॥ ६० ॥ रू० ॥ २१ ॥

चन्द का यह उत्तर देना कि हमने पृथ्वीराज की सहायता के लिये आप लोगों को बुलाया है ॥

साटक ॥ आकर्षेय च देव मेव सवयं, पिथ्थं हितं कारनं ।
विषमं वंक सहाय आय भट्टं, घट्टं भया भैकरं ॥
इच्छेयं मन पेमयं च वरयं, दंदं दलं दारुनं ।
श्रीवीराधि सुरिंद चंद नमयं, चर्नस्य सर्नागतं ॥ छं० ॥ ६१ ॥ रू० ॥ २२ ॥

चन्द का प्रार्थना करना कि जैसे आप राम रावण आदि की लड़ाई में रक्षा करते आए ऐसे ही पृथ्वीराज की भी करना ॥

कवित्त ॥ महनि मचि जब सुरनि । जुद्ध असुरां सुर जव्वह ॥
अमरन अमिय अमीय । मोहि असुरन तव तव्वह ॥
काली सुर महिषास । तिपुर जित्तिय महिषासुर ॥
जालंधर भसमास । राम दसकंध अभंगुर ॥
जहँ जहँ सुदेव वंकम परिय । करिय अभय तुम देव तव ॥
देवाधि देव दानव दहन । चरन सरन हम रष्षि अव ॥
छं० ॥ ६२ ॥ रू० ॥ २३ ॥

वीरों का प्रसन्न होकर कहना कि जब गाढ़ पड़े तब स्मरण करना ॥

कवित्त ॥ षिनक मौन रहि देव । बचन चंदह उच्चारिय ॥
हम प्रसंन तुम्भ सेव, सुनहु भट्ट सुभ कारिय ॥
समर संग तुम्भ राज, जब सु संकट षल जानिय ।
तहँ सुमरंत सु चंद, दंद हंनिहै सुन मानिय ॥

---

२१ पाठान्तर–सों हुकंम । सु ॥

२२ पाठान्तर–पिथं । वंक । सुभटं । घटं । इछेयं । सुरीदं । चरनस्य । सरनागतं ॥

२३ पाठान्तर–महन । मचि । असुरांन । जबह । अमिय । अमींय । मोह । तवह । रांम । दसमथ । जहां २ । संकट । रषि ॥

सिर धारि चंद वाचा लइय, सदा प्रसन सेवक रहै ।
करि क्रिपा नाथ भट्ट सरिस, विवरि नाम वीरन कहै ॥
छं० ॥ ६३ ॥ रू० ॥ २४ ॥

भैरव का एक वीर को आज्ञा देना कि सब वीरों का नाम बतला कर चन्द को पहिचनवा दो ॥

दूहा ॥ तब भैरव इक गन सरिस, किंन हुकम हर नंद ।
विवरि नाम वीरन सबन, कहि पिक्नावहु चंद ॥
छं० ॥ ६४ ॥ रू० ॥ २५ ॥

सब वीरों का नाम गुण कथन ॥

दूहा ॥ वज्रपाट ता नाम गन । घन तन घोर भयंक ॥
प्रथुक नाम बरनत सबन । सुनत मिटै तन संक ॥
छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ २६ ॥

छंद पद्धरी ॥ गुन ईस चरन गुन गहर गाइ । फल सिद्धि बुद्धि जा नाम पाइ ॥
वानिय प्रसंन जो प्रथम होइ । करौं प्रसन वीर पंचास दोइ ॥ ६६ ॥
आइक्क वीर यह प्रथम सेव ॥ तिहि प्रसन प्रसन सब जानि देव ॥
वपुलाइ वीर हंनत विनोद ॥ जिहि प्रसन सदा आनंद मोद ॥ ६७ ॥
बुंदिआइ वीर बन्दौ सनेह ॥ जल मय सुथलनि करि वरखि मेह ॥
आनलप्रहारिय प्रबल वीर ॥ जिहि जुरत दनुज भरहरै भीर ॥ ६८ ॥
नारीय क्रीडनह छोड कोइ ॥ ब्रह्मा उपास करै टूक दोइ ॥
सूलीय भंज अनगंज वीर ॥ बज्रह सुभंजि दोइ करै चीर ॥ ६९ ॥
समसान लोटना वीर वंक ॥ तिहि पीर भीत अन संक भंक ॥
गढ उपडनाइ तो वीर नाम ॥ क्रोधंत कूट नह लहै ठाम ॥ ७० ॥
सामुद्र तिरन इह वीर चाव ॥ सप्तम समुद्र मनु वहत वाव ॥
सामुद्र सोष अनभंग वीर ॥ दनु देव समुद्रन हरत नीर ॥ ७१ ॥

---

२४ पाठान्तर-मोंन । वचन । उचारिय । उचारीय । प्रसन । हुव । हुअ । भटं । कारीय । जांनीय । तहां । दंद हमें सनमानीय । सनमांनिय । सदां । प्रसंन । करिं । भट्टह । बिचारि । नांम । कहैं ॥

२५ पाठान्तर-दोहरा । नांम ॥

२६ पाठान्तर-नांम । पृथक । प्रथुक । बरनन । मिटे ॥

इक लोह भंजनिय वीर दीन ॥ सारन प्रहार भंजै सरीस ॥
संकाला छोट इह नाम धारि । भंजै जँजीर जनु सूत तार ॥ ७२ ॥
विस पाय राय सो वीर जांनि । पचवंत जहर जनु दूध पानि ॥
रुँडमाल नाम लोइ है देव । पिष्यिय भयंक इक कालभेष ॥ ७३ ॥
अगिया वीर कुप्पंत वार । प्रव्वतप्रजारि सो करत छार ॥
विपपिया वीर वीराधि वीर । तिहि क्रोध दनुज संहरै भीर ॥ ७४ ॥
जमघंट नाम औघट्ट जोर । जिन सद्द गाज घन घोर सोर ॥
कालाइ नाम इह वीर लेषि । सब तजै भीर भै भीत देषि ॥ ७५ ॥
कुरलाइ नाम इह कलन जाइ । सुर असुर नाग तातकै पाइ ॥
अगिकान्त वीर जब होत कोह । तब जरत तेज गिरसिषर षोह ॥ ७६ ॥
विपकंत वीर अत्यंत वंक । जिन पिष्पि कंक अन संक संक ॥
रगतिया वीर पग रत्त रंग । अरि रत्त वाह सो करत भंग ॥ ७७ ॥
कोइलाइ नाम जो सेव पाइ । तिन कष्ट होत भग्गै सदाइ ॥
कालक नाम करौ वीर सेव । तिहि प्रसन काम दुग्धं कि देव ॥ ७८ ॥
कालवेलाइ नाम बिन बीर कौन । गम अगम थान जनु वहत पौन
काल घटाइ वज्रंग वान । कोपंत दनुज दल चरन पान ॥ ७९ ॥
इंद्र वीराइ वल इंद्र जोर । चौगुन विलास तन हरत रोर ॥
जम वीराइ वीर अत्यन्त कोह । सत्तउ समुद्द जल करत गोह ॥ ८० ॥
देवग्गि नाम करौं सेव पाइ । सुभ धर्म्म कर्म्म दाता सदाइ ॥
उँकार वीर नमि करौं ध्यान । जिहि प्रसन सदा आनन्द ग्यान ॥ ८१ ॥

२७ पाठान्तर—गाय । नांम । पाय । वांनी । प्रसन । होय । करां । दोय ॥ ६६ ॥ आइक । तिहिं । लाय । जिहिं ॥ ६७ ॥ बुंदि । स एह । थलन । अनल । प्रहारीय । जिहिं ॥ ६८ ॥ छोड्ड-नह । करें । दोय । अनभंग । दो ॥ ६९ ॥ श्मशांन । तिहि संक वंक अनभीत वीर । नाय नांम । हल-हले टांम ॥ ७० ॥ सामंद । जनु । वहतु । बायु । सासमुद्र । शोपा सोपै समुद सब पिवै नीर ॥ ७१ ॥ श्रीर । जंजीर ॥ ७२ ॥ विसप्रापरा । पांनि । मांनि । रुंडमाल । पिषिय । मय ॥ ७३ ॥ अगिया । कोपंत । पर्व्वत । प्रजार । करै । त्रिपपियाइ । तिहिं ॥ ७४ ॥ यमघंट घाट । औघट । ओघट । कालाय । वीर । लेप । तजैं । देव ॥ ७५ ॥ कुरलाय । नांम । तिहिं । जाई । पाय । क्रोध । पोध । तब जरत सिपरं गिर तेज पोध ॥ ७६ ॥ वीर । वंक । पिषि । वाह ॥ ७७ ॥ कोयला । नांम । भग्गै । कालकाइ । कालका । नांम । करो । तिहिं ॥ ७८ ॥ विन । किन । कोंन । वहि ।

झापटा बीर जब जुरत जुद्ध। नहिं सहत जोर दनुदेव सुद्ध॥
मांनिक्क भद्र है मेर मान। ठेलन अठिल्ल गढ द्रुग्ग पान॥ ८२॥
कपडिया बीर कहा करौं कित्ति। मन वित्त राग लै मुक्ति जित्ति॥
केदार राइ नव जुद्ध आप। दिष्षन्त नैन जिन जात पाप॥ ८३॥
नरसिंघ बीर नरसिंघ रूप। चौगुन विलास आतम अनूप॥
गोरिया बीर गुन सकल जानि। नव रसन रास नाना विनान॥ ८४॥
घट घंट बीर जनमे सुजान। सोषत समुद्द अरि समुद पानि॥
कंटेभ्य बीर सुनि समर बाज। दनु दलन कटक में परै गाज॥ ८५॥
बग नाम बीर जब समर कच्छ। बग लेत ढुंढ जनु नीर मच्छ॥
माहव्वगाव वर्ष्षंग अंग। अद्भूत अंग रूपह सुरङ्ग॥ ८६॥
संतो साइ सत मतह सुधीर। पर मध्य अध्य भव नाव कीर॥
महा संतोस सत संग धार। सेवक समुद्र भव नाव पार॥ ८७॥
भ्रमराइकाइ बल वाय वेय। भ्रम परे समर षल परैं लेय॥
महाभ्रमराइ काइक्क अजीत। भ्रम होइ ताहि जाकूर चीत॥ ८८॥
सहसाष अष्षि कर सहस जान। जानु द्रुपद मध्य रहै रच्छ दान॥
सह स्रांग अंग नित रूप चित्त। भय भीत अभय भै करन मित्त॥ ८९॥
षेत्र पाल षिति षल करै ष्याल। नाना चरित्त गोपाल बाल॥
भूतषनइ बीर बलवन्त कूर। तटकन्त षिभ्भिक्ष तनं करत चूर॥ ९०॥
साकिनीमार अद्भूत जोर। समरन्त भक्त तन हरत रोर॥
बेदरी रीति भञ्जन बलाइ। कलपंत करन जे तक्क तपाइ॥ ९१॥
सालि वाहनह ससि सूर रूप। सेवकं निवाजि बर करत भूप॥
ए नाम बीर सुनि चंद लेइ। पहिचांनि प्रसन करि विदा देइ॥
छं० ॥ ९२ ॥ रू० ॥ २७ ॥

समीर। वांन। दनुनि। पांनि। पांन॥ ७९॥ वीर। त्रिगुन। क्रभंत। जल हरन॥ ८०॥ नांम। करूं। करों! पाय। सहाय। करौ। ध्यांन। जिहिं। ग्यांन। ग्यांनं॥ ८१॥ झापरा। युद्ध। नह। माणिक भद्र। मांन। पांनि॥ ८२॥ कापडिया। कहां। करों। वीत। जिति। केदाइराय। दिषंत। नेंन॥ ८३॥ त्रिगुन। गोढिला। जांन। जांनि। विनांन॥ ८४॥ घटघंटे। दुजान। मैं। सु जांन। समुंद। यांनि। कुनटेभ्य। सनि। मैं। परं॥ ८५॥ वग। नांम कछि। कछ। लैत। ढुंढि। मछ। माहवगाव॥ ८६॥ सत्त। मत्तह। परमथ। अथ। नामकीर। बीर सत्यंग॥ ८७॥ भ्रमराय काय। परें। परै। महाभ्रमराय। कायक। होत्त॥ ८८॥ सहसाष्य अषि। जांनि द्रुपद। रछि। दांन। सहस्रांग॥ ८९॥ षित्रपाल। ष्याल। पाल। भूतषानाय। भूतषनाइ। षिभि॥ ९०॥ साकिमीमार। बलाय। पाय॥ ९१॥ सालिवाहन। नांम। लेई पहिचान॥ ९२॥

चंद का बावनो वीर को पहिचान कर प्रणाम करके विदा करना और आप पृथ्वीराज से मिलने के लिये आगे बढ़ना।

कवित्त ॥ पहिचानिय कविचंद। वीर बावंन सूर बर॥
महाकाय मदमत्त। अंत जनु अहिन दनुज कर॥
तेज साजि चष भाजि। तास धीरज्ज धीर घर॥
भीत भयंक भयांन। जानि ग्रीपंम अगनि झर॥
करि नवनि चंद पहिचांन सब। वज्रपात अग्या कलिय॥
बहुराइ देव कवियन प्रबल। मिलन पिथ्थ आगैं चलिय॥ छं॰॥९३॥ रू॰॥२८॥

चन्द का उस जङ्गल का वर्णन करना जहां पृथ्वीराज आखेट खेलता है॥

कवित्त ॥ अग्ग गयौ गिरि निकट। विकट उद्यान भयंकर॥
जौंहन पवरि दिसि विदिसि। बहुत जहँ जीव पयंकर॥
सिंह कोल गज रीछ। बहुत सामर बलवंते॥
चीतल चीत हिरंन। पाइ परकैं भजि जन्ते॥
लेची सियाल लंगूर बहु। कुड कदंम भरि तर रहिय॥
पिष्पे सु जीव कवि चंद नें। तुच्छ नाम चौपद कहिय॥
छं॰ ॥ ९४ ॥ रू॰ ॥ २९ ॥

कवित्त ॥ ठाम ठाम जल थान। मद्धि जल जीव निवासिय॥
ढेंक कुरंस कुरंच। हंस सारस सुभ भासिय॥
बगले वतक विहंग। मगर मछ कछ द्रह पूरिय॥
देवि दनुज पंनग निवास। सिद्ध साधक रुचि रूरिय॥
पर परषि बरन घन पिष्पियै। रोम हर्ष देषत नरन॥
तुछ बुद्धि भट्ट देषत भुल्यौ। कवि सुभन्ति कहै का बरन॥
छं॰ ॥ ९५ ॥ रू॰ ॥ ३० ॥

२८ पाठान्तरः—पहिचांनिय। मदमंत। चष भासि। धीरज। जांनि। ग्रीपम अगनिर। पहिचांनि। बहुदाय। पिथ। अगें॥

२९ पाठान्तरः—अग्र। जहां। जह। बहुत। जहां। सीह। रीछ। सांमर। सांबर। चित्रक। हिरन। पाय। परकै। लंगुर। पिपे। तुछ। नांम। चोपद॥

३० पाठान्तरः—ठांम २। थांन मधि। निवासीय कवह द्रह। पूरीय। पिपिये। बुधि भट॥

कवित्त ॥ सघन वृष्य घन छांह । जानि बद्दल नभ वासिय ॥
देषत पथ्थ गिरंत । वेलि अवलम्बि विलासिय ॥
मोर सोर कोकिलन । (रोर)* चीह पप्पीह पुकारत ॥
सुमन सुगन्ध सम्मूह । अंध मधुकर मधु आरत ॥
बहु कुही बाज सिंचान बच । लंगूर लाग लेयन फिरैं ॥
देषन्त जनावर भष्ष ही । जनु अकास तारा गिरैं ॥
छं० ॥ ९६ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ तहँ षेलन पृथिराज । संग सामंत जङ्ग जुरि ॥
षट सुडोरि सँग स्वान । लेत ते जीव सबन जुरि ॥
बगुर घेरि विप्पंन । अप्प मूलन में मंडिय ॥
तक्क तक्के इक रहिय । हक्कि षेदा षिक्क छंडिय ॥
भयराइ भग्गि पसु उठि चले । आवै आवै होइ रहि ॥
परसपर सोर वे करत सुनि । यों सिकार चन्दह सुलहि ॥
छं० ॥ ९७ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

पृथ्वीराज के शिकार की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ तिलक भाल ससि षण्ड । गण्ड मद भमर विलुद्धिय ॥
सुरभि तेल सिंदूर । सुमन संपति मन सुद्धिय ॥
सुद्ध दुद्ध जिम दसन । विसद बानी जिम न्त्रिंमल ॥
फरस मुसल असि चर्म । हथ्थ पंचम मोदक कल ॥
पुज्जिय सुचंद सुरइंदजग । गवरिनंद दूषन दुरय ॥
कंपहि सिकार गज तुंड डर । सव विघंन गनपति हरय ॥
छं० ॥ ९८ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

---

३१ पाठान्तर–वृष्य । जांनि । बदल पद्य । पथ । * अधिक पाठ है । पपीह । सीचान । लंगुर । फिरं । देषत । जिनावर । भषक ही भष्षक हैं । जनुं । आकास । गिरं ॥

३२ पाठान्तरः–तहां । सुं डोरि । संग । स्वांन । बंगुर । घेरीय । वियन । मूडिय । हक्कि । भयराय । भगि । हुइ । रहिय । लहिय ॥

३३ पाठान्तरः–गंड चम्मर मदलुद्धिय । सुभ्रि । संपंति । दुद्ध । द्दुध मुद्ध । वांनी । न्रिमल । चर्म्म । हथ । पुजिय ॥

कवित्त ॥ दुजपति चंक्रह दिरन । इक्क निभय सुभाय ज्ञाति ॥
गजनंनह टारन । विघन विघ दिट्ठ गनप्पति ॥
पट आनन वर मोर । त्रतिय उप्पीय निसंक उर ॥
भगवति वाहन सिंघ । वेदग जीय सुमेर थरि ॥
वरदाइ चंद सुपच्चारि पग । पंचम वह सुपह रच्चहि ॥
आतंक अवर आरन्य पसु । डर थरहरि कंपन रच्चहि ॥
छं० ॥ ९९ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

कवित्त ॥ हहरि हिरन हारियव । हेरि कातर रव रहिय ॥
अप्प त्रास भय मोह । विरह लग्गी चटपट्टिय ॥
हिय धरक्क धुधरह । वदन लोइन जल निभ्झर ॥
तकित चकित संकीन । समग संकरिय दुप्पभर ॥
भैरत्त चमक्कत पत्त रव । पिनक चित्त जिम उप्परै ॥
पिक्षत सिकार पिथ कुँअर डर । पसु पींपर दल थरहरै ॥
छं० ॥ १०० ॥ रू० ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥ पोमिन वन नहिं चरहि । नहिन संचरहि कुमुद वन ॥
ईप पेत परहरहि । जीर परहु अविरत्त मन ॥
मंथर गति लखि मुंथ । कास कानन नह चप्पहि ॥
नह पिप्पै नियनारि । नहिन चप कंदनि रप्पहि ॥
गिरि मझि गहिर गुम्भह वसहि । नीर समीप न संचरहि ॥
सोमेस सुतन आषेट उर । इमड ढाल उस सह चसपि ॥
छं० ॥ १०१ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ गिर कंदर सर वरह । सरित कच्छह घन गुच्छह ॥
निझ्झर कूल न द्रहन । वेतनल तिन सर पुंजह ॥

---

३४ पाठान्तरः—इक सुभिय निसंक अति । गजवदन तह । गजनंतह । दिठिय । गनपति । त्रतीय । उपीय । निसंक । गज्जीय । गजिय । थिर । रहिय । आतंक । आरंन्य । रहिय ॥

३५ पाठान्तरः—हहकि । हीरन । हारीयव । रच । अय । लगिय । धरक । धुंधर । निझर । संकित । समग । संकरीय । दुप । भयपत्र । चमकत । पत्र । उपरें । पिलत । कुंअर । पिंयद ॥

३६ पाठान्तरः—नहि । चरहिं । इप । परहरत । परभय । मथर । मुथ । चपहि । पिपैं । नाहि । रषहि । मधि । गुजह । इमद । सहि ॥

ऊजर अरि पुर घरह। सैल तट उद्धन अद्धह ॥
हथ्थ जोरि सब सुझ्झि। उझ्झ दिष्पहि कित लद्धह ॥
फल फूल इष्ष भु अकास थल। बन उपवन घन संचरहि ॥
ढुंढत डढाल डढाल चिय। भुक्कारन बहु भुक्करहि ॥
छं० ॥ १०२ ॥ रू ॥ ३७ ॥

कवित्त ॥ नहिं गव्वत करि गव्व। नहिन गज्जत घन गज्जत ॥
घोलत नहिय नयंन सिंघ कहि बोलत लज्जत ॥
भुअन महि संचरत। नहिन संचरत दुरद बन ॥
चरन लेष लुप्पतसु। पुंछ गूज मुत्तिय मग गन ॥
धक धकहि धुकहि तकहि चकहि। दिग्घ उसासन उल्हसहि ॥
प्रथिराज कुंवर कोबंड डर। गिर कंदर केसर बसहि ॥
छं० ॥ १०३ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

कवित्त ॥ बग्गुर अगिनत परत। कितिक फंदन पगविद्धत ॥
कितेक फूलन मरत। कितिक स्वानन मह सिद्धत ॥
घंटनरागन कितक। कितक चीते तकि दब्बत ॥
बाज सिंचान कुहीन। झपटि चंचनु फल चब्बत ॥
घन कूह सिकारन ह्वै रही। भजि न जीव कहुं जै सकै ॥
बलवतं बाघ हथ्थिय अजर। पकरि हंकि लीजै धकै ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

कवित्त ॥ गाडी लिए कितेक। कितक उंटन पर डारे।
पत राषे घर कितक। कितक हथ्थी पर धारे ॥
कावर कंधन कितक। कितक स्वानन मुष टुट्टत ॥
बिंछी सर्प विषंग। मंच वादी मिल लुट्टत ॥

३७ पाठान्तरः—गिरि। कछह। गुछह। निझर। कुलन। कूलह। सेल। अधह। हथ। सुभि। उभ। दिषहि। इष। भू। भूपुकारनिबहुसुकरहि ॥

३८ पाठान्तरः—नहिं। गबनु गब। गजत। नेंन। लाजत। भुअअन। रेष। लुंपतसु। पुछ। मग्ग मुत। हिंचकहि। दिघ। उल्हसै। पृथीराज। कुंअर। केहरि। बसै ॥

३९ पाठान्तरः—वगुरि। कितेक। स्वांनन। दबत। चंचंनु। पल। चूब्बत। चूवत। कहु। कहुं। अथिय। हथीय। हथिय। हकि ॥

वज्जत निसान सहनाइ सुर । तबल उक्का बज्जत बलिय ॥
सिक्कार षेलि घन रस रच्यौ । सब पहार पग बलदलिय ॥
छं० ॥ १०५ ॥ रू० ॥ ४० ॥

कन्ह चौहान आदि सब सरदारों का आकर पृथ्वीराज से मिलना और कहना कि आज यहीं शिकार हो ॥

कवित्त ॥ आइ कन्ह चहुआन । नवनि प्रथिराजसु किन्निय ॥
आइ राइ गोयंद । प्रथुक आदर आदन्निय ॥
आइ चंद पुंडीर । धीर सष्यह हंसि मिल्लिय ॥
बलिभद्रह कूरंभ । कहर किन्ने रस षिल्लिय ॥
अबुआ राइ पावार मिलि । बहुन बंध सिर कर धरिय ॥
मिलि कही सिंह पाहार इह । आज केलि अद्भुत करिय ॥
छं० ॥ १०६ ॥ रू० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ मिलिय सकल सामंत तहँ, गनि न कहै प्रथु नाम ॥
हयन चींस परबत गजिय,सघन सुविद्रुम भ्राम ॥ छं० ॥ १०७ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

पृथ्वीराज का शिकार से घर की ओर लौटना ॥

छंद पद्धरी ॥ फिर चले कुँअर प्रथिराज गेह । मिलि सकल सूर सामंत नेह ॥
परहास परसपर करत केलि । तारीन तक्कि न्टप लेत झेलि ॥ १०८ ॥
संगाइ नीर कर मुष पषारि । सब करन मंडि कपूर धारि ॥

गोठ (भोजन) के स्थान पर ठहरना ॥

जहां हुई गोठि भोजन नरिंद । तहां हुते सकल सामंत हंद ॥ १०९ ॥

चन्द बरदाई का आकर पृथ्वीराज से मिलना और पिछला सब वृत्तान्त एकान्त में ले जाकर कहना ॥

फुनि मिले चंद बरदाइ आइ । कछु कही बात पिछली सुनाइ ॥
न्टप भट्ट जाइ बैठे इकंत । फिरि कही बत्त जो आदि अंत ॥११०॥

---

४० पाठान्तरः-लीए । कितक । कितेक । पति । हथी । स्वांनन । सर्प्प । बजत । निसांन । सहनाय । डक । बजत । सिकार ॥

४१ पाठान्तर-आय । चहुआंन । पृथ्वीराज । किनियः । आय । राय । गोइंद । पृथुक । आय । सयह । हसि । मिलिय । षिलिय । कहिय ॥

४२ पाठान्तरः-तहां । नाम ॥

पृथ्वीराज का भोजन करना और फिर आगे बढ़ना ॥

सुष मद्धि सुष्ष प्रथिराज पाइ। भोजन करंन न्टप बैठे आइ ॥
छह रस निवास आहारि अंन। करि कुरल्ल पांन करपूर लिंन ॥१११॥
म्टगमद जवाद सब चरचि अंग। कसमीर अगर सुर रहिय अंग ॥
सुभ कुसुमहार सब कंठमेलि। हूम चलिय बलिय चहुआन षेलि ॥ ११२॥
छह अग्गा हूक्क सैा तुरिय तेज। उड्डंत पंषि बिन पंषिकेज ॥
बगसीस सकल सामंत जोग। दिषि वाह वाह सब कहत लोग ॥ ११३ ॥
सुष चाल फाल जे हिरन लेत। उत्तंग गात पष्षर समेत ॥
गज घालि बांह घूघर सलोल। लष्षें न राह करते कलोल ॥ ११४ ॥
हा कहंत उडत हां कहत ठक्क। गिर परत धंक्क जिन कोट गक्क ॥
पित मात असलि औराक देस।

सब सरदारों को एक एक घोड़ा बांट दिया उसी पर सब चढ़ कर चले।

सोभंत बानि रवि रथ्थ भेस ॥ ११५ ॥
है एक एक सब बंटि दीन।
चढ़ि सूर सकल सामतं लीन* ॥

कविचन्द को एक हाथी देना जो महा बलवान था।

दिय हस्ति एक कवि चंद बोलि।
अंदून नांह को सकै षोलि ॥ ११६ ॥
तल बहन पाट सुभ्भै न अंषि।
अति पाइ काइ गहि लेइ पंषि ॥
अनिं गज्ज मुष्ष को सकै झेलि।
खल दलन मभ्भ पारत्त भेलि ॥ ११७ ॥
सुर नाथ वाह सम अंग ओप।
दिष्षियै खिज्यौ जनु काल कोप ॥
बिन रोस सहज में अजा जांनि।
घर कोइ बंचिलै चल्यैा कानि ॥ ११८ ॥

* यह तुक एशियाटिक सोसाइटी के पुस्तक में नहीं है ॥

सक्कै न वोन्हि को पय अरुढ । लग्गहै पग्ग वनि कवन मूढ ॥
अगि जन्न मम्भ्क मांनै न संक । होइ रहै भूत सुनि वज्जि डंक ॥ ११९ ॥
सुनि विरद कांन चल्लंत मग्ग । निधि चंद पथ्थ दिय कनक वग्ग ॥
छं० ॥ १२० ॥ रू० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ याग धरी कवि चंद सिर, हरष भयौ बहु अंग ।
तूं विक्रम अक्रम हरन, करन दरिद्रह भंग ॥
छं० ॥ १२१ ॥ रू० ॥ ४४ ॥

एक एक सामंत पय, कीनिय चंद हजूर ।
बढि चल्लिय हल्लिय अगैं, सरित तुरंगन पूर ॥
छं० ॥ १२२ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

कवि चन्द का पृथ्वीराज की स्तुति करना ॥

कवित्त ॥ करिय नवनि कविचंद । छंद अनेक पढ्ढि कर ॥
तूं सुरपति सम कुंअर । देव सामंत समो वर ॥
अगिन कन्ह जल चंद । पवन गोइंद प्रबल्ल बल ॥
धरा चंद बल धीर । तेज चामंड जलन पल ॥
रवि तेज कहर कूरंभ सव । चंद अमृत आवू धनी ॥
द्रगपाल सवल सामंत सव । रहै दव्वि धरती धनी ॥
छं० ॥ १२३ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

---

४३ पाठान्तरः—फिरि । पृथीराज । येह ॥ १०८ ॥ मंगाय । मंगि । होइ ॥ १०९ ॥ मिलें । वरदाय । आय । कहिय । वत्त । पछलि सुनाय । जाय । एकंत ॥ ११० ॥ मध्य । सुप । पृथीराज । पाय । भोजंन । करन फुनि । वैठि । आय । लीन ॥ १११ ॥ जर्थाह । सुभ कंठहार । मेल्हि । चहुवांन ॥ ११२ ॥ इक । एक सो । उहुत पंपि ॥ ११३ ॥ उतंग । पपर । लपे ॥ ११४ ॥ धक । जिहिं । गढ । रथ ॥ ११५ ॥ हय । लिन । आंदून ॥ ११६ ॥

तव लहत । सुझै । काय । पाय । लेय । गज । मुहप । मझ । पारंत ॥ ११७ ॥ उंप । दिपिये । मैं । चला । कांन ॥ ११८ ॥ सकै । कोइ । पग । जल । मझ । मांनै । होय । वजि ॥ ११९ ॥ चालंत । सथ ।

४४ पाठान्तर—तु । तूं ॥

४५ पाठान्तर—कीनीय । चलिय । हलिय । अगै । तुंगन ॥

४६ पाठान्तर—पढि । कुमर । कुंअर । समवर । अगनि । चावंड । अबू । सकल । रहे । दवि ॥

दूहा ॥ जीभ एक कविचंद कै, कित्ति कही क्यौं जाइ।
जीव बुद्धि प्रिथ्यद निमित, रद्द सो मत्ति सुभाइ ॥
छं० ॥ १२४ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

सब लोगों को अपने अपने घर विदा करना ॥

रह्यौ रंग बहुरे अचन, करिय विदा सनमान।
निसा सुष्ष मंडे सुषन, जागे जगत भान ॥
छं० ॥ १२५ ॥ रू० ४८ ॥

वीरों के मिलने के समाचार से पृथ्वीराज का प्रसन्न होना ॥

प्रथीराज आनंद मन, सुनि वीरन बर वत्त।
फूलत तन तरु नीर लभि, दूम आतम उलसत्त ॥
छं० ॥ १२६ ॥ रू० ॥ ४९ ॥

श्लोक ॥ शुभं दिवसे शुभं वार्त्ता। अशुभेच अशुभानि च ॥
शुभाशुभं यथा युक्तं। भवंति दिवसानि च ॥
छं० ॥ १२७ ॥ रू० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ प्रथियराज चहुआन। बान पारथ बलिबंडह ॥
प्रथीराज चहुआन। दंद दंडेति अदंडह ॥
प्रथीराज चहुवान। सरिस जुध कोउ न मंडै ॥
प्रथीराज चहुवान। सचु चिनु रद्द गहि कंडै ॥
प्रथीराज चहुवान पहु। कली करन अवतारकहि ॥
सोमेस सूर पूरह्न सुभग। उद्दर पिथ्थ अवतार लहि ॥
छं० ॥ १२८ ॥ रू० ॥ ५१ ॥

---

४७ पाठान्तरः—जाय। बुधि। पिथह। मंति ॥
४८ पाठान्तरः—सनृमांन। सुष। मंहे। उगत। भांन ॥
४९ पाठान्तरः—बत। लहि। दूम नृप आतम उलसत ॥
५० पाठान्तर—सुभं। सुभं। वार्त्ता। असुभे। असुभानि। सुभासुभं। यथायुक्तं ॥
५१ पाठान्तर—पृथीराज। चहुआंन। चहुवान। बांन। चंडह। पृथीराज। अडंडह। जुद्ध। त्रिनु। कलि। पिथ ॥

दूसरे दिन सबेरे पृथ्वीराज का उठना और नित्य कृत्य करना ॥

दूहा ॥ प्रात राज जग्गे प्रथम, गो द्विज दरसन कीन ।
देहक्रांति पुनि होइ सुचि, पावन पानि सुलीन ॥
छं० ॥ १२९ ॥ रू० ॥ ५२ ॥

करि पावन पवित्त वर, सोहन सुरभि सुतेल ।
मर्दनीक मर्दन करै, बढै धात तन बेल ॥
छं० ॥ १३० ॥ रू० ॥ ५३ ॥

नहाकर दस गोदान, दस तोला सोना और बहुत सा अन्न दान देना ॥

करि सनान गंगोदकह, दिय सुगाइ दस दान ।
दस तोला तुलि हेम दिय, अंन दान असमान ॥
छं० ॥ १३१ ॥ रू० ॥ ५४ ॥

महल में पृथ्वीराज का बिराजना और सरदारों का आना ॥

छन्द पद्धरी ॥ करि स्नान दान सुचि रुचि कुंआर । होइ देवरूप साप्यात चार ॥
कीनौ सु महल वज्जै निसान । आनन्द सकल सामन्त मान ॥ १३२ ॥
आये सुमहल सामंत सूर । पूरंन तेज वीरत्त पूर ॥
अनभङ्ग अङ्ग अनभूल वांन । जिन दिट्ठ अरिय पावै न जान ॥ १३३ ॥
कैमास आइ कीनौ जुहार । विद्या सु चतुर्दस मत्ति सार ॥
गोयन्दराज गहिलौत आइ । बैठो सुकुंअर कमधं नवाइ ॥ १३४ ॥
चहुवान कान्ह आयौ अभङ्ग । भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसङ्ग ॥
अनि अनी सुभर बैठे सुआइ । अन मित्त मत्ति बल अप्रमाइ ॥ १३५ ॥

---

५२ पाठान्तर–गो । देह कांति । पुनः । शुचि । पांन । पांनि ॥
५३ पाठान्तर–पावन । सुरंभ । सुरभ । मर्द्दनीक । मर्द्दन ॥
५४ पाठान्तर–सुस्नांन । गंगोदकहि । दांन । अन । दांन । असमांन ।

राजन कुँआर मधि सूर साज। देवतन मद्धि जनु देवराज ॥
गिरिराज मद्धि सब गिरन रज्ज। देखन्त सभा सुभ इन्द्र लज्ज ॥
छं० ॥ १३६ ॥ रू० ॥ ५५ ॥

वीरों के वश होने की बात से पृथ्वीराज का पेट फूलता है पर किसी से कह नहीं सकता ॥

दूहा ॥ बैठि सभा प्रथिराज रचि, आय सुरति निज चित्त ॥
वत्त बीर बरदान की, अति उमंग उल्लसित्त ॥
छं० ॥ १३७ ॥ रू० ५६ ॥

रचै न आनँद कुँअर हिय, उगमत कण्ठ प्रमान।
कहै न कासों वत्त बर, मानों दुद्ध उफान ॥ छं० ॥ १३८ ॥ रू० ॥ ५७ ॥

कैमास का हाथ जोड़कर पूछना कि आपके मुख पर कुछ उत्साह दिखाई देता है पर आप खुलकर कहते क्यों नहीं ?

अरिल्ल ॥ पानि जोरि कयमास। वदै तव राज प्रति ॥
उर अवलोकित उलसत। सामन्त राज अति ॥
को कारन मुष चाह। न कथ्थिय्हि वत्त सति ॥
सुभर सूर सामन्त जु। विनवत्त राज प्रति ॥ छं० ॥ १४० ॥ रू० ॥ ५८ ॥

पृथ्वीराज का चन्द के वीरों को वश करने का समाचार कहना ॥

---

५५ पाठान्तर–सांन। दान। कुआंर। कुआर। होय। वज्जे। निसांन। मांन ॥ १३२ ॥ पूरन। तेज। वीरत। अभूल। बांन। दिट्ठि। जांन ॥ १३३ ॥ आय। चतुर्द्दस। मंति। गोइंद। आय। आई। कुमर। कमल। नवाय ॥ १३४ ॥ चहुआंन। भारथ। कथ। अंनि अंनी। आय। आई। मित। अप्रमाय ॥ १३५ ॥ कुंमार। कुआर। देवतनु। मधि। मधि। रज। शुभ। लज्ज ॥ १३६ ॥

५६ पाठान्तर–प्रथीराज। बरदांन। अल्हसित्त ॥

५७ पाठान्तर–आनंद। कुंअर। कुमर। प्रमांन। मनों। दूध।। उफांन ॥

५८ पाठान्तर–चंद्रायना। पांनि। उल्हसत। सांमंत ॥ १३९ ॥ चाह। कथि। बत। विनवत ॥ १४० ॥

दूहा ॥ तब कहै कुँअर सामन्त सल, कालि आषेटक रंग ।
भयौ तुर तुम्हैं एक भव, आलस ची सें गंग ॥
छं० ॥ १४१ ॥ रू० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ अपरंजे आषेट । चन्द भुल्यौ सुवट्ट वन ॥
जंगल इक तापस्स । मिल्यौ बरदाइ सुद्ध मन ॥
प्रसन भयौ कविचन्द । वीर मन्त्रह दीनौ वर ॥
अजमायौ कविचन्द । वीर बावन दरस चिर ॥
तिन देखि अमित चरितह सुनत । बरनै कवि बरदाइ अति ॥
अनेक रूप अनेक गुन । अनँत गति अनतह सुमति ॥
छं० ॥ १४२ ॥ रू० ६० ॥

सरदारों का उपहास करके कहना कि भाट, नट, चारन, ये सब आरत हैं इन की बात सत्य नहीं माननी चाहिए ॥

अरिल्ल ॥ प्रसन सूर सामन्त सकल वर । हासे अप्प परसपर सुभ्भर ॥
भट नट चारन जू आरत्तह । इनकी गति न मन्नियै सत्तह ॥
छं० ॥ १४३ ॥ रू० ॥ ६० ॥

कैमास ने कहा कि चन्द को देवी ने बरदान दिया है वह सचमुच कोई अवतार है ॥

गाथा ॥ कथ्थिय वर कैमासं । देवी वरदाय चन्द भट्टायं ॥
अस तिन चवै असेसं । सत्यं रूप सत्य अवतारं ॥
छं० ॥ १४४ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

कन्ह ने कहा कि चन्द छूट गया था यह बात सच है, इसी पर उसने यह बात प्रसन्न करने के लिये गढ़ी है ।

---

५९ पाठान्तर–कुमर । कुंअर । काल्हि ॥
६० पाठान्तर–अपरजेन भयौ । कविचंद । भूल्यौ । बट । तापस । मिल्यौ । चंद । वरने । बरदाय । अनेक । अनत ॥
६० पाठान्तर–प्रसंन । सुभर । भट्ट । नट्ट । चारंन । जु । आरतह । मनिये ॥
६१ पाठान्तर–कथिय । भटायं ॥

अरिल्ल ॥ कहै कान्ह हम मानी सब्बह। भुल्ल्यौ भट्ट मग्गा बन तब्बह ॥
पसन केलि डर जोरिय बत्तं। इह अचिज्ज मन्नै न विसत्तं ॥
छं० ॥ १४५ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

पृथ्वीराज के मन में सन्देह हो जाना ॥

दूहा ॥ किहि मंनी अमनी सुकिहि, त्रिविधि जानि संसार ॥
सुनत राज विभ्रम भयौ, पर्यौ सुचित्त बिचार ॥
छं० ॥ १४६ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

इतने में चन्द का आकर आसीस देना ॥

इहि विचार करवह मनह, आयौ चंद सुतब्ब।
दिय असीस कर उंच करि, वेद नीत वर कव्व ॥
छं० ॥ १४६ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

पृथ्वीराज का चन्द को पास बुलाकर वीरों की बात छेड़ना।

राजह सूर हकार लिय, दिय सादर सनमान।
वीर विरद बरदाय प्रति, लग्गे बत्त पुछान ॥
छं० ॥ १४७ ॥ रू० ॥ ६५ ॥

पृथ्वीराज का चन्द की बड़ाई करके कहना कि हम लोगों की बड़ी अभिलाषा है सो आज वीरों का दर्शन करवाओ ॥

कवित्त ॥ कहै चंद कविराज। बत्त पूरब जो वित्तिय ॥
कहिय कुँअर प्रथिराज। चंद चरची सो सत्तिय ॥
हमहि बहुत अभिलाष। देव वीरानि दरस कज ॥
पावहिं तो परसाद। सूर सामंत मंत अज ॥

---

६२ पाठान्तर-कहैं। मांनी। भुल्यो। मग। तवह। जोरीय। सुभ हित डवर गाम सपत्तं। अचिज्जं ॥

६३ पाठान्तर-किहिं। स। किहिं। त्रिधा। जांनि। चित ॥

६४ पाठान्तर-इह। विचारि। तब। दीय।

६५ पाठान्तर-राज। हक्कार। सनमांन। वरद। वरदार। लगे। पूछांन ॥

तो सम न और तिहु लोक में । नट भट नाटिक्क नर ॥
संसार पार बोहिथ समए । तोहि मात देवी सुवर ॥
छं० ॥ १४८ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

कवि चन्द का मंत्र जपना और होम करना ॥

दूहा ॥ सुनि आनंद्यौ चंद चित । कीन मंत आरंभ ॥
जप्प जाप कवि होम सव । लग्यौ कज्ज असंभ ॥
छं० ॥ १४९ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

वीरों का प्रगट होना ॥

गाया ॥ किय जप जाप सुहोमं । आए वीर धीर आतुरयं ॥
गज्जै गयन गहीरं । भय भै भीत सोर आघातं ॥
छं० ॥ १५० ॥ रू० ॥ ६८ ॥

छंद भुजंगी ॥ धमंक्की धरा धंम धंमै धरक्की । कठं पिठ्ठ कंमठ्ठ कठ्ठै करक्की ॥
डिग्गै अड्डिगं सो दिगंपाल दस्सं । तरक्कै चकै मुंनि जंनं तपस्सं ॥१५१॥
भरक्कै सुवाजं सु वाजं विकुट्टै । तरक्कैक्क एकं उलट्टै सुलट्टै ॥
इसो आगमं भौ सुबावन्न वीरं । कपे कायरं धीर रघ्यौ सुधीरं ॥
छं० ॥ १५२ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

वीरों के शब्द से सामतों का डरकर सोचना कि बिना काम इन को बुलाना ठीक नहीं हुआ ।

दूहा ॥ सुनिअ घात वर वीर कौ, चमकै चित सामन्त
इन आकर्षै कज्ज विन, किनौं अप्प अमन्त ॥ छं० ॥ १५३ ॥ रू० ॥ ७० ॥

---

६६ पाठान्तर—कहै । कुंअर । प्रथीराज । चरचा । चर्चि । सतिय । हमहिं । वीरनि । वीरांन । कजि । पावहि । सामंत । तिहुं । मैं । नट । भठ । नाटिक्क ॥

६७ पाठान्तर—आनंद्यो । मंत्र । जप । सम । लगौ । कज ॥

६८ पाठान्तर—गाहा । स । गजे ॥

६९ पाठान्तर—धम्मकी । धम । धमै । धम्मे । धम्मैं । धरकी । कमठ । कढ़े । करकी । डिग्गै । डिगे । अडिगं । द्रिगंपाल । दसं । तरके । तरकें । चक़े । मुनि । मुनि । जनं । तपसं ॥ १५१ ॥ भरके । विछुटे । तरंकेक्क । उलटे । सुलटे । इसो । बीरं । कंपे । कपैं । कायरं स ॥ १५२ ॥

७० पाठान्तर—सु आघात । चमके । कज । किनौं ॥

दो मत्त हाथी दर्बार के बाहर बाँधे थे वह वीरों का भयानक शब्द सुनकर चौंके ॥

दूहा ॥ गज घुमन्त गजराज वर, दो हथ्थी दरबार ॥
दूरि दूरि बन्धे रचैं। काल समान करार ॥ छं० ॥ १५४ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ अति बलवन्त अनन्त। गरुअ मानहु गिरवर से ॥
गगल जेम गाजन्त। बंध बंधन ते सरसे ॥
च्यार पटे कुट्टे* कंक्राल। मद्द नद्दह सुअहो निसि ॥
पवन पाइ पुरवाइ। काल रूपी कँकाल रिस ॥
सिर दिघ्घ दिघ्घ दन्तह सुभग। जरजराइ बंगरि जरिय ॥
लष लष्ष दाम पावह्वि पटै। कनक साजहाज सु करिय ॥
छं० ॥ १५५ ॥ रू० ॥ ७२ ॥

दोनो हाथियों का तुड़ाकर लड़जाना और दर्बार में खलभली मचना ॥

दूहा ॥ बीर घोर आघात सुनि, गज कुटि बन्धन तोरि ॥
भिरे उभय भय भीत होइ, परि दरबारह रोरि ॥
छं० ॥ १५६ ॥ रू० ॥ ७३ ॥

छंद मोतीदाम ॥ भिरे गजराज भयानक रूप। उभै मदमत्त महा जम जूप ॥
भए कइकाल कराल अहूट। लगै जनु क्रोध सु कज्जल कूट ॥ १५७ ॥
जुरे जुग जानि गुरू गजराज। किधौं कउ दानव रूप दुराज ॥
जगे प्रलकाल भयानक भूत। इसे दुइ दन्ति भिरे अदभूत ॥
छं० ॥ १५८ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

---

७१ पाठान्तर–गुमांन। हथी। रहै। समांन ॥

७२ पाटान्तर–गरुय। मांनहु। तें। च्यारि। पट। * अधिक पाठ। मद। हद। हद्द। अहनिसि। पाय। पुरवाय। कंकाल। दिघ दिघ। गरजराइ। वंगरी। लष २। दांम। पावहिं। पटे। साजसु ॥

७३ पाठान्तर–छुट्टि। भिरै। भे। दरबारहिं। रोरि ॥

७४ पाठान्तर–भिरैं। भयांनक। मदमत। कोइ। अहठ। लगै। कजल। कूठ ॥ १५७ ॥ जांनि। गिरराज। कोऊ। दांनव। लगे। जगैं। प्रले। भिरें ॥ १५८ ॥

हलकारों का बहुत उपाय करना पर हाथियों का वश में न आना ॥

दूहा ॥ दौरि सकल सामन्त मिलि, करे अनन्त उपाइ ॥
दोस लगे छुटै नहीं, भई सुहायो चाइ ॥
छं० ॥ १५९ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

चिहूं ओर हरषी छुटै, परै अगड सुमार ॥
गोला लगै गिलोल गुरु, छुटै न तो इसरार ॥
छं० ॥ १६० ॥ रू० ॥ ७६ ॥

गाथा ॥ वर वावंन सु वीरं । कौतिग लपन्त सूर सामन्तं ॥
करे अनन्त कलापं । नह छुट्टन्त गज गरं आइ ॥
छं० ॥ १६१ ॥ रू० ॥ ७७ ॥

चन्द का बावन वीरों से प्रार्थना करना कि आप लोग इन हाथियों को छुड़ाकर बाँध दीजिए ॥

दूहा ॥ तब कर जोरिय चन्द कवि, अग्गै वांवन वीर ॥
तुम सु छुडावहु मन्त कछु, बहुरि जरहु जञ्जीर ॥
छं० ॥ १६२ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

भैरव की आज्ञा से वीरों का हाथियों को ज़ंजीर में बाँध देना ॥

अरिल्ल ॥ तब भैरव भूवाल वीर वर । कीन हुकम कालीय ऊंच कर ॥
छोरावहु गजराज पांनि गहि । बहुरि जरौ जञ्जीर थान कहि ॥
छं० ॥ १६३ ॥ रू० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ तब काली दोस्यौ नलपि । गज्ज छुराइ समथ्थ ॥
उभै पांनि सौं रद उभै । गहै उभै वरहथ्थ ॥
छं० ॥ १६४ ॥ रू० ॥ ८० ॥

---

७५ पाठान्तर–दोरि । सांमंत । करै । उपाय । लगें । छुटै । नही । स ॥
७६ पाठान्तर–चिहुं । उर । परै सुगड पर मार । लगें । गुल । छुट्टै । तो । अस ॥
७७ पाठान्तर–बांवन । । सांमंत । करै । गुरुयाइं । गलआई ॥
७८ पाठान्तर–बावन । बांवन । स ॥
७९ पाठान्तर–भुवाल । किन । उंच । छोरावौ । पांनि । जरौ । थांनि । कहिं ।
८० पाठान्तर–गज । छोराय । समथ । पांनि । सों । सं । हथ ॥

यह कौतुक देखकर सरदारों का आश्चर्य में होना और सब का दर्बार में आकर बैठना ॥

गाथा ॥ बंधन दीन सु पाइं। कौतिगं दिष्षयं सब्ब सूरं ॥
मंनिय मन आचिज्जं। बैठे फेरि आइ दिवानं ॥
छं० ॥ १६५ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

पृथ्वीराज का सब बीरों को प्रणाम करना, चन्द का नाम ले लेकर सब बीरों को पहिचनवाना ॥

परखे बीर सु सब्वं। करी प्रथिराज पाइं परिनामं ॥
प्रथक चन्द कथि नामं। पहिचांने बीर बीरायं ॥
छं० ॥ १६६ ॥ रू० ॥ ८२ ॥

चन्द का पृथ्वीराज से कहना कि बिना कारण इन को बुलाया है इस से इन की बलि दो पृथ्वीराज का बावन घड़ा मदिरा बावन बकरे मँगाकर बलि देना और भैरव आदि की पूजा करना।

छंद पद्धरी ॥ पहिचांनि राज प्रथिराज बीर। भयौ उदित मन आनंद धीर ॥
कविचंद कहिय प्रथिराज राज। इन देहु सुबल व्याकुल समाज ॥ १६७ ॥
बिन कज्ज अप्प आराध कीन। नवि बिघ्घत कुसल लभ्भो सुदीन ॥
बावन घट्ट वारुनि मँगाइ। बावन बीर प्रति घट्ट पाइ ॥ १६८ ॥
बावन अजासुत भष्ष आंनि। दीने सु आदि भैरव निदांन ॥
सिंदूर तेल पुह्पनि अरचि। सन्तोषि पोषि सब तन चरचि ॥
छं० ॥ १६९ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

---

८१ पाठान्तर–दीय। सु पायं। पाई। सब्ब देषीयं। दिषय सब। मनियं। आचिजं। फिरि। आय। दीवांनं ४

८२ पाठान्तर–कर। क्रारि। पाय। प्रथुक्र। करि ॥

८३ पाठान्तर–पहिचानि। प्रथीराज। भयो। धीर। कहीय। प्रथीराज। स। बाकुल ॥ १६७ ॥ कज। कुशल। लभैं। बावन। घट। मंगाई। घट। पान ॥ १६८ ॥ भष। आंनि। निदांन। अरचि। चरचि ॥ १६९ ॥

वीरों का प्रसन्न होकर पृथ्वीराज से कहना कि जो मांगो सो तुम हैं और अब हमको विदा करो ॥

दूहा ॥ भये त्रिपत वीराधिवर, पूरन डक्क डकार ॥
मानि आनन्दत उल्हसंत, बोले बयन बकार ॥
छं० ॥ १७० ॥ रू० ॥ ८४ ॥

मग्गि मग्गि मह्हिपत्ति तुम्र । सोइ समप्पै आज ॥
दै सुविदा न विलम्ब करि । जु कछु चित्त तुम्र काज ॥
छं० ॥ १७१ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

पृथ्वीराज की ओर से चन्द का कहना कि लड़ाई के समय हमारी सहायता कीजिएगा ॥

गाथा ॥ जंपे वर वरदाई । तुम वरं वीरं देव देवाधिं ॥
श्री प्रथिराज सहाई । जुद्धं जय राज जुटाइं ॥
छं० ॥ १७२ ॥ रू० ॥ ८६ ॥

भैरव का चन्द को बुलाकर कहना कि जब तुम्हें टेढ़ा समय आवे तब हम को याद करना ॥

गाथा ॥ तव वर भैरव वीरं । उच्चारीगं संमुप्पं चन्दं ॥
जं तुम बंकट ठौरं । तं सँभारं विचित अम्हाइं ॥
छं० ॥ १७३ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

गाथा ॥ परतिषि अम्ह सुधुब्बं । कारयं जुद्धं तब्ब साहस्सं ॥
जथ्थं चण्डिन चन्दं । तथ्थं करै न हम आगमं ॥
छं० ॥ १७४ ॥ रू० ॥ ८८ ॥

---

८४ पाठान्तर-तृपति । डंक । डक । आनंद तन । वैन ॥
८५ पाठान्तर-महिपति । समयें । देह । तूं कछु चिंतत काज ॥
८६ पाठान्तर-जपे । वर । वीर । देवधि । वीर देवाधि । जुटाई ॥
८७ पाठान्तर-उचारिग चंद संमुपं । तुंम । बंकठ । ठौरैं । संभारें । संभारे । विचित्त । अम्हाई ॥
८८ पाठान्तर-अंन्ह । जुद्ध । तव । साहसं । जथं । तथं । हंम्म । आगमं ॥

बचन देकर बीरों का बिदा होना, सरदारों का चन्द की बात पर प्रतीत करना और पृथ्वीराज का चन्द पर अधिक प्रेम बढ़ना ॥

दूहा ॥ दइय वाच सब बीर नैं, बहुराए कवि चन्द ॥
सब सामँत अनन्द भौ। दरसत नट्ठे दन्द ॥
छं० ॥ १७५ ॥ रू० ॥ ८९ ॥

सत्य करै मान्यौ सकल। हरषित भय प्रथिराज ॥
प्रेम बढ्यौ अति चन्द सौं। साहस रीत समाज ॥
छं० ॥ १७६ ॥ रू० ॥ ९० ॥

पृथ्वीराज का चन्द से कहना कि सब सरदारों को मन्त्र बतला दो, चन्द का सब को मन्त्र बतलाना ॥

गाथा ॥ तब कूंअर कहि चन्दं। देहुं मन्तं सव्वं सामन्तं ॥
तब कहि मन्त्रं चन्दं। कीन अप्प अप्पं सहायं ॥
छं० ॥ १७७ ॥ रू० ॥ ९१ ॥*

चन्द को बीस गाँव और एक घोड़ा पृथ्वीराज ने दिया ॥

दूहा ॥ बीस गांम कविचन्द प्रति, करी कुँअर बगसीस ॥
एक बाजि साजति सजहि। दियौ सु सम्भरि ईस ॥
छं० ॥ १७८ ॥ रू० ॥ ९२ ॥

इति श्रीकविचन्द विरचिते प्रथिराजरासके आषेटक बीरबरदान बर्णनं नाम षष्ठ प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ६ ॥

---

८९ पाठान्तर-बीरनैं। सामंत। नठै ॥

९० पाठान्तर-सति। करे। मंन्यो। हरखत। प्रथीराजं। समाजं ॥

९१ पाठान्तर-देहु। मंत्र। सब। अप्प। अप ॥ * यह रूपक सं॰ १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥

९२ पाठान्तर-ग्रांम। कुअर। कुंअर। सजि। दीयौ ॥

अथ लाहर राय कथा वर्णनं लिख्यते ॥

(सातवां समय)

सोमेश्वर देव का शिवरात्रि का व्रत जागरण करके सोने की तुला दान करना और उसे बांट देना ॥

दूहा ॥ ग्यारह सै गुन तीस वदि, फागुन चवदसि सोम ॥
सिवरत्ती सोमेस न्टप, निसा मण्डि जप होम ॥

छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

पञ्च गव्व अस्नान करि, सीस सहस घट मण्डि ॥
दीपदान घृत सहस शिव, कुसुमंजलि सिर कण्डि ॥

छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

शिव उपास सोमेस वर, पञ्च उपासि सुराज ॥
महा मोह भत्ती सुगुर, करिय किति कविराज ॥

छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

श्लोक ॥ शिवशिवा उपास्य राजन्, वीर्यं देवन कामयम् ॥
कविचन्द महावाणी, प्रगट रूपेण विस्मितम् ॥

छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ चतुर जाम जग्गिय न्टपति, कनक तुला तहँ कीन ॥
प्रात समै वर दुजन कहुँ, बंटि अप्प कर दीन ॥

छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

---

१ पाठान्तर—दोहा । सं । सैं । सुनि । चवदिसि । सिवरतीं । न्रप ॥ इस रूपक में संवत् ११२९ अनन्द साक वा पृथ्वीराज का तृतीय साक है । इस का वर्णन कवि ने आदि पर्व्व के रूपक ३५५ । ३५६, पृष्ठ १३८ में किया है । तदनुसार इसमें अन्तर के ९० । ९१ वर्ष जोड़ने से ११२९ + ९० । ९१=१२१९ । १२२० वर्त्तमान विक्रमी होगा ॥

२ पाठान्तर—पवगव्य । अस्नांन । सहस्र । दान । सहास । कुसुमांजलि । शिर ॥

३ पाठान्तर—शिव । स राज । स गुर ॥

४ पाठान्तर—सिवसिवा । राजं । राज्यं । वीर्यं । कामयं । वांनी । रूपेन । विस्मितं ॥

५ पाठान्तर—जांम । तहां । समे । कहीं ॥

अन्न अमार अपार उठि, जिहि लीनौ दिय ताहि ॥
छरस भोग भोजन भले, रही न मनसा काहि ॥
छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

उभय ईस अग सोम पुनि, अस्तुति मण्डि समुष्ष ॥
नव चिनेत तन ताप हर, संचन सेवक सुष्ष ॥
छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

शिव जी की स्तुति करना ॥

कवित्त ॥ विदित सरल अति चपल । विमल मति कज्ज निअछिन्नि ॥
गीत राग रस रटित । सती लंपट विस भच्छिन ॥
भुगति दैन जन विभव । भूर भूछित तन सोभित ॥
चिपुर दहन कविचन्द । कोन कारन क्रत लोछित ॥
श्रीविश्वनाथ संमित गवन । गरल चिलोचन रस कुसल ॥
मुष अमल कमल परिमल बहुल । भुगति चारु चर्म्मन असल ॥
छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

छन्द पद्धरी ॥ जत गरल कंठ दीसहति बीय । जिम चित प्रगट संसार नीय ॥
सारङ्ग उछह तिन पान पानि । दिव तुङ्ग जाल जव जवनि मानि ॥ ९ ॥*
जट मुकुट गंग दीसहि उतङ्ग । सोभन्त चन्द लिल्लाट रङ्ग ॥
सारङ्ग सूल सादूल चर्म्म । सेवक सहाय अघ हरत कर्म्म ॥ १० ॥
कटि विकट निकट नटवत चिभङ्ग । गनभूत लेय विभ्भूत अङ्ग ॥
बुन्द जा काम जा आप कूल । जैजै सुईस माया अन्दूल ॥
छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ९ ॥

साटक ॥ कप्याली कपआल बाहु अहयौ, गिरज्जाइ सारङ्गनौ ॥
बीभच्छौ रस तथ्य न्नित्य रतयौ, मुर्व्वी सदा तुङ्गयौ ॥

---

६ पाठान्तर–अंमरअच । उट्ठि । जिहिं । नहीं ॥

७ पाठान्तर–मंडिय मुष । मंडीय समुष्ष ॥

८ पाठान्तर–विअछन । विअछिनि । वियभषिन । विभौ । क्षत । गवन । कुशल । चांरु । चर्म्मन । भसल ॥

९ पाठान्तर–जुत । दीसहिति । जम । पांनि पांनि । * "दिव तुंग जाल दिव दिव न मांन" संवत् १६४७ की पुस्तक में पाठ है ॥ ९ ॥ लिलाट । सादूल । चर्म । कर्म्म । विभूत । अभूल ॥

रुद्रो रुद्ररि पाय नग्गि उरगो, हास्यं रसं सुन्दरं ॥
कामन्तं गिरिजानिनं विरचयो, कर्नाय कालं चयं ॥

छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १० ॥

साटक ॥ वामं गौरि स्रृंगार हास्य नगनं, कर्नाय कामं चयं ॥
रौद्रं रौद्ररि पाय मार दमनं, वीरं त्रिनेत्रं ज्वलं ॥
भै भीतं द्रिपि अङ्ग भङ्ग अघितं, वीभच्छ नट्टव्वतं ॥
सान्तं संमित जोग दीन अदभू, नौ रस्स रस्तं शिवं ॥

छं० ॥ १३ ॥ रू० ॥ ११ ॥

शिवजी की स्तुति करके सोमेश्वर देव का अपने कुमार के विवाह के लिये नाहर राय के पास दूत भेजना ॥

दूहा ॥ सा देवह करि अस्तुती, वर सोमेस कुमार ॥
नाहरराइ नरिंदं कैं, दूत संपते वार ॥

छं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ १२ ॥

शामदामादि में निपुण दूत का पत्र दरसाना ॥

गाथा ॥ सामं दामं भेवं । वेदं गुनं विग्यं अंगाई ॥
जानं पनं सलीहं । ते पत्तं दूत दरसायं ॥

छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ १३ ॥*

कवि का सनीचरी दृष्टि के योग पर से भविष्य में बैर दोष होने का कथन करना ॥

साटक ॥ दिष्टी दिष्ट सनीचरी वसद्दिनो, इंनोपि दुज्जं घरं ॥
पावारं परिहार वैर गुरयं, जद्दोह चौहानयं ॥

---

१० पाठान्तर–कप्पाल । ग्रहयो । गिरिजाई । गिरजाई । नो । बीभछो । तप । रतयो । मुर्वी । तुंगयो । उरयो । गिरिजां । करुनाय । काम ॥

११ पाठान्तर–शृंगार । करुनाय । काम । त्रियं । त्रिनेत्र । भय । बीभछ । नटवर्त्तनं । नटवत्तनं । अदभूत । अदभुत । नौ रस । नौ रस्स । रसितं ॥

१२ पाठान्तर–अस्तुति । नाहरराय । के । कें । संपत्ते ॥

१३ पाठान्तर–दानय । गुन । विग्य ॥ * यह रूपक सं० १६४० और १८५९ की लिखी पुस्तकों में नहीं है ॥

सोगिर्नारि समस्त संयुत कला, भारथ्थनो द्रिष्टयं।
सावाला वर वैर श्रेह तिगुना, के के नगे राजयं॥

छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ १४ ॥

कवि का कहना कि स्त्री के कारण से बैर दोष आगे रामादि बड़े बड़ों को हो चुका है॥

कवित्त॥ गयौ चन्द तारिका। पुत्र लज्जा बिन आन्यौ॥
षेच वीर्य सम्भवै। वीर्य लम्भवै न पान्यौ॥
बैर दोष श्रीराम। बैर दोषह दुर्योधं॥
बैर दोष नघुराई। बैर दोषह मुचकन्धं॥
सा बैर दोष पण्डव वलिय। मात बचन अह दोष सहि॥
इक दिनह समय सुन्दरि सचिय। संझ समय इह चरित लहि॥

छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ १५ ॥

कामधेनु का चरित्र॥

कवित्त॥ कामधेन पच्छै प्रचण्ड। त्रिषभयं चह अधिकारिय॥
एक एक उत्तरै। एक चढ्ढै रस भारिय॥
हसी सची द्रिषि निजर। दीन सराप सुधेनह॥
हों पसु तुत्र सुमनुच्छ। होइ पच्चाल श्रेह मह॥
लम्भी सुपच्छ जननी बचन। बंटि लई क्रम क्रम सुसर॥
तिह श्रेह श्रोर जो सम्भवै। तौ बनहिं डैवर सवर॥

छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ १६ ॥

प्रात समय जगते ही दूत का पत्र पढ़ना॥

---

१४ पाठान्तर-हननोपि। दुजन। दुज्जन। घनं। परिहारं। पावार। वेर। नदोह। चहुवांन। गिरिनारि। भारथ॥

१५ पाठान्तर-वीरज्ज। लभवे। श्रीरांम। दुर्जोधं। नघुराय। मचकन्धं। दिन। सुन्दर। इक॥

१६ पाठान्तर-कांमधेनु। पछे। पछें। प्रछण्ड। वृषभ। अधिकारीय। उतरै। चढै भारीय। साराय। हों। तूं। मनुष्य। मनुछ। लभी। सुपछ। बटि। जोर। हीबडे॥

दूहा ॥ भयौ प्रात जगात दुतिय, बंचि सुकग्गद् पानि।
आबू रा सज्जथान लिषि, बर गिर नारी बानि ॥
छं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ १७ ॥

इस पत्र में बीर रूप देवस्थान हिंगुलाज के प्रभाव से पृथ्वीराज के बलवान होने और नाहरराय के बल प्रताप का वर्णन ॥

कवित्त ॥ पूना कर पर वत्तह। कोरि दह नील सवायौ ॥
बीर रूप इक रुद्र। थांन हिंगुलाज बनायौ ॥
देवल एक अचम्भ। हेम युत्तलि इक मंडी ॥
धूप दीप साषा* सुरङ्ग। धजा पत्ताकह ठण्डी ॥
दिष्षन सुथांन आचम्भ वर। ज्यौं कवि मंची होइ कल ॥
कवि कहै चन्द बरदाइ वर। जौ चहुआन सुहोइ बल ॥
छं० ॥ २० ॥ रू० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ वर गिरनारि नरेस। सिंधु वट्टी सुर तानं ॥
तेज तुङ्ग तप तेज। बैर भंजै अरि पानं ॥
वर गुज्जर वैसाहि। जगत अड्डौ सुस्त्र बल ॥
तिन मुक्कलि दिय दूत। राज सम्भरिय पित्ति पल ॥
परिहार नाथ नाहर न्रपति। दुह बल्यौ इक इक्क अग ॥
जानें कि जरा जुब्बन दुवन। सामन्तां संतोष भग ॥
छं० ॥ २१ ॥ रू० ॥ १९ ॥

कवित्त ॥ दूत सामन्तन नाथ। बाथ वडवानल घल्लन ॥
सण्डल घल्लन नाथ। सार अग्गी पल जल्लन ॥
अकह कहांनी करन। सरन रष्षन असरन बल ॥
सुथिर अथिर करि थपन। अंग जग जन दारुन दल ॥

---

१७ पाठान्तर–पांनि। पांन। बांनि ॥

१८ पाठान्तर–परवत्तह। प्रवतह। घांन। थांनि। हिंगुलाज। फूत्तरि। पुतलि। * अधिक पाठ है। सुरङ्ग। पताकह। दिषिन। सु थांन। ज्यों। कहैं। जो। चहुवांन। चहुआंन ॥

१९ पाठान्तर–वटी। पांनं। गुजर। अडो। मुकलि। पित्त। पल। जाने। जुबन। सांमन्तां ॥

भुग्र लोक सोक घर सुखित तन। पन अप्पन सोमेस सुत्र ॥
कच धर्म्मे कलिमल मलन। तिहिन छोर पिष्पिय सुदुत्र ॥
छं० ॥ २२ ॥ रू० ॥ २० ॥

कवित्त ॥ चलत पंषि पिषि बाज। पिष्पि म्रगराज म्रगनि गन ॥
गोधन धरत गुवाल। हंकि लै चलत वननि बन ॥
मधु तजि चलत मुचाल। अन्य तरु साष लगन कहुँ ॥
बद्दल विसद विसाल। चलत बंस पवन गगन महुँ ॥
तिम नाहर राइ नरिन्द पिषि। समर सचिन सक्कहि सकज ॥
गिरि लङ्क सङ्क सम गढ़ गरुत्र। गिरद पारि किज्जै अजक ॥
छं० ॥ २३ ॥ रू० ॥ २१ ॥

पट्टन में चौलुक्य भीमदेव, आबू पर जैत (सलख?) पंवार, मेवाड़ में समरसिंह, दिल्ली में अनङ्गपाल जैसे बलवानों से मण्डोवर में नाहरराय के राज्य करने का वर्णन ॥

कवित्त ॥ उत पट्टन भीमंग। ब्रह्म चालुक्क लोह लुत्र ॥
अब्बू जैत पवार। लोए लरि जांनि अचल धुत्र ॥
समर सिंघ मेवार। दण्ड देवार अजर जर ॥
दीली पत्ति अनंग। लरन अड्डो सुलोह लरि ॥
परिहार नाए नाहर न्रपति। इतन बीच अप बल रहै ॥
मण्डोवराइ मारु मरद। बर बिरद बंकै बहै ॥
छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का आठ वर्ष की अवस्था में दिल्ली ननिहाल में आना, दिल्लीश अनंगपाल के आधीन राजओं का वर्णन ॥

२० पाठान्तर–घलन। जलन। कहांनी। रघन। अगं। जगंन। जगं। कलिमल कलि मलन। पिपिय। सुग्रय ॥

२१ पाठान्तर–पंष। वाज। पिषि। मृगनी। बनन बन। महुचाल। शाष। कहों। कहु। महु। नाहरराय। सकहि ॥

२२ पाठान्तर–चालुक। अबू। जांनि। दिल्लीपति। अडो। बीचि। बिरद। बहैं ॥

कवित्त ॥ बरष अट्ठ प्रथिराज। नदी मुनान दिल्ली घह ॥
राज करै अनँगेस। सेव मरुधरा करै सह ॥
मंडोवर नागौर। सिंधि जलवट्ट सुपट्टं ॥
पेसोरां लाहोर। धरा कंगुर लगि कट्ठं ॥
कासी प्रयाग गढ देवगिर। इते सेव अग्या धरै ॥
सीमाडवियां संकै सुपहु। छित अनंग सेवा करै ॥
छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ २३ ॥

मंडोवर के नाहर राय का दिल्लीश्वर की भेट को दिल्ली आना, पृथ्वीराज का रूप देखकर प्रसन्न होना और माला पहिरा कर कहना कि जब पृथ्वीराज सोलह वर्ष का होगा तब मैं अपनी कन्या इसको विवाह दूंगा ॥

कवित्त ॥ आयौ नाहर राइ। सेव आदरिय दिलेसर।
दिष्षि कुँवर प्रथिराज। नूर अदभूत नरेसर ॥
अंबर माला दुक्क। अंक पहिराइ कह्यौ इह ॥
मैं दिद्धी रूपसंगि। सबैं उच्छाह कियौ ग्रह ॥
आनंद तेज राजा अनंग। प्रथीराज आयौ घरह ॥
दुइ अट्ठ बरस जब बीति गय। व्याहुँ कह्यो देव गिरह ॥
छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ २४ ॥

नाहर राय का मत पलट जाना अर्थात् कन्या देना अस्वीकार करना ॥

२३ पाठान्तर-प्रथीराज। मुर। संध। वट। पुठैं। पैसोरा। कंठै। इतै। पह। षत ॥

२४ पाठान्तर-नाहरराय। आदरी। दिल्लेसर। देषि। कुंअर। प्रथीराज। अदभुत्त। एक। पहिराय। दीधी। सवैं। उछाह। कीयौ। सह। आभंग। अनंग। प्रथिराज। आयो। अठ। वीतिगा। व्याहयुं। व्याहयु। देवगिर ॥

दूहा ॥ बालपनै प्रथिराज नें, दिय कंचन वैमाल ॥
मतौ फिरि किन्नौ अक्रम, नाहर राइ विसाल ॥
कं० ॥ २७ ॥ रू० ॥ २५ ॥

नाहर राय का उत्तर लिखना कि तुम्हारा कुल आदि हमारे योग्य नहीं है ॥

कवित्त ॥ लिषि कग्गद परिमांन। थांन अजमेर पठाइय ॥
दूत पंथ अविलंब। पास संभरि वै आइय ॥
चिंति सत्त आरंभ। सेन पारंभ विचारिय ॥
बाल वीर प्रथिराज। देइ नांही परिहारिय ॥
सग पन सुआदि सम वर नृपति। समर जुद्ध साधै समर
कुल ढुंढ नाम दिज्जै नहीं। इह कलंक लग्गै सुघर ॥
कं० ॥ २८ ॥ रू० ॥ २६ ॥

अरिल्ल ॥ षेतरपाल कौं पूजैं कौनं। जो परहरि गौ विंदह मौनं।
परहरि सिव उमया गुन तत्तं। को मंडै चंडाली संत्तं ॥
कं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ २७ ॥

दूत का यह पत्र लाकर पृथ्वीराज के हाथ में देना ॥

दूहा ॥ लिषि कग्गद परिहार पर, विवरि विवर करि दूत ॥
लै दीनौ प्रथिराज कर, समी संझ सपहूंत ॥
कं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ २८ ॥

पृथ्वीराज का क्रोध करना, सोमेश्वरदेव का समझाना ॥

कवित्त ॥ बढि अवाज* अजमेर। बंचि कग्गद चौरासिम ॥
परिहारह सब सेन। धर्म परिहरि बद्धौ भ्रम ॥

---

२५ पाठान्तर-बालपनैं। पृथीराजनैं। फिर। कीनौ। नाहर राय ॥

२६ पाठान्तर-परिमांन। थांन। चिंत्ति। मत। विचारीय। पृथीराज। देत। नांही। परिहारीय। नृपति। जुध। साधैं। नांम। दिजे। नही। लगैं ॥

२७ पाठान्तर-षेत्रपालकूं। पूजे। गो। मोंन ॥

२८ पाठान्तर-पृथीराज। पहूत ॥

सूर नूर तिन तेज । मध्य चौंडियन यों राजै ॥
प्रात ओस जिम बूंद । जवह अग्रह अनु लाजै ॥
संगन अनेक जंपत करन । तात वरज्यौ पुत्र फिरि ॥
मंजाह साह सिसु वत्त सुनि । करहि जुद्ध भुम्मिय सु जुरि ॥
छं० ॥ ३१ ॥ रू० ॥ २९ ॥

सरदारों का पत्र सुनकर क्रोध करना ॥

कवित्त ॥ सुनिय वत्त सामंत । बंचे कग्गद परिहारौ ॥
सीस लग्गि असमान । पिज्यौ लंगा बंबारौ ॥
सिंघाने करि हन्यौ । कौन जबूं कवर पद्धौ ॥
कौन छीन सनि राह । जुद्ध तारा ससि वध्यौ ॥
वर कन्ह वीर सोमेस पहु । चाहुवान वक्कारियै ॥
वाहंत वीर अरि नीर विच । दल चौहाना तारियै ॥
छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ ३० ॥

कवित्त ॥ मुक्के दूत सुदूत । रत्त गुन अरिन विरत्ता ॥
चिंत तनौ सिर भार । सार कागज सो रत्ता ॥
वर अप्पन जानही । प्रमान न्रमान सुग्घै ॥
द्रिग राजान प्रमान । देस विदेस परघ्घै ॥
ते दूत सपत संजोवरह । चर चरिच अनुसरि परे ॥
भय प्रात राज दरवार गय । द्दिप्पि धार घर घर डरे ॥
छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

पृथीराज का चढ़ाई के लिये सेना सजना ॥

---

२९ पाठान्तर-आवाज । धूम । मधि । अंपिन । राजे । उस । बुंद । अयन । मंज्ञाह माह । भूमीय ॥ * यह शब्द अर्थात् "आवाजि और अवाज" आदिपर्व्व के रूपक १८१ तथा १८२ पृष्ट ७६ में भी आया है । उस पर की टिप्पण देखो । संस्कृत "वाज" और "वाद" शब्द Sound, Sounding, discourse, speech, and prayer आदि के अर्थों में प्रयोग होते हैं उन से यह हिन्दी अपभ्रष्ट शब्द बने दीखते हैं ॥

३० पाठान्तर-सुनीय । सांमंत । बंचे । बचे । कगद । असमांन । लग्गा । कर । पधै । छीनं । वधै । कन्ह । चाहुआंन । चाहुवांन । वक्कारीये । बाहत । विचि । चौहांनां । तारीये ॥

३१ पाठान्तर-मूके । कारिज । जांन हि । प्रमांन । न्रिम्मांन । प्रमांन । राजन । विदेस । परखै । संपत्त । वर वरित्र । दिषि ॥

दूहा ॥ तात बरज्यौ बत्त बहु, एक न आवै दाइ ॥
उत प्रथिराज नरिंद ने, सज्ज्यौ सेन सुभाइ ॥
छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

सेना का वर्णन ॥

लघुनाराच ॥ हय गगयं सजे भरं। निसांन बज्जि दूभरं ॥
नफेरि बीर बज्जई। मृदंग झल्लरी गई ॥ छं० ॥ ३५ ॥
सुनंत ईस रज्जई। तनीस राग सज्जई ॥
सुभेरि भुंकयं घनं। श्रवन्न फुट्टि झंझनं ॥ छं० ॥ ३६ ॥
नरद्द नाद रिझ्झयं। चुसट्ठ ताल दिज्जयं* ॥
तुरंग पंति चल्लयं। मनों जलद्द हल्लयं ॥ छं० ॥ ३७ ॥
तरप्पि तेज तामसी। मनों कि नट्ट वामसी ॥
झलक्कि मंत दंतयं। मनों कि बीज पंतयं ॥ छं० ॥ ३८ ॥
जेर जराय बंगरी। मनौं चमक्क विज्जुरी* ॥
सिरीसु सोभ जग्गयं। कि भान मेघ उग्गयं ॥ छं० ॥ ३९ ॥
श्रवंत सोभ दानयं। झरंत मेघ जानयं ॥
उपंम और दुत्तियं। षिलाव राह पुत्तयं ॥ छं० ॥ ४० ॥
उपंम तीय उड्डरं। कि मिच कज्जलं गिरं ॥
जु वैरषं विराजही। वसंत ह्रष्ष लाजही ॥ छं० ॥ ४१ ॥
ढुरंत चौर सीसयं। गिरं कि गंग दीसयं ॥
दुती उपंम लग्गयं। कि बद्दलं कि बग्गयं ॥ छं० ॥ ४२ ॥
जु घूघरं घमक्कयं। कि दादुरं सु भद्दयं ॥
दुती उपंम मेलयं। सुहाग वाम केलयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥

---

३२ पाठान्तर—दाय। पृथीराजनें। सुभाय ॥

३३ पाठान्तर-छंद लघुनाराज वा नराजा। हयगयं। निसांन। दुभरं। वजई ॥ ३५ ॥ रजई। सजई। बजई। नफेरि। श्रवन ॥ ३६ ॥ नारद नरद रिझयं। चौसट्ट। * यह दूसरा पाद सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं है। चलयं। मनों। जलद। हलयं ॥ ३७ ॥ तरपि। तांमसी। मनों। वांमसी। झलकि। मनों। बगयंतयं ॥ ३८ ॥ * ये दोनों पाद सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं। ससोभ। जगयं। भांन। उगियं ॥ ३९ ॥ दानयं। जानयं। दुतीयं षिलावे। पुत्तियं ॥ ४० ॥ उंपंम। कजलं। बृछ ॥ ४१ ॥ चोंर ॥ ४२ ॥ घुघरं। घमघमं। ददुरं। भदयं। उपम ॥ ४३ ॥

सुघंट घोर सोरयं सुनंत श्रोन फोरयं ॥
तिलक्क चंद साजही । मनौं गनेस राजही ॥ * छं० ॥ ४४ ॥

दुती उपंम जग्गयं । दवंकि लग्गि पव्वयं ॥
गरुव गर्ज सद्दयं । मनौं कि मास भद्दयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥

सु पीलवांन चंदयं । अरापती कि इंदयं ॥
सुअस्सवार राजही । कि जंम जोर साजही ॥ छं० ॥ ४६ ॥

मिलंत मुंछ नैनयं । तिलग्गि सीस गैनयं ॥
ते रूप भूप मारसे । कि अस्वनी कुमार से ॥ छं० ॥ ४७ ॥

त्रिगुंन तेज तंननं । तिनंक कंक मंमनं ॥
सनाह रूप अंगमं । मनौं कि जोग जंगमं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

सनाह जोति दिप्पयं । मरीच भान भिप्पयं ॥
सुभट्ट छंद वद्दयं । कि वीर वान सद्दयं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

आगंम विप्र बोलयं । हुलास रुचि चोलयं ॥
सु पाइ कंपनं षनं । वुलंत ते झनं झनं ॥ छं० ॥ ५० ॥

जुरंत जाम मल्लयं । प्रभा प्रसाद वुल्लयं ॥
तिमध्य राज पिष्ययं । सु अंग गंग तिष्ययं ॥ छं० ॥ ५१ ॥

सामंत मध्य सोभयं । कि इंद्र देव लोभयं ॥
कि पथ्थ पंडवं दलं । धनुक्क वान सव्वलं ॥ छं० ॥ ५२ ॥

चढंत राज प्रातयं । ते दूत देषि जातयं ॥
कढंत अब्ब घाटयं । भई समुद्र पाटयं ॥ छं० ॥ ५३ ॥

उपाह मध्य ते चलं । सगुन्न बंदि जे भलं ॥
*ससूर सूरयं कलं । दिनं सु अष्टमी चलं ॥ छं० ॥ ५४ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

सुघट्ट । त्तिलक । मनों । गनेंस । * यह चौथा पाद सं॰ १६४७ की पुस्तक में नहीं है ॥ ४४ ॥
गरुश्र । मनों ॥ ४५ ॥ पीलवांन । ऐरापती । जु दासवार ॥ ४६ ॥ मुछ । नेंनयं । गेंनयं ॥ ४७ ॥
त्रिगुन । तिनंन । मनों ॥ ४८ ॥ दिपयं । मरीचि । भांन । भिपयं । बदयं । बांन ॥ ४९ ॥ पाय ।
झननं झनं ॥ ५० ॥ पिषयं । तिष्यं ॥ ५१ पथ । बांन संबलं ॥ ५२ ॥ अब । भयौ ॥ ५३ ॥
उपाह । मधि । सगुन । जै । * अंत के ये दोनों पाद सं॰ १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं ॥ ५४ ॥

पिता की आज्ञा लेकर अष्टमी को पृथ्वीराज का लड़ाई के लिये यात्रा करना॥

कवित्त॥ दिन अष्टमि रवि वार। राज सुभ मँडि प्रस्थानं॥
अष्ट दिसा जोगनी। भई साहाय सुध्यानं॥
अष्ट च्यारि भय भान। राजदै अर्घ बधाइय॥
दून सें भौम अनिष्ट। चंद चौथे ग्रह आइय॥
चले नरिंद धाय दूत तब। मन आनंद सु चंद हुअ॥
प्रथिराज तात अग्या सगुन। चरन बंदि चलि वज्र भुअ॥
छं० ॥ ५५ ॥ रू० ॥ ३४ ॥

चौपाई॥ *तात मात अग्या परमानहि। ता समान नह ध्रंम प्रमानहि॥
गुरु द्रोही पति प्रोही जानं। सो निहचै नर नर कहि थानं॥
छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ ५४ ॥

नाहर राय के दूतों का पृथ्वीराज की चढ़ाई और सेना बल का समाचार नाहर राय को देना॥

छंद पद्धरी॥ नाहर नरिंदं जे दूत आइ। स्माचार सबै कहिते सुनाइ॥
दिसि जीत सत्त चहुवान सूर। लषियै चरित्त मन मझ्झ करूर छं० ॥ ५५ ॥
इक सहस स्वान सँग नाम धार। देसान देस बल पंग अपार॥
तिन मझ्झ पंच सै पवन पात। पित मात असल लाहौर जात॥ छं०॥५६॥
पांभरी अंग जिन पसम होत। दिषि दीप जोति तिन नैंन होत॥
रातब्ब मंस घ्रत दुग्ध पान। आजान बाह दिषियै बलान॥ छं० ॥ ५७ ॥
रेसमी डोरि पट्टी नरंम-। रहै सीत छांह दुष्षित गरंम॥
तिन सथ्थ पंच सै और डोरि। ते रष्षिक विन को सकै छोरि॥छं०॥५८॥

---

३४ पाठान्तर-शुभ। मंडि। भांन। मै। भोंम। अरिष्ट। चौथैं। ग्रह। नरिंद्र। धसि। प्रथीराज। आग्या॥

३५ पाठान्तर-आग्या। परमानीय। परमांनहि। समांन। ध्रम्म। प्रमांनाय। जांनं। निश्चै। नरकन। थांनं॥ * सं॰ १६४७ की पुस्तक में इसे अरिल्ल करके लिखा है॥

३६ पाठान्तर-समचार। सब। जित्त। सत। चहुवांन। मनमैं। स्वान। ॥ ५५ ॥ संग। नांमधार। देसान। मझ। से। असिल॥ ५६॥ नयन। रातब। पांन। आजांनबाह। बलांन॥ ५७॥ नरंमं। शीत। दुषित। सथ। होर। ति। रषिक। बिना॥ ५८॥

इक आइ पेस इक अस्व सोल । बलवांन अंग चष रहत षोल ॥
सिक्कार नाम जहनह तिकान । आरंभ जुद्ध सब लपि विनान ॥ छं० ५९ ॥
इक सत्त उंट भरी जीन साल । तिन धरै अंग छिप्पै न काल ॥
भेदैन वज्र बर नीर धार । तिन धरैं अंग जे दल पगार ॥ छं० ॥ ६० ॥
सनाह महिम वरनी न जाइ । जिप्पनि कि देव दनुजनि उपाइ ।
जनु ब्रह्म होम कढि मंत्र जोर । कै इंद्र अग्नि अप्पे अकोर ॥ छं० ॥ ६१ ॥
कै वरुन अप्पि पाताल ईस । कै पवन प्रसन परसाद दीस ॥
बाचिष्ट कढ्ढि कै कुंड होम । दीनी कि प्रसन ह्वै मात भोम ॥ छं० ॥ ६२ ॥
असि सिलह सथ्य लीन नरेस । जितनह समर सज सत्रु देस ॥
छं० ॥ ६३ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

पृथ्वीराज का प्रताप सुनकार नाहरराय का चौकन्ना होना ॥

दूहा ॥ सुनी षबर जब दूत मुष । चमक्यो नाहरराव ॥
ए अप्पन गनिये नहीं । वैरी विस हर घाव ॥
छं० ॥ ६४ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

अपने सरदारों से नाहर राय का कहना कि अब क्या करना चाहिए पहिले चौहानों से हम से और बात थी पर अब तो बिगड़ गई ॥

कवित्त ॥ सुभ्भित सकल लिय बोलि । पुच्छि परिहार तिनहि मत ॥
चाहु आन पाधान । कहत आषेट जुद्ध बत ॥
तनक भनक सी कान । दूत इत्तह सुनि आए ॥
अप्प अचे तन रचौ । धरौ धर भूमि सदाए ॥

पाठान्तर–पेसि । वलवांन । सिकार । नांम । जहां । कांन । बिनांन ॥ ५९ ॥ सत । उंट । धरे । छिपै । भेदैन । धरें ॥ ६० ॥ सनाह । महम । जिपन । उपाय । ब्रंह्म । इद्र । अपे ॥ ६१ ॥ कैं । प्रासाद । कढि । प्रसंन । भोम । भोंम ॥ ६२ ॥ सथ । जितनह । शत्रु ॥ ६३ ॥
३७ पाठान्तर–षबरि । चमक्यो । अपने । गिनिये । नही ॥

छोमेस हसह कछु है नहीं। तिन सुहित्त माला लई ॥
तब तौ सनेह कछु और हो। अब तौ कछु औरै भई ॥
छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

सरदारों का कहना कि लड़ना चाहिए ॥

दूहा ॥ कहत सुभट परिहार के। हथ्थ चढी क्यों देइ ॥
सस्त्र मारि दल भंजि कैं। षग्ग धार धर लेइ ॥
छं० ॥ ६६ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

नाहर राय का कहना कि आगे से बढ़कर एक बारगी उन पर चढ़ाई करना चाहिए नहीं तो जीत न होगी ॥

कवित्त ॥ सुनि मंडोवर राइ। कहन बलवंत सुभट सह ॥
द्रव्य उनह कर चढ्यौ। कहहि सुतौ *सति वंत यह ॥
जाइ अचानक परौ। बहुरि ह्वैयौ नहिँ जैहै ॥
प्रथीराज उस सबल। मारि धरती सब लैहै ॥
इह सुनत सबन बैठी सुमन। सजन सेन बेगो कह्यौ ॥
चर चरन चरचि कैं वत्त इह। सो भत्ती मारग गह्यौ ॥
छं० ॥ ६७ ॥ रू० ॥ ४० ॥

नाहर राय का सेना सजना ॥

दूहा ॥ सजी सेन मंडोवरह। नाहरराइ नरिंद ॥
संभरि संभरि राव न्रप। उर उदोत आनंद ॥
छं० ॥ ६८ ॥ रू० ॥ ४१ ॥

---

३८ पाठान्तर-पुछि। चाहुआंन। पायांन। कांन। इतह। अचेतनह। सुदाए। हमह कम। नही। सुहित ॥

३९ पाठान्तर-हथ। के ॥

४० पाठान्तर-मंडोवरराई। मडोवरराय। सुनद। कह हि सुतौ सति वत्त इह। *अधिक पाठ है। परौं। नहिं। जैहैं। डंस। धरत्ती लैहैं। सबल। वेगो। वत। भती ॥

४१ पाठान्तर-नाहरराय। संभरि वार। उद्योत। अनंद ॥

पृथ्वीराज की सेना की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ सहस सेन संभारी । नरेस मध्य मन टारि पंच भ्रम ॥
वीर सिंगार सुभंत । कंत जनु रत्त बाम सम ॥
रत्तउभय नंचास । सिलह सज्जी चहु आनं ॥
चंद देषि मन मगन । कविन तिन करै बषानं ॥
पंचमी सोस रितु राज गत । सूर तेज जाजुलित हुअ ॥
कर तार हथ्थ कित्ती कही । बजि निसांन चहुआंन धुअ ॥
छं० ॥ ६९ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

पृथ्वीराज का आगे से बढ़कर लड़ने के लिये जोवनराय को आज्ञा देना ॥

तवैं सुजोवन राई । सूर साह्यौ चहुवानं ॥
तुम गुज्जर बैपंड । गाम सुरधर अगिवानं ॥
पंथ पंथ परवान । धाइ अगिवानी किज्जै ॥
सगा सपन जंपिये । हमनि आरोहि सुलिज्जैं ॥
वामान पंथ अंधी प्रकृति । विन दिट्टैं दिट्टैं न कछु ॥
बन पंन अड्डु परवत रहै । भेद विना जानहि न कछु ॥
छं० ॥ ७० ॥ रू० ० ४३ ॥

जोवनराय का उत्तर दे कहना कि नाहरराय का पथ बांधा सो वह रणभूमि को तिरछी छोड़ कहीं चला गया ॥

तब्ब सुजोबन राइ । बत्त जंपै चहुवानं ॥
अड्डु पंन परवत्त । सत्त गुज्जर धर मानं ॥
लोहानो आजान । पंथ बंध्यौ पालक्की ॥
नाहर राइ नरिंद । गयौ तिरछौ भुअ मुक्की ॥

---

४२ पाठान्तर—संभारि । * अधिक पाठ है । मधि । सिंगार । सजी । चहुआनं । पेपि । षपांनं । रिति । हथ । किती । निसांन । चहुआंन ॥

४३ पाठान्तर—तवै । राय राव । चहुवांनं । चहुआंनं । गुजर । गांम । सुरधुर । अगिवांनं । परवांन । अगिवांनी । कीजे । लिजे । वामांन । दिठें । दिठें । अड्डु । अद्दु । प्रवत । जानैं

करिवर अनेक कौंवर अघिय। ए अगैं कौ धाइया ॥
तिह ठाम चुक चिंत्यौ हुतौ। पैं नाहर राइ न पाइया ॥
छं० ॥ ७१ ॥ रू० ॥ ४४ ॥

सबेरे नाहरराय के भग जाने पर सांझ को पृथ्वीराज का पहुँचाना और उसकी खोज करना ॥

गयौ प्रात परिहार। संझ चहुआन सपन्नौ ॥
बरज्यौ जीवन राइ। षोज क्रम क्रम करिलिज्जौ ॥
पंथवान पुच्छयौ। नदी उत्तरि तिन अष्षिय ॥
तातें पूर नरिंद। बाज नत्तौ करि नष्षिय ॥
आनंद सिलह सज्जिय न्रपति। पंषी पारिव मोह जिम ॥
ज्यौं गिद्द श्रंम पच्छो करै। चित्त दिगंबर कियौ तिम ॥
छं० ॥ ७२ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

चालुक के प्रधान (दीवान) के घर नाहरराय का पता मिलना और सामन्त सहित पृथ्वीराज का नदी उतरना ॥

कुंडलिया ॥ नदी उतरि सामंत सह। डीस संपते जाई।
चालुक्कां परधान ग्रह। पट्टन नाहर राई ॥
पट्टन नाहर राइ। सेन सज्जे सथ पंच्यौ ॥
चय हजार असुवार। वीर संधान जुसंच्यौ ॥
प्रात कूच उप्परै। आज मुकांम जुदुस्तर ॥
झुकि प्रथिराज नरिंद। सिलह सज्जी नदि उत्तरि ॥
छं० ॥ ७३ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

४४ पाठान्तर-तवैं। तवै। यौवनराय। चहुआंनं। चहुवांनं। अट्टु। अडु। परबत। गुजर। मांनं। लोहांनौ। अजांन। पालुकी। नाहरराय। भुट्ट। ग्रहिय। के अगें उधाइया। तिहि। ठांम। यें। नाहरराव ॥

४५ पाठान्तर-चहुआंन। संपनौ। यौवनराव। लीनौ। पंथवांल। पुछयौ। नदि। उतरि। अषीय। अष्षीय। नंषिय। सजिय। पारेव। प्ररेव। ज्यों। गट्ट। गंद। पछो। चित। डिगंवर। कीयौ ॥

४६ पाठान्तर-नदि। उतरी। उत्तरि। साम्रंत सव। संपत्ते। जाय। चालुकां। परधांन। राय। सेन जेन। सजे ऊपरैं। मुकांम। सुदुस्तर। प्रथीराज। सजी। उतरि ॥

सुभट सहित सेना में पृथ्वीराज कैसा शोभता है ॥

कवित्त ॥ सुभट सिलह घट जोति। भयौ घट सिलह सुभट्टन ॥
के * दीप मध्य भूडोल। कै * भान बद्दली सुभट्टन ॥
कै * मुकुर मध्य प्रति विंब। कै * संभु विभ्भूत अधारै ॥
कै आरसि में सार। हथ्थ करतार सुधारै ॥
पाहार भार ठिल्लै क्रमनि। कै * उदधि मद्धि लंका दहै ॥
त्रिय वसिन द्रव्य अरु मोह वसि। नजि जुगिंद बानै ग्रहै ॥
छं० ॥ ७४ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज के ग्राम पहुंचने का समाचार नाहरराय का सुनना और सेना इकट्ठी करना।

दूहा० ॥ भई षबरि परिहार कौं, चढि आयौ प्रथिराज ॥
लग्यौ सेन एकत करन। दुंद बजाने बाज ॥ छं० ॥ ७५ ॥ रू० ॥ ४८ ॥

घाटी पर पर्वतराय को रास्ता रोकने के लिये भेजना ॥

दूहा ॥ जहँ पव्वय घाटौ हुतौ, मीना मेर मवास।
प्रव्वत सौं प्रव्वत मँड्यौ, अनमीजौ धन त्रास ॥ छं० ॥७६॥ रू०॥४९॥

दूहा ॥ हुकुम कीन परिहार तिन, प्रव्वत मीना मेर।
इततें तू रुकि एक टक्क, जितनें आवत वेर ॥ छं० ॥ ७७ ॥ रू० ॥५०॥

पर्वतराय का घाटी रोकना ॥

दूहा ॥ सुनि प्रवत धायौ तुरत, घाटौ रोक्यौ जाइ।
च्यारि सहस मीना प्रबल, बैठे आइ बलाइ ॥ छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥५१॥

---

४७ पाठान्तर-ज्योति। * अधिक पाठ हैं। मधि। भांन। बदली। सुघटन। मुकर। सिंभु। विभूत। आरसि सार में। हथ। सुधारैं। मधि। दहैं। वसि। बांनै ॥

४८ पाठान्तर-भईं। कौं। प्रथीराज ॥

४९ पाठान्तर-जहां। जह। घांटौ। हुतो। तहां मीनां। मीनां। परवत। सों परबत। प्रबत। त्यौं। प्रवत। मंडयौ। तो ॥

५० पाठान्तर-परवत। इतने। इतनें। तु। जितनै ॥

५१ पाठान्तर-पब्वेत। घांटौं। रोकिय। बैठे। आंनि ॥

दूहा ॥ तीन पनच धुनहीं करन, वडे कटन तंडीर ॥
सगुन बिना पग ना धरै, बिकट बंन हंडीर ॥ छं० ॥ ७९ ॥ रू० ॥ ५२ ॥

पर्वतराय कैसे घाटी रोक कर बैठा है ॥

कवित्त ॥ अडोवर धर लाज । राज रष्षन परिहारन ॥
स्वामित सक वज्जंग । जंग जिन अंग न हारन ॥
देत मेवासनि भेलि । मारि धर पर पसु लावै ॥
देषत कै राजांन । बिरद्दवा नैन चलावै ॥
बैठे सु ओट रूंषन उपल । करि तरकस डंघे धरनि ॥
देषंत षह चहुवांन की । भरै जांनि बिसहर बरनि ॥
छं० ॥ ८० ॥ रू० ॥ ५३ ॥

घाटी रुकने का समाचार पृथ्वीराज को मिलना ॥

दूहा ॥ लही षवर प्रथिराज तिन । मीनां मरद अमान ॥
पकरि लोह पब्बय गह्यौ । लहै को अग्गौ जान ॥
छं० ॥ ८१ ॥ रू० ॥ ५४ ॥

क्रोध करके पृथ्वीराज का पर्वतराय से लड़ने को कन्ह चौहान को भेजना ॥

कवित्त ॥ सुनि कुप्पिय प्रथिराज । जानि पुच्छिय सुअप्प मलि ॥
मनु म्रगराज म्रगीन । जोर क्रुद्धिय दिष्षिय बलि ॥
आह ग्रहन जनु जीव । देषि तुट्टिय सुमीन कह ॥
समर समुद्द जल पियन । जांनि घट जन्म क्रोध मह ॥
षिजि कही कन्ह चहुआंन सह । रंक आइ अड्डु फिरे ॥
सिर नाइ धाइ नरनाह तब । प्रब्बत सम प्रब्बत भिरे ॥
छं० ॥ ८२ ॥ रू० ॥ ५५ ॥

---

५२ पाठान्तर-धुनहीं । बट्ठे । कठन ॥

५३ पाठान्तर-वज़रंग । जंग किन अगन हारन । दैत । मैवासन । मेवासन । के । राजांन । विरदवां नेन । रूंष ऊटन । औंधे । चहुवांन ! भरे । जांनि ॥

५४ पाठान्तर-पवरि । प्रथीराज । मीनां । अमांन । गह्यौ । अग्गैं । अग्गै । जांन ॥

५५ पाठान्तर-प्रथीराज । जांनि । पुंछिय । मनों । क्रुधिय कि दिषि बल । जांनि । चहुआंन । आंनि । परबत । भिरै ॥

कान्ह का पर्वत से युद्ध और उसमें पर्वतराय का मारा जाना ॥

छंद भुजंगी ॥ मँडे मेर सीना अच्यौ घोरि घाटौ । मिले आइ कन्हं मनौं छीन आटौ ॥
मँडे ब्रूख ब्रष्षं कछू दंत ओटं । ठिले ना सुमेरं मँडे जानि कोटं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

भई तीर मारं सरोसं सवेगं । तहौ ताहि पारै सविद्धं अछेगं ॥
महावज्रघातं उतप्पात मंड्यौ । करे हूल हाकं बरं बेग छंड्यौ ॥ छं० ॥ ८४ ॥
जुटे जुद्ध अनवद्ध करिक्रुद्ध ठाढे । करैं हथ्थ वाहं पयं मंडि गाढे ॥
गिरै वान लग्गै वियं दूत उत्तं । महासंच विद्या गुरुं द्रोन चित्तं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
भई वान छाया न सूझै मरीचं । मिले लोह लक्काह तत्ते तरीचं ॥
गिरै अश्व असवार लोहं जहीरं । परै जानि डंडूर ब्रष्षं गहीरं ॥ छं० ॥ ८६ ॥
हयं छंडि नर्नाह हूए उतारै । हकंकार वज्जै सहोमं पुतारै ॥
परैं अश्व घातं सरोसं सरीरं । वकैं केय वक्कं करैं के अरीरं ॥ छं० ॥ ८७ ॥
सरं जाल भालं उडै लोह अग्गी । जरैं पंष पंषी गिरैं स्वर्ग मग्गी ॥
भरैं मुट्ठि कन्हं सरं मार बग्गं । निकस्सैं सुविद्धे हुअैं पग्ग उग्गं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
लगैं गुज्ज सीसं कहैं उक्ति कोगी । पहारंत तूंबा मनौं षीजि जोगी ॥
वहैं असि ब्रिहघात रोसं प्रहारं । मनौं निक्कसै सव्वनं तंततारं ॥ छं० ॥ ८९ ॥
लगैं संग छत्ती फुटै पुट्ठि पच्छी । किकंधं कहारं कटैं जार मच्छी ॥
जितं नित्त जठंत किंकं रकत्तं । फिरैं भट्ट भोते भयानं रकत्तं ॥ छं० ॥ ९० ॥
नचैं भूत वेताल षेतं भयानं । रसं वीर रस्से हसे निर्दयानं ॥
मिल्यौ भुष्प कन्हं परव्वत वीरं । हन्यौ असि घातं धुक्यौ ता सरीरं ॥ ९१ ॥
जल्यौ कंध कन्हं असीघात धीरं । करी कट्टि संना परी चग्ग चीरं ॥
पर्यौ कुक्षि प्रव्वत्त रावत्त मेरं । गज्यौ नाहरं गाज नाहर्सवेरं ॥
छं० ॥ ९२ ॥ रू० ॥ ५६ ॥

---

५६ पाठान्तर—मंडे । मीनां । घांटो । मिलें । कंन्हं । मनों । लोन । लौंन । मंडे । वष्पे । उटं । ठिले । नां । मंडे ॥ ८३ ॥ सवेगं । हूक हाकं ॥ ८४ ॥ करे । हथ । गिरे । बांन । लगें । वीयं । दूत । उतं । वितं ॥ ८५ ॥ वांन । लक्कवाह । गिरैं । परं । जांनि । वृषं ॥ ८६ ॥ नरनाह । हकंहाक । वजें । महं में । परं । सरोस । बकें । बंकं । वकं । करें ॥ ८७ ॥ जरे । गिरें । भरें ।

पर्वत के मारे जाने पर नाहरराय का स्वयं टूट पड़ना ॥

कवित्त ॥ परत धरनि परबत्त। आइ हुंक्किय नाहर रन ॥
बलबट्ठे सह मेर। जानि हनुमान लंक बन ॥
डुक्क गिरत घन थाप। डुक्क बथ्थनि पछ्झारिय ॥
बहर रूप सम भूप। रूप अनभूत सँचारिय ॥
मानिक्क बंस आयौ उनह। डूत नाहर गल गज्जयौ ॥
परबत्त पर्यौ पहु पिष्षिकैं। सिंधू बज्जनं बज्जयौ ॥
छं॰ ॥ ९३ ॥ रू॰ ॥ ५७ ॥

पृथिराज का भी चढ़ चलना।

छंद पद्धरी ॥ चढ चल्यौ राज प्रथिराज ताम। साधन सुसेन वर वरन वाम ॥
दुसहै भयो सोमेस पुत्त। वनिता विवाह मन कंक युत्त ॥ ९४ ॥ *
बज्जहि निसान दस दिस गुरान। आषाढ अग्ग ज्यों मेघ थान ॥
रथ वाजि करी पयदल पुलेन। सज्यौ नरिंद चतुरंग सेन ॥ ९५ ॥*
मुक्की सुभुम्मि अजमेर राज। यंत्तौ सुजाइ पट्टन समाज ॥
घज्जी सुलागि सिंधू निसान। भयभीत भेष भय दस दिसान ॥९६॥
बज्जिय सुभेरि भय भंकरीस। गज गजे गाह हय चढ्ठ हींस ॥
गिरनार देस अरु सिंधु वट्ट। गज्जे सुगाज सजि थट्ट थट्ट ॥ ९७॥
ढलकंत ढाल वैरष्ष रंग। सोभंत विपन रिति राज संग ॥
मिलि आय पंथ नाहर नरिंद। वीराधि वीर बढ्ढे सुदंद ॥ ९८ ॥
हक्कारि भट्ट सेना सवान। सामंत सूर करि लोह पांन ॥
कन्हा नरिंद आजांन बाह। लंगरी राव स्वामित्त राह ॥ छं॰ ॥ ९९ ॥

भूठि। निकसैं। बुट्ठी। हुअै। उगं। डंगं ॥ ८८ ॥ लगें। गुर्ज। गुरज। शीसं। कहै। पछां-रंत। तुंबां। मनों। वहैं अश्व निर्घात। वहै। चिघात। मनों। निकसें। निकसै। सर्वनं ॥ ८९ ॥ लगैं। संगि। छती। फुट्टैं। पुठि। मछी। कहारं। कढैं। मृछी। तित। उठंत।। छिछं। रकतं। फिरें। फिरै। भट। वकतं ॥ ९० ॥ नचै। रसें। मुष। सुपरबत। असि ॥ ९१ ॥ कंन्ह। असि। कटि। संनाह। षरि। चष। झुभि। परवत्त। रावत्त। नाहर। सवेरं ॥ ९२ ॥

५७ पाठान्तर-परबत। आय। हक्किय। बट्टि। बढे। जांनि। हनुमांन। रक। घन घाय। ढक। बथन। पछारीय। पछारिय। सम रूप। संचारिय। संवारीय। मानिकं। मानिक्क। गजयो। परबत्त। पिषि। कै। सिधू। बजन। बजयो ॥

संभारि वीर चालुक्क भूप । उप्पज्यौ ब्रह्म कुंडह अनूप
अतताइ तुरंग तेरह सुपंड । पिनि रह्यौ रोपि रन रोहि झुंड ॥
॥ छं० ॥ १०० ॥

तिन ठाम आइ नाहर सुघेरि । वाहंत हथ्थ जनु करिय केरि ॥
॥ छं ॥ १०१ ॥ रू० ॥ ५८ ॥

इधर पृथ्वीराज इधर नाहरराय का सन्मुख युद्ध ॥

कवित्त ॥ उत प्रथिराज नरिंद । इत सुपरिहार प्रबल रन ॥
दुअन सेन असि कढ्ढि । करन कलपंत समय जनु ॥
दुअन अङ्ग संनाह दुअन नष चष्ष उघारें ॥
दुअन इष्ट आरंभ । दुअनि दुअ हथ्थ दुधारें ॥.
दुअ सुभ्भि अङ्ग दुअ देव जनु* । दुअन धार दुअ तुक्क बहिय ॥
संनाह कढ्ढि कट्टी सुतुक्क । तस उप्पम चन्दह कहिय ॥
छं० ॥ १०२ ॥ रू० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ दुअन हथ्थ दुअ भूर । रूप अदभूत रेष बहि ॥
इन्द्र सिलह प्रथिराज । चंद्र परिहार तेज गहि ॥
दुअ अभंग संनाह । दुअन देवन आधारन ॥
दुअन तेज तन अंस । हंस दुअ हंस समाधन ॥
अवतार भूत दुअ देव सम । दुअन चिन्ह उत्तम करिय ॥
परभास षेत परब्रह्म दुति† । भ्रगु लंछन जनु धरि हरिय ॥
छं० ॥ १०३ ॥ रू० ॥ ६० ॥

---

५८ पाठान्तर—* ये ९४ । ९५ और आधा ९६ छंद सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं ॥ प्रथीराज । तांम । वांम । दुल्लह । पुत ॥ ९४ ॥ ज्यों । थांन । पुलेन । सज्यौं ॥ ९५ ॥ मतो । वजी । लाग । निसांन । दिसांन ॥ ९६ ॥ वजिग । गजैं सुराज हय हठ हींस । गिरनारि । वट । गजें । घट घट ॥ ९७ ॥ वैरष । बढे ॥ ९८ ॥ हहकार । भट । सबांन । आजानबाह । स्वामित ॥ ९९ ॥ चालूक । ऊपज्यो । तुरंग । रोहि ॥ रिन रोपि ॥ १०० ॥ ठांम । हथ ॥ १०१ ॥

५९ पाठान्तर—प्रथीराज । कढी । सनाह । चष । हथ । दुधारें । सुभि । कटि । कटी । "उपम ॥

६० पाठान्तर—हथ । प्रथीराज । रहि । उत्तिम । द्युति । भृगु । लछिन ॥

* एशियाटिक सोसाइटी की पुस्तक में "दुअन इष्ट आरंभ" से "दुय देव जनु" तक नहीं हैं । परंतु सं० १६४७ की में हैं

† एशियाटिक सोसाइटी की पुस्तक में "दुअ देव सम" से "ब्रह्म दुति" तक नही है । परंतु सं० १६४७ की में हैं ॥

उसमें पृथ्वीराज का नाहरराय के घोड़े को मार डालना ॥

दूहा ॥ फुनि प्रथिराज कुमार नें, हय हन्यौ परिहार ॥
कंध दुअं कटि वग सहित, धुक्यौ धरनि असिधार ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ६१ ॥

दूहा ॥ धुकत धरनि नाहर तुरिय, झपयौ बंध कनंक ॥
तेक तोकि तक्यौ तुरी, बहि असि कंध कनंक ॥
छं० ॥ १०५ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ दुअ कोटल दुअ न्रपति के, किन्नें हाजुर आनि ॥
दुअन वीच दुअ सुभट थट, अट्ठ भएं चक्कानि ॥
छं० ॥ १०६ ॥ रू० ॥ ६३ ॥

रनबीर का सन्मुख हो पृथ्वीराज से जुद्ध करना ॥

कवित्त ॥ बर पावस रनबीर । दुतिय पावस सम सज्यौ ॥
धूम जोति अरु सलिल । मरुत प्राकारनं वज्यौ ॥
सज्जि सेन अतुरंग । बरन बहुल रंग धारिय ॥
स्याम सेत अरु पीत । रत्त धज मत्त बिचारिय ॥
उन्नयौ धार धारहधनी । लरन तिरच्छौ बुट्ठिबर ॥
बिज्जुलि झमंकि षग पंतिकर । पिवी सेन अरिजुथ्थ पर ॥
छं० ॥ १०७ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

मोहन परिहार और पवार का सन्मुख हो लड़ना ॥

दूहा ॥ उत मोहन परिहार रन । मेर समान अमान ॥
दै दै असि कटि बिकट बनि । दै धनु दै दै बान ॥
छं ॥ १०८ ॥ रू० ॥ ६५ ॥

---

६१ पाठान्तर-प्रथीराज । कुआरनैं । है । हंन्यो । कन्ह कट्टि हुअ ॥
६२ पाठान्तर-तुरी । तोकि ॥
६३ पाठान्तर-दुतीय । सज्यौ । मुरत । प्रककारन । सजि । बहूर । धारीय । स्यांम । रत्त विचारीय । उनयौ । तिरछौ । कुटि पर । बुट्टि । बिजुलि । झमंक जुथ ॥
६५ पाठान्तर-दोहरा । समांन अमांन । द्वैद्वै धनु द्वैवांन ॥

कवित्त ॥ उन लोहन परिहार । हन सुनावल पंवार, हर ॥
दिट्ठ दिट्ठ अंकुरिय । संभ जुग लीन दिट्ठ धर ॥
लोहन कोपि करार । सीस पांवार सुझारिय ॥
टोप कहि फटि मुंड । झपटि पांवार निझारिय ॥
फटि मुंड तुंड धर कहि झटि । लह विफार अफार झट ॥ *
कार वत्त तत्त विहार कि तुरत । जनुकि कषारिय पट्टुपट ॥
छं० ॥ १०९ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

चामंड का युद्ध ॥

कवित्त ॥ चंड रूप चामंड । दलत बलवन्त प्रतापन ॥
हन्यौ संग हुअ अंग । निकसि हुअ अंगुल सापन ॥
उभै संग चलि धाइ । मध्य गहि हथ्य दु हथ्थन ॥
उडि भेजी सुअकास । छुटि पिचकार दद्धिकन ॥
परताप अग्गि परि प्रथ्यि पर । लोक तीन कीरति कथिय ॥
द्रव्यान पान निकसी सुरवि । जोति जाइ जोतिन मिलिय ॥
छं० ११० ॥ रू० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ मिले पौंन सौं पौंन । मिले पानी सौं पानी ॥
मिले तेज सौं तेज । मिले सूनै सूंनानी ॥
मिलै प्रथी सौं प्रथी । मिले हरि सौं हरि व्रेता ॥
मिले हुतासन होत । होम होमै जो होता ॥
जल होत जोत जल भिरत हरि । पय मैं जिम पय मिलि सुपय ॥
तिमि मरत दुरत जेइं झरत रनि । सुमिलिय प्रताप सु आप स्वय ॥
छं० ॥ १११ ॥ रू० ॥ ६८ ॥

६६ पाठान्तर—पांवार । झारीय । फटि । निझारीय । "* कटि मुंड तुंड हुअ पंड हुअ । अधर फट्टिय बर पग झट ।" सं० १६४० की में यह पाठ है । वत । तत । विहार कि । कषारीय । पट्टु ॥

६७ पाठान्तर—आय । मध । हथ । दुहथन । दधि । प्रताप । पर । पृथी । लोकं तन । द्रव्यांन । पांन । जाय ॥

६८ पाठान्तर—पोंन । सों । पोंन । पानी । सों पानी । सुने सुंनांनी । पृथी । सों । पृथी । व्रता । होमे । भिलत हर । दुरत । जेई । रिन ॥

कवित्त ॥ मंस चड्ढ रद गूद। अंत बर बाज गज्ज नर ॥
भय भूअत्त असत्त। चढिय जुग्गिन तिन उप्पर ॥
डुक्क दंत गज गिद्धि। उतरि लै अंत अलुझ्झिय ॥
डुक्क कोद जुगिनीय। करन ऐंचत सों झुक्किय ॥
तिहि दिष्षचंद कविराज तत। अति उल्हास ओपंम बढि ॥
उडवत्त चंग सुचंग अँग। राज कुमारि अट्टानि चढि ॥
छं० ॥ ११२ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ धवलंगी धवली दिसा धवल स्तन चहुवान ॥
धवल दीह संमुह लस्यौ। जस धवलैं तन आनि ॥
छं० ॥ ११३ ॥ रू० ॥ ७० ॥

स्वामि रत्त रत्ते समुह। रत्ते नैंन करूर ॥
रन रत्ते द्रव दाह सम। गुंजत गल्ह गरूर ॥
छं० ॥ ११४ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

नाहर? से नाहरराय का लड़ना ॥

कुंडलिया ॥ नाहर सौं संमुह लस्यौ। नाहर राइ नरिंद ॥
मंडोवर माहू बली। धनुवर भूपति दंद ॥
धनुवर भूपति दंद। सेन चहुआन ढँढोरी ॥
सुर असुरन करि मेर। मथन दरिया हिल्लोरी ॥
हय हथ्यिन घन ढंकि। बीर कुव्यौ कंकि काहर ॥
मरदन सौं मिलि मरद। मरद बुल्यौ मुष नाहर ॥
छं० ॥ ११५ ॥ रू० ॥ ७२ ॥

---

६९ पाठान्तर-वाजि। गज। भूत। असत। जुगिना। उपर। दुक। उतर। अलुझ्झिय। दुक। जोगिनीय। ऐंचत। सों। झुक्किय। तिहिं। दिषि। तित। उपंम। उडवत। चंग। कुंमारि। अट्टानि ॥
७० पाठान्तर-तन। तंन। चहुवांन। आंनि ॥
७१ पाठान्तर-स्वांमिरत। रते। रत्ते। नंन। दते ॥
७२ पाठान्तर-सों। नाहरराय। धनिवर। चहुआंन। ढंढोरी। ढढोरी। टंटोरी। असुरनु। दरीया। हिलोरी। हथिन। सों ॥

बलराय का खेत में खँडना ॥

कवित्त ॥ इय रघ्यौ थिर सुथिर । षेत संध्यौ बलरायं ॥
सार मार अप्पार । धार लग्गा धर चायं ॥
उड्डिय अग्ग पगधार । धपी ढुग्गा धर लोहय ॥
धक्क इक्क उचार । सार अप्पं दन मोहय ॥
निग्घात घात भरक्कर करहि । नभ निसान तिन सद्द भरि ॥
सब सूर सुरंगीय कंक वत्त । सुभर कढ्ढि असि वर पसरि ॥
छं० ॥ ११६ ॥ रू० ॥ ७३ ॥

घोर युद्ध वर्णन ॥

छंद विराज ॥ कढी * तेग तत्तं । मनों मल्ल घत्तं ॥
लगे लोह लग्गं । पगं पग्ग वग्गं ॥ छं० ॥ ११७ ॥
दुअं वाघ वाहं । गजैं गज्ज ढाहं ॥
जुटे दून्न उत्तें । मनों संस चित्तें ॥ छं० ॥ ११८ ॥
धुकैं धींग धक्कैं । हकैं सार छक्कैं ॥
भिरैं भूमि रुंडं । वकैं वैन मुंडं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
तुटैं तूट बाहैं । ढ्तैं ढंत माहैं ॥
झुकं पाइ कूदैं । टिकैं तेक रुंदै ॥ छं० ॥ १२० ॥
चढै चाहुआनं । तडित्तं कमानं ॥
रसं वीर रस्से । वढै लोह घस्से ॥ छं० ॥ १२१ ॥
गजैं गैंन देवी । अभूतं सुएवी ॥
नचै भूंति भूमी । जकैं देषि झूंमी ॥ छं० १२२ ॥
षिलै षेत पालं । विहंडं कपालं ॥
रचै रुंड मालं । स्रवै स्रोन लालं ॥ छं० ॥ १२३ ॥
चवट्टी चिकारै । फिकीयं फिकारै ॥

---

७३ पाठान्तर-यह । अपार । लगा । ढ्गा । धक्क हक । उचार । अयं । निघात भह । निसांन । शब्द । सुरंगीय । कढि ॥

गमं गिद्ध गट्टैं। पलं पूंचि चट्टैं॥ छं० ॥ १२४ ॥
भिरै अंति भारी। अभूतं सुरारी ॥ छं० ॥ १२५ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

दूहा ॥ परत भिरत तुट्टत सुकर। करत निवत्ते सुचथ्थ।
अप्पानौ वल हथ्थनह। कों मंगै बल तथ्थ ॥
छं० ॥ १२६ ॥ रू० ॥ ७५ ॥

नाहर कर नंन्हा सुपय। भय भारथ्थ उपाउ।
जासु जहां जो ऊवरै। तिहि वल रोह सहाउ ॥
छं० ॥ १२७ ॥ रू० ॥ ७६ ॥

गाथा ॥ कायर सुष्प प्रमानं। वर कंमोदयं मोदयं सुष्पं।
सत चित पच प्रमानं। उघारियं वीर हृंदायं ॥
छं० ॥ १२८ ॥ रू० ॥ ७७ ॥

छंद त्रिभंगी॥ झंकारे सूरं, वज्जत तूरं, नच्चत हूरं, तुर तुरयं।
हय छंडिय राजं, तेजय पाजं, लरे सुसाजं, फ़ुर स्फुरयं ॥
चलि चाल बंधी, तारा संधी, हसै सुनंदी, दै तारी।
तुरसी रस अंजरि, नव नव पंजरि, तन घन पंजरि, वैसारी ॥ १२९ ॥
घन केसर रंगं, अंवनि अंगं, नच्चत जंगं, अहि कालं।
जंपे हरि गंगं, गुन अनभंगं, चरमन अंगं, असि स्फारे ॥
दूनौं बवकारैं, दुनौं न हारैं, छोह करारै, गुन भारे।
केसरि रंग रोरं, असिवर स्फोरं, सौ तन कोरं, घटि कालं। ॥१३०॥
सिर तुट्टि प्रमानं उसया जानं, धूअ समानं, सुर हालं ॥

७४ पाठान्तर-नेग। तत्ते। मनों। दुहं। गजे। गज। दूत उत्ते। मनें। चित्ते। धुकें। धगि। धके। हकें। हके। वंन। तुटं। लुटं। चूटि बाहें। दंतें। साहैं। पाय। छुट्टैं। चाहुवानं। रसे। वहैं। हसे। गंन। भूमि भूंमी। जकें। रचैं। रुड। अबैं। चवटी। चवट्टी। फ़कारी। फिकियं। फिकारैं। गोमं। गिद्धु। गट्टैं। चुट्टे। चिटं। सारी। अभूंतं ॥ * सं० १६४७ की लिखी पुस्तक में इस छंद का शुद्ध नाम विराज है और इतर में रसावला है। यह दो लगुगु और रसावला दो गुलगु का होता है।

७५ पाठान्तर-चुटत। हथ। अप्पंनौ हथ। मगौ। मगै। तथ ॥

७६ पाठान्तर-भारथ। तिहिं ॥

७७ पाठान्तर-मुष। प्रमांनं। कमोद। कंमोद। दषं। प्रमांनं। उधारियं। वृंदाइं ॥

हिल्लोरे पग्गं, अरि घट जग्गं, करिन अभग्गं, जुधमोरं।
परिहार सु आपं, अरि उर दापं, रपि रन धापं, पग ओरं ॥
चालुक्क सुभानं, जुद्ध समानं, अरि हरि मानं, गुमांनं । छं० ॥१३१॥
पर मध्य पवारं, असि वघु भारं, अच्छरि नारं, सो रानं ॥
कूरम पग जग्गी, दस क्रम भग्गी, फिर रन लग्गी, परिहारं ॥
दाहिम पग पुल्लं, वीर सु वुल्लं, नह मन डुल्लं, भर सारं ॥
कन्ह कुंमारं, रन परि भारं, सार सुमारं, नह हल्लं ॥ छं० ॥१३२॥
आवध नह फुट्टै, गुरजनि कुट्टै, सीसय फुट्टै, कर चल्लं ॥
रन जैत सरीसं, तुट्टिय सीसं, लगि घन रीसं, परि वथ्थं ॥
रन लुथ्थि अलुथ्थं, गुन कवि कथ्थं, अचरिज सथ्थं, रवि रथ्थं ॥
छं० ॥ १३३ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

छंद भुजंगी ॥ एकाग्यौ जुलूरं विराजंत वीरं । स्वयं कंठ आभूषनं छंद नीरं ॥
पया सेस मत्ता चवं पंच अच्छी । कितौ छंद नामं विराजै सु लच्छी छं०॥१३४॥
नवं नेह नारी लछी देह दूनौ । करी सूर नांची विराजंत सूनौ ॥
हयं छंडि राजं लरे सूर तेजं । मनों जुद्ध आकून भारथ्थ एजं ॥ छं० ॥ १३५ ॥
चली चाल वंधे तनं मंड आसं । कहै चंद कव्वी तिनं जुद्ध भासं ॥
छं० ॥ १३६ ॥ रू० ॥ ७९ ॥

गाथा ॥ हुंकारे विप सेनं । वजे वज्जाइं पंच सद्दायं ॥
सज्जे नव रँडा रंगं । भगं कन्ह चितयं प्रलयं ॥ छं० ॥ १३७ ॥ रू० ॥ ८० ॥

---

७८ पाठान्तर–हकारे । वजत्त । नंचत ॥ १२९ ॥ केसरि । नचत । गंगं । सिरमन । ववकारे ॥ १३० ॥ तुटि । प्रमानं । हिलोरे । पगं । जगं । करि अनभगं । चालुक । गुमान । गुमांनं ॥ १३१ ॥ अछरि । सोनानं । कूरंभ । कूरभं । क्रूरं । भगी । फिरि । लगी । पुलं । वुलं । डुलं । भालं भार सिरं । कुमारं । हलं ॥ १३२ ॥ फुट्टे । विछुट्टे । फुट्टे । चलं । शीसं । वथ । लुथ उ लुथ । कथं । सथं । रथं ॥ १३३ ॥

७९ पाठान्तर–सो सु । पटं । अछी । किनो । नांमं । लछी ॥ १३४ ॥ लरें । मनों । भारथ ॥ १३५ ॥ कहैं । कवी ॥ १३६ ॥

८० पाठान्तर–हकारे । बीय । वजाइ । सद्दाई । सदे । रंग रंग । रंग रंग । भगं ॥

दूहा ॥ उत मंडोवर वीर कौं, इत संभरि वै राव ॥
दुअ लग्गा अस रार जुध, सुकवि चंद करि काव ॥
छं० ॥ १३८ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

छंद भुजंगी ॥ सलुथ्थं सलुथ्थं अलुथ्थं तिलुथ्थं। इयानं उथानं समानं पलथ्थं ॥
हयगं रथंगं धरं धार तुट्टै। धरं धार धीरं मघा वीर लुट्टै ॥
छं० ॥ १३९ ॥

षलक्कै रुधिंजा प्रवाहं सिरज्जं। धरं धाम पाहं रनं कोन रज्जं ॥
भनक्कंत भेरी चिकारैं सुहथ्थी। नचैं रंग भैरूं ततथ्थे ततथ्थी ॥
छं० ॥ १४० ॥

प्रहारं सुदंती सुअंती अलुभ्भं। अलुभ्भैं सुदंती उडैं छिंछ झुभ्भं ॥
मनं झारते जान हेमं हयन्नं। परज्वाल तुट्टे तनंजा विनंनं ॥
छं ॥ १४१ ॥ रू० ॥ ८२ ॥

लोहाना आजानु बाहु के युद्ध का वर्णन ॥

कवित्त ॥ लोहानौ आजांन। बांह लंबी पस्सारै ॥
लंबी बांह पसारि। तेग लंबी उब्भारै ॥
उब्भारै विब्भार। वीर बाहै वढ्ढालो ॥
अढ्ढालो अर बढ्ढि। कंध सोहै सुढ्ढालो ॥
सुढ्ढाल कंध विव षंड हुअ। विधि ओपम कवि चंद कहि ॥
आहत्त घत्त आजान भुअ। मनु कजल कोटकि विज लहि ॥
छं० ॥ १४२ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

---

८१ पाठान्तर–कें। दोउन के असराल युद्ध। सो चंद करीय सु काव ॥

८२ पाठान्तर—सलुथं सलुथं। सलुथं सलोथं। अलुथं तिलुथं। उयानं। पलथं। हयं गंगरथं। तुट्टैं। लुट्टैं ॥ १३९ ॥ षलक्कैं। रुधिजा। प्रबाहं। कंन। भनकंत। चिकारे। सुहथी। नचै। भैरैं। ततथे। ततथी ॥ १४० ॥ अलुभं। अरुभैं सुदंती। अलुभंत। उडे। झुभं। हयनं। गयनं। परें। तुटें ॥ १४ ॥

८३ पाठान्तर–आजान। वाह। पसारे। उभारै। उभारै। विभार। बढाली। बढाली। अरिकट्टि। सोहैट्टै। सुढाली। सुढालि। पंध छिछि पंड हुअ। उपम। आव्रत। घत आजानु। मनों। मनौं ॥

कवित्त ॥ लोहांनै अरि फौज । चक्का चिहुँकोद फिराइय ॥
ज्यौं तूल मध्य वातूल । पवन जिम पत्त भ्रमाइय ॥
मारुत वजि आरिष्ट । वाइ चिहुँ कोद झुलावय ॥
कै साय पुरातन धज्ज । षिविधि विध तुंग हलावय ॥
कै कुलाल चित चक्रित भौ । चक्र चिहूं दिसि फेरइय ॥
मृगराज मृगनि ज्यौं क्रोध बल । वल सब्बह अरि घेरइय ॥
छं० ॥ १४३ ॥ रू० ॥ ८४ ॥

कवित्त ॥ तहां षिभिक्क पिय कुँअर । लोह झारै गज मध्यं ॥
भइय भसुंड विपंड । थंम सोभंत सुतथ्थं ॥
कै * जलधि तट छवि छोम । धोम धारा घृत सिंचिय ॥
कै * तडित तेज नव घंन प्रमान * । भान चलि वद्दल पंचिय ॥
कज्जल प्रमान प्रव्वत ढह्यौ । रत्त धार वुट्टंत जलु ॥
कंचन प्रनार दे सुर अवकि । दूह ओपम दीसंत षलु ॥
छं० ॥ १४४ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ जावक स्रोन प्रनार जल । डुंगुर फटिक वहात ॥
जीवत रद कढि रुधिर तिन । दंतू सर दरात ॥
छं० ॥ १४५ ॥ रू० ॥ ८६ ॥

कविक्त ॥ लोहांनौ आजांन बाहु * । जिक्त आरनि जस लिन्नौ ॥
ज्यौं इक लेई कन्ह । दंग दावा नल पिन्नौ ॥
ज्या इकल्ले हनुवंत । वंक लंका गढ ढाह्यौ ॥
ज्यौं इकलेई भीम । सिक्त कौरव तन गाह्यौ ॥

---

८४ पाठान्तर-लोहांनो । चिहु । कोंद । ज्यों । तुल । मधि । भ्रमाइय । बलि । चिहु । धज । विधितुग । भयो । विहुं । फेरईय । ज्यों । घेरिईय ॥

८५ पाठान्तर-षिभि । कुआंर । मथं । भईय । तथं । कैं । तरह । चिंचिय ! चिंचीय । * यह सब अधिक पाठ हैं । भांम । वट्टलह । कजल । प्रमांन । प्रबत ।

८६ पाठान्तर-प्रनाल ॥

ज्यौं पुनि आगस्ति आप दुक्कली । सोषि सब्ब सायर लयौ ॥
दांनव कि चंपि अंगद बलिय । नंघि उदधि परसैं गयौ ॥
छं० ॥ १४६ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ बल बंध्यौ नाहर नरिंद * । इंद्र जनु वज्र हथ्य झलि ॥
मुकति सुफल लहीय । बीर ब्रह्मांड तार पुलि ॥
नर नाहर ज्यौं लस्यौ । लज्ज पंकह आलुझ्यौ ॥
सार धार निद्धार । पार मुक्किग जग सुझ्यौ ॥
कलछंत केलि परिहाररिन । चिसल तेज लग्गिय चिभुअ ॥
भग्गौ न भूमि रजपूत हौं । करौं नाम जिम अटल धुअ ॥
छं० ॥ १४७ ॥ रू० ॥ ८८ ॥

कवित्त ॥ सुनिय मंच सेवक्क प्रमांन * । रहट घही फेरहि एम ॥
पेट भरन * चह्लंन । पुठ्ठि दै भार चलहि क्रम ॥
ते नह गनियै सूर । अंम किंचिन कौ नांही ॥
स्वांमि संकरै छंडि । लो भअप्पन घर जांही ॥
गनियै न सूर अरि जूह बल । अप्प सेन दूषि घहियै ॥
जै अजै भाग भूपति क्रमह । अप्पु दोस आष मिट्टियै ॥
छं० ॥ १४८ ॥ रू० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ वाय रूप प्रथिराज । गज्जि गयो असि रुक्कं ॥
सार धार उझ्झार । गुरज भंज्यौ सिरभुक्कं ॥
रह्यौ भान रथ थंचि । पवन रह्यौ गति छंडि थिर ॥
रहे देव दग चाहि । नच्चै वैताल बीर भर ॥

८७ पाठान्तर—* अधिक पाठ है । जिति । लीनौ । ज्यों । दुकलेद । दुकलेंद । ज्यों । दुकलेंद । हनवंत । हनुमंत । ज्यों । दुकले । सत्त दकले । सब । दांनव । परसों ॥

८८ पाठान्तर—नाहर । * अधिक पाठ है । हथि । हथ । मुगति । ब्रहमंड । ज्यों । जल पंकह । निझ्झार । मुक्किग हो । करौ। नांम ॥

८९ पाठान्तर—सेवक । * अधिक पाठ हैं । घठी। घटिका पुठि । चलि । कौं। स्वांमी । जांहीं । रवि । भुआति ॥

तंते सु रास किती प्रबल । होइ मरन छुटैन दिन ॥
पख पंद रास पच्छै चढी । नाहरराइ नरिंद रन ॥
छं० ॥ १४९ ॥ रू० ॥ ९० ॥

कवित्त ॥ नाहर राइ नरिंद । चित्त चिंता उत्तारिय ॥
मन बध्यौ पन्न घथ्यौ । मरम केवल विचारिय ॥
सुनहूँ तौ * कहूं कवित्त । सुथिर जीवन जग नांही ॥
इह संसार असार । सार किती कलु मांही ॥
ज्यौं उरगह सुष उंदर परै । यौं सुदेह नाहर कहै ॥
अवतव्य बात मिटै नहीं । नाम एक जुग जुग रहै ॥
छं० ॥ १५० ॥ रू० ॥ ९१ ॥

दूहा ॥ इह कहि रहि रन मंड हपि । ज्यौं कपि रष्षस सेंन ॥
कोपि कन्ह धायौ बली । ज्यौं अगि विकुठिय गेंन ॥
छं० ॥ १५१ ॥ रू० ९२ ॥

कन्ह चौहान के युद्ध का वर्णन ॥

विराज॥ षष्यौ कन्ह यट्टी। कुटी अंषि पट्टी॥ ष्षरी सेन फट्टी। मनौ दूध पट्टी॥ छं०॥ १५२
षगंगे उपट्टी। मनौं कठ्ठ कट्टी। परे भूमि लट्टी। मनौं मद्द जट्टी॥ छं०॥ १५३॥
वहैं पग्ग घट्टी। मनौं चक्क मट्टी। तरफ्फैं कि नट्टी। मनौं लागि नट्टी॥ छं०॥ १५४
लरैं यौं सुभट्टी। मनौं लौन अट्टी। सुरैं मारि झट्टी। मनौं लत्त नट्टी॥ छं०॥ १५५॥
पसू पंष ठट्टी। पलं स्रोन घट्टी। कवीचंद भट्टी। सुपं कित्ति रट्टी॥
छं० ॥ १५६ ॥ रू० ॥ ९३ ॥

---

९० पाठान्तर—प्रथीराज। गजि। उभार। भांन। गवन। मंडे। यु। रासि। कित्ति। सोई। पछैं। नाहरराव॥

९१ पाठान्तर—नाहरराय। चिंत चिंता। उतारीय। केवलह। विचारीय। सुनहु। सुन हूं। * अधिक पाठ है। नांहीं। ज्यां। उरगह सुमुप। यों। सुमिटै।

९२ पाठान्तर—हन। ज्यां। रपस। कन्ह। ज्यां। विकुट्टिय॥

९३ पाठान्तर—* सं० १६४७ की प्रति में शुद्ध नाम विराज है और इतर में छंद रसावला है॥ १५२॥ मनां। कठ। परं। मनां। मनौ। मद॥ १५३॥ बहै। मनां। तरफें। लाग॥ १५४॥ लरं। यां। मनां। लांन। मनां। लत॥ १५५॥ पसूं। पट्टी। कवि॥ १५६॥

कवित्त ॥ नाहर नाहर राव। कहर नाहर सुकन्ह कर ॥
दिठ्ठ दिठ्ठ अंकुरिय। भरिय विस जांनु विषद्धर ॥
उमसि कन्ह अविरोस। सीस चुकि परिय बांम भुज ॥
पुनि उक्कुटि परिहार। सार सिर कन्ह टोप भुज ॥
लग्गे सुटोप उड्डिय किरच। बद्दल धार उत संग धचि ॥
जैजया सद्द जुग्गिन करहि। दुस्रन जुद्ध अद्भुत मचि ॥
छं० ॥ १५७ ॥ रू० ॥ ९४ ॥

डारि कंन्ह तरवारि। कठ्ठि जम दढ्ढ मिल्यौ हिय ॥
मचि जुद्ध दृत बीच। धप्प भत्तीज दिष्षि निय ॥
गहि सुसिष्ष पुठि आइ। घाइ जम दढ्ढ कियौ लिय ॥
छंडि प्रान परिहार। परे पाल्हन ऊपर जिय ॥
गहि रोस नंषि नर भूमि पर। हनि अनियारिय उभय कसि ॥
तिन हनत घाय घुंमत झुमत। गयौ निठ्ठि नाहर निकसि ॥
छं० ॥ १५८ ॥ रू० ॥ ९५ ॥

बर नाहर जिम लग्यौ। गयौ नाहर जिम नाहर ॥
घाव घट्ट घन घुंमि। झुंमि निकसिय बल नाहर ॥
कन्ह कांक किय नन्द। बंक भर भूमि पक्षारिय ॥
जनु कि लँगूरह लंक। तोरि बारा धर डारिय ॥
सादान बज्जि रन रज्जि सद। नह सु सथ्थरकत करिय ॥
सोमेस सूर चहुआंन सुअ। कित्ति चंद कंदह धरिय ॥
छं० ॥ १५९ ॥ रू० ॥ ९६ ॥

---

९४ पाठान्तर-कंन्ह। दिठ दिठ। जांनि। परीय। वांम। फुनि। उक्कटि। उकुटि। कन्ह। उडिय। सबद। जुगिन ॥

९५ पाठान्तर- कन्ह। जमदठ। मचि। जुध। वीचि। धपि। भतीज। दिषिनीय। सिषि। पुठ्ठि। जमदठ। प्रांन। पल्हन। उपर। अनियारीय। निठि ॥

९६ पाठान्तर-घट। धूमि। झूमि। नन्ह। भूमि। लंगूरह। डारीय। सादांन। बजि। रजि। सथ। करीय। चहुआंन। चहुवांन। सुय। कंदहि ॥

षल घट्ट्यौ सब सथ्थ। जुद्ध धायौ नत्तारिय ॥
चाहुआंन कौ साथ। तेग तुंगह विड्डारिय ॥
उंच गात अरु हथ्थ। वीर कट्टी पट भारिय ॥
इह ओपम कविचंद। चिंति मन मझ्झ विचारिय ॥
पल्लव सुवीर केतुकि नवल। बरवसंत बायह बहै ॥
नम तेज रुधिर भींज्यौ बहुल। कलह किति जावक षुहै ॥
छं० ॥ १९० ॥ रू० ॥ ९७ ॥

दूहा ॥ नाहर नाहर जिम निकसि। भिरि नाहर के भेष ॥
कहर कन्ह षपि कुप्पि पुठि। बली मीर चष लेष ॥
छं० ॥ १९१ ॥ रू० ॥ ९८ ॥

कुंडलिया ॥ फिरि जुहार किय स्वामि कौं। मुक्किय काम धमारि ॥
बली मीर गह्लौ लभ्यौ। मरन सरन विचारि ॥
मरन सरन विचारि। मिलन अंतहपुर किन्नौ ॥
बँधि चिय सांइ सुभित्त। करि सांई सौं दिन्नौ ॥
सार धार तन षंड। षंडि मार्‍यौ रिपु जुर जुरि ॥
तिल तिल तन तुट्टयौ। रंभ ढुंढ्यौ चित फिरि फिरि ॥
छं० ॥ १९२ ॥ रू० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ सिर तुट्टैं परि भूमि पर। यौं राजै कविचंद ॥
कमल जानि नचंत सर। सरद चंद पर कंध ॥
छं० ॥ १९३ ॥ रू० ॥ १०० ॥

कुंडलिया ॥ कमल जानि नंच्चौ जु सर। दिसि सोभै संग्राम ॥
मानहु जलद कमोद तजि। थल जए ए ताम ॥

---

९७ पाठान्तर–सथ। नत्तारीय। चाहुवान। विडारीय। हाथ। कट्ठी। भारीय। उपम। मन सौं। विचारीय। विच्चारिय। बायह। भज्यौ ॥

९८ पाठान्तर–नाहर के। लेषि ॥

९९ पाठान्तर–स्वांमि कों। मुकिय। कांम। गह्लौ। शरन। विचारि। अन्तरपुर। बंधि। चीय। सांई। सुभित। सुभृत। तिल तिल्ल। ढंढ्यौ ॥

१०० पाठान्तर–तुट्टै। यों। राजि। राजै। जांनि। नाचंत। शरद कंध ॥

थल जए ए ताम। चंद ओपम तहां पाई ॥
मांनहु वीर समुद्र। हयौ फल्ल हथ्थ बधाई ॥
धार धार चढि सूर। सूर कीरति बिमर्लं ॥
धन्नि धन्नि उच्चार। सीस नच्चै सुकमलं ॥
छं० ॥ १६४ ॥ रू० ॥ १०१ ॥

नाहरराय का भागना और पृथ्वीराज का पीछा करना ॥

कवित्त ॥ भग्गा नाहर राई। पाई मुक्के नाहर जिम ॥
जिम जिम भर कढ्ढई। रोस लग्गा वर तिम तिम ॥
षेत स्रोधि चहुआनं। पर्यौ तूंवर पाहारी ॥
बर* परयौ तहां गोइंद। पर्यौ भट्टी अधिकारी ॥
षीची प्रसंग बंधव उभै। सोह सुबंधा बंध वर ॥
तिम तिम सु तेग ताहून लसै। तिम तिम वुठ्ठे सार नर ॥
छं० ॥ १६५ ॥ रू० ॥ १०२ ॥

त्रिविध सहस्र नाहर* बसंत। पच कायर तन झारिय ॥
वीर रूप तप भान। नीर सूकै षल भारिय ॥
तत्तारि तुंअर नरिंद। भयौ तह गहर पत्त छंह ॥
छांह स्वांमि संग्रह। जूह टारिय सुअंग तहँ ॥
फल फूल क्रित्ति पंषी वरन। विमुष न भौ संमुह लस्यौ ॥
गंधर्व वीर चालुक वरन। मरन वीर अच्छरि बस्यौ ॥
छं० ॥ १६६ ॥ रू० १०३ ॥

---

१०१ पाठान्तर-जांनि। जानैं। नच्चै। सुर। मानहु। थल ए उए तांम। ऊपम। पाइय। मानहु। हथ। बधाइय। किए ति। किए सु। धनि २। उचार। नंच्यौ ॥

१०२ पाठान्तर-नाहरराय। पाय। मुक्या। कढई। रौस। चहुवान। चाहुआंन। तूवर। तूअर। पहारी। परहारी। * अधिक पाठ है। तथा उलट पुलट पाठ ऐसा है-बर गोइंद तहां पर्यौ। बध्या बंधवर। तेज ॥

१०३ पाठान्तर-सस्र। * अधिक पाठ है। झारीय। भांन। सुक्कैं। झारीय। तत्तारी। तूंअर। तोंअर। पत्त सह। पत्त छंह। छाह। स्वांमि। टारीय। तहां। भैं। गंधर्व्व वीर चारन वरन। अछरि ॥

गुज्जर वै परधान । जैन ध्रम्मी मत लद्धी ॥
एकादस चहुआन । धर धारह आलुद्धी ॥
सहस एक असवर । धार है गै घट मंडै ॥
नाहर राइ नरिंद । कोट पट्टन वै चढ्ढ्यौ ॥
ढुंढयौ षेत चहुआन वर । अरु भारथ आहुट्टयौ ॥
चामर सु छत्र धरि षेत में । सुधा त्रिविध विधि लुट्टयौ ॥
छं० ॥ १६७ ॥ रू० ॥ १०४ ॥

डोला पंच पचीस । स्वामी संजुत्त चढाइय ॥
धाइ कन्ह घट घुम्मि । धाइ एकादस राइय ॥
चंपि बीर चालुक्क । राज मेलान तुच्छ करि ॥
गल गज्जै सामंत । वरैं वरनी नाहर वरि ॥
रविवार बीर पंचमि दिवस । एकादस रविभुअन ग्रह ॥
अष्टम सु चक्र जोगिनि ग्रहन । वर वज्जेति नरिंद तह ॥
छं० ॥ १६८ ॥ रू० ॥ १०५ ॥

पट्टन में पृथ्वीराज का राज्याभिषेक होना ॥

देव दसमि कै दीह । नयर पट्टन चहुआनं ॥
गुर पंचम रवि नवम । सुवर ग्यारह ससि थानं ॥
तीय थान वर भौम । सुक्र सत्तम बल किन्नौ ॥
केइंद्री वर बुद्ध । राह सब कौद अछिन्नौ ॥
आनंद चंद बरदाइ घन । राजभिषेकन पट्ट करि ॥
साजंत भूमि जीते सुपति । तेज तुंग दुज्जन सुहरि ॥
छं० ॥ १६९ ॥ रू० ॥ १०६ ॥

१०४ पाठान्तर-गुज्जर । परधांन । ध्रंम्मी । ध्रमी । चहुआंन । अलुद्धी । नाहरराय । चढ्यौ । चहुआंन । आहुटयो । लुटयो ॥

१०५ पाठान्तर-डोंला । स्वांमी । स्वांमि । धाय । घूंमि । घुंम्मि । धाय । ईकादस । मेलांन । तुछ । वरें । वरो । वजेति ॥

१०६ पाठान्तर-चहुवांनं । चहुआंनं । थांन । कीनो । केंद्री । सवकोद अछिनो । वरदय धनं । पट । दुजन ॥

दूहा ॥ तिरिय चक्र अधचक्र नन । ऊरध चक्र प्रमान ॥
एन नछिच चहुआंन वै। । पट अभिषेक समान ॥
छं० ॥ १७० ॥ रू० ॥ १०७ ॥

कवित्त ॥ इन नछिच कविचंद । कौन कारन ऊपावै ॥
पटभिषेक राजान । बहुत आगम प्रभावै ॥
ग्रह प्रसाद * तोरन उतंग । छच जंचह सक्र टावै ॥
धजा बंधि पत्ताक । संष चामर मंडावै ॥
उदयत्त परब पानिं ग्रहन । बहु बिवेक ध्रंमह सुधरि ॥
नन कूप तडागन वापियन । धन सुकियन सुक्रियन्न वरि ॥
छं० ॥ १७१ ॥ रू० ॥ १०८ ॥

नाहरराय का हारकर अपनी कन्या के विवाह का लग्न लिखवाकर भेजना ॥

छंद पद्धरि ॥ सब सथ्थ तथ्थ हुअ एक ठांम । मुक्कांम कीन गिरिनार गांम ॥
सब लोक मराजन मिले आइ। चिंत्यौ सुचित्त नाहर सुभाइ ॥ छं ॥ १७२ ॥
जिहि मेल होइ सो करि उपाइ । दिष्षियै दीप सो नहीं लाइ ॥
पहुमी सुकाज भर तजत प्रान। पहुमीस काज धन देत दान ॥ छं ॥ १७३ ॥
पहुमीय काज जग बाजि देत । उपाइ नेक पहुमी सुलेत ॥
पुत्री सुएक तिन तन कुआरि । दीसंत देह जनु मदनधारि ॥ छं ॥ १७४ ॥
बुल्लाइ विप्र लिषि लगन तथ्य । पट्ठाइ दीन न्रप पिथ्थ जथ्थ ॥
आनंद राज सब सेन अंग । फुल्ले कि कमल जनु दिषि पतंग ॥
छं० ॥ १७५ ॥ रू० ॥ १०९ ॥

---

१०७ पाठान्तर-तिरीय । प्रमांनं । चहुआंन कों । पटभिषेक । समांन ॥

१०८ पाठान्तर-कोन । उपावे । पाट विभेक रजांन । पाटभिषेक राजांनं । आरांम । * अधिक पाठ है ॥ उतंग । पताक । उदयं । उंदयंत । पांनिं । पांनि । ध्रंम्मह । तटाकन । धन मुकियन सुकियन वरि । मुकियन चुकियन वर ॥

१०९ पाठान्तर-सब्ब । सथं । तथ । हूव । ठांम । मुकाम । गिरनारि । गांम । सब्ब । मिलियं । आय । चित्यौं । सुभाय ॥ १७२ ॥ जिंहिं । होय । उपाय । दिषियै । नही । लाय । पुहमी । प्रांन । दांन ॥ १७३ ॥ उपाय । कुवार । धार ॥ १७४ ॥ बुलाय । तच्छ । पठाइ । पिथ । जथ । फूले ॥ १५७ ॥

पृथ्वीराज का ब्याहने को जाना ॥

कवित्त ॥ नट्ठा नाहरराइ । पेन ढुंढ्यौ चहुआनं ॥
राज जीति गज लच्छि । सीस लग्गा असमानं ॥
तुम मल्लह परिवार । मत्त कीनो अमित्त जुध ॥
बरन बीर संमुहे । राज लग्गे सुमंत सुध ॥
पंचमी वार रवि रत्त दिन । गंज नाम बर जोग गुर ॥
गिरि नाम करन राजन्न बर । चढ्यौ बीर बीरंस डर ॥
छं० ॥ १७६ ॥ ११० ॥

पृथ्वीराज का तोरन की बंदना करना ॥

कवित्त ॥ बंदि राज तोरन्न सुचंग * । मुति नष्पें अच्छिन अलि ॥
मनों * चंद किरनि कूटंत । भान नष्पै मयूष छलि ॥
ठाम ठाम पिय गान । आनि अच्छरि कैलासह ॥
सुभ सिंगार सोभंत । झूमि रहि अलि रस बासह ॥
तोरन सुचार आचार करि । कै जनवासत मंडपहि ॥
दिष्यंत नयन भुल्लहि चरित । का कवि बन्नहि भाव कहि ॥
छं० ॥ १७७ ॥ रू० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का नाहरराय की कन्या से विवाह होना ॥

दूहा ॥ करि आचार सब पंडित । पानि ग्रहन फुनि व्याह ॥
सोमबास बसुनाइकै । धनि नाहर कत्याह ॥
छं० ॥ १७८ ॥ रू० ॥ ११२ ॥

---

११० पाठान्तर—नठा । नाहरराय । ढूंढ्यौ । चहुआनं । लभिं । मलह । मत्तह । मत । अमित । जुद्ध । लगा । राति । नाम । गिर । नांम । बरन । चढो । बीरंसु ॥

१११ पाठान्तर—तोरन । * अधिक पाठ है । मुति । नपैं । कुटंत । नंषै । ठांम ठांम । पीय । गांन । गांम ॥

११२ पाठान्तर—पंडितन । पांनि । फुनि । सोवामब सुनायकैं । सोबास वसुनाइकै । धंनि । क्रत्याह ॥

नाहरराय का कहना कि आपके काम में सीस देने के सिवाय और कुछ देने के योग्य हम नहीं हैं॥

दूहा॥ नाहर राइ नरिंद कहि। का तुम जोग जगीस।
और देन हम हैं कहा। काम सीस हम ईस॥
छं०॥ १७९॥ रू०॥ ११३॥

नाहरराय की कन्या का गुण और रूप वर्णन॥

साटक॥ तन्मे स्याम सुरंग वाम तनयं, मन्मथ्य वल्ली कला।
सुष्पं धामय तेज दीपक कला, तारुन्य लच्छी अघा॥
रूपं रंजित मंजु माल कलया, वासंत पचावली।
अब्बं लक्कन काम धीरज गुणै, धन्यौ दुती दंपती॥
छं०॥ १८०॥ रू० ११४॥

पृथ्वीराज का जीतकर स्त्री के साथ लौटना॥

कवित्त॥ संभारि वैरन जीत। धीर चालुक्क काम-वल॥
उभै जोध खो जितै। लेइ कर वत्त कासि कल।
बीर निसानति भग्ग। बग्गि आनन्द निसानं॥
प्रात होत बर बीर। चल्यौ संभरि दिसि थानं॥
भर विब्भर खग्ग मग घय गद्दय। रचिय तिम्मगत जुद्ध द्रुक्क॥
कार्मुक कोटि भंजै विषल। सुबर बीर बीरह जु पुक्क॥
छं०॥ १८१॥ रू०॥ ११५॥

अरिल्ल॥ लै तरुनी डोला चढि राजं। डोला लंगरिराइ बिराजं॥
धन रंगा तोर त्तिय धन्यं। जिन रष्यौ जीवत न्रप मन्यं॥
छं०॥ १८२॥ रू०॥ ११६॥

---

११३ पाठान्तर—नाहरराव। नाहरराय। कहा। देन। और। दंन। है। कांम॥

११४ पाठान्तर—तन्म। स्यांम। वांम। मनमथ। वाली। सुषं। लक्षी। ग्रहा। पचावली। अवं। लक्कन। कांम। गुनै॥

११५ पाठान्तर—रिन। जोत। करवत। कालिकल। निसांन। षगि। निसानं। थानं। विभर। अगमगह गद्दय। तिम। भंजे। एक्क॥

११६ पाठान्तर—लंगरीराय। धनि लंगा तोर तीय धंन्यं। जीवित। मंन्यं॥

संग वरनि डोला चढ़ि राजं । मनों रत्ति दुति काम समाजं ॥
के अलि डोलनि सथ्थ सुसाजं । चढ़ि सव सथ्थ वजावत बाजं ॥
छं० ॥ १८३ ॥ रू० ॥ ११७ ॥

पृथ्वीराज का ग्यारह डोलों सहित होना ॥

गाहा ॥ करी जर्जत सरीरं । भीरं भंजि स्वामि का सेवं ॥
ग्यारह डोल सुसथ्थं । कथं पत्तेव संभरि ग्रेहं ॥
छं० ॥ १८४ ॥ रू० ॥ ११८ ॥

पृथ्वीराज का विवाह कर घर पहुँचना ॥

दूहा । ग्रह पत्तौ जित्तौ सयन । परनि सुचंगी वाल ॥
जंभा वीनं विम्मयौ । कुँअरप्पन सुचि लाल ॥
छं० ॥ १८५ ॥ रू० ॥ ११९ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ वंस अनल चहुआंन । भयौ न पिथ समकोई ॥
जिन षंडे षल षग्ग । दीन वंदे सव लोई ॥
जिन नाहर राइ नरिंद । पंडव सह पज्जारिय ॥
जिन वंभनवा सो सिंघ । वान ढक्यौ गंजाइय ॥
अरि घरन घरनि घर चैनं नहि । सयन निसंकन संचरहि ॥
वन गहन वहन विह्ववल फिरहि । वंदर ज्यौं कांदर वसहि ॥
छं० ॥ १८६ ॥ रू० ॥ १२० ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके नाहरराइ
कथा वर्णनं नाम सप्तमो प्रस्तावः ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

११७ पाठान्तर– बरनि । मनों । रति । डोलन । सथ ॥
११८ पाठान्तर–करि । भजि । सुसथं । संभरी ॥
११९ पाठान्तर–गृह । विमयो ॥
१२० पाठान्तर–चहुवांन । भय । पियह । नाहरराय । नाहरराव । पंजारीय । सों । वांन । ठट्टो । ठढो । चेंन नह । ज्यैा ॥

अथ सेवाती जुगल कथा लिख्यते ॥

(आठवां खण्ड ।)

सोमेश्वर के मंडोवर जीतने और लूट को सरदारों में बांट कर प्रबल प्रातप के साथ राज्य करने का वर्णन ॥

कवित्त ॥ सुवसि देस सोमेस । पेस मैवास सदीपन ॥
सुभट थट्ट संघट्ट । दिट्ठि कुँवरं किय जीपन ॥
मंडोवर परिहार । मारि उज्जारि जेर किय ॥
सामतंन सम रंग । लच्छि लभ्भी सुबंटि दिय ॥
दिन दसा देस दरबार दुति । दान मग्ग रत्तौ रचै ॥
पहु प्रबल पारि पच्छारि करि । अदट दट्ट भगपनि गरै ॥

छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

सोमेश्वर के गुणों और उसकी गुणग्राहकता का वर्णन ॥

कवित्त ॥ अरिह दंड बल खंड । गर्ब गर्भन उर छंडिय ॥
सगपन एक पग चाह । पलक सेवा सिर मंडहि ॥
दुजनि देव गुर गाइ । पाइ पुज्जियहि निरंतर ॥
पंडित गुनी गुनग्य । द्रव्य लै चलहि दिसंतर ॥
दरबार भीर सुभटन थटन । कला कत्तिन नाटिक नटहि ॥
छत्तीस राग रागनि रसनि । तंत ताल कंठन ठटहि ॥

छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

---

१ पाठान्तर–सुभट्ट । दिट्ठ । कुअरं । कुंवरं । जिप्पन । उजारि । लछि । लभि । लभी । लीय । दांन । पछारी । हन ॥

२ पाठान्तर–छंडह । दुजन । गाई । गाय । पाय । पुजहि । पुजियहि । रागन । रसन । तंत ताठ ॥

सोमेश्वर का मेवात के राजा मुगल (मुद्गलराय) के पास कर लेने के लिये दूत भेजना ॥

कवित्त ॥ एक सुदिन सोमेस। दूत हज्जूर बुलाइय ॥
मैवाति मुगल्ल नरिंद। पच पठ्ठइ लिष्यिदिय ॥
भूमि आस जौ करहि। भरहि तौ डंड सेव करि ॥
नतर समर डर डरपि। समुद उत्तरहि पार तरि ॥
सिर धारि हुकुम चर चल्लिय तहँ। जहां मुगल मंडल मही ॥
सोमेस सूर प्रथिराज कल। तिम संमुष चर वर कही ॥
छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

राजा मुद्गल का यह पत्र पाकर क्रोध प्रगट करके दूत को लौटा देना और सोमेश्वर का पत्रोत्तर पाकर क्रोध करना और उस पर चढ़ाई करने की आज्ञा देना ॥

छंद पद्धरी ॥ पढ़ि पच पिष्य मुग्गल नरिंद। प्रज्जरिंग रोस मैवात इंद ॥
बहु दिवस सोमंन्रप हुअ सुषंग। किम उछ्छवत्त कह्यौ मुषंग ॥ छं० ॥ ४ ॥
किम सलिल उंट सुष चढै नीर। किम पवन गवन गति धरै धीर ॥
किम सूर सीत गुन गहै अंग। किम धर्मराज धरै दया अंग ॥ छं० ॥ ५ ॥
किम तजै व्याघ्र बल विषम मुष्प। किम तजै जटी गल गरल दुष्प ॥
किम तजै उदधि उर अगनि दाह। किम तजै चंद रवि राह ग्राह ॥ छं० ॥ ६ ॥
धरि नाम कछि कौं दंड देह। इह बत्त मुष्प कौं राज लेह ॥
अरु करन सेव कहि चाहुआन। मन मझ्झ हैंस मति राज जान ॥ छं० ॥
सेवातु सोहि श्रीनाथ पाइ। तिहि चरन चित्त लग्यौ सदाइ ॥
भंडार दंड मो सस्त्र पान। जब तब सुलेहु हाजुर निदान ॥ छं० ॥ ८ ॥
सिर पात्र मंगि बुल्लिक प्रवीन। पहिराइ चरन बर बिदा दीन ॥
फिरि दूत पच्छ अजमेर आइ। दिय पच लग्गि सोमेस पाइ ॥ छं० ॥ ९ ॥
बंचिय सुलेष काइथ प्रमान *। सुनि सोम राज चहुआन भान ॥

३ पाठान्तर-हजूर। मैवाती। नरिंद। पठाय। लिपि। भूमियास। उतरहि। हुकम। तहां। तह ॥

* प्रमान=प्रमानराय नामक कायथ सोमेसराज की पेशी का मुंशी था ॥

करतार चथ्थ पग दान दोइ। धन सह गर्ब जिन करौ कोइ ॥ छं ॥ १० ॥
अनसंक बंक चस बंक धीर। तिहि दान दंड सो जुद्ध धीर ॥
प्रज्जरिग सोम सुनि श्रवन हूत। जिहि ग्रेह पिथ्थ अवतार भूत ॥ छं ॥ ११ ॥
बुल्लाइ सूर सामंत राज। दुय घटी मुहूरत सधी आज ॥
मेवात मच्ची उजारि जारि। पुर ग्राम नैर दीजै प्रजारि ॥ छं ॥ १२ ॥
पन पोहि बंक गढ ढाहि देहिं। इम करिय भूमि मेवात लेहिं ॥
कित्तीक सहिप मुंगल्ल नरेस। बल बंधि संधि विन करि अभेस ॥ छं ॥ १३ ॥
पज्जून बोलि कूरंभ राव। पुंडीर चंद जनु अग्नि बाव ॥
दाहिम नरिंद कैमास संग। चामंड राव अरि दल अभंग ॥ छं॰ ॥ १४ ॥
गुज्जर कनंक बड़ राम देव। गहिलोत राव गोइंद सेव ॥
इतने सुभट्ट सजि जूह धार। बजि पंच सबद बाजे करार ॥ छं। १५ ॥ रू ॥ ४ ॥

ज्योतिषियों से मुहूर्त्त दिखवाकर पुष्य नक्षत्र में चढ़ाई के लिये निकलना ॥

दूहा ॥ बोलिय जोतिग गनिक दुज। धरी मुहूरत सद्ध ॥
तेरसि पुष्य रु भ्रगु दसा। चढि चल्ले निसि अद्ध ॥ छं॰ ॥ १६ ॥ रू॰ ॥ ५ ॥

घर की रक्षा के लिये पृथ्वीराज का घर पर छोड़ना ॥

दूहा ॥ रत्तजु इह बिधि-ग्रेह भय। सुनि सोमेस भुआल ॥
सिसु रष्षि रु संम्ही चढौ। मुंगल दिसा बिसाल ॥ छं॰ ॥ १७ ॥ रू॰ ॥ ६ ॥

---

४ पाठान्तर-पिथ। मुंगल। नरिंद। प्रजरिग। प्रज्जरिग। रोम। मेवात। सुपग। उछवत्त। कढी ॥ ४ ॥ सलित उलटी। शीत ॥ ५ ॥ व्यांल। मुःष। मुष। दुःद। दुष ॥ ६ ॥ नांन। छित्री। मुःष। चाहुआंन। चाहुवांन। मग्ग। होत। होस। आंन ॥ ७ ॥ पाय। तिहिं। दंड सो भंडार वर सस्त्र पांनि। निदान ॥ ८ ॥ बुलिंक परवीन। पाहिराय। पछ। आय। दीय। लगि। पाय ॥ ९ ॥ कायध प्रमांन। चहुआन। भांन। हय। दांन। दीय। गदहिं। कोय ॥ १० ॥ तिहिं दांन। प्रजरिग। जिहिं। गेह। पिय ॥ ११ ॥ बोलाय। दुग्र। महूरत। उजारि। ग्राम। नयर ॥ १२ ॥ पनि। करिग्र। करितु। मेवात। कितक्क। मुर्गुम ॥ १३ ॥ पजूंन। जनुं। चावंडराव। गुजर। रांमदेव। गोयंद। भट ॥ १५ ॥

५ पाठान्तर-बोलिय। धरी। पुरकद्द। भृगु दशा। चले। निशि ॥

६ पाठान्तर-रति यु विधि इह ग्रेह भय। रपे संमुह। दिशा बिशाल ॥

यात्रा के समय अच्छे शगुन मिलने ॥

दूहा ॥ प्रथम प्रयानह सुंदरी। मिली अंक लिय बाल ॥
पीतांमर अंबर धरै। दीप जोति रचि थाल ॥
छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ कलस कामीनी इक्क सिर। प्रात होत नृप पिष्प ॥
मच्छ बंध काहार करि। घुर धुनि बाहम दृष्प ॥
छं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ ८ ॥

दूहा ॥ अन्य सगुन सुभ पिष्षि सब। गुंज गहर नीसान ॥
तमहर कर उज्जल अवनि। प्रगटे पुब्ब दिसान ॥
छं० ॥ २० ॥ रू० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज को राज्य में छोड़कर सोमेश्वर का मेवात पर चढ़ाई करना और उसकी सूचना पत्र द्वारा मुद्गलराय को दे कहना कि लड़ो वा दंड दे आधीन हो ॥

छंद भुजंगी ॥ चढ्यौ चंपि सोमेस मेवात थानं। रष्यौ राज प्रिथराज ग्रेहं निधानं ॥
फटी फौज वैरीन की थाल दिष्षी। तबै कग्गदं ग्रेहराजं विसष्षी ॥ छं॥ २१॥
वरं बीर धीरं महा वैर पुब्बं। मगे राज सोमेस सों जुद्ध अब्बं ॥
महा तेज जाजुल्य भारी सुषग्गं। करै वैर सारथ्य पारथ्य जग्गं ॥ छं० ॥ २२॥
दूसौ सूर सोमेस दीयौ मिलानं। दियं कग्गदं मुंगलं राजथानं ॥
करो सेव सेवं किसो अप्पि दंडं। तजौ आज पच्छे षगं षंडि छंडं ॥
छं० ॥ २३ ॥ रू० ॥ १० ॥

---

७ पाठान्तर—पयानह। प्रयांनह। लियें। पीतंमर ॥

८ पाठान्तर—एक शिर। पिषि। मछ। वामस ॥

९ पाठान्तर—सुगुन सब। निसांन। उजल। प्रगटी। दिसांन ॥

१० पाठान्तर—मेवात। प्रिथिराज। प्रिथिराज। गेहं। निधानं। दीषी। तबें। विसषी ॥ २१ ॥ मगें। युद्ध। अंब्बं। भारी सुजाजुल्य षग्गं। सारथ पारथ ॥ २२ ॥ दूसो। मेलांनं। दीयो। पछे। छंडि ॥ २३ ॥

मुद्गलराय का पत्नोत्तर देकर सोमेश्वर और पृथ्वीराज दोनो से लड़ाई मांगना ॥

साटक ॥ स्वस्ति श्री सउमेस राजन वरं। प्रिथ्राज राजं वरं ॥
तो पत्तं सुनि श्रन्न कग्गद वरं। पल्यंज आकूतयं ॥
जाजा भंजन सेन साहस रने। प्रातं प्रतं जुद्धयं ॥
नां किज्जै तिन टाम पच्चिय घरं। छिम्या किमा कामनं ॥
छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥ ११ ॥

सोमेश्वर का अपने लड़के के बध के विषय में संशय करना ॥

दूहा ॥ सिसु संसो सन्हो फिस्यौ। उभय काम बध बीर ॥
जौ मुक्कै चिय अधम हात। तौ दल सद्धि सरीर ॥
॥छं० २५ ॥ रू० ॥ १२ ॥

और पृथिराज के पास मुद्गलराय के पत्र का संदेसा भेजना और उसका रोस में आकर पिता के पास रण में आ मिलना ॥

कवित्त ॥ छल भग्गा तिय पुच्छ। तात मुक्यो संदेसं ॥
अरिन सयन संमुद्दौ। जुद्ध मंगन अंदेसं ॥
बाल कठिन कर गह्यौ। भंम रष्षन पित कागर ॥
जु कछु अग्ग संभवै। सोइ किज्जै सुमंत नर ॥
चढि बाल वियोगन कंत अप। सो निस रष्यै; राज सिसु ॥
सामंत दोह भय प्रात बर। चढि चल्यौ संग्राम किसु ॥
छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ १३ ॥

कवित्त ॥ सुन्यौ राज प्रथिराज। तात मुक्यौ संदेसं ॥
भयौ रोस जाजुल्य। तुल्य पावक्क सुभेसं ॥

---

११ पाठान्तर-स्वस्तश्रो। सोमेस। प्रथीराज। प्रथिराज। तो। श्रवन। पलयंच। पलयंज। प्रात। प्रातं। जां। किजे। ठांम। पिच्चिय। छिमया ॥

१२ पाठान्तर-दोहरा। संस्यो। पस्यो। उभे। मुके ॥

१३ पाठान्तर-भगा। पुछ। पुछि। मुक्यो। संदेस। अरिय। सैनं। अंदेस। रषन। यु। आय। निशि। रष्यो। राजं। सामंत। राज बर। चढे। चल्यो। संग्राम ॥

कवन मत्त हुह तत्त। मत्त मंत्री अरि ऐहं
मज्झिम जुद्ध विन मुद्ध। करे नह भेव सनेहं॥
बुल्लाइ अप्प भर अप्प सँग। चढि चल्यौ निसि अध्य सह॥
पत्तौ सुजाइ तिन ठाम तब। सुष्ष सयन सोमेस सह॥
छं० ॥ २७ ॥ रू० ॥ १४ ॥

पृथ्वीराज का पिता के पास पहुंच कर सब सेना को सोते हुए पाना और सोमेस का उससे न बोलना ॥

गाथा ॥ पत्तौ पहु ढिग तातं। दिष्यौ सोतष्य सव्व सेनायं॥
न बुल्यौ सोमेसं। प्रथिराजं मिष्टयं बैनं॥ छं० ॥ २८ ॥ रू० ॥ १५ ॥

उसका पिता को निद्रा में और शत्रु की सेना को देख भाल कर उत्तापित होना ॥

अरिल ॥ महा तेज तन जग्गिय बीरं। तात दिष्षि निद्रा घन श्रीरं॥
पहिलोइ अरि सेन सँपत्तिय। ज्यौं अरियं घन बीज पिवत्तिय॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १६ ॥

और उस का शत्रु की सेना पर झपटना ॥

दूहा ॥ सयन छंडि पति सयन सौं। झपट्यौ इन उन मान॥
लीनर तीतर देषि कै। झपट्यौ जानि सिचांन॥ छं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ १७ ॥

पृथ्वीराज और मुग्गलराय का युद्ध ॥

कवित्त ॥ जनु कि सिंघ बन गज्जि। झपटि करि करनि जुथ्य पर॥
जनु कि अंजनिय जात। पात बनु दिष्षि रूष्यबर॥
जनु कि भीम भीमंगा। दंत दंतीय उक्कारन॥

---

१४ पाठान्तर-सुन्या। पावक। करै। बुलाय। अप। आप संग। चल्यो। निशि। अधमह। पत्तो। ठांम सुष। सैंन। सोमेस जहां॥

१५ पाठान्तर-सो सब्ब सब्ब सेनायं। तय। सब। नह। बुल्यो। पृथीराजं॥

१६ पाठान्तर-बीर। दिषि। निंद्रा घट श्रीर। पहिलो। अरि। संपतिय संपत्तिय। षिवत्तिय॥

१७ पाठान्तर-सैंन छंडि पति सैंन सो। उनमांन। लीनर। जानि।

जनु कि गरुड़ गन्न गज्जि । वज्जि पंनग बहु पारन ॥
तिम सूर झपटि सोमेस सुअ । जनु अकास तारक तुटिय ॥
सम जोर रोर अरि उडुवन । सार मार सत्तुन जुटिय ॥
छं० ॥ ३१ ॥ रू० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ उर मुंगल गहि हृंद । हृंद देवन जनु पारस ॥
हर बल कर वल्ल कोर । गोल मंडिय भर भारस ॥
गहिर गुंग नीसांन । जांनु वद्दल गुर गज्जिय ॥
वदन वरन वैरप्प । हृंद्र धनुषह सम रज्जिय
छय नारि धारि आतस अनँत । सोर रोर अंमर उडिय ॥
जानें कि विरचि वारधि लहरि । महि म्रजाद वूडन कुटिय ॥
छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ १९ ॥

ऐसे पृथ्वीराज के अन्य सूर सुमल के योद्धाओं से लड़े ॥

गाथा ॥ इम रंजे रन रंगं ॥ सूरं नूरं अंगं अमितायं ॥
जगु * विरचे मद्दिष महिंद्रं ॥ वज्रं पात घाव अंगायं ॥
छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ २० ॥

कान्ह का मेवात्तियों से युद्ध ॥

कवित्त ॥ उत्तसंग दर थौर । ठौर रप्पन मेवातिय ॥
सीस नाद मुंगल्ल नरिंद * । कहर कुप्यौ घन घातिय ॥
इम सु कान्ह नरनाह । दाह दावानल जल्लिय ॥
हवक्क वक्क धरि धक्क । जानि मद्दना रँभ झल्लिय ॥
पम हंत मंत उरझे जनुकि । मेह बुंद सर कर कुटिय ॥
सरजाल हाल अनहद अवनि । तिमिर पसर रविकर मिटिय ॥
छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ २१ ॥

---

१८ पाठान्तर-कर । करिन । जुय । अंजनी । दिषि । हथ धर । गजि । वजि । तिम सु सूर सोमेस सुत्र । त्रुटिय । उडवन ॥

१९ पाठान्तर-महो । गहर । नीसांन । जांनु । रजिय । जांनै । मृयाद ॥

२० पाठान्तर-सूर । नूर । अंग । * अधिक पाठ है । महिद्रं ॥

२१ पाठान्तर-ठौर। ठौर । मेवातीय । नांद । मुंगल । * अधिक पाठ है । घातीय । जलिय । जानि । रंभ । झलिय ॥

कैमास का पठान बाजीदखां से जुद्ध ॥

कवित्त ॥ वाम अंग पठान । विरचि बाजीद † सुपंनिय ॥
उन उप्पर कैमास । हुकम प्रथीराज सुदिंनिय ॥
सीस नांए बल बाहु । लाहु लग्गिय घन रोसन ॥
तीर तुवक्क तरवारि । तच्छि निकरै उर ओरन ॥
अवरइ नद्द नीसान धुनि । लगी लाग माहू बजन ॥
रन सूर सूए तब्बल चक्क । गहक हक्क रज्जे रजन ॥
छं० ॥ ३५ ॥ रू० ॥ २२ ॥

कूरंभ से राम गूजर का युद्ध ॥

कवित्त ॥ दष्षिन द्दिसि कूरंभ । नांम नरेन निरद्दिय ॥
तिन पर गुज्जर राम । करन दस दूवस वद्दिय ॥
समर अमर परैं सूर । चंपि जन्न जांनि उच्चारिय ॥
लोए लहरि बुद्दि जाँचि । मुररि मरदांन मुच्चारिय ॥
अन भंग अंग तन तन तकहिँ । हकहिँ बकहिँ बज्जहिँ सखिय ॥
अनभूअ भूत भिरैं भूत भुव । समर श्रोन सलिता चखिय ॥
छं० ॥ ३६ ॥ रू० ॥ २३ ॥

इतने में पृथ्वीराज का रण के बीच अचानक जा पहुँचना और घोर युद्ध का होना ॥

छंद भुजंगी ॥ जयं जाय पत्तौ प्रथीराज जुद्धं । करी सब्ब सेना बिरुद्धं बिरुद्धं ॥

---

२२ पाठान्तर—वांम । पठांन । सुयं । नीय । प्रथीराज दनिय । नांद । बाई । लाई । तबक । तरवार । निकसै । उंरन । नीसांन । हक्क । रंजे ॥

† बाजीदखां नामक पठान मुद्गलराय का एक बड़ा लड़ाका सेनापति अर्थात् जनरल था और परदेशी सिपाही उसके विभाग में थे । यह वृत्त इस महाकाव्य में जो मुसलमानी भाषा के शब्द आते हैं उनके विषय की शंका मिटाने के लिये बड़ा उपयोगी है ॥

२३ पाठान्तर—दषिन । दिशि । नांम । नारि ननिवद्दिय । गुजर । रांम । दूबल । वटिय । परे । परे । जांनि । लोहरि । जांहि । मरदांव । मुच्चारीय । तक्कहिं । बकहि । हक्कहिं । भिरें । भुय । झलिय ॥

बजे ताल कालं महा मल्ल वीरं । दुहुं वाह सेना विरुद्धं सुधीरं ॥ छं० ॥३७॥
गही वाग गढ्ढी कढे लोह तत्ते । मनौं कारनं काम दुग्गा विरत्ते ॥
स्वयं सूर सूरं महो में पचारैं । लगैं लोह अंगं वकैं मार मारैं ॥ छं० ॥३८॥
उडै छिंछ स्रगं मनौं अग्गि ज्वाला । हलैं जानि पत्तं वसंतं तमाला ॥
झिनं केति पग्गं हिनंकेति ताजी । *भिलैं भूप भूपं महा वीरगाजी ॥ छं० ॥३९॥
छिनकैति पग्गं तुटैं सीस लल्लै । उठैं छिंछ ऊच्छं मनो दाव पल्लै ॥
लगैं गुर्ज सीसं दूसे टोप टुट्टैं । मनो दंग दाहं लगैं वंस फुट्टैं ॥ छं० ॥४०॥
दूसे मंच रुची लगे लाग पग्गे । प्रलै काल प्याल मनौं वीर जग्गे ॥

छं० ॥ ४१ ॥ रू० ॥ २४ ॥

मुद्गलराय की फौज का तितर बितर होना और उसका पकड़ा जाना ॥

कवित्त ॥ कहुँ तिमत्त धर धुकत । लुकत कहुँ सुभट घात कल ॥
ढुकत काल कँहु पच । कुकत कहुं सेन पाइ जल ॥
रुकत समर भट भीर । धुकत धर मद्द कल्क जनु ॥
सुकत कंठ श्रम समर । ढुकत कातर फौजन तनु ॥
इम* सोमेस राइ चहुवान सुभ्र । अरि समुंद जल वढ्ढयौ ॥
चढ्ढिय जिहाज जस जढ्ढि पल । मुंगल सहि गहि कढ्ढयौ ॥

छं० ॥ ४२ ॥ रू० ॥ २५ ॥

कवि का सोमेश्वर की सेना और घोड़े हाथी आदि की यज्ञादि अनेक उपमाओं के साथ प्रशंसा करना ॥

दूहा ॥ चमकत सार सनाह पर, हय गय नरभर लग्गि ॥
मनौं हच्छ परि झिंगिनिय, करत केलि निसि जग्गि छं० ॥४२॥ रू०॥२६॥

---

२४ पाठान्तर-दुहूं । वाह ॥ ३७ ॥ गढी । मनों । काम । दुगा । महोमे । महोमैं । पचारै । लगै । बकै । मारै ॥ ३८ ॥ छिंछि । अगं । स्रगं । मनों । ज़्वाल माला । सवंतंत माला । झनकैति । हिनंकेति । भिले । * सं० १६४७ की पुस्तक में नहीं हैं ॥ ३९ ॥ झिनकैति । तुटै । शीश । लल्ले । उठै । इच्छं । मनों । फल्ले । लगै । लगें । शीशं । टुटै । मनों । लगै । फुट्टै ॥ ४० ॥ मंत । पित्री । मानों । वीर ॥

२५ पाठान्तर-कहुं । तमंत । तमंत्त । कहुं । कहु । थात्त । टुकत । कहुं । कहु । सैंन । मद । ढुकत । तन । * अधिक पाठ है । राय । चहुवांन । चढिय । मूंगल्ल ॥

२६ पाठान्तर-निर । झिंगनां । निशि ॥

कवित्त ॥ जग्गि सूर सोमेस। सेन सज्यौ हयगय नर ॥
राका निसि जनु उदधि। चढैं हल्लोर चंद पर ॥
सुन्यौ श्रवन दूह बैन। लरहि प्रथिराज षलनदल ॥
पुच्छ चांपि जनु सिंह। दिष्षि प्रजल्यौ नयन झल ॥
दइ बंब दुतिय जनु गगन रव। कुटि अंदुन गज गुरि चलिय ॥
दीसंत मत्त छक्कैं नयन। मनौं प्रबत पंषह हलिय ॥ छं० ॥ ४४ रू०॥२७॥

दूहा ॥ ठनक घंट घुघघर धमक, धमक धरनि बर पाइ ॥
झमकत सुंड लपेट भट, भरत देत गिर राइ ॥ छं० ॥ ४५ ॥ रू० ॥ २८ ॥

दूहा ॥ पग संगर जंजीर जरि, कज्जल गिरवर अंग ॥
दिघ्घदंत बग घन बरन। झरत मदंग छदंग ॥
छं० ॥ ४६ ॥ रू० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ पब्बय कै पावस जलद, दल हाहन उठि कोर।
दिष्पावत दल बद्दलन, भर हर परत अघोर ॥
छं० ॥ ४७ ॥ रू० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ दंति पंति कज्जल बरन, दिष्षि ढलंमल ढाल ॥
करहरंत वैरष लषी, दल सोमेस भुआल ॥
छं० ॥ ४८ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ उठी कोर हय गय प्रबल, दिट्ठ दुअन कुटि पीर ॥
दिषि धनु धर हथनारि धरि, भरक्कि भरहरी भीर ॥
छं० ॥ ४९ ॥ रू० ॥ ३२ ॥

छंद विराज* ॥ कियं चित्त पंगे। घटं घट्ट भंगे ॥
उनंगे सुषग्गे। मनौं बीर जग्गे ॥ छं० ॥ ५० ॥

---

२७ पाठान्तरा–रन। चढै। सून्यौ। बैनं। पृथीराज। पुछ। दिषि। प्रज्जरै। दई। दहूय। अंद्रुन। छक्कै। छकैं। मनों। पंषकि ॥
२८ पाठान्तर–ठनक। घुघर। धमक्कि। पाय। राय ॥
२९ पाठान्तर–कजल। दिग्घ। दिघ। सदंग ॥
३० पाठान्तर–दिषावत। दिषावै। दल बल दलन ॥
३१ पाठान्तर–दंत पंत। दिषि। ठल मल। वैरषलकी ॥
३२ पाठान्तर–हय दल। देषि धनुष हथ नारि धरि। फरक्कि ॥
* इसी समय के रूपक २२ की टिप्पणी के साथ इस रूपक को भी ध्यान में लेना चाहिए ॥

देखै वीर नग्गे । वढैं चाल मग्गे ॥
डिगैं नाहि डिग्गे । मचा सोर भग्गे ॥ छं० ॥ ५१ ॥
परैंको अछग्गे । न वैरीन लग्गे ॥
तजै नाम पग्गे । ... ... छं० ॥ ५२ ॥ रू० ॥ ३३ ॥

गाथा ॥ जग्गेयं जुध वानं । कुंभे यंनं कंकालं कायं ॥
दंतं लुप्प करेयं । वाडंतं वीर सुभटायं ॥ छं० ॥ ५३ रू० ॥ ३४ ॥

रण में लरे और घायल कैसे पड़े दीखते थे और कौन कौन योद्धा किस किस से घायल हुए और मारे गए ॥

कवित्त ॥ दय हिंसहिँ गज चिकारि । भगर सम दिषि कुलाचल ॥
वलि पंषिनि वेताल । नंदि नंदिय भोलाचल ॥
गिद्धि सिद्धि किलकंत । ईस मुंडावलि संधय ॥
चक्रि कँमंध पर टुट्टि । चढी देवी दल रूंधय ॥
उपमान तास कवि चंद कहि । सुभत सनाह सुकालनिय ॥
जाने कि कृष्ण वृंदावनह । रास रमै निसि ग्वालिनिय ॥
छं० ॥ ५४ ॥ रू० ॥ ३५ ॥

कवित्त ॥ *जहँ वाजीद पठान । सघन पुरसांन षांन तहँ ।
हय कटि दुव तंडीर । उभय कम्मान तांनि सह ॥
उंच कहर कंधान । छोट गिरि दांन लंव भुअ ॥
रक्कत न्नांन मुष चष्षु । कंक अनसंक अवनि धुअ ॥

---

३३ पाठान्तर–इतर पुस्तकों में इस छंद का नाम रसावल वा रसावला लिखा है परन्तु हमारी सं० १६४७ की पुस्तक में शुद्ध नाम विराज है वह हमने प्रयोग में लिया है क्योंकि यहां पर उसका ही लक्षण मिलता है अर्थात् वह दो लगुगु का होता है और रसावल दो गुलगु का होता है ॥ घट । मनों । वढ़े । अग्गें । अगे । अग हिगें । नांहि । सोर वग्गे । फरेंके अछुगे । सगे । तजै । नांम ॥

३४ पाठान्तर–कुंभेयन कंकलं कादं । दंदं मुप । सुभटादं ॥

३५ पाठान्तर–हिंसहिं । हिंसहि । दिपि । पंपिन । गिद्दु । सिद्दु । संधिय । कंमंध । परि । तिहि उपमान । उपमांन । निकि ग्वालिनीय ॥

भरि बांह कांन निखि लोह मुठि। दिष्षि षवासति ओट करि ॥
ओडन समेत संनाह सस। सर सुविधि फुट्टिग निकरि ॥
छं० ॥ ५५ ॥ रू० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ धुक्कत धरनि षवास। कोपि कयमास काल कर ॥
वज्र घात बलिबंड। हनिग तरवारि टोप पर ॥
टोप टुट्टि सिर फुट्टि। सम सुसंनाह चीर हुअ ॥
बष्षर पष्षर तुट्टि। तुट्टि हय षंड परिय जुअ ॥
जय जया सद्द आयास हुअ। सुमन सघन उप्पर झरिग ॥
देष्षंत कहर करिबार बर। सेन सघन विड्डुरि डरिग ॥
छं० ॥ ५६ ॥ रू० ॥ ३७ ॥

जहँत रेन धर धरन। तहँत बड गुज्जर रामह ॥
तहँ मुगल रषन समर। संग घल्लिय सिर सामह ॥
तुरसबींध सिर टोप। फुट्टि षुप्परि रत वुट्टिय ॥
तहां उठिग हूक बीर। जानि जमरांन सुरुट्ठिय ॥
तरबारि तेज नारेन हनि। धर असंध तुट्टिग धरह ॥
अनभूत दृष्ट अवसान बढि। करहि देव बंदन बरह ॥
छं० ॥ ५७ ॥ रू० ॥ ३८ ॥

कवित्त ॥ जहां अंगद मरदांन। कन्ह तहां जांनि नाग भुअ ॥
मिले तक्कि तरवार। झारि उभ्भारि सीस दुअ ॥
मेल्लिय मांगद सीस। टोप कड्डिय सिर धारिय ॥
नर नांहै कटि कट्टि। अड्ड अड्डं करि डारिय ॥

---

३६ पाठान्तर–जहां। बांनीद पठांन। तहं। तहां। दुअ। चमु। भिरि। मिलि छोह। दिषि।

३७ पाठान्तर–केमास। बलिचंड। त्रुट्टि। बषर। पषर। त्रुट्टि। त्रुट्टि कैं षंड परिय जुअ। जे जया। हुय। दिष्षंत। बिंडुरि डरिग।

३८ पाठान्तर–जहांन। जहन। धरत। तहांत। तहत। गुजर। रांम। तहां। मुंगल। रष्यन। घत्तिय। सांमह। विधि। सेर। बुट्टिय। उठग। हूंक। जांनि। यमरांन। जमरांन। त्रुट्टिग। अवसांन ॥

घर गिरत मंत सा॒ह सरद् । चय पंखी अलिवर जरिय ।
जै जया सद्द सुरपुर भयौ । द्रुम सुकन्ह है थर परिय ॥
छं० ॥ ५८ ॥ रू० ॥ ३९ ॥

कवित्त ॥ कन्ह काटत है धरनि । करनि जिन तिन सारं सचि
सचै दुहथ तरवारि । छंछ कवि लप्पटाइ नचि ॥
उड्डनहि चथ पग न्यार । सीस चक्कारि घर धावहिं ॥
हंस हंस के मिलहि । माल अच्छरि के नावहिं ॥
अद्भुन भयानक भगर सम । लगर लाग लग्गिय रनच ॥
हंकार चक्क काल कूच मचि । जयं सबद मच्चिय चनच ॥
छं० ॥ ५९ ॥ रू० ॥ ४० ॥

जयजयकार का उपमाओं के सहित वर्णन ॥

कवित्त ॥ सुषनि बढ्ढि हंकारि ।नलव टंकार लाग लगि ॥
बजि भेरी भंकार । धार भंकार पाग पगि ॥
छुट्टि सीर संकार । लुट्टि भंडार घीर मुनि ॥
धुकहि धज्ज भंडार । झुकहि संडार सार धुनि ॥
अचरिज्ज अवनि अंमर चरनि । बरनि कवि कहा सब सकाय ॥
समरंग दुदल पिष्पिय सुभट । जकाय कोय कुल्कुय चकाय ॥
छं० ॥ ६० ॥ रू० ॥ ४१ ॥

छंद तोटक* ॥ भमरावलि छंदय चंद कवं । पढि पिंगल अच्छिर जे त्रिमवं ॥
बजई झनकार सुअस्सि घनं । षच तुंमर रिस्सिक्रय नाद धुनं ॥
छं० ॥ ६१ ॥

---

३९ पठान्तर–जहां । मरदांन । तहां नर नाह कंन्हक । कमकि बाहि पग भट्ट । भारि उभारि सीस दुअ । मेल्हिय । मंगद । शीश । धारीय । नर नांहे असि कट्टि । यद्दु अट्टुं करि डारीय । जरिय ॥

४० पाठान्तर–मार मचि । उड्डहि । चक्कहि । अच्छरि । भयांनक । लगिय । जय ॥

४१ पाठान्तर–बढि । धंज ॥

झननं कढि षग्ग कला दुसरी। प्रगटे जनु विज्ज घरं पसरी॥
उपमा निसरी असि बैठि चयं। फिर नागनि नाग मनौं षयं॥
छं० ॥ ६२ ॥

जु करै दल दोइय तीर सरं। वहै जनु टिड्डिय सेन परं॥
दुतिई उपमा कवि यों मनयी। किय अंगन चंद निसा जगयी॥
छं० ॥ ६३ ॥

जु चहं चह चंबक बज्जि घनं। कि नचै उपमा अग ईस जनं॥
जु फिरै गज गुंजत रोस चढं। षह बद्दल जानि किवाड़ बढं॥
छं० ॥ ६४ ॥

किसु रोपिय झुंडय सूर रनं। कि सुभै सुवसंत षजूरि जनं॥
जुबरै बरनो घन अच्छ वरं। छुलरै हिय चांपि विपिठ्ठ करं॥
छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

जु बहै सिर उप्पर राम सरं। सु मनौं अरिविंदन भौंर भरं॥
गज सीस सिरीन जु छिंछ परी। कच अंगन बूंद बधू बिथुरी॥
छं० ६६ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

छुटि चक्क लगे गज कुंभ जिसे। मनु बद्दल पै सत चंद जिसे॥
दुअ हथ्थ गुरु जन सीस जरो। दधि भाजन ग्वालिन कोरि हरी॥
छं० ॥ ६७ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

जु कियौ दल दोडन दुंद जुधं। मिलअंत सुरंषिन दिष्षि उधं॥
षिसयौ दल मुंगल मार मरं। बढिई प्रथिराज नरिंद कुरं॥
छं० ॥ ६८ ॥ रू० ॥ ४२ ॥

---

४२ पाठान्तर- * इस छंद का नाम इतर पुस्तकों में भमरावली लिखा है सो अशुद्ध है किन्तु वह तोटक वा त्रोटक नामक है-इनमें इतना ही अंतर है कि तोटक चार ललगु का होता है और भमरावली पांच का॥ अछिर। बजी। रिझिय ॥ ६१ ॥ फिरै। नागसि। मनों॥ ६२॥ तीरन मार। वहै। अपार॥ दुती उपमा कवि यों मन लगि। कि अंगन चंद निसा महि जगि ॥ ६३ ॥ त्रहं त्रंहं। चढंत। जांनि। बढंत॥ ६४॥ कि रोपिय। अछ ॥ ६५ ॥ उपर। मनो॥ ६६॥ मनों। हथ। गुरजन ॥ ६७ ॥ सुजुद्ध। मिलंत्त। रंषिनि। दिष्षिय। उद्ध। षिस्यो। मरोर। बढी। नरिंदह। कोर ॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज की विजय ॥

दूहा ॥ भई जीत चोसेस तुअ, लियौ मुगल गज मेलि।
खेंचि येन रुप दिष्ष लहु, वीर वरंनिय केलि ॥ छं० ॥ ६९ ॥ रू० ॥ ४३ ॥
रन मुक्किप क्रुद्धिय नजिय, घायल बीन उटाइ ॥
भये सूभट जे अंत तन, दाघ दिष्घ नन ताई ॥ छं० ॥ ७० ॥ रू० ४४ ॥
पुच्छ डेरा नौवति निहसि, पंच सवद दरवार ॥
जिन भट लग्गे सस्त्र तन, तिन तन कीनिय सार ॥ छं० ॥ ७१ ॥ रू० ४५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके सेवाती मुगल कथा नाम अष्टम प्रस्ताव: ॥ ८ ॥

---

४३ पाठान्तर-जीति । दिघ ॥
४४ पाठान्तर-दाघ दिघ ॥
४५ पाठान्तर-निहसि । कीनीय ॥

अथ हुसेन कथा लिख्यते ॥

(नवां समय)

संभरिनरेश (पृथ्वीराज) और ग़ज़नी के शाह (शाहबुद्दीन) से कैसे बैर हुआ इसका वर्णन ॥

दूहा ॥ संभरि वै चहुआंन कै, अरु गज्जन वै साह ॥
कहौं आदि किम वैर हुअ, अति उतकंठ कथाह ॥

छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥*

शहाबुद्दीन के भाई मीर हुसेन के गुणों और उसकी वीरता की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥ बंधव साहि सहाब । मीर हुस्सेन वान भर ॥
निज्ज वान सु प्रमान । वान नीसान बधै सुर ॥
गान तान सुज्जान । वाहु अज्जान वान वर ॥
मेव राज परवान । उच्च जस थान जुभ्भ भर ॥
उद्दार चित्त दातार अति । तेग एक बंदै विसव ॥
संकांत साहि साहाव तिन । तेज अजै जयमंत अब ॥

छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

---

१ पाठान्तर–चहुआंन । गजन । साहि ॥

* हमारे पास की सं० १६४७ वाली पुस्तक में इस प्रथम रूपक के नीचे तो इसमें लिखा दूसरा रूपक ही लिखा हुआ है परंतु उसके किनारे पर यह दोहा और लिखा हुआ है सो हम को क्षेपक दीखता है–दूहा ॥ आनंदिय गंधर्व तब, अहो सुनहि द्रिग जेन । अति विथार कथन कथा, विबर कहै बर बैन ॥

२ पाठान्तर–साहाब । हुसेन । वान । निज । वांन । प्रमांन । बांन नीसांन बंधे । गांन । तांन । तीन । सुज्जांन । सुज्जांन । आज्जांन । वांन । परमांन । परवांन । उंच । थांन । जुभ्भ । उदार । संकंतं । अजे ॥

शहाबुद्दीन की पातुर चित्ररेषा की प्रशंसा, शहाबुद्दीन का उस पर प्रेम, मीर हुसैन का भी उस पर आसक्त होना और चित्ररेषा का भी मीर को चाहना ॥

कवित्त ॥ दृष्षि बधु आचार । मीर उमराव जंपि जस ॥
एक पाच साहाब । चित्ररेषा सु नाम तस ॥
रूप रंग रति अंग । गान परमान विचष्षन ॥
बीन जान बाजान । आनि बत्तीसह लच्छन ॥
दस पंच बरष वाचा सुबच । सुप्रसाद साहाब अति ॥
आसिक्क तास हुस्सेन हुअ । प्रीति परसपर प्रान गति ॥
छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

शाह का यह समाचार सुनकर क्रोध करना ॥

कवित्त ॥ एक सुदिन सुविहांन । साह हुस्सेन सुबुल्लिग ॥
वे काफ़र आतस्स उतंग । दह दिसि नह डुल्लिग ॥
पैसंगी पासंग । लष्ष लष्षां नलवाही ॥
षाईं सौं संग्राम । दक्कि हैवर गुरदाही ॥
गद्दन गुराव मद्दि मद्दि मषां । षांबवास अष्षिय घरह ॥
ष्मन दह्ल नाल लभ्भय रवन । करौं तुच्छ तुक्की बरह ॥
छं० ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

हुसैन का शाह की बात न मानना और शाह का आज्ञा देना कि या तो मेरा राज्य छोड़ दो नहीं मारे जाओगे ॥

दूहा ॥ सुनिअ बैन साहाब तब । प्रीत न छंडी बाम ॥
कोपि कह्यौ सुरतान तब । कै हनौ कि छंडौ ग्रांम ॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

---

३ पाठान्तर-दृषि । बंध । स नांम । अति अंग । गांन । परमान । विचत्तन । जांन । वाजांन । आनि । लछन । लतन । आसिक । हुसेन । प्रांन ॥

४ पाठान्तर-सविन । हुसेन । आतस । उतंग । पासंगं । लष । लषां । सांई । सो । गद्द । अनहल । लभ्भेय । लभय । तुभीय ॥

५ पाठान्तर-सुनिग । छंड़िय । वांम । सुरतान । क । यांम ॥

मीर हुसेन का देश छोड़ कर परिवार आदि के साथ नागौर की ओर आना ॥

कवित्त ॥ सुनिय वत्त हुस्सेन । ह्वेन अप्पन साधारिय ॥
छंडि नयर निस्संक । संक मन साह नसारिय ॥
निसा जाम इक आदि । लई सो पात्र परम गुन ॥
तसनि पुत्र परिवार । सज्जि सब साज सु अप्पन ॥
परिगह सुअप्प अग्गैं करिय । पांन पांन वंधी सिलह ॥
संचल्यौ नैर नागौर हुह । तजिय देस निज गंठ ग्रह ॥
छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

मीर हुसेन का पृथ्वीराज के यहां आना ॥

दूहा ॥ लै परिगह हुस्सेन गय । दिसि प्रथिराज नरिंद ॥
संभरि वै संभारि कैं । मनु आयौ अहदंद ॥
छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

मीर हुसेन को आदर के साथ पृथ्वीराज का बुलाना और मीर का आकर सलाम करना ॥

कवित्त ॥ पातिसाहि तहिन * नरिंद । साहि पीरोज प्रमन्नौ ॥
घर घर साहि घरंन । छित्ति नीसान दिवन्नौ ॥
पर पठान उंचीगु । मान अगिवान अगन्नौ ॥
तिन में रष्यौ साहि । आन गज्जन धर थन्नौ ॥
लभ्भै सुमीर जंमी जहर । दुनियां दिल लगि दुअन थां ॥
हुस्सेन मीर सल्लाम करि । गौ चहुआनह पास थां ॥
छं० ॥ ८ ॥ रू० ॥ ८ ॥

---

६ पाठान्तर—हुसेन । छंडिय । निसंक । सारीय । जांम । सादिल्लीय पात्र परम गुन । सथि । परगह । बंधिय ॥

७ पाठान्तर—हुसेन । प्रथीराज । मनो ॥

८ पाठान्तर—पातसाहि । * अधिक पाठ है । नीसांन । पठांन । गुमांन । मांन । अंगानो । अगानो । मैं । रष्षे । थांनो । लभे । जु । दुनी । हुसेन सलांम ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलना और मीर हुसैन का सुन्दर दास को पृथ्वीराज के पास भेजना ॥

कवित्त ॥ पारधि पशु प्रथिराज। रमै षट्टू पुर पासह ॥
बहिल चीस बिचक्क। सषिष रेसम धर रासह।
सो कुरंग फंदेल। डोरि वह्नु बंधि बिनानिय ॥
जाम एक दिन आदि। मध्य षेलै मृगयानिय ॥
आयौ बसाहि हुस्सेन तहँ। सुन्यौ राज मृगया समय।
बुल्लाय दास सुंदर षिचिय। पठ्यौ प्रत्ति चहुआन तय ॥
छं० ॥ ९ ॥ रू० ॥ ९ ॥

सुन्दर छाया का स्थान देख कर मीर का डेरा डालना ॥

दूहा ॥ उत्तम ठाम सु छांह जल, करि मुकाम षलवीर ॥
षुल्लि डेरा बिधि बिधि बरन, तहां बयट्ठौ मीर ॥
छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ १० ॥

हरम (स्त्रियों) का डेरा पीछे की ओर डाला।

दूहा ॥ डेरा हरम सुपिट्ठ रषि, चिहु पष्षां बर मीर ॥
पासवांन कुल सील सम, पास रष्षि वर नीर ॥
छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ११ ॥

सुन्दर दास का पृथ्वीराज के पास जाना, पृथ्वीराज का मीर का कुशल समाचार पूछना और उसका सब हाल कहना ॥

दूहा ॥ सुंदर दास सुपास गय, जहां राज प्रथिराज ॥
मिल्लिय बिबिधि पुच्छै कुसल, कहै मीर सब साज ॥
छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १२ ॥

---

९ पाठान्तर–पारिधिरा। प्रथीराज। षटूपुर। तीस। फंद्रैत। त्रिनानीय। जांम मधि हुसेन। तहां। बुलाय। सुंदरि। षिच्चीय। चहुआंन। रय ॥
१० पाठान्तर–उतिम। ठांम। मुकांम। बर वीर। बयठौ ॥
११ पाठान्तर–पिठि। चिहुं। पषां। पासवांन। शील। रषि ॥
१२ पाठान्तर–यु पास। राजन। पूछै। पुछौ ॥

मंत्री, कैमास, चन्द, पुंडीर आदि को बुलाकर पृथ्वीराज का पूछना कि क्या करें क्योंकि दोनों तरह विपत्ति है एक शाह का कोप दूसरे शरण आए को न रखना धर्म विरुद्ध है॥

दूहा॥ बोलि मंचि कैमास वर, बोलि चंद पुंडीर॥
राव पजून प्रसंग नर, गोयँद १३ गुन नीर॥
छं०॥ १३॥ रू०॥ १३॥

दूहा॥ बेछ सुप देषे न न्टपति, विपति परी दुहु क्रंम॥
इक सरना इक रप्पन, इक धर रप्पन भ्रंम॥
छं०॥ १४॥ रू०॥ १४॥

चन्द का सलाह देना कि जैसे शरणागत होने पर विष्णु भगवान ने मत्स्य रूप धर कर पृथ्वी को अपनी सींग पर रक्खा था वैसे ही आप भी कीजिए॥

गाथा॥ मनसा धारि विरंचं। दच्छिन पग अंगुरी नपयं॥
संभू मंन नरिंदं। सत जुगं आदि कीन पैदासं॥
छं०॥ १५॥ रू०॥ १५॥*

कवित्त॥ संभू मन वरदान। लियौ तप जोर ब्रह्म पचि॥
सरन रष्यि वसुमती। होत कलपंत काल मचि॥
नारद धरत बताइ। मच्छ रूपं जगदीसं॥
दस हजार जोजनं। शृंग रचि ऊरध सीसं॥

---

१३ पाठान्तर-मंत्र। पुंरीर। रा पजूंन। गोइंद॥

१४ पाठान्तर-यक। रषन॥

१५ पाठान्तर-* यह रूपक और इसके आगे वाले १६ और १७ रूपक संवत १६४७ की प्राचीन पुस्तक में नहीं हैं किन्तु इतर आधुनिक पुस्तकों में हैं॥

१६ पाठान्तर-रषि। मछ। श्रग॥

करि सत्त नाव निद्धि पर धरे। अनक्कंपित जिम गैन धुअ ॥
ऐसेक्क चंद कहि पीय सम। गरल्ल तंन न्रप अग्ग हुअ ॥
छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ १६ ॥ *

जैसे शिवजी गले में विष धारण किए हैं वैसे ही मीर को आप भी रखिए यह चन्द ने कहा ॥

दूहा ॥ संक्कर गर विष कंद जिम। बडवा अगनि समंद ॥
तै रष्षहु चहुआंन तिम। षां हुसेन कहि चंद ॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ १७ ॥*

सुन्दरदास से पूछना कि सब स्त्रियां तो सुख से हैं और शाह से झगड़ा होने की बात क्या सच है ?

दूहा ॥ मिलिय सु सुंदर दास तहँ। पुच्छिय विधि विधिवत्त ॥
कहौ सुषी चिय सब विवर। विरस साहि सौं सत्त ॥ छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ १८ ॥

सुन्दरदास का कहना कि हूर की ऐसी एक पातुर शहाबुद्दीन के पास थी उसको लेकर हुसैन यहां चौहान की शरण में आया है ॥

दूहा ॥ पात्र एक्क सावाब संग। हूर नूर गुन गान।
लै आयौ हुस्सेन दूत। सरन तक्कि चहुआंन ॥
छं० ॥ १९ ॥ रू० ॥ १९ ॥

चन्द का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना कि जैसे मोरध्वज के यहां अर्जुन ब्राह्मण बन कर शरण गया, भगवान नें सिंह बन कर मांस मांगा, शरणागता द्रौपदी का चीर बढ़ाया, वैसे ही तुमने शरणागत को रखकर क्षत्रिय धर्म की रक्षा की तुम्हारे माता पिता धन्य हैं ॥

---

१७ पाठान्तर—ते। रष्षौ। चहुआंन ॥
१८ पाठान्तर—तहां। पुछिय। सुषि। त्रीय। विसर। सों ॥
१९ पाठान्तर—संग। गांन। हुसेन तब। तकि। चहुआंन ॥

कवित्त ॥ सोरठान कै लरन । गयौ दुज दोइ सु अर्जुन ॥
सिंह रूप धरि कान्ह । संख संग्यौ करि गर्जन ॥
दैन चीर अरधंग । न्रपति सिर कर वन धार्यौ ॥
देषि महा सतवंत । प्रगट गोविंद उचार्यौ ॥
धनि धंनि मात पित धंनि तुम्ह । सरनागत भ्रंम तैं रषिय ॥
प्रिथी कहंत कविचंद सौं । संभरि वै निद्धि सम लषिय ॥ छं० ॥२०॥ रू० ॥२०॥

शाहहुसैन का पृथ्वीराज से मिलना, पृथ्वीराज का आदर देना ॥

दूहा ॥ गयो राज सामंत सम । मिल्लिग साह हूसैन ॥
आदर न्रप किन्नौ अदब । विवह प्रसंनिय वैनं ॥
छं० ॥ २१ ॥ रू० ॥ २१ ॥

हुसैन को दक्षिण की ओर नागौर की जागीर देना ।

दूहा ॥ लिये सथ्थ प्रथिराज पहुं । गयौ सुपुर नागौर ॥
धरमायन कायथ†षवल । दिसि दष्षिन दिय ठौर ॥
छं० ॥ २२ ॥ रू० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का हुसैन को घोड़े हाथी आदि देना और दोनों का परस्पर प्रेम बढ़ना ॥

दूहा ॥ भोजन भष्षे विविध वर, बहु आदर विधि कीन ।
मान महातम रष्षि रज, राज उभय हय दीन ॥ छं० ॥ २३ ॥ रू० ॥ २३ ॥
दूहा ॥ धरिय डोरि हुस्सेन सिर, है बंधिय चैसाल ।

---

२० पाठान्तर-देन । धंनि धंनि । ध्रंम । सों ॥
* यह रूपक हमारी सं· १६४७ वाली प्राचीन पुस्तक में नहीं है पर आधुनिक पुस्तकों में है ॥
२१ पाठान्तर-नृप । प्रसंनोय ॥
२२ पाठान्तर-सथ । प्रथीराज । पहुं । ध्रंमायन कायथ । दक्खिन । दषन । दै ॥
† धर्मायन कायथ=पृथ्वीराज का दरबार मुंशी था । उसका काम है कि जो जो दरबार में आवें उनको उनकी नियत की हुई ठौर पर बैठावे । ऐसा बरताव अभी तक राजपुताने में प्रचलित है ॥
२३ पाठान्तर-भष । मांन । रषि ॥ उभै ॥

अप्प सु चिन्हिय अवर दिन, रज पठ्वै रसाल ॥ छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥२४॥

कवित्त ॥ तरकस पंच गिरंम। तीन प्रति षगत तीन सच ॥
षुरासान कंमान। पंच परमान मान जच ॥
गज सु एक सिंघ लीय। सेत तन मद रत्ति वच ॥
गुंजत मधुप कपोल। गज्ज भज्जै प्रेमल सच ॥
चय पंच साजि साकति सुनग। ऐराकी कुल उच्च जिहि ॥
अंमोल वज्र इक लाल दोय। रिंझ समप्पिय राज सहि ॥ छं० ॥२५॥ ॥२५॥

दूहा ॥ राजन रष्षिय सब्ब इच, प्रनवेज प्रति मंत।
उभै परसपर गंठि परि, संचिय पेम सुमंत ॥ छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ २६ ॥

शहाबुद्दीन का चार दूत अजमेर भेजना ॥

दूहा ॥ च्यारि दूत अजमेर पुर, थिर मुक्केसु विहान।
आषेटक बन देषि कै, तक्कि गए चहुआन ॥

पृथ्वीराज का हुसैन को कैंथल, हासी, हिसार का पर्गना देना और शिकार में साथ रखना, यह सब समाचार दूतों का शहाबुद्दीन से कहना ॥

कवित्त ॥ आषेटक चहुआंन। पास हुस्सेन संपत्तौ ॥
बार आइ चहुआंन। भाइ घन नाहि दिषत्तौ ॥
नीति राव कुटवाल। तास अच राज सु अप्पिय ॥
*वर कैथल चांपि हिंसार। राजपट्टो दै थप्पिय ॥
इह चरित देषि सब दूत नव। जाइ संपते साहि दर ॥
चरचर चरित जुग्गिनी पुरह। कहिय बत्त सें मुष्षं धर ॥ छं० ॥२८॥ रू०॥२८

२४ पाठान्तर–धरी। हुसेन। चीन्हें। पठवे ॥

२५ पाठान्तर–तीन। षतंग। षुरासांन। कंमांन। पच परमांन मांन जिहि। सिंघलीय। मद रति। गज। भजै। परिमल। है। उंच जिहि। दुइ। रींज ॥

२६ पाठान्तर–रषिय। घन।

२७ परठान्तर–थिह। मुके। मुक्के। विहान। चहुआंन ॥

२८ पाठान्तर–चहुआंन। हुसेन। संपत्तो। आय। भाइ। *दिषंतो। नीतिराज। कुटवार। * अधिक पाठ है ॥ कैंथल। हांसी। हिंसार। पटो। थपीय। जाय। साहिवर। चवर। चरित। जुगिनी। मुष ॥

शहाबुद्दीन का क्रोध करना और अरब खां को पृथ्वीराज के पास भेजना कि भला चाहो तो हुसैन को निकाल दो ॥

छंद पद्धरी ॥ संभरिय वत्त साहाव दीन । उच्चरिय वैन अति कोप कीन ॥
मुक्कलौं दूत चहुआंन पास । कढ्ढौ हुसैन जो जीव आस ॥ छं० २९ ॥
बोलयौ षांन तातार तव्व ॥ संजाव षांन उमराव सव्व ॥
पुच्छी सु वत्त किय दूत सार । थप्पी सु वत्त परसान वार ॥ छं॰ ॥ ३० ॥
आरब्ब सेष लीनौ बुलाइ । वैब्रद्ध ब्रद्ध वुद्धी सुताइ ॥
बंछै सुपेम सक लेहिं साहि । लज्जी अनंत आदव्व थाहि ॥ छं० ॥ ३१ ॥
उचर्‍यौ वैन साहाव भास । आरब्ब जाहु चहुआंन पास ॥

अरबखाँ से कहना कि पहिले हुसैन के पास जाना जो वह पातुर को दे दे तो हम क्षमा कर देंगे, जो वह गर्व करके न माने तो पृथ्वीराज के पास जाकर हमारा पत्र देकर समझाना ॥

अप्पै जु पात्र हुस्सेन जाम । लै आउ सम्म हुस्सेन ताम ॥ छं० ॥ ३२ ॥
मुक्कौं सुगुनह कीनौ पसाव । मैं दीन पच्छ करि षिमा दाव ॥
छंडै न पात्र हुस्सेन ग्रब्ब । चहुआंन मिलै सामंत सब्ब ॥ ३३ ॥
जंपियै वयन चहुआंन साइ । कढ्ढौ हुसेन नागौर थाइ ॥
अजीज षांव तुम सच्च उच्च । लिष्यौ सु पच हम परम रुच्च ॥ ३४ ॥
कढ्ढौ हुसेन तुम देस अंत । बंछौ जो पेम मानौं सुमंत ॥
रष्यो हुसेन जो असु परेस । चतुरंग सेन सज्जौं विसेस ॥ छं० ॥ ३५ ॥

२९ पाठान्तर—उचरीय । मुकलें । कढौ । हुसेन । नैां ॥ २९ ॥ ततार । तव । सव । पुछी । कीय । पुरसांन ॥ ३० ॥ आरब शेप । वृद्ध वृद्ध । वुद्धीय । बछे । पिम्म । लेहिं । बज्जी । आदव । थाहें ॥ ३१ ॥ उचर्‍यौ । वैन । आरब । हुसेन । जांम । संम्म । हुसेन । तांम ॥ ३२ ॥ मुक्यो । मैं । एछ । हुसेन । यब । सव । ग्रब ॥ ३३ ॥ बैन । सांइ । घाइ । अजीजबांन । संच उच । लिपे । रुच ॥ ३४ ॥ बढो । जौ । यु । मांनों । रपौ । जैां । तौ चतुरंग । सजो ॥ ३५ ॥ करौ । ॥ ३६ ॥ उचार । गुंमांन । कहै । मांनों । जाहु । शीघ्र । वांम । करौं । निग्रांम ॥ ३७ ॥ सथ । असहनन । नरयान । रथ । आरब । दोय । पप ॥ ३८ ॥

भंजौं सुनैर नागौर देस। जीवंत बंदि बंधौं नरेस॥
सामंत सूर सब करौं अंत। बंधौ सुबंध सो तरुनि कंत॥ छं०॥ ३६॥
उच्चरि गुमान तन बत्त थूल। संषेप कहैं मानौं स थूल॥
तुम जाउ सिघ्र नागौर वाम। मति करौ एक षिन घर विश्राम॥ ३७॥

तीन सौ सवार और रथ देकर अरब ख़ां को रवाना करना॥

सै तीन दीन असवार सथ्थ। आरुहन दीन नरयान रथ्थ॥

एक महिने में अरब ख़ां का नागौर पहुंचना॥

संचस्यो षेष आरब्ब राह। दो पष्ष पत्त नागौर थाह॥
छं०॥ ३८॥ रू०॥ २९॥

अरब ख़ां का हुसैन से मिलकर समझाना, हुसैन का न मानना॥

दूहा॥ गय आरब नागौर घर। मिल्यौ साह हूसेन॥
भोजन भष्ष सुभाव किय। विवध प्रसन्निय बैंन॥
छं०॥ ३९॥ रू०॥ ३०॥

दूहा॥ कही बत्त हूसेन सम। जो कहि साह सहाव॥
नह मंनिय सोमंत हिय। दिय आरब्ब जवाब॥
छं०॥ ४०॥ रू०॥ ३१॥

अरब ख़ां का पृथ्वीराज के पास जाना॥

दूहा॥ गयो षेष आरब्ब दर। लही षवर प्रथिराज॥
बोलि मझ्झ संडिय महल। सामंतन सब साज॥
छं०॥ ४१॥ रू०॥ ३२॥

पृथ्वीराज का सुलतान की कुशल पूछना॥

दूहा॥ मंझ महल आरब्ब गय। मिलि मंनिय सनमान॥
दै आसन पुच्छिय कुसल। चाहुआंन सुलतान॥ छं०॥ ४२॥ रू०॥ ३३॥

---

३० पाठान्तर-हुसेन। भष। विवह। प्रसंन्ने। बैंन॥
३१ पाठान्तर-हुसेन। साहाब। नंह। आरब॥
३२ पाठान्तर-आरब। षबरि। पृथीराज। मझ। सांमंतां। सम राज॥
३३ पाठान्तर-आरब। सनमांन। पुछिय। कुशल। चाहुवांन। सुरतान॥

अरब खां का कहना कि हुसैन खां को निकाल देने के लिये सुलतान ने कहा है ॥

छंद पद्धरी ॥ उचस्यौ वैन आरब्ब खेप। सलाम बहुत पनि एक षप ॥
कहौ हुसेन तुम देस अंत। साहाव साहि वंछौ सुसंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
जुगमीत अध्धि उवरै न आदि। इस ताउ भाउ बहु वैन साहि ॥
जंपे सु वैन जे कहे साहि। कहौ न बत्त गंभीर आहि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शहाबुद्दीन का संदेसा सुनकर पृथ्वीराज का मुख लाल हो गया, भौंहैं चढ़ गईं ॥

संभलिय वत्त प्रथिराज संत। भ्रिकुटी कहर द्रिग रत्त जंत ॥
आरत्त मुष्प स्त्रुन श्रोन बुंद। कलमलिय कोप रोमंच जिंद ॥ छं० ॥ ४५ ॥

कैमास ने डपट कर कहा कि आर्य लोगों का धर्म सुलतान नहीं जानता इससे ऐसा कहता है, हुसैन पृथ्वीराज के शरणागत है, क्षत्री का धर्म उसे छोड़ने का नहीं है ॥

उचस्यौ कोपि कैमास वानि। अनारनि आर्य सिंच्यौ सुजानि ॥
आरब्ब वोल बोल्यौ विहर। सुरतान जानि जंप्यौ गहर ॥ छं० ॥ ४६ ॥
प्रनि वुड्ढ लहौ प्रथिराज नूर। अतुलित्त जुड्ड सामंत सूर ॥
हुस्सेन आइ प्रथिराज थान। जोधांन भ्रंम पचीय आन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

कन्ह चौहान, सूरसिंह, गोयंदराज, चन्द, पुंडीर आदि का भी यही कहना और सुलतान से लड़ने को हम प्रस्तुत हैं यह कहना ॥

जंपै सुवैन चहुआंन कन्ह। द्रिग पानि रत्त रोमंच तंन ॥
रज भ्रंम विषम वुझ्झै न साह। अनि राह जेम जंपै विराह ॥ छं० ॥४८॥
गज्जैं न लज्ज कोपैं म्रगिंद्र। उतक्रिष्ट सूर सिर सहि न निंद्र ॥
गुरु तज्जि जंप्पि गोइंद राज। लग वैन गीर गरु वत्त साज ॥ छं० ॥४९॥
संज्वाल तेज सम तेज बान। निरभै सुतासु चंपै पयान ॥
उचस्यौ चंद पुंडीर कोप। आदीत भाल रस दून ओप ॥ छं० ॥ ५० ॥

गज्जनै कीन कौतुक सवाब। गह अत्त वत्त जंपै कवाब ॥
हुस्सैन आइ प्रथिराज थान। सरनै सुकीन कढ्ढै नियान ॥ छं० ॥ ५१ ॥
दल सज्जि सीम चंपै सुसाहि। दल भंजि ग्रहै प्रथिराज ताहि ॥

अरब ख़ां का अपना निरादर होता देख उठ आना और ग़ज़नी को कूच करना तथा शहाबुद्दीन से सब समाचार कहना ॥

मानी न खेष आरब्ब वत्त। सामंत सूर देषे विरत्त ॥ छं० ॥ ५२ ॥
आदरह मंद तजि उठ्यौ खेष। अंधीर वदन द्रिग वहि तेष ॥
पुच्छीय जुगति नृप महल जानि। उठि गर्व दुष्ष मन हीन मानि ॥ छं० ॥ ५३ ॥
चढि चल्यौ खेष रह साह देस। गज्जनैं गयौ मन मानि रेस ॥
गय महल साहि मिलि कहिय वत्त। सिर धूनि रीस करि नैन रत्त ॥ छं० ॥ ५४ ॥
उठि गयौ साह बद्दल महल्ल। आसंन साजि बैठो सथल्ल ॥

छं० ॥ ५५ ॥ रू० ॥ ३४ ।

दर्बार करके शहाबुद्दिन का तातार ख़ां, अरब ख़ां, मीर जमाल, कमाल, खुरासा ख़ां, रहन महन ख़ां, रुस्तम ख़ां, हाजी ख़ां, ग़ाज़ी ख़ां, जम्मन ख़ां, ग़ज़नी ख़ां, मुहब्बत ख़ां, मीर ख़ां, आदि सरदारों को बुला कर सलाह करना ॥

कवित्त ॥ सजि आसन साहाब। साह काजी मत बैठो ॥
बोलि मझ्झ तत्तार। बोलि आरब्ब दिन जेठौ ॥

---

३४ पाठान्तर—उचस्यौ। वैंन। आरब। शेष। सलाम ॥ ४३ ॥ युगमीत। अथि। उवरें। वैंन। जंपे। कहै। भाह। नाह। ॥ ४४ ॥ तथ्य। तथ। प्रथीराज। भृकटी। आरक्त। मुष्य। श्रुत्ति। कलि ॥ ४५ ॥ उचस्यौ। बांनि। आरन्य। संच्यौ। जांन। आरब। सुरतांन। जांनि ॥ ४६ ॥ प्रथीराज। अतुलित। युद्ध। हुसेन। थांन। जोधांन। षित्रीय। आंन ॥ ४७ ॥ जंपै। चहुआंन। बुझै ॥ ४८ ॥ गज़ें। कोपें। मृंगेंद्र। मृगेंद्र। उतक्कष्ट। नरिंद्र। तजि। जपि। गोयंद। बैंन ॥ ४९ ॥ तेजवांन। निरभैं। सतास। पयांन। उचस्यौ। ऊप ॥ ५० ॥ गजनै। केतक। जंपे। हुसेन। प्रथीराज। थांन। कांन। नियांन ॥ ५१ ॥ सजि। सीस। प्रथीराज। मांनी। आरब। शेष। विरत्त। शेष। पुछिय। न्रप। जांनि। दुष। मांनि ॥ ५३ ॥ गजनैं। मांनि। धुनि। नैंन ॥ ५४ ॥ महल। सुथल ॥ ५५ ॥

मीर जमांम कमांम। षांन पुरसांन न्यान वर॥
षांन रहंन महंनं। षांन रुस्तंम सद्दा भर॥
हाजीय षांन गाजीय षां। षांन जमन वंधव सुचिय॥
गजनीय षांन महुवत्ति षां। मीर षांन सव वोलि लिय॥ छं०॥ ५६॥ रू०॥३५॥

तातार ख़ां का कहना कि तुरन्त पृथ्वीराज पर चढ़ाई करनी चाहिए॥

कवित्त॥ कहै साहि साहाव। अहो तत्तार षांन सुनि॥
जिन जुमत्ति उपज्जै। कहौ सव षांन जानि मन॥
गौ आरव चहुआंन। फेरि आयौ सु सुनिय सव॥
रुरन रष्षि हुस्सेन। वोलि सामंत राज अव॥
जंपिय ततार संजो सयन। हनौं राज प्रथिराज रन॥
दै गै सुवंध वंधौ रिनह। मेरै कि गहि कुहै सुतन॥ छं०॥ ५७॥ रू०॥३६॥

खुरासान ख़ां का तातार ख़ां से कहना कि उसके बल को भी विचार लो जल्दी न करो॥

दूहा॥ कहै षांन षुरसांन तव। अहो षांन तत्तार॥
चाहुआंन सामंत बल। चिंति सुविविधि विचार॥ छं०॥ ५८॥रू०॥३७॥

अरब ख़ां का कहना कि उसका बल अतुल है तुम लोगों ने देखा नहीं है इससे ऐसा कहते हो॥

दूहा॥ कहै सेष आरब अतुल। बल सामंत नरिंद॥
अबे न तुम दिष्षिय नयन। सजो सैन बिन बंध॥ छं०॥ ५९॥ रू०॥३८॥

शाह का बल पराक्रम का हाल पूछना॥

दूहा॥ कहै साहि आरब्ब तुम। कहौ सूर सामंत॥
कहा क्रांति प्राक्रम कहा। सत्ति पयं पहु तंत॥ छं०॥ ६०॥ रू०॥ ३९॥

---

३५ पाठान्तर—बोल। मझ। जिठौ। जमांम। कमांम। षुरसांन। न्यांन। महंनं॥
३६ पाठान्तर—मति। ऊपजै। जांनि। चहुआंन। स सुनिय। हुसेन। सजो। हनौ। मरैं॥
३७ पाठान्तर—कहैं। चित्त सुबुद्धि विचार॥
३८ पाठान्तर—अे। शेष। दिषिय॥
३९ पाठान्तर—आरब। तुअ। क्रांति। सत्य॥

अरब खां का पृथ्वीराज के बल की प्रशंसा करना ॥

कवित्त ॥ इष्ट मंत्र उच्चार। दिष्ट उट्ठ चित इक्क थर ॥
क्रमत पेषि पच्चीस। मिलत सत एक इष्षि पर ॥
सहस सुभर बाहंत। एक सामंत पराक्रम ॥
जासह दुप्पल कटै। नाम बाधंत वीर दम ॥
सिर परैं सुचक्कै धर भिरै। परैं स्रोन उट्ठैं सधर ॥
असिधार सूर उट्ठैं किलकि। यह पराक्रम सूर नर ॥ छं० ॥६१॥ रू० ॥४०॥

तातार खां का अरब खां की बात को हँसी में उड़ा देना, अरब खां का कहना कि आपनी आंख से न देखने से ऐसा कहते हो ॥

कवित्त ॥ हस्यौ षान तातार। एम हाजी सम वद्दिय ॥
जय हनही बिन वषत। मरन भै डरै न कद्दिय ॥
कहि आरब तत्तार। अहो सामंत न दिष्षिय ॥
अतुल तेज बल अतुल। अतुल बल देव सुरष्षिय ॥
वे साम भ्रंम रत्ते अतुल। अतुल मत्त कैमास भर ॥
उमरा अनंत देषे अनत। अतुल बत्त पहुचै न नर ॥ छं० ॥६२॥ रू० ॥४१॥

शाह का क्रोध करके तातार खां को चढ़ाई के लिये प्रस्तुत होने की आज्ञा देना ॥

दूहा ॥ कहै साहि गोरी गहअ। अहो षांन तत्तार ॥
कल्हि तरीक सुढंच दिन। चढि अरि सद्धौ सार ॥ छं० ॥६३॥ रू० ॥४२॥

दूहा ॥ उठि गोरी दिन्ने बहुरि। गयौ सु अंदर साह ॥
बहुरि षांन मीरं बरा। अति चंचल तुर ताह ॥ छं० ॥ ६४ ॥ रू० ॥ ४३ ॥

---

४० पाठान्तर--उचार। उठ। इक। पच्चीस। इषि। दुपल। तांम। परै। सुहक्कै। उठैं। ऊठैं।

४१ पाठान्तर-तत्तार। वदिय। भय। कद्दिय। काहि। दिषिय। रषिय। सांम। उंमरा। अनंत ॥

४२ पाठान्तर-काल्हि। तेरीक्ष सुं। सधौ ॥

४३ पाठान्तर-दिनं ॥

शाह के जी में रात दिन चौहान की चिंता लगी रहना ॥

दूहा ॥ तपै साहि गोरी सवर। चित साल्हैं चहुआंन ॥
वैरोचन की साप ज्यौं। कीटी भ्रंग प्रमान ॥ छं० ॥ ६५ ॥ रू० ॥ ४४ ॥

अरिल्ल ॥ जग्गत निसि झंपत सुरतानह। घरी सत्त रहि सेष प्रमानह ॥
जगि आयस दिय दीन निसानह। चिंता साहि चढी चहुआनह ॥
छं० ॥ ६६ ॥ रू० ॥ ४५ ॥

सेना के साथ चढाई के लिये शाह का तयार होना ॥

छंद मोतीदांम ॥ भए सुर तीन धुनक्क निसान। चढ्यौ अस्व सज्जि सिल्है सुरतान ॥
चढे सब षांन सु उम्मर मीर। सजे सहनाइ वजे रस वीर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
वजे सब वाज भयानक भाइ। चितै हिय बुद्धि जिनैं जन नाइ ॥
चल्यौ सब सज्जिय सेन गरिष्ट। परी दस दिग्ग सुधूधरि दिष्ट ॥
छं० ॥ ६८ ॥

अशकुन होना

सवह सियाँन सुसेन कपोत। सनंमुष साहि दिष्यौ दल होत ॥
भयौ दिसि वामिय काग करार। रह्यौ दिवि धोमय धूम गभार ॥
छं० ॥ ६९ ॥

सनंमुष देषिय जंवुक सेन। विरौ मिल्लि चंपहि भग्गहि तेन ॥
क्रमैं तस उप्पर गिद्ध असंष। चवै सुर रुद्र पसारिय पंष ॥ छं० ॥ ७० ॥

---

४४ पाठान्तर–चहुआंन। भृंग। प्रमांन ॥

४५ पाठान्तर–जगत। जंपत। सुरतांनह। सत्त। रही। प्रमांनह। निसांनह। निसांनह। चहुआंनह ॥

४६ पाठान्तर–मोतीदांम। निसांन। साजि। सिल्हे। सुरतांन ॥ ६७ ॥ रजे। चितें। जिनें। सजिय। गरिट्ठ। दिघ्ध। धुंवरी। दिट्ठ ॥ ६८ ॥ सिंचान। वांमीय ॥ ६९ ॥ ऊपर। पसारीय ॥ ७० ॥ सुरतांन। रहो। कहु। कहो। आज। गही चल मंनहु चढि सगुंन ॥ ७१ ॥ भयैं भयै। प्रथीराज। वलु। सामंत ॥ ७२ ॥ हनों। चहुवांन। गहों। मुझ। जुझ ॥ ७३ ॥ चल्यौ। सुरतांन। गजिय। निसांन। जलं थल हूअ थलं जल चार। ७४ ॥ लप। समुझिन। सुरतांन। मिलांन २। चहुवांन ॥ ७५ ॥

अरब खां का कहना कि आज ठहर जाइए शकुन अच्छा नहीं है ॥

गही सुरतान सु आरब बग्ग । रहौ दिन आज सगुंन न जग्ग ॥
रहै कुछ अज्ज ततार सुदिन्न । मही चढि चल्लहु मज्झि सगुन्न ॥ छं० ॥७१॥

सुलतान का कहना कि काफ़िर चौहान का जीतना कौन बड़ी बात है जो इतना बिचार करते हो ॥

कहै सुरतान अहो तुम क्रूर । भयैं भय म्रित्यु सु झंषहु नूर ॥
कहा बल जुद्ध कहौ प्रथिराज । कितौ बल सामत जुद्धिह साज ॥ छं० ॥७२॥*
हनौं रन सूर जिके चहुआंन । गहौं जुध राज सु षंडिय प्रान ॥
कहा डर काफर दाषहु मुझ्झ । कहा भर आवध आगरि जुझ्झ ॥
छं० ॥ ७३ ॥ *
नमंनि चमंकि रच्यौ सुरतान । टमंक्किय गज्जिय नद्द निसान ॥
जल्ल थ्थल होय थलं जल भार । असग्गह सग्ग चल्लै गहि लार ॥ छं० ॥७४॥
मिल्यौ इक साहन लष्ष समुंद । समुझ्झन कंन भयो सुर मुंद ॥
चल्यौ सुरतान मिलान मिलान । बढी अति चिंत दुनी चहुआंन ॥
छं० ॥ ७५ ॥ रू० ॥ ४६ ॥

शाह का चौहान की ओर जाना और दूतों का यह समाचार नागौर में हुसैन को देना ॥

दूहा ॥ गयौ साहि चहुआंन घर । दिए मिलान मिलान ॥
गए सुचर नागौर पुर । कही षबरि सुरतान ॥ छं० ॥ ७६ ॥ रू० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई का समाचार सुनकर सरदारों को बुलाकर सिंध तक शाह के पहुंचने का हाल कहना ॥

कवित्त ॥ सुनिय षबरि प्रथराज । कहिय जे चरन चरित सह ॥
बोलि मंचि कयमास । बोलि चांमड गुझ्झ गह ॥

* यह ७२ और ७३ दो छंद सं० १६४० वाली पुरानी पुस्तक में नहीं किन्तु इतर में हैं ॥
४७ पाठान्तर-चहुवांन । धर । दीए । मिलांन २ । सुंचर । सुरतांन ॥

बोलि चंद पुंडीर । बोलि पीची प्रसंग वर ॥
बोलि गज्जि गहिलौत । बोलि का कन्ह नाद नर ॥
बोलेति सव्व सामंत भर । कही वत्त सो कहिय चर ॥
सामंत संत भर सव्व मिलि । सिंधु सुचंपिय साह धर ॥
छं० ॥ ७७ ॥ रू० ॥ ४८ ॥

लड़ने के लिये प्रस्तुत होने का सब का मत होना ॥

दूहा ॥ काहत सव्व सामंत मति । चढि दल सजौ समंकि ॥
सुनिव मंचि कयमास कहि । करहु निसान टमंकि ॥
छं० ॥ ७८ ॥ रू० ॥ ४९ ॥

युद्ध की तयारी होना ॥

गाथा ॥ भय टामंक निसानं । पत्तं निज ग्रेह सूर सामंतं ॥
वाजे वज्जि अनेकं । हय संगे राज चहुआनं ॥ छं० ॥ ७९ ॥ रू० ॥ ५० ॥

गुरराम ब्राह्मण का आकर आशिर्वाद देना, बहुत कुछ दान कराना और वेद मंत्र से तिलक करना ॥

छंद पद्धरी ॥ आये सुनाम गुर राम राज । पढि पच मंच दुज बोलि साज ॥
ग्रह नव सुदान विधि विद्ध दीन । वेदंन विप्र अभिषेक कीन ॥
छं० ॥ ८० ॥
चव सहस हेम दिय विप्र दान । अस्तेष वेद चय साम गान ॥
दिय दान भूरि पंषी सु चंड । दीनो सु अथ्थ जिन हथ्थ मंडि ॥
छं० ॥ ८१ ॥
जै जया जोच जंपी सु आन । मंगल सुचार चव पढ्ढि गान ॥
आसिष्य वयन चहुआंन रान । गुरु राम जज्जि आहुत्त प्रान ॥
छं० ॥ ८२ ॥

---

४८ पाठान्तर–प्रथीराज । चरनि । कैमास । झुझ्झ । ग्रह । पीचि । गजि । सब । मिल्लि ॥
४९ पाठान्तर–सुनै । मंच । कैमास । करहु । निसांन ॥
५० पाठान्तर–पतं । गेह । सामंता । चहुआंनं ॥

दिय तिलक पच पढि वेद मंच । आरोपि कंठ घन मंच जंच ॥
काज दरस वाम चकोर आनि । कव्वूत जानि जंपै सु वानि ॥ छं० ॥ ८३ ॥
षंजन सिषंड किय दरसि दिस्स । आदरस दिष्षि किय असिपरस्स ॥
चिंत्यौ सु चित्त जपि उभय कंत । मंग्यौ सु हंस दय तेजवंत ॥ छं० ॥ ८४ ॥
षिची सु जाति जोवंन पूर । षंच्यौ कि मनौं न्टप रथ्थ सूर ॥

भगवान का स्मरण कर यात्रा करना ॥

साकत्ति सव्व सज्जी सु वानि । धरि और हेम नृप अग्ग आनि ॥ छं० ॥ ८५ ॥
चंपै सु चल्यौ न्टप वाम पास । जै जया सद्द आयास भास ॥
चढि चल्यौ बंधि आवद्ध राज । सामंत सव्व चढि सूछ साज ॥ छं० ॥ ८६ ॥
नीसान ताम वज्जे सु घाव । आकास धरा फुट्टे निद्दाव ॥
संवत्त तीस अरु पंच माघ । तेरस्स सेत सुभ जोग साघ ॥ छं० ॥८७॥ *

हुसेन का भी अपनी सेना के साथ पृथ्वीराज से आ मिलना ॥

सजि सथ्थ चढयौ हुस्सेन सेन । बंधे स तोन भर मीर ऐन ॥
हुस्सेन सथ्थ मिलि सहस एक । उर सामि अंम वंधें सुतेक ॥ छं० ८८ ॥
प्रथिराज आइ किन्नौ सलाम । आदर अदव्व दिय राज ताम ॥
मिलि चल्यौ सेन भर तेजवंत । वज्जे सुवज्ज जय हेम वंत ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दस कोस पर डेरा देना ॥

दस कोस जाइ दिन्नौ मेलान । डेरा सुदीन जल सुथ्थ थान ॥ छं०॥९०॥रू॥५१॥

---

* इस ५१ रूपक के छंद ८७ के दूसरे पद में इस हुसेन और चित्ररेखा विषयिक शहाबुद्दिन की चढाई का मुकाबिला करने को जाने का सनन्द अर्थात् पृथ्वीराज का तीसरा शाका ११३५ माघशुक्ला १३ शुभ योग कहा है। वह जैसे कि अवतक इस महा काव्य में आए हुए सब सनन्द अर्थात् प्रचलित बिक्रमी संवत् से आदिपर्व्व के रूपक ३५५ । में कहे अंतर बर्ष ९० । ९१ के जोड़ने से मिल जाते हैं वैसे मिल जाता है-११३५+९० । ९१-१२२५ । २६ ॥

५१ पाठान्तर-रांम । दांन ॥ ८० ॥ दांन । असेष । सांम गांन । दांन । स चंड । अथ । हथ । जंपय । आंन । पठि । गांन । आशिष । वंन । चहुवांन । रांम । जजि । प्रांन ॥ ८२ ॥ हनमंत । चास । चकोर । आंनि । जांनि । वांनि । दरस्स । दरस । दिस । दिषि । परस । चिंत ॥ ८४ ॥ बंच्यौ सुचि । मनों । रथ । हाकत । सब । सजी । वांनी । ओर । आंनि ॥ ८५ ॥ स चल्यौ । सबद । आउद्ध । सब । सुछ ॥ ८६ ॥ नीसांन । तांम । बजे । स्वेत ॥ ८७ ॥ सजि सथ संपत्त हुसेन । सेन । सतोन । एन हुसेन । सथ सांमि । बधें ॥ ८८ ॥ प्रथीराज । आय । कीनो । सलांम । अदब । तांम । बजे । बज्जय ॥ ८९ ॥ कीनो मिलांन । सुभ । थांन । थांनं ॥ ९० ॥

दूतों का सुलतान को पृथ्वीराज के चढ़ आने का समाचार देना ॥

दूहा ॥ देखि चरित न्रप साह चर । गए पास सुरतान ॥
कहैं सेन संमुष रजै । चढ़ि आयौ चहुआंन ॥ छं० ॥ ९१ ॥ रू ॥ ५२ ॥

सुलतान का चढ़ाई के लिये धूम धाम से चलना ॥

दूहा ॥ सुनि चरित्त सहाब चर । दिय निरघोष निसान ॥
चल्यौ सेन सज्जे सिलह । करिव फौज सुरतान ॥ छं० ॥ ९२ ॥ रू ५३

सुलतान की चढ़ाई का वर्णन ॥

छंद मोतीदाम ॥ चल्यौ सुरतान सुसज्जिय फौज । बजे वर बज्जन बीर अमोज ॥
भयौ गज घुंमर घंट निघोर । मनौं झुकि आंन भयौ सुर रोर ॥ छं० ॥ ९३ ॥
गजैं गज सद्द मनौं घन भद्द । चिकार फिकार भए सुर सद्द ॥
तुरंग मचौंव कडक्क लगांम । खरक्किय पष्पर तोन सुतांन ॥ छं० ॥९४॥ *
चमंकत तेज सनाह सनाह । करैं धर पद्दर राह सिराह ॥
झलक्कत टोप सुटोप उतंग । मनौं रज जोति उद्योत विहंग ॥ छं० ॥ ९५ ॥
दमंकत तेज कमान कमान । चितं चित मीर रची मद्दमान ॥
भले भर सांइय अंम सगत्ति । लपैं धर जीयन जत्तिन गत्ति ॥ छं० ॥ ९६ ॥
नमैं निज सांइय पंच वषत्त । सिपारह तीस पढैं दिन रत्त ॥
नमैं निज मेष धरंम सरंम । क्रमैं रह रीति कुरान करंम ॥ छं० ॥ ९७ ॥
दिढंबर बाचरू काछह मीर । तरंनिय एक रतैं धर बीर ॥
सवद्दय वेध करैं तम तांह । भमंनिय पंषि चलैं छिन छांह ॥ छं० ॥ ९८ ॥
धरै टूक एक अनेक सु तान । झलक्कत मुंड तवक्कह मान ॥
धरैं धर नाहिय स्याहिय सीस । सिरक्कहि वंबर घुंमर दीस ॥ छं० ॥९९॥*

---

५२ पठान्तर–सुरतान । कहे । चहुवांन ॥

५३ पठान्तर–चरित्र । चरित । सहाब । निसांन । सजे । सज्जेह । सुरतांन ॥

*यह पद Caufield Mss. में नहीं है।

अनेक सुवान अनेकाच रंग। चढे सब मीरच सेन अभंग ॥
अनेक सुवान अनेकय वंन। समुझिक्क न चीय समुझिक्कन कंन ॥ छं० ॥१००॥
पयं भर अग्ग अनेक सुभार। अनेक सुजाति अनेक सुतार ॥
सिरं किय मुंडिय मुंड सुश्रद्ध। जुवट्टिय उट्टिय जानि अनद्ध ॥ छं० ॥१०१॥
करं निय झंड्डिय रंग अनेक। फुरक्कहि झंपहि झंपच तेग ॥
चले घर बान सुसज्जिय दिठ्ठ। अगें चथ नारि अभूल गरिठ्ठ ॥ छं० ॥ १०२ ॥
अगें किय मद्द सरक्क सुभार। मनौं पय चल्लत पव्वत तार ॥
ढलैं सिर ढाल अनेक सुरंग। फरैं फरहारि उभारिय अंग ॥ छं० ॥ १०३ ॥
वरंनच झंडय मंडय जूव। मनौं घट रित्ति अनंगच रूव ॥
भई पुर डंबर अंबर रैंन। जथ्थं थल पहरि संक्रमि सेन ॥
छं० ॥ १०४ ॥ रू० ॥ ५४ ॥

खाडुंड अचलपुर में सुलतान का डेरा डालना ॥

दूहा ॥ जथ्थ तथ्थ संक्रमि सघन। उंच थांन जल थांन ॥
दिय षाहंडप अचल पुर। किय मुक्काम सुरतान ॥ छं० ॥ १०५ ॥ रू० ॥५५॥

कैमास का यह समाचार घड़ी रात रहे पृथ्वीराज को देना ॥

दूहा ॥ घरी सुनत्र निसि सेष चर। आय पास चहुआंन ॥
गये पास कैमास जपि। चरित सब्ब सुरतान ॥ छं० ॥१०६॥ रू० ॥५६॥

---

५४ पाठान्तर-मोत दांम। सुरतान। जुसजिय। बजन। घंटन। कंच ॥ ९३ ॥ गजैं। मनों। भद। रद्दु। हद्द। सक्कद कल। परकिय। पपर। सतांम ॥ ९४ ॥ *यह तुक ए० सो० की प्रति में नहीं है ॥ करें। झलकत। मनों। रजिं ॥ ९५ ॥ कमांन २। मान ॥ लपें। जतिन। गति ॥ ९६ ॥ बवत। पठै। रत। नमै। जिन। कुरांन। तरुनीय। रतें। सबदय। करं। तांह। भ्रमंतिय। धरैं। सवांन। झलकत। तबलह। मांन। धरैं दक्क। धरनाहीय। शीस। कहि। घुंघर ॥ ९९ ॥ वांन। अनेक सु। सेनय मीर। बांन। बृच। समुझि ॥ १०० ॥ हतार। जांनि ॥ १०१ ॥ हट्ठिय। फरक्कहि। झंपय। बांन। सधिय ॥ १०२ ॥ मद। सरक्क। मनों। पग। चलत। पबत। ढले ॥ १०३ ॥ मनो। रित। अनंगय। डबरे। रेणु। सेनु। ॥ १०४ ॥

५५ पाठान्तर-जथ। थांन। जलथांन। साहंडे। मुक्काम। सुरतांन।

५६ पाठान्तर-निशि। सेवचर। आइ। चहुवांन। सब। सुरतांन ॥

अरिल्ल ॥ जगि मंत्री कैमास महा भर । गंठिय चित्त चरित्त कढ्ढिय बर ॥
जग्गिय रथ्थ सज्ज निस सेनं । गयो राज यह सज्जि द्रुगेनं ॥
छं० ॥ १०७ ॥ रू० ॥ ५७ ॥

पृथ्वीराज का उसी समय चढ़ाई करने को तयार होना ॥

गाथा ॥ जग्गिय न्टप चहुवानं । कढ्ढियं कैमास सज्जि सुरतानं ॥
वज्जि निहाय निसानं । सजि बाधं सेन सुरतानं ॥
छं० ॥ १०८ ॥ रू० ॥ ५८ ॥

चढ़ाई की तयारी, भगवत् स्मरण तथा दान देना ॥

छंद त्रिभंगी ॥ सयनं सव्वानं, किय सज्जानं, वज्जि निहानं, नीसानं ।
बंधे सिलहानं, निज निज थानं, पष्परि पानं, असगानं ॥
निज किय तं न्हानं, दीन सुदानं, सेव समानं, ईसानं ।
मंने त्रिप्पानं, चंडी सानं, आसिष्षानं, जंपानं ॥ छं० १०९ ॥
तुलसी तिन मंजरि, चक्र तनं धरि हरिचरनां परि, जल सारं ।
गिलकी सत कंनरि, कृष्ण उरं धरि, साज सवं करि जूझारं ॥
मौजह हलहं धरि, राग तवं परि, सज्जि वगं तरि, करि ढारं ।
मंगे हय राजं, साकति साजं, पष्परि भ्राजं सुष राजं ॥ छं० ॥११०॥
हिंदू अंदाजं, तेज महाजं, कीरति काजं, कुल राजं ॥
नामं जा हंसं, उत्तिम बंसं, पुर गिरि जंसं, रजिमंसं ॥
पडु दिय आएसं, सेव नरेसं, कस्सेतं सं, उत्तंसं ।
चढ्ढयौ चहुवानं, मंगे जानं, पै वामानं चंपानं ॥ छं० ॥ १११ ॥
चिंते चिंतानं, चित्त सुभानं, जग्ग हूसानं ईसानं ॥
छं० ॥ ११२ ॥ रू० ॥ ५९ ॥

---

५७ पाठान्तर—गढीय । गंठीय । कहीय । नेनं । सजि ॥

५८ पाठान्तर—चहुवांनं । सुरतांनं । संज्जी के बोध सेन सुरतांनं । सज्जि के बांध सेन सुरतांनं । सजि के बोध ।

५९ पाठान्तर—सवानं । कीय । सजानं । बजि । थांनं । पषरि । अस पांनं । तंन्हानं । ईसानं । हूसानं । बिपानं । निजपानं ॥ १०९ ॥ तुरसी सिर मंजरि चक्र तनं जरि कर जुत्र अंजुरि हरि चरनं । सल । सिवं । जुझारं । मौज । हलं । बगत्तरि । कसि ढारं । है । पषर । सुपराजं ॥ ११० ॥ सदाजं । उतिम । कसेतंमं । उतंसं । चढ्यौ । चढियो । पैवामनं ॥ १११ ॥ जग । सानं । हूसानं ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज का सवार होना॥

कवित्त॥ चितं ईस चहुआन। चढ्यौ हय सज्जि सुआवध॥
बोलि सूर सामंत। बान सज्जे सुबान जुध॥
जय हर! जंपे राज। चल्यौ थप्परि दै कंधं॥
जै सल्लिय दै राव। करी कसि मुष जरद्दं॥
धुंमंत धरा पुर षुर बिहर। करिय लोह दंतै कसक॥
नाचंत तेन पैरव सुथल। धरनि ध्रंम धुज्जिय धसकि॥
छं०॥ ११३॥ रू०॥ ६०॥

पृथ्वीराज का मीरहुसैन के डेरे में आना, मीरहुसैन का अपने साथियों के साथ तयार होकर पृथ्वी-राज को सलाम करना॥

कवित्त॥ गयौ राज चहुआंन। साह डेरा हुस्सेनह॥
सुनी षबरि बर बीर। सज्जि आयौ सथ्यैं सह॥
करि गोसल्ल पविच। होइ चिंत्ते रहमानं॥
बंधि सिलह दै संगि। बीर बज्जे नीसानं॥
चढि साह सज्जि सथ्थिय सयन। सीस नम्मि सलांम किय॥
देषे सुबीर विकसे सुमन। बर सनमान अतिंत किय॥
छं०॥ ११४॥ रू०॥ ६१॥

पृथ्वीराज और मीरहुसैन के मिलकर चलने का वर्णन॥

छंद गीता मालची॥ चढि चल्यौ राजं सेन साजं, बीर बाजं बज्जए॥
नद्दं निसानं सजे बानं, गोम गानं गज्जए॥
फौजें हलक्की बीर बक्की, सूर जक्की जंभरं॥
बिरदैत बीरं जुद्ध धीरं, आय भीरं धर धरं॥ छं०॥ ११५॥

६० पाठान्तर-है। सजि। सूद सब्बान। बांन। सबांन। जुद्ध। जै। हय। मंची। उरधं। करिय। दंत लोहं। पयरव। धरनि ताम। धुजिय॥

६१ पाठान्तर-चहुवांन। हुसेनह। सजि। सथैं। चिंत्यौ। बजे। निसांनं। सज। सथी। नांमि। सलांम। सनमांन। अतित॥

अनसंस दासं सांइ आसं, उच्च भासं अच्छरं ॥
नीकं सुबच्छं सुद्ध काच्छं, छूअ गच्छं धीढरं ॥
सजि बान पथ्थं दंत अथ्थं, राज सथ्थं संभिलं ॥
चल्ले सबल्लं ढाल ढल्लं, गज्ज मल्लं भुझियं ॥ छं० ॥ ११६ ॥
घंटा सुघोरं भेरि धोरं, तयं तोरं सद्दयं ॥
झंपं सबद्दं नीर नद्दं, सूर बद्दं बद्दयं ॥
धर पाइ धक्की है पुरक्की, गैग चक्की पष्परं ॥
उड्डी सुरेनं मुंदि गेनं, आइ सेनं सद्धरं ॥ छं० ॥ ११७ ॥
गिद्दी सुनथ्थं चली सथ्थं, लेस रथ्थं अच्छरं ।
निरपैं सुवीरं निज्ज नीरं, अस्स धीरं मच्छरं ॥
पुट्टं समीरं बंधि सुधीरं, साइ भीरं संभरं ।
सेनं सहस्सं तेय दस्सं, भुक्ख जस्सं धिद्दरं ॥ छं० ॥ ११८ ॥
नारद्द नद्दं वीर वद्दं, गोम सद्दं तद्दयं ।
सामंत सूरं चढे नूरं, जुद्ध भूरं जद्दयं ॥
सथ्थं सँगारं मंस चारं, ना उचारं जैकरं ।
श्रोनं सभष्पी भू चरष्पी, पैचरष्पी षेचरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥ रू० ॥ ६२ ॥

सुलतान के चरों का सुलतान को जाकर समाचार देना कि शत्रु की सेना एक योजन पर आगई ॥

दूहा ॥ चरित लष्प सादाब चर। गए पास सुरतान ॥
सजी सेन सामंत पति। आयो जोजन थान॥ छं० ॥ १२० ॥ रू० ॥ ६३ ॥

६२ पाटान्तर—बजए । नदं । निसानं। गजए। हलक्की । बकी । जक्की। बिरट्टेत । युद्ध । सांइ। धंधरं ॥ ११५ ॥ साइं । उच । अजरं । सुबछं । कछं । गछं । धिढरं । बांना । पथं । अथं । सथं । चढि । सबलं । ढलं । गज । मलं । भुझयं ॥ ११६ ॥ सदयं । बद्रयं । धकी । पुरकी । गहक्की । पष्परं । उड़ी । सदेनं । आय । सधरं । ॥ ११७ ॥ सतथं । सथं । रथं । चाछरं । निरप्पै । निरपं । निज । अस । मछरं । पट्टं । साय । सहसं । दसं । भुभ । जसं । द्दिद्दुरं ॥ ११८ ॥ नारद । तदयं । तद्दुयं । युध । जदयं । सथं । शांगारं । संगारं । जेकरं । सभषी । चरषी । पैचरषी ॥ ११९ ॥

६३ पाठान्तर—* सं० १६४७ की में इसका यह पाठ है—मिलि भूचर षेचर सकति । लप । सुरतांन । थांन ॥

सुलतान की सेना की तयारी का वर्णन ॥

छंद विअष्षरी ॥ सुनि चरित्त स हाव तास चर। बोलि मीर उमराव मद्दा भर ॥
दिय निरघात घाव नीसानं। चल्यौ सेन सज्जै सव्वानं ॥ छं० ॥ १२० ॥
बाजिच वीर अनेक सुवज्जे। धर पडिहाय सुगोमह गज्जे ॥
उग्यो सूर चढ्यौ सुरतानं। बज्जि निहाव नाल गिरि वानं ॥
छं० ॥ १२१ ॥
फौज सुपंच सजी साहावं। उलव्यौ सेन समुद्रह आवं ॥
दच्छिन दिसा सज्जि ततारं। दिसि बांई षुरसान सुधारं ॥
छं० ॥ १२२ ॥
हाजिय राजिय गाजिय षानं। सनमुष सेन सजी सुरतानं ॥
मीर जमांस षांन कंमानं। मद्दवति मीर पुट्ठि सजि तामं ॥
छं० ॥ १२३ ॥
षान मसरूम रुस्तम षानं। मद्धि फौज रज्जे सुरतानं ॥
सहते वीस वीस सजि फौजं। तुंबा पंच रचे अहदौजं ॥
छं० ॥ १२४ ॥
चिहुपष्षां गज घूमहि डंमर। हथ्थ नारि गिर बांन असंबर ॥
रिन रन तूर घोर नीसानं। भेरी स्रृंग गरुड थन थानं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
नफ्फेरी चिय विध सुर डंडं। जोमष पट्ट वजे घन दंडं ॥
झावत झुझ्झ डहक्क डहक्किय। दै बर हीस दरक्क गहक्किय ॥
छं० ॥ १२६ ॥
गज चिक्कार फिकार सबद्दं। तंदुल तबल मृदंग रवद्दं ॥
जंगी वीर गुंडीर अनेकं। बाजिच अनेक गने को वेगं ॥
छं० ॥ १२७ ॥
फौज पंच साजी साहावं। मीर अनेक गने को नावं ॥
देस देस मिलि भाष अनंतं। नवीयन नाम अनेक गनंतं ॥
छं० ॥ १२८ ॥

फौज पंच सजि चल्यौ सु साहं । गज्जैं भरनि गैंन पुर गाहं ॥
खारुंडै लग्यौ दिसि वामं । पट्टर सद्दर उत्तिम ठामं ॥
छं० ॥ १२९ ॥ रू० ॥ ६४ ॥

खारुंडे के बाईं ओर सजकर सुलतान का खड़ा होना ॥

दूहा ॥ उत्तिम पंथल पुट्ठि जल । लप्पी जीय सुथान ॥
खारुंडा दिसि वांम दै । सजि ठड्ढौ सुरतान ॥ छं० ॥ १३० ॥ रू० ॥ ६५ ॥
उड्डि रेन डंबर असर । दिष्यौ सेन चहुआन ॥
सुनिगसांन वाजित्र चवक । सजे सीस असमान ॥ छं० ॥ १३१ ॥ रू० ॥ ६६ ॥

सुलतान की सेना देखकर पृथ्वीराज का मीर हुसेन की ओर देखना, हुसैन का अपने सरदारों के साथ तयार होकर पृथ्वीराज को सलाम करना ॥

कवित्त ॥ देखि सेन सुरतांन । नैंन चहुआंन मद्दाभर ॥
सज्जि फौज हुस्सेन । सेन सब मीर वीर वर ॥
रूमी षां कंमांम । वेग हुस्सेन समथ्थं ॥
षां दलेल दिपिनीय । जुद्ध करि करै अकथ्थं ॥
कासिम्म षांन करीम षां । षोजा कासिम काज सुष ॥
लिन्न है सुसब्ब लिय समथ सजि । करि सलांम किय सीसउध ॥
छं० ॥ १३२ ॥ रू० ॥ ६७ ॥

६४ पाठान्तर–उमदा । निघात । चढ्यौ । सजै ॥ १२० ॥ घजे । गजे । कथ्यो । वजित्र ॥ १२१ ॥ समुद्र कि । दपिन । सजि । पुरसांन । सधारं ॥ १२२ ॥ हाजीय । राजीय । गाजीय । सुरंतानं । जमांम । पांन । कमानं । पुठि ॥ १२३ ॥ मधि । रने । तेर्देस । ठुंदा ॥ १२४ ॥ चिहुं । षां । धुंमर । हथ । बांन । असंवरं । रिनतूर । नीसांनं । नफेरी । त्रिविधि । पट । आवध । भुम्भ । डहक । डहकिय । हय । गहकिय ॥ १२६ ॥ चिकार । फिकार । सवद्दं । रघद्दं । गुंडीर । अनंत ॥ १२७ ॥ सजी । मीर अनेक अनेक सनावं । चाप अनेकं । नांम करे सुविवेकं ॥ १२८ ॥ सु । यु । गज्जे । सज्यौ । पधर । सधर । ठामं ॥ १२९ ॥

६५ पाठान्तर–उत्तम थलअरु । लपी । थांन । वांम । सुरतांन ॥

६६ पाठान्तर–उडि । भंवर अवर । दिपी । सुने । असमांन ॥

६७ पाठान्तर–सुरतांन नैंन । चहुवांन । सजि । हुसेन । कमाम । हुसेन । समथं । दपनी । करीय । अकथं । कासम्म षांन । षोजा काश्यप । सब । सथ सजि । किय सलांम । करि सीस ॥

मीर हुसैन का कहना कि आपने हमारे लिये कष्ट उठाया है तो हमारा सिर भी आपके लिये तयार है देखिए कैसी लड़ाई लड़ता हूं, पृथ्वीराज का कहना कि इसमें आश्चर्य क्या है मैं भी आज तुम्हें ग़ज़नी का सुलतान बनाता हूं ॥

कवित्त ॥ कहै साह हुस्सेन। सुनौ चहुआंन सुझ्झ बत ॥
आज सीस तुम कज्ज। सेन साहाब षंडौं षत ॥
सो कज्जै साहस्स। करिग प्रथिराज सरन भ्रम ॥
हौं उज उंसू अज्ज। करौं राजन अकथ क्रम ॥
जंपै सु राज प्रथीराज तब। कहा अचिज्ज जंपौ तुमह ॥
अप्पौं सु छत्र गज्जन पुरह। सद्धि सेन साहाब गह ॥
छं० ॥ १२२ ॥ रू० ॥ ६८ ॥

मीर हुसैन का सलाम करके बाईं ओर सेना सजना, पृथ्वीराज का अपने सरदारों को आज्ञा देना कि तुम लोग मीरहुसैन की सहायता करो और सामंतों का आज्ञा पालन करना ॥

कवित्त ॥ करि सलाम हुस्सेन। अनी बंधी दिसि बाईं ॥
सजरा बंधे कंठ। सर्ब सज्जे थन थाईं ॥
बोलि राज प्रथिराज। बीर जद्दव जामानी ॥
महन सीह परिहार। सूर गुज्जर रामानी ॥
तीकंम बोलि तारंन भर। बगारीय देवह सुअन ॥
मँडलीक बोलि परसंग सुअ। जीहराज जंपै सुगुन ॥
छं० ॥ १२४ ॥ रू० ॥ ६९ ॥

---

६८ पाठान्तर-हुसेन। झुझ। कज। षंडो। कजे। साहस। प्रथीराज। ध्रमं। हौं उज ऊसुं अज। करो। राजंनं। अकथ्यं। अकथ्य। क्रंम। अप्पों ॥

६९ पाठान्तर-किय। सलांम हुसेन। सजे। प्रथीराज। जांमांनी। गूजर। रामांनी। तिकंम। सगुन ॥

कवित्त ॥ कहै राज चहुआन । तुम सामंत सूर वर ॥
घर कुलीन कुल सुद्ध । सुद्ध ग्रन अंग अंग भर ॥
तुम सहाइ हुसेन । सेन सज्जौ दिसि बाईं ॥
तुम अनंत बल तेज । देव वर कंठ सुहाई ॥
साहाब दीन सुरतांन सौं । भिरौं चाल वंधन विंहसि ॥
सबैं सुबल्ले निज सेन सजि । नाइ सीस रजि बीर रस ॥
छं० ॥ १३५ ॥ रू० ॥ ७० ॥

कैमास आदि सामंतों का चार सहस्र सेना के साथ पृथ्वीराज के दक्षिण ओर सेना सजना ॥

कवित्त ॥ दिसि दच्छिन कैमास । राइ चामंड महाभर ॥
चंद्रसेन पुंडीर । सिंघ पम्मार सुभ्भ सर ॥
गरुअधाव गहिलौत । निभै पति धार भार घन ॥
तुँवर राइ परिहार । चित्त अनभंग मोट मन ॥
साहस्स चार सज्जे सघन । अनी बंधि दच्छिन न्रपति ॥
रत्तानि वस्त्र रत्ते सुभर । जै मंनी चहुआंन चित ॥
छं० ॥ १३६ ॥ रू० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज के आगे की ओर गोइंदराय आदि सरदारों का पांच सहस्र सेना के साथ खड़े होना ॥

कवित्त ॥ मद्धि अनी प्रथिराज । अग्ग सज्जे भर सामत ॥
गरुअ राइ गोइंद । राज मंने साहस सत ॥
देवराइ बग्गरि । कन्ह चहुआन नाह नर ॥
षीची राइ प्रसंग । वीर कन कूवड गूजर ॥

७० पाठान्तर-चहुवांन । तुम । सज । सहाय । हुसेन । सजै । बांई । सुरतांन । भिरों । वंधवि । विंहसि । नाई सास ॥
७१ पाठान्तर-दछिन । दपिन । राय । पामार । सुभ्भ । गहिलोत । तांअर । राय । पहार ।

सामंत सूर बिकसे सुमन। अरि दल निल मत्तह गनिय॥
छं०॥ १३७॥ रू०॥ ७२॥

दोनो सेनाओं का सामना होना और निशान बज उठना॥

दूहा॥ अनी बंधि प्रथिराज न्टप। अनी पंच सुरतान॥
मिली सेंन दूनों निजरि। गज्जे गोम निसान॥
छं०॥ १३८॥ रू०॥ ७३॥

हुसैन और तातार षां की सेनाओं की लड़ाई होना अंत को तातारषां की फौज का भागना॥

छंद भुजंगी॥ जगे गोम नीसानं दूवान सेन। धमंकै धरा गान गज्जे सुगेंनं॥
झरं पष्षरं धार ढालें ढलक्की। घनं सेंन संनाह दूनों चमक्की॥ छं०॥१३९॥
मिले मीर धीरं सुदिट्ठं दुआनं। पलं एक जीवं उभें सिंघ जानं॥
दिसा बाइयं साह हुस्सेन अंनी। तिनं मझ्झ सामंत सामंत मंनी॥ छं०॥ १४०॥
भरं जाम जद्दों सुमारू मल्हंनं। षलं गुज्जरं राम मंनै न मंनं॥
सजे सेंन अंनी सहस्सं चियारं। गुरं जुझ्झ भारी सुधारी करारं॥ छं०॥ १४१॥
सनंमुष्ष तत्तार बीसं सहस्सं। घटा बंधि भद्दों बकैं वीर रस्सं॥
उडी सेन रेनं रुक्यौ रथ्थ सूरं। बकैं दीन दीनं भरं अप्प दूरं॥ छं०॥ १४२॥
घनं बांन कंमान उड्डे कि जंगं। मनों जोति षद्योत प्रस्तू निहंगं॥
ढलक्की मिली ढाल ढालं दुसूरं। मचानद्द सद्दं मनौं सिंघ पूरं॥ छं०॥ १४३॥
बजै धार धारं सुझ्झारं करारं। परें गज्ज सुंडं ढरैं सूर भारं॥
हकैं हक्क बज्जी सुजग्गी सकत्ती। परैं रुंड मुंडं परं स्रोनं रत्ती॥ छं०॥ १४४॥
मिलैं षांन तत्तार हुस्सेन सेनं। बकैं उंच वाचं सिरं सज्जि गेंनं॥
हयं छंडि कंधं पयं मंडि कन्ने। समं संमुषं हूव सूरं समन्ने॥ छं०॥ १४५॥
सहस्सं हयं छंडि हूसेन सथ्थं। सयं तीन ताई बियं हिंदु नथ्थं॥

षिति। साहज्ज। सजे। दपिन। रतामि। रते। चहुवांन॥

७२ पाठान्तर-मध। प्रथिराज। अग। सजे। सामंत। राव। चंद चहुआंन। कनकु। सथह। घनीय। समन। मत्तहि॥

७३ पाठान्तर-वधी। प्रथीराज। सुरतांन। दोनुं। गजे। निसांन॥

सथं षांन तत्तार सत्तं सहस्सं। हयं छंडि कांनं सनं सन्नि गस्सं॥ छं० ॥ १४६ ॥
अई फौज तीरं दुअं जुद्ध धीरं। दिषे व्रम्मलं निज्ज सामित्त वीरं॥
उभै डारि ओडं न गज्जै गुमानं। जपैं दीन मीरं सुंनषी कमानं॥ छं० ॥ १४७ ॥
वजैं नद्द नीसान भेरी भयंदं। गजैं शृंग रीसं मनौं मेघ नद्दं॥
उभै हथ्थ घोले सुषग्गं करारं। परैं सुझ्झरं सुझ्झरं फूल्ल धारं॥ छं० ॥ १४८ ॥
उभै आस जीतं नसा सूर छुट्टी। भरी काल संवान आयं सुघट्टी॥
करी अप्प ईसं दुईसं दुहाई। मनौं वज्ज झुझ्झै गजं मद्दराई॥ छं० ॥ १४९॥
ढरै उत्तमंगं उडै ओन पूरं। मनौं काल पावक्क झालं करूरं॥
मिल्ले घाइ हुस्सेन तत्तार षानं। जुटे डट्ट हथ्थं उभै काल जानं॥ छं० ॥१५०॥
तुटैं आवधं सावधं लग्गि वथ्थं। सुनी कन्न कथ्थन्न दिट्ठी अकथ्थं॥
जमं दड्ढ प्राचार छेदं कुलिक्का। उरा पार फुट्टे हवक्कों कसक्का॥ छं० ॥१५१॥
कल्लेवार षेतं ढरं हूअचेतं। उभै सूर झुझ्झै उभै साहि हेतं॥
भिरैं षान रूमीय षानं दलेलं। परै पाइ सांई हकै सेन पेलं॥ छं० ॥ १५२ ॥
परे षंड षंडं निजं सामि अग्गै। न को चारि अंनै न को झुझ्झ भग्गै॥
हकैं जांम जद्दों सुतं सिंघ वीरं। ढरैं आवधं आवधं ढारि धीरं॥ छं० १५३॥
भगी षांन तत्तार अंनी विहालं। भिरी साहि फौजं टरी गज्जढालं॥
छं० ॥ १५४ ॥ रू० ॥ ७४ ॥

७४ पाठान्तर–नीसांन। दूवांन। धमंके। गजे। पषरं। ढाले। ढलक्की। चमंक्की॥ १३९॥ स। दिठं। हुसेन। अंमी। मझ॥ १४०॥ जांम। गुज्जरं। रांम। मंने। सहसं। जुझ॥ १४१॥ मनंमुष। सहसं। बक्के। रसं। रथ। बक्कें॥ १४२॥ बांन। कमान। उड्डे। मनों। ज्योति। ढलक्की। मनों। परें। गज। ढरें। हक्कें। हक। वजी। सजगी। सकती। परें। श्रोनं रतो॥ १४४॥ मिलें। पांन। ततार। हुसेन। बक्कें। सजि। दूअ। सूर। मनें॥ १४५॥ सहसं। हुसेन। सथं। तथं। पांन। सहसं। गसं॥ १४६॥ दुयं। युद्ध। दिपे। निर्म्मलं। सामित। उंडं। गजे। जपै। कंमानं॥ १४७॥ नद। नीसांन। गज्जें। मनों। नदं। हथ। परें। झरं। सुभरं॥ १४८॥ संवांन। मनों। वंच। झूझें। १४९॥ ढरें। मनों। पावक। हुसेन। पांनं। जुटैं। डट। हथं॥ १५०॥ तुटे। लगि। वथं। सुनी कथ्थ कंनेन दिट्ठी अकथ्थं। प्राहारं। उराफार। फुटैं। हवक्कें। क्रसक्का॥ १५१॥ कलेंवार। ढरं। झूझैं। भिरें। पांन। रूंमीय। षांनं। परे। पाय। हके॥ १५२॥ सांइ। अगें। भगें। जाम। जदौं। ढरे॥ १५३॥ पिहालं। भिली। गज॥ १५४॥

दूहा ॥ सहस पंच रन मीर परि । साथ सुषांन ततार ॥
परे हुसेंन सुतीन से । से दो हिंदू सार ॥ छं० ॥ १५५ ॥ रू० ॥ ७५ ॥

गाथा ॥ नंचिय तीस कमंधं । करि झोरी षांन तत्तारं ॥
दिष्षिय रनसुर बद्दं । भय रसं अदभुत्त भयानं ॥ छं० ॥ १५६ ॥ रू० ॥ ७६ ॥
भग्गिय अनी षांन * ततारं । चंपियं जद्दव महा असवारं ॥
बज्जिय बर नीसानं । सज्जिय जुद्ध हिंदू सवानं ॥
छं० ॥ १५७ ॥ रू० ॥ ७७ ॥

खुरासान खां का आगे बढ़कर लड़ना ॥

छंद चोटक ॥ सजि संमुष षां षुरसान दलं । जग डंबर बंबर ढाल ढलं ॥
बजि भेरि नफेरि भयान सुरं । घननं किय घुघ्घर घंट घुरं ॥ छं० ॥ १५८ ॥
गजघोर निसानन घुंमरयं । दिग अट्ठ धरा धर धुंमरयं ॥
मिलिवीय अनी दुअ आवधयं । भरबंछि उभै षल सावधायं ॥ छं० ॥ १५९ ॥
झर आवध आवध झाक झरं । कटि मंडल षंडल ढारि ढरं ॥
धरि पेलहिं ठेलहिं केस कसं । रस छोड्ड भयानक रुद्र रसं ॥ छं० ॥ १६० ॥
असि षंड विहंडति चैवरयं । गज सुंडह मुंड ढरैं धरयं ॥
धर लुट्टहि जुट्टहि रंधरयं । मिलिवीय अनी दुअ आवधयं ॥ छं० ॥ १६१ ॥
झरयं फिर गिद्धय रोर हलं । धर श्रोन प्रवाहनि पूर चलं ॥
करि डक्कह डक्कनि बीर नचैं । सिर माल सु ईसर आनि सच ॥
छं० ॥ १६२ ॥
बर बीर भरैं भर अच्छरियं । सुर रोर सकत्तिय मच्छरियं ॥
हनि हक्कहि षां षुरसान रिनं । द्रिग दिष्षिय चावँड राय तिनं ॥ छं० ॥ १६३ ॥
मिलि आवध सावध दुभ्भरयं । हय घाय गुरज्जत सुभ्भरयं ॥
कमि चामँड संगिय झारि झरं । जुग फुट्टिय जानु हयं समरं ॥ छं० ॥ १६४ ॥

---

७५ पाठान्तर—हुसेन । सैं । दों । दोइ । हिंदू ॥
७६ पाठान्तर—नचीय । कमधं । दिषिय । । बदं । रस अदभूत । भायानं ॥
७७ पाठान्तर—भगीय । *अधिक पाठ इतर पुस्तकों में है और प्राचीन में वह है ही नहीं ॥
तत्तारं । चंपिय । बजीय । सजि । युद्ध । हिंदुसबानं ॥

खस षां षुरसान सदान परं । वषि न्रंगय न्रंग सव्हूर ढरं ॥
दस षान षयं तज उप्परयं । वदि जोद दुरी षनि दुप्परयं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
पग छंडिय चामंड राइ रिनं । दिषि राज पुँडीर तज्यौ हयनं ॥
मिलि चंपिय ढारस षान घरं । तब भग्गिय फौज असुब्भ परं ॥
छं० ॥ १६६ ॥ रू० ॥ ७८ ॥

खुरासान ख़ां की फौज का भागकर सुलतान की फौज के साथ मिलना और कैमास का चढ़ाई करना ॥

दूहा ॥ भगी अनी षुरसान षां । मिलिय जाइ सुरतान ॥
चढिय फौज कैमास तब । सज्जे सिर असमान ॥ छं० ॥ १६७ ॥ रू० ॥७९॥

बाईं ओर से जमान, दाहिनी ओर से कैमास और सामने से पृथ्वीराज का चढ़ना ॥

गाथा ॥ भोरी षां षुरसानं । परिय मीर रंन सहस्सेयं ॥
वढ्ढिय जैतसु राजं । भग्गिय सेन देषि सुरतानं ॥ छं० ॥ १६८ ॥ रू० ॥ ८० ॥
दिसि बाइँ जामानं । दिसि दाहिनी चंपियं कैमासं ॥
सनमुष चंपिय साजं । जै जै जंपि राइ चहुआनं ॥
छं० ॥ १६९ ॥ रू० ॥ ८१ ॥

युद्ध का वर्णन ॥

छंद नाराच ॥ जयं जयंति जंपियं । चढे सुराज चंपियं ॥
वहंत वांन वानयं । ग्रहंत गोम छानयं ॥ छं० ॥ १७० ॥

---

७८ पाठान्तरः—भ्रमरावली । पुरसांन । भयांन । घननंकय । घुघर ॥ १५८ ॥ घुमरयं । घाठ । ठरी ॥ १५९ ॥ पेलहि सेलहि । पेलहिं सेलहिं ॥ १६० ॥ गजन । सुडंह ॥ १६१ ॥ फर । डरू । डर्कात । आंनि ॥ १६२ ॥ बीरवरं । अछरियं । सकत्तिय । मछरियं । हन । पुरसांन । दिषिय । चावंड ॥ १६३ ॥ आउध । साउध । दुभरयं । गुरजंत । सुभरयं । चामंड । जांनु ॥ १६४ ॥ पुरसांन । साहाब । सुमूर । उपरयं । तुरी । उपरयं ॥ १६५ ॥ चावंड । चामंड । पुंडीर । पांन । भगिम । असुभ ॥ १६६ ॥

७९ पाठान्तर—पुरसांन । जाय । सुरतान । सजे । असमांन ॥

८० पाठान्तर—गादां । पुरसांनं । रन । सहसयं । बढिय । जै तस । भगी । गीनी । सेन । सुरतानं ॥

८१ पाठान्तर—बाईं । चंपिय । राय ॥

करी सुफौज एकयं। बहंत ताम तेकयं
बहंत बीर आवधं। करंत बीर सावधं ॥ छं० ॥ १७१ ॥
चबक्कि संग संगयं। बहंत अंग अंगयं ॥
झटा पटा झमक्कयं। करीअ रीत टक्कयं ॥ छं० ॥ १७२ ॥
सभं भरं बगत्तरं। छुवंत षंड षंडरं ॥
ढरंत हंड मुंडयं। झमंत जंत तुंडयं ॥ छं० ॥ १७३ ॥
फरं फरंत फेफरं। बुलंत ते डरं डरं ॥
कटें सुपाइ रिघंयौ। करंत घाव घिंघयौ ॥ छं० ॥ १७४ ॥
करंत चक्क चक्कयं। झमंत धक्क धक्कयं ॥
चढंत देत दंतरं। अरु अझंत अंतरं ॥ छं० ॥ १७५ ॥
भभक्कयंत स्रोनयं। बहंत बेग कोनयं ॥
झरप्फरंत गिद्धयौ। किलक्किलंत सिद्धयौ ॥ छं० ॥ १७६ ॥
नचंत सट्ठि सारियं। करंत बीर तारियं ॥
डचक्कि डक्क ईसुरं। धमं धमंत भीसुरं ॥ छं० ॥ १७७ ॥
फिकारियंत फेरियं। पलं चरंत रेकियं ॥
सपूर स्रोन सक्कती। गुरं सुरंग चक्कती ॥ छं० ॥ १७८ ॥
किलं सुकंठ षामयं। मनंत मंनि तामयं ॥
कटे सुगज्ज कंधरं। विहंड षंड षंडरं ॥ छं० ॥ १७९ ॥
करंत गज्ज चिक्करं। फिरंत सूर फिक्करं ॥
क्निनक्निनंत बाजयं। जमं ग्रहंत साजयं ॥ छं० ॥ १८० ॥
बहंत स्रोन नद्दियं। चलंत सूर सद्दियं ॥
धरं गजं विकं ठयं। दयं अनेक संठयं ॥ छं० ॥ १८१ ॥
तरं सझंड झालयं। रजंत संगि लालयं ॥
धरं परंत मच्छयौ। गजं सु सीस कच्छयौ ॥ छं० ॥ १८२ ॥
गजं सुसुंड ग्राहयौ। सुरंजि अप्प चाहयौ ॥
रजंत बीर नम्मयं। भयं दपंति जम्मयं ॥ छं० ॥ १८३ ॥
पलं अनंत पंकयं। कुकातरं भयंकयं ॥
सुहंत सीस अंबुजं। षटं पदं द्रिगंबुजं ॥ छं० ॥ १८४ ॥

कचं निवार विश्थुरं । सुगंधि पंषि कंदुरं ॥
वहंत पूर जोरयं । कन्नर सद्द रोरयं ॥ छं० ॥ १८५ ॥
सुतान पंति गोमयं । उचंत वीर सेनयं ॥
अनेक रंग चंमरी । वहंत जीन पंमरी ॥ छं० ॥ १८६ ॥
वही अनेक साकते । कहंत चंद वाकते ॥
अनेक रथ्य अच्छरं । वरंत सूर सच्छरं ॥ छं० ॥ १८७ ॥
रजोद कंठ सक्कती । रजंत श्रोन रक्कती ॥
हचक्क रंन साजयं । झरंत जेम वाजयं* ॥ छं० ॥ १८८ ॥ रू० ॥ ८२ ॥

पृथ्वीराज की सेना की बढ़ना, और मंडलीक का मारा जाना ॥

कवित्त ॥ वाज जेम चहुआनं । झारि सेना भर सुझ्झर ॥
कोउ लत्त केलत्त । गज्ज ढाहे धर सुद्धर ॥
ढेलि अनी दस पेंड । झक्क वाजंती झारी ॥
मारि मीर अनभंग । विधर जू सेभर सारी ॥
मँडलीक सूर षिझ्झिय सुभर । जुटे षांन सु गज्जनिय ॥
मंडलीक सीस तुट्टै विलगि । हन्यौ षांन विन चंचनिय ॥ छं० ॥ १८९ ॥ रू० ॥ ८३ ॥

कवित्त ॥ विना सीस मंडलीक । हयौ गज्जनीय षांन गुर ॥
अवर मीर च्यालीस । जुझ्झ ढाह भर सुझ्झर ॥
परत सुअन पर संग । बुंद रुधिरं नर वुट्ठिय ॥
सुहथ षग्ग सम्र एक । वीर करि किलकि सुउट्ठिय ॥

---

८२ पाठान्तर-छंद लघुनाराच । नराज छंद । वांन । वांनयं ॥ १७० ॥ आउध ॥ १७१ ॥ हवक्कि । झटक्कयं । टक्कयं ॥ १७२ ॥ नरं । वगतरं । हुअंत ॥ १७३ ॥ फर । पाय । सिंघयो ॥ १७४ ॥ धक्कधक्कयं । दंतदंतरं । अरूझरंत । १७५ ॥ भभक्कयंत । झरफरंत । किलकि ॥ १७६ ॥ सठि चरियं । दियंत । वीर । डहकि । धम ॥ १७७ ॥ फेक्कियं । संपूर । सक्कती । हक्कती ॥ १७८ ॥ कामयं । गन ॥ १७९ ॥ गज । चिक्करं । फिक्करं । क्रिनक्रिनंत ॥ १८० ॥ नदीयं । सदीयं । धरं गढं । त्रिक्कठयं । सठंय ॥ १८१ ॥ मछ्यो । ससीस । कछ्यो ॥ १८२ ॥ क्रिगजंसु । गाहयो । किरंजि । श्रय । चाहयो । रजंत मीर निम्मयं ॥ १८३ ॥ सुभंत शीश । दिगं ॥ १८४ ॥ विथुरं । कंठरं । कसूर ॥ १८५ ॥ गोगयं । वीर रोमयं । जान संमदी ॥ १८६ ॥ रथ । अछर । सछरं ॥ १८७ ॥ सक्कती । रक्कती । हहक । रंन १ १८८ ॥ * यह तुक ए· सो· की प्रति में नहीं है ।

८३ पाठान्तर-चहुवांन । सुभर । केउलत केलत । गज । वाजंती ढारी । मारि भार । मंडलीक । षिझिय । पीजिय । गजनीय । मंडलीक । शीश तुट्टे । विन सीस नीय ॥

रत्तरे गात उत्तंग तन। उद्ध रोम झारंत असि ॥
गहि दंत दंति धरि पुंछ हय। उड्डि सुनंचिय बीर हँसि ॥
छं० ॥ १९० ॥ रू० ॥ ८४ ॥

शहाबुद्दीन की सेना का भड़कना और पृथ्वीराज की सेना का पीछा करना ॥

कवित्त ॥ भरकि सेन साहाब। डरिरि भगो हय गय नर ॥
घरिय एक विन्ती। बिहुर अड्डे अघास हर ॥
दिष्षि दिष्ट साहाब। राइ चामंड बीर बर ॥
चंद्रसेन पुंडीर। जाम जट्टौ भर सुब्भर ॥
कैमास द्दिष्टि द्दिष्षौ समर। कसे च्यारि गहनं सुबचि ॥
आए सुबीर अड्डे अकसि। रन रस आवध रीठ मचि ॥
छं० ॥ १९१ ॥ रू० ॥ ८५ ॥

घोर युद्ध का वर्णन ॥

छंद विज्जुमाला ॥ मचिय मत्त आवद्द रीठ। भर हरि दैन सुब्भर पीठ ॥
हक्कैं सूर अग्गर सार। धर धर परैं तुट्टिय धार ॥ छं० ॥ १९२ ॥
जंपैं उभै दीन जु आंन। जुझिझय मत्त मत्तिय पांन ॥
बह बब्बरू कद कै हाक। बज्जै विषम आवध झाक ॥ छं० ॥ १९३ ॥
परि लर थरैं उट्ठैं एक। तस्सी उकसि झारैं नेक ॥
षट षट्टी आवध सार। बाहै बीर बारं बार ॥ छं० ॥ १९४ ॥
अंन्यो अन्य सहैं नाम। आवध ग्रहैं अप्पन ताम ॥
हंहं करैं दूष्ट सँभारि। उट्ठैं बिरद धारी झारि ॥ छं० ॥ १९५ ॥
अद्दैभुत्त बीर भैयान। मंचिय कंक विषम कृपान ॥
नर बर बरय हंस रँभान। उट्ठिय नेह ग्रेहति जानि ॥ छं० ॥ १९६ ॥

---

८४ पाठान्तर—मंडलीक। झुक्क ढाहे भर सुभर। बुट्ठिय। उठिय। रतरे। उतंग। उध उडि। हंसि ॥

८५ पाठान्तर—घरीय। विहर। अडे। आय सुहर भर। अयासु। दिषि। राय चामुंड। जांम। जट्टा। सुभर। गहन। सुमीर। अडे। दिन ॥

तुट्टिय सेन पख तिष तीर। इन परि जुद्ध जुट्टिय धीर ॥
तहँ सांई उप्पर अत्थ। सेवक्क उड्ड सांई कित्ति ॥ छं० ॥ १९७ ॥
चैासठि क्रांम लोथि पथार। भर परि घरद्द लुथ्थिय घार ॥
उप्पर भिरैं सामंत सूर। मत्तौ जुद्ध दून करूर ॥ छं० ॥ १९८ ॥
ठेलैं एक एकैं वीर। गज्जै दीन जंपै मीर ॥
चावँड राव जंमं जामि। साह मद्दन गूजर राम ॥ छं० ॥ १९९ ॥
गोविंद राव विकस्सिय आन। मानौं कोपियंते काल ॥
आवरि वीर च्यारों वीर। धारैं पग्ग दोक्कर धीर ॥ छं० ॥ २०० ॥
हक्कैं वीर जंपै वांनि। जुट्टे दूसं केहरि जानि ॥
चंपै मीर तुट्टैं भार। नंचैं कमध अट्ठ उक्कार ॥ छं० ॥ २०१ ॥
भग्गैं परैं के अगिवांन। वढी जैत राव चहुआंन ॥
सतै सहस लुथ्थिय भार। परि रन मीर धीर पथार॥ छं० ॥ २०२॥ रू०॥ ८६ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का शहाबुद्दीन का पीछा करना ॥

कवित्त ॥ परे मरि पथ्थार। साह हंक्यौ रा * चावंड ॥
संमुह गोरी चंपि। मनौं गज सेों गज आमंड ॥
चंद्र सेन पुंडीर। आइ सज्यौ दिसि वामं ॥
क्रमि सनमुष कैमास। चक्कि जद्दव राजामं ॥
पुडीर राइ चामंड भर। गहे दून दूनों सुकर ॥
द्वै दन्यौ जांम जद्दव उक्कार। भिलि चिहु चंपिय षंड भर ॥
छं० ॥ २०३ ॥ रू० ॥ ८७ ॥

८६ पाठान्तर-छंद उधोर। मंत। मट्ठ। दैंन। सुभर। हक्कैं। अगर। परें ॥ १९२ ॥ जुवांन। वह बह रूक हक्कैं हाक ॥ १९३ ॥ थरें। उठि। तमि। भारें। पट पट्टि। दहि ॥ १९४ ॥ सद्दं। नांम। यहे। अप्पने। तांम। हहं। द्रष्ट। संभारि। उठें ॥ १९५ ॥ अदभुत्त। तदभूत्त। भैयांन। मचि। कंकम। क्रमांन। रंभान। उठिय। जांनि ॥ १९६ ॥ तुटिय। तरें ॥ सांइं। उप्प। ऊपर। भृत्त। सांइ। क्रत्त ॥ १९७ ॥ लुथि। लुभिय। भिरें। सामंत। दुनों ॥ १९८ ॥ एकें। गजे। चावंड। जांम। गुजरा। रांम ॥ १९९ ॥ गोइंद राय। गोविंदराव। गोइंदराइ। विकसि। मानों। कोपीयंते। आंवरि। धारें। धारे। षग ॥ २०० ॥ हक्कें। बांनि। दम। जांनि। चंपे। तुट्टें। कमंध ॥ २०१ ॥ भग्गे। परें। अगिवांन। जैतरा। वहुवांन ॥ सतै। लोथीय। लुथ्थिय ॥ २०२ ॥

८७ पाठान्तर:-पथार। हक्यौ। * अधिक पाठ है ॥ गोरी। मनों। क्रमि सनमुष पुंडीर। मंत्रि जद्दव राजामं ॥ राय। राव। गहै। जांम। चंपियं ॥

सुलतान का पकड़ा जाना, उसकी सेना का भागना, और पृथ्वीराज की विजय ॥

कवित्त ॥ गह्यौ षंचि सुरतान । डारि अड्डौ है चामंड ॥
भगी सेन बेहाल । परे घन थान थान थड ॥
ग्रहन अग्र सुरतान । परे षां न्याजी गाजी ॥
मीर मान कम्मांन । पर्यौ आरब अरि भाजी ॥
को गनै षान मीर रु अवर । सहस सत्त तुट्टे सुधर ॥
नच्चै कमंध च्यालीस रस । जै लभ्भी चहुआंन भर ॥

छं० ॥ २०४ ॥ रू० ॥ ८८ ॥

दूहा ॥ मंडलीक षीची पर्यौ । तीकम त्यार सुबंध ॥
राम वाम पंमार परि । नचि सामंत कमंध ॥

छं० ॥ २०५ ॥ रू० ॥ ८९ ॥

सूर्योदय से एक घड़ी पांच पल पर लड़ाई आरम्भ हुई और चार घड़ी दिन रहे सुलतान पकड़ा गया, बीस हज़ार मीर और सात हज़ार हाथी घोड़े मारे गए, हिन्दू तेरह सौ मरे, तीन कोस में लड़ाई हुई, सुलतान को अपने डेरे में लाए ॥

कवित्त ॥ घरी एक पल पंच । सूर उगत सज्ज्यौ जुध ॥
घरी च्यारि दिन सेष । ग्रह्यौ सुरतान पान उध ॥
सहस बीस इक व्रन्न । परे रनमीर समथ्थं ॥
सहस्स सत्त हैगै । समुह षंडे धर तथ्थं ॥
सय तेर परे हिंदू सयन । कोस तीन रन अद्ध परि ॥
सुरतान गहिय चहुआन पहु । आयौ बज्जत बज्ज घर ॥

छं० ॥ २०६ ॥ रू० ॥ ९० ॥

८८ पाठान्तरः—सुरतांन । अडो । हैं । चामंडं । थांन थांन । सुरतांन । मांन । कमान । भागी । षांन । सु । तुट्टं । सधर । नंचं । लभी । चहुआंन ॥

८९ पाठान्तर—दोहरा । रांम । वाम ॥

९० पाठान्तर—उग्गत । गहचो । सुरतांन । षांनि । पांनं । वृन्न । समथं । सहस । समूह । षंडे । तथं । परें । सुरतान । चहुवांन ॥

रणक्षेत्र में ढूंढ़कर पृथ्वीराज का मीरहुसैन की लाश निकलवाना ॥

दूहा ॥ षेत ढुंढि प्रथिराज न्रप । बजे जीत रन तूर ॥
षां हुसेन घन घाय घट । उप्पारिग वर सूर ॥

छं० ॥ २०७ ॥ रू० ॥ ९१

षातुरि का जीतेजी हुसैन के साथ क़ब्र में गड़जाना

दूहा ॥ पर्यौ हुसेन सुषात्त सुनि । चिंतिय चित्त द्रमांन ॥
सजौं घोर हुस्सेन सथ । करौं प्रवेस अपांन ॥

छं० ॥ २०८ ॥ रू० ॥ ९२ ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन को पांच दिन आदर के साथ रखकर, तीन बेर सलाम कराके मीरहुसैन के बेटे ग़ाज़ी को उसको सौंपकर यह प्रण कराके कि अब हिन्दुओं पर न चढ़ूंगा, छोड़ना, शाह का ग़ाज़ी को लेकर कुशल से गज़नी पहुंचना ॥

कवित्त ॥ रष्षि पंच दिन साहि । अदब आदर बहु किन्नौ ॥
सुअ हुसेन गाजी सुपूत्त हथ्थैं ग्रहि दिन्नौ ॥
किय सलांम तिय वार । जाहु अप्पने सुथांनह ॥
मति हिंदू पर साहि । सज्जि आओ स्वथानह ॥
वैठाइ साह सुष्षासनह । लाय अप्प गाजी सुसथ ॥
संपत्त जाइ गज्जन पुरह । करी षेर उद्धार अथ ॥

छं ॥ २०९ ॥ रू० ॥ ९३ ॥

---

९१ पाठान्तर–प्रथीरान । उपारिग ॥

९२ पाठान्तर–द्रमांन । सजों । हुसेन । करों । अपान ॥

९३ पाठान्तर–सपुत्त । हथें । दिंनौ । सलांम । बिर । सजि । आयो । सथांनह । वैठाय ।

अमीरों का सुलतान के जीते जगते लौटने पर बधाई देना और कुशल पूछना ॥

दूहा ॥ और बधाई अंमरा । करी आइ सुरतांन ॥
अंन्य सवन कीनी षयर । पुजिय पीर ठटांन ॥ छं० ॥ २१० ॥ रू० ॥ ९४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हुसेन षां चित्ररेखा पात्र अधिकारे पातिसाह ग्रहन नाम नवम प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ९ ॥

सुषासनहि । लीय । मथ । जाय । गजनपुरह ॥

९४ पाठान्तर-उमरनि । उमरनि । आय । सुरतांन । अंन्य । पुजीय ॥

उपसंहारणी टिप्पण।
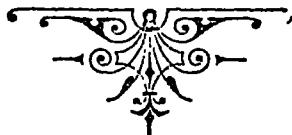
यह पर्व्व वा समय हिन्दुस्थान के इतिहास में हिन्दुओं की बादशाहत के तो नाश होने और मुसलमानी के स्थापित होने के सत्य मूल कारण को ज्ञात करानेवाला है तथा यह वह कारण है कि जिसको सब मुसलमानी तारीखों ने जान बूझकर छिपाया है। इस ही से इस में लिखे वृत्तादि का मुसलमानी तारीखों में मिलना कठिन हो रहा है। चंद कवि यह न लिख गया होता तो हमको इस समय वह ही ज्ञात होता कि जो मुसलमानी तारीखों में लिखा मिलता है। यद्यपि चंद पृथ्वीराज और हिन्दुओं का पक्षपाती कहा जा सकता है तथापि उसने मुसलमानों की भांति विपक्ष के वृत्तों को बिल्कुल छिपाया नहीं है किन्तु उनकी अपेक्षा उसने कुछ सविस्तर लिखा है कि जिनमें से अन्य बातों को छोड़कर ऐतिहासिक अंश हम पृथक् कर सकते हैं। जिस हुसैन की कथा का यह समय है वह कौन था? इस का स्पष्ट पता मुसलमानी तारीखवाले नहीं देते हैं, किन्तु यूरोपियन विद्वानों ने उसका पता लगाने में बड़ा परिश्रम किया है। जब कि मुख्य पुरुष का पता लगाने में इतनी कठिनता है तब अन्य योद्धादि के जो नामादि इसमें आये हैं उनका पता लगना कितना कठिन है। इस विषय में बहुत कुछ लिखने की अपेक्षा हम डाक्टर होर्नली साहब की एक ऐसा नोट नीचे प्रकाशित करते हैं कि जिस से इस हुसैन का पता और चंद का उसको शाहाबुद्दीन का बांधव बताना सत्य ज्ञात हो जाय। उक्त डाक्टर साहब का लिखना यह है

195. Hussena Khána (Husain Khán) appears to have been a son of the Mir Husain, who as related in Canto 8, was the primary cause of the invasions of India by Shahab-ud-din. Mir Husain or, as he is variously called Sháh Hussain or Husain Khán is there said to have been a cousin (bandhava) of Shahab-ud-din, a distinguished warrior, living at the Sháh's Court at Ghazni. The Sháh had a beautiful mistress, named Chitrarekhá, to the story of whom the 10th Canto is devoted. She was fifteen years old and very skilful in music, and was greatly beloved by the Sháh. Husin fell in love with her and she with him. One morning the Sháh sent for him and upbraided him on his conduct. But Husain continued to intrigue with Chitrarekhá, and was forced to leave the city. He carried off his family and property and Chitrarekhá, and fled to Prithiraj to Nagor. Prithiráj, after some hesitation, welcomed him and gave him asylum. Hearing of this, Shahab-ud-din was furious and sent messengers to demand Chitrarekhá from Husain; failing in which, they were to demand the expulsion of Husain from Prithiraj. Husain refused to send the woman back, and Prithiraj replied, he could not give up the man who came to him for refuge. Shahab-ud-din receiving this answer, at once prepared to invade India; Prithiraj, on his part also prepared for war. In the battle that ensued, Husain distinguished himself greatly, but lost his life Chamand Rae succeeded in capturing the Sháh, and thus the battle was decided in favor of Prithiraj After five days the Sháh was released and allowed to return to Ghazni taking Ghazi, Husain's son, with him, and pledging himself no more to make war upon the Hindús. The pledge, it need hardly be said, was not kept by the Sháh, and the implacable hatred, which these events had created in his mind was never appeased till it was slacked in the blood of Prithiraj and the destruction of his Empire. The capture ef the Sháh, here related, is the first of the seven times, he is said to have become the captive of Prithiraj. The next occasion of his capture is referred to in note 187; once more he is made captive as related in the present Canto. Chitrarekhá is said to have buried herself with the corpse of Husain. If the Husain Khán mentioned here, is the son of the elder Husain, who was taken to Ghazni by

Shahab-ud-din, he must have made his escape afterwards and returned to Prithiraj. The elder Husain is undoubtedly the same as Nasir-ud-din Husain, who is repeatedly mentioned in the Tabaqat-i-Nasiri (Major Raverty's translation, pp. 344, 361, 364, 365). He was the older of the two sons of Malik Shihab-ud-din, Muhammad, a younger brother of Sultán Bahú-ud-din Sām, the father of Sultán Shahab-ud-din. The elder Husain, therefore, was as Chand correctly states, a cousin (bandhava) of the latter. In the Tabaqat, it is true, it is said that Nasir-ud-din Hussain usurped the throne of his uncle Ala-ud-din during the latter's temporary captivity at the Court of Sultán Sanjar of Khorasan, and that he was murdered by his uncle's partisans on the latter's return from captivity (p. 364). But firstly, this story is contradicted by all other Muhammadan historians, who pass at once from Ala-ud-din to his son (see Major Raverty's foot-note, p. 364). Secondly, it is more probable that if there was any usurpation at all, it was made by Nasir-ud-din's father Muhammad, the younger brother of Ala-ud-din. The three brothers Saif-ud-din Súri, Baha-ud-din Sām, and Ala-ud-din Husain, succeeded each other on the throne of Ghor; it is natural, therefore, that during Ala-ud-din's captivity, the fourth brother Shiháb-ud-din Muhammad, should have occupied or attempted to occupy the throne. The writer of the Tabaqat must have confused father and son, as he has done also on other occasions (e. g., with regard to Ziya-ud-din Muhammad). Thirdly the description of Nasir-ud-din Husain's character: "he had a great passion for women and virgins, and had taken a number of the handmaids and slave girls of the Sultán's harem" (Tabaqat p. 364), agrees with Chand's story about his intrigue with Chitrarekhá and has evidently a confused recollection of it. There can, therefore, be little doubt, that Chand gives substantially the true account of Husain's fortunes. It may be added, that both the Tabaqat and other Muhammadan histories give a rather confused relation of an ancestor of this Husain (and of the Ghori royal family generally) who also bore the name of Husain or Hasan, having fled to India, and having lived some time at Delhi (see Tabaqat pp. 322, 323, 332). There is perhaps in this a confused recollection of the flight of Husain to Prithiraj, related by Chand."

अभी हमने इस कथा के नायक हुसैन का ही पता अपने पाठकों को बतलाया है किन्तु अन्य जितने योद्धाओं के नाम इस में आये हैं उनका हम पता मुसलमानी तारीखों में लगा रहे हैं और अन्य विद्वानों से भी उनके विषय में निश्चय कर रहे हैं, अतएव उनके विषय में फिर निवेदन करेंगे । अभी तो हमारा इतना ही काम है कि इस महाकाव्य को इतना शोध कर प्रकाशित करादें कि विद्वान इतिहास वेत्ता उसे अवलोकन कर सकें, इत्यलम् ॥

अथ आषेटक चूक वर्णनं लिष्यते ॥

(दसवां समय)

एक वर्ष बीत गया, परन्तु शहाबुद्दीन के हृदय में पृथ्वीराज का बैर सालता रहा ॥

दोहा ॥ वरष एक बीते कछुद । रीस रष्षि सुरतान ॥
उर अंतर अग्गी जलै । चित सल्लै चहुवान ॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥

एक महीना पांच दिन ग़ज़नी में रह कर फिर हुसैन का पृथ्वीराज के पास आप जाना ॥

दूहा ॥ मास एक दिन पंच रहि । बद्धि धाइ हुसेन * ॥
पग लग्गौ चौहान कै । राज प्रसन्निय वैन ॥ छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

फिर पृथ्वीराज का आषेटक लाड़ना और शहाबुद्दीन का चूक करने को आना ॥

दूहा ॥ फिरि आषेटक मंडि नृप । षट्टू वन घन तास ॥
दूत साहि साहाबदीं । आइ संपत्ते पास ॥ छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

---

१ पाठान्तर–बीतै । सकल । रषि । सुरतांन । अंदर । अगी । सालै । चहुआंन ॥
२ पाठान्तर–बधि । बंधि । धाय । धाइ । धाव । हुसेन । लग्यो । चौहांन । वैंन ॥
* यहां "हुसेन" से कवि का अभिप्राय हुसेन कथा नामक समय के चित्ररेखा को लानेवाले हुसेन के बेटे ग़ाज़ी हुसेन से है कि जिसको पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को हाथ पकड़ाकर ग़ज़नी भेज दिया था (हुसेन कथा रूपक ९३) परंतु शाह ने ग़ज़नी पहुंचकर उसे भी क़ैद कर दिया था सो वह जेल में कत्ल करके पीछे फिर १ महिने और ५ दिन वहां रह कर पृथ्वीराज की शरण में आ गया ॥
३ पाठान्तर–षटू । दत्त । दी । आय । संपत्ते ॥

नीतिराव क्षत्रिय का शहाबुद्दी को पृथ्वीराज के आषेट का समाचार देना ॥

कवित्त ॥ नीतिराव षचीय† । चरित ग्रेहं चहुआनं ॥
दिल्ली को वर भेद । लिषे कग्गद सुविहानं ॥
बरष उभै षट मास । करै सुबिहान पलान्यौ ॥
षट्टू बन घन राज । बीर आषेटक जान्यौ ॥
सामंत सूर सथ्थंन को । बर वीरं तन षेलइय ॥
दैवान जुद्ध चुहुआन भर । भिरि दुरजन भर ठिल्लइय ॥ छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

आषेट का अच्छा अवसर पा कर शहाबुद्दीन का भेद लेने को दूत भेजना, दूत का समाचार देना, शाह का सरदारों को आज्ञा देना कि छिप कर पृथ्वीराज पर चढाई करो ॥

दूहा ॥ इक तप पंग नरिंद कौ । अरू * सुनि अवाज सुरतान ॥
आषेटक प्रथिराज गय । षट्टवन चहुवान ॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ आषेटक बन तक्कि । दूत गज्जनैं सपत्ते ॥
साह जे.र साहाब । दिए पुरमान निरत्ते ॥
चसम चय गय मुक्कि । राज षट्टू बन पिल्लै ॥
सामं ब कै सथ्थ । झुझ्झ गुज्जर दिसि मिल्लै ॥
निकस्यौ द्रव्य साहाब दिय । बर नागौरं ग्रेह धन ॥
दूह घात साहि गोरी सुबर । करौ चूक कै सज्ज रन ॥ छं० ॥ ६ ॥ रू० ॥ ६ ॥

---

४ पाठान्तर-ग्रेहं । चहुवांनं । कग्गर । कोपि सु । बिहांन । पलांन्यो । पटु । जांन्यो । सथह । सथां । कौं । को । षेलईय । दैवांन । दैवानं । चहुआंन । दुजन । ठिलइय । ठिलईय ॥

† नीतिराव क्षत्रिय नामक मुक़्बिर था कि जो पृथ्वीराज के यहां की खबरें शहाबुद्दीन को दिया करता था । वाह यह कैसा देशहितैषी पुरुष था ! ! !

५ पाठान्तर-कों * अधिक पाठ है ॥ सुरतांन । पृथ्वीराज । षटू । चहुवांन ॥ † यह रूपक सं॰ १६४७ की प्रति में नहीं है ॥

६ पाठान्तर- गजनै । संपत्ते । दीए । फुरमांन । षटू । पिले । सथ । झुझ । गुजर । मिले । द्रव । दी । नागौर । सजि ॥

हाजी खां आदि का तयारी करना ॥

चौपाई ॥ आपेटक षट्ट चहुवानं । कहैं पूत से सुप सुविहानं ॥
हाज़ी षां गष्पर सुकनाजी । मंझौ चूक महंमद गाजी ॥
छं० ॥ ७ ॥ रू० ॥ ७ ॥

शहाबुद्दीन का आज्ञा देना कि इस बात का भेद लो कि कितनी सेना चौहान के साथ है क्योंकि बिना भेद कुछ काम नहीं बनता ॥

कवित्त ॥ सें बुझ्झै सुरत्तान । दूत पच्छिम सुबिहानं ॥
आषेटक प्रथिराज । सथ्थ कित्तक चहुआनं ॥
तुम राजन निमांन । राज बिब्बेक परष्षौ ॥
तुम * स्वामी ध्रंम हग स्वामि । स्वामि द्रोही तन लष्यौ ॥
जंगली न्रपति जंपहु चरित । कल बल मंत सु किज्जियै ॥
तत्तार षांन पुरसान षां ॥ हिंदू भेद सुलिज्जियै ॥छं०॥ ८ ॥रू०॥ ८ ॥

कवित्त ॥ भेद द्रुग्ग भंजियै । भेद दुज्जन दल भंजै ॥
राजभेद बंधियै । भेद देवन ग्रह रंजै ॥
मंच सोइ जिन भेद । भेद बिन मतौ न होई ॥
भेद बंध बल सोइ । भेद देषै सब कोई ॥
संग्रहौ भेद चहुआन कौ । सुष उचार जो जंपियै ॥
तत्तारषांन पुरसान षां । बलहन दुज्जन चंपियै ॥छं०॥ ९ ॥रू०॥ ९ ॥

सब सरदारों का मत होना कि बिना धोखा दिए चौहानों को जीतना कठिन है ॥

कवित्त ॥ चहुआन जम वान । गेनं सुक्कतें सुकुट्टै ॥
कुटिल दिष्ट जिहिं फिरै । तेज अरियन दल षुट्टै ॥

---

८ पाठान्तर-बुझैं । सुरतांन । सें बुझै साहाब । साह पछिम सुरतांनं ॥ प्रथीराज । सथ क्तिक । केतक । चहुवांनं । बिवेक । परषौ । * अधिक पाठ है ॥ स्वांमि । द्रग । स्वांमि । सामि । नह । लषौं । ततार । पुरसांन ॥

९ पाठान्तर-द्रुग । भांजीयै । दुजन । बंधीयै । ग्रह । सोई । सोय । देषे । चहुवांन । जंपीयै । ततार । पुरसांन । दुजन । चंपीयै ।

प्रबल तेज अस हेज । जुद्ध दैवान देव गति ॥
एक लष्ष लेषियै । एक लषियै लष्षन भति
इह जानि चूक चिंत्यौ न्टपति । इहै बत्त सुविहान कौं ॥
तत्तार षांन निसुरत्त षां । पूछि षांन षुरसान कौं ॥

छं० ॥ १० ॥ रू० ॥ १० ॥

कवित्त ॥ षां षुरसान ततार । षांन अरदास समंपिय ॥
चूक मंडि सुरतान । थान चहुआन सुथप्पिय ॥
हाजी षां गाजी सु । बंध निज बंधी गष्षर ॥
सुब्बिहान साहाब । साहि सोरं दल पष्षर ॥
निज षान षान षुरसान पति । हथ्थ साहि बल बधियै ॥
मिलि मीर मसूरति ततं किय । चूक साहि अरि संधियै ॥

छं० ॥ ११ ॥ रू० ॥ ११ ॥

पृथ्वीराज का बेखटके आनन्द से आषेट खेलना ॥

दूहा ॥ रंग रमै राजान बन । नहीं संक मन मांहि ॥
तरु वेली घन गह बरिय । सुभि जल निरमल छांह ॥

छं० ॥ १२ ॥ रू० ॥ १२ ॥

पृथ्वीराज के आषेट का वर्णन ॥

कवित्त ॥ सतह पंच दीपीय । एण फंदैत पंच सौ ॥
सहस स्वान दस डोरि । अहै पंचान पंच सौ ॥
पंच अग्ग पंचास । करू चाव दिसि सज्जे ॥
कुही बाज उत्तंग । पंष आघात सुबज्जे ॥

---

१० पाठान्तर–चाहुआंन । जमवांन । सुकतैं । लह । लष । लेषीये । एक लेषिये । जांनि । चिंत्यों । इहैं । विहांन । ततार । निसुरत । पुछि । पुरसांन । कों ॥

११ पाठान्तर–षुरसांन । सुरतांन । थांन । चहुवांन । संबंध । सबंध । मिबंधी । गषर । सुबिहांन । बिहांन । पषर । पांन । षांन । षुरसांन । बंधीये । अर । संधीये ॥

१२ पाठान्तर–राजांन । लर । बरीय । निर्मल ॥

परगोस सिंह पंजर गुहा । अनुष धनंप्रिय घोर घन ॥
प्रथिराज राज मंडै रवनि । आषेटक पट्टू सु बन ॥
छं० ॥ १३ ॥ रू० ॥ १३ ॥

आठ हजार सेना और सरदारों के साथ शहाबुद्दीन का पट्टूबन में छिपकर पहुंचना ॥

कवित्त ॥ पां ततार पुरसांन । पांन हाजी पां गाजी ॥
गष्षर पष्षर साह । मीर महमद पां षाजी ॥
अष्ट सहस असवार । तुंग तिय अग्ग बनाइय ॥
पेसकसी पतिसाह । कूर पर पंचन आइय ॥
सेनाह सज्जि अंदर सिलह । नह पिषै जासें रँचह ॥
करि चूक आइ पट्टू बनह । प्रथीराज चहुआन जहँ ॥
छं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ १४ ॥

सबेरे के समय चढ़ाई करने का विचार करना ॥

कवित्त ॥ दस अराक ताजीय । पंच पुरसान कमानं ॥
तक्यौ साहि गज्जनै । चिंति पट्टू चहुवानं ॥
छल सज्यौ बल हारि । घात नर घात निहानं ॥
लग्यौ चंपि सुरतान । बैर हुस्सेनह षानं ॥
सुविहान आन चहुआन सैं । लै फुरमान समान धरि ॥
सुविहांन हिंदु पुज्जै नहीं । जमन जोर बल बहुत करि ॥
छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ १५ ॥

---

१३ पाठान्तर–तहांस । रुण । एन । अंच । करु । चावद्दिसि । सजे । उत्तंग । वने । सीह । प्रथीराज । मंडे । वरन । पटू । स ॥

१४ पाठान्तर–पुरसांन । पांन । गषर । पषर । गाजी । सन्यह । सजि । नहिं । पिष्पै । रचह । चहुआंन । जह ॥

१५ पाठान्तर–अेराक । पुरसांन । कमांनं । पटू । चहुआनं । निआनं । सुरतांन । हुसेन सु पांनं । विहांन । आंन । चहुवांन । सों । फुरमांन । बिहांन । पुज्जे । नही । जवन । जोर ॥

पांच सरदारों को साथ लेकर आषेट को पृथ्वीराज का निकलना॥

कवित्त ॥ आवेटक संभरिय। राज मेलान न आइय॥
हस्सम हय गय मुक्कि। तक्कि षट्ट बन धाइय॥
के डंका के हक्कि। तथ्थ पक्खिवानह लग्गा॥
सथ्थ पंच सामंत। ब्लल चहुआन विलग्गा॥
पंमार सलष अलषह बलिय। चाहुआन रघुवंस हिम॥
रुंध्यौ नरिंद चालुक्क सम। सिंघ विंटि वागह जिम॥
छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ १६ ॥

कवि चन्द का कहना कि हमें शहाबुद्दीन के आने का सन्देह है और खोज करने पर चारों ओर यवनों को पाना॥

कवित्त ॥ करि विंटिय चहुआन। षिप्र सब सस्त्र समाहिय॥
सुब्बिहान फुरमान। बंचि कविचंद सुनाइय॥
सुबर जोर साहाब। साह से देस सुरंगा॥
तोन कमान प्रमान। हए दस हथ्थ तुरंगा॥
छिन एक छिमा छिम रष्यकें। चावद्दिसि न्रप विंटयौ॥
तन तोन झारि संमुह भए। राज अदब्ब सुमिंटियौ॥
छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ १७ ॥

शाह की ओर से आक्रमण आरम्भ होना॥

कवित्त ॥ चंपि लहट्टिय हथ्थ। जमन ठट्ठे चावद्दिसि॥
चूक चिंत चहुवान। कन्ह कढ्ढी सु बंक असि॥
हाजी षान गष्बर नरिंद *। षंति षग षोलि विहथ्थं॥
तेग झार विझ्झार। सलष घल्ली गल बथ्थं॥

---

१६ पाठान्तर-आईय। हसम। तकि। षटू। धाईय। तथ। पषिवांनह। लगा। सथ। चहुवांन। बिलगा। चाहुवांन। चाहुआंनि। रुध्यौ। चालुक। वींटि॥

१७ पाठान्तर-वंटिय। चहुआंन। सु विहांन। फुरमांन। बिंचि। साह संदेस सुरंगा। तोंन। कमांन। प्रमांन। हय। छिमाछिम पर्कारिकें। चावदिसि। वीटयो। अदब। मिटयो॥

धरि अह अह वीभच्छ भय । जरिग भयानक वीर सम ॥
दुहुलोह कढ़ि परि थार तें । सूक चिंति कुव्वौ विभ्रम ॥
छं० ॥ १८ ॥ रू० ॥ १८ ॥

युद्धारम्भ युद्ध वर्णन ॥

छंद विराज ॥ धरं धार कढ्ढी । घनं बीज वढ्ढी ॥ रसं रोस थट्टी । मुषं मुक्क अट्टी ॥ छं०॥१९॥
परे चट्ट पट्टी । मनों मद्द जट्टी ॥ उनं तेग कढ्ढी । जनों वज्र टट्टी ॥ छं० ॥ २०॥
जमं दढ्ढ दट्टी । मनों नोन अट्टी ॥ उक्कट्टे उक्कट्टी । घनं घट्ट घट्टी ॥ छं० ॥ २१ ॥
कुलालं उलट्टी । उतारंत मट्टी ॥ रटें मार मारं । सुरं आसुरारं ॥ छं० ॥ २२ ॥
परं ते पथारं । कुठारं करारं ॥ वले घाव तारं । किनारं उघारं ॥ छं० ॥ २३ ॥
दूसो जुद्ध आरं । मची कूह कारं ॥ पर्यो पंच भारं । ....
छं० ॥ २४ ॥ रू० ॥ १९ ॥

पांच सरदारों का पृथ्वीराज की रक्षा में चारो ओर हो जाना और इन सभों का यवनों के बीच में घिर कर युद्ध करना ॥

कवित्त ॥ पंचानन भैपंच । स्वामि ओडन थप्प रप्पे ॥
इक्क स्वामि रन अग्ग । इक्क उभ्भे दस पिप्पे ॥
सार धार प्राचार । वीय निय उप्पर षाचै ॥
मनों तत्त घरियार । मेघ जल वुट्ठ प्रवाचै ॥
दनु देन जप्प गंध्रव्व जय । गन हय गय उच्चार हुअ ॥
सुरतान सेन भुक्कि मांहि परि । धनि नरिंद सोमेस सुअ ॥
छं० ॥ २५ ॥ रू० ॥ २० ॥

---

१८ पाठान्तर–हय । यवन । ठठे । चावद्दिसि । चिंति चहुवांन । पां । गपर । * अधिक पाठ है ॥ विहथं । विभार । घला । वथं । वीभछ । भयांनक । दुहुल्लाह । कढि । ते ॥

१९ पाठान्तर–छंद रसावला । धर धारं कटी । वटी । थटी । मुछ । अटी ॥ १९ ॥ परें चटपटी । मद जटी । कढी । तटी ॥ २० ॥ दढ दढी । लौन अटी । उछटी । घट घटी ॥ २१ ॥ कलालं । उलटी । मटी । आतुरारं ॥ २२ ॥ धाव ॥ २३ ॥ पस्यो । युद्ध ॥ २४ ॥

२० पाठान्तर– भैं । उंडन । रपं । एक । रिन । एक उभे । पपं । तीय । उपर । तत । वुट्टि । जरक । गंध्रव । गांन । उचार । सुरतांन ॥

पृथ्वीराज का कमान सँभाल कर यवन सरदारों को गिराना ॥

कवित्त ॥ चाहुआन कमान । पंच लीने सु पंच सर ॥
बष्षर पष्षर सौ पलान । असु ढ्यौ मीर धर ॥
दूजै बान तकंत । तक्कि भंज्यौ षां गोरी ॥
तीजै बान तकंत । साहि भंजी बिय जोरी ॥
कंमान बान चवहथ्थ भिरि । षिनि किरवान विरान कढि ॥
कटि बीर अंग फरकं पहर । रह्यौ नट्ट कुट वसं चढि ॥
छं० ॥ २६ ॥ रू० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का तलवार लेकर यवनों का विनाश करना ॥

कवित्त ॥ षां गाजी चहुआन । दिष्ट मरदां दो उट्ठी ॥
दंग लग्गि जनु अग्ग । घृत्त धारा हर बुट्ठी ॥
दूनों हथ्थ उतंग । तेग कढ्ढी दुहु वंकी ॥
मनु घन घटा मल्हार । बीज कुंडली झलंकी ॥
चहुआन तुच्छ ढक्कर बहिय । ढरिग मीर बिय सिरदस्यौ ॥
जांनेकि वज्र वज्री सुपति । गिरनि छेद हथ्थह धस्यो ॥
छं० ॥ २७ ॥ रू० ॥ २२ ॥

सुलतानी की ७५५ सेना का कट कर आगे गिरना ॥

अरिल्ल ॥ सुबर सेन संमुष सुरतानं । धेन वच्छ परि जन्न करि जानं ॥
सत्त पंच परि उप्पर पंचं । तुत्यौ सार धार करि रंचं ॥
छं० ॥ २८ ॥ रू० २३ ॥

चालुका का घोर युद्ध करके वीरता के साथ मारा जाना ॥

कवित्त ॥ जूह मंत संभूह । कूह आषेटक बज्जिय ॥
बर चालुक्क नरिंगे । चंपि चावहिस गज्जिय ॥

---

२१ पाठान्तर कमान । पंचि । सपंच । बषर पषर । पलांन । धस्यौ । बांन । तक्कि । बांन । कंमांन । बांन । हथ । किरवांन । विरांन । भुटि । फरकुप्प रह । नट ॥

२२ पाठान्तर–चहुआंन । दिष्टि । दों । उठिय । अगि । घृत । बुठिय । हथ । दुहुं बंकिय । मनों । झलकिय । चहुआंन । तुछ । ढठ । ढरिग । गमीर बीय शिर । सिरछु । ढुयौ जांने । हथह ॥

२३ पाठान्तर–बछ । ज्यंनं । सत । उपर । करिं ॥

छंडि षान पछिवान । ईडि सैंधव झुकि घाइय ॥
गही सेन सुरतान । तेज बाजी जस धाइय ॥
विस्साय धाय तन झंझरिय । तुटि पंजर वर धुक्किधर ॥
कटि घाइ लष्प पंचौ प्रगट । उड़ि हंसव संमान सर ॥

छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ २४ ॥

कवित्त ॥ सोलंकी सिर मौर । देह अनहल पुर रष्पी ॥
दोऊ दीन पष्पर प्रमांन * । कित्ति दुअ पष्पह भष्पी ॥
धूप दीप माषा * सुगंध । रंभ रानी मिलि गावै ॥
नाग पती सुर बधू । केलि करि कलस वँदावै ॥
लग्यौ भरम द्रिगपाल धर । जंम भरम जग्गे सुभर ॥
कविचंद मरन चालुक्क कौ । मस्यौ न को रवि चक्कतर ॥

छं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ २५ ॥

क्रोध करके पृथ्वीराज का तलवार से युद्ध करना, पृथ्वीराज की सब सेना का इकट्ठा हो जाना ॥

कवित्त ॥ सुधर जुद्ध अवरुद्ध । जुद्ध कटि सिद्ध समानं ॥
मार मार उच्चार । तेग कढ्ढी चहुआनं ॥
तुटि सिषर उर फुट्टि । वीर अद्धो अध झुल्लै ॥
मानुं तुला की डंडि । वीर बानावलि तुल्लै ॥
आषेट भग्गि एकठ्ठ हुअ । सवै सेन प्रथिराज जुरि ॥
बाजिद षान गष्पर गद्दर । वांम कोद उभ्भै उसरि ॥

छं० ॥ ३१ ॥ रू० ॥ २६ ॥

---

२४ पाठान्तर-जूहं मत । चालुक । दिसि । षांन । पछिवांन । संधव । धाईय । सुरतांन । घाईय । धाइ । झझरिय । लष । उड्डि । समांन ॥

२५ पाठान्तर-रष्यिय । दोउ । पषर । * अधिक पाठ है ॥ किति दुअ दीनह भषिय । * अधिक पाठ है ॥ बंदावै । भरंम । दिगपाल । चालुक । रथतर ॥

२६ पाठान्तर-युद्ध । युध । उचार । चहुवांनं । त्रुटि । सिष्पर । धर झुलै । मनौं । दंड । बांनावली । तुलै । एकठ । प्रथीराज । बाजिद षांन गषर । बांम । उभै । उचरि ॥

सुलतान का बढ़कर लड़ना, दो घड़ी घोर युद्ध होना ॥

कवित्त ॥ रुप्यौ खेन सुरतान। राज चढ़ि नंषि सुरंगं ॥
कै तिमर भग्ग तपभांन। सिंह चक्कै कि कुरंगं ॥
तव * रुप्पौ राव सिंघरिय। लाज सुविहान षटक्किय ॥
सस्त्र तेज बल बंधि। खेन चहुआंन हटक्किय ॥
द्वै घरिय टोप उप्पर बज्यौ। सार तिनंगा नारयौ ॥
जानें कि तिंदु दारुन जरै। जैत षंभ पर झारयो ॥
छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ २७ ॥

दूहा ॥ हय मुक्क्यौ सिरदार दुहु। देखि भयौ न्टप चूक ॥
घरी एक झरि सार बहु। ज्यौं अगि संजुत्ता जक ॥
छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ २८ ॥

यवन सरदारों का माराजाना, पृथ्वीराज की विजय ॥

कवित्त ॥ जुद्ध जुरे सिरदार। राउ रंघह वाजी दह ॥
पालि बथ्थ गल हथ्थ। हडु भंजिय रग गूदह ॥
ज्यौं मुष्टिक चानूर। कन्ह भंजिय अष्षारह ॥
उत्तमंग लै हूर। सूर अपछर उप्पारह ॥
वाजींद षांन झोरी धरिय। धाउ पंच रंघर न्टपति ॥
रष्षै जु सांइ मिट्टै कवन। निमष मांहि उतपति षपति ॥
छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ २९ ॥

हारकर शहाबुद्दीन का ग़ज़नी की ओर लौट जाना ॥

दूहा ॥ चूक चूक भय असुर सुर। फिरि गज्जन दिसि षांन ॥
हारि जुआरी ज्यौं चलै। कर घटै कर जान ॥
छं० ॥ ३५ ॥ रू० ॥ ३० ॥

---

२७ पाठान्तर-सुरतांन। बाजि चढि। भांन। हक्के। * अधिक पाठ है। रिघरिय। विहांन। चहुआंन। हटक्किय। घरीय। जानें ॥

२८ पाठान्तर-दुहुं। अगनि। उक ॥

२९ पाठान्तर-युद्ध। जुरै। सिरहार। रांव। बाजींदह। बथ। गर। हथ। रंग। अषारह। उपारह। वजींद। घांउ। घाव। यु। सांर ॥

३० पाठान्तर-गजन। षांन। युवारी। चले। घटे। जांन ॥

चौहान की विजय पर चन्द कवि का जै जै कार करना ॥

दूहा ॥ जीति राज चहुवांन वन । आषेटक असुरान ॥
जै जै जै कविचंद कहि । चंद सूर बष्पान ॥

छं० ॥ ३६ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके राजा
चहूवन आषेटक रन सुरतांन चूक करनं नाम
दसम प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १० ॥

३१ पाठान्तर–चहुवांन । असुरांन । बषांन ॥

उपसंहारणी टिप्पणी ।

यह समय भी हमारे स्वदेशी इतिहास के लिये बहुत उपयोगी है। क्योंकि एक लड़ाई तो "हुसेन कथा" नामक समय में रासो के अनन्द संवत् अर्थात्, पृथ्वीराज के तृतीय साक ११३५ माघ शुक्ला १३=११३५+९० । ९१=१२२५ । २९ वर्त्तमान विक्रमी में आगे हो चुकी थी और दूसरी उसके एक बरस पीछे यह "आखेटक चूक" नामक हुई है। इस लड़ाई के होने का समय कवि ने स्पष्ट न बताकर प्रथम रूपक में–बरप एक बीते कलह–से पहिली के एक वर्ष पीछे इसका होना वर्णन किया है अर्थात् पहिली के सं० ११३५+९० । ९१=१२२५ । २९ में एक जोड़ने से ११३५+१=११३६+९० । ९१=१२२६ । २७ वर्त्तमान विक्रमी होता है। वैसे ही "अखेटक" शब्द के नियत समय के अर्थ से "फाल्गुण" मास का होना भी प्रकाश किया है। प्राचीन समय में हमारे देशी राज्यों में वर्ष भर के अनेक त्योहारों में फाल्गुण मास में जिस दिन ज्योतिषी आखेट का महूर्त्त देते थे उस दिन एक बड़ा त्योहार मनाया जाता था। इसीसे यहां कवि ने "आखेटक" शब्द से फाल्गुन का संकेत अर्थ में माना है। अब यह त्योहार लुप्त सा होता चला जाता है, तथापि वह प्राचीन राज्य उदयपुर में इस समय तक भी माना जाता है और उसको वहां "अहेरिया" वा "महूरत का शिकार" करके कहते हैं। और उसका सविस्तर वृत्तान्त कर्नैल टोड साहब ने अपने परम प्रसिद्ध ग्रंथ "राज स्थान" में यह लिखा है ॥

"The merry month of Phalgun is ushered in with the Ahairea, or spring-hunt. The preceeding day the Rana distributes to all his chiefs and servants either a dress of green, or some portion thereof, in which all appear habited on the morrow, whenever the astrologer has fixed the hour for sallying forth to slay the boar to Gouri, the Ceres of the Rajpoots: the Ahairea is therefore called the *Mahoorut ca sikar* or the chase fixed astrologically. As their success on this occasion is ominous of future good, no means are neglected to secure it, either by scouts previously discovering the lair, or the desperate efforts of the hunters to slay the boar when roused. With the sovereign and his sons all the chiefs sally forth, each on his best steed, and all animated by the desire to surpass each other in acts of prowess and dexterity. It is very rare that in some one of the passes or recesses of the valley the hog is not found; the spot is then surrounded by the hunters, whose vociferations soon start the *dhokra* and frequently a drove of hogs. Then each cavalier impels his steed, and with lance or sword, regardless of rock, ravine, or tree, presses on the bristly foe, whose knowledge of the country is of no avail when thus circumvented, and the ground soon reeks with gore, in which not unfrequently is mixed that of horse or rider. On the last occasion, there occurred fewer casualties than usual, though the Chandawut Hamira, whom we nicknamed the "Red Riever," had his leg broken, and the second son of Sheodan Singh, a near relation of the Rana, had his neighbour's lance driven through his arm. The young chief of Saloombara was amongt the distinguished of this day's sport. It would appal even an English fox-hunter to see the Rajpoots driving their steeds at full speed, bounding like the antelope over every barrier, the thick jungle covert, or rocky steep bare of soil or vegetation." with their lances balanced in the air, or leaning on the saddle bow slashing at the boar".

TOD'S RAJASTHAN, VOL. I, PAGE 435.

और उन्होंने इस वृत्तान्त में के "अहेरिया" शब्द पर जो टिप्पण दी है उसमें पृथ्वीराज जी के इस आखेटक के विषय में यह कहा है–

"In his delight for this diversion, the Rajpoot evinces his Scythic propensity: The grand hunts of the last Chohan emperor often led him into warfare, for Prithiraj was a poacher of the first magnitude, and one of his battles with the Tartars was while engaged in field sports on the Ravi."

TOD'S RAJASTHAN, VOL. I, PAGE 485.

यद्यपि रूपक ४ के वाक्य–वरष दुभै षटमास–का अर्थ दो वर्ष और छ महिनों का भी हो सकता है, परन्तु प्रथम रूपक के वाक्य–वरष एक बीते कलह–की उस के साथ संगति मिलाने से उस का अर्थ एक वर्ष का ही होता है अर्थात्, वर्ष अर्थात् दो छमाही। सो पाठक विचार देखें ॥

जैसे "हुसैन कथा" वाली रासो की संवत् ११३५ की लड़ाई का कारण हुसैन और चित्ररेखा का पृथ्वीराज के शरण आना था; वैसेही इस आखेटक चूक की लड़ाई का कारण उनके बेटे ग़ाज़ी हुसैन का रूपक २ के अनुसार एक महिने और पांच दिन पीछे फिर पृथ्वीराज जी के पास चला आना है ॥

तथा रूपक ४ एक अपूर्व्व वृत्त प्रकाशित करता है कि हमारे एक हिन्दू–नितिराव खत्रीय–दिल्ली में विराजे हुए हिन्दुओं की बादशाहत नाश करवाने को पृथ्वीराज जी के यहां की मुक़बरी शहाबुद्दीन को लिखा पढ़ा करते थे। ऐसे जीव भी धन्य हैं !!!

अथ चित्ररेषा समयौ लिष्यते ॥

(ग्यारहवां समय ।)

चित्ररेखा की उत्पत्ति पूछना ॥

दूहा ॥ पुच्छि चंद वरदाइ नैं । चिचरेष उतपत्ति ॥
पां हुसेन षावास कहि । जिम लीनी असपति ॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥ *

शहाबुद्दीन के विक्रम का वर्णन ॥

कवित्त ॥ गज्जनेस अवदेस । साहि पल्लांन कुसावं ॥
वदक खामि भेहरा । छंडि गघ्घर छिति आवं ॥
जल जोवन साहाव । दीन दुरँगे करि गिन्निय ॥
हिंदवान मेछान । थान थानह करि लिन्निय
बजि विषम वाइ सुरतान प्पन । साहि वदीं सव दीन पति ॥
अनसंक कंक मनु लंकपति । जनु जोवन तन रवित पति ॥
छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

शहाबुद्दीन का अरब ख़ां पर चढ़ाई करने की इच्छा कर सरदारों से पूछना ॥

कवित्त ॥ दिसि आरब सुरतांन । दिष्टि आलोकि वंक सुभ्र ॥
आकंपे दिसि उल्लि । अचल चालंत चित्त हुअ ॥
सज्जि सेन चतुरंग । अंग अनभंग विचारिय ॥
बोलि षान षुरसान । षान जित्ते अधिकारिय ॥

---

१ पाठान्तर—पुछि । बरदाईनें । उतपति । लीनिय । अमपति ॥ * इस समय में कवि ने हुसेन षां के कहे अनुसार जैसे शहाबुद्दीन ने चित्ररेषा को प्राप्त किया था सो वर्णन किया है ॥
२ पाठान्तर—पलाणि । पलांन । कसंबि । बदकर । सांमि । दुरंगे । गिन्नीय । गिनिय । हिंदवांन । मेछांन । थांन । लिंनीय । सुरतांन । सहावदी । मनौं । जुन । जर ॥

मारूफ षान तत्तार षां । षान षान खेरिन सुवर ॥
काली बलाइ कलहंत रिन । बोलि बीर पच्छे सुनर ॥
छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

अरब खां नवता नहीं है इसलिये उस पर चढ़ाई होनी चाहिए यह आज्ञा दी ॥

दूहा ॥ * आरब पति अर सिंध तट । विन सलाम सुरतान ॥
तिन उप्पर सज्जिय सयन । कहर छंडि फुरमांन । छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

चढ़ाई की सेना की संख्या ॥

कवित्त ॥ सत्त पंच वाहन्न विसाल * । लष्ष दुइ तुरी लषिन्ना ॥
आरब्बी सैं पंच । लष्ष इक सोधि सुलिन्ना ॥
काविल्ली उर तेज । रोम रोमी पंजाबी ॥
लोहानी जल वान । सेष गोरी आरब्बी ॥
लष एक लष्ष लष्षां मुहा । पारेवह जिन पंष लिय ॥
चालंत कटक गोरी प्रबल । भूमी चाली पंचनिय ॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

सेना की धूम का वर्णन ॥

छंद भुजंगी ॥ चली पंषिनी सथ्थ चौसठ्ठ थानं । चली अग्ग पंती सुदंती प्रमानं ॥
तिनं दंत कंती तडित्ता समानं । .... छं० ॥ ६ ॥
धजा पंति फैरंत आढव्व भारं । झवक्कैं मनौं सूर संगी कि सारं ।
बजै चंग चंबाल गज्जै कहरं । बज्जैं नद्द सद्दं पपीहं दद्दूरं ॥ छं० ॥ ७ ॥
धरं बंक थट्टौर उद्धौर घंटं । बरं दैर अंजे धरै षिच दट्टं ॥
अगें चल्लियं अग्गिवानं समीरं । तिनं पुठ्ठ पुरसान षां बंधि भीरं ॥ छं० ॥ ८ ॥

---

३ पाठान्तर-दिसि बर आरब साह । द्रिष्ट । सुय । डुलि । सजि । विचारिय । षांन । षुरसांन । पांन । जिते । अधिकारीय । मारूफ । पांन । ततार । पांन षांन । रन । बलाय । पछैं ॥

४ पाठान्तर-सिद्ध । नट । सलांम । सुरतांन । उपर । सजिय । फुरमांन ॥ * अरब खाँ नामक कोई छोटा राजा वा सरदार उस समय सिंधु तट पर के देश का पति था कि जिसके पास चित्ररेखा थी ॥

५ पाठान्तर-सत । वाहन । * अधिक पाठ है ॥ लषु । दोइ । लषीना । आरबी । पांच सैं । लष । लीनां । कविली । बांन । शेष । गौरी । आरबी । लष । लषां । मुहां । पारेवाह । षलिय । गौरी । पंचनीय ॥

धरै छत्र सीसं बिराजंत गोरी। पिखै पंति देवं बिचें किद्ध चोरी॥
बक्कीयान थानं छुटें मानु पट्टं। जगी जोग जालं उलट्टै सुथट्टं॥ छं०॥ ९॥
चलै आरवं उप्परे साहि सज्जी। कमट्ठं पिठं उथ्थलं सेस दज्जी॥
बिंटे गट्ठ गोहार केथान थानं। मनों सागरं वीच बड्डानलानं॥ छं०॥ १०॥
बजे थान थानं सुरंवान तूरं। गहे पग्ग मीरं बदै मुप्प कूरं॥

शाह का निसुरति खां को अरब खां के पास भेजना कि चित्ररेषा को देकर पैर पर गिरे तो हम क्षमा करदें॥

बरं मोकले मेलनि स्नुत्ति पांनं। कहै आरवं लग्गि पायं विहानं॥ छं०॥११॥
दियौ चित्ररेषा लियौ दंड दोनं। भिरै षेत मोसौं कहूं अज्ज कोनं॥
परयौ तापना आरवं निट्ठ निठ्ठं। गयौ कादरं धीरजं दिट्ठ दिट्ठं॥ छं०॥१२॥

अरब खां का सादर आज्ञा मानना और चित्ररेषा को देना स्वीकार करना॥

दियौ जाइ फुर्मान निस्सुत्त ईसं। लियौ आरवं आदरं नाइ सीसं॥
दई चित्ररेषा सिनावी सुडोरं। तिनं उप्परं गुंज भौंरान कोरं॥ छं०॥ १३॥
हूकं सेत हथ्थी ढु आवें अराकी। पलंगी रजक्की धरें अंत पाकी॥
सतं एक सष्षी दई चित्ररेषा। बनी सुद्ध बानै उरं मद्धि नेषा॥
छं०॥ १४॥ रू०॥ ६॥

---

६ पाठान्तर-सय। चोसठि। थानं। अंग। सदंती। समानं। तडिता॥ ६॥ पत्ति। फहरंत। भादवा। झवक्कै। मनों। गजै। बजै॥ ७॥ पट्टोर उघोर। घटं। बर। बटं। अगे। चलियं। अगिवानं। पुठि। पुरसांन॥ ८॥ धरें। गौरी। थानं २। छुटे। पट्ट। मांनो। न उट्टै सुरानें॥ ९॥ उपरें। सनी। कमठं। उथल। दमी। बिंटे। गठ। के। थांन थांनं। बडवानलानं॥ १०॥ थांन थांनं। गहैं। मुप। निसुरति। पांनं। कहैं॥ ११॥ भिरें। मोसूं। कहैं। कौनं। तापनां। निच निठं। दिठि दिठं॥ १२॥ फुरमांन। निसुरत्त। नांय। शीशं। सडोरं। उपरं! भवरांन। भोरं॥ १३॥ हथी। आरब। औराकी। रजकी। सष्पी। बांने॥ १४॥

निसुरति षां का अरब खाँ को शाबसी दे कहना कि तुमने शाह के बचन माने और हिन्दु धर्म्म को न मान कर म्लेच्छ कुल कर्म को धारण किया सो ठीक किया ॥

कवित्त ॥ कह्यौ साहि जो बचन। सोइ तुम काज सुधार्‍यौ ॥
तेइ बचन सति होइ। हिंदु ध्रम्मं न बिचार्‍यौ ॥
म्लेछ धर्‍यौ कुल क्रंम। जोगि ग्यानह जिम धारहि ॥
सेवक मत्त सुभाइ। देन आलम नाकारहि ॥
षुरसान षान सुरतान पति। दल बद्दल पावस मिल्लिग ॥
चतुरंग सज्जि चैारंग मिलि। सिद्ध चरित सिद्धन चल्लिग
छं० ॥ १५ ॥ रू० ॥ ७ ॥

शहाबुद्दीन का सेना समेत सजकर चलना ॥

कवित्त ॥ गज्जनेस आएस। सूर चतुरंगन सज्जिय ॥
बीर बाल ससि वहि। मोह पूरन जिम भज्जिय ॥
करक निसा दिन मकर। सेन बढ्ढी निम चंगिय ॥
मिलि अनंग आनंद। रंज आनंद सुजंगिय ॥
द्वादस सहस्त्र बारुन समद। दोइ लष्ष सज्जे सुभर ॥
पारन सुअग्ग आरंभ दल। चढ्यौ साह मधि दुप्पहर ॥
छं० ॥ १६ ॥ रू० ॥ ८ ॥

चलते समय शाह का चित्त चित्ररेखा में मत्त गयंद की भांति लगा हुआ था ॥

गाथा ॥ चित्तं मत्त गयंदं। पुंतारं नत्थि उत्तरयं ॥
त्यौं चित्तरेषय चितं। सुविहानं मंडियं नेहं ॥ छं० ॥ १७ ॥ रू० ॥ ९ ॥

---

७ पाठान्तर-सोय। साज सुधारौ। होई। ध्रंम। बिचारौ। धरौ। कर्म्म। जोग। ग्यांनह। सुभाय। सुभाई। षुरसांन षांन। सजि ॥

८ पाठान्तर-आएक। चतुरंगति। सजिय। भजिय। निशा। बढी। चंगीय। जंगीय। समुंद। समद। दोय। लषु। सजे। दुपहर ॥

९ पाठान्तर-चितं। मत। पुतारं। नथि। उतरयं। चित्तं ॥

अरब ख़ां का आज्ञा मानकर चित्ररेषा को भेंट में देना ॥

अरिल्ल ॥ आरब षान तन छन मानिय। ज्यौं सुक्रिया पिय आग्या जानिय ॥
ले फुरमान बंदि सिर धारिय। चित्ररेष दीनी सो नारिय ॥
छं० ॥ २८ ॥ रू० ॥ १२ ॥

चित्ररेषा वेश्या के रूप का वर्णन ॥

साटक ॥ वेस्या बंछित भूप रूप मनसा, श्रृंगार हारावली ॥
सोयं सूरति लच्छि अच्छित गुनं, वेली सु कामावली ॥
का बर्नै कबि उत्ति जुत्ति मनयं, त्रैलोक्य मं साधनं ॥
सोयं बाल तिरत्त उष्ट विद्रुमं, का मोद जोगेश्वरं ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १३ ॥

साटक ॥ रूपं नहि कटाच्छ कूल तटयो, भायं तरंगं वरं ॥
हावं भावति मीन ग्रासित गुनं, सिद्धं मनं भंजनी ॥
सोयं जोग तरंग स्रवति वरं, त्रीलोक्य ना ता समा।
सोयं साहि सहाव दीन ग्रहियं, आनंग क्रीड़ा रसं ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १४ ॥

बिना युद्ध चित्ररेषा को लेकर गोरी का लौट आना ॥

दूहा ॥ अंग सुलच्छिन हेम तन। नगधरि सुंदरि सीस ॥
गोरी ग्रहि गोरी गयौ। विना जुद्ध बुझि रीस ॥
छं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ १५ ॥

चित्ररेषा के साथ शाह के आदर और प्रेम का वर्णन ॥

दूहा ॥ जिम जिम साह सु आदरिय। तिम तिम बढ्ढिय पेम ॥
क्रम क्रम फल गुन बद्ध हुय। बेली नमैं सु तेम ॥ छं० ३१ ॥ रू० १६ ॥

---

१२ पाठान्तर—षांन। छुन। मांनिय। सुक्रीया। जांनिय। फुरमांन। धारीय ॥

१३ पाठान्तर—सोयं। लछि। अछित। वेली। बरनै। युक्ति। मन। तिरत। जोगेसरं ॥

१४ पाठान्तर—नत। कंदाल्य। तटयो। मान। ग्रसित। भजनी। स्रूअति। त्रीश्रोन ता संमयं। त्रिलोक्य। नह। समां। साहाब। ग्रहीयं ॥

१५ पाठान्तर—लछिन। शीश। ग्रहि। युद्ध ॥

१६ पाठान्तर—आदरीय। बढिय। जिम २ फलगुन वाधहय ॥

चित्ररेषा के सुलताल को वश करने का वर्णन ॥

कवित्त ॥ वसि कीनौ सुरतान । चंग जिम भ्रमै डोरि कर ॥
ज्यौं भावी वसि लाइ । वचन उद्योत वाल सुर ॥
ज्यौं वसि जीवन मंन । प्रात वसि जेम क्रांम गुर ॥
ज्यौं वसि नाद कुरंग । वास वसि जेम मधुक्कर ॥
महिला सु मुक्कि सव वस्सि भय । महिला महिल सुमत्ति वसि ॥
एकंग एक अंदर महल । रहै साहि सुरतान रसि ॥
छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ १७ ॥

चित्ररेषा की कथा सुन कर कवि का आनंदित होना ॥

दूहा ॥ पंदी पेम परेव जिम । सुमन मनोहर मिष्ट ॥
सुनत कथा संब्रह्व हूह । अनंदिय मन दृष्ट ॥
छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ १८ ॥ *

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके चित्ररेषा वर्णनं नाम एकादसो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ११ ॥

१७ पाठान्तर-कोनौं । सुरतांन । भ्रमै । तोई । मंत । क्रम । नद । वशि । मधुक्कर । सुमति । वास । मति । रहैं । सुरतांन । रस ॥

१८ पाठान्तर-यह । आनंदीय ॥

* यह दोहा Caulfield, Ms. में नहीं है, परन्तु वह हमारी सं० १६४७ और सं० १८५९ की पुस्तकों में है ॥

सुलतान का बढ़कर लड़ना, दो घड़ी घोर युद्ध होना ॥

कवित्त ॥ रुप्यौ खेन सुरतान । राज चढ़ि नंषि सुरंगं ॥
कै तिमर भग्ग तपभांन । सिंह हक्कै कि कुरंगं ॥
तब * रुप्यौ राव सिंघरिय । लाज सुविहान षटक्किय ॥
सस्त्र तेज बल बंधि । खेन चहुआंन हटक्किय ॥
है घरिय टोप उप्पर बज्यौ । सार तिनंगा नारयौ ॥
जानें कि तिंदु दारुन जरै । जैत षंभ पर झारयौ ॥
छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ २७ ॥

दूहा ॥ हय मुक्क्यौ सिरदार दुहु । देखि भयौ न्टप चूक ॥
घरी एक झरि सार बहु । ज्यौं अगि संजुत्ता उक्क ॥
छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ २८ ॥

यवन सरदारों का माराजाना, पृथ्वीराज की विजय ॥

कवित्त ॥ जुद्ध जुरे सिरदार । राउ रंघह बाजी दह ॥
पालि बथ्थ गल हथ्थ । हहु भंजिय रग गूदह ॥
ज्यौं मुष्टिक चानूर । कन्ह भंजिय अष्पारह ॥
उत्तमंग लै हूर । सूर अपच्छर उप्पारह ॥
बाजीद षांन झोरी धरिय । धाउ पंच रंघर न्टपति ॥
रष्यै जु सांइ मिट्टै कवन । निमष मांहि उतपति षपति ॥
छं० ॥ ३४ ॥ रू० ॥ २९ ॥

हारकर शहाबुद्दीन का ग़ज़नी की ओर लौट जाना ॥

दूहा ॥ चूक चूक भय असुर सुर । फिरि गज्जन दिसि षांन ॥
हारि जुआरी ज्यौं चलै । कर घटै कर जान ॥
छं० ॥ ३५ ॥ रू० ॥ ३० ॥

---

२७ पाठान्तर—सुरतांन । बाजि चढि । भांन । हक्के । * अधिक पाठ है । रिघरिय । विहांन । चहुआंन । हटक्किय । घरीय । जानें ॥

२८ पाठान्तर—दुहुं । अगनि । उक ॥

२९ पाठान्तर—युद्ध । जुरै । सिरहार । रांव । बाजींदह । बथ । गर । हथ । रंग । अपारह । उपारह । वजींद । घांउ । घाव । यु । सांरं ॥

३० पाठान्तर—गजन । षांन । युवारी । चले । घठे । जांन ॥

चौहान की विजय पर चन्द कवि का जै जै कार करना ॥

दूहा ॥ जीति राज चहुवांन बन । आषेटक असुरान ॥
जै जै जै कविचंद कहि । चंद सूर बष्पान ॥

छं० ॥ ३६ ॥ रू० ॥ ३१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके राजा चहूवन आषेटक रन सुरतांन चूक करनं नाम दसम प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ १० ॥

३१ पाठान्तर–चहुवांन । असुरांन । बषांन ॥

उपसंहारणी टिप्पणी ।

यह समय भी हमारे स्वदेशी इतिहास के लिये बहुत उपयोगी है। क्योंकि एक लड़ाई तो "हुसेन कथा" नामक समय में रासो के अनन्द संवत् अर्थात्, पृथ्वीराज के तृतीय साक ११३५ माघ शुक्ला १३=११३५+९० । ९१=१२२५ । २६ वर्त्तमान विक्रमी में आगे हो चुकी थी और दूसरी उसके एक बरस पीछे यह "आखेटक चूक" नामक हुई हैं। इस लड़ाई के होने का समय कवि ने स्पष्ट न बताकर प्रथम रूपक में–बरष एक बीते कलह–से पहिली के एक वर्ष पीछे इसका होना वर्णन किया है अर्थात् पहिली के सं० ११३५+९०।९१=१२२५।२६ में एक जोड़ने से ११३५+१=११३६+९० । ९१=१२२६ । २७ वर्त्तमान विक्रमी होता है। वैसे ही "अखेटक" शब्द के नियत समय के अर्थ से "फाल्गुण" मास का होना भी प्रकाश किया है। प्राचीन समय में हमारे देशी राज्यों में वर्ष भर के अनेक त्यौहारों में फाल्गुण मास में जिस दिन ज्योतिषी आखेट का महूर्त्त देते थे उस दिन एक बड़ा त्यौहार मनाया जाता था। इसीसे यहां कवि ने "आखेटक" शब्द से फाल्गुन का संकेत अर्थ में माना है। अब यह त्यौहार लुप्त सा होता चला जाता है, तथापि वह प्राचीन राज्य उदयपुर में इस समय तक भी माना जाता है और उसको वहां "अहेरिया" वा "महूरत का शिकार" करके कहते हैं। और उसका सविस्तर वृत्तान्त कर्नैल टोड साहब ने अपने परम प्रसिद्ध ग्रंथ "राज स्थान" में यह लिखा है ॥

"The merry month of Phalgun is ushered in with the Ahaireá, or spring-hunt. The preceeding day the Rana distributes to all his chiefs and servants either a dress of green, or some portion thereof, in which all appear habited on the morrow, whenever the astrologer has fixed the hour for sallying forth to slay the boar to Gouri, the Ceres of the Rajpoots: the Ahairea is therefore called the *Máhoorut ca sikar* or the chase fixed astrologically. As their success on this occasion is ominous of future good, no means are neglected to secure it, either by scouts previously discovering the lair, or the desperate efforts of the hunters to slay the boar when roused. With the sovereign and his sons all the chiefs sally forth, each on his best steed, and all animated by the desire to surpass each other in acts of prowess and dexterity. It is very rare that in some one of the passes or recesses of the valley the hog is not found; the spot is then surrounded by the hunters, whose vociferations soon start the *dhokra* and frequently a drove of hogs. Then each cavalier impels his steed, and with lance or sword, regardless of rock, ravine, or tree, presses on the bristly foe, whose knowledge of the country is of no avail when thus circumvented, and the ground soon reeks with gore, in which not unfrequently is mixed that of horse or rider. On the last occasion, there occurred fewer casualties than usual, though the Chandawut Hamira, whom we nicknamed the "Red Riever," had his leg broken, and the second son of Sheodan Singh, a near relation of the Rana, had his neighbour's lance driven through his arm. The young chief of Saloombara was amongt the distinguished of this day's sport. It would appal even an English fox-hunter to see the Rajpoots driving their steeds at full speed, bounding like the antelope over every barrier, the thick jungle covert, or rocky steep bare of soil or vegetation." with their lances balanced in the air, or leaning on the saddle bow slashing at the boar".

TOD'S RAJASTHAN, VOL. I, PAGE 435.

और उन्होंने इस वृत्तान्त में के "अहेरिया" शब्द पर जो टिप्पण दी है उसमें पृथ्वीराज जी के इस आखेटक के विषय में यह कहा है–

"In his delight for this diversion, the Rajpoot evinces his Scythic propensity: The grand hunts of the last Chohan emperor often led him into warfare, for Prithiraj was a poacher of the first magnitude, and one of his battles with the Tartars was while engaged in field sports on the Ravi."

TOD'S RAJASTHAN, VOL. I, PAGE 485.

यद्यपि रूपक ४ के वाक्य–वरष रभै षटमास–का अर्थ दो वर्ष और छ महिनों का भी हो सकता है, परन्तु प्रथम रूपक के वाक्य–वरष एक बीते कलह–की उस के साथ संगति मिलाने से उस का अर्थ एक वर्ष का ही होता है अर्थात्, वर्ष अर्थात् दो छमाही। सो पाठक विचार देखें ॥

जैसे "हुसेन कथा" वाली रासो की संवत् ११३५ की लड़ाई का कारण हुसैन और चित्ररेखा का पृथ्वीराज के शरण आना था; वैसेही इस आखेटक चूक की लड़ाई का कारण उनके बेटे ग़ाज़ी हुसैन का रूपक २ के अनुसार एक महिने और पांच दिन पीछे फिर पृथ्वीराज जी के पास चला आना है ॥

तथा रूपक ४ एक अपूर्व्व वृत्त प्रकाशित करता है कि हमारे एक हिन्दू–नितिराव पत्रीय–दिल्ली में विराजे हुए हिन्दुओं की बादशाहत नाश करवाने को पृथ्वीराज जी के यहां की मुख़बरी शहाबुद्दीन को लिखा पढ़ा करते थे। ऐसे जीव भी धन्य हैं !!!

अथ चित्ररेषा समयौ लिष्यते ॥

(ग्यारहवां समय ।)

चित्ररेखा की उत्पत्ति पूछना ॥

दूहा ॥ पुच्छि चंद वरदाइ नैं । चित्ररेष उतपत्ति ॥
    षां हुसेन षवास कहि । जिम लीनी असपत्ति ॥ छं० ॥ १ ॥ रू० ॥ १ ॥ *

शहाबुद्दीन के विक्रम का वर्णन ॥

कवित्त ॥ गज्जनेस अवदेस । साहि पल्लांन कुसाव ॥
    बदक स्वामि भेदरा । छंडि गष्पर छिति आवं ॥
    जल जोवन साहाव । दीन दुरंगे करि गिन्निय ॥
    हिंदवान मेछान । थान थानह करि लिन्निय
    बजि विषम वाइ सुरतान ष्पन । साहि वर्दी सव दीन पति ॥
    अनसंक कंक मनु लंकपति । जनु जोवन तन रवित पति ॥
                                        छं० ॥ २ ॥ रू० ॥ २ ॥

शहाबुद्दीन का अरब ख़ां पर चढ़ाई करने की इच्छा कर सरदारों से पूछना ॥

कवित्त ॥ दिसि आरब सुरतांन । दिष्टि आलोकि वंक सुभ्र ॥
    आकंपे दिसि उल्लि । अचल चालंत चित्त हुअ ॥
    सज्जि सेन चतुरंग । अंग अनभंग विचारिय ॥
    बोलि षान षुरसान । षान जित्ते अधिकारिय ॥

---

१ पाठान्तर–पुछि । बरदाईनें । उतपति । लीनिय । असपति ॥ * इस समय में कवि ने हुसेन षां के कहे अनुसार जैसे शहाबुद्दीन ने चित्ररेषा को प्राप्त किया था सो वर्णन किया है ॥

२ पाठान्तर–पलाणि । पलांन । कसंबि । बदकर । सांमि । दुरंगे । गिन्नीय । गिनिय । हिंदवांन । मेछांन । थांन । लिंनीय । सुरतांन । सहावदी । मनैं । जुन । जर ॥

मारूफ षान तत्तार षां । षान षान खेरिन सुबर ॥
काली बलाइ कलहंत रिन । बोलि बीर पच्छे सुनर ॥
छं० ॥ ३ ॥ रू० ॥ ३ ॥

अरब खां नवता नहीं है इसलिये उस पर चढ़ाई होनी चाहिए यह आज्ञा दी ॥

दूहा ॥ * आरब पति अर सिंध तट । विन सलाम सुरतान ॥
तिन उप्पर सज्जिय सयन । कद्दर छंडि फुरमांन । छं० ॥ ४ ॥ रू० ॥ ४ ॥

चढ़ाई की सेना की संख्या ॥

कवित्त ॥ सत्त पंच वाहन्न विसाल * । लष्ष दुइ तुरी लषिन्ना ॥
आरब्बी सैं पंच । लष्ष इक सोधि सुलिन्ना ॥
काविल्ली उर तेज । रोम रोमी पंजाबी ॥
लोहानी जल वान । सेष गोरी आरब्बी ॥
लष एक लष्ष लष्षां मुहा । पारेवह जिन पंष लिय ॥
चालंत कटक गोरी प्रबल । भूमी चाली पंचनिय ॥ छं० ॥ ५ ॥ रू० ॥ ५ ॥

सेना की धूम का वर्णन ॥

छंद भुजंगी ॥ चली पंषिनी सथ्थ चौसठ्ठ थानं । चली अग्ग पंती सुदंती प्रमानं ॥
तिनं दंत कंती तडित्ता समानं । .... छं० ॥ ६ ॥
धजा पंति फैरंत भाढव्व भारं । झबक्कैं मनौं सूर संगी कि सारं ।
बजै चंग चंबाल गज्जै कहरं । बज्जैं नद्द सद्दं पपीहं दद्दूरं ॥ छं० ॥ ७ ॥
धरं बंक थक्कौर उद्वौर घंटं । बरं दैर भंजै धरै षिच दट्टं ॥
अगें चल्लियं अग्गिवानं समीरं । तिनं पुठ्ठ पुसान षां बंधि भीरं ॥ छं० ॥ ८ ॥

---

३ पाठान्तर-दिसि बर आरब साह । दिष्ट । सुय । डुलि । सजि । विचारिय । षांन । षुरसांन । पांन । जिते । अधिकारीय । मारूफ । पांन । ततार । पांन पांन । रन । बलाय । पछैं ॥

४ पाठान्तर-सिद्धु । नट । सलांम । सुरतांन । उपर । सजिय । फुरमांन ॥ * अरब खाँ नामक कोई छोटा राजा वा सरदार उस समय सिंधु तट पर के देश का पति था कि जिसके पास चित्ररेखा थी ॥

५ पाठान्तर-सत । वाहन । * अधिक पाठ है ॥ लषु । दोइ । लशीना । आरबी । पांच सैं । लष । लीनां । कविली । बांन । शेष । गौरी । आरबी । लष । लषां । मुहां । पारेवाह । षलिय । गौरी । पंषनीय ॥

धरै छत्र सीसं बिराजंत गोरी। पिलै पंनि देवं विचें किद्ध चोरी ॥
सकीथान थानं छुटें भानु पट्टं। जगी जोग जालं उनट्टै सुघट्ट॥ छं० ॥ ९॥
चलै आरबं उप्परे साहि सज्जी। कमट्ठं पिठं उथ्थलं सेस दज्जी ॥
बिंटे गढ्ढ गोढार केथान थानं। मनौं सागरं वीच वड्वानलानं॥ छं० ॥ १०॥
वजे थान थानं सुरंवान्न दूरं। गहे पग्ग सीरं वदै मुष्प कूरं ॥

शाह का निसुरति ख़ां को अरब ख़ां के पास भेजना कि चित्ररेषा को देकर-पैर पर गिरै तो हम क्षमा करदें ॥ ॥

वरं मोकले मेलनि स्नुत्ति पांनं। कहौ आरवं लग्गि पायं विहानं॥ छं०॥११॥
दियौ चित्ररेषा लियौ दंड दानं। भिरै षेत मोसौं कहूं अज्ज कोनं ॥
पर्यौ तावना आरवं निठ्ठ निठ्ठं। गयौ काहरं धीरजं दिठ्ठ दिठ्ठं ॥ छं०॥१२ ॥

अरब ख़ां का सादर आज्ञा मानना और चित्ररेषा को देना स्वीकार करना ॥

दियौ जाइ फुर्मान निस्नुत्त ईसं। लियौ आरवं आदरं नाइ सीसं ॥
दई चित्ररेषा सिनावी सुडोरं। तिनं उप्परं गुंज भौंरान घोरं॥ छं० ॥१३॥
हूकं सेत हथ्थी हु त्रावं अराकी। पलंगी रजक्की धरें अंत पाकी ॥
सतं एक सष्पी दई चित्ररेषा। बनी सुद्ध बानै दरं मद्धि नेषा ॥
छं० ॥ १४ ॥ रू० ॥ ६ ॥

---

६ पाठान्तर-सथ। चौसठि। थानं। अंग। सदंती। पमानं। तड़िता ॥ ६ ॥ पत्ति। फहरंत। भादवा। झबक्कें। मनों। गज्जै। बज्जै ॥ ७ ॥ पट्टोर उघोर। घटं। बर। बटं। अगे। चलियं। अगिवानं। पुठि। पुरंसांन ॥ ८ ॥ धरें। गौरी। थानं २। छुटे। पट्ट। मांनो। न उट्टे सुरानें ॥ ९ ॥ उपरें। सनी। कमठं। उथल। दझी। बिंटे। गढ। कै। थांन थानं। बडवानलानं ॥ १० ॥ थांन थानं। गहैं। मुष। निसुरति। पांनं। कहौं ॥ ११ ॥ भिरैं। मोसूं। कहो। कौनं। तापनां। निच निठं। दिठि दिठं ॥ १२ ॥ फुरमांन। निसुरत्त। नांय। शीशं। सडोरं। उपरं! भवरांन। भोरं ॥ १३ ॥ हथी। आरब। औराकी। रजकी। सष्यं। बांनै ॥ १४ ॥

निसुरति षां का अरब खाँ को शाबसी दे कहना कि तुमने शाह के बचन माने और हिन्दु धर्म्म को न मान कर म्लेच्छ कुल कर्म को धारण किया सो ठीक किया॥

कवित्त॥ कह्यौ साहि जो बचन। सोइ तुम काज सुधाख्यौ॥
तेइ बचन सति होइ। हिंदु ध्रम्मं न बिचाख्यौ॥
मेछ धन्यौ कुल क्रंम। जोगि ग्यानह जिम धारहि॥
सेवक मत्त सुभाइ। देन आलम नाकारहि॥
षुरसान षान सुरतान पति। दल बद्दल पावस मिल्लिग॥
चतुरंग सज्जि चौरंग मिलि। सिद्ध चरित सिद्धन चल्लिग
छं०॥ १५॥ रू०॥ ७॥

शहाबुद्दीन का सेना समेत सजकर चलना॥

कवित्त॥ गज्जनेस आएस। सूर चतुरंगन सज्जिय॥
बीर बाल ससि वद्दि। मोह पूरन जिम भज्जिय॥
करक निसा दिन मकर। सेन बढ्ढी तिम चंगिय॥
मिलि अनंग आनंद। रंज आनंद सुजंगिय॥
द्वादस सहस्स बारुन समद। दोइ लष्ष सज्जे सुभर॥
पारन सुअग्य आरंभ दल। चल्यौ साह मधि दुप्पहर॥
छं०॥ १६॥ रू०॥ ८॥

चलते समय शाह का चित्त चित्ररेखा में मत्त गयंद की भांति लगा हुआ था॥

गाथा॥ चित्तं मत्त गयंदं। पुंतारं नत्थि उत्तरयं॥
त्यौं चित्ररेषय चित्तं। सुविहानं मंडियं नेहं॥ छं०॥ १७॥ रू०॥ ९॥

---

७ पाठान्तर-सोय। साज सुधारौ। होई। ध्रंम। विचारौ। धरौ। कर्म्म। जोग। ग्यांनह। सुभाय। सुभाई। षुरसांन षांन। सजि॥

८ पाठान्तर-आएक। चतुरंगति। सजिय। भजिय। निशा। बढी। चंगीय। जंगीय। समुंद। समद। दोय। लषु। सजे। दुपहर॥

९ पाठान्तर-चितं। मत। पुतारं। नथि। उतरयं। चित्तं॥

अरब खां का आज्ञा मानकर चित्ररेषा को भेंट में देना ॥

अरिल्ल ॥ आरब पान तन छन मानिय। ज्यौं सुक्रिया पिय आग्या जानिय ॥
लै फुरमान बंदि सिर धारिय। चित्ररेष दीनी सो नारिय ॥
छं० ॥ २८ ॥ रू० ॥ १२ ॥

चित्ररेषा वेश्या के रूप का वर्णन ॥

साटक ॥ वेस्या बंछित भूप रूप मनसा, श्रृंगार हारावली ॥
सोयं सूरति लच्छि अच्छित गुनं, वेली सु कामावली ॥
का बर्नैं कबि उक्ति जुक्ति मनयं, त्रैलोक्य मं साधनं ॥
सोयं बाल तिरत्त उष्ट विद्रुमं, का मोद जोगेश्वरं ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १३ ॥

साटक ॥ रूपं नहि कटाच्छ कूल तटयौ, भायं तरंगं बरं ॥
हावं भावति मीन भासित गुनं, सिद्धं मनं भंजनी ॥
सोयं जोग तरंग रूवति बरं, त्रीलोक्य ना ता समा।
सोयं साहि सहाव दीन ग्रहियं, आनंग क्रीड़ा रसं ॥
छं० ॥ २९ ॥ रू० ॥ १४ ॥

बिना युद्ध चित्ररेषा को लेकर गोरी का लौट आना ॥

दूहा ॥ अंग सुलच्छिन हेम तन। नगधरि सुंदरि सीस ॥
गोरी ग्रहि गोरी गयौ। विना जुद्ध बुझि रीस ॥
छं० ॥ ३० ॥ रू० ॥ १५ ॥

चित्ररेषा के साथ शाह के आदर और प्रेम का वर्णन ॥

दूहा ॥ जिम जिम साह सु आदरिय। तिम तिम बढ्ढिय पेम ॥
क्रम क्रम फल गुन बद्ध हुय। वेली नमैं सु तेम ॥ छं० ३१ ॥ रू० १६ ॥

---

१२ पाठान्तर–षांन। छुन। मांनिय। सुक्रीया। जांनिय। फुरमांन। धारीय ॥

१३ पाठान्तर–सोयं। लछि। अछित। वेली। बरनै। युक्ति। मन। तिरत। जोगेसरं ॥

१४ पाठान्तर–नत। कंदाल्य। तटयो। मान। ग्रसित। भजनी। रूअति। त्रीक्षोन ता संमयं। त्रिलोक्य। नह। समां। साहाब। ग्रहीयं ॥

१५ पाठान्तर–लछिन। शीश। ग्रहि। युद्ध ॥

१६ पाठान्तर–आदरीय। बढिय। जिम २ फलगुन वाधहय ॥

चित्ररेखा के सुलतान को वश करने का वर्णन ॥

कवित्त ॥ बसि कीनों सुरतान । चंग जिम भ्रमै डोरि कर ॥
ज्यों भावी बसि ताइ । बचन उद्योत बाल सुर ॥
ज्यों बसि जीवन मंत । प्रात बसि जेम क्रम्म गुर ॥
ज्यों बसि नाद कुरंग । वास बसि जेम मधुक्कर ॥
महिला सु सुक्कि सब बस्सि भय । महिला महिल सुमत्ति बसि ॥
एकंग एक अंदर महल । रहै साहि सुरतान रसि ॥
छं० ॥ ३२ ॥ रू० ॥ १७ ॥

चित्ररेखा की कथा सुन कर कवि का आनंदित होना ॥

दूहा ॥ पंषी पेम परेव जिम । सुमन मनोहर मिष्ट ॥
सुनत कथा संबूल हूह । अनंदिय मन दृष्ट ॥
छं० ॥ ३३ ॥ रू० ॥ १८ ॥ *

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके चित्ररेषा वर्णनं नाम एकादसो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ११ ॥

१७ पाठान्तर-कोनैं । सुरतांन । भ्रमै । तोई । मंत । क्रम । नद । वशि । मधुकर । सुमति । बास । मति । रहैं । सुरतांन । रस ॥

१८ पाठान्तर-यह । आनंदीय ॥

* यह दोहा Caulfield, Ms. में नहीं है, परन्तु वह हमारी सं० १६४७ और सं० १८५९ की पुस्तकों में है ॥